पण्डित शिवमूर्ति उपाध्याय द्वारा सम्पादित हृषीकेश पञ्चाङ्ग

अनन्त चतुर्दशी संवत् २०७८

इस पञ्चाङ्ग में प्रतिदिन के तिथि नक्षत्र योग का मान और द्वादशलग्नान्त घं. मि. में तथा विवाह-उपनयन-चौल-वधूप्रवेश-द्विरागमन-गृहप्रवेश-जलाशयारामकूपदेवालयारम्भ-प्रतिष्ठादि के शुद्धातिशुद्ध मुहूर्त लिखे जाते हैं। इस पञ्चाङ्ग को पास रखने से मनुष्य ज्योतिषी हो जाता है।

## विवाहे पञ्चशलाकाचक्रम्

कृ. रो. मृ. आ. पुन. पु. श्ले. | म. मघा | अ. पू.फा. | रे. उ.फा. | उ.भा. हस्त | पू.भा. चित्रा | श. स्वाती | ध. विशाखा | श्र. अभि. उ.षा. पू.षा. मू. ज्ये. अनु.

वधूप्रवेशने दाने वरणे पाणिपीडने। वेधः पञ्चशलाकाख्योऽन्यत्रसप्तशलाककः।।

## बाण पञ्चकम्

बाणनिर्णये सूर्यगतांशाः

| | |
|---|---|
| क्रमेण रोगबाणः | ८।१७।२६ |
| अनलोऽयंस्तत्शल्यः | २।११।२०।२९।। |
| नृपबाणः | ४।१३।२२।। |
| चौरबाणः | ६।१५।२४।। |
| मृत्युबाणः | १।१०।१९।२८ |

सूर्यगतांश वशात्त्याज्याः।यात्रायां चौरबाणं तु व्रते रोगं त्यजेद्बुधः। विवाहे मृत्युबाणं च नृपाख्यं नृपसेवया। गृहस्याच्छादने वह्निः वर्जयेत् सर्वदा बुधः।।

## रामायणेशकुनावलोकनम्

नवराशिषु व्रीहीनां ध्यात्वा कार्यन्तु विन्यसेत्।। चतुः पूंगीफलानीह पूर्वेणकाण्डमुच्यते। द्वितीयेन हि सर्गस्तु तृतीयेन फलेन हि।। दशकोऽस्यविजानीयाच्चतुर्थेन फलेन च।। श्लोकोज्ञेयः पूर्वराशेः सर्वेषां गणनेरिता।। सर्वत्रान्त्येन श्लोकेन विपरीतं फलं स्मृतम्।। शुभकथावशाच्छुभमशुभकयाव-शाच्चाशुभफलं ज्ञेयमिति।

# श्रीकाशीविश्वनाथ पञ्चाङ्गम्

# शिवमूर्ति हृषीकेश पञ्चाङ्ग

।।श्रीमङ्गलमूर्तये गणाधिपतयेनमः।।

स्व० पं. हृषीकेशोपाध्याय प्रवर्तक | प्रधान सम्पादक पं० शिवमूर्ति उपाध्याय | स्व० पं. श्याममूर्ति उपाध्याय आद्यसम्पादक

## सप्तशती शकुनावलोकनम्

सम्पूज्य विधिवद्देवीं कुमारीरूप-धारिणीम्। कृत्वाष्टदलमुर्वीस्थं तत्र तत्पुस्तकं न्यसेत्।।१।। पूजितायाः करे दद्यात् कन्यकायास्तु मुद्रिकाम्।। शलाकां हेममय्याञ्च गजदन्तस्य वा शुभाम्।।२।। द्वादशांगुलमात्रन्तु विन्यसेतपुस्तकान्तरे। सम्पश्येत्त्रथमांपंक्तिं यत्स्वरूपं कथानकम्।।३।। आदिशेत्तत्स्वरूपं हि फलं शास्त्रविशारदः।।४।।

## अथ ग्रहाणामरिष्टहरत्वमत्राह

राहुदोषंबुधोहन्यादुभयोस्तु शनैश्चरः।। त्रयाणां भूमिजो हन्ति चतुर्णां दानवार्चितः।।१।। पञ्चानां देवमन्त्री च षण्णां दोषन्तु चन्द्रमा। सप्तदोषं रविर्हन्याद्विशेषादुत्तरायणे।।२।। अथ स्थानविशेषेणग्रहाणां विफलत्वमाह-समानुरिन्दुः शशिजश्चतुर्थे गुरुः सुते भूमिसुतः कुटुम्बे। भृगुःसपत्ने रविजः कलत्रे विलग्नतस्ते विफलाभवन्ति।।३।।

## विवाहादन्यत्रसप्तशलाकाचक्रम्

कृ. रो. मृ. आ. पुन. पु. श्ले. | भ. मघा | अ. पू.फा. | रे. उ.फा. | उ.भा. हस्त | पू.भा. चित्रा | श. स्वाती | ध. विशाखा | श्र. अभि. उ.षा. पू.षा. मू. ज्ये. अनु.

चक्रे सप्तशलाकाख्ये सवेधः सर्वकर्मसु। चिन्तनीयो विवाहे तु पञ्चरेखासमुद्भवः।।

अस्मिन् वर्षे राजा शनिः।। मन्त्री गुरुः।। सस्येशः सूर्यः।। दुर्गेशो बुधः।। धनेशः शनिः।। रसेशो भौमः।। धान्येशः शुक्रः।। नीरसेशः शनिः।। फलेशो बुधः।। मेघेशो बुधः ।। रोहिणीभं पर्वते ।। वर्षविश्वा १० समर्घताकरम्।। गतकलिः ५१२३।।

## स्वस्ति श्रीमन्महाराजाधिराजद्विजराज काशिराज श्री १०८ महाराज डॉ० श्रीविभूतिनारायणसिंहशर्मदेव 'एम.ए.' वीरपुङ्गव पदभाजामाज्ञानुसारम्।।

## अथोत्पात फलज्ञानाय चतुर्विधमण्डलम्

| अग्नि मण्डलम् | वरुण मण्डलम् | वायु मण्डलम् | चन्द्र मण्डलम् |
|---|---|---|---|
| कृत्तिका | मूल | पुनर्वसु | अभिजित |
| भरणी | ऽश्लेषा | उत्तराफाल्गुनी | उत्तराषाढ़ा |
| पुष्य | शतभिष | अश्विनी | अनुराधा |
| मघा | आर्द्रा | हस्त | श्रवण |
| पूर्वाभाद्र | रेवती | चित्रा | धनिष्ठा |
| विशाखा | उत्तराभाद्रपद | स्वाती | ज्येष्ठा |
| पूर्वाफाल्गुनी | पूर्वाषाढ़ा | मृगशिरा | रोहिणी |
| अशुभम् | शुभम् | अशुभम् | शुभम् |

भूकम्पादिमहोत्पातो जायते यत्र मण्डले।। तत्तत्स्वभावजं द्रव्यं जन्तून् देशांश्च पीडयेत्।। अत्र वायव्याग्निमण्डलावनिष्टाविति।।

पञ्चाङ्गेऽस्मिन् - देशान्तरम् ६।९, अक्षांशाः २५।१८, पलभाः ५।४५, मकरन्दीयाः तिथिनक्षत्रयोगादयः ग्रहलाघवीयाः दैनिकस्पष्टग्रहाः। अयनांशाः केतकरीयाः।

## विंध्योत्तरवासिनांविंशोत्तरीमतेनायव्यय चक्रम्

| मे | वृ | मि | क | सिं | कं | तु | वृ | ध | म | कु | मी | राशयः | योगः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८ | २ | ८ | २ | ५ | ८ | २ | ८ | ५ | १४ | १४ | ५ | आय | आययोगः ८९ |
| ५ | १४ | ११ | ८ | ५ | ११ | १४ | ५ | ११ | ११ | ११ | ११ | व्यय | व्यययोगः ११७ |

## ।। जन्मलग्नाज्जगल्लग्न फलम् ।।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | देहसुखम् | ७ | स्त्रीसुखम् |
| २ | धनलाभः | ८ | रोगभयम् |
| ३ | कुटुम्बवृद्धिः | ९ | धर्मलाभः |
| ४ | मित्रप्राप्तिः | १० | सुतार्थाप्तिः |
| ५ | पुत्रप्राप्तिः | ११ | लाभसुखम् |
| ६ | शत्रुजयः | १२ | व्ययदुःखम् |

## जगल्लग्नम् २।२१।५६।२५

४ | २ | ५ चं. | ३ | सू.बु.१ रा. | ६ | १२ गु. | ७ के. | ९ | मं.११ शु. | ८ | १० श.

अथोभयलाभव्ययचक्राद्विशेषविचारः।। लाभव्ययौ समौ कृत्वा एकहीनं तु कारयेत्। अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषाङ्केफलमादिशेत्।। लाभं १ सौख्यं २ तथा क्लेशं ३ रोगं ४ लोकापवादनम्।। सम्मानं ६ विजयं ७ हानिः ८ कथितं पूर्वसूरिभिः। ।।अथवा।। उभयलाभैक्यं लाभः।। व्ययैक्यञ्च व्यय इति।। यत्र विभागे लाभैक्यमधिकं तत्र शुभम्।।

वैशाखकृष्ण ति. १३ गुरौ (२८-४-२०२२) २५।२१ (दि. ३१४५) इष्टे "नल" नामाब्दः प्रवृत्तः।।

श्रीकाशिराजराजेन्द्रस्याभिनवं 'माटो' नामकं चिह्नम्।।

श्री १०८ विश्वनाथकृपयाऽत्र तदीयमूर्त्ति श्री काशीराजकरकल्पतरुप्रपन्नम्। सिद्ध्यै सदाखिलसनातनधर्मकालज्ञप्तेः सतां विजयतां तिथिपत्रमेतत्।।

# श्री संवत् २०७९ शकः १९४४ राक्षस नामाब्दः

ईसवीय सन् २०२२-२०२३। फसली १४२९-३०। बङ्गसंवत् १४२८-२९। हिजरी १४४३-४४

अन्नपूर्णाविश्वनाथौ जननीजनकाविव। सर्वस्वं मम् तावेव विश्वस्मिन्मङ्गलप्रदौ। नवाद्रिनख-विक्रमाद्बतिथिपत्रं प्रात्यहिकग्रहस्पष्टलग्नोदयसहितम्।।

श्रीकाशीस्थराजकीय प्रधानसंस्कृत पाठशालायाम्-प्रधानाध्यापकेन

**श्रीपण्डित हृषीकेशोपाध्याय - ज्योतिषाचार्येण प्रवर्तितम्।**

आचार्य पण्डित श्रीनागेशोपाध्याय 'ज्यौतिषी', विद्यार्णविन्दु 'एम.ए.' द्वारा प्रवर्द्धितम्।

परमावश्यक सूचना : पञ्चाङ्गापेक्षित निर्णय के लिये उ.प्र., बिहार, दिल्ली, मुम्बई, बंगाल, आसाम सहित सम्पूर्ण भारतवर्ष में पं० शिवमूर्ति उपाध्याय द्वारा सम्पादित हृषीकेश पञ्चाङ्ग ही प्रधान माना जाता है। ग्रहण, उदयास्त, व्रत, विवाहादि मङ्गल कार्यों का निर्णय इसके द्वारा ही सर्वत्र किया जाता है। सम्प्रति प्रचलित सभी पञ्चाङ्ग 'हृषीकेश पञ्चाङ्ग' का ही अनुसरण व नकल करने लगे हैं।

विक्रम पञ्चाङ्ग प्रकाशन बी. २/९५, सी. भदैनी, वाराणसी

## विंध्यदक्षिणवासिनामष्टोत्तरीयमतेनायव्यय चक्रम्।

| मे | वृ | मि | क | सिं | कं | तु | वृ | ध | म | कु | मी | राशयः | योगः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १४ | ८ | ११ | ५ | ८ | ११ | ८ | १४ | २ | ५ | ५ | २ | आय | आययोगः९३ |
| १४ | ८ | ५ | ५ | १४ | ५ | ८ | १४ | ८ | २ | २ | ८ | व्यय | व्यययोगः९३ |

## आर्द्राप्रवेशाङ्गम् ८।१८।४८।३४

१० श. | ८ | ११ | ९ | ७ के. | चं. मं.१२ गु. | ६ | १ रा. | ३ सू. | ५ | बु.२ शु. | ४

हस्ताक्षर : [signature]

## आर्द्रादौ वर्षाढ़क प्रमाणं भूमौ

| आर्द्रा | पुनर्वसु | पुष्य | श्लेषा | मघा |
|---|---|---|---|---|
| ३ | २ | २ | २ | २ |
| पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाती |
| १।। | १।। | १ | १।। | १ |

आषाढ़े ३ श्रावणे ४ भाद्रपदे ४ आश्विने१ कार्तिके १ साधारणं मार्गपौषयोरपि।।

सूर्यनक्षत्रप्रवेशकालाद्वर्षाविचारः।। सूर्येसूर्येभवेद्वायुश्चन्द्रेचन्द्रे न वर्षति सूर्यचन्द्र-समायोगे तदा वर्षति मेघराट् ।।अन्यच्च।। यदा स्यादमृतनाडीं तथा च जलसंज्ञिका। जलप्रियोवाहनञ्च तदा वर्षति वारिदः। स्त्री-स्त्री तु शीतलच्छाया पुं-पुं वारिविनाशकः।। स्त्रीपुंयोगः प्रभवति तदा वर्षति देवराट्।। बुध शुक्र महीसूनुगुरवश्चैकनाडिगाः। निःसंशयं तदा काले जायते वृष्टिरुत्तमा।।

## वर्षाज्ञानाय सप्तनाडी चक्रम्

| शनिः | रविः | भौमः | गुरुः | शुक्रः | बुधः | चन्द्रः | स्वामी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कृ. | रो. | मृ. | आ. | पुन. | पु. | श्ले. | नक्षत्र |
| वि. | स्वा. | चि. | ह. | उ. | पू. | म. | नक्षत्र |
| ऽनु. | ज्ये. | मू. | पू. | उ. | अभि | श्र. | नक्षत्र |
| भ. | अ. | रे. | उ. | पू. | श. | ध. | नक्षत्र |
| चंडा | वात | वह्नि | सौम्या | नीरा | जला | अमृत | संज्ञा |

## श्रीसंवत् २०७९ वर्षे समयशुद्धिः।

| | |
|---|---|
| गुरुः | यावदब्द उदितः। नास्मिन् वर्षे गुर्वस्तः। |
| शुक्रः | आश्विनशुक्ल ४ गुरौ (२९-९-२०२२) शुक्रास्तः पूर्वे। मार्गशीर्षकृष्ण ११ रवौ (२०-११-२०२२) शुक्रोदयः पश्चिमे। |
| शनिः | वर्षारम्भे धनिष्ठा १ चरणे मकरे च। ज्येष्ठशुक्ल ८ भौमे वक्री। कार्तिककृष्ण ३ बुधे मार्गी। फाल्गुनकृष्ण १४ रवौ (१९-२-२०२३) धनिष्ठा ३ चरणे कुम्भे च।। |
| राहुः | वर्षारम्भे कृत्तिका २ चरणे वृषे च राहुः विशाखा ४ चरणे वृश्चिके च केतुः। चैत्रशुक्ल ८ शनौ (९-४-२०२२) कृत्तिका १ चरणे मेषे च राहुः विशाखा ३ चरणे तुलाराशौ च केतुः। वर्षान्ते अश्विनी ४ चरणे राहुः स्वाती २ चरणे केतुः। |

विवाहः चैत्रशुक्ल, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, मार्गशीर्षशुक्ल, पौषकृष्ण, माघ, फाल्गुन, चैत्रकृष्णे च।

मूल्य ५१.०० (इक्यावन रूपये मात्र)

हृषीकेश पञ्चाङ्ग

प्रकाशक- विक्रम पञ्चाङ्ग प्रकाशन, भदैनी, वाराणसी।

श्रीगणेशाय नमः। श्रीविश्वनाथः शरणम्। श्रीभगवते रामचन्द्राय नमः।

स जयति सिन्धुरवदनो देवो यत्पादपङ्कजस्मरणम्। वासरमणिरिव तमसां राशिन्नाशयति विघ्नानाम्।।१।। विनायकं प्रणम्यादौ देवीं वाग्देवतां गुरुम्। संवत्सरफलं वक्ष्ये जगतां हितकाम्यया।।२।। अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधारमूर्तये ब्रह्मणे नमः ।।३।। तिथिंवारञ्च नक्षत्रं योगं करणमेव च। पञ्चाङ्गस्य फलं श्रुत्वा गङ्गास्नान फलं लभेत् ।।४।। प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगृहं कुर्याद् ध्वजारोपणम्। स्नानं मङ्गलमाचरेद् द्विजवरैः सार्द्धं सुपूजोत्सवम्। देवानां गुरुयोषिताञ्चशिशवोऽलङ्कारवस्त्रादिभिः सम्पूज्यो गणकः फलञ्च श्रृणुयात्तस्माच्च लाभप्रदम्।।५।। राज्यं स्याद्चलं तिथिश्रवणतो मन्त्रिश्रवात् कौशलं धान्येशात्कमला स्थिरा च सुरसावाणी भवेन्मेघपात्। धर्मे बुद्धिरतिस्थिरा रसपतेर्दीर्घायुषत्वं भवेत्। सस्येशाद्विमलायता शुभकरी सारावली श्रूयताम्।।६।। पारिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः। सपुष्पाणि समानीय चूर्णं कृत्वा प्रयत्नतः।।७।। मरीचिर्लवणं हिंगुजीरकेन च संयुतम्। अजमोदयुतञ्चैव भक्षयेद्रोग शान्तये।।८।। अथ श्रीभगवतः पुराणपुरुषस्य विष्णोर्नाभि कमलोद्भवस्य ब्रह्मणो ब्राह्ममानेन परमायुर्वर्षशतकम् १००। अथ ब्रह्मादीनां दिनमानानि। चतुर्युगं सहस्रेण ब्रह्मणोदिनमुच्यते। निजेनैव तु मानेन आयुर्वर्षशतं स्मृतम्।।१।। पितामह सहस्रेण विष्णोश्चघटिका स्मृता। विष्णोर्द्वादशलक्षाणि कलार्द्धंरौद्रमुच्यते। रूद्रस्यार्बुदसंख्या- भिस्ततोब्रह्माक्षरं भवेत्।।

अथ प्रसङ्गाच्चतुर्युगव्यवस्था।। कार्तिकशुक्लनवम्यां प्रथमयामे श्रवणर्क्षेवृद्धियोगे कृतयुगोत्पत्तिः।। सन्ध्यासन्ध्यांशसहितं तन्मानं सौराब्दाः १७२८०००। तत्र मत्स्यकूर्मवराह नृसिंहाश्चत्वारोऽवताराः।। पापं०।। पुण्यम् २०।। हिरण्यकशिपुप्रह्लादवैरोचनबलिबाणसुरसंज्ञका धर्मिष्ठा राजानश्चासन्।। वैशाख शुक्ल तृतीयायां चन्द्रे रोहिणीभे द्वितीयप्रहरे शोभनयोगे त्रेतोत्पत्तिः।। सन्ध्यासन्ध्यांसहितं तन्मानम् १२९६०००।। वामनपरशुराम राम इत्यवताराखयस्तत्र पापं ५।। पुण्यम् १५।। विश्वामित्रभगीरथ दिलीप मकरध्वजदशरथराम लवकुशादयो राजानश्चासन्।। माघ कृष्णामा ३० शुक्रे तृतीययामे वसुभे वरीयसि द्वापरोत्पत्तिः।। सन्ध्यासन्ध्यांशसहितंतन्मानम् ८६४०००। तत्र कृष्णबौद्धावतारौ। पापं १०।। पुण्यम् १०।। अङ्गपाण्डु युधिष्ठिर परीक्षितादयो धर्मिष्ठा राजनश्चासन्। भाद्रपद कृष्ण १३ रवौ अहिभे व्यतिपाते निशीथे कलियुगोत्पत्तिः।। सन्ध्यासन्ध्यांश सहितं तन्मानम् ४३२०००।। पापं १५।। पुण्यम् ५।। नात्र वर्णव्यस्थितिः। बीजहीना वसुन्धरा।। कलिस्वरूपम्।। पिशाचवदनः क्रूरः कलिश्चकलहप्रियः। वामहस्ते धृतः शिश्नोदक्षे जिह्वाञ्च नृत्यति। कलौ गङ्गायाः स्थितिः।

पृथिवी गङ्गया हीनां भविष्यत्यन्तिमे कलौ। तदैव विष्णुस्त्यजति मेदिनीं नरपुङ्गव। भागीरथं प्रति गङ्गावाक्यञ्च। यावद्धरण्यां तुलसी प्रपूज्यते गुरुर्नभस्योदिविकल्पपादपः। यावत्समुद्रे बडवानलश्च वसामि तावत्तव चक्रखात इति। कलौ दशसहस्राणीतिवाक्यमन्तिमे कलौ ज्ञेयम्। नान्येषु कलिष्विति। कलिमाहात्म्यम्- धर्मः प्रव्रजितस्तपः प्रचलितं सत्यञ्च दूरं गतम् । पृथ्वीमन्दफला नराः कपटिनः चित्तञ्च शाठ्योर्जितम् ।१। राजानोऽर्थपरा न रक्षणपराः पुत्राः पितुर्द्वेषिणः। साधुः सीदति दुर्जनः प्रभवति प्राप्ते कलौ दुर्युगे।२। चतुरशीति-लक्षयोनिव्यवस्था। जलजाः नवलक्षाणि स्थावरा लक्षविंशतिः। कृमयोरूद्रलक्षाणि पक्षिणो दशलक्षकाः। त्रिंशल्लक्षाणि पशवश्चतुर्लक्षाणि मानवाः। कलौ मनुष्यगजयोरायुर्वर्षाणि १२० दिन ५ प्रासादवापीकूपनगरवृक्षकाकव्याघ्रसिंहानाम् १०००। गृहग्रामयोः ५०००। पिङ्गलानाम् १५०। कच्छप मकरयोः १५०। व्याघ्राणाम् ६४। शूकराणाम् १०। गवाम् २५। मृगस्य २४। अश्वानाम् ३२। भल्लूकवानरमण्डूकानाम् ३०। खरोष्ट्रयोः २५। पक्षिणाम् २०। मार्जार शृगालानाम् १२। कुक्कुटस्य ८। मूषकाणाम् ४। पिपीलिकानाम् १। मक्षिकास्वेदजादीनाम् दिन ३१।

कलौघट्टशककर्तृणां सौराष्ट्रनामानि युधिष्ठिरस्येन्द्रप्रस्थे ३०४४। उज्जयिन्यां विक्रमस्य १३५। नर्मदादक्षिणे शालिवाहनस्य १८०००। भविष्यविजयाभिनन्दनस्य १०००००। नागार्जुनस्य ४०००००। ततः ८२१ शेषकलौ सम्भले गौडब्राह्मणगृहे कल्क्यवतारो भविष्यति। पृथिव्यां क्षीरसिन्धोरुत्तरतो जम्बूद्वीपो दक्षिणतश्च शाककशाल्मल कुशक्रौञ्च गोमेद पुष्कराख्यानीति सप्तद्वीपानि। जम्बूद्वीपेऽप्रेतावृत्त भारतवर्षहरिवर्ष भद्राश्वकेतुमालरम्यक हिरण्यककुरु किंपुर वर्षाख्यानि नवखण्डानि। भूमेर्वेष्टनानुकारिणो लवण क्षीरदधि घृतेक्षुरसमध्वमृतमयाः सप्तसमुद्राः सन्ति। भूमेरधस्तातलवितलसुतलतलातल रसातल पाताल संज्ञकाः सप्तविभागश्च सन्ति। तत्र ब्रह्मणः आयुषोऽर्द्धगतम्। द्वितीयपरार्द्धे प्रथमवर्षस्य प्रथमदिनस्य सूर्यदर्शनात् १३ घट्यः २२ पलानि च व्यतीतानि। तत्र स्वायम्भुवः १ स्वारोचिषः २ उत्तमजः ३ तामसः ४ रैवतः ५ चाक्षुषः ६ इति षण्मनवोऽतीताः। वर्तमानस्य सप्तमवैवस्वतमनोः सप्तविंशतिमहायुगानि गतानि। अष्टाविंशति महायुगस्य च कृतत्रेताद्वापराख्यं युगचरणत्रयं व्यतीतम्।

वर्तमानस्य कलेः ५१२३ सौरवर्षाणि गतानि। सृष्ट्यादिकालाच्च-गतसौरवर्षगणः १९५५८८५१२३ अथ नर्मदोत्तरभागे श्रीमद्वीरविक्रमाणां राज्ञां सिंहासनाध्यासनादतीतो - तद्गणाः २०७९। नर्मदादक्षिणभागे शालिवाहनभूमिभुजंगानाब्दाः १९४४। चैत्रादौ नर्मदोदग्भागे गुरुमानेन 'राक्षस' नामाब्दसंवत्सरः।

अतोऽग्रे 'नल' नामाब्द प्रवेशः। 'राक्षस' नामाब्दसंवत्सरस्य फलम् - कोद्रवाः शालिमुद्गादिपीडितं च वरानने। सर्वधान्यानि चार्थानि राक्षसे पीडिताः प्रजाः।। अतोऽग्रे 'नल' नामाब्दसंवत्सरस्य फलम् -दुर्भिक्षं जायते घोरं धान्यमर्घमपीडितम्। नले च धनधान्यानि समाख्यातं वरानने।। राजशनिफलम् -शनैश्चरे भूमिपतौ सकृज्जलं प्रभूतरोगैः परिपीडिता जनाः। युद्धं नृपाणां बहुतस्कराद्भयं भवन्ति लोकाः क्षुधया प्रपीडिताः।। मन्त्रीगुरुफलम् -विविधधान्ययुता खलु मेदिनी प्रचुरतोयघनाः मुदिताः जनाः। नृपतयो जनपालनतत्पराः सुरगुरौ ननु मंत्रिसमागते।। सस्येशसूर्यफलम् - सस्याधिनाथे तरणौ हि पूर्वं धान्यं समर्थं बहवोऽपि चौराः। युद्धं नृपाणां जलदा जलाढ्याः स्वल्पं च सस्यं बहुभूरुहाश्च।। दुर्गेशबुधफलम् -विषयसाम्यसुखं शशिजे प्रभौ भवति राशिगते तु विशेषतः। शशिसुते यदि कीटकपालके पवियुग्द्रव्ययुजां न पयं क्वचित् ।। धनेशशनिफलम्-द्रविणपे रविजे विरलं धनं गदरताः धरणीपतयः सदा। अधनिका वणिजः कृषिजीविनो द्विजवराः परिपीडितमानसाः।। रसेशभौमफलम्-यदि धरातनयो रसपो भवेत्तररसराशियुता जनता शुभा। नरपतिर्विषमो जनताप्रदो न जलदो बहुवृष्टिकरो भुवि।। धान्येशशुक्रफलम्-सुभिक्षं जायते स्वल्पं सर्वधान्यविनाशनम्। शुक्रे धान्याधिपे जाते महर्घं जायते घृतम् ।। नीरसेशशनिफलम् -त्रपुपिण्डादिलोहानां कृष्णवस्त्रादिवस्तुनाम्। अर्घवृद्धिः प्रजायेत मन्दे नीरसनायके।। फलेशबुधफलम्-यदि बुधे फलपे फलमुत्तमं जलधरा जलदाः शुभमुत्तमम्। बहुतृणं कुसुमं कमलैर्युतं जनपदा जनसौख्य मुदान्विताः।। मेघेशबुधफलम् -अमृतरसैर्युत यदि वारिप बहुजलं तुषधान्यरसादिकम्। द्विजवरा यजनात्कृततत्परा विविधसौख्ययुता धरणी सदा।। नवमेघानां मध्ये नाम नामको मेघः तस्य फलम्- [illegible] ।। द्वादश मेघानां मध्ये नन्दसारी नामको मेघः तस्य फलम्-नन्दसारी महावृष्टिः।। रोहिणीभं पर्वते तस्य फलम् -पर्वते बिन्दुमात्रञ्च खण्डवृष्टिः।। संवत्सरनिवासः कुम्भकारगृहे तस्य फलम्- कुंभकारगृहे वासो तदृष्टं मध्यमं फलम्।। समयवाहन अश्वस्तस्य फलम् -अश्वारूढे बलारूढ भूमिकम्पो महाभयम्। राजानो विग्रहं यान्ति वृष्टिनाशो महर्घता।। वृष्टिप्रमाणकाढकाः-९६।। तत्र पर्वते ३८,समुद्रे २४,भूमौ २४। आर्द्रायां सूर्यप्रवेशः। आषाढकृष्ण ९ बुधे (२२.६.२२) ३५।५५ इष्ट (रा.७।३५) रेवतीनक्षत्रे, शोभनयोगे, गरकरणे सूर्यस्यार्द्रानक्षत्र प्रवेशः।। तिथिनवमीफलम् -नवम्यां त्वतिबाधनम् ।। बुधवारफलम् - बुधे क्षेमं सुभिक्षं च।। रेवती नक्षत्रफलम् -नृपविघ्नसनादीनि पौष्णर्क्षे कुरुते फलम् ।। शोभनयोगफलम् - शोभनयोगे सुभिक्षे जलसंकीर्णे नृपाःस्वस्थाः शुभप्रदाः।। वेलाफलम् -रात्रौ सस्याभिवृद्धये।।

## ।। संवत्सर शकाङ्काभ्यां सुभिक्षादि विचारः।।

तत् प्रभवादि द्विगुणमित्यादिना शेषं (४) फलं दुर्भिक्षम्। त्रिघ्ने संवत्सर इत्यादिना शेषं (५) फलं दुर्भिक्षम्। द्विघ्नसंवत्सर इत्यादिना शेषं (४) फलं दुर्भिक्षम्। शकतश्चशेषं (६) फलं समता। सर्वसंक्रान्तिमुहूर्त्तयोगाः (३७५) चन्द्रदर्शनाश्च (३७५)। अतोऽत्रवर्षे समर्घताकरम्। अष्टोत्तरीयायैक्यम् (९३) व्ययैक्यञ्च (९३)। तेन विन्ध्यदक्षिणवासिनोऽर्थसुखभाजः। विंशोत्तरीयायैक्यम् (८१) व्ययैक्यञ्च (११७)। तेन विन्ध्योत्तरवासिनोऽर्थसुखभाजः। वर्षेऽस्मिन् सोमवती (२) भौमवती अमावस्या (३) शुभवारान्वितामा (६) वर्षविश्वा (१०) एवमस्मिन् वर्षे समर्घताकरयोगः। वर्षारम्भे पञ्च सेटकसममिति। अतोऽग्रेह्रासवृद्धिः सामान्या। रसादिकाः सामान्याः।

## ।। अथ विंशोपकाः ।।

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्षा | ७ | आलस्यम् | १५ | पापप्रवृत्तिः | ९ | चौरशम् | १७ | अतिवृष्टिः | १९ |
| धान्यम् | ५ | उद्यम् | १३ | पुण्यत्व | ९ | अग्निभय | ११ | अनावृष्टिः | ७ |
| तृणम् | ५ | शान्तिः | १५ | व्याधिः | ७ | अग्निनाश | १३ | स्वचक्रम् | ९ |
| शीतम् | १३ | क्रोधः | १३ | भैषज्य | ७ | विषभयः | ७ | परचक्रम् | १५ |
| उष्णम् | १७ | दम्भः | ५ | उग्रता | १३ | विषनाश | ११ | नायकत्वम् | ३ |
| वायुः | १३ | भेदः | ३ | आचारः | ११ | सेवकत्वम् | ९ | रत्नम् | ११ |
| वृद्धिः | १५ | मैत्री | १५ | अनाचारः | ३ | स्वामित्वम् | १९ | वस्त्रम् | ९ |
| विनाशः | १५ | रसनिष्पत्तिः | ९ | मरणम् | ९ | निजधनम् | ७ | घृतम् | ९ |
| विग्रहः | ११ | फलनिष्पत्तिः | १३ | जन्मः | १५ | परधनम् | ७ | तैलम् | ५ |
| क्षुधाः | १५ | उत्साहः | ११ | देशोपद्रव | ५ | शलभाः | ३ | दुकूलम् | ५ |
| तृष्णाः | ७ | उग्रप्रवृत्तिः | ३ | देशस्वा. | १५ | शूलः | ३ | ऊर्णवस्त्र | १७ |
| निद्राः | ७ | सौम्यप्रवृत्तिः | ३ | चौरभयः | १३ | मूषकः | १५ | सौक्ष्मव. | १३ |

**वर्षलग्नम् २।१९।१५।१३**

४ रा. २ ५ ३ १ सू. चं. १२ बु. ६ ७ ९ गु. ११ शु. ८ के. मं. १० श.

**नवरोजप्रवेशाङ्गम् ७।२१।१।१९**

९ ७ चं. मं. १० शु. श. ८ के. ६ बु. ११ गु. ५ १२ सू. २ रा. ४ १ ३

**शारदधान्योत्पत्तिः २।२६।११।३९**

४ सू. २ बु. ५ ३ १ रा. ६ गु. १२ शु. चं. ७ के. ९ ११ मं. ८ १० श.

**ग्रैष्मिकधान्योत्पत्तिः ७।७।२६।४३**

९ ७ के. १० श. सू. बु. ८ शु. ६ ११ ५ चं. १२ गु. २ ४ १ रा. ३ मं.

## ।। श्री संवत् २०७९ शकः १९४४ वर्षे ग्रहण विवरणम् ।।

श्री संवत् २०७९ में विश्व में चार ग्रहण लग रहे हैं। जिनमें दो सूर्यग्रहण व दो चन्द्रग्रहण होंगे। किन्तु भारतवर्ष में एक चन्द्रग्रहण व एक सूर्यग्रहण दृश्य होगा। दृश्य ग्रहणों का विवरण नीचे दिया जा रहा है।

१. सूर्यग्रहण- वैशाखकृष्ण ३० शनिवार ( ३०अप्रैल/१ मई २०२२ ) को लगने वाला खण्डसूर्यग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा।

यह ग्रहण उत्तरी अन्टार्कटिका के अधिकतम भाग, दक्षिणी अमेरिका के दक्षिण भाग,दक्षिण प्रशान्तमहासागर और दक्षिण अटलांटिक महासागर में दिखाई देगा। भारतीय मानक समयानुसार ग्रहण का प्रारम्भ रात्रि में १२ बजकर १६ मिनट पर तथा मोक्ष रा.शे. ४ बजकर ८ मिनट पर होगा। ग्रासमान- ०.६३९

२. चन्द्रग्रहण- वैशाखशुक्ल १५ सोमवार ( १६ मई २०२२ ) को लगने वाला खग्रास चन्द्रग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा। यह ग्रहण पश्चिमी यूरोप, मध्य-पूर्व भाग,अफ्रीका,उत्तर-दक्षिण अमेरिका,अन्टार्कटिका,अटलांटिक महासागर और प्रशान्त महासागर में दिखाई देगा।

ग्रहण का प्रारम्भ चन्द्रास्त के समय मेडागास्कर,केन्या, इथोपिया,इजिप्ट, सूडान, बुलगारिया,रोमानिया,पोलैण्ड,जर्मनी और नार्वे में दिखाई देगा।

ग्रहण का मोक्ष चन्द्रोदय के समय न्यूजीलैंड,फिजी,उत्तरी प्रशान्तमहासागर ,कनाडा के उत्तर-पश्चिमी भाग तथा अलास्का के दक्षिण-पूर्व के अधिकतम भाग में दिखाई देगा।भारतीय मानक समयानुसार ग्रहण का प्रारम्भ दिन में ७ बजकर ५८ मिनट पर तथा मोक्ष दिन में ११ बजकर२५ मिनट पर होगा। ग्रासमान- १.४२०

३. सूर्यग्रहण- कार्तिककृष्ण ३० मंगलवार ( २५ अक्टूबर २०२२ ) को लगने वाला खण्डसूर्यग्रहण भारत में ग्रस्तास्त सूर्यग्रहण के रुप में दृश्य होगा। यह ग्रहण यूरोप, मध्य-पूर्व, उत्तरी अफ्रीका, पश्चिमी एशिया, उत्तरीअटलांटिक महासागर, उत्तर हिन्दमहासागर में दृश्य होगा।

भारत में यह ग्रहण दिन में सूर्यास्त के पूर्व प्रारम्भ हो जायेगा। यह भारत के अधिकांश भाग से देखा जा सकेगा, किन्तु अंडमान और निकोबार द्वीप समूह और पूर्वोत्तर के कुछ भागों जैसे आइजॉल, डिब्रूगढ़, इंफाल, इंटानगर, कोहिमा, शिवसागर, सिलचर, तमेलांग में ग्रहण नहीं देखा जा सकेगा। सूर्यास्त होने के कारण ग्रहण का मोक्ष भारत में दृश्य नहीं होगा। यूनिवर्सल समय ( U.T. ) के अनुसार ग्रहण का प्रारम्भ दिन में २ बजकर २९ मिनट पर, मध्य सायं ४ बजकर ३०मिनट पर तथा मोक्ष सायं ६ बजकर ३२ मिनट पर होगा। ( भारत के प्रमुख स्थानों में इस ग्रहण का विवरण बगल की सारिणी में दिया गया है। ) ग्रासमान- ०.८६१

४. चन्द्रग्रहण- कार्तिकशुक्ल १५ मंगलवार ( ८ नवम्बर २०२२ ) को लगने वाला खग्रास चन्द्रग्रहण भारत में ग्रस्तोदित चन्द्रग्रहण के रुप में दृश्य होगा। यह ग्रहण उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, एशिया, अटलांटिक महासागर और प्रशान्त महासागर में दिखाई देगा।

ग्रहण का प्रारम्भ चन्द्रास्त के समय अर्जेन्टिना के पश्चिमी भाग, चिली, बोलविया, ब्राजील के पश्चिमी भाग,उत्तरी अटलान्टिक महासागर में दिखाई देगा।

ग्रहण का मोक्ष चन्द्रोदय के समय हिन्द महासागर, भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, कजाकिस्तान, उजबेकिस्तान और पूर्वी रूस में दिखाई देगा।

चन्द्रोदय के समय भारत के सभी स्थानों में यह ग्रहण दिखाई देगा। खण्ड और खग्रास ग्रहण का प्रारम्भ भारत के किसी स्थान से दिखाई नहीं देगा,क्योंकि चन्द्रोदय होने से पूर्व ग्रहण प्रारम्भ हो जायेगा। खण्ड और खग्रासचन्द्रग्रहण का मोक्ष भारत के पूर्वी भागों में दिखाई देगा, देश के बाकी हिस्सों में खण्ड चन्द्रग्रहण का मोक्ष ही दिखाई देगा। भारतीय मानक समयानुसार ग्रहण का प्रारम्भ दिन में २ बजकर३९ मिनट पर,मध्य दिन में ४ बजकर २९ मिनट पर तथा मोक्ष सायं ६ बजकर १९ मिनट पर होगा। ( भारत के प्रमुख स्थानों पर चन्द्रोदय का विवरण बगल की सारिणी में दिया गया है। ) ग्रासमान- १.३६३

अनिष्टग्रहणेदानम्। सुवर्ण निर्मितं नागं सतिलं कांस्य भाजनम्। सदक्षिणं सवस्त्रञ्च श्रोत्रियाय निवेदयेत्। सौवर्णं राजतं वापि बिम्बं कृत्वा स्वशक्तितः। उपरागोद्भवक्लेशच्छिदे विप्राय कल्पयेत्। मन्त्राः। तमोमयमहाभीम सोम सूर्य विमर्दन। हेमनागप्रदानेन मम शान्तिप्रदो भव। विधुन्तुद नमस्तुभ्यं सिंहिकानन्दनाच्युत। दानेनानेन नागस्य रक्षमांवेध जाद्भयात्। गोदानंभूमिदाने च स्वर्णदानं विशेषतः। ग्रहणक्लेशनाशाय दैवज्ञाय निवेदयेत। अनिष्ट ग्रहणं न विलोक्यम्। गंगा कनखलं पुण्य प्रयाग। पुष्करं तथा कुरुक्षेत्रं महापुण्यं राहुग्रस्ते दिवाकरे। भोजने विशेषः। आदित्येऽहनि संक्रान्ति ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः। पारण चोपवासं न कुर्यात् पुत्रवान् गृही।

## ।। श्री संवत् २०७९ शकः १९४४ ।।

कार्तिककृष्ण ३० भौमे ( दिनांक २५ अक्टूबर २०२२ ई० )
काश्यां ग्रस्तास्त खण्डग्रास सूर्यग्रहणम्।

| काश्यां | | घं. मि. (I.S.T) |
|---|---|---|
| स्पर्श | सायं | ४।४२ |
| सूर्यास्त | सायं | ५।२२ |

वायुमण्डले
उ. पू. प. द. स्पर्श
'स्वाती' नक्षत्रे 'तुला' राशौ

| ग्रहणफलम् | |
|---|---|
| मेष | स्त्रीपीडा |
| वृष | सौख्यम् |
| मिथुन | चिन्ताः |
| कर्क | व्यथा |
| सिंह | श्रीः |
| कन्या | क्षतिः |
| तुला | घातः |
| वृश्चिक | हानिः |
| धनु | लाभः |
| मकर | सुखम् |
| कुम्भ | माननाशः |
| मीन | मृत्युतुल्यकष्टम् |

भारत के प्रमुख स्थानों पर ग्रस्तास्त खण्डसूर्यग्रहण ( २५ अक्टूबर २०२२ ) का विवरण।

| स्थान | स्पर्श (I.S.T) | मध्य (I.S.T) | सूर्यास्त (I.S.T) |
|---|---|---|---|
| विजयवाड़ा | सा. ५।३ | -- | सा. ५।४० |
| अहमदाबाद | सा. ४।३८ | सा. ५।३७ | सा. ६।३ |
| इलाहाबाद | सा. ४।४१ | -- | सा. ५।२७ |
| अमृतसर | सा. ४।२० | सा. ५।२५ | सा. ५।४८ |
| बेंगलोर | सा. ५।१२ | सा. ५।५१ | सा. ५।५६ |
| भागलपुर | सा. ४।४५ | -- | सा. ५।७ |
| भोपाल | सा. ४।४२ | सा. ५।३८ | सा. ५।४७ |
| भुवनेश्वर | सा. ४।५७ | -- | सा. ५।२६ |
| चण्डीगढ़ | सा. ४।२४ | सा. ५।२७ | सा. ५।३८ |
| चेन्नई | सा. ५।१५ | -- | सा. ५।४५ |
| कोचिन | सा. ५।२३ | सा. ५।५४ | सा. ६।४ |
| कूचबिहार | सा. ४।४४ | -- | सा. ४।५६ |
| कटक | सा. ४।५६ | -- | सा. ५।२६ |
| दार्जिलिंग | सा. ४।४१ | -- | सा. ५।७ |
| देहरादून | सा. ४।२६ | सा. ५।२८ | सा. ५।३७ |
| दिल्ली | सा. ४।२९ | सा. ५।३१ | सा. ५।४२ |
| गांधीनगर | सा. ४।३८ | सा. ५।३७ | सा. ६।६ |
| गंगटोक | सा. ४।४२ | -- | सा. ४।५८ |
| गुवाहाटी | सा. ४।४५ | -- | सा. ४।४७ |
| गया | सा. ४।४० | -- | सा. ५।१५ |
| हरिद्वार | सा. ४।२६ | सा. ५।२८ | सा. ५।३६ |
| हजारीबाग | सा. ४।४७ | -- | सा. ५।१४ |
| हैदराबाद | सा. ४।५९ | सा. ५।४६ | सा. ५।४८ |
| जयपुर | सा. ४।३२ | सा. ५।३३ | सा. ५।५० |
| जालंधर | सा. ४।२० | सा. ५।२५ | सा. ५।४३ |
| जम्मू | सा. ४।१८ | सा. ५।२३ | सा. ५।४७ |
| कोलकाता | सा. ४।५२ | -- | सा. ५।४ |
| लखनऊ | सा. ४।३७ | -- | सा. ५।२९ |
| मुम्बई | सा. ४।५७ | सा. ५।४३ | सा. ६।९ |
| मुजफ्फरपुर | सा. ४।४२ | -- | सा. ५।१२ |
| मैसूर | सा. ५।१४ | सा. ५।५१ | सा. ६।० |
| नासिक | सा. ४।४८ | सा. ५।४२ | सा. ६।५ |
| पटना | सा. ४।४३ | -- | सा. ५।१४ |
| पूणे | सा. ४।५२ | सा. ५।४४ | सा. ६।६ |
| रायपुर | सा. ४।५१ | -- | सा. ५।३२ |
| रांची | सा. ४।४८ | -- | सा. ५।१५ |
| सम्भलपुर | सा. ४।५२ | -- | सा. ५।२२ |
| शिमला | सा. ४।२४ | सा. ५।२७ | सा. ५।३९ |
| सिलीगुड़ी | सा. ४।४२ | -- | सा. ५।७ |
| श्रीनगर | सा. ४।१५ | सा. ५।२१ | सा. ५।४५ |
| उज्जैन | सा. ४।४१ | सा. ५।३८ | सा. ५।५३ |
| बड़ोदरा | सा. ४।४१ | सा. ५।३८ | सा. ६।४ |

## ।। श्री संवत् २०७९ शकः १९४४ ।। २

कार्तिकशुक्ल १५ भौमे ( ८ नवम्बर २०२२ ई० )
काश्यां ग्रस्तोदित खग्रास चन्द्रग्रहणम्।

| काश्यां | | घं. मि. (I.S.T) |
|---|---|---|
| चन्द्रोदय | सायं | ५।१० |
| खग्रास समाप्ति | सायं | ५।१३ |
| मोक्ष | सायं | ६।१९ |

अग्निमण्डले
उ. पू. प. द. मोक्ष
'भरणी' नक्षत्रे 'मेष' राशौ

| ग्रहणफलम् | |
|---|---|
| मेष | घातः |
| वृष | हानिः |
| मिथुन | लाभः |
| कर्क | सुखम् |
| सिंह | माननाशः |
| कन्या | मृत्युतुल्यकष्टम् |
| तुला | स्त्रीपीड़ा |
| वृश्चिक | सौख्यम् |
| धनु | चिन्ताः |
| मकर | व्यथा |
| कुम्भ | श्रीः |
| मीन | क्षतिः |

भारत के प्रमुख स्थानों पर ग्रस्तोदित खग्रास चन्द्रग्रहण ( ८ नवम्बर २०२२ ) का ग्रहण विवरण।

| स्थान | चन्द्रोदय (I.S.T) | स्थान | चन्द्रोदय (I.S.T) |
|---|---|---|---|
| अगरतला* | सा. ४।३८ | जम्मू | सा. ५।३१ |
| अहमदाबाद | सा. ५।५६ | कोहिमा* | सा. ४।२४ |
| आइजॉल* | सा. ४।३२ | कोल्हापुर | सा. ५।५९ |
| अजमेर | सा. ५।४३ | कोलकाता* | सा. ४।५२ |
| इलाहाबाद | सा. ५।१५ | लखनऊ | सा. ५।१६ |
| अमृतसर | सा. ५।३३ | माउण्टआबू | सा. ५।५३ |
| बेंगलोर | सा. ५।५० | मुम्बई | सा. ६।१ |
| भागलपुर* | सा. ४।५४ | मुजफ्फरपुर* | सा. ४।५९ |
| भोपाल | सा. ५।३६ | नासिक | सा. ५।५६ |
| भुवनेश्वर* | सा. ५।६ | पटना* | सा. ५।१ |
| चण्डीगढ़ | सा. ५।२३ | पूणे | सा. ५।५८ |
| चेन्नई | सा. ५।३९ | पूरी* | सा. ५।७ |
| दार्जिलिंग* | सा. ४।४६ | रायपुर | सा. ५।२२ |
| देहरादून | सा. ५।२२ | रांची* | सा. ५।३ |
| दिल्ली | सा. ५।२९ | सम्भलपुर | सा. ५।१२ |
| डिब्रूगढ़* | सा. ४।१७ | शिमला | सा. ५।२४ |
| गंगटोक* | सा. ४।४४ | सिलीगुड़ी* | सा. ४।४६ |
| गुवाहाटी* | सा. ४।३४ | श्रीनगर | सा. ५।२९ |
| गया* | सा. ५।३ | उदयपुर | सा. ५।४९ |
| हरिद्वार | सा. ५।२१ | उज्जैन | सा. ५।४३ |
| हजारीबाग* | सा. ५।२ | बड़ोदरा | सा. ५।५४ |
| हैदराबाद | सा. ५।४० | तमिलांग* | सा. ४।२५ |

(*) चिह्नित स्थानों पर खग्रास चन्द्रग्रहण का मोक्ष दृश्य होगा।

ग्रहण सूतक- धर्मशास्त्रों के अनुसार चन्द्रग्रहण में ग्रहण से पूर्व ९ घंटे और सूर्यग्रहण में १२ घंटे पहले ग्रहण का सूतक होता है। इसमें बालक, वृद्ध और रोगी को छोड़कर अन्य लोगों के लिए भोजन निषिद्ध है।

"सूर्यग्रहे तु नाश्नीयात् पूर्वं यामचतुष्टयम्।
चन्द्रग्रहे तु यामांस्त्रीन् बालवृद्धातुरैर्विना।।"

श्रद्धालु धार्मिक जनता को धर्म शास्त्रीय वचन के अनुसार भोजन निवृत्ति के साथ-साथ धार्मिक कृत्य श्राद्ध दान आदि भी करना चाहिए। ग्रहण में जपा गया मंत्र सिद्धिप्रद होता है। यह अनुभूत है।

☞ ग्रहण गणित तथा उदयास्त खगोल विज्ञान केन्द्र कोलकाता के सौजन्य से प्राप्त।

## संवत्सरफल

इस वर्ष के प्रारम्भ में '*राक्षस*' नामक संवत्सर रहेगा। *वैशाखकृष्ण १३ गुरुवार* (२८ अप्रैल २०२२) को २५।२९ इष्ट (दि.३।४५) पर '*नल*' नामक संवत्सर का प्रवेश होगा, किन्तु वर्षपर्यन्त संकल्पादि में 'राक्षस' संवत्सर का ही विनियोग करना चाहिए। इस वर्ष राजा 'शनि' तथा मन्त्री 'गुरु' हैं। राजा तथा मन्त्री में परस्पर समभाव है। परन्तु इस वर्ष राजा शनि हैं, इसलिए प्रजा को कई कष्टों से गुजरना होगा। जगल्लग्न के विचार से लग्नेश बुध, सूर्य राहु के साथ है। अत: प्रजा के कल्याण के लिये अनेक योजनाये बनेंगी। अमेरिका को कई गम्भीर समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। गुरु पर शनि की दृष्टि से विमान दुर्घटना या भयंकर प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी। शनि मंगल का द्विद्वादश योग विश्व के कुछ राष्ट्रों में किसी विषय को लेकर स्थिति उग्ररुप धारण कर सकती है। मित्र देशों में भी राजनयिक सम्बन्ध अकस्मात बिगड़ सकते हैं। ऐसी स्थिति में राष्ट्रों में ध्रुवीकरण की प्रवृत्ति जोर पकड़ेगी। **वर्षलग्न के विचार से** लग्नेश नीच राशि में है। शनि की दृष्टि होने से यह ग्रह स्थिति विश्व में अघटित घटना चक्र का आभास करायेगी। किसी राष्ट्र विशेष में भूकम्प जलप्लवन आदि प्राकृतिक प्रकोप से जनधन की हानि होगी। यूरोपीय देशों की ग्रह स्थिति से पश्चिमी जर्मनी फ्रांस इटली रोम स्पेन ब्रिटेन आयरलैण्ड में कहीं भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप होगा। मुस्लिम राष्ट्रों में आन्तरिक संघर्ष से सत्ता परिवर्तन के योग है। नव वर्ष प्रवेश में भारत की प्रभाव राशि मकर है। लेकिन वृश्चिक लग्न में नव वर्ष का उदय होने से पश्चिमी प्रान्त विशेष में कहीं नौ मास तक दुर्भिक्ष की स्थिति बनी रहेगी। उत्तर में विपरीत जलवायु के कारण फसलें प्रभावित होगी। सोना-चाँदी धातु में मँहगाई अधिक बढ़ेगी। लोगों में विविध प्रकार के रोगों की व्याप्ति अधिक होगी। चोरी डकैती लूटमार एवं भ्रष्टाचार की वारदातें अधिक घटित होगी। **आर्द्राप्रवेशाङ्ग के विचार** से आर्द्रा प्रवेश कुण्डली में धनुलग्न में है। लग्नेश गुरु सुख भाव में जलराशि में है एवं चन्द्र भी जल राशि में है। भारत के पश्चिमी व पूर्वी भागों में महाराष्ट्र, कर्नाटक, गुजरात, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब आदि के अधिक क्षेत्रों में गर्मी का तापमान अधिक रहेगा। भीषण गर्मी पड़ेगी। पश्चिमी-पूर्वी भारत में मानसून की वर्षा तय समय पर होगी। कहीं दुर्भिक्ष सूखा पड़ेगा। इसलिये समाज व सरकार को सावधान होने की आवश्यकता है। जलीय ग्रह शुक्र स्वराशि में बुध के साथ है, अत: कहीं बाढ़ भूस्खलन आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी। **शारदधान्य एवं ग्रैष्मिकधान्य के विचार से** शरद ऋतु की फसलें पर्याप्त होगी। ग्रीष्मकाल की फसलों में प्राकृतिक प्रकोप से हानि संभव है।

## मेषादि १२ राशियों का वार्षिक फल

**मेष-** मेषराशि वालों के लिए यह वर्ष उन्नति का वर्ष रहेगा। लम्बी दूरी की यात्रायें होगी। वाहन खरीदने की योजना सफल होगी। भूमि का क्रय विक्रय आसानी से होगा। आपकी लोकप्रियता बढ़ेगी। चिन्तायें बढ़ेगी। पित्त विकार और सन्धिवात से परेशान रहेंगे। घर परिवार में सामञ्जस्य बना रहेगा। सोचे हुये कार्य आसानी से पूरे होंगे। कारोबारी गतिविधियाँ अच्छे ढंग से चलती रहेगी। कुटुम्बीय तनाव समाप्त होंगे। बड़े व्यवसायियों से मेल जोल नये व्यवसाय के मार्ग प्रसस्त करेगा। विद्यार्थियों के लिये अध्ययन क्षेत्र में अभिरुचि कम होगा। वैवाहिक जीवन में तालमेल अच्छा बना रहेगा। नौकरी में संघर्ष बढ़ सकता है। १,३,८,११ मास कष्टदायक रहेंगे।

**वृष-** वृषराशि वालों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। श्वास सम्बन्धी सावधानियाँ रखें। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न होंगे। भाई बहनों से सहायता मिलेगा। नवीन सम्पत्ति खरीदने के लिये स्थिति अच्छी रहेगी। माता पिता की ओर से सहयोग मिलेगा। विद्यार्थि वर्ग का पढ़ाई के प्रति रुझान बढ़ेगा। सन्तान पक्ष से भावनात्मक लगाव बनेगा। अदालत के मामलों में धीमी गति से प्रगति होगी। वैवाहिक जीवन सुखी रहेगा। नौकरी में स्थिति में सुधार होगा। राजनीति के क्षेत्र में मतभेद बढ़ेंगे। मन कुछ अशांत एवं बोझिल बना रहेगा। सरकारी कार्य पूर्ण होने से आगे का मार्ग प्रशस्त होगा। घर का वातावरण सुखद बना रहेगा। शेयर बाजार का व्यवसाय करने वालों को इस वर्ष अच्छा मुनाफा होगा। २,५,१० मास कष्टदायक रहेंगे।

**मिथुन-** मिथुनराशि वालों के लिए यह वर्ष **शनि की ढैया** रहेगी। संघर्ष के बाद कार्यो में सफलता मिलेगी। अनावश्यक वाद विवाद से बचें। वर्ष के मध्य में लम्बी दूरी की यात्रा होने की सम्भावना रहेगी। कार्य क्षेत्र की परेशानी के कारण मानसिक परेशानी बढ़ेगी। स्थानान्तरण होने की सम्भावना हो सकती है। स्वास्थ्य सम्बन्धी छोटी-छोटी परेशानियाँ हो सकती है। भाई-बहनों के साथ सहयोगात्मक व्यवहार बना रहेगा। भूमि मकान वाहन के क्रय विक्रय के लिये लाभ कारक स्थिति बनी रहेगी। विद्यार्थियों को पढ़ाई क्षेत्र में अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता रहेगी। वैवाहिक जीवन में पति पत्नी के मध्य वैचारिक मतभेद बने रहेंगे। नौकरी में स्थान परिवर्तन हो सकता है। ४,८,१२ मास कष्टदायक रहेंगे।

**कर्क-** कर्कराशि वालों के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। धन लाभ में आने वाली परेशानियाँ कम होगी। इष्ट मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा। भौतिक सुख साधनों पर अधिक खर्च होगा। घरेलू समस्याओं का समाधान होगा। माता-पिता के साथ अच्छे सम्बन्ध बने रहेंगे। प्रतिष्ठित लोंगो से भेंट होने की सम्भावना रहेगी। विद्यार्थियों के लिये यह वर्ष अच्छा रहेगा। पढ़ाई में जिज्ञासा उत्पन्न होगी। सन्तान पक्ष के साथ सामान्य मतभेद हो सकते हैं। कोर्ट कचहरी वाले मामलों में समाधान मिलेगा। वैवाहिक जीवन में पति पत्नी अपने दायित्वों के प्रति उदासिन न रहें सकारात्मक विचार धारा मन में बैठाने का प्रयास करें। नौकरी करने वालों की समस्यायें कम होगी। २,३,९ मास कष्टदायक रहेंगे।

**सिंह-** सिंहराशि वालों के लिए यह वर्ष उन्नति कारक रहेगा। घर परिवार में खुशी का वातावरण बनेगा। रुका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। विदेश से लाभ होगा। आर्थिक उन्नति के लिये प्रयासरत रहें। संगीत गायन चित्रकला मनोरंजन के साधनों में रुचि बढ़ेगी। भाई बहनों का पारस्परिक सौहार्द बना रहेगा। नवीन सम्पत्ति क्रय विक्रय की स्थिति अच्छी होगी। विद्यार्थियों के लिये अध्ययन के क्षेत्र में अच्छी संभावनायें रहेगी। प्रेम सम्बन्ध में एक दूसरे के बीच सामंजस्य बना रहेगा। सन्तान पक्ष की उन्नति के द्वार खुलेगे। विरोधी पक्ष का दबाव कम होगा। दाम्पत्य सुख में वृद्धि होगी। किसी धर्म स्थल की यात्रा का योग बनेगा। व्यवसाय में उन्नति के साथ नौकरी में पदोन्नति हो सकती है। ३,७,११ मास कष्टदायक रहेंगे।

**कन्या-** कन्याराशि वालों के लिए यह वर्ष शान्तिकारक होगा। अच्छे उद्देश्य के लिये सफलता प्राप्त होगी। जीवन साथी को स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्तायें बनी रहेगी। शल्य चिकित्सा हो सकती है। घर में चल रहे विवादों में शान्ति बनाये रखे अन्यथा विवाद भड़केगा। विद्यार्थी गण मानसिक संतुलन बनाये रखे जरा सी चूक से आप असफल हो सकते हैं। सन्तान पक्ष से अधिक सतर्क रहना होगा। पति पत्नी में अकारण मतभेद बनेगा। कोर्ट कचहरी के कार्यो में सफलता दिखाई पड़ेगी। भाई-बहन का सहयोग प्राप्त होगा। मकान-भूमि तथा वाहन खरीदने का योग है। माता-पिता का स्वास्थ्य बाधायुक्त रहेगा। व्यवसायियों के लिए यह वर्ष अच्छा होगा। नौकरी पेशा वाले भी अच्छी उन्नति प्राप्त करेंगे। २,४,९ मास कष्टदायक रहेंगे।

**तुला-** तुलाराशि वालों के लिए इस वर्ष **शनि की ढैया** रहेगी। आपका जीवन में संघर्ष कम नहीं होगा। श्रम अधिक करने पर फल कम मिलेगा। सन्तान की ओर से शुभ समाचार मिलेंगे। भूमि भवन या वाहन सम्बन्धी उपलब्धियाँ या उनसे आय संभव है। दाम्पत्य जीवन में कोई गंभीर विवाद आ सकता है। सार्वजनिक यश प्रतिष्ठ बढ़ेगी। लम्बी यात्रा होगी। विद्यार्थियों के लिये यह वर्ष पढ़ाई के लिये अच्छा रहेगा। प्रेम सम्बन्धों में परस्पर आकर्षक बढ़ेगा। किसी पर्यटक स्थल में जाने की योजना बनेगी। शत्रुपक्ष से सावधानी रखें। व्यापार में लाभ होगा। आजीविका के लिये शुभ समय रहेगा। नौकरी में जुड़े व्यक्तियों के लिये लाभ में वृद्धि होगी। विवेक पूर्वक कार्य करें। १,७,१० मास कष्टदायक रहेंगे।

**वृश्चिक-** वृश्चिकराशि वालों के लिए यह वर्ष प्रतिकूल रहेगा। आर्थिक मामलों में सुविधा बढ़ेगी। माता का स्वास्थ्य बाधायुक्त रहेगा। कहीं दूर की यात्रा होगी। कानूनी मामलों में अधिक सावधानी बरतें। सन्तान की ओर से चिन्ता करनी पड़ेगी। घरेलू खर्च बढ़ेगा। भाई बहनों का तालमेल कम रहेगा। भूमि मकान वाहन खरीदने का योग बनेगा। माता पिता की सलाह लें उपयोगी हो सकती है। सामाजिक मान प्रतिष्ठादि से सजग रहें। प्रेम सम्बन्ध में मतभेद बन सकते हैं। सन्तान पक्ष के साथ अच्छी सफलता मिलेगी। वैवाहिक जीवन में घरेलू समस्याओं में सामान्य परेशानी आयेगी। व्यवसाय में सामान्य लाभ होगा। २,९,१२ मास कष्टदायक रहेंगे।

**धनु-** धनुराशि वालों को पैर में **शनि की साढ़ेसाती** का प्रभाव रहेगा। रोजगार क्षेत्रों में साधारण परिवर्तन की दिशा दिखेगी। पिछले विवाद शांत नहीं होंगे। शत्रु आपके विरुद्ध कोई न कोई षडयन्त्र करते रहेंगे। परन्तु नुकसान नहीं होगा। सन्तान के प्रयास सफल होंगे। राज्य पक्ष से मदद के लिये किये गये प्रयास सफल होंगे। ऋण प्रबन्धन भी सुधर जायेगा। फसा पैसा वापस मिल जायेगा। धार्मिक कार्यो में खर्च बढ़ेगा। सरकारी मामलों में सावधानी बरतें कोई समस्या आ सकती है। विद्यार्थियों के लिये यह वर्ष सामान्यत: ठीक रहेगा। क्रोध पर नियंत्रण रखें। स्वास्थ्य पर ध्यान दें। नौकरी से जुड़े व्यक्ति अच्छा लाभ उठा सकते हैं। व्यापारी वर्ग को मेहनत ज्यादा करनी होगी। ३,७,९ मास कष्टदायक रहेंगे।

**मकर-** मकरराशि वालों को हृदय में **शनि की साढ़ेसाती** का प्रभाव रहेगा। मानसिक चिन्तायें बढ़ेगी। वाद-विवाद से बचें। निरर्थक दौड़-धूप करनी पड़ेगी। हर कार्य में बाधा उत्पन्न होगी। कोर्ट-कचहरी के कार्य में कोई प्रगति नहीं होगी। भाई-बहनों के साथ सम्बन्ध में सुधार आयेगा। सन्तान पक्ष से चिन्ता हो सकती है। नया कार्य करने की योजना सफल होगी। नया वाहन खरीदने का योग प्राप्त होगा। विद्यार्थियों के लिये अध्ययन के क्षेत्र में कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। धार्मिक कार्यो में खर्च अधिक होगा। व्यापार में उतार चढ़ाव रहेगा। नौकरी वालों की परेशानियां बढ़ेगी। २,९,११ मास कष्टदायक रहेंगे।

**कुम्भ-** कुम्भराशि वालों को **शनि की साढ़ेसाती** का प्रभाव रहेगा। संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी। स्वास्थ सम्बन्धी चिन्तायें बढ़ेगी। रक्त से सम्बन्धित बीमारी से सावधानी रखे। विशेष रुप से मानसिक तनाव से बचने की कोशिश करें। घरेलू समस्याओं को लेकर परेशानियाँ बढ़ सकती है। आर्थिक मामलों में योजनाबद्ध रुप से कार्य करने से लाभकारी संकेत मिल रहे हैं। पूंजी निवेश पर ध्यान रखकर कार्य करें। वाहन से चोट-चपेट की संभावना है। कार्य क्षेत्र की दृष्टि से कुछ उतार-चढ़ाव रहेगा। व्यापार जीविका में अतिरिक्त परिश्रम करने से सुधार होगा। पारिवारिक मामले में मतभेद उभर सकते हैं। अपनी सोच को साकारात्मक रखे। विद्यार्थीगणों को ज्यादा मेहनत से लाभ होगा। ४,८,१२ मास कष्टदायक रहेंगे।

**मीन-** मीनराशि वालों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। बहुप्रतीक्षित उपलब्धियाँ प्राप्त होगी। सन्तान के लिये शुभ समय रहेगा। नाते रिश्तेदारों में मान सम्मान बढ़ेगा। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी। धार्मिक कार्य सम्पन्न होंगे। माता-पिता का स्वास्थ्य बाधायुक्त रहेगा। अविवाहितों के लिये शुभ समय रहेगा। शादी का योग बनेगा। यात्राओं में अत्यधिक व्यय होगा। एलर्जी एवं श्वास रोग से चिन्ता होगी। व्यापारियों के कारोबार में अच्छी सफलता मिलेगी। नौकरी पेशा लोंगो में उदासीनता का भाव रहेगा। काम धन्धे के अलावा अन्य गतिविधियों में सहभागिता बढ़ेगी। पति पत्नी के बीच सुख सहयोग बना रहेगा। कोर्ट कचहरी के कार्यो में साकारात्मक स्थिति बन सकती है। ३,६,९,१२ मास कष्टदायक रहेंगे।

## चैत्रादि मासफल

**चैत्रशुक्ल से वैशाखकृष्ण तक-** चन्द्रदर्शन मुहूर्त के विचार से इस मास में सभी वस्तुओं का मूल्य सामान्य रहेगा। शनिवारी चन्द्रदर्शन से जौ, चावल, चना में मंदी रहेगी। सोना-तांबा आदि धातुओं के मूल्य में तेजी बनी रहेगी। उरद, सरसों, मूँगफली, सोयाबीन तेलों में तेजी चलेगी। पश्चिमी देशों में आपसी तनाव की सम्भावना रहेगी। मंगल शुक्र का योग श्वेत पदार्थों में तेजी तथा लाल पदार्थों में सस्तीकारक है। वैशाखकृष्ण के उत्तरार्ध में सर्राफा बाजार में तेजी आयेगी। दक्षिण-पश्चिमी स्थानों में वर्षाकारी योग है। कुछ स्थानों में ओलावृष्टि फसलों को हानि का योग है। **चैत्रशुक्ल** १,२,८,१५ तथा **वैशाखकृष्ण** ३,१०,१४ उपद्रवकारी रहेंगे।

**वैशाखशुक्ल से ज्येष्ठकृष्ण तक-** चन्द्रदर्शन मुहूर्त के विचार से खाद्य पदार्थों का मूल्य सामान्य रहेगा। गेहूँ, चावल, मूँग, मोठ आदि में मंदी रहेगी। पश्चिमी राष्ट्रों में आतंकवादी गतिविधियों से हानि व भय व्याप्त होगा। किसी राष्ट्र विशेष में भूकम्पादि में प्राकृतिक प्रकोप से जन-धन की हानि होगी। सर्राफा बाजार में तेजी का रुख रहेगा। लाल पदार्थ सस्ते होंगे। भरणी के सूर्य प्रवेश से रसायनिक पदार्थ तांबा सोना व चाँदी में तेजी आयेगी। शेयर बाजारों में उछाल की तेजी आयेगी। ज्येष्ठकृष्ण में गर्मी का प्रकोप बढ़ेगा। दक्षिण भारत के कुछ स्थानों में वर्षा तथा पूर्वी भारत में कुछ स्थानों में बूंदा-बाँदी होगी। राजनीति में नये समीकरण बनेंगे। भौमान्तरिक्ष उत्पातों की सम्भावना रहेगी। **वैशाखशुक्ल** १,६,१४ तथा **ज्येष्ठकृष्ण** ६,१२,१३ उपद्रवकारी रहेंगे।

**ज्येष्ठशुक्ल से आषाढ़कृष्ण तक-** चन्द्रदर्शन मुहूर्त के विचार से खाद्य पदार्थों के मूल्य में तेजी का रुख रहेगा। जौ, चावल, चना, मूँग आदि के भावों में तेजी आयेगी। गुड़-चीनी के भावों में भी तेजी का रुख रहेगा। सोने में तेजी आयेगी। शेयर बाजारों में भी उछाल आयेगा। विशात बाने के समान मेवा तथा फलों के मूल्य में तेजी बनी रहेगी। पूर्वोत्तर भागों में प्राकृतिक विपत्तियाँ पैदा होकर जन-समुदाय में वृद्धिकारक है। देश में विपक्षी दल सबल होकर सत्तारुढ़ दल पर प्रभावी बनेगा। भारत के पड़ोसी देशों में उपद्रव की आशंका बनी रहेगी। मृगशिरा के सूर्य तेज धूप व गर्मी की अधिकता को बढ़ायेंगे। परन्तु कहीं-कहीं कुछ वर्षा होने से आम जनता को राहत भी मिलेगी। **ज्येष्ठशुक्ल** ६,१४,१५ तथा **आषाढ़कृष्ण** ५,७,३० उपद्रवकारी रहेंगे।

**आषाढ़शुक्ल से श्रावणकृष्ण तक-** चन्द्रदर्शन मुहूर्त के विचार से खाद्य पदार्थों का मूल्य सामान्य रहेगा। पीली वस्तुओं के भाव में तेजी आयेगी। काजू-पिस्ता आदि मेवे के सामानों में मंदी बनी रहेगी। गेहूँ, जौ, चना आदि के भावों में कमी रहेगी। पश्चिमी देशों में कहीं आन्तरिक अशान्ति और कहीं सीमाप्रान्तों को लेकर उपद्रव की संभावना रहेगी। भारत की राजनीति में विशेष कानून व्यवस्था लागू होने से उपद्रव की आशंका रहेगी। कहीं-कहीं अग्निकाण्ड और यानदुर्घटना से हानि का योग रहेगा। दक्षिणी प्रदेशों में बाढ़ भूकम्पादि से हानि का योग है। वर्षा प्राय: अच्छी होगी। पूर्वी महाराष्ट्र आदि में ज्यादा वर्षा होगी। **आषाढ़शुक्ल** ९,१०,१५ तथा **श्रावणकृष्ण** २,११,१३ उपद्रवकारी रहेंगे।

**श्रावणशुक्ल से भाद्रपदकृष्ण तक-** चन्द्रदर्शन मुहूर्त के विचार से खाद्य पदार्थों का मूल्य सामान्य रहेगा। वर्षा तथा बाढ़ से यत्र-तत्र कृषि की हानि होगी। दक्षिणी प्रान्तों में प्रलंयकारी वर्षा हो सकती है। किन्तु खण्डवृष्टि के प्रभाव से सूखे का दृश्य दीख पड़ेगा। गेहूँ, मोठ चावल, चना में घटाबढ़ी चलेगी। सोयाबीन आदि के तेलों में तेजी होगी। ऊन व सूती वस्त्रों में कपास का भाव तेज होगा। शेयर के भावों में घटाबढ़ी होकर मंदी तथा सोना-चाँदी व स्टील लोहा के सामानों में तेजी का संचार होगा। चीनी में विशेष तेजी का योग है। कागज, प्लास्टिक के समान में मंदी आयेगी। शेयर भावों एवं मशीनरी समान में तेजी आयेगी। भौमान्तरिक्ष उत्पात होंगे। **श्रावणशुक्ल** १,२,१५ तथा **भाद्रपदकृष्ण** २,११,३० उपद्रवकारी रहेंगे।

**भाद्रपदशुक्ल से आश्विनकृष्ण तक-** चन्द्रदर्शन मुहूर्त के विचार से खाद्य पदार्थों का मूल्य सामान्य रहेगा। पीले पदार्थ महँगे होंगे। दलहन पर इसका प्रभाव पड़ेगा। कड़ुवा तेल, रुई, चन्दन तथा ऊनी वस्त्रों के मूल्य में उत्तरोत्तर महँगी का रुख रहेगा। शेयर बाजारों, केमिकल समान और प्लास्टिक सामानों में भी तेजी रहेगी। इस मास में प्रजा में महामारी फैलने का योग है। कर्मचारी वर्ग का सहयोग उत्तम रहेगा। पूर्वी राष्ट्रों में भूकम्पादि की सम्भावना बनी रहेगी। तेज हवा के साथ वर्षा का योग है। बंगाल-बिहार आदि प्रदेशों में वृष्टि से हानि की सम्भावना है। **भाद्रपदशुक्ल** ८,१२,१४ तथा **आश्विनकृष्ण** २,७,३० उपद्रवकारी रहेंगे।

**आश्विनशुक्ल से कार्तिककृष्ण तक-** चन्द्रदर्शन मुहूर्त के विचार से खाद्य पदार्थों का मूल्य सामान्य रहेगा। गेहूँ, जौ, ज्वार, चना में तेजी कारक योग है। सरसों, सोयाबीन मूँगफली आदि खाद्य तेलों में तेजी का रुख रहेगा। शेयर बाजारों में भी तेजी आयेगी। सोना-चाँदी के मूल्यों में घटाबढ़ी रहेगी। प्लास्टिक लोहा समान आदि में गिरावट आयेगी। पश्चिमी देशों में आतंकवादी गतिविधियों से हानि व भय व्याप्त होगा। यूरोप के कई देशों में भी जनाक्रोश बढ़ेगा। भारत के पूर्वी राज्यों में जनता में आक्रोश बढ़ेगा। कहीं-कहीं अग्निकाण्ड से हानि सम्भव है। समुद्री तूफान भूकम्पादि आपदाओं से जनमानस को हानि होगी। **आश्विनशुक्ल** ५,६,१२ तथा **कार्तिककृष्ण** १,७,१४ तथा ३० उपद्रवकारी रहेंगे। *(शेष पृष्ठ ४० पर)*



पञ्चाङ्गस्थ विषय से सम्बन्धित समस्या के समाधान हेतु सम्पर्क कर सकते हैं। पत्र व्यवहार का पता **विक्रम पञ्चाङ्ग प्रकाशन बी. २।९५ सी., भदैनी, वाराणसी (उ०प्र०)।** मो०- ०७३९०९९३३९७

## अथचैत्रादिमासेषु मन्वादितिथयः

| चैत्र शुक्ल | ज्येष्ठ शुक्ल | आषाढ शुक्ल | भाद्र शुक्ल | आश्विन शुक्ल | कार्तिक शुक्ल | पौष शुक्ल | माघ शुक्ल | फाल्गुन शुक्ल | श्रावण कृष्ण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३।१५ | १५ | १०।१५ | ३ | ९ | १२।१५ | ११ | ७ | १५ | ८।३० |

### अथ युगादितिथयः

| कार्तिकशुक्ल | वैशाखशुक्ल | माघकृष्ण | भाद्रकृष्ण |
|---|---|---|---|
| ९ | ३ | ३० | १३ |
| सतयुगादिः | त्रेतायुगादिः | द्वापरयुगादिः | कलियुगादिः |

☞ अनध्यायं प्रकुर्वीत मन्वादिषु युगादिषु।

### सामान्यसुभिक्षादिकम्

प्रभवात् द्विगुणं कृत्वा त्रिभिर्न्यूनञ्च कारयेत्। सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषे ज्ञेयं शुभाशुभम्। एकं चातुरिदुर्भिक्षं पञ्च द्वाभ्यां सुभिक्षकम्। त्रिषष्टे च समं ज्ञेयं शून्ये पीडा न संशयः।

कल्पादि- चैत्रशुक्ल१, वैशाखशुक्ल ३, कार्तिकशुक्ल ७, मार्गशीर्षशुक्ल ९, माघशुक्ल १३, चैत्रकृष्ण ३।

दशावताराः- मत्स्यः चैत्रशुक्ल ३ (अपराह्ने), रामः चैत्रशुक्ल ९ (मध्याह्ने), परशुरामः वैशाखशुक्ल ३ (प्रदोषे), नृसिंहः वैशाखशुक्ल १४ (सायाह्ने), कूर्मः वैशाखशुक्ल १५ (मध्याह्ने), कल्किः श्रावणशुक्ल ६ (सायाह्ने), कृष्णः भाद्रपदकृष्ण ८ (निशीथे), वामनः भाद्रपदशुक्ल १२ (मध्याह्ने), बौद्धः आश्विनशुक्ल १०(सायाह्ने), वाराहः भाद्रपदशुक्ल ३ (अपराह्ने)।

### वर्ष-शुभाशुभज्ञानम्

तिथिवारर्क्षयोगानां युतिः संवत्सरान्विता। प्रष्टुर्नामाक्षरैर्युक्ता त्रिहते शेषके फलम्। एकेन क्लेशं समतादाप्यां च त्रितये सुखम्।

### अथ चरणी विवेकः

स्वामि हस्तप्रमाणेन दीर्घविस्तारसंयुतम्। अष्टभिश्च हरेद्भागं शेषं चरणिरुच्यते।। पशुहानिः पशोरोगः पशुलाभः पशुक्षयः। पशुनाशः पशोवृद्धिः पशुभेदः बहुः पशुः।।

### अथ जन्मकुण्डलीतः प्रतिवर्षप्रिप्रतिभावविचारः।

जन्माङ्गं प्रथमं विद्धि द्वितीयञ्च द्वितीयकम्। एवं द्वादशभावाः स्युर्द्वादशाब्दस्य सूचकाः।। द्विरावृत्या लग्नभावात् त्रयोदश पुरस्सराः। त्रिरावृत्तेस्तु पट्त्रिंशद्वर्षाणिस्युरिहायुषाम्। आवृत्तिभिस्तु दशभिः पूर्णता पुरुयायुषः।।

वर्षसंज्ञकभावास्युर्यदिकोणेषु। १।५।९ सद्ग्रहाः। दैहिकं सकलं सौख्यं वर्षेस्मिन्नियतं शुभम्। तद्वर्षमासलग्नात्युस्तथा-भावाः धनादयः। तत्तद्भावकोणस्था यदि सर्वेशुभग्रहाः तद्वर्षे तस्य भावस्य विशेषात्सुखकारकः। एवं पापग्रहास्तेषु कोणेषु यदि संस्थिताः। सबला भावनाशाय निर्बलास्तु सुखाय च। शुभैस्तु शुभताधिक्यं पापैस्तुभावसंक्षयः। मिश्रे मिश्रफलं ज्ञेयं बलाबलविशेषतः इति।

## अथ जन्मलग्नस्य निश्चयो जन्मपाङ्गात्प्रसवसामयिककेषाञ्चित्पदार्थानां ज्ञानमाह।।

### अथ मातृवस्त्रभोजनयोर्ज्ञानमत्राह

मातृवस्त्रं वदेत्तत्र या विलग्ने नवांशपात्।। तुर्यांशव- शतोवाच्यं सूतेः प्राक् मातृभोजनम्।।१।। कठिनं मधुरं रूक्षं लेह्यपेयादिकं मृदुः।। चोप्यान्नगुडं दुग्धं विचित्रं स्वल्पभोजनम्।। वटकाद्यं वहुरसं पेयादि मधुरं हितम्।। क्रोधादिना कदन्नं स्यात्सूर्यादिः श्लोकपादतः।।३।। इति।।

### अथार्कलग्नद्वादशांशवशेन दीपज्ञानम्।

तदाहगर्गः- लग्नस्य प्रकृते भावे सूर्ये प्राच्या प्रदीपकः। द्वितीये च तृतीये च भवेदीशानकोणगः।। चतुर्थे चोत्तरे वायौ कोणे पञ्चमषष्ठये। सप्तमे पश्चिमायाञ्च नैरृत्यां नवमेऽष्टमे। दशमे दक्षिणस्यामाग्नेयकोणे च दीपकः। द्वादशैकादशे प्रेक्तोदीपाभावः स्वयम्भुवा। अन्यत्र तत्रैव चरे लग्ने चरे दीपः स्थिरे तत्रैव संस्थितः। द्विस्वभावे तथा लग्ने करेण परिचालितः। त्रेष्काणे प्रथमे चन्द्रे दीपः पूर्णो द्वितीयके। अर्धपूर्णो हि तैलेन हीनतैलस्तृतीयके। चद्धर्वांगोदिदिशीभास्करांपत्र तत्रवाच्योदीपः।। इति।।

### अथार्कस्यराशिवशेन दीपस्य दिग् ज्ञान चक्रम्

| मेषवृषवर्के | मिथुनेऽर्के | कर्केसिंहे | कन्यायांरवौत्य |
|---|---|---|---|
| प्राच्यांदीपः | आग्नेयां | दक्षिणेदीपः | नैऋत्यकोणे |
| तुलावृश्चिके | धनुर्धरे | मृगे कुम्भे | मीने रवौ |
| पश्चिमायां | वायव्यकोणे | उत्तरेदीपः | पृथिव्याम् |

### अथगृहमध्ये जन्माङ्गात्सूतिकागृहज्ञानमाह।

मेषकुलीरतुलालिघटैः प्रागुत्तरतोगुरुसौम्यगृहेषु। पश्चिमतश्च वृषेणनिवासो दक्षिणभागकरौ मृगसिंहौ।। अथमातृकष्टतत्कालयोर्ज्ञानमाह।। क्लेशोभानुः स्फूर्यस्यसत्तगतैः शशाङ्कयुतैर्वा। पापैर्भवत्सस्मरसुख-गतैः क्लेशमाहुर्जनन्याः।। पापमिश्रितयुक्तैर्घटमुदृते: स्याद दृष्टिपातोऽथयुते तु पापैः। मूर्ते ७ चतुर्थ ४ प्रविचार्यसम्यग्वाच्याविधीद्रा जनने जनन्याः।। इति।।

### अथ ग्रहाणामधिप्रत्यधिदेवताज्ञानमाह

ईश्वरस्तु उमा चैव स्कन्दो विष्णुस्तथैव च।। ब्रह्मणेन्द्र यमश्चैव कालश्चैव तथाष्टमम्। चित्रगुप्तस्तु नवमं अधिदैवत कीर्तिताः। अग्निश्चैव तथा आपः पृथिवी विष्णुरेव च। इन्द्रश्चैव तथेन्द्राणि तथैव च प्रजापतिः। सर्पश्चैव तु ब्रह्मा च एताः प्रत्ययधिदेवताः।।

### तत्रादौ प्रसवस्य प्रकारज्ञानमाह

शीर्षोदयेविलग्नेमूर्ध्नाप्रसवो पृष्ठोदये चरणतः। उभयोदये च हस्ततः शुभदृष्टः शोभनोन्यथाकष्टः।।१।। अग्निभ्यां शिरसाप्रसवोजेयः समयः स्वम्प्दर्शनात्। अग्निभ्यां प्रसवःकालो जङ्घसंदर्शनाद्भवेत्।। कराभ्यां प्रसवः।

फलेमणिवन्धस्य दर्शनात् मणित्यः। लग्नाधिपेऽ- शकपतौ लग्नस्थे वक्रितं गृहे चापि। विपरीत गतौ मोक्षो वाच्योगर्भस्य संक्लेशतः।। इति।।

### अन्तरिक्षजन्मज्ञानम्

धनुर्मीनेचकन्यायां मिथुने च विशेषतः। अन्तरिक्षे भवेज्जन्म शेषे भूमौ विनिर्दिशेत्। अन्तरिक्षं नामोच्च भूमेरिति।।

### अथ जन्माङ्गाद्वालकस्य रोदनमाह

मेषेत्र १।३। पञ्चानन ५ चाप ९ लग्ने विस्मृतय सर्व बहुरोदतिस्म। अल्पवटे ११ स्त्री ६ वणिजे ७ परेषु ४।८।१०।१२ रुदान्वितो ज्ञानबलस्य सत्वात्। इदं लग्नचन्द्रयोर्मध्ये यो वली तस्मात् रोदनस्य ज्ञानं कार्यम् ।।

### अथ जन्माङ्गाद्वावालकस्यमस्तकज्ञानमाह

मेषे चापमृगेन्द्रयोर्यदिशिशुः प्राचीशिरो जायते। गोकन्यामकरेषु दक्षिणशिरा जातोभवेन्निश्चितम्।। नीने वृश्चिककर्किणो यदि तदाकौवेरमूर्द्धा भवेत् कुम्भेयुग्मघटेतनौयदि तदापाश्चात्यमूर्द्धा भवेदिति।।

### अथसूतिकायाः वस्त्रचूड़िकावर्णयोर्ज्ञानं

अरुणधवलचारी पाटलोतोयदाभंरजधवलयुक्त श्चित्रवर्णोऽथकृष्णः। कनकरजिनवर्णोकर्वुरो वस्त्र स्वच्छः क्रियतङहसुवाच्यं चाम्बरं सूतिकायाः ।।१।। यावत्संख्याग्रहाणाञ्च चतुर्थे दशमे गृहे। दृष्टिः स्यात्तावतास्रेया चूड़िकावर्णमादिशेत् ।।२।। इति।।

| अथाधानकाले चन्द्रवशात्प्रसवस्य समयज्ञानायचक्रम्।। | | | | | अथ प्रश्नकालदाधानतो वा प्रसवकालिक चन्द्रविज्ञानमत्राह।। |
|---|---|---|---|---|---|
| चन्द्रराशयः | | | | दिनानि | गर्गः। यावत्संख्याद्वादशांशेशीतरश्मिर्व्यवस्थितः। तत्संख्यावातता राशिर्जन्मेन्दोस्तद्गते भवेत्।। |
| १ | ४ | ७ | १० | २७१ | |
| २ | ५ | ८ | ११ | २९७ | |
| ३ | ६ | ९ | १२ | २८१ वा दिन २७६ | |

### सारावल्यां

यस्मिन् द्वादशभागे गर्भाधाने व्यवस्थितश्चन्द्रः। तत्तुल्यर्क्षे प्रसवो गर्भस्य नियतमादिशेत्प्राज्ञः।२। समुद्रजातकेऽपि। यतमे द्वादशभागेसूतिकास्तत्संख्यके विधावित्ति। अत्रलग्नचन्द्रयोर्मध्ये यो बलवान् तस्य द्वादशांशकवशेन चन्द्रराशिज्ञेयः इत्युक्तं लघुजातके लग्नेर्द्वयोर्बलवान् तस्यद्विरसांशकान्विते विधौ प्रसवः।। अथकाल ज्ञानम्। तत्काले दिवसनिशासंज्ञोसमुदेति राशिभागोयः। यावानुदयस्तावान् वाच्योदिवसस्य रात्रेर्वा।।

### अथात्रसूतिकातत्त्वं सूत्रबद्धं जातकतत्वोक्तमाह

चन्द्रेणादृष्टेऽङ्गे पितुः परोक्षेजन्म।१। स्थिरेर्केऽष्टमाङ्कायान्त्ये चन्द्रेणचादृष्टेऽङ्गे स्वदेशस्थ पितुः परोक्षेजन्म।२। चरेऽर्के तु प्राग्वज्जातस्य पितरि विदेश गते जन्म।३। मन्देऽङ्गवास्तेभौमेपितुः परोक्षं जन्म।४। ज्ञाघ्यान्तरे चन्द्रेऽिम।५। सूर्यात् त्रिकोणास्तगे मन्दारौपापभगोजन्म निपितावद्धः।६। मातापितग्रहयोर्बलीतत्सम्बन्धि गृहे जन्म।७। सवलेर्के-भौमदृष्टेवहु दीप गृहेजन्म।८। सन्द्रातैलज्ञानम्।९। लग्नाद्दीपवर्तिज्ञानम् ।१०। चरेऽर्कचरःस्थिरेऽर्केस्थिरा द्विस्वभावेखण्डवद्दीपः।११। शीर्षोदयांशेऽङ्गेमूर्द्धतः प्रसव उभयोदयांशे हस्ततोऽन्यथात्र पादतः।१२। जन्मलग्नचन्द्रादन्यतमेपुबन्धवस्तागेपुक्रूरेपुमातुः कष्टम्।१३। केन्द्रगस्य बलिनोग्रहस्यदिशिगृह द्वारम् ।१४। काष्टाढ्यं नवंदग्धंचित्रंदृढं रम्यंजीर्णं क्रमादर्कादिपुर्योबली तदनुसारि गृहम् ।१५। वृषाजयारुदयेगृहस्यापूर्वभागेयुग्मस्याग्नेय्यां कर्कसिंहयोर्याम्येकन्याया नैरृत्ये तुला वृश्चिकयोः पश्चिमे धनुषिवायौ मन्दभयोरुत्तरे झषस्ये शान्त्यांजन्म।१६। एवं शैय्या ज्ञानम् ।१७। लग्नदिशि शैय्याशिरस्त्रिषड्ङ्कास्येपुपादाः।१८। यत्र पापस्तत्रोद्घातः।१९। लग्नचन्द्रान्तरग ग्रहसंख्या उपसूतिकाउदगर्द्धेभ्यन्तर गोदक्षिणार्द्धे बाह्याः।२०। वक्रोच्चसंस्थे त्रिगुणाः स्वर्क्षत्र्यंशनवांशेस्थितेद्विगंणानोचास्तागस्तदर्धमिता उपसूतिका।२१। गोजाश्वियुग्म सिंहाङ्गेवहुरूदितो जातोऽन्यभागे। अङ्ग चन्द्रग्रह मात्रादृष्टेनिर्जनप्रसवः।२२। स्वाम्बुगेषु शुभेषु सुखेन प्रसवः त्रिकोणास्तगेषुपापेषु कष्टतः।२३। तुर्यवाखे मन्दारार्कयोगे जन्मतः प्राक्पितृ मरणम् ।२४।

अनिष्टभेपुरोगोत्पत्तौशान्तिः। ऋक्षेशरूपं केनकेन कृत्वा तल्लिङ्गमंत्रैश्चसुगन्धित पुष्पैः। पुष्पाक्षतैर्गुग्गुलधूपदीपैर्नैवेद्यताम्बूल फलैश्चसम्यक्।१। पूजांचकृत्वाभयनाशनाय विप्रायदद्यादतुलं शिवाय।२।

रोगविमुक्तस्यस्नानमुहूर्तविचारः। रे. पुन. कृ. उ३. स्वा. रो. श्ले. मघा एभ्यो विना रिक्तातिथौ ४।९।१४ चन्द्रशुद्धि रहितम् चं. शु. भिन्नवारेचोत्तमः। चर लग्ने। लग्नात् १।४।७।५।९।१०।११ शुभैः।

अथरोगोत्पत्तौ विशेषाः- आर्द्रा श्ले. ज्ये. श. भ. पू३. वि. ध. कृ. नक्षत्राणि सू. मं. श. वासराः ४।९।१२ ।६।१४ तिथयः एतेषां त्रयाणां योगे रोगोत्पत्तौ मृत्युः। भ.ऽश्ले. मृ. म. वि. कृ. आर्द्रा एषुभेषुसर्पदर्शने मृत्युः।

उत्पन्नरोगे शुभाशुभविचारः। स्वात्यश्लेषारौद्रपूर्वात्रयेषु शाके भौमे सूर्यजे सूर्यवारे। नन्दा रिक्तास्वेव रोगस्य चाप्तिर्मृत्युर्ज्ञेयः शङ्करो रक्षिताऽपि।

अथ कर्णमर्दनमुहूर्त्तस्यविचारः। अनु.श्र.मू.रे.पू. फा.ज्ये.रो.म. एषु भेषु सत्तिथौ सद्वारे शुभाङ्गेचोत्तमः।

वाणिज्य- (दुकान) कर्ममुहूर्त विचारः। अनुराधोत्तरापुष्यं रेवतीरोहिणी मृगः। हस्तचित्राश्विने कुर्याद्वाणिजयं दिवसे शुभः।।

अथ धान्यसंग्रहमुहूर्त्तस्यात्रविचारः। रो. मु३. स्वा. मू. रे. मृ. ह. अश्वि. ध. श्र. अनु. पुन. चि. पुष्य. श. एषु भेषु।। वृ. बु. चं. शु. वारेषु रिक्तारहिते तिथौ स्थिरलग्नेषु सद्ग्रहे चोत्तमः।। वारप्रवृत्तिविज्ञानं क्षणवारार्थमेवहि। अखिलेष्वपि कार्येषु दिनादिरुदयाद्रवेः।।

अथकोष्ठादौ धान्यस्थापनमुहूर्त्तः। मृ. पु. रे. अनु. श्र. ध. श. अश्वि. पुष्य. रो. उ३. एषु भेषु सत्तिथौ सू. चं. वृ. शु. वारेषु।। निष्कासनं धान्यानाम्।। उ३. रो. ध. श. एषु भेषु सद्वारे शुभांगे सत्तिथौचप्रशस्तः।।

अथ धान्यनयनस्यफल पुष्योत्तारणास्यचात्र मुहूर्त्त विचारः। ह. चि. स्व. उ३. ध. रो. मू. पु. अश्वि. अनु. म. एषु भेषु।। शनि भौमवासरहिते सत्तिथौशुभोदये चोत्तमः।

वृक्षलतागुल्मरोपणस्य मुहूर्त्तः। लतागुल्मवृक्षरोपेहस्त पुष्याश्विनी ध्रुवैः। विशाखामृदु मूलाश्विवारूणश्च प्रशस्यते।१। गुरौ केन्द्रे विपापे खे विधौ वारिविधूदये। शुभयुक्ते क्षिते वंधौ सद्वारे वा शुभोदये॥

अथवृक्षरोपणस्यमंत्रमप्याह। ओ वसुधेति व शीतेतिपुण्यदेति धरेति च।। नमस्ते शुभगे दैविद्रुमोऽयं त्वयि रोप्यते।।

वाहनारोहणमुहूर्त्तः। पौष्णाश्विनीवरुणमारुत शीतरश्मिचित्रादितिश्रवणपाणिसुरैज्यवित्तैः। वारेषु जीवशशिसूर्यसितेन्दुजानामारोहणं गजतुङ्गरथेषु (व्यहवारोच्चय) प्रशस्तम् ।।

शस्त्रकर्मः। तद्द्यादिह विधुवेंदुतनयप्रद्योतने रोगिणेऽसृक्स्रावव्रणकर्म सूर्यकुजयोरह्नीहकेन्द्र स्थयोः।

तैलाभ्यङ्गेवर्ज्योऽथ बालस्यादौ दुग्धपान समयश्च तदत्राह। रवौ भौमे व्यतिपात संक्रांतौ वैधृतावपि। षष्ठ्यामष्टम्यां च विष्टयांचतैलाभ्यङ्गो न पर्वसु।।१।।

अथत्रतैलाभ्यङ्ग दोषापवादमाह। तैलाभ्यङ्गः न दोषाय प्रत्यहंक्रियते चयः। उत्सवे वातरोगे वा यत्र वाचनिकोपिवा।१। मंत्रितं क्वथितं तैलं सार्षपं पुष्पवासितम्। द्रव्यांतरयुतंवापिनैव दुष्येत्कादचन।।

| | नैसर्गिकचक्रम् १ | | | चलचक्रम् २ | | | योगचक्रम् ३ | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जन्म | ६ | ४ | ३ | ६ | ४ | ३ | ३ | ० | ० |
| कर्म | २ | ० | ० | ६ | ४ | ३ | ५ | ४ | ० |
| आधान | ५ | ० | ० | २ | ० | ० | ४ | ० | ० |
| पिण्ड | ६ | ४ | ३ | ५ | ० | ० | २ | ० | १ |
| छिद्र | ६ | ४ | ३ | ६ | ४ | ३ | ३ | ० | ० |

चलचक्रसाधनार्थमत्रछिद्र नाम्निपञ्चमस्वरस्यागत्वात्रैसर्गिकचक्रं पञ्चमस्वर संबन्धीयं तत्कोष्ठकं तदेव जन्मकोष्ठकं प्रकल्पयेत् तदितराणां यथाक्रमं स्थापनम्।।

### अथवारपरत्वेनतैलाभ्यङ्गफलं विधिश्च

| सूर्य | चन्द्र | मङ्गल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | वाराः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताप | सुकान्ति | मृतिः | धनप्राप्ति | वृत्तिहानिः | विपत्तिहानिः | सुखम् | फलम् |
| पुष्प | ० | मृत् | ० | दूर्वा | गोमय | ० | पातन |

### अथ पञ्चस्वरातः शून्यानयनोदाहरणं विलिख्यते तत्र श्लोकाः

| जन्म | कर्म | आधा | पिण्ड | छिद्र |
|---|---|---|---|---|
| उदित | भौम | भ्रात | सध्वा | अस्त |
| ८१ | ८७ | ९३ | ९९ | १०५ |
| अ | इ | उ | ए | ओ |
| आ | ई | ऊ | ऐ | औ |
| क | ख | ग | घ | च |
| छ | ज | झ | ट | ठ |
| ड | ढ | त | थ | द |
| ध | न | प | फ | ब |
| भ | म | य | र | ल |
| व | श | ष | स | ह |
| नामाद्याक्षर | नामाद्याक्षर | नामाद्याक्षर | नामाद्याक्षर | नामाद्याक्षर |

वयो राशिस्वराङ्काश्च एकीकृत्यत्रिधा न्यसेत्। द्विचतुस्त्रिहतंकार्यं सप्ताष्टरसभाजितम्। आधानेनवदेयानि स्वरेकर्मणिपञ्च च सर्वाङ्कव्यापितः पिण्डश्छिद्रे श्रेणी व्यस्थितः २ एतेगणितोपयोगिकाः। केचित्ग्रंथान्तरीया अपि श्लोकाः। तिथिराशिवयोङ्कश्च प्रथमे जन्मकोष्ठके। द्विचतुस्त्रिगुणितं सप्ताष्टरसभाजितम् १ कर्मकोष्ठे पंचदत्वाआधानेनवकन्तथा। पूर्ववद्गुणनं कार्यंभजनश्चापि पूर्ववत् २ पिण्डे चतुर्दशंदत्वाछिद्रेऽष्टाविंशतिः सुधीः। द्विचतुस्त्रिभिर्गुणितं सप्ताष्टरस भाजितम् ३ एवं नैसर्गिकंज्ञेयं चलचक्रं स्वराल्लिखेत्। यत्र कोष्टस्ववर्णोवै तदेव जन्मसंज्ञकम्। कर्माधानादिकान्सर्वान् विदित्वा सन्नियोजयेत्५ जन्मनाजन्मभं योजयं कर्मणा कर्मसंज्ञकम्। आधाना दित्रिकेप्येवं योज्याऽत्र ध्रुवकान्क्षिपेत् ६ तैरेवगुणकैर्गुण्यं भजनञ्च तथा विधिम्। स्पष्टार्थः।। उदाहरणम्।। गतवर्षाणि ३३ जन्मराशिः ६ नामादिमोदवर्णः (ठ) अस्यस्वराङ्का १०५ वृषादिगणनया राशिः ५ वयोराशिस्वराङ्कानामैक्यं पिण्डम् १४३ त्रिपुस्थानेपुसंस्थाप्यक्रमात् २।४।३ गुणितं २८६।५७२।४२९ यथाक्रमं ७।८।६ विभक्तं शेषाणि ६।४।३ एते नैसर्गिकजन्मकोष्ठकेऽधोऽधः स्थाप्याः। कर्मस्वरसाधनार्थं पिण्डे ५ युक्तं १४८ इदं पूर्वगुणकेन यथाक्रमं गुणितं २९६।५९२।४४४ पूर्वछेदहृते शेषाणि २।०।० नैसर्गिक कर्मस्वराङ्ककोष्ठे स्थापनीयाः। पुनराधान स्वराङ्का। पिण्डेनवयुते १५२ गुणगुणे छेदहृतेच ५।०।० ध्रुवाङ्कानां योग १४ मितेयुक्ते १५६ पूर्ववत्तैरंवगुणकैर्गुणिते छेदैर्विभक्तेऽशेषाणि ६।४।३ पुनश्छिद्रस्वरसाधनार्थपिण्डे २८ संयोज्य गुणकैः सुगुण्यछेदैर्विभज्य शेषाणि ६।४।३ पूर्ववन्नैसर्गिककोष्ठके यथोक्तवत्स्थापिते निष्पन्नं नैसर्गिककोष्ठकम्।। अतश्चलचक्रंविधाय ततोयोगजफलं कृत्वा यदुत्पद्यते तदेव वर्षफलस्वरूपम्। नैसर्गिकादिचक्रसाधनेऽन्यान्यपि प्रकाराणि सन्ति किन्त्वत्रैव वहुसम्मतेरस्माभिरपि दर्शितम्। अथयोगचक्रं साध्यते। तत्रोभयजन्म कोष्ठस्थाङ्कयुतिः १२।८।६ ध्रुवाच्छून्यध्रुवंसयोज्य २।४।३ गुणितं २४।३२ १८ स्वच्छेदैः ७।८।६ यथा क्रमंविभक्तम् ३।०।० जातंयोगचक्रस्यजन्मकोष्ठे प्रथममङ्कत्रयम्।। कर्मस्वर साधने चोभयकर्मकोष्ठाङ्कायोगः ८।४।३ पञ्चध्रुवतैर्युक्ते १३।९।८ गुणगुणंछेदहृतं ५।४।० योगकर्म कोष्ठकेस्थाप्यम्। आधानयोर्योगे ९ ध्रुवयुतेयथोक्तकृते ४।०।० जातं पिण्ड स्वरसाधनेध्रुवः १४ अथोक्तवत् कृते २।०।१ जातम्।

### वाटिकाचक्रंशक्तियामलोक्तम्।

वृक्षं चक्रं कल्पयित्वा चक्रमेव विन्यसेत्पुनः सूर्यभाद्दिनभं यावद्वृक्षचक्रं विधीयते। मूले त्रयं रोगकरं त्वचि त्रीणि धनागमः। शाखासु वेदनाशः स्यात पत्रे युग्मं दरिद्रता। शीर्षत्रीणि शुभं प्रोक्त पूर्वे चैकस्तु मृत्युदः। याम्ये पञ्चात्मकोऽपायः पश्चिमे द्वौ धनागमः। उत्तरे वेदलाभायेति।

### अथ शकोपरिअनुमानादनेकपदार्थानांचैत्रादि प्रत्येकमासेषु समर्घमहर्घादिज्ञानार्थमत्रध्रुवांकाः।।

| सं | मासा | चै | वै | ज्ये | आ | श्रा | भा | आ | का | मा | पौ | मा | फा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | यव | ० | २ | १ | ० | २ | २ | १ | २ | ० | २ | १ | ० |
| २ | चना | ० | २ | १ | ० | २ | २ | १ | २ | ० | २ | १ | ० |
| ३ | गोधूम | ० | २ | १ | ० | २ | २ | १ | २ | ० | ३ | १ | ० |
| ४ | धान | ० | २ | १ | ० | २ | २ | १ | २ | ० | २ | १ | ० |
| ५ | तिल | ० | २ | १ | ० | २ | २ | १ | २ | ० | २ | १ | ० |
| ६ | खांड | ० | २ | १ | ० | २ | २ | २ | २ | ० | २ | १ | ० |
| ७ | गुड़ | ० | २ | १ | ० | २ | २ | १ | २ | ० | २ | १ | ० |
| ८ | घृत | १ | ० | २ | १ | ० | २ | २ | ० | १ | ० | २ | १ |
| ९ | लवंग | १ | ० | २ | १ | ३ | २ | २ | ० | १ | १ | २ | १ |
| १० | शहद | २ | १ | ० | २ | २ | २ | ० | १ | २ | १ | ० | २ |
| ११ | अरहर | ० | २ | १ | ० | २ | २ | १ | २ | ० | २ | १ | ० |
| १२ | मूंग | २ | १ | ० | २ | १ | १ | ० | १ | २ | १ | ० | २ |
| १३ | कपास | १ | ० | २ | १ | ० | ० | २ | ० | १ | ० | २ | १ |
| १४ | रेंड़ी | १ | ० | २ | १ | ० | ० | २ | ० | १ | ० | २ | १ |
| १५ | सूत | २ | १ | ० | २ | १ | १ | ० | १ | २ | १ | ० | २ |
| १६ | वस्त्र | २ | १ | ० | २ | १ | १ | ० | १ | २ | १ | ० | २ |
| १७ | कम्बल | ० | २ | १ | ० | २ | २ | १ | २ | ० | २ | १ | ० |
| १८ | पाट | ० | २ | १ | ० | २ | २ | १ | २ | ० | २ | १ | ० |
| १९ | सुपारी | १ | ० | २ | १ | ० | ० | २ | ० | १ | ० | २ | ० |
| २० | अलसी | ० | २ | १ | ० | २ | २ | १ | २ | १ | २ | १ | ० |
| २१ | तैल | २ | १ | ० | २ | १ | १ | ० | १ | २ | १ | ० | २ |
| २२ | फिटकरी | ० | २ | १ | ० | ० | ० | १ | २ | ० | २ | १ | २ |
| २३ | हींग | २ | १ | ० | २ | १ | १ | ० | १ | २ | १ | ० | २ |
| २४ | हरदी | २ | १ | ० | २ | १ | १ | ० | १ | २ | १ | ० | २ |
| २५ | लौंग | ० | २ | १ | ० | १ | २ | १ | २ | ० | २ | १ | ० |
| २६ | जीरा | २ | १ | ० | २ | १ | १ | ० | १ | २ | १ | ० | २ |
| २७ | अजवाइन | १ | ० | २ | १ | १ | १ | २ | ० | १ | ० | २ | २ |
| २८ | कपूर | २ | १ | ० | २ | १ | १ | ० | १ | २ | १ | ० | २ |
| २९ | ककुनी | ० | २ | १ | ० | २ | २ | २ | २ | ० | १ | १ | ० |
| ३० | धनिया | १ | १ | २ | १ | ० | ० | १ | ० | १ | ० | २ | १ |

शाकःखगाब्धिभूपोनः १६४९ शालिवाहनभूपतेः। अनेन युक्तो द्रव्याङ्कश्चैत्रादौ प्रतिमासके।१। रुद्रनेत्र ३ हृतेशेषं फलंचन्द्रेण मध्यमम् । नेत्रेण रसहानिश्चशून्ये वा तत्स्मृतं बुधैः।२। इति।

### अथ चैत्रादि १२ मासानां नामानि

| चैत्र | वैशाख | ज्येष्ठ | आषाढ़ | श्रावण | भाद्रपद | मासाः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वैकुण्ठः | जनार्दनः | उपेन्द्रः | यज्ञपुरुषः | वासुदेवः | त्रिविक्रमः | नामानि |
| आश्विन | कार्तिक | मार्गशीर्ष | पौष | माघ | फाल्गुन | मासाः |
| योगीशः | पुण्डरीकाक्षः | कृष्णः | अनन्तः | अच्युतः | चक्रधरः | नामानि |

### अथङ्गस्फुरणफलानि

| स्थानानि | फलानि |
|---|---|
| मस्तकस्फुरणे | पृथ्वीलाभः |
| ललाटस्फुरणे | स्थानलाभः |
| स्कन्धस्फुरणे | भोगसमृद्धि |
| भ्रुवोर्मध्ये | सुखप्राप्ति |
| भ्रुवोर्युग्मे | महत्सौख्यम् |
| कपालस्फुरणे | शुभावाप्तिः |
| नेत्र २ स्फुरणे | धनाप्तिः |
| नेत्रकोणयोः | लक्ष्मीलाभः |
| नेत्रपक्षस्फुरणे | राज्यलाभः |
| नेत्रपक्ष२स्फुरणे | संग्रामेजयः |
| नेत्रकोपांगदेश२ | कलत्रलाभः |
| नासिका२स्फुरणे | प्रीतिःसुखम् |
| हस्तस्फुरणे | सद्द्रव्यलाभः |
| वक्षःस्फुरणे | विजयध्रुवम् |
| हृदयस्फुरणे | वांछितसिद्धिः |
| कट्यांस्फुरणे | प्रमोदेबलञ्चः |
| कटिपार्श्वे | प्रीतिरनुत्तमाः |
| नाभिस्फुरणे | स्त्रीनाशः |
| आंत्रिकस्फुरणे | कोशवृद्धिः |
| भगस्फुरणे | पतिप्राप्तिः |
| कुक्षिस्फुरणे | सुप्रीतिलाभः |
| उदरस्फुरणे | कोशप्राप्ति |
| लिङ्गस्फुरणे | स्त्रीलाभः |
| गुदस्फुरणे | वाहनप्राप्तिः |
| वृषणस्फुरणे | पुत्रलाभः |
| ओष्ठस्फुरणे | प्रियवस्तुलाभः |
| हनुदेशस्फुरणे | भयं महत् |
| कण्ठस्फुरणे | ऐश्वर्यलाभः |
| ग्रीवार्धस्फुरणे | रिपुभयम् |
| पृष्ठस्फुरणे | युद्धपराजयः |
| कपोलस्फुरणे | वरांगनाप्राप्तिः |
| मुखस्फुरणे | मित्रप्राप्तिः |
| बाह्यस्फुरणे | मधुरभोजनम् |
| बाहुमध्ये | धनागमः |
| वस्तिदेशस्फुरणे | अभ्युदयः |
| उरोस्फुरणे | वस्त्रलाभः |
| जानुस्फुरणे | शत्रुवृद्धि |
| जंघस्फुरणे | स्वामिप्रीतिः |
| पादोपरि | स्थानलाभ |
| पादेतले | नृपत्वम् |
| पादद्वयोस्फुरणे | अलाभम् |

### अथस्त्रीणामाद्यरजोदर्शने श्रेष्टमासपक्षतिथ्यादयः।

| | |
|---|---|
| पक्ष मासः | चोत्तमः। श्वेतवस्त्रे श्रेष्ठोऽयम्। नान्याम्बरे।। |
| तत्र श्रेष्ठः | वैशाखेफाल्गुने मासे मार्गाख्ये श्रावणाश्विने। एषु सितपक्षे |
| तिथयः | १।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ एतासुतिथिषु सत्। परन्तु तत्र कृष्णपक्षस्यदशमीयावन्मध्यमम्। तदुपरिकुलटात्वं स्यात्।। |
| वाराः | चन्द्र। बुध। गुरु। शुक्र। एषां वारे प्रशस्तम्।। |
| शुभ नक्षत्राणि | अश्वि. मृग. ध. रे. चि. अनु. ह. श्रव. पुष्य उ३. रो. ऐषु भेषु शुभः।। मृ. पुन. म. वि. कृ. ऐषु मध्यमं परेष्वसत्।। दिवादुर्योगभद्रादिरहिते श्रेष्ठोऽयं न रात्रौ।। |
| शुभ लग्नादि | २।३।४।६।७।९।१२ एतद्रस्याङ्के सद्दिष्टे सत्युत्तमम्। तत्र विवाह वद्ग्रहसंस्थाऽपि विचार्य्या इति। |

### अथरजोदर्शन निषिद्धसमयान्याह

अष्टम्यां द्वादशीषष्ठयोरिक्तादर्शेऽथसंक्रमे।। भद्रानिद्रा व्यतीपाते ग्रहणे सन्ध्ययोः।।१।। परताप गृहे मार्गे कुदेशे कृष्णवाससि।। प्राग्रजोदर्शने नेष्टं शान्त्या तु शुभदं भवेत्।।२।। प्रागुक्तं विलयं यान्ति रजोदर्शनसंभवाः।।३।।

### अथ ऋतुमत्याः स्नानमुहूर्त्तस्य विचारः

ह.स्वा. अश्वि. मृ. अनु. ध. रो. उ३. ज्ये. एषुभेषु। शुभतिथौ। सद्वारे।। सतती स्नायादृतुमतीनारी इति।।

### अथ गर्भाधानमुहूर्त्तस्य विचारः

तत्र विविधं गण्डान्तम्। जन्मतारा।। मू. भ. अश्वि. रे.।। ग्रहणदिनम्।। व्यतिपात वैधृतिश्राद्धदिनम्।। दिवा। परिघाद्यर्द्ध उत्पातहतभम्। जन्मराशितोऽष्टमं। पापग्रहस्थं भवनम्। भद्रा पर्वदिन ४।६।९।१४ तिथिषु सन्ध्यायाम्। सू. मं. श. वासरान्। रजोदर्शनाच्चतुर्थरात्रिपर्यन्तं न शुभः। उ३. मृ. ह. अनु. रो. स्वा. श्र. ध. श. एषु भेषु लग्नात् १।४।५।७।९।१० शुभैः लग्नात् ३।६।११ पापैश्चोत्तमः। सू. मं. दृष्ट लग्ने विषमांशनवांशके चन्द्रे शुभम्।। युग्म (६।८।१०।१२) रात्रौ चोत्तमं गर्भाधानम्। चित्रा पुन. पुष्य अश्विनी एतद्भेषुमध्यमं स्यादिति।।

**अथास्यशान्तिः कल्पोक्ता।।**

पृष्टदूर्वातिलाश्वत्थैरेरगलं जुहुयाद्विधिवत् गोभूदानं च विप्रेभ्यस्तत्रविघ्नौघनाशनम् इति।।

**अथजातकर्मानन्तरं कृत्यम्**

जन्मलग्नं नीरीक्ष्यतत्रस्थग्रह दोषपरिहाराय ग्रहदानं जप वा कुर्यात्। जातमात्रस्य मूलोक्तस्य-मुखमवलोक्यस्नायादिति।।

**अथगर्भाद्यमासानामधिपाः**

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | मासाः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शु. | मं. | गु. | सू. | चं. | श. | पतयः |
| ७ | ८ | | ९ | १० | | मासाः |
| बु. | गर्भलग्नपति | | चं. | सू. | | पतयः |

**अथगर्भसंस्कारेविशेषमाह**

स्त्रीणां विपरीतोर्भलमुक्ति विवाहे गर्भ-संस्कारयोरितकर्मसु भर्तुरैव इति।

षोडशसंस्काराः।। गर्भाधानमतश्च पुंसवनकं सीमन्तजाताभिधे। नामाख्यं सहनिष्क्रमेण च तथाऽन्नप्राशनं कर्म चा। चूड़ाख्यो व्रतबन्धकोऽप्यथ चतुर्वेदव्रतानां पुनः। केशान्तः सविसर्गकः परिणयः स्यात् षोडशीकर्मणाम्। ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रावर्णास्त्वाद्यास्त्रयोद्विजाः। निषेकादिश्मशानान्तास्तेषां वै मंत्रतः क्रियाः।। शूद्रोऽप्येवंविधः बिना मंत्रेण संस्कृतः। स्त्रीणा चौलान्त संस्कारा प्रकुर्वीतह्यमंत्रकाद्। पुंस्त्रियोरुभयत्रोत्र विवाहः स्यादथाविधिः।।

**अथपुंसवनसीमन्तयोर्मुहूर्त्तः**- तत्र गर्भतो द्वितीये तृतीये वा मासि पुसंवनं कर्मविधेयम् ।। षष्ठे वाष्टमे मासि।। मासधिपतौ सबले सति सीमन्तोन्नयनं प्रशस्तम् ।। नात्र शुक्रेज्ययोमूढत्वदोषः।।

| | |
|---|---|
| सद्वाराः | सू. मं. बृ. एषां वारे मतान्तरेण ज्ञेन्दुशुक्राणांवारे वा दम्पतयोश्चन्द्रतारा शुद्धौ सत्यां पुंसवनसीमान्तसंस्कारौ भवतः।। |
| सद्भानि | मृ. पुष्य मूल श्रवण पुन. हस्त रेवती रो. उ३. एतद्भेषु पुंजन्मभं विना सीमन्तोन्नयनं पुंसवनं च प्रशस्तम् ।। |
| सत्तिथयः | १।२।३।५।७।१०।११।१३ एतासु तिथिसु सिते। तिथि १० यावत् कृष्णे चोत्तमः परन्तु पूर्वाह्ने एवं कार्यः नापराह्ने।। |
| साङ्गलग्न | संस्कारद्वयं पुंभस्याङ्के पुभांसे च श्रेष्ठं। तत्र लग्नात् १।४।५।७।९।१० |
| शुद्धिः | एषु शुभैः ३।६।११ एषु पापैश्चोत्तमः। चन्द्रे १।६।८।१२ वर्जिते श्रेष्ठः।५।८।१२ पाप एकोप्यसत् ।। |

### अथसूतिकायाः सूतीगृहप्रवेशमुहूर्त्तस्य विचारः

रो. मृ. पुष्य. स्वा. श. पुन. ह. ध. अनु. चि. अश्वि. उ३. श्र. एषु भेषु। शुभवासरे।। सत्तिथौ रिक्ता षष्ठ्यष्टमीवर्जिते। शुभाङ्के।। लग्नतः केन्द्रेषु शुभेषु। ३।६।११ पापेषु। शुभांशे सत्युत्तमः। श्रुत्वा जातं पितापुत्रं सचैलं स्नानमाचरेत् ।। एतच्च रात्रावपि कर्त्तव्यम् ।। श्राद्धादिकं हेम्ना कर्त्तव्यम् तत्कालाभावे सूतकान्तेऽपि कर्त्तव्यम् ।

### तत्कालातिक्रमणे जातकर्मणि विचारः

| | |
|---|---|
| सत्तिथयः | १।२।३।५।६।७।१०।११।१३ एतासु तिथिसु व्यतिपातभद्रासंक्रान्ति दोपरहितासु श्रेष्ठम् । |
| सद्वाराः | चन्द्रबुधगुरुशुक्राणां वारे। जन्माहात् प्रथम एकादशद्वादशदिने चोत्तमः। |
| सद्भानि | मृ. रे. चि. अनु. उ३. रोहि. पुन. स्वा. ध. श्र. श. पुष्य, हस्त. अश्वि. एषु सततौ चायं श्रेष्ठः।। |

### स्तनपानमुहूर्त्तस्य विचारः

उ३. रो. अश्वि. रे. पुष्य. पुन. अनु. ह. चि. मृ. ध. श्र. श. ऐषु भेषु। शुभवासरे।। शुभतिथौ। स्थिरांगे स्तनपानं प्रशस्तं स्यादिति।। अथ सूतिकापथ्यम्।। अन्नप्राशनोक्तभे तिथौ च दुर्योगादिरहिते श्रेष्ठम् ।।

### बालस्यादौ दुग्धपानसमयश्च

| | | |
|---|---|---|
| ई.४ | पू.१ | आ.६ |
| उ.७ | चरयोगिनी | ३द. |
| २वा. | ५प. | ८नै. |

एकविंशद्दिने चैव पयः शंखेन पाययेत्। अन्नप्राशननक्षत्रादिवसोदयराशिषु। इन्द्रवायुयमशूल पाणिनां बर्हिपाश्रवण रक्षसा क्रमात्। अर्द्धया ममनुवास रोहितोदिक्षु संभ्रमति योगिनीचरा।

### अथ प्रथमादिमासेषु बालकानां दन्तजननफलबोधक चक्रम्

| मासाः | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फलानि | स्वयंनाशः | कनिष्ठः भ्रातृनाशः | भगिनिनाशः | मातृनाशः | ज्येष्ठः भ्रातृनाशः | सभागम | तातात्सुखम् | पुष्टता | लक्ष्मीप्राप्ति | सौख्य | सौख्य | धनसम्पत्ति |

अथ जनौसदनो बोध्वंस्वपित्रादिहा। तदर्थशान्ति विधेया।।इति।।

**अथ नामकरणमुहूर्त्तस्य विचारः।** सूतकान्ते नामकरणं कर्तव्यं स्वकुलोचितं बृहस्पतिः। द्वादशे दिवसे वापि जन्मतोदिवसे शुभे। षोडशे विंशतिश्चैव द्वाविंशे वर्णतः क्रमात्।

| | |
|---|---|
| भानि | मृ.रे.चि.अनु.उ३.रो.ह.पुन.पुष्य,अश्वि.अभि.स्वा.श्र.,ध.श. नक्षत्रेषु। |
| वाराः | चं. बु. बृ. श. एषां वारे नामकर्म हितम् । |
| तिथयः | १।२।३।५।७।११।१२।१३ तिथौ भद्रादिरहिते सत्युत्तमः। |
| शुद्धलग्न | २।५।८।११ एतद्रस्याङ्केऽष्टमशुद्धौशुभेलग्नेशुभांशेचोत्तमः। |
| लग्न शुद्धिश्च | लग्नात् १।४।५।७।९।१० शुभलग्नात् ३।६।११ पापैश्चोत्तमः। लग्नात् ६।८।१२ सर्वे न शुभः। चन्द्रताराबले मितृपुत्रयोः। दिवापूर्वाह्ने एवं कर्त्तव्यः। मध्याह्ने मध्यमं तदग्रे न सत् ।। |

दिवापूर्वाह्ने एवं कर्त्तव्यः। मध्याह्ने मध्यमं तदग्रे न सत्।। व्यतिपात संक्रान्त्यमावैधृतिग्रहणाहश्राद्धाहपक्षच्छिद्ररिक्तापूर्णा शकुनीकिंस्तुघ्नाविष्टि-करणादीन्वर्जयित्वोक्ततिथ्यादिनामकर्मविहितम्। अथ विहितकालातिक्रमे सतीदं गुरुशुक्रयोरस्तादिदोपरहिते सौम्यायने कार्यम्। नान्यथेति।।

### अथान्नप्राशनमुहूर्त्तज्ञानाय चक्रमिदम्

तत्र बालकानां षष्टमासादारभ्य सममासेषु। कन्यकानां पञ्चममासादारभ्य विषममासेषुकार्यम् । मासगणनासौरणान्नाशनं परिमितिज्ञेया।

| | |
|---|---|
| सद्भानि | रो. उ३. मृ. रे. चि. अनु. ह. पुष्य, अश्वि. अभि. पुन.श्र. ध. स्वा. श. एषु भेषु शुभ। अथसप्तशलाकाविद्ध ग्रहणभं त्याज्यम् । |
| तिथयः | २।३।५।७।१०।१३।१५ सत् । अन्येषु समः। |
| वाराः | चं. बु. बृ. शु. एषां वारः श्रेष्ठः। |
| लग्नादि | नान्यस्मिन्नाह्निं सल्लग्नानि २।३।४।५।६।७।१०।११ एषु जन्माङ्गभयो-र्मृत्युभस्याङ्ग तदंशकञ्च हित्वा प्रशस्तम् नान्यलग्ने। |

**अथ जलपूजनमुहूर्त्त विचारः।।** तत्र सूतिकाया मासपूर्ती सत्यां शुक्रेज्योरस्ते चैत्रपौषयोर्मासे तथाधिमासे जलं न पूज्येत्। श्र. पुष्य, पुन. मृ. ह. मू. भ. अनु. एषु भेषु विरिक्ते तिथौ। चं. बु. गु. एषां वारे शुभम्।

**अथ कर्णवेधमुहूर्त्तज्ञानायचक्रमिदम्।** तत्र जन्माहात १२।१६ दिने ततः ६।७।८ मासि। ततः विषमवर्षे कर्णवेधः शुभः। चैत्रपौषावमाजन्ममास चातुर्मास्यरिक्ता अमामवसर्पजन्मतारां हित्वां प्रशस्तः कर्णवेध इति।

| | |
|---|---|
| सत्तिथयः | १।२।३।५।७।१०।१२।१३।१५ एततिथौ सिते। कृष्णे च ति.१० यावत शुभः। |
| वाराः | चं. बु. बृ. शु. एषां वारे भद्रादिरहिते सत्युत्तमः। |
| सद्भानि | पुन.अश्वि.हस्त, पुष्य,अभि.मृग.चित्रा, अनु.रेव.श्र.ध. एतत्भेषु चन्द्रबले सति प्रशस्तः। |
| शु.लग्न | २।३।४।६।७।९।१२ एतद्रस्य लग्नेष्वंशेषु च सत् ।। |
| ल.शुद्धि | लग्नादष्टभवने संशुद्धे लग्नात् १।३।४।५।७।९।१०।११ एषुशुभेः तथा ३।६।११ एषु पापैश्चोत्तमः। लग्नस्थेगुरौ कर्णवेधः शुभावहः।। |

**अथ चौलमुहूर्त्तस्य बोधकार्थमिदं चक्रम्।** तत्र वर्षत्रयाद्विषमवर्षे जन्मतः विचैत्रोदगयने भानौ चोत्तमम् मनुना प्रथमवर्षेऽपि सदुक्तं चौलम् ।।

| | |
|---|---|
| सद्भानि | ज्ये. मृग. रे. चित्रा. हस्त, अश्वि. पुष्य, अभि. स्वाती, पुन. श्रवण, धनि. शत. एषु चन्द्रतारानुकूले सति शुभः।। |
| वाराः | चं. बु. गु. शु. एतद्वारेषु भद्रादिदोषरहिते श्रेष्ठम् ।। |
| सत्तिथयः | २।३।५।७।११।१३ एततिथौ सिते। परन्तु पूर्वाह्ने।। |
| शु.लग्न | २।३।४।६।७।९।१२ एतद्रस्य लग्नांशे श्रेष्ठोऽयम् ।। |

### अथाक्षरारम्भमुहूर्त्तस्य विचारः

सत्रोत्तरायणे रवौ। पञ्चमेऽब्दे गणेशविष्णुसरस्वतीलक्ष्मी कुलदेवान्नत्वा सविधि सम्पूज्य च शिशोर्नूतनाक्षरलेखनारंभः कार्यः।

| | |
|---|---|
| तिथयः | २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषुदुर्योगादिरहितासु शुभः।। |
| वाराः | चं. बु. बृ. शु. एषां वारेषु शुक्लपक्षेचाक्षरारम्भ शुभः।। |
| भानि | अश्वि. आर्द्रा, पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. रे. एषुभेषु शुभः।। |
| सां.ल.शु | २।३।६।९।१२ एतद्रस्याङ्के तदंशे चोत्तमः। अत्राष्टमशुद्धे कुम्भांशकंविनोत्तमः। खेस्थे जीवे बुधे शुक्रेलग्ने खेटबलाढ्ये श्रेष्ठोऽयम्।। |

### अथविद्यारम्भमुहूर्त्तस्य विचारः

तत्रादौ अक्षरग्रहणे दृढे संजाते सौम्यायनेरवौ आश्विने कन्यार्के बुधप्रावल्ये

| | |
|---|---|
| सद्वाराः | बु.सू.बृ.शु. एतद्वारेषु शुभः। गणेशवाग्देवतासभ्यर्च्य कार्यः।। |
| सद्भानि | अश्वि. पु. आ. अनु. मृ. पुन. ह. चि. स्व. श्र.,ध. मू. पू३. श्ले. शत. |
| सत्तिथयः | २।३।५।६।१०।१२ एषुसिते। ति. ५ यावत्कृष्णेचोत्तमः एषुसत्। |
| सांशलग्न | २।३।६।९।१२ एतद्रस्याङ्केशुभः। लग्नादष्टमे सर्वग्रहाःनेष्टाः। लग्नात् |
| शुद्धिः | १।२।३।४।५।७।९।१०।११ एषु शुभैः। ३।६।११ एषु पापैश्चोत्तमा अधीतिः।।इति।। |

### अथ व्रतबन्धमुहूर्त्तबोधचक्रमिदम्

तत्रगुरुशुक्रयोर्बृद्धत्वास्तशिशुत्वकालंविनोत्तरायणेरवौ माघादि ५ मासेषु शुभः। परन्त्वर्कन्दुगुरुशुद्धिवशेन। चैत्रेसति मीनार्केब्राह्मणानां व्रतं सत् ।।

| | |
|---|---|
| सद्भानि | अश्वि. ह. पुष्य, उ३.रो. श्ले. स्वा. पुन. श्रव. ध. श. मू. चि. मृ. अनु. पूर्वा३. रेव. आर्द्रा, एतद्भेषरहितेषु सत्। परन्तुनापराह्ने।। |
| तिथयः | २।३।५।१०।११।१२ एतासुशुक्ले २।३।५ कृष्णेतिथिषु चोत्तमः।। |
| सद्वाराः | सू. चं. बु. बृ. शु. एषावारे भद्राऽरूग्वाणादिदोषरहिते सत्युत्तमः।। |
| लग्नशुद्धि | त्रिषडस्थाःखलाः सर्वेचन्द्रोद्विद्यूनदिकत्रिगः। सौम्याः केन्द्रत्रिकोणस्था |
| ज्ञानमाह | लाभेसर्वव्रतेशुभाः।१। चं. शु. बृ. लग्नेशाः लग्नात् ६।८ न शुभाः। चन्द्रशुक्रो लग्नात् १२ निद्यौ। १।५।८ पापाः न शुभाः। ६।८।१२ सौम्यान शुभाः ३।६।११ पापाः शुभदाः। पूर्णेन्दु वृष कर्क गतोलग्ने श्रेष्ठोऽन्यथान। लग्नेऽर्कःशुभः। चन्द्रांशविनेति।। |

### अथ दीक्षाग्रहणमुहूर्त्तस्य बोधकचक्रमिदम्

| | |
|---|---|
| मासाः | चै.वै.श्रा.आश्वि.का. मार्ग. माघ, फा. एतन्मासेषुशुभग्नाधिमासे।। |
| भानि | अश्वि.रो.उ३.रे.अनु.पुष्य, स्वा.पुन.मृ.श्र.ध.श.पू३.चि. एषु सत्।। |
| वाराः | सू. चं. बु. बृ. शु. एषामह्नि भद्रादिदोषवर्जिते सति प्रशस्तम्।। |
| तिथयः | २।३।५।७।१०।११।१२ एतासुतिथिषुश्रेष्ठः कृष्णेयावत्पंचमींसत्। |
| शु.लग्न | २।३।४।५।६।७।९।१२ एतद्रस्याङ्केषुचन्द्रतारानुकूलेसति शुभम्।। |
| अङ्ग | लग्नात् ३।६।११ एषु पापैः १।४।५।७।९।१० एषु शुभैश्चोत्तमः।। |
| शुतिश्च | अष्टम्यां संक्रान्तौ रविचन्द्रोपरागे चोत्तमः। गुरुशुक्रोरुदयेश्रेष्ठः।। |

अथ द्वादशस्यचन्द्रफलम्। पाणिग्रहेस्त्रीसुरतेभिषेकेयात्राव्रतबन्धने च।। व्रतोपवासादिषु गर्गपूर्वैःप्रोक्तः शुभोद्वादशगोहिमांशुः।। इति।।

**अथ प्रतिमा-भङ्गादि-शान्तिः-** प्रतिमाशिवलिङ्गप्रासाद कलशादिभङ्ग स्वामिनो मरणं भवेत्। तत्र शान्तिः।। "कुण्डं कृत्वा विधानेन ततो होमं समाचरेत्। चरुं च यमदैवत्यं साधयित्वा विधानतः।। दधिक्षौद्र घृताक्तानामश्वत्थ समिधां ततः। जुहुयादष्टशतं प्राज्ञ इमारुद्रेति मंत्रवित्।। माषैर्मुद्गैस्तिलैश्चैव घृतेन मधुनापि च। एभिः पञ्चसहस्राणि शक्तिबीजेन होमयेत्।।" शक्तिबीजं ह्रीं बीजम्। "भूमिधेनुमनड्वाहं स्वर्णं धान्यं सदक्षिणम्। दत्त्वाथ पञ्चगव्येन स्नायाद्देवालये द्विजः।।बलिं दद्याद्यमायाथ कृसरैः पायसैस्तथा। ईशानाय बलिं दत्त्वा कृतकृत्यो भवेन्नरः।"

### अन्य मुहूर्त्तविचारः।

**क्रयविक्रय मुहूर्त्तः।** पुष्यं भाद्रपदायुग्मं मैत्रं श्रवणमश्विनी। हस्तोत्तरा मृगः स्वाती तथा श्लेषा च रेवती।। ग्राह्याणि भानि चैतानि क्रयविक्रयणे बुधैः। चन्द्रभार्गवजीवाश्च वाराः शकुनमुत्तमम् ।।

ऋणप्रादाने ग्रहणे च वर्ज्यम्। ऋणं भौमे न गृह्णीयान्न देयंबुधवासरे। ऋणंच्छेदं कुजे कुर्यात्संचयं सोमनन्दने।। हस्तेऽर्कवारे संक्रान्तौ यदृणं स्यात्कुलेषु तत् । वृद्धियोगे तथा ज्ञेयमृणच्छेदं तु कारयेत् ।।

**सेवाकर्म (नौकरी) मुहूर्त्तः।** हस्तेन्द्रयेऽनुराधायां रेवतीयुगले मृगे। पुष्ये बुधे गुरौ शुक्रे सत्तिथौ रविवासरे। योनिराशिपयोर्मैत्र्यां स्वामी सेव्योऽनुजीविभिः।

**इक्षुयन्त्र (गन्नामिल) मुहूर्त्तः।** वेद द्वि नेत्र भू भूत बाण हस्त रसाः क्रमात्। प्रथमे च भवेल्लक्ष्मीर्द्वितिये हानिरेव च।। तृतीये सर्वलाभश्च चतुर्थे च क्षयस्तदा। पञ्चमे च भवेन्मृत्युः षष्ठस्थाने शुभं स्मृतम् ।। सप्तमे चैव पीड़ा स्यादष्टमे धनधान्यकम् । सूर्यभाद्गणयेच्चान्द्रमिक्षुयन्त्रं योजयेत् ।।

**तैलिकयन्त्र (तेलमिल) मुहूर्त्तः।** आद्यांत्यपाणिद्वयमैत्रयुग्मे सवासवादित्यभधैषणेस्यात् । सदह्नि रिक्ताशुभयोगमुक्ते तत्सिद्धये तैलिकयंत्रकर्म।

**संगीत-नृत्यारंभ मुहूर्त्तः।** मैत्राकांत्यवसूत्तरेज्यवरुणः सेंद्रैः शुभं नर्तनं। लग्नेज्ञे गुरुवीक्षिते हिबुकगैः सौम्यैश्च संगीतकम् ।

**राज्याभिषेक मुहूर्त्तः।** (व्यहवारोच्चय)। जन्मांगर्क्षदशेशसद् ग्रहकुजैः सार्कैर्बलिष्ठैर्मृदुक्षिप्रेंदु ध्रुवभैः स्थिरर्द्धिनृतनौ व्याराह्नि भूपस्थितिः।।

**दत्तकपुत्र-पुत्री मुहूर्त्तः।** हस्तादिपञ्चकभिषवसुपुष्यभेषु सूर्यक्षमाज-गुरुभार्गववासरेषु। रिक्ताविवर्जिततिथिष्वलिकुम्भलग्ने सिंहेवृषे भवति दत्तसुतग्रहोऽयम् ।

**पुत्रप्राप्त्यर्थ शुभनक्षत्राणि।** षोडशर्तुनिशाः स्त्रीणां तस्मिन्युग्मासु संविशेत् । युग्मासु पुत्रा जायन्ते स्त्रियोऽयुग्मासु रात्रिषु।। पुष्ये धनिष्ठामृदुवायुमूले स्थिराश्विनीविश्वमघासु हस्ते। एभिः प्रविष्टा बहुपुत्रपौत्रा वसेच्चिरं भूरिगृणेरुपेता।।

**नवचण्डी-शतचण्डी सहस्रचण्ड्यादि देव्याराधन मुहूर्त्तः विचारः।** तत्रादौमास विचारः। वैशाखः फाल्गुनामाघः श्रावणो मार्गं एवं च। आश्विनः कार्त्तिको मासाः पूजायां तु शुभावहाः। तिथिविचारः। तृतीयापंचमी-पूर्णासप्तमीचत्रयोदशीदशमी द्वादशीषष्ठीचतुर्थीनवमी तथा। कृष्णाष्टमीचतुर्दश्यौ तिथयः सर्वकामदाः। वारविचारः। रविर्बृहस्पतिसोमाबुधशुक्रौ शुभावहाः। देवीपूजननक्षत्रविचारः। अश्विनी रोहिणीस्वाती पौष्णज्येष्ठोत्तरात्रयम्। पुष्यं पुनर्वसुर्भानि श्रेष्ठानि शक्ति पूजने। होमाहुतिविचारः। सूर्यभात्त्रित्रिभे चान्द्रे सूर्यविच्छुक्रपंगवः। चन्द्रारेज्यागुशिखिनो नेष्टा होमाहुतिः खले।। आहुतिदोष परिहार विवाहयाग व्रतबंध दीक्षा सीमंतचण्डी गृहवास्तुशांतौ। आदित्यसौरीकुजराहु केतवो न दोषदा यज्ञविधायिनां खलु। दुर्गाहोमे आहुतिचक्र विचारः। ब्राह्मी च कौमारी च वैष्णवी च वाराहिऐंद्री त्वथ चंडिका च। मेघा च माहेश्वरीनारसिंही क्रमेण सूर्यादिनभं त्रिकं च। श्रीपुत्रदा शोक भयौ धनाप्तिर्ह्रातस्तथा राजपदाप्तिरोगौ। विद्यासुखाप्तिर्नृपतेश्च लाभः फलानि दुर्गा हवने क्रमेण।

### दुर्गाहोमे आहुतिचक्रम्

| ब्रा. | कौ. | वै. | वा. | ऐ. | चं. | मे. | मा. | ना. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ३ | ६ | ९ | १२ | १५ | १८ | २१ | २४ | २७ |
| श्रे. | ने. | ने. | श्रे. | श्रे. | ने. | श्रे. | श्रे. | श्रे. |
| धन पुत्र | शोक | भय | धन | राज्य सुख | रोग | विद्या | सुख | राज सम्मा. |

**अथखट्वारोहणमुहूर्त्तस्यविचारः** जन्माहात् १०।१२।१६।२२ एषु दिवसेषु।। मृ. रे. चि. अनु. उ३. रो. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. एषु भेषु। शुभाह्ने। रिक्तामारहिततिथौ प्राक्शीर्षं बालकं तत्र विन्यसेत्।

**अथसूतिकाक्वाथौषधिभक्षणमुहूर्त्तज्ञानम्।** ह. अश्वि. पुष्य. अभि. मृ. अनु. रे. चि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मू. भानि। ३।६।९।१२ लग्ने। सू. चं. बृ. शु. वाराः।। लग्नात् ७।८।१२ शुद्धेषु। रिक्ताऽमा रहिते तिथौ। पुंलग्नं पूर्णेन्दुयुते श्रेष्ठः। जन्मराशौ न रसभक्षणम्।

**सूतिस्नानमुहूर्त्तस्य विचारः।।** रे. उ३. रो. हस्त. स्वा. अश्वि. अनु. एषु भेषु रवि, भौम, गुरु, दिवसेषु। १।२।३।५।७।१०।१३।१५ तिथिषु सत्।। आर्द्रा. पुन. पु. श्र. म. भ. वि. कृ. मू. चि. एषु भेषु बुधशनिवारयोः ४।६।८।९।१२।१४ तिथिषु न सत् एतद्भिन्नतिथिनक्षत्रवारेषु मध्यमम्।

**अथभूम्युपवेशनमुहूर्त्त विचारः।।** अत्रादौ पृथ्वीवराहाभिपूज्य भौमबले पञ्चमेमासि. कार्यम्। उ३. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. एतद्भेषु। रिक्तामारहिततिथौ। स्थिरभस्याङ्के। शुभवासरे च।। बालकस्य कटिस्थले कटिसूत्रं बध्वा पृथिव्यामुपवेशयेत्। तत्र मंत्राः। रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतंशुभ। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रियेति। अथात्रैव बालाग्रे इमानि स्थापयेत्। वस्त्रं। शस्त्रं। पुस्तकं। लेखनी। स्वर्णं। रौप्यं। एषु यद्बालो गृहणाति तैराजीविनो वृत्तिः प्रतिष्ठा च भवेत्।।

**अथ निष्क्रमणमुहूर्त्तज्ञानम्।** जन्मतश्चतुर्थे मासे यात्रोक्तसमयेऽर्कमितेह्नि वा सत्।

**विवाहे मण्डप निर्माणे परिहारः।** धनिष्ठान्ते शतभिषादौ पूर्वादो चोत्तरान्तिमे। पञ्च पञ्च घटी हेया रेवतीं सकलं त्यजेत्।।

**देवप्रतिष्ठामास विचारः प्रतिष्ठामासविचारः।** चैत्रे वा फाल्गुने वापि ज्येष्ठे वा माधवेऽपि वा। माघे वा सर्वदेवानां प्रतिष्ठा शुभदा भवेत्। **प्रतिष्ठानक्षत्राणि।** हस्तत्रये मित्रहरित्रये च पौष्णद्वयादित्यसुरेज्यभेषु। स्यादुत्तराधातृ शशांकभेषु सर्वमस्थापनमुत्तमं च।। **प्रतिष्ठायां तिथिविचारः।** यद्दिनं यस्य देवस्य तद्दिने तस्य संस्थितिः। द्वितीयादिद्वयोः पंचम्यादितस्तिसृषु क्रमात्। दशम्यादि चतसृषु पौर्णमास्यां विशेषतः।। प्रतिष्ठायां पक्षविचारः। प्राप्य पक्षं शुभं शुक्लमतीते दक्षिणायने। प्रतिष्ठायां वारविचारः। सोमो बृहस्पतिश्चैव शुक्रश्चैव तथा बुधः। एते वाराः शुभा प्रोक्ताः

| सयभातशिखर-स्थापनचक्रम् | | |
|---|---|---|
| १ | १ | १ |
| न. | श्रं. | श्रं. |

प्रतिष्ठायाज्ञानकर्माणि। देवस्थापने लग्नम्। स्थाप्यो हरिर्दिनकरो मिथुने महेशो। नारायणश्च युवतौ घटके विधाता। देव्यो द्विमूर्त्तभवनेषु निवेशनीयाः। क्षुद्राश्चरे स्थिरगृहे निखिलाश्च देवाः।।

श्री संवत् २०७९ शाके १९४४ चैत्रशुक्ल ति. १३ गुरौ १२।५४ ( दि.१०।५३ ) इष्टे मिथुन लग्नोदये जगल्लग्न प्रवेशः।

**जगल्लग्नफलविचारः-** लग्ने बलाढ्ये निजनाथ- सौम्यैर्युतेक्षिते केन्द्रगतैः शुभैश्च। सर्वसमर्घं विवले विलग्ने केन्द्रेषु पापैः सकलं महर्घम्। भानोमेषप्रवेशोदये-भवनपतिः सद् ग्रहः स्वोच्चसंस्था। स्वर्क्षस्थोवाऽपिकेन्द्रे शुभगगन-चरैर्दृष्टयुक्तोबलाढ्यः। तस्मिन्वर्षे विदद्ध्याज्जगतिशुभ सुखंभूरि स्वास्थ्यंसुवृष्टिः। क्रूरेक्रूरार्दिते-र्वादिशति तनुभयं कष्टमत्र महर्घम्। राकाकुहूशशिनिभास्वदज प्रवेश-लग्नेश्वराः शुभखगैर्युतवीक्षिताश्चेत्। तद्वत्सरे जगति सौख्यमलंप्रकुर्युः पापार्दिते गदनरेन्द्रभयं प्रजानाम्।३। मेषप्रवेशोदयतः खरांशो केन्द्रे च पापोडुपतीत्थशाले। पापग्रहै-र्दृष्टयुतेचत स्मिन्वर्षे गदार्तिः सदमत्र मुर्व्याम्।४। जन्मलग्नाद वर्षलग्ना-ज्जगल्लगनं यदा भवेत्। अष्टमं द्वादशं वाऽपि स वर्षो न शुभावहः।५। जन्मोद याद्धा-स्वदजप्रवेश लग्नं हि युद्धा वगतं बलान्वितः। तद्भाववृद्धिम्प्रकरोति तस्मिन्वर्षे नृणांपापयुते तदन्यथा।६। जन्मोदये देहसुखं धनेऽर्थला-भस्तृतीये च कुटुम्ब वृद्धिः। तुर्ये सुहृत्सौख्यमथात्मजाप्तिः पुत्रे च षष्टेऽरिपराजयश्च।७। स्त्री सौख्या-प्तिर्भवति मदने मृत्यु रुग्भीश्च रन्ध्रे धर्मार्थाप्तिस्तपसि दशमे वित्त-सौख्यात्मजाप्तिः। लाभेलाभः सुख धनचयो दुःख दारिद्र्य मन्त्ये। पुंसामेषप्रविशति रवौ जन्म-लग्नाद्विलग्ने।।इति।।

### दत्तक (पुत्र-पुत्री) ग्रहणमुहूर्त्तः

ह.चि.स्वा.वि.अनु.अश्वि.धनि. पुष्य नक्षत्रेषु, सू.मं.बृ.शु. वारेषु रिक्ता रहित तिथिषु ८।११।४।२ लग्नेषु च दत्तक पुत्र-पुत्री ग्रहणं शुभो भवति।

नाडीपरिहारःद्वयर्के ताम्रसुवर्णमष्टारिपुके गोयुग्मर्थाङ्कके। अथ होडाचक्रं वरकन्यानक्षत्रमेलापकविचारोपयोगिकम् ।। रौप्यं कांस्यमथैकनाडियुजिगोस्वर्णादिदत्वोद्वहेत् ।।

| नामा वर्णाः | नक्षत्रं | राशिः | वर्णाः | वश्यः | योनिः | यो.वै | राशीशः | गणः | नाडी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चू.चे.चो.ला | अश्विनी | मेष | क्षत्रिय | चतुष्पद | अश्व | महिष | भौम | देव | आदि |
| ली.लू.ले.लो | भरणी | मेष | क्षत्रिय | चतुष्पद | गज | सिंह | भौम | मनुष्य | मध्य |
| अ.ई.उ.ए. | कृत्तिका | मेष१ वृष३ | क्षत्रि१ वैश्य३ | चतुष्पद | मेष | वानर | भौम१ शुक्र३ | राक्षस | अन्त्य |
| ओ.वा.वी.वु. | रोहि | वृष | वैश्य | चतुष्प | सर्प | नकुल | शुक्र | मनुष्य | अन्त्य |
| वे.वो.का.की. | मृग | वृष२ मिथुन२ | वैश्य२ शूद्र२ | चतु२ मान२ | सर्प | नकुल | शुक्र२ बुध२ | देव | मध्य |
| कु.घ.ङ.छ. | आर्द्रा | मिथुन | शूद्र | मानव | श्वान | मृग | बुध | मनुष्य | आदि |
| के.को.हा.ही. | पुनर्वसु | मिथु३ कर्क१ | शूद्र३ विप्र१ | मान३ जल१ | मर्जार | मूषक | बुध३ चन्द्र१ | देव | आदि |
| हू.हे.हो.डा. | पुष्य | कर्क | विप्र | जलचर | मेष | वानर | चन्द्र | देव | मध्य |
| डी.डू.डे.डो. | ऽश्लेषा | कर्क | विप्र | जलचर | मार्जार | मूषक | चन्द्र | राक्षस | अन्त्य |
| मा.मी.मू.मे. | मघा | सिंह | क्षत्रिय | चतुष्प | मूषक | मार्जार | सूर्य | राक्षस | अन्त्य |
| मो.टा.टी.टू. | पू.फा. | सिंह | क्षत्रिय | चतुष्प | मूषक | मार्जार | सूर्य | मनुष्य | मध्य |
| टे.टो.पा.पी. | उ.फा. | सिंह१ कन्या३ | क्षत्रि१ वैश्य३ | चतु१ मान३ | गौ | व्याघ्र | सूर्य१ बुध३ | मनुष्य | आदि |
| पू.ष.ण.ठ. | हस्त | कन्या | वैश्य | मानव | महिष | अश्व | बुध | देव | आदि |
| पे.पो.रा.री. | चित्रा | कन्या२ तुला२ | वैश्य२ शूद्र२ | मानव | व्याघ्र | गौ | बुध२ शुक्र२ | राक्षस | मध्य |
| रु.रे.रो.ता. | स्वाती | तुला | शूद्र | मानव | महिष | अश्व | शुक्र | देव | अन्त्य |
| ती.तू.ते.तो. | विशा. | तुला३ वृश्चि१ | शूद्र३ विप्र१ | मानव३ कीट१ | व्याघ्र | गौ | शुक्र३ भौम१ | राक्षस | अन्त्य |
| ना.नी.नू.ने. | अनु. | वृश्चिक | विप्र | कीट | मृग | श्वान | भौम | देव | मध्य |
| नो.या.यी.यू. | ज्येष्ठा | वृश्चिक | विप्र | कीट | मृग | श्वान | भौम | राक्षस | आदि |
| ये.यो.भा.भी | मूल | धनु | क्षत्रिय | मानव | श्वान | मृग | गुरु | राक्षस | आदि |
| भू.ध.फ.ढ. | पू.षा. | धनु | क्षत्रिय | मान।। चतु३।। | वानर | मेष | गुरु | मनुष्य | मध्य |
| भे.भो.जा.जी. | उ.षा. | धनु१ मकर३ | क्षत्रि१ वैश्य३ | चतुष्प | नकुल | सर्प | गुरु१ शनि३ | मनुष्य | अन्त्य |
| खी.खू.खे.खो. | श्रवण | मकर | वैश्य | चतु१।। जल२।। | वानर | मेष | शनि | देव | अन्त्य |
| गा.गी.गू.गे. | धनि. | मकर२ कुम्भ२ | वैश्य२ शूद्र२ | जच२ मान२ | सिंह | गज | शनि | राक्षस | मध्य |
| गो.सा.सी.सू | शत. | कुम्भ | शूद्र | मानव | अश्व | महिष | शनि | राक्षस | आदि |
| से.सो.दा.दी | पू.भा. | कुम्भ३ मीन१ | शूद्र३ विप्र१ | मान३ जल१ | सिंह | गज | शनि३ गुरु१ | मनुष्य | आदि |
| दू.थ.झ.ञ. | उ.भा. | मीन | विप्र | चलच | गौ | व्याघ्र | गुरु | मनुष्य | मध्य |
| दे.दो.चा.ची | रेवती | मीन | विप्र | जलच | गज | सिंह | गुरु | देव | अन्त्य |

गुरुसूर्यबलस्यविचारः। कन्याविवाहे कुमारस्योपनयने च गुरुबलम्। कुमारस्योद्वाहोपनयनयोः। सूर्यबलमुभयोश्चन्द्रबलञ्च चिन्त्यमिति।

**१ वर्णस्यगुणाः। वरस्य** (कन्यायाः)

| वर्णाः | वि. | क्ष. | वै. | शू. |
|---|---|---|---|---|
| विप्र | १ | ० | ० | ० |
| क्षत्रिय | १ | १ | ० | ० |
| वैश्य | १ | १ | १ | ० |
| शूद्र | १ | १ | १ | १ |

**२ वश्यगुणाः। वरस्य** (कन्यायाः)

| वश्याः | च. | मा. | ज. | व. | की. |
|---|---|---|---|---|---|
| चतुष्प | २ | १ | १ | ० | १ |
| मानव | १ | २ | ।। | ० | १ |
| जलचर | १ | ।। | २ | १ | १ |
| वनचर | ० | ० | १ | २ | ० |
| कीट | १ | १ | १ | ० | २ |

**३ तारायाः गुणाः वरस्य** (कन्यायाः)

| तारा | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ३ | ३ | १।। | ३ | १।। | ३ | १।। | ३ | ३ |
| २ | ३ | ३ | १।। | ३ | १।। | ३ | १।। | ३ | ३ |
| ३ | १।। | १।। | ० | १।। | ० | १।। | ० | १।। | १।। |
| ४ | ३ | ३ | १।। | ३ | १।। | ३ | १।। | ३ | ३ |
| ५ | १।। | १।। | ० | १।। | ० | १।। | ० | १।। | १।। |
| ६ | ३ | ३ | १।। | ३ | १।। | ३ | १।। | ३ | ३ |
| ७ | १।। | १।। | ० | १।। | ० | १।। | ० | १।। | १।। |
| ८ | ३ | ३ | १।। | ३ | १।। | ३ | १।। | ३ | ३ |
| ९ | ३ | ३ | १।। | ३ | १।। | ३ | १।। | ३ | ३ |

**विवाहेरविचन्द्र गुरुशुद्धिचक्रम्**

| रविः | चन्द्रः | गुरुः | ग्रहाः |
|---|---|---|---|
| ३।६।१०।११ | ३।६।७।१०।११ | २।५।७।९।११ | शुभस्थानानि |
| १।२।५।७।९ | १।२।५।९ | १।३।१०।६ | पूज्यस्थानानि |
| ४।८।१२ | ४।८।१२ | ४।८।१२ | निन्दितस्थानानि |

**४ अथात्र योनिकूटस्य गुणज्ञानायचक्रमिदम् ( उपरि वरस्य पार्श्वे कन्यायाः )**

| योनयः | अश्व | गज | मेष | सर्प | श्वान | मार्जार | मूषक | गौ | महिष | व्याघ्र | मृग | वानर | नकुल | सिंह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अश्व | ४ | २ | ३ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ० | १ | ३ | २ | २ | १ |
| गज | २ | ४ | ३ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | १ | २ | ३ | २ | ० |
| मेष | ३ | ३ | ४ | ३ | २ | ३ | १ | ३ | ३ | १ | ३ | ० | ३ | १ |
| सर्प | २ | २ | २ | ४ | २ | २ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | ० | २ |
| श्वान | २ | २ | २ | २ | ४ | १ | १ | २ | २ | १ | ० | २ | २ | १ |
| मार्जार | २ | २ | ३ | २ | १ | ४ | ० | २ | २ | १ | २ | २ | २ | २ |
| मूषक | २ | २ | २ | १ | १ | ० | ४ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | १ |
| गौ | ३ | २ | ३ | १ | २ | २ | २ | ४ | ३ | ० | ३ | २ | ३ | १ |
| महिष | १ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ | ३ | ४ | १ | २ | २ | २ | ३ |
| व्याघ्र | १ | २ | १ | २ | १ | १ | २ | ० | १ | ४ | २ | १ | २ | २ |
| मृग | ३ | २ | ३ | २ | ० | २ | ३ | ३ | २ | १ | ४ | २ | २ | २ |
| वानर | २ | ३ | ० | २ | २ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | ४ | २ | ३ |
| नकुल | २ | २ | ३ | ० | २ | २ | २ | ३ | २ | २ | २ | २ | ४ | २ |
| सिंह | १ | ० | १ | २ | २ | २ | १ | १ | ३ | २ | २ | २ | २ | ४ |

**नैसर्गिकग्रहमैत्रीचक्रमिदम्**

| ग्रहाः | सूर्यः | चन्द्रः | मंगल | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मित्राणि | चं.मं.बृ. | सू.बु. | सू.चं.बृ. | सू.शु. | सू.मं.चं. | बु.श. | बु.शु. |
| समा | बुध | मं.गु. शु.श. | शुक्रः शनिः | मं.बृ. शनि | शनिः | भौम गुरुः | गुरुः |
| शत्रवः | शुक्रः शनिः | ❀ | बुधः | चन्द्र | बुधः शुक्र | सूर्य चन्द्र | सूर्य चं.मं. |

**६ गुणगुणाः** (कन्यायाः)

| गणाः | दे. | म. | रा. |
|---|---|---|---|
| देव | ६ | ५ | १ |
| मनुष्य | ६ | ६ | ० |
| राक्षस | ० | ० | ६ |

**८ नाडीगुणाः** (कन्यायाः)

| नाडी | आ. | म. | अं. |
|---|---|---|---|
| आदि | ० | ८ | ८ |
| मध्य | ८ | ० | ८ |
| अन्त | ८ | ८ | ० |

**अष्टौ वर्गास्तदीशाश्च**

| ट.५ | च.५ | क.५ | अं.७ |
|---|---|---|---|
| श्वान | सिंह | मार्जार | गरूड़ |
| श.८ | य.४ | प.५ | त.५ |
| अवि. | मृग | मूषक | सर्प |

**७ राशिकूटस्य गुणाः। ( उपरि वरस्य पार्श्वे कन्यायाः। )**

| राशयः | १मे | २वृ | ३मि | ४क | ५सि | ६कं | ७तु | ८वृ | ९ध | १०म | ११कु | १२मी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेष | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० |
| वृष | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ |
| मिथुन | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ |
| कर्क | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० |
| सिंह | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० |
| कन्या | ० | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ |
| तुला | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० |
| वृश्चिक | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० |
| धनु | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ७ |
| मकर | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ७ |
| कुम्भ | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ० |
| मीन | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० | ७ |

**५ ग्रहमैत्रकस्य गुणाः वरस्य** (कन्यायाः)

| ग्रहा | सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | ५ | ५ | ५ | ४ | ५ | ० | ० |
| चन्द्र | ५ | ५ | ४ | १ | ४ | ।। | ।। |
| मंगल | ५ | ४ | ५ | ।। | ५ | ३ | ।। |
| बुध | ४ | १ | ।। | ५ | ।। | ५ | ४ |
| गुरु | ५ | ४ | ५ | ।। | ५ | ।। | ३ |
| शुक्र | ० | ।। | ३ | ५ | ।। | ५ | ५ |
| शनि | ० | ।। | ।। | ४ | ३ | ५ | ५ |

**गुणविचारः।**

गुणैः षोडशभिर्निन्द्यामध्यमा विंशतिस्तथा। श्रेष्ठ त्रिंशदगुणं यावत्परत स्तूत्तमोत्तमम्। सद्भकूट इति। ज्ञेयदुष्टकूट तु चान्यथा। निन्द्यं गुणे विंशतिभिर्मध्य वाणाधिकैर्मतम्। तत्परः पञ्चभिः श्रेष्ठं ततः श्रेष्ठतरं गुणाः। अन्याविशेषः- एकराशौपृथग्धिष्ण्ये अन्त्यांत्यो चरणौ यदा अतीवशोभनः प्रोक्तो द्वितीयस्थो न दोषकृत्। एकराशौ पृथगृक्षे- एकर्क्षे भिन्नराशिगः एकाधिपत्ये मैत्रे वा द्वितीयं स्वामिमं शुभम्।



**नक्षत्र मेलापक-चक्रम्। पार्श्वे कन्यानक्षत्राणि उपरि वर नक्षत्राणि।।**

| नक्षत्राणि | अश्वि. | भर. | कृ१. | कृ.३ | रोहि. | मृग.२ | मृ.२ | आर्द्रा | पुन.३ | पुन.१ | पुष्य | ऽश्ले. | मघा | पू.फा. | उ.फा.१ | उ.फा.३ | हस्त | चि.२ | चि.२ | स्वा | वि.३ | वि.१ | अनु. | ज्ये. | मूल | पूषा।। | पूषा३।। | उषा१ | उषा३ | श्र.२।। | श्र.२।। | धनि२ | धनि२ | शत. | पू.भा३ | पू.भा१ | उ.भा. | रेवती |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अश्विनी | २८ | ३३ | २८।। | २८।। | २१।। | २२।। | ३६ | १७ | १८ | २२।। | ३१।। | २७ | २०।। | २६ | १७।। | ११ | ९ | १३ | २२।। | २६।। | २२।। | १९।। | २६।। | १५ | १३ | २६ | २७ | २४।। | २६ | २६ | २४ | २१ | २१ | १५ | १६ | २४।। | २४।। | २६ |
| भरणी | ३४ | २८ | २९ | १९ | २२।। | २४।। | १७ | २६ | २६ | ३०।। | २३।। | २४।। | २१ | १९ | २८ | २१।। | १९ | ६ | १४।। | २९।। | २२।। | १९।। | २७।। | १९।। | २० | १९ | २० | २७ | २८।। | २८ | २६ | १० | १० | २० | २४ | २२।। | २६।। | २८ |
| कृत्तिका१ | २७।। | २७।। | २८ | १६।। | ९ | १५।। | १९ | २० | २१ | २५।। | २६।। | २३।। | २७।। | २२ | २२ | १५।। | १५।। | १८।। | २७।। | १५।। | १९।। | १६।। | २०।। | २६।। | २४।। | १८ | १९ | १४ | १५।। | ११।। | १०।। | २५ | २५ | २७ | १९।। | १७।। | १९।। | ११।। |
| कृत्तिका३ | १८।। | १८।। | १९ | २८ | १९ | २५।। | १६।। | १७।। | १८।। | २३ | २३ | २० | १९।। | २३ | २४ | २१ | २१ | २३।। | २२।। | १०।। | १४।। | २२।। | २५।। | ३१।। | २० | १२।। | १३।। | ९।। | १४ | ११ | १० | २२।। | २९।। | ३२ | २३।। | २० | २२ | २४ |
| रोहिणी | २३।। | २३।। | १० | १९ | २८ | ३६ | २७ | २३।। | २३।। | २७ | २८ | १३ | २२।। | २६।। | २८ | २५ | २६ | ३० | १९ | १५।। | ९।। | २६।। | ३०।। | २४।। | १४ | १९ | २० | २२।। | १७ | १९ | २८ | २० | २६ | २४।। | ३०।। | २७ | २६ | ११ |
| मृगशिर२ | २३।। | १३।। | १८।। | २८।। | ३४ | २८ | १९ | २५ | २३।। | २६ | २० | २२ | २१।। | १७।। | २५।। | २३।। | २० | १३ | १२ | २५ | १७।। | २३।। | २२।। | २५।। | १५ | १२ | १२ | १८ | २१ | २४।। | २४।। | १३ | १९ | २७ | २९।। | २६ | १७ | २७ |
| मृगशिर२ | २७ | १८ | २१ | १८।। | २५।। | २० | २८ | ३३ | ३१।। | १९।। | १३ | १५।। | २४ | २०।। | २८।। | ३०।। | ३४ | २१ | ३४ | २७ | १९।। | २४ | ११ | १३ | २३ | १९ | १८ | २४ | २०।। | २५ | २५ | १२ | १३ | २१ | २३।। | २७।। | १७ | २७ |
| आर्द्रा | १९ | २७ | २१ | १८।। | २४।। | २६ | ३४ | २८ | २५ | १३ | २०।। | १३।। | २३।। | २९।। | २२।। | २४।। | २४।। | २७ | २० | २७ | २० | २३।। | २७ | ४ | १६ | २८ | २७ | २७ | २२।। | २२।। | २२।। | १७ | १९ | २२ | १६ | १९ | २७ | २७ |
| पुनर्वसु३ | १९ | २६ | २२ | १९।। | २३।। | २४।। | ३२।। | २४ | २८ | १६ | २३ | १६।। | २२।। | २७।। | २१।। | २३।। | २४।। | २५।। | २८।। | २७ | २१ | २३।। | २०।। | ५ | १३ | २७ | २६ | २७ | २३।। | २२।। | २३।। | १७।। | १८।। | ११ | १७ | १९।। | २७।। | २८ |
| पुनर्वसु१ | २१।। | २८।। | २५।। | २० | २४ | २५ | १९ | १०।। | १४।। | २८ | ३५ | २८।। | १५।। | २० | १४।। | १७ | १८ | २०।। | २० | २७ | २० | १९ | २६ | २०।। | ८ | २२ | २०।। | २१।। | २६।। | २५ | २७ | २१ | १२।। | ७।। | ११ | २७ | २५ | २५।। |
| पुष्य | ३०।। | २१।। | २६।। | २३ | २४ | १७ | १० | १८ | २१।। | ३५ | २८ | ३० | १८।। | १४।। | २३।। | २६ | २७ | १२ | ११।। | २६ | २१ | २० | १९ | २२ | २७ | ११ | २२।। | २२।। | २६ | २४ | २५ | १३ | ४।। | २४।। | १८ | २४ | २८ | २७ |
| ऽश्लेषा | २५ | २३।। | २२।। | १९ | १२ | २१ | १३ | १२ | १५ | २८।। | २८।। | २८ | १५ | १५।। | १७।। | २०।। | २० | २६ | २५।। | १२।। | १६।। | १५।। | २० | २६ | २२।। | २६ | १६।। | ८।। | १२ | १३ | १३ | २७ | १८।। | १८।। | १२।। | १८।। | २० | १२ |
| मघा | २१ | २२ | १७।। | १८।। | ११।। | १९।। | २२।। | २२।। | २१।। | १६।। | १८।। | १६ | २८ | ३० | २६।। | १६।। | १६।। | २२।। | २५।। | ११।। | १७।। | २४।। | २६।। | ३४ | २४ | २० | २१ | ११।। | ५।। | ५।। | ४।। | १८।। | २४।। | २५।। | १८।। | १८।। | १८।। | १२ |
| पू.फा. | २७ | १९ | २१ | २२ | २५।। | १७।। | २०।। | २८।। | २७।। | २२।। | १६।। | १६।। | ३० | २८ | ३४ | २४ | २२।। | ८।। | ११।। | २५।। | १९।। | २६।। | २४।। | २४।। | १९ | १९ | १९ | २७ | २१ | १९।। | १८।। | ४।। | ११।। | २९।। | २४।। | २३।। | १६।। | २४।। |
| उ.फा.१ | १८।। | २७ | २२ | २३ | २७ | २५।। | २८।। | २१।। | २१।। | १६।। | २५।। | १८।। | २६।। | ३४ | २८ | १८ | १६।। | १४।। | १७।। | २६।। | १७।। | २४।। | ३०।। | २९।। | २०।। | २६ | २७ | २८ | २२ | २१ | २० | ११।। | १८।। | २२।। | १६।। | १५।। | २६।। | २४।। |
| उ.फा.३ | १३ | २१।। | १६।। | २१ | २५ | २३।। | ३०।। | २३।। | २३।। | १९।। | २८।। | २१।। | १७।। | २५ | १९ | २८ | २५।। | २४।। | १६।। | २५।। | १६।। | २८ | २७ | १३ | २५।। | २९।। | २८।। | २३।। | २६ | २५ | २५ | १६।। | १६।। | २०।। | २४।। | २८ | २९।। | २७ |
| हस्त | २० | २० | १६।। | २१ | २६ | २६ | ३३ | २३।। | २३।। | १९।। | २८।। | २१।। | १७।। | २२।। | १७ | २६ | २८ | २७ | १९ | २६।। | १७।। | १९।। | २६ | १२ | १४ | २७ | २६ | २७।। | २३ | २४ | २४ | १९ | १९ | ८।। | १४।। | १९ | २७।। | २७ |
| चित्रा२ | १२ | ६ | १३ | २५।। | २० | १२ | १९ | २६ | २४।। | २०।। | १२।। | २६।। | २३।। | ९।। | १५।। | २४।। | २७ | २८ | २० | १९ | २६।। | २८ | ११ | २५ | २८ | १४ | १३ | २१ | २७।। | १९ | १९ | १८ | १८ | २४ | १८।। | २२ | ११ | २१ |
| चित्रा२ | २२।। | १५।। | २८।। | २३।। | २० | १२ | १३ | २० | १८।। | २० | १२ | २६ | २५।। | १०।। | १७।। | १७।। | २० | २१ | २८ | २७ | ३४।। | २४।। | ७।। | २१।। | २८ | २४ | २३ | २१ | २५।। | २७ | २७ | २६ | २० | २६ | २०।। | २५ | ४ | १३ |
| स्वाती | २७।। | २९।। | २७।। | १२।। | १६।। | २७ | २७ | २६ | २६।। | २८ | २८ | १५।। | १३।। | २५।। | २५।। | २५।। | २७।। | २१ | २८ | २८ | २० | १० | २३।। | १८।। | २३ | २७ | २६ | २८ | २२।। | २३।। | २३।। | २७ | २१ | २० | २५ | १९।। | २० | १३ |
| विशाखा३ | २२।। | २२।। | २०।। | १५।। | २०।। | १८।। | १९।। | २१ | २१ | २२।। | २१।। | १९।। | १७।। | १९।। | १८।। | १७।। | १८।। | २७।। | ३४।। | १८ | २८ | १८ | १७ | २०।। | २८ | २२ | २१ | १३ | १७।। | १७।। | १७।। | ३२।। | २६ | २६ | २२ | २६।। | १३।। | ५ |
| विशाखा१ | १६।। | १६।। | १४।। | १९।। | १४।। | २२।। | १३ | १४।। | १४।। | १९ | १८ | १५।। | २१।। | २३।। | २२।। | १८ | १९ | २८ | २३।। | ८ | १७ | २८ | २७ | ३१।। | २३।। | १६।। | १६।। | ९।। | १२ | १२ | १२ | २७ | २७ | २६।। | २२।। | २१ | १८ | ९।। |
| अनुराधा | २४।। | १४।। | १९।। | २४।। | २७।। | २०।। | ११ | १६ | २१।। | २६।। | १८ | २१ | २४।। | २०।। | २९।। | २६ | २७ | १२ | ७।। | २२।। | २७ | २८ | २८ | ३१ | २६।। | १४।। | १४।। | २२ | २५ | २६ | २६ | १२ | १२ | २२ | २४।। | २४ | १८ | २७ |
| ज्येष्ठा | १२ | १८।। | २४।। | २९।। | २२।। | २२।। | १३ | ३ | ६ | १०।। | २० | २६ | ३१ | २३।। | १६।। | १३ | १२ | २५ | २०।। | १६।। | २०।। | ३१।। | ३० | २८ | १५ | १७।। | १७।। | १७।। | २० | २० | २० | २५ | २५ | २८ | ११ | ९ | २१ | २१ |
| मूल | १२ | २० | २४।। | १९ | १३ | १४ | २१ | १५ | १२ | ८।। | १७।। | २४ | २५ | १९ | ९।। | १३ | १३ | २७ | २७ | २१ | २७ | २४।। | १६।। | २६ | २८ | १७ | २७ | २५।। | १५।। | १५।। | १५।। | २२।। | २८ | २२।। | १६।। | १६।। | २५।। | २७।। |
| पू.षा.।। | २६ | १९ | १८ | १२।। | १९ | ११ | १९ | २७ | २७ | २३।। | १३।। | १७।। | २१ | १९ | २५ | २८।। | २७ | १२ | १२ | २७ | २० | २६।। | १८।। | १७।। | २८ | १७ | २७ | ३३ | २३ | २३।। | २३।। | ८।। | २६।। | २३।। | ३२।। | ३२।। | २३।। | ३२ |
| पू.षा.३।। | २७ | २० | १९ | १३।। | २० | १२ | १८ | २६ | २६ | २३।। | १३।। | १७।। | २१ | १९ | २७ | २७ | २६ | ११ | ११ | २६ | १९ | १८।। | १८।। | १९।। | २७ | १८ | २८ | ३४ | २६ | २४ | २३।। | ८।। | २५।। | २३।। | २९।। | ३२।। | २३।। | ३२।। |
| उ.षा.१ | २५।। | २७ | १४ | ८।। | ११।। | १८ | २४ | २६ | २६ | २३।। | २४।। | ९।। | ११।। | २७ | २८ | २८।। | २७।। | २० | २० | १९ | १२ | ११।। | २५।। | १९।। | २५।। | ३३ | ३४ | २८ | १८ | १६ | १५ | १५।। | २२।। | २२।। | २८।। | ३२।। | ३२।। | २३।। |
| उ.षा.३ | २८ | २९।। | १६।। | १४ | १७ | २२।। | २०।। | २२।। | २२।। | २७ | २८।। | १३ | ६।। | २२ | २३ | २६ | २५ | १७।। | २४।। | २३।। | १६।। | १४ | २८ | २२ | २६।। | २६ | २५ | १९ | २८ | २६ | २५ | २५।। | १७।। | १७।। | ३३।। | ३०।। | ३२।। | २३।। |
| श्रवण१।। | २८ | २७ | २४।। | १२ | १८ | २७ | २४ | २२।। | २२।। | २७ | २५ | १५ | ५।। | १९।। | २० | २४ | २५ | १९ | २६ | २३।। | १६।। | १४ | २८ | २३ | १७।। | २३।। | २४।। | १७ | २५ | २८ | २७ | ३० | २२ | २८।। | २३।। | ३१।। | ३०।। | २२।। |
| श्रवण२।। | २७ | २६ | १३।। | १० | १७ | २६ | २३।। | २१ | २३।। | २८ | २६ | १५ | ६।। | १८।। | २०।। | २३।। | २४।। | १८।। | २५।। | २३ | १६ | १४ | २८ | २२ | १६ | २३ | २५।। | २५ | २४ | २७ | २८ | ३० | २०।। | १८ | २३ | ३१।। | ३१।। | २४।। |
| धनिष्ठा२ | २०।। | १९।। | २६ | २३।। | २० | १२ | ८।। | १७।। | १७।। | २२ | १३ | २८ | १८।। | ५।। | १२।। | १६ | १८।। | १६।। | २३।। | २६ | ३० | २८ | १४ | २६ | २१ | ९ | ९।। | १६।। | २५।। | २८ | २८ | २८ | १८।। | २३।। | २१ | २६।। | १५।। | २२।। |
| धनिष्ठा२ | २० | ११ | २६ | ३०।। | २७।। | १९ | १० | २० | १९ | १४ | ५ | २० | २५।। | २३।। | १९।। | १७।। | २१ | १८ | १९ | २२ | २५।। | २८ | १२ | २६ | २९।। | १७।। | १६।। | २३।। | १८।। | २१ | २१ | २० | २८ | ३३ | २८।। | १८ | ७ | २४।। |
| शतभिष | १५ | २१ | २८ | ३२।। | २५।। | २५ | १८ | १० | १० | ७।। | १५ | २० | २६।। | २०।। | १३।। | ११।। | ८।। | २६ | २६ | १९ | २६ | २६।। | २१ | १९ | २२।। | २४।। | २३।। | २३।। | १८।। | १८।। | १८।। | २५ | ३३ | २८ | १९ | ९।। | १७ | १६।। |
| पू.भा.३ | १८ | २५ | २० | २४।। | ३१।। | ३१।। | २४।। | १७ | १७ | १३।। | २०।। | १४ | १९।। | २५।। | १७।। | १५।। | १७।। | १८।। | १९।। | २८ | ३२ | २१।। | २७।। | १२ | १५।। | ३१।। | ३०।। | २९।। | २४।। | २५।। | २५।। | २०।। | २७।। | १९ | २८ | १८।। | २३।। | २०।। |
| पू.भा.१ | १४।। | २१।। | १६।। | १९ | २६ | २६ | २५।। | १८ | १८ | १८ | २५ | १८।। | १६।। | २२।। | १४।। | १६।। | १८।। | १९।। | १२।। | १९ | १४ | २१ | २७ | ११।। | १५ | ३१ | ३१।। | ३०।। | २८।। | २९।। | ३०।। | २५।। | १७ | ७।। | १६।। | २८ | २३ | ३०।। |
| उ.भा. | २४।। | १५।। | १८।। | २१ | २५ | १७ | १६।। | २५।। | २७ | २६ | १९ | २० | १७।। | १५।। | २५।। | २७।। | २६ | ९।। | ५ | १९।। | १२ | १९ | २० | २२ | २४ | २२ | २२।। | ३१।। | २९।। | २८।। | २९।। | १४।। | ६ | २६।। | २१।। | ३३ | २८ | ३५ |
| रेवती | २५ | २४।। | ११।। | १४ | १७ | २६ | २५।। | २४ | २५।। | २४।। | २७।। | १३ | १२ | २२ | २२।। | २४।। | २६।। | २०।। | १३।। | ११।। | ५।। | १२।। | २७ | २२ | २७ | २०।। | ३० | २१ | १९ | २०।। | २२।। | २२।। | १४ | १६ | १८ | २९।। | ३३ | २८ |

समानगोत्रप्रवरविवाहे महापातकमुक्तम् - *आपस्तम्बः*- समानगोत्रप्रवरांकन्या मुद्वोपगम्यच। तस्यामुत्पाद्य चाण्डालं ब्राह्मण्यादेव हीयते।। अन्यच्च।। एकस्मिन्प्रवरतुल्यमातृगोत्रे वरस्य च। तमुद्वाहं न कुर्वीत सा कन्या भगिनी भवेत्। आरूढ़पतितापत्यं ब्राह्मण्यां यश्च शूद्रजः। सगोत्रोढासुतश्चैव चाण्डलास्त्रय ईरितः। अथसमानाक्रियादिविचारः एकमातृजयोरेकवत्सरे पुरुषस्त्रियौ। नसमानक्रियां कुर्यान्मातृभेदे विधीयते। नारदाऽपिविवाहस्त्वेकन्यायां षण्मासाभ्यन्तरे यदि। असंशयात्त्रिभिर्वर्षे सतत्रैकाविधवाभवेत्। एकोदरप्रसूतयोः पुत्रयाः कन्यायाः कन्यापुत्रयोश्चायं निषेधः। सकलशुभकर्मणाम्। पुत्रविवाहानन्तरं पुत्र्युद्वाहनिषेधः पुत्रोद्वाहात्परं पुत्रीविवाहो न ऋतुत्रये। वर्षभेदे तुषण्मासाभ्यन्तरे विहितः शुभः। कन्योद्वारात्परं पुत्रविवाहः श्रेष्ठः। सोदरकन्यया सोदराभ्यामुद्वाहं निषेधश्च। नारदः चैकजन्मनोः पुंसो नैकजन्ये तु कन्यके।। नूनं कदाचिदुद्वाहे नैकदा मण्डपद्वयमिति।। **वर्णादिपरिहारः** *शौनकः*- वर्गवैरं यौनिवैरं गणवैरं नृदूरकम्। दुष्ट कूट फलं सर्वं ग्रहमैत्रेण नश्यति।१। न वर्णवर्गोन गणो न योनिर्द्विर्द्वादशेचैव षडष्टके वा। वरेऽपि दूरे नवपञ्चमे वा मैत्री यदा स्याच्छुभदो विवाहः।२। सद्भकूटं योनिशुद्धिः ग्रहसंख्यं गुणत्रयम्। एष्वेकतमेसद्भावे कन्या रक्षोगणा शुभा।३। राशीशयोः सुद्भभावे मित्रत्वे चांशनाथयोः। गणादिदोषेप्युद्वाहः पुत्रपौत्रप्रवर्धनः।४। स्त्रीराशेर्वरभं दूरं कन्या दूरं शुभावहम्। व्यस्तं नृदूरमशुभं वश्यत्वात्तदपीष्टदम्।५।

## अथात्रयुजिभचक्रमिदम्

| | | |
|---|---|---|
| अ.भ.कृ. रो.मृ.रे. | आ.पुन.पु.श्ले.म.पू.फा.उ. फा.ह.चि.स्वा.विशा.अनु. | ज्ये.मू.पू.षा.उ.षा.श्र. धनि.शत.पू.भा.उ.भा. |
| पूर्वभाग ६ | मध्यभाग १२ | परभाग ९ |
| पतिश्रेष्ठ: | द्वयो: सुप्रीति: | कन्या श्रेष्ठा |

## अथोद्वाहलग्ने रेखाप्रदग्रहा:

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३।। | ५ | १।। | २ | ३ | २ | १।। | १।। | १।। |

सू. श. रा. के. ३।६।८।११, मं. ३।६।११, चं. २।३।११, बु. बृ. १।२।३।५।६।९।१०।११, शु. १।२।४।५।९।१०।११ उक्त स्थानस्थ ग्रहाङ्कान् संयोज्य विवाहलग्नेग्रहवलविश्वा ज्ञेया लग्नेशनवलवेशौ १।४।७।१०।११ स्थानेषु दोषसमूहं नाशयत्।

## वधूप्रवेश मुहूर्त्त:

स च विवाहदिवसात् २।४।५।६।७।८।९।१०।१२।१४ दिवसेषु शुभ:। ऊर्ध्व विषममासवर्षयो: पञ्चवर्षात्परत: कामचार:।

तिथय: १।२।३।४।५।६।७।८।१०।१३।१५ एषु भद्रादिरहिते शुभ:।

वारा: चं.बृ.शु. एषु दुष्टयोगादिरहिते शुभ:। केचितबुधेप्यङ्गीकुर्वन्ति।

सद्भानि: उत्तरा३, रो. अश्वि.पु.अभि.मृ.रेव.चि.अनु.श्र.ध.मू.म. स्वा. एतद् भेषु प्रशस्त इति। अथात्रावशेष: केनाप्युक्त:। रात्रौ विवाहभेशस्त: सन्मुहूर्तेस्थिरोदये। वधूप्रवेशोनैवात्रप्रतिशुक्रादूषं विदुरिति।

## द्विरागमनमुहूर्त्तबोधकचक्रमिदम्।

तच्च कृतविवाहाद्द्वितीयवारं भर्तृगृहागमोद्विरागम:। विवाहतो विषमाब्दमासयो:। मेषवृश्चिककुम्भास्थिते रवौ। शुक्लपक्षे। वरस्यरविगुरुशुद्धौ द्विरागम: शुभ:। परन्तु गुरुशुक्रयोरस्तादिदोषस्य सन्मुखदक्षिणयो: शुक्र कृतस्य चाभावे सत्युत्तम्। नान्यथा।।इति।।

शुभभानि ह. अश्वि. पुष्य, उत्तरा३, रो. स्वा. पुन. अभि. ध. श. मू. मृ. रे. चि. अनु. एषु भेषु चन्द्रताराऽनुकूले सति शोभन:।।

सद्वारा: चं. बृ. बु. शु. एषां वारे दुष्टयोगभद्रादिदोषरहिते प्रशस्त:।।

तिथय: १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ एततिथौ शुभ:।

लग्नानि २।३।६।७।११ एतद्धस्याङ्के शुभयुक्तेक्षिते वा सति शुभ:।।

लग्नबलमाहउपचय- गते ३।६।१०।११ जीवेभृगौ केन्द्रगुपागते। शुद्धेलग्नेशुभेक्रान्तेगन्तव्यंभर्तृ मन्दिरेलग्नात् ३।६।११ एषुपापै: शुभद:।

नूतनबध्वा:पाककर्ममुहूर्त्त:। मृगोत्तरातिष्यकृशानुशाक्रश्रुतित्रये ब्राह्मद्विदैवपौष्णे। शुभेतिथौव्याररवौप्रकुर्यात् नवांबधूनूतनपाककर्म।१। स्थिर लग्ने सुखे शुद्धेसप्तमे च बलान्विते। रन्ध्रेखेटविहीने च नवोढापाकमाचरेत्।।२।। गणनायांनृदूरविचार:। भामिनीजन्मनक्षत्राद-द्वितीयं पतिजन्मभम्। न शुभं भर्तृनाशाय वदुक्तं रुद्रयामले। परिहार:- भिन्नर्क्षराश्यैककं भत्रङ्घ्र्यैकममेतयोर्गणखगौ नाडीनृदूरं च न। अन्यद्विशेष:- वश्याभावे तथाऽन्योन्यंताराशुद्धौ परस्परम्। न चैत्षष्ठाष्टमो दोषस्तदा षष्ठाष्टम:शुभ:। हीनवर्णो यदाराशौ राशीशो वर्ण उत्तम:। तदाराशीश्वरो ग्राह्यस्तद्राशिं नैव चिन्तयेत्। नृदूरदोषो दक्षिणदेशे त्याज्यो न मध्यदेशे। अथैवं ज्ञातगुणायां निश्चयमुहूर्त्तमाह।। पुष्याहे च विवाहर्क्षे चित्रावस्वग्निविष्णुभे। लब्ध्वा चन्द्रबलं दद्यात् निश्चयं सत्यया गिरा।१।

शुभेलग्नेऽग्निसान्निध्ये स्नातां पुण्यामरोगिणीम्। तत्कालोपस्थितो कन्या पिता तुभ्यं प्रयच्छति।२। यदि त्वं पतितो न स्यात्सर्वदोषविवर्जित:। तुभ्यं कन्यां प्रदास्यामि द्विजदेवाग्निसन्निधौ।३। तुभ्यं कन्यार्थिने वाचा कन्यादानं प्रयच्छति। तन्निश्चयार्थमद्त्तं गृह्णतां साक्षतफलमिति।४। विवाहे विहितनक्षत्राणि- उत्तरा३, रोहि. अनु. मृ. मूल, रेव, हस्त, मघा, स्वा. एतेषु नक्षत्रेषु कृत्तिका पूर्वात्रयसहितेशु वरवरणं च कार्यम्। अथ विवाहादौ केन्द्रकोणगताभ्यां गुरुशुक्राभ्यामेव सकला विनस्यन्ति दोषा इत्युक्तम्। ये दोषा ग्रहदृष्टियोगजनिता ये मासपक्षोद्भवा ये जामित्रमुहूर्त्त वारविहिता ये चार्किचक्रै: कृता:। ये चैवं ग्रहलत्तयैव विहिता ये दुष्टलत्तोत्थितास्तान् हत्वा शुभदौ सुरासुरगुरुकेन्द्रत्रिकोणस्थितौ। सर्वेष्वपि शुभकर्मसु लग्नात्रिषिद्ध भवनस्थ ग्रहाणां परिहार:। असत्फलसथानगतो ग्रह: स्याच्छुभप्रद: सौम्य: सितेज्यमित्र:। बलान्वितैर्दृष्युतोऽथपापैर्गत्यन्तराभाव इदं विचिन्त्यम्।। अथअज्ञातजन्मराशे: विशेषस्तमाह। अज्ञातजन्मानां नृणां नाम्निभं परिकल्पयेत्। तेनैव चिन्तयेत् सर्वं राशिकूटादिजन्मवत्।।६।। जन्मभं जन्मधिष्ण्येन वामधिष्ण्येन नामभम्। व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निधनं भवेदिति ।।२।।

अथ सामान्यविवाहकृत्यम्। विवाहकृत्यं सकलं विवाहभैर्विलोकयेन्नैव बलं हिमद्युते: नवत्रिषट्कोविवाहपूर्ततो न वर्णको मण्डपतैलमङ्गलम्। अथ प्रथम कन्याया: तैलं पश्चात्तैलं वरस्य। इदं रात्रे: प्रथमयामे।।इति।।

कन्याया: वैधव्यादिदोषविचार:। लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे: कन्या भर्तुविनाशाय भर्ता: पत्नीविनाशकृत्। इदं लग्नेन्दुभ्यां विचार्यम्। एवं कन्याया लग्नचन्द्राभ्यां १।४।७।८।१२ स्थानेषु कश्चित्पापग्रहोऽधिकार वांस्तिष्ठेत्तदाप्यनिष्ट:। सप्तमेशोऽष्टषष्ठरि:भेषु गतोऽनिष्ट:। अथैतेषां वर कुण्डल्यां परिहार:।। जामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा। अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोष विनाश कृत।। शनिभौमोऽथवाकश्चित्पापो वा तादृशो भवेत्। तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्। एवं यावान् पापग्रह: कन्याया नेष्टस्थानस्थितोभवेत्तावानेन ततोऽधिको वा वरस्यापि इति दृष्ट्वा शुभदो वाच्यो नान्यथा। कन्याया: सप्तमभावनाथशुक्रादि शुभग्रहाणां शुभस्थानस्थित्या: सौभाग्ययोगश्च विलोक्य:।इति।। वैधव्यदोषपरिहार:। लग्नाद्विधोर्वा यदि जन्मकाले शुभग्रहो वा मदनाधिपश्च। द्यूनस्थितो हन्त्यनपत्यदोषं वैधव्यदोषञ्च विषाङ्गनाख्यम्। केन्द्रे कोणेशुभाढ्यश्चेत्त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहा:। तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपे तथा।।

वैधव्यहर: कुम्भविवाह:। विवाहकर्ता पित्रादि: "कन्यावैधव्यहरं कुंभविवाहं करिष्ये" इति संकल्प्य नांदीश्राद्धांतं कृत्वा [illegible] कुंभस्थापनांते तत्र वरुणप्रतिमायां वरुणं संपूज्य तत्र कलशमध्ये विष्णुप्रतिमायां विष्णुं षोडशोपचारै: संपूज्य प्रार्थयेत्। "वरुणांगस्वरूपाय जीवनानां समाश्रय। पतिं जीवय कन्यायाश्चिरं पुत्रसुखं कुरु। देहि विष्णो वरं देव कन्यां पालय दु:खत:" इति। ततो विष्णुरूपिणे कुंभाय कन्यां श्रीरूपिणीं समर्पयामीति समर्प्य [illegible] परिवेष्ट्य तं कुम्भं नि:सार्य जलाशये प्रभज्य शुद्धजलेन समुद्रज्येष्ठेत्यादिमन्त्रै: पंचपल्लवै: कन्यामभिषिञ्च्य विप्रान् भोजयेदिति। इति कुम्भविवाह:।।

अथ चतुर्थदिवसे ऐरिणीदानम्: तच्च वधूपितृभ्यामुपोषिताभ्यां वरमात्रे कर्त्तव्यम्। वरमातृ रजोदोषे तस्या: शुद्धिप्राप्तौ [illegible] मनसा पात्रमुद्दिश्य [illegible] रजोदोषविधि: [illegible] शांतिं कृत्वा शुद्धे [illegible] संकटे [illegible] देवकोत्थापनं कार्यम्। मातुलादे: कर्त्तव्यस्य पत्न्या रजोदोषे [illegible] अथ विवाहोत्तरमाशौचे प्राप्ते:। एवं विवाहोत्तरमाशौचपाते चतुर्थीकर्मपर्यंतं [illegible] देवकोत्थापनं [illegible] नाशौचम्। आशौचांते देवकोत्थापनम्। असंभवे आशौचमध्ये एव देवकोत्थापनं कृत्वा आशौचं कार्यम्। विवाहात्पूर्वमाशौचजातोदोषोयं [illegible] प्रागुक्तम्। चतुर्थीकर्मांत: [illegible] एवं केचित् [illegible] कुर्वीत।

## अथ रव्यादिग्रहाणां जन्मभाद्गोचरफलबोधयोर्ज्ञानाय चक्रम्

| श्री: | सूर्य: | चन्द्र: | मङ्गल | बुध: | गुरु: | शुक्र: | शनि: | राहु: | केतु: |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | स्थाननाश: पंथा: | पुष्टि: अन्नलाभ: | भयम् पीडाच | बन्धनम् भयम् | अग्निदा दिभयम् | सुखशत्रु- नाश: | सर्वनाश: पीडाभयं | हानि: कष्टभयम् | हानि: रोगभयम् |
| २ | हानि: भयम् | धननाश: सुखम् | धननाश: नेत्रार्ति: | धनलाभ: लाभ: | धनादि लाभ: | सुखम् धनप्राप्ति: | शोक: धनहानि: | नैस्व: व्ययम् | वैरं वित्तनाश: |
| ३ | सुखम् श्रीप्राप्ति: | द्रव्यप्राप्ति: सुखम् | सुखम् श्रीप्राप्ति: | भयम् शत्रुत: | भयम् रोगाप्ति: | सुखम् अर्थलाभ: | सुखार्थ लाभ: | नैरुज्य धनप्राप्ति: | सुखलाभ बुद्धि: |
| ४ | रोगभयम् माननाश: | रोग: मानार्थहानि: | कष्टशत्रु: भीति: | धनसुखावि प्राप्ति: | धनहानि: भयम् | धनागम: | पीडाभयं शत्रुवृद्धि | वैरम् शोकश्च | भीति: पीडा च |
| ५ | दैन्यम् अर्थनाश: | सुखम् कार्यनाश: | रुग्भयं धननाश: | रुग्भयं शोकश्च | लाभ: सुखम् | सुखम् पुत्रलाभ: | धनपुत्र- योर्नाश: | हानि: शोकश्च | शोकोऽर्थ नाशस्य |
| ६ | रिपुनाश: सुखम् | वित्त- लाभ: | सुखाय- लाभ | अलाभ: स्थिति: | रोग: शोकश्च | शत्रुभयम् पीडाच | सुखम् वित्तलाभ: | सुखम् लक्ष्मीप्राप्ति: | सुखम् वित्तलाभ |
| ७ | गमनं धनहानि: | द्रव्यप्राप्ति: सुखम् | कार्श्यं धननाश: | पीडाभयं विग्रह: | सम्मानं सुखश्च | शोक: अतिभयम् | दोष: पीडाभयं | दारिद्र्यं हानि: | दुर्गति: पीडा च |
| ८ | रोगाति: भयम् | क्लेशभयम् मृत्युसमम् | भयंपाप- बुद्धि: | धनादि लाभ: | मृत्युभयं पीडा च | विपत्ति: धनक्षयम् | पीडाभयं शोक: | रुग्भयं व्यसन च | पीडाभयं हानिश्च |
| ९ | कान्तिक्षय: पापवृद्धि: | मानं नृपभयम् | रुग्भयं अशुभम् | रुग्भयं धननाश: | सुखम् सम्मानम् | सुखम् लाभ: | श्रमम् धननाश: | पापकर्म- रत: | पापम् दैन्यञ्च |
| १० | सौख्यं कर्मसिद्धि: | शुभम् सुखम् | सुखम् शोकश्च | सुखम् सुभाग: | अति दैन्यम् | धनलाभ: असुखम् | वैमनस्यं शुच: | वैरं सुखम् | भयं शोक च |
| ११ | वित्ताप्ति: सुखम् | विविधार्थ लाभ: | लाभ: सुखाप्ति: | शुभम् अर्थागम: | सौख्यं वित्तलाभ: | दु:ख: धनागम: | सुखम् वित्तलाभ: | सुखवित्त- प्राप्ति: | सुयशोऽर्थ लाभ: |
| १२ | द्रव्यनाश: पीडाभयम् | रुज: धननाश: | रोगम् शोकश्च | शोक: धननाश: | देहपीडा भयम् | धनागम: लाभ: | क्लेश- मनर्थश्च | हानि: पीडा च | पीडाभयं वैरञ्च |

| सूर्य: | चन्द्र: | मंगल: | बुध: | गुरु: | शुक्र: | शनि।राहु।केतु | ग्रहा: |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३।६ १०।११ | १।२।३।५।६ ७।९।१०।११ | ३।६ १०।११ | २।६ १०।११ | २।५।७ ९।११ | १।२।३ ९।११ | ३।६ १०।११ | शोभना: |
| १।२।५ ७।९ | ❁ | १।२।५ ७।९ | १।३।५ ७।९ | २।३ ६।१० | ५।६ ७।१० | १।२।५ ७।९ | पूज्य: |
| ४।८।१२ | ४।८।१२ | ४।८।१२ | ४।८।१२ | ४।८।१२ | ४।८।१२ | ४।८।१२ | निद्या: |

अथगर्भिणीप्रश्न:। सूर्यभौमगुरुस्पर्शे पुत्रो भवति निश्चितम्। चन्द्रशुक्रबुधस्पर्शे कन्या तत्र प्रजायते। शनिस्पर्शे गर्भपातो राहुस्पर्शे सुतासुतौ। केतुस्पर्शे भवेत्क्लीबो विचार्येत्थं वदेत्सुधी:।

| | | |
|---|---|---|
| बुध | शुक्र | चन्द्र |
| गुरु | सूर्य | मङ्गल |
| केतु | शनि | राहु |

गर्भप्रश्नचक्रम्

पञ्चदशीयन्त्रप्रश्न:। नवैकपञ्च त्वरितं वदन्ति अष्टौ द्वितीये न च कार्यसिद्धि:। रसश्च वेदो घटिकात्रयं च सप्तत्रयं वै कथितं च वार्ता।

| | | |
|---|---|---|
| ८ | १ | ६ |
| ३ | ५ | ७ |
| ४ | ९ | २ |

पञ्चदशीयन्त्रचक्रम्

## अथ ग्रहाणांस्वगेहोच्चनीचमूलत्रिकोणभवनानि तथाज्ञातिवर्णावस्थाभाग्योदयाब्द बोधकचक्रम्

| सूर्य: | चन्द्र: | भौम: | बुध: | गुरु: | शुक्र: | शनि: | राहु: | केतु: | ग्रहा: |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सिंह | कर्क | मे.वृश्चि. | मिथु.कन्या | धनु मीन | वृष तुला | मकर कुंभ | कन्या | मीन | गेहभानि |
| मेष १० | वृष | मकर २८ | कन्या १५ | कर्क ५ | मीन २७ | तुला २० | मिथुन | धनु | तुङ्गभानि |
| मध्याह्न | अपराह्न | मध्याह्न | प्रात: | प्रात: | अपराह्न | सन्ध्या | सन्ध्या | सन्ध्या | कालवलम् |
| सिंह | वृष | मेष | कन्या ६ | धनु ९ | तुला ७ | कुम्भ ११ | कुम्भ | सिंह | मूलत्रिकोण |
| ह्रस्व | ह्रस्व | ह्रस्व | ह्रस्व | दीर्घ | ह्रस्व | दीर्घ | दीर्घ | दीर्घ | ह्रस्वादिकं |
| क्षत्रिय | वैश्य | क्षत्रिय | शूद्र | विप्र | विप्र | अन्त्यज | अन्त्यज | अन्त्यज | ज्ञातय: |
| चतुष्पद | सरीसृप | चतुष्पद | पक्षी | द्विपद | द्विपद | पक्षी | सरीसृप | सरीसृप | पश्यादि |
| पुरुष | वनिता | पुरुष | नपुंसक | पुरुष | स्त्री | नपुंसक | पुरुष | पुरुष | पु. स्त्री |
| क्रूर | सौम्य | पाप | सौम्यपाप | सौम्य | सौम्य | पाप५ | पाप: | पाप: | सौम्यादि |
| रक्त | श्वेत | रक्त | हरित | पीत | कर्बुर | कृष्ण | कृष्ण | कृष्ण | वर्णानि |
| वनचर | जलचर | वनचर | ग्रामचर | ग्रामचर | जलचर | वनचर | वनचर | वनचर | संज्ञान्तरा |
| नृलोक | नृलोक | नाग | स्वर्ग | स्वर्ग | नाग | नाग | नाग | नाग | लोक |
| पृष्ठोदय | शीर्षोदय | पृष्ठोदय | शीर्षोदय | उभयोदय | शीर्षोदय | पृष्ठोदय | पृष्ठोदय | पृष्ठोदय | पृष्ठोदयादि |
| पित्त | कफ | पित्त | सम | सम | कफ | वात | वात | वात | प्रकृतय: |
| कटुक | लवण | तिक्त | मिश्रित | मधुर | क्षीराम्ल | तिक्त | तिक्त | तिक्त | रसा |
| व्योमदृक् | समदृक् | व्योमदृक् | तिर्यग्दृक् | समदृक् | तीक्ष्णगदृक् | अधोदृक् | अधोदृक् | अधोदृक् | अवलोकन |
| पू. मुख | प. मुख | द. मुख | उ. मुख | उ. मुख | पू. मुख | प. मुख | द. मुख | द. मुख | गृहादिङ्मु |
| मुक्ता | रजत | पुत्र | स्वर्ण | रत्न | रजत | लौह | अस्थि | अस्थि | पदार्थ |
| वृद्ध | मध्य | युवा | बाल्य | वृद्ध | मध्य | गलित | वृद्ध | वृद्ध | अवस्था |
| पशुस्थान | जलगृह | दग्धम | गोष्ठम् | देवस्थान | जलसमीप | ब्राह्मभू. | ब्राह्मभू. | ब्राह्मभू. | निवास |
| हरिवंशश्र | शिवार्चन | रुद्राभिषेक | कन्यादान | अमाङ्ग | गोप्रतिमा | मृत्युञ्जय | भुजगदा | ध्वजगदा | क्षेमोपाय: |
| २२वर्ष | २४वर्ष | २८वर्ष | ३२वर्ष | १६वर्ष | २५वर्ष | ३६वर्ष | ४२वर्ष | ४८वर्ष | भाग्योदय: |
| शुष्क | सजल | शुष्क | जल | सजल | शुष्क | शुष्क | शुष्कादि | संज्ञा | |
| अयन | मुहूर्त्त | दिवस | ऋतु १ | मास | पक्ष १ | वर्ष | कालानां | उच्चात्सप्त | |
| सत्वं | सत्वं | तामस | राजस | सत्वं | राजस | तामस | सत्वादिगुणी | नीचंसर्वथा | |
| वह्नि | अम्बु | स्कन्द | विष्णु | इन्द्र | देवी | ब्रह्मा | ग्रहणां. दे. | म. | |

अत्रादयाब्दस्य प्रश्नोजनमाह। य: खट: स्वर्गहसवतुद्धभवन पडवर्ग शुद्धश्चयस्ताप्याह्दि नृणा भवदति सद्भाग्यादया निश्चितमिति।

| काष्ठसंचयचक्रमर्कभात् | | | अश्वचक्रमर्कभात् | | | शिविकाचक्रमर्कभात् | | | सफलं भद्राङ्गचक्रम् | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अध: | ६ | पाक:सुरस: | स्थान | नं. | फलानि | स्थान | नं. | फलानि | स्थान | नं. | फलानि |
| शीर्षे | २ | शवदाह: | शीर्षे | ५ | सुखम् | पूर्व | ५ | सुखम् | मुखे | ५ | कार्यहानि |
| मध्ये | ४ | सर्पभयम् | पृष्ठे | १० | लाभदं | दक्षिण | ५ | रोग: | कण्ठे | १ | पीडनं |
| पूर्वे | ४ | मित्रागम: | पुच्छे | २ | स्त्रीनाश: | पश्चिम | ५ | भयम् | वक्षांसि | ११ | द्रव्यहानि |
| दक्षिणे | ४ | रोगभयं | पादे | ४ | रणभंग | उत्तर | ५ | पीडा | नाभि | ४ | कलह |
| पश्चिमे | ४ | क्वाथादि | उदरे | ५ | अश्वनाश: | मौ.लौ. | ३ | शुभम् | कट्यां | ६ | अश्वनाश: |
| उत्तरे | ४ | सुखम् | मुखे | २ | सुखम् | दण्डयो: | ४ | शुभम् | पुच्छे | ३ | शुभम् |

### बीजोप्ति चक्रं राहुभाद्दिनभावधि।

| ८ | ३ | १ | ३ | १ | ३ | १ | ३ | ४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अशुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | अशुभ |

हलप्रवहण-बीजोप्तिमुहूर्त्तज्ञानम्। भ. कृ. आर्द्रा, आश्ले. पूर्वा, ज्यै. एतद्भिन्नभेषु चक्रशुद्धनक्षत्रेषु ४।६।९।१४।३० एतद्भिन्नतिथौ कुम्भ, कर्क, मेष, मकर, तुला वर्जित लग्नेषु पापैर्विवलैर्विधौ जललवे शुक्रेविधौमांसले लग्नेदेवगुरौ सत्यां रविशनिवर्ज्ये दिने हलप्रवहणं श्रेष्ठम्। हलप्रवहणोक्त नक्षत्रेषु श्र.श.पुन.,वि. भौमरहितेषुबीजोप्ति चक्रशुद्धौ च बीजवपनं शुभम्।

### तैलिक चक्र अर्कभात्

| स्थान | नं. | फलानि |
|---|---|---|
| शृङ्गे | ७ | सम्पत्ति: |
| अन्त्ये | ३ | शोक: |
| तले | २ | विपत्ति: |
| कर्णे | ७ | धनम् |
| दारुयु. | ३ | वृद्धि: |
| सम्भार | ५ | सुखं |

## अथ मेषादिभानां स्वामिवर्णधातुसंज्ञादिबोधकचक्रमिदम्।

| मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | राशय: |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भौम | शुक्र: | बुध: | चन्द्र: | सूर्य: | बुध: | शुक्र: | भौम: | गुरु: | शनि: | शनि: | गुरु: | राशीश: |
| रक्त | श्वेत | हरित | श्वेतारुण | पाण्डुर: | विचित्र | कृष्ण | कनक | पिङ्गल | कर्बुर | बभ्रुव | स्वच्छ | वर्णा: |
| क्षत्रिय | वैश्य | शूद्र | विप्र | क्षत्रिय | वैश्य | शूद्र | विप्र | क्षत्रिय | वैश्य | शूद्र | विप्र | ज्ञातय: |
| पित्त | वात | सम | कफ | पित्त | वात | सम | कफ | पित्त | वात | सम | कफ | धातव: |
| चर | स्थिर | द्विस्वभाव | चर | स्थिर | द्विस्वभाव | चर | स्थिर | द्विस्वभाव | चर | स्थिर | द्विस्वभाव | चरादिसंज्ञा |
| पुरुष | स्त्री | पुरुष | स्त्री | पुरुष | स्त्री | पुरुष | स्त्री | पुरुष | स्त्री | पुरुष | स्त्री | पु.स्त्री.संज्ञा |
| पृष्ठोदय | पृष्ठोदय | शीर्षोदय | पृष्ठोदय | शीर्षोदय | शीर्षोदय | शीर्षोदय | शीर्षोदय | पृष्ठोदय | पृष्ठोदय | शीर्षोदय | उभयोदय | पृष्ठादिसंज्ञा |
| रात्रि | रात्रि | रात्रि | रात्रि | दिन | दिन | दिन | दिन | रात्रि | रात्रि | दिन | समान | बल |
| चतुष्पद | चतुष्पद | द्विपद | जलचर | चतुष्पद | द्विपद | द्विपद | कीट | अर्द्धद्विपद अर्द्धचतुष्पद | अर्द्धचतुष्पद अर्द्धजलचर | जलचर | जलचर | चतु:संज्ञा |
| शीर्ष | मुख | बाहु | हृदय | उदर | कटि | बस्ति | शिश्न | उरुद्वय | जानुद्वय | जंघाद्वा | पादद्वय | निवास |
| दक्षिण | अग्नि | उत्तर | वायव्य | पूर्व | उत्तर | अग्नि | याम्य | ईशान | पश्चिम | पश्चिम | ईशान | प्लवत्वादि |
| ह्रस्व | ह्रस्व | सम | सम | दीर्घ | दीर्घ | दीर्घ | दीर्घ | सम | सम | ह्रस्व | सम | दीर्घादि |
| क्रूर | सौम्य | क्रूर | सौम्य | क्रूर | सौम्य | क्रूर | सौम्य | क्रूर | सौम्य | क्रूर | सौम्य | स्वभाव |
| पर्व | दक्षिण | पश्चिम | उत्तर | पूर्व | दक्षिण | पश्चिम | उत्तर | पूर्व | दक्षिण | पश्चिम | उत्तद | दिशा |
| मेष | गोच | गीतनृत्य | युद्धजल | अरण्य | स्त्रीगृह | स्वसद्म | सर्पनि | युद्धभू | बनजल | शिल्पगृह | जल | निवास |
| भूमि | राख्य | स्थान | समीप | भूमि | नौका | नगरभू | वासभू | वाजिस्थान | समीप | भाण्डपार्श्वे | समीप | स्थानानि |

| गजचक्रमर्कभात् | | | प्रयोगारम्भेऽर्कभात् | | | नौकाचक्रंसूर्यभुक्तभात् | | | शनिचक्रंशनिभात् | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| स्थान | नं. | फलानि | स्थान | नं. | फलानि | स्थान | नं. | फलानि | स्थान | नं. | फलम् |
| शीर्षे | ३ | लक्ष्मी | शीर्षे | ३ | हानि: | स्तम्भाग्रे | ३ | अशुभम् | मुखे | १ | अर्थनाश: |
| कण्ठे | ३ | श्रीलाभ: | मुखे | ३ | सिद्धि: | मध्ये | ६ | शुभम् | द.भुजे | ४ | सुजयाप्ति: |
| मुखे | २ | मरणम् | कण्ठे | ३ | मृत्यु: | मुखे | ३ | अशुभम् | अङ्घ्री | ६ | भ्रमणं |
| हृदि | ३ | सुखम् | हस्ते | ४ | शत्रुभयम् | हृदि | ३ | अशुभम् | वा.भुजे | ४ | रोगभयं |
| अग्रपादे | ४ | व्याधि: | हृदये | ४ | इष्टाप्ति: | पृष्ठे | १ | अशुभम् | हृदये | ५ | श्रियागम: |
| पृष्ठभागे | ४ | भीति: | उदरे | ३ | हानि: | अग्रे | ३ | अशुभम् | मस्तके | ३ | राज्यलाभ: |
| पुच्छे | ४ | मृति: | कट्यां | ३ | इष्टाप्ति: | मुखाग्रे | ३ | अशुभम् | नेत्रे | २ | सुसौख्यं |
| पृष्ठे | ४ | व्याधि: | चरणे | ४ | धनद: | मध्ये | ६ | शुभम् | गुह्यो | २ | मृत्युभयं |

| वृक्षचक्र अर्क भात् | | हवन चक्रं सूर्य भान्त्रित्रिभचन्द्रे। | | |
|---|---|---|---|---|
| नं. | फलम् | | | |
| ३ | अशुभम् | ३ | सूर्य | असत् |
| ३ | शुभम् | ३ | बुध | सत् |
| ४ | अशुभम् | ३ | शुक्र | सत् |
| २ | अशुभम् | ३ | शनि | असत् |
| ३ | शुभम् | ३ | चन्द्र | सत् |
| १ | अशुभम् | ३ | मंगल | असत् |
| ५ | अशुभम् | ३ | गुरु | सत् |
| २ | शुभम् | ३ | राहु | असत् |
| ४ | शुभम् | ४ | केतु | असत् |

### अग्निवासविचार:

शुक्लपक्षस्य प्रतिपदादारभ्य वर्तमानतिथिं यावत् या संख्या तस्याम् एकं सूर्यादारभ्य वारसंख्या च योज्य चतुर्भिर्भाजनेन य: शेष: तेन निम्नलिखितं फलं ज्ञेयम्।

### सफलअग्निवास चक्रम्

| शेषसंख्या | अग्निवासस्थानम् | फलम् |
|---|---|---|
| १ | स्वर्गे | प्राणनाश: |
| २ | पाताले | धननाश: |
| ३,० | भूमौ | सुखम् |

गुरुसूर्ययोर्बलविचार:।। स्त्रीणां गुरुबलं श्रेष्ठ पुरुषाणं रवेर्बलं द्वयोश्चचन्द्रबलं श्रेष्ठमिति गर्गेण भाषितम् ।१। जन्मत्रिदशमारिस्थ: पूजयाशुभदोगुरु:। विवाहेऽधनतुर्याष्ठाद्वादशस्थोमृतिप्रद:।२। स्वोच्चे स्वभेस्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे स्वाराशावत्रापि शुभ:।। **अथ तन्वादिद्वादशभावनां विचारोपयोगिन: श्लोका:।।** ये ये भावा: सितज्ञामरगुरुपतिभि: संयुता वीक्षिता वा। नान्यैर्दृष्टा न युक्ता यदि शुभफलदा मूर्तिभावादिकेषु।१। तन्वादिभावेषु शुभोदयेषु तद्भावनाथोपगतेक्षितेषु। तदुक्तभावस्य समृद्धि रुक्ता न पापखेटेक्षित संयुतेषु।२। नीचस्थारिपुराशिस्थ: खेटाभावविनाशक: मूलस्वतुङ्ग मित्रस्थो भाववृद्धिकरो भवेत्।३। यद्भावनाथो रिपुरिफ:रन्ध्रेदु: स्थानयो यद्भवनस्थितस्तु। तद्भावनाशं कथयन्ति तज्ज्ञा: शुभेक्षिते तद्भवनस्य वृद्धि:। **अथ ग्रहाणामुच्चनीचमूलत्रिकोणस्वगृहादिज्ञापन श्लोका:।** अजो वृषो मृगश्चैव कन्या कर्को झपस्तुला। सूर्यादीनां क्रमादेतेगदितास्तुङ्गराशय:। दशाग्निमनुयुक्तिध्यक्षनक्षमनखा: क्रमात्। भागा: सप्तमभं तेभ्यो नीचं तैरेव भागकै:। विंशात्यंशारवे: सिंहे त्रिकोणमपरे गृहम्। इन्दोर्वृषेऽग्निभागास्तु तुङ्गमन्ये त्रिकोणकम्। मेषे कुजस्य सूर्यांशास्त्रिकोणमपरे गृहम्। तिथ्यंशै: कन्यकाराशौ विदस्तुङ्गं तत: परे। पञ्चांशकास्त्रिकोणाख्यास्तदग्रे तद् गृहं मतम्। गुरोर्धनुषि दिग्भागैस्त्रिकोणं तत्परं गृहम्। तुलार्धं तु त्रिकोणं स्याद् भृगोरर्धं परं गृहम्। विंशत्यंशैर्घटे शौरेस्त्रिकोणं सदा शेषकै:।। **उच्चनीचग्रहा:।** अजवृषभमृगाङ्गनाकुलीराझषवणिजौ च दिवाकरादितुङ्गा:। दशशिखिमनुयुक्तिथीन्द्रियांशैस्त्रिनवकविंशतिभिश्च तेऽस्तनीचा:।

| ग्रहा: | सूर्य: | चन्द्र: | भौम: | बुध: | गुरु: | शुक्र: | शनि: |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उच्च | ० | १ | ९ | ५ | ३ | ११ | ६ |
| अंश | १० | ३ | २८ | १५ | ५ | २७ | २० |
| नीच | ६ | ७ | ३ | ११ | ९ | ५ | ० |
| अंश | १० | ३ | २८ | १५ | ५ | २७ | २० |

**अथ ग्रहाणां दीप्ताद्यवस्थाज्ञानम्।** दीप्त: स्वस्थ: प्रमुदित: शान्तो दीनोऽतिदु:खित।। विकलश्च खल: क्रोधी नवधा खेचरो भवेत् ।१। उच्चस्थ: खेचरो दीप्त: स्वस्थ: स्वोच्चाधि मित्रभे। मुदितो मित्रभे शान्तस्समभे दीन उच्यते।। शत्रुभेदु: खितोऽतीवविकल: पाप संयुक्त: खल: खलगृहे ज्ञेय: कोपीस्यादर्कसंयुत:।३। **भावानां स्थिरकारक:।** सूर्य: १, गुरु: २, कुज: ३, सोम: ४, गुरु: ५, भौम: ६, सित: ७, शनि: ८, गुरु: ९, बुध: १०, जीव: ११, मन्द्र १२ भावकारका:।। **अथजन्मकालान्निधनर्क्षमाह।** मृत्युपाद्वादशांशत्रिकोणे गुरौमृत्युरर्थात्त्रिकोणस्थतुर्ये। मृतिस्सार्वलिप्ताहतो राहुलिप्ता गणश्चचन्द्रलिप्ताप्ताराशौ तदामृत्युद:।१। भौममार्तण्डलिप्ताहति: कारेश्चकलिप्ताहताल्लब्धयुक्तोरवि:। यातमस्मात्तदातत्त्रिकोणेऽपि वा क्लेशवादु: क्षयेमासिंघोमान्वंदत् ।२। निधनेशद्वादशांशत्रिकोण भास्करंमृति: निधनेशत्रिकोणंवासूर्यादृष्टगतेऽथवा।३। षष्ठाष्टभव्ययशानां स्फुटयोग गतेशनौ। मृत्युस्तत्रविजानीयात्त्रिकोणगतेऽपि वा।४। **निधनलग्नमाह।** जन्मलग्नेन्दुगाचन्द्रभागा: क्रमाद्विदषष्ठ्येश लग्नेप्रयाते। तनौमृत्युअत्यादजीवोदये शून्यकेदुष्टपाकोद्भवेहह मुक्ति भवेत्। कन्यायावैधव्ययोगा: निशाकरात्सप्तमभावसंस्था महीजमन्दागुदिवाकराश्चेत् तनोरिजन्मनि नैधने या दिशंतिवैधव्यमलं मदे वा।५। व्ययेऽष्टमे भूमिसुतस्य राशौ रवौ सपापे भपतौहि रण्डा।। मन्देकुलीरे सरवौतुलेऽपि धनेनहीना रमतेऽन्यलोकै:। तनौ चतुर्थे निधने व्यये वा मदालये पापयुता कुजश्चेत् ।। नेष्ट: सुधांशोरपीति।। **विवाहे भौमदोष:।** लग्ने व्यये च पाताले यामित्रे याष्टमे कुजे। कन्या भर्तुर्विनाशाय भर्ता कन्याविनाशक:। **भौमदोषपरिहार:।** जामित्रे चयदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा। अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषो न विद्यते। अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके तथा द्यूने मीने घटे रन्ध्रे भौमदोषो न विद्यते। यथाभौमस्तथाराहुस्तथैवास्तिशनैश्चर:। तेषां स्थानानि संश्रित्य भौमदोषं विचारयेत्। सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनगेऽपिवाथवा भौमे। वक्रिणि नीचारिगृहस्थे वाऽर्कस्थेऽपिवा न कुजदोषा:।

**अथ रोगार्तस्येष्टकालवशाद्बाधाज्ञानम्।** तिथिवारश्च नक्षत्रं लग्नं यामश्च संयुतम्। वसुभिश्चहरेद्भागं शेषे वाधा नियोजयेत् हये ७ ग्नौ३ देवबाधा: स्यात् पितरो नेत्र दन्तिन: २।८ षट्चतुर्थेभूतत्राता १।४ ग्रहाणामेकपञ्चके १।५। भक्ते द्वादशभि: शेषे जीवनं मरणं वदेत्। रामवाणरसाष्टौ च नन्दरुद्रायश्च (३।५।६।८।९।११) जीवति। एक: पक्षे २ युग: ४ सप्त दशा ७।१० के: १२ नात्रजीवति। तदपिराज मार्तण्डे। वारर्क्षञ्च तिथिदिशा परमिति संयोज्य नागैर्भजेल्लब्धांकेन फलं च नाग ८ नयने २ दोषं पितुनन्या। सप्ते ७ सममिते ३ सुरस्य विदिनै ६ व वेदे ४ तथा। प्रेतस्यापि च खेचरस्य विदितं चन्द्रे १ च वाणधिके ५। लब्धक त्रिगुण ३ तथा वसुयुतं वेदेन गुण्यं तत: सप्ताप्तेष्वधिकं यथा विधुमितं कौल्यञ्च दोषं वदेत्। ग्राम्य वन्यभवं च राजकुलजं स्याच्छत्रजं एक्तिजं। शून्ये व्यामनवं तथास्यविविधोपायेश्च शातिं वदेत्। कौल्यहोमद्विजार्चने शुभकरं ग्राम्य चतुष्कोणके। होमे वन्यभवेतिथिवरभवेभोज्यैश्च वस्त्रेण वा। राज्ये तीर्थपदे तथाप्यरिकृतेशक्तिक्रियादानतो। गायत्री हि पंक्तिविधवं चाकाशजो दीपत:।

**भद्रावासज्ञानम्।** कुंभ कर्क द्वये मर्त्येस्वर्गेऽब्जत्रयेऽलिगे। स्त्रीधनूर्जूक नर्केऽधो भद्रा तत्रैव तत्फलम्।। अजत्रयेऽब्जेऽलिगे च भद्रा स्वर्लोक चारिणी। कन्याद्वये धनुर्युग्मे चन्द्रे भद्रारसातले। कुम्भे मीने तथा कर्के सिंहे चन्द्रे भुवि स्थिता। भूर्लोकस्था सदात्याज्या स्वर्गे पातालगा शुभा। ज्ञेया चन्द्रप्रवाहा त्रिभुवनविजयामर्त्य संस्था विवर्ज्या। **भद्रावासफलम्।** स्वर्गे भद्रा शुभं कार्यं पाताले च धनागमम्। मृत्युलोके यदा भद्रा सर्वकार्य विनाशिनी।। **भद्राकृत्यम्।** वधबंध विषग्न्यस्त्र छेदनोच्चाटनादि यत्। तुरङ्ग महिषोष्ट्रादि कर्म विष्टयां हि सिद्ध्यति।। **भद्रादिदोषपरिहार:।** दिवाभद्रा यदा रात्रौ रात्रि भद्रा यदा दिने। न तत्र भद्रादोषस्तु सा भद्राभद्रदायिनी।। विष्टिरङ्गारकश्चैव व्यतिपातश्च वैधृति:। प्रत्यरिर्जन्मतारा च मध्याह्नात्परत: शुभा:।।

## तात्कालिककरणवशेन संक्रान्तीनां वाहनादिज्ञानाय चक्रम्

| करण | बव | बालव | कौलव | तैतिल | गर | वणिज | विष्टि | शकुनि | चतुष्प | नाग | किंस्तुघ्न |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| स्थिति | निवि | उपवि. | उर्ध्व | सुप्त | निविष्ट | निवि | निविष्ट | उर्ध्व | सुप्त | सुप्त | ऊर्ध्व |
| तत्फलं | सम | मध्यम | श्रेष्ठ | महर्घ | मध्यम | मध्यम | मध्यम | समर्घ | महर्घ | महर्घ | समर्घ |
| वाहन | सिंह. | व्याघ्र | वाराह | गर्दभ | हस्ती | महिष | अश्व | श्वान | मेष | वृषभ | कुक्कुट |
| उपवा. | गज | अश्व | वृषभ | मेष | गर्दभ | उष्ट्र | सिंह | शार्दुल | महिष | व्याघ्र | वानर |
| तत्फल | भीति: | भयम् | पीड़ा | सुभिक्ष | लक्ष्मी | क्लेश | स्थैर्य | सुभिक्ष | क्लेश | स्थैर्य | मृत्यु |
| वस्त्र | श्वेत | पीत | हरित | पांडु | आरक्त | श्याम | कृष्ण | चित्र | कंबल | नग्न | धनाय |
| उपव. | श्वेत | रक्त | चित्र | पीत | नील | कंबल | पट्ट | अजिन | कुसुम | वल्कल | वेणव |
| आयुद्ध | बन्दूक | गदा | खड्ग | दण्ड | धनुष | तोमर | कुन्त | पाश | अंकुश | शस्त्र | वाण |
| भक्ष्य | अन्न | पायस | भक्ष | पक्वान्न | दुग्ध | दधि | चित्रान्न | गुड़ | मधु | घृत | शर्करा |
| लेपन | कस्तूरी | कंकुम | चन्दन | मृति. | गोरी | महावर | ओतु. | हरिद्रा | कज्जल | अगर | कपूर |
| जातय: | देवता | पुष्प | सर्प | पक्षी | पशु | मृग | द्विज | क्षत्रिय | वैश्य | शूद्र | वर्णसं. |
| पुष्प | पुन्नाग | जाती | वकुल | केतकी | विल्व | अर्क | दूर्वा | कमल | वेला | पाटल | जपा |
| भो.पा. | सुवर्ण | रौप्य | ताम्र | कांस्य | लोह | खप्पर | पत्र | वस्त्र | कर | भूमि | काष्ठ |
| भूषण | नूपुर | कंकण | मोती | प्रवाल | मुकुट | मणि | गुंजा | कौड़ी | नीलम | वज्र | सुवर्ण |
| कंचुकी | विचित्र | पीत | हरित | भूर्जप | सित | पांडु | नील | कृष्ण | चर्म | वन्दल | धूम्र |
| स्नान | गङ्गा | यमुना | सरस्वती | मंदाकिनी | नर्मदा | कृष्णा | गोदावरी | भागीरथी | तुंगा | कावेरी | कृष्णा |
| वय | बाल | कुमार | गताल. | युवा | पौढ़ा | प्रगल्भा | वृद्धा | बन्ध्या | बन्ध्या | पुत्रार्थि | प्र.चा. |

## मासेषु शून्यतिथ्यादिज्ञानाय चक्रमिदं शुभे न सत्

| चैत्र | वैशाख | ज्येष्ठ | आपाढ़ | श्रावण | भाद्र. | आश्वि. | कार्त्तिक | मार्ग | पौष | माघ | फाल्गुन | मासा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९ ति. | १२ | कृ.१४ | कृ.६ | ३ | १ | १० | कृ.५ | ७ | ४ | कृ.५ | कृ.४ | शू.ति.प२ |
| ८ ति. | १२ | शु.१३ | शु. | २ | २ | ११ | शु.१४ | ८ | ५ | शु.६ | शु.३ | शू.ति.प२ |
| अश्विनी | चित्रा | उ.षा. | पू.फा. | उ.षा. | शत. | पू.भा. | कृतिका | चित्रा | आर्द्रा | श्रवण | भरणी | शून्य |
| रोहिणी | स्वाती | पुष्य | धनिष्ठा | श्रवण | रेवती | | मघा | विशाखा | अ.ह. | मूल | ज्येष्ठा | नक्षत्राणि |
| कु.११ | मी.१२ | वृ.२ | मि.३ | मे.१ | कं.६ | वृ.८ | तु.७ | ध.९ | क.४ | म.१० | सि.५ | राशय: |

## अथ तिथिवारयोर्योगान्मृत्युयोगज्ञानमाह

| सूर्य: | चन्द्र: | भौम: | बुध: | गुरु: | शुक्र: | शनि: | वार: |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १।६।११ | २।७।१२ | १।६।११ | ३।८।१३ | ४।९।१४ | २।७।१२ | ५।१०।१५ | तिथि: |

## अथ भद्राया मुखपुच्छादिपरिज्ञानम्

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | ८ | ११ | १५ | ३ | ७ | १० | १४ | आसां तिथीनाम् |
| प. | आ. | उ. | नै. | ई. | द. | वा. | पू. | आसु दिग्विदिक्षु |
| ५ | २ | ७ | ४ | ८ | ३ | ६ | १ | एषु यामेष्वादौ मुख प्रहरा |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | विष्टेर्मुखघटी ५ कृष्णे शु. |
| ८ | ८ | ६ | ३ | ७ | २ | ५ | ४ | एषु यामेष्वन्त्यम् पुच्छ प्रहर |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | घटित्रयं पुच्छं शुक्ले शुभं |

नक्षत्रतारकामामोक्तप्रयोजनं विवाहेनक्षत्र तारका तुल्यं वर्षस्तु सदसत्फलावाप्तिरितयुक्तं वराहेण। नक्षत्रमुद्वाहे। फलमद्वैस्तारकामितं तद्सत। दिवसे ज्वरस्य नाशौ व्याधरन्यस्य वा वाच्यम्।। यथाश्विन्यास्तिस्रस्तारा अतस्तदाशुभं फलं त्रिभिर्वर्षैर्वाच्यम् ।।

अथसंक्रान्ति वाहनादीनां दुष्टफलंतदाह वाहनत्र सुधाहारादीनां वृत्युपजीविनाम्। विनाश: स्याच्च संक्रान्तेर्वस्त्रादीनां महर्घता। स्थितनि विष्टं सुप्तानां तथा ज्ञेय विनाशनम्।।

## नक्षत्राणां स्वामिशुभाशुभादिविशेषसंज्ञा

| नक्षत्राणि | स्वामिन: | शुभाशुभ | ज्ञातय: | संज्ञा | मुखम् | घ.उ.ने. | यात्रादौदोहदम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अश्विनी | अश्विनीकु. | शुभम् | वैश्य: | ल.क्षि. | तिर्यक | ५० | तिलतण्डुल |
| भरणी | यम: | नाशक: | चाण्डाल: | उ.क्रू. | अध: | २४ | [illegible] |
| कृतिका | वह्नि: | अशुभम् | ब्राह्मण: | मि.सा. | अध: | ३० | माषं |
| रोहिणी | ब्रह्मा | शुभम् | शूद्र: | ध्रु.स्थि. | ऊर्ध्व: | ४० | गव्यम् |
| मृगशिरा | चन्द्र: | शुभम् | कृषक: | मृदुमै. | तिर्यक | १४ | गोघृतम् |
| आर्द्रा | शिव: | शुभम् | क्रूरजाति | दा.ति. | ऊर्ध्व: | २१ | दुग्धम् |
| पुनर्वसु | अदिति: | शुभम् | वैश्य: | च.च. | तिर्यक | ३० | हरिणमांसम् |
| पुष्य | गुरु: | शुभम् | क्षत्रिय | ल.क्षि. | ऊर्ध्व: | २० | मृगरक्तम् |
| श्लेषा | सर्प: | अशुभम् | चाण्डाल: | ती.दा. | अध: | ३२ | पायसम् |
| मघा | पितर: | शोकद: | शूद्र: | उग्रक्रूर: | अध: | ३० | वायमांसम् |
| पू.फा. | भग: | अशुभम् | ब्राह्मण | उग्रक्रूर: | अध: | २० | मृगमांसम् |
| उ.फा. | अर्यमा | शुभम् | क्षत्रिय: | ध्रु.स्थि. | ऊर्ध्व: | १९८ | शशकमांसम् |
| हस्त | सूर्य: | शुभम् | वैश्य: | लघु.क्षि. | तिर्यक | २१ | शालि |
| चित्रा | त्वष्टा | शुभम् | कृषक: | मृ.मै. | तिर्यक | २० | प्रियंगु |
| स्वाती | वायु: | शुभम् | क्रूरजाति | च.च. | तिर्यक | १४ | अपूपम् |
| विशाखा | इन्द्राग्नि | अशुभम् | चाण्डाल: | मि.सा. | अध: | १४ | नानापक्षिमांस |
| अनुराधा | मित्र: | शुभम् | शूद्र: | मृ.मै. | तिर्यक | १० | सत्फल |
| ज्येष्ठा | इन्द्र: | शुभम् | कृषक: | ती.दा. | तिर्यक | १४ | कूर्ममांसम् |
| मूल | राक्षस: | क्षय: | क्रूरजाति | ती.दा. | अध: | ५६ | सारिकमांसम् |
| पू.षा. | जलम् | धनहानि: | ब्राह्मण: | उग्रक्रूर: | अध: | २४ | गोधिकमांसं |
| उ.षा. | विश्वेदेवा: | हानि: | क्षत्रिय: | ध्रुव.स्थि. | ऊर्ध्व: | २० | शल्यमांसम् |
| श्रवण | विष्णु | वृद्धि: | चाण्डाल: | च.च. | ऊर्ध्व: | १० | कृशरान्नम् |
| धनिष्ठा | वसव: | शुभम् | कृषक: | च.च. | ऊर्ध्व: | १० | मुद्गमोदकं |
| शतभिष | वरूण: | शुभम् | क्रूरजाति | च.च. | ऊर्ध्व: | १८ | यवपिष्ठम् |
| पू.भा. | अजैकप. | अशुभम् | ब्राह्मण: | उग्रक्रूर: | अध: | १६ | मत्स्यान्नम् |
| उ.भा. | अहिर्बु. | शुभम् | क्षत्रिय: | ध्रु.स्थि. | अध: | २४ | चित्रितान्नम् |
| रेवती | पूषा | शुभम् | शूद्र: | मृ.मै. | तिर्यक | १० | दध्योदनम् |

## अथ तिथिवारयोर्भवारयोगादनेकयोगानां बोधकचक्रमिदम्

| योग नामानि | क्रकच | दग्ध | विषा. | हुताश | यम घंट | अमृत सिद्धि | दग्ध योग | यम दंष्ट्र | सर्वार्थसिद्धि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य: | १२ | १२ | ४ | १२ | मघा | हस्त | भरणी | म.ध. | ह.मृ.पु.अश्वि.उ. |
| चन्द्र: | ११ | ११ | ६ | ६ | विशाखा | मृग | चित्रा | वि.मू. | पु.श्र.रो.मृ.अनु. |
| भौम: | १० | ५ | ७ | ७ | आर्द्रा | अश्वि. | उ.षा. | कृ.भ. | अ.उ.भा.कृ.श्ले. |
| बुध: | ९ | ३ | २ | ८ | मूल | अनु. | धनि. | पू.षा.पु | रो.अनु.ह.कृ.मृ. |
| गुरु: | ८ | ६ | ८ | ९ | कृतिका | पुष्य | उ.फा. | उपा | रे.अनु.अ.पु.पु. |
| शुक्र: | ७ | ८ | ९ | १० | रोहिणी | रेवती | ज्ये. | रो.अनु | रे.अनु.अश्वि.पु.पु. |
| शनि: | ६ | ९ | ७ | ११ | हस्त | रोहिणी | रेवती | श्र.श. | श्र.रो.स्वा. |

## नक्षत्रस्य पादवशाच्चात्र कष्टावलोकनचक्रम्

| ज्वरादिरोगोत्पत्तौ | | अथ भस्यपादवशादत्र दिनसंख्या | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दि.सं. | दानादि | १च | २च | ३च | ४पा | जपार्थमंत्रा |
| दि.९ | भोजन | ९ | ११ | १० | २० | मृत्युञ्जयमंत्रजप: |
| दि.११ | गोन्नादि | ० | ८० | ४० | ११ | यमयमत्वेतिमंत्र: |
| दि.९ | स्वर्णदान | ९ | ११ | १६ | २८ | अग्निमूर्धेतिमंत्र: |
| दि.७ | घृतदान | ७ | ५ | १८ | ३० | ब्रह्मयज्ञेतिमंत्र: |
| मा.१ | तिलदान | ९ | १८ | ७ | १० | इमं देवेतिमंत्र: |
| मृति: | गोदान | ० | १४ | ० | ० | नमसतेरुद्रमंत्र: |
| दि.७ | पित्तल | ७ | ७ | २ | २१ | अदितिर्द्यौमंत्र |
| दि.७ | तैलान्न | ७ | ७ | १० | २१ | बृहस्पतेतिमंत्र: |
| मृति: | गोजाऽदि | ० | ७ | ४१ | ० | नमोस्तुसर्पेतिमंत्र: |
| दि.२० | वस्त्राज्य | १५ | १५ | १७ | २० | पितृभ्यइतिमंत्र: |
| मृति: | भोजन | ० | १४ | ० | ३० | भएप्रणोत्तमंत्र: |
| दि.७ | अन्नदान | ७ | १७ | ७ | ६० | अर्यमणमंत्र: |
| दि.५ | तिलदान | ११ | ९ | १५ | ० | उदुत्यंजातदेमंत्र: |
| दि.११ | दुग्धदा. | ११ | १७ | ९ | १६ | स्पष्टातुग्येतिमंत्र: |
| मृति: | गोघृत | ६० | ० | ३० | ० | वायोरानेतिमंत्र: |
| दि.१५ | गोस्वर्ण | १५ | १२ | ४ | १३ | इन्द्राग्नि इतिमंत्र: |
| स्थिर: | गोघृत | ६० | ९ | ३६ | ६० | नमोमित्रैतिमंत्र: |
| मृति: | तिलान | ५९ | ९ | ६ | ४ | त्रातारामीन्द्रेतिमंत्र: |
| दि.९ | रौप्योपान | ० | १५ | १५ | ६ | मातापुत्रेतिमंत्र: |
| मृति: | गोमृत्ता | ० | २४ | २४ | १० | आपोघमैंतिमंत्र: |
| मा.१ | भोजन | ३० | २४ | २६ | १६ | विश्वेदेवतिमंत्र: |
| दि.११ | श्रीफल | ६० | ४ | ६ | ९ | विष्णोरराडितिमंत्र: |
| दि.१५ | अश्वान्न | १५ | ४५ | २० | २१ | वसौ:पवित्रेतिमंत्र: |
| दि.११ | भोजनान्न | ० | १२ | ३ | २२ | वरूणस्यमंत्र: |
| मृति: | भोजन | ० | १ | २१ | १९ | अजैकचरणातमंत्र: |
| दि.७ | अन्नदान | १० | १९ | ९ | १५ | अहिर्बुध्यन्येतिमंत्र: |
| स्थिर | वृषदान | १८ | १ | १९ | २० | पृषन्तवव्रततिमंत्र: |

## अथसंक्रान्तेमुहूर्त्तज्ञानम्

| मु. | संज्ञा | नक्षताणि |
|---|---|---|
| ४५ | वृहत् | उ.३,रो.विशा.पुन. |
| १५ | जघन्या | श्ले.ज्ये.श. भ.स्वा.आ. |
| ३० | समा | मृ.रे.चि.अनु.ह. अ.पु.धनि.अभि. कृ.श्र.म.पु.३,मू. |

एवञ्चान्द्र दर्शनेऽपि मुहूर्त्त ज्ञानं तत: फलञ्च

## वारबेलाज्ञानाय चक्रम्

| वारा: | दिने | रात्रौ |
|---|---|---|
| सूर्य: | ४।५ | ६।४ |
| चन्द्र: | ७।२ | ७।४ |
| भौम: | ६।२ | २ |
| बुध: | ५।३ | ६।४ |
| गुरु: | ६।८ | ५।८ |
| शुक्र: | ३।४ | ३ |
| शनि: | ६।८ | ६।१ |

दिने- रवौ वर्ज्यं चतुष्पञ्च सोमे सप्त द्वयन्तथा। कुजे षष्ठ द्वय शैव बुधे पञ्च तृतीयकम्। गुरौ षष्टाष्टकश्चैव शुक्रे वेद तृतीयकम्। शनौ चाद्यन्त षष्ठश्च। वारवेलोति निन्दिता।। रात्रौ- रवौ रसाब्धी हिमगौ हयाब्धी द्वयं महीजे च बुधे रसाब्धी। गुरौ शराष्टौ भृगुजे तृतीये शनौ रसाद्यं निशिवारवेला।

## नष्टवस्तुज्ञानाय सुलोचनादिसंज्ञा

| संज्ञा | नष्टवस्तु | लाभालाभ | माना | स्वरूपाणि |
|---|---|---|---|---|
| मन्द | दक्षिण | यत्नलाभ | ३ | अश्वमुखम् |
| मध्य | पश्चिम | दूरेश्रव. | ३ | योनिस्वरूपम् |
| सुलोचन | उत्तर | अलाभ | ८ | क्षुरक्षाकृति: |
| अन्ध | पूरब | शीघ्रलाभ | ५ | शंकटवत् |
| मन्द | दक्षिण | यत्नलाभ | ३ | मृगास्यम् |
| मध्य | पश्चिम | दूरेश्रव. | १ | मंणिसदृशम् |
| सुलोचन | उत्तर | अलाभ | ४ | गृहसदृशम् |
| अन्ध | पूरब | शीघ्रलाभ | ३ | वाणाकृति: |
| मन्द | दक्षिण | यत्नलाभ | ५ | चक्राकारम् |
| मध्य | पश्चिम | दूरेश्रव. | ५ | गृहसदृशम् |
| सुलोचन | उत्तर | अलाभ | २ | मंचकाकृति |
| अन्त्य | पूरब | शीर्घलाभ | २ | खट्वाकारम् |
| मन्द | दक्षिण | यत्नलाभ | ५ | हस्ताकारम् |
| मध्य | पश्चिम | दूरेश्रव. | १ | मौक्तिकम् |
| सुलोचन | उत्तर | अलाभ | १ | प्रवालाकारम् |
| अन्ध | पूरब | शीर्घलाभ | ४ | तोरणसमम् |
| मन्द | दक्षिण | यत्नलाभ | ४ | बलिसदृशम् |
| मध्य | पश्चिम | दूरेश्रव. | ३ | कुण्डलाकृति: |
| सुलोचन | उत्तर | अलाभ | ११ | सिंहपुच्छवत् |
| अन्ध | पूरब | शीघ्रलाभ | २ | गजदन्तसमम् |
| मन्द | दक्षिण | यत्नलाभ | २ | मंचकसदृशम् |
| सुलोचन | उत्तर | दूरश्रव | ३ | विमानसदृशम् |
| अन्ध | पूरब | अलाभ | ४ | मृदङ्गाकृति: |
| मन्द | दक्षिण | शीघ्रलाभ | १० | वर्तुलम् |
| मध्य | पश्चिम | यत्नलाभ | २ | मंचाकाकरम् |
| सुलोचन | उत्तर | अलाभ | २ | युग्मसदृशम् |
| अन्ध | पूरब | शीघ्रलाभ | ३२ | मर्द्दलाकारम् |

## अथ दिनमानस्य १६ कलांशेन्दुर्मुहूर्त्तादिज्ञानम्

| सूर्य: | चन्द्र: | भौम: | बुध: | गुरु: | शुक्र: | शनि: | वासरा: |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १४ | ९।१२ | २।४ | ८ | ६।१२ | ४।६ | १।२ | दुष्टक्षण |
| १४ | १२ | १० | ८ | ६ | ४ | २ | दि.कुलिका |
| १३ | ११ | ९ | ७ | ५ | ३ | १ | रा.कुलिका |
| ६ | ४ | २ | १४ | १२ | १० | ८ | कंटकक्षण |
| ८ | ६ | ४ | २ | १४ | १२ | १९ | कालवेला |
| ७।८ | १०।१४ | २।४ | ९।१० | १५।१६ | ५।६ | ११।१२ | अर्धयाम् |
| १० | ८ | ६ | ४ | २ | १४ | १० | यमघंट |

**अत्रदोषकालमाह**

निधनंप्रहारार्धे तु नि: स्वत्वं यम घंटके। कुलिके सर्वनाश: स्याद्रात्रावेतो न दोष भाक्:।।१।। (*वशिष्ठ:*)

स्थूल चन्द्रशृंङ्गोन्नति ज्ञानम् मीनमेषगतश्चन्द्रो भवेद्याम्योन्नतं सदा। समशृंङ्गो वृष कुम्भे शेषभेतुत्तरोन्नत:। याम्योन्नतं च दुर्भिक्षं समत्वञ्च समे विधौ। सुभिक्षं सौम्यादग्भागे चोन्नते शशलांच्छने। मूलाधारे विधौ भीति प्रोदिते संहती रज:।

## अथारिष्टशान्तये शताक्षरागायत्रीमंत्रजपविधिः।।

ॐ अस्य श्रीशताक्षरागायत्रीमंत्रस्य विश्वामित्रमरीचिकश्यपवशिष्ठाऋषयो गायत्री त्रिष्टुबनुष्टुप्छन्दांसि सवितृजात वेदस्त्र्यम्बको देवताः गायत्र्यक्षराणि बीजानित्रिष्टुबक्षराणि शक्तयः अरिष्टशान्तये जपे विनियोगः। विश्वामित्र मरीचिकश्यपवशिष्ठऋषिभ्यो नमः शिरसि। गायत्रीत्रिष्टुबनुष्टुप्छन्देभ्यो नमः मुखे।। सवितृजातवेदस्त्र्यम्बकदेवेभ्यो नमः हृदये। गायत्र्यक्षराणिबीजानां गुह्ये।। त्रिष्टुबक्षराणि शक्तये नमः पादयोः।। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि हृदयाय नमः। ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् शिरसे स्वाहा। ॐ जातवेदसेसुनवामसोममरातीयतोनिदहातिवेदः शिखायै वषट्। ॐ स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुंदुरतात्याग्निः कवचाय हुँ। ॐ त्र्यम्बकं यजामहेसुगन्धिंपुष्टिवर्द्धनं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ उर्व्वारूकमिवबन्ध नान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्। स्मर्तव्याखिललोकवर्त्ति सततं यज्जङ्गमस्थावरम्। व्याप्तं येन च यत्प्रपंचविहितं मुक्तिश्च यत्सिध्यति।। यद्वा स्यात् प्रणवत्रिभेदगहनं श्रुत्वा च यं गीयते। तद्वत्कृक्षितिसिद्धयेऽस्तुवरदं ज्योतिस्त्रयोत्थं महः।।१।। एवं ध्यात्वा शताक्षरां भावयेत् ।

अथहोमार्थशताक्षरागायत्रीमंत्रः।। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।। ॐ जात वेदसेसुनवाम सोममरातीयतो निदहातिवेदः स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्याग्निः।। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् स्वाहा।।

## अथरिष्टशान्तयेमहामृत्युञ्जयवैदिकमंत्रजपविधिः

आयाचम्य प्रणानायम्य, शान्तिपाठ, सुमुखश्चेत्यादि गणेशस्मरणं च कृत्वा।। संकल्पः। अमुकमासोयामुकपक्षीयाऽमुक तिथि वमुकवासरे स्वस्य (यजमानस्यवा) शरीरेऽत्पन्नोत्पत्स्यमाणऽखिलारिष्ट निवृत्तये श्रीमृत्युञ्जयप्रसादीर्घायुष्य सततारोग्यतावाप्तये श्रीमृत्युञ्जयमंत्रजपमहं करिष्ये।।

ऋष्यादिन्यासः।। वामदेवकहोलवशिष्ठाऋषयःमूर्ध्नि।। पंक्तिर्गायत्री अनुष्टुप्छन्दांसि वक्त्रे।। सदाशिव महामृत्युञ्जयरुद्रदेवतायै नमः हृदि।। ह्रीं शक्तये नमः लिङ्गे।। श्रीं बीजाय नमः पादयोः।। इति ऋष्यादिन्यासः।। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः ॐभूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।। ऊर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॐ भूर्भुवः स्वरों जूं सः ह्रौं ॐ।। *अस्य श्रीमहामृत्युञ्जय मन्त्रस्य वामदेवकहोल वशिष्ठाऋषयः पंक्तिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युञ्जय रुद्रो देवता ह्रीं शक्तिः, श्रीं बीजं महामृत्युञ्जयप्रीतये ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।* ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं, ॐ नमोभगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः।। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुःस्वः स्वः यजामहे ॐ नमोभगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय शिरसि स्वाहा।। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं ॐ नमोभगवते रुद्राय चन्द्रशिरसि जटिने स्वाहा शिखायै वषट् ।। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्व्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमोभगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय हां ह्रीं ह्रौं कवचायं हुं।। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमोभगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममंत्राय नेत्रत्रयाय वौषट्।। ॐह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमोभगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्वलज्वाल मां रक्षरक्ष अघोराय अस्त्राय फट्।। इति षडङ्गन्यासः।। त्र्यम्बकं शिरसि।। यजामहेभ्रुवोः।। सुगन्धिं नेत्रयोः।। पुष्टिवर्द्धनं मुखे। उर्व्वारुकं गवण्डयोः।। इव हृदये।। बन्धनात् जठरे।। मृत्योः लिङ्गे।। मुक्षीय उर्वोः।। मां जान्वोः।। अमृतात् पादयोः।। इति पदन्यासः।। मूलेनव्यापकंकृत्वाध्यानंकुर्यात्।

अथध्यानम्।। हस्ताम्भोजयुगस्थकुम्भयुगलादुद्धृत्यतोयं शिरः। सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वाङ्के सकुम्भौ करौ।। अक्षस्रग्मृगहस्तमम्बुजगतं मूर्द्धस्थचन्द्रस्रवत्पीयूषोत्रतनुं भजे सगिरिजं मृत्युञ्जयं त्र्यम्बकम्।।१।। चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजंसुरपतिंपीयूषपात्रंवहद्धस्ताब्जेनदधत्सुदिव्यममलहास्यास्यपङ्केरुहम्।। सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतलैः पाशाक्षसूत्रांकुशाम्भोजं विभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत्।।२।। इतिध्यात्वा।। मानसोपचारै संपूज्य, ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि।। ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि।। ॐ यं वायवात्मकं धूपं समर्पयामि।। ॐ रं तैजसात्मकं दीपं समर्पयामि।। ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि।। ॐ सं सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पाञ्जलि समर्पयामि।। मंत्र जपेत्। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः ह्रौं ॐ।। ततोजपान्तरं देवदक्षिणकरे जपं समर्पयेत्।। गुह्यातिगुह्यगोप्तात्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर।।१।। मृत्युञ्जयमहारुद्र त्राहि मां शरणागतम्। जन्ममृत्युजरारोगैः पीड़ितं कर्मबन्धनैः ।।२।।

अपर्णम।। अनेन महामृत्युञ्जयजपाख्येन कर्मणा श्रीमहामृत्युञ्जयः प्रीयतां न मम।। इति विज्ञाप्य देवेशं जपेन्मन्त्रं तु त्र्यम्बकं। जपसांगतासिद्ध्यर्थयथाकामनाद्रव्येणतद्दशांशदुग्धाज्यसंसिक्तापामार्गसमिद्भिहोमः।। तद्दशांशमार्जनम्।। तद्दशांशतर्पणम्। तद्दशांशब्राह्मणभोजनं कुर्यात् ।।इति।।

## अथगोचराद्यैः ग्रहकृतानिष्टस्य शमनाय प्रत्येकग्रहाणां दानपदार्थानि

| सूर्यदानम् | चन्द्रदानम् | भौमदानम् | बुधदानम् | गुरुदानम् | शुक्रदानम् | शनिदानम् | राहुदानम् | केतुदानम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| माणिक्य | वंशपात्र | विद्रुम,पृथ्वी | कांस्यपात्र | पीतधान्य | श्वेतचन्दन | नीलम, तिल | सप्तधान्य | कम्बल,कस्तूरी |
| गोधूम, गुड़ | श्वेतचावल | मसूर, द्विदल | हरितवस्त्र | पीतवस्त्र,सुवर्ण | श्वेतचावल | माषान्न, तैल | माषान्न,हेमनाग | भापात्र |
| सवत्सागौ | श्वेतवस्त्र | गोधूम | गजदंत, घृत | घृत, पीतपुष्प | श्वेतचित्रवस्त्र | कुलथवस्त्र | नीलवस्त्र,गोमेद | वैदूर्यमणि |
| कमलपुष्प | श्वेतचन्दन | रक्तवृषभ | मुद्ग, पन्ना | पीतफल | श्वेतपुष्प | कुल्थी, लोहा | कृष्णपुष्प | कृष्णपुष्प |
| नूतनगृह | श्वेतपुष्प | गुड़, रक्तचन्दन | सुवर्ण, दासी | पुखराज | रजत, हीरा | महिषी | खड्ग, तिल | तिलतैल |
| रक्तचन्दन | चीनी, रजत | रक्तवस्त्र | सर्वपुष्प, रत्न | हरिद्रा | घृत, सुवर्ण | कृष्णधेनुः | तैल, लोह | रत्न, सुवर्ण |
| रक्तवस्त्र | वृषभ, घृत | रक्तपुष्प | कर्पूर, शास्त्र | पुस्तक, मधु | श्वेताश्व, दधि | कृष्णपुष्प | शूर्प, कम्बल | लोहा, बकरा |
| सुवर्ण, ताम्र | शङ्ख, दधि | सुवर्ण, ताम्र | अनेक फल | लवण, शर्करा | सुगंधद्रव्याणि | उपानह | सतिलताम्रपात्र | शस्त्र |
| केशर, मूँगा | मोती, कर्पूर | केशर, कस्तूरी | षटरसभोजन | भूमि, छत्र | शर्करा,गौ,भूमि | कस्तूरी,सुवर्ण | सुवर्ण, रत्न | सप्तधान्य |
| वर्णदक्षिणा | वर्णदक्षिणा | वर्णदक्षिणा | वर्णदक्षिणा | वर्णदक्षिणा | वर्णदक्षिणा | वर्णदक्षिणा | वर्णदक्षिणा | वर्णदक्षिणा |
| ज.सं.७००० | ज.सं.११००० | ज.सं.१०००० | ज.सं.९००० | ज.सं.१९००० | ज.सं.१६००० | ज.सं.२३००० | ज.सं.१८००० | ज.सं.१७००० |

## अथ योगिनीदशाकृतारिष्टशमनाय जपार्थं मंगलादीनां मंत्राः

| मंगलामंत्रः | अथ पिंगलामंत्रः | धान्यामंत्रः | अथ भ्रामरीमंत्रः | भद्रिकामंत्रः | उल्कामंत्रः | सिद्धामंत्रः | संकटामंत्रः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ॐ ह्रीं मंगले मंगलायैस्वाहा | ॐ ग्लौं पिंगलेवैरिकारिणिप्रसीदफट्स्वाहा | ॐ श्रीं धनदे धान्यैस्वाहा | ॐ भ्रामरिजगताधीश्वरी भ्रामरीक्लींस्वाहा | ॐ भद्रिके भद्रंदेहिभद्रं नाशयस्वाहा | ॐ उल्केमम रोगं नाशय जृंभयस्वाहा | ॐ ह्रीं सिद्धे मे सर्वमानस साधयस्वाहा | ॐ ह्रीं सङ्कटे मम रोगं नाशयस्वाहा |

## अथात्रग्रहाणामेकर्क्षभोगफलसमयादिज्ञानम्

| सूर्यः | चन्द्रः | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | राहुः/केतुः | ग्रहा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मा.१ | दि.२। | मा.१। | मा.१ | मा.१३ | मा.१ | मा.३० | मा.१८ | एकर्क्षभोग |
| आदौ | भांत्ये | आदौ | सदा | मध्ये | मध्ये | अन्त्ये | अन्त्ये | फलसमय |
| दि.५ | घ.३ | दि.८ | दि.७ | मा.२ | दि.७ | मा.६ | मा.३ | गन्तव्यराशेः प्राक्फलदा |

## अथसर्वग्रहाणां दोषापनुत्तये सामान्यौषधयः

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सर्षप | देवदारु | हरिद्रा | लोध्र | सरपुङ्खा | कुष्ठ | तीर्थोदक |
| धानलावा | बरियरा | लज्जालू | नागरमोथा | कंगुनी | | |

एतैःस्नानविधिः स्नानप्रोक्तं दानपुरस्सरम्। एतत्सामान्यतः सर्वग्रहपीडोपशान्त्यै।१। यथासिद्धौषधैः रोगात्रश्यन्त्युस्यति।

## अथात्रषड्भानि

| | | |
|---|---|---|
| जन्म | १ | मृत्युभयः |
| कर्म | १० | कर्मनाशः |
| संघात | १६ | बंधुनाशः |
| समुदाय | १८ | सुखनाशः |
| विनाश | २३ | देहनाशः |
| मानस | २५ | मनस्तापः |

## आवश्यकेऽनिष्टतिथ्यादौदानम्

| तिथौ | वारे | नक्षत्रे | करणे | योगे |
|---|---|---|---|---|
| तण्डुल | रत्नं | गौ | धान्यम् | सुवर्णं |
| चन्द्रे | भद्रां | ताम्र | ब्राह्मणाय | |
| शंख | धान्यं | लवणं | दत्वा तत्कर्म कार्यम्। | |

## अथात्रमासिजनिभेरविवासरादौफलम्

| सूर्यः | चन्द्रः | भौमः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | वाराः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गमनम् | सुभोज्यं | वह्निभयं | सन्मति | वस्त्रलाभ | सौख्यं | दुःखं | फलं |

अध्वादोषपशमतार्थदानमाह।। भानुसाम्बूलदानादपहरतिनृणां वैकृतं वासरोत्थं। सोमः श्रीखण्डदानादवनितिरसुतो भोजनात् पुष्पदानात्।। सौम्यः शुक्रस्य मंत्री हरिहरनमनाद्भार्गवः शुभ्रवस्त्रैस्तैल स्नानात्प्रभातिदिनकरतनयो ब्रह्मनत्यापरं च।१।इति।।

| वर्णपत्रे मुख्यादानम् | ग्रहाणां ग्रहाः | तंत्रसारोक्तमंत्रः मंत्राणि | ग्रहाणां धारणमणयः सूर्य | माणिक्यम् | विद्रुमम् |
|---|---|---|---|---|---|
| दानम् | सूर्यः | ॐ घृणिः सूर्याय नमः | चन्द्र | मोती | चाँदी |
| चावल | चन्द्रः | ॐ सों सोमाय नमः | भौम | मूँगा | मूँगा |
| सुवर्ण | भौमः | ॐ अं अंगारकाय नमः | बुध | पन्ना | सोना |
| कांस्य | बुधः | ॐ बुं बुधाय नमः | गुरु | पुखराज | मोती |
| पात्र | गुरुः | ॐ बृं बृहस्पतये नमः | शुक्र | वज्र | चाँदी |
| घृत | शुक्रः | ॐ शुं शुक्राय नमः | शनि | नीलम् | लोहा |
| श्वेतवस्त्र | शनिः | ॐ शं शनैश्चराय नमः | राहु | गोमेद | लाजावर्त |
| वर्णदक्षिणा | राहुः | ॐ रां राहवे नमः | केतु | वैदूर्य | लाजावर्त |
| | केतुः | ॐ कें केतवे नमः | | | |

## एकस्मिन्नेव कोष्टात्मके यंत्रः मणिन्यासक्रम

| | |
|---|---|
| ऐशान्यां | पूर्वे |
| बुध पन्ना | शुक्र हीरा |
| उत्तरे | मध्ये |
| गुरु पुष्पराज | सूर्य माणिक |
| वायव्य | आग्नेय |
| केतु वैदूर्य | चन्द्र मोती |
| पश्चिम | दक्षिणे |
| शनि नीलम | भौम मूँगा |
| नैऋत्य राहु गोमेद | |

अथ सर्वग्रहणां राशिफलनियमः। राश्यादिगौ रविकुजौ फलदौ सितेज्यौ मध्ये सदा शशिसुतश्चरमेऽब्जमंदौ। अध्वान्नवह्निभयसन्मति वस्त्रसौख्य दुःखानि मासि जनिभे रविवासरादौ। अथग्रहाणां राशिभुक्तसंख्याविचारः। मासं शुक्रबुधादित्तयः सार्धमासं तु मंगलः। त्रयोदश गुरुश्चैव सपादद्विद्विनं शशी। राहुरष्टा दशान्मासांस्त्रिंशन्मासाञ्शनैश्चरः। यथा राहुस्तथा केतू राशिभुक्ताः प्रकीर्तिताः। अथ शनि पादविचारः। तनौ (१.) रसे (६) रुद्र (११) सुवर्णपादे द्वि (२) पंच नंदा रजतं शुभं च। त्रि (३) सप्त (७) दिक् (१०) ताम्रपदं वदन्ति तुर्याष्टमार्के (४) (८) (१२) खलु लोहकष्टम्। अथ ह्रस्व शनिफलम्ः। कल्याणी प्रददाति वै रविसुतो राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिं बंधुविरोधदेशगमनं क्लेशं च चिंताधिकम्। मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादिवह्नेर्भयं लाहं शस्त्रभयं सदैवमसुखं कुर्यादसौ सर्वदा। अथ दीर्घ शनिफलम्ः। राशौ द्वादश १२ मूर्ध्नि जन्म १ हृदयो पादौ द्वितीये २ शनिर्नानाक्लेशकरोऽतिदुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत्। हानिः स्यानमरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणं रामात्रद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाथवा। अथ जन्मराश्युपगशतशने सुवर्णादिपाद ज्ञानम्। जन्माङ्गरुद्रेषु सुवर्णपादम् द्विपञ्चनन्दे रजतस्य पादम्। त्रिसप्तदिक्ताम्रपदं वदन्ति शेषेषु राशिष्विह लौह पादम्। लौहे धनविनाशः स्यात्सर्वसौख्यञ्च काञ्चने ताम्रेण समता ज्ञेया सौभाग्यं रजते भवेदिति।

स्मार्तकर्मक्रमः। धर्मसिन्धौ। संकल्प शान्तिः वाग्विप्रवरणं भूतनिःसृतिः पञ्चगव्यैर्भूमिशुद्धिर्मुख्यदैवत पूजनम्। देवतान्वाहितिः पात्रासादनंहविषां कृतिः यथाक्रमंत्यागहोमाविति पूर्वाङ्गक्रमः पूजास्विष्टनवाहुत्यो बलिः पूर्णाहुतिस्तथा। पूर्ण पात्राभिषकाद्योग्न्यर्चनान्तेऽभिषेचनम्। मानस्तोकेतिभूतिश्च देवपूजाविसर्जने। श्रेयग्रहोदक्षिणादिदान कर्मेश्वरार्पणम्। क्रमोऽयमुत्तराङ्गानां स्मार्तकर्मष्वयं विधिः।।

## ग्रहाणां बीजमन्त्राः

| | |
|---|---|
| सूर्यः- | ॐ ह्रीं ह्रौं सूर्याय नमः। |
| चन्द्रः- | ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः। |
| भौमः- | ॐ हूँ श्रीं भौमाय नमः। |
| बुधः- | ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः। |
| गुरुः- | ॐ ह्रीं क्लीं हूँ बृहस्पतये नमः। |
| शुक्रः- | ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः। |
| शनिः- | ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः। |
| राहुः- | ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः। |
| केतुः- | ॐ ह्रीं ऐं केतवे नमः। |

अथग्रहाणां होमार्थसमिधा। अर्कः पलाशः खदिरस्त्वपामार्गोऽथपिप्पलः। औदुम्बरः शमीदूर्वाकुशाश्चसमिधः क्रमादित। अथग्रहाणां होमप्रमाणम्।। एकैकस्याष्टशतकमष्टा विंशतिरेव वां। होतव्या मधुसर्पिभ्यां सहस्रं चाष्टसंयुतम्।१। सन्तानप्रदमन्त्रौ। देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणंगतः। कौशलया शुशुभे तेनपुत्रेणामिततेजसा। यथा वरेणदेवानामदितिर्वज्र पाणिना। सपादलक्षजपः तिलपायसघृतैर्दशांशहवनं। तद्दशांश तर्पणम्। तद्दशांश ब्राह्मणभोजनम्।। जन्मराशिनामराश्योः प्रधानतानिर्णीयते। विवाहेसर्वमाङ्गल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्। देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके। नामभाञ्चिन्तयेत्सर्वं जन्म राशिं न चिन्तयेत्। अन्येष्वावश्यककार्यविषये बृहस्पतिनाभिहितः। मास प्रयुक्त कार्येषुमूढत्वं गुरूशुक्रयोः। न दोषकृन्मलो मासो गुर्वादित्यादिकं तथा।।इति।। त्रिधाशान्तिः जयोतिः प्रकाशे- यथोक्तमौषधि स्नानं ग्रह विप्रार्चनं तथा। ग्रहानुद्दिश्यहोमोवात्रिधाशान्तिर्बुधैः स्मृताः।१। श्रीपतिः। देवब्राह्मणवन्दनाद्गुरुवचः संपादनात्प्रत्यहं साधनामपि भाषणाच्छ्रुतिरवोच्छ्रेयः कथाकर्णनात्। होमादध्वर दर्शनाच्छुचिमनो भावाज्ज पाद्दानतो नो कुर्वन्ति कदाचिदेवपुरूपस्यैवंग्रहापीडनम् ।२।

अथ पित्रादीनामभावे कस्य कन्यादानाधिकारः। अत्राहयाज्ञवलक्यः। पितापितामहोभ्रातासकुल्योजननी तथा। कन्याप्रदाः पूर्वनाशेप्रकतिस्थः परः परः।१। अप्रयच्छन समाप्नोति भ्रूणहत्यमृतीवृतां। गम्यत्वभावे दातृणां कन्या कुर्यात स्वयम्वरम् ।२। अन्यच्च। माधवीये नारदः। पितादद्यात्स्वयं कन्याभ्राता वा न मते पितुः। मातामहो मातुलश्च सकुल्यो जननी तथा। मातात्वभावे सर्वेषां प्रकृतौ यदि वर्तते। तस्यामप्रकृतिस्थायांकन्या दद्युः स्वजातयः। यदा तु नैव कश्चित् स्यात् कन्याराजानमावजेदिति। अत्र भ्रातृणामुपनीतानामेवाधिकारः। अनुपनीतभ्रातुर्मात्राश्च सत्वे मात्रादेरेवाधिकारो नत्वनुपनीतभ्रातुरिति। अथ पित्रादीनामभावे कस्योपनयनाधिकारः। तदाहगार्ग्यः पितैवोपनयेत्पुत्रं तद्भावे पितुः पिता। तद्भावे पितुर्भ्राता तद्भावे तु सोदरः। तद्भावे सगोत्रसपिण्डाः। तद्भावे मातुलादयः सगोत्रपिण्डाः। तद्भावे असिपिण्डसगोत्रजाताः। एते च कुमारापेक्षयावयोजयेष्ठविवक्षिताः। कनिष्ठकर्तृकोपनयनस्य निषिद्धत्वात्। सर्वाभावे श्रोत्रियः जन्मना ब्राह्मणो ज्ञेयाः संस्कारैर्द्विज उच्यते। विद्वत्वाच्चापिविप्रत्वं त्रिभिः श्रोत्रियः उच्यते। कृच्छत्रयं चापनेता त्रीनकुच्छांश्च बटुश्चरेत्। गायत्र्याद्वादशाधिकसहस्रजपश्च श्रोपनयनेपितृत्वाधिकार सिद्धयर्थकार्यः केचिद्वादशासहस्रीं जपन्ति।

शिववास फलम्- तिथिं द्विगुणीकृत्य बाणैः संयोजयेत्ततः। सप्तभिश्च हरेद्शेषे शिववासं समुद्दिशेत्।। एकेन वासः कैलाशे द्वितीये गौरीसन्निधौ। तृतीये वृषभारूढः सभायां च चतुष्टये। पञ्चमे भोजने चैव क्रीडायां च रसात्मके। श्मशाने सप्तशेषे चशिववासः उदीरितः। कैलाशे लभते सौख्यं गौर्यां च सुख सम्पदः। वृषभेऽभीष्ट सिद्धिः स्यात् सभायां सन्ताप कारिणी।। भोजने च भवेत् पीडा क्रीडायां कष्टमेव चाश्मशाने मरणं ज्ञेयं फलमेवं विचारयेत्।।

## नवग्रहाणां जपार्थं वैदिकमन्त्राः

**सूर्यस्य।।** ॐ आकृष्णेन रजसावर्तमानोनिवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।। हिरण्ययेन सवितारथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्।

**चन्द्रस्य।।** ॐ इमन्देवाऽअसपत्नर्ठसुवध्वं महतेक्षत्रायमहतेज्यैष्ठयायमहतेजानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय।। इमममुष्यैपुत्रम मुष्यै पुत्रमष्यै विशऽएषवोमीराजासोमोऽस्माकं ब्राह्मणानार्ठ राजा।।

**भौमस्य।।** ॐ अग्निमूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्।। अपार्ठ रेतार्ठसिजिन्वति।।

**बुधस्य।।** ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहीत्वमिष्टापूतसर्ठ सृजेथामयञ्च।। अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वदेवा यजमानश्चसीदत।।

**गुरोः।।** बृहस्पतेऽतियदर्योऽअर्हाद्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु।। यद्दीदयच्छवसऋतप्रजाततदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम्।।

**शुक्रस्य।।** ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसं ब्रह्मणाव्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेनसत्यमिन्द्रियं विपानर्ठ शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतंमधु।।

**शनेः।।** ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयेऽआपोभवन्तुपीतये।। शंयोरभिस्रवन्तु नः।।

**राहोः।।** ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधः सखा।। कयाशचिष्ठयावृता।।

**केतोः।।** ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवेपेशोमर्याऽअपेशसे।। समुषद्भिरजायथाः।।इति।।

**शुभछिक्काः-** भोजने, शयने, दाने, आसने, वामे, पृष्ठे, युद्धे, औषधसेवने, अध्ययने, बीजवापे एषु शुभा।।

## अथ छिक्कायां शुभाशुभज्ञानाय चक्रमिदम्।

| पूर्व | आग्नेय | दक्षिण | नैऋत्य | पश्चिम | वायव्य | उत्तर | ईशान | वार |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| विघ्नः | विलंब | उत्तम | मृति | शुभम् | आगमन | लाभः | विलंब | रवि |
| लाभः | विलंब | मृति | लाभः | शुभम् | उत्तम | अल्पलाभ | विलंब | चन्द्र |
| मित्रागमनः | लाभः | विलंब | मृति | लाभः | विदेशयात्रा | सुखः | लाभः | भौम |
| सिद्धिः | देहकष्टः | अरिष्ट | विलंब | मृति | धननाशः | चौरभयः | देहकष्टः | बुध |
| चिन्ता | वार्ता | विलंब | उत्तम | चौरभयः | मृति | कष्टः | वार्ता | गुरु |
| धनादि | कलह | मित्रागमनः | अर्थलाभः | उत्तम | विलंब | मरणम् | कलह | शुक्र |
| अर्थनाशः | कष्टनाशः | वार्ता | मित्रागमनः | उत्तम | शुभ | विलंब | कष्टनाशः | शनि |

## ।।वार कर्मः।।

**रविवारः।** राज्याभिषेकोत्सवयानसेवा गोवह्निमंत्रौषधिशस्त्र कर्म। सुवर्णताम्रौर्णिकचर्मकाष्ठ संग्रामपण्यादि रवौ विद्ध्यात् ।

**सोमवारः।** शङ्खाब्जमुक्तारजतेक्षुभोज्य स्त्रीवृक्षकृष्यंभ विभूषणाद्याः। गानंऋतुक्षीरविकारशृंगी पुष्पाम्बरारंभण मिन्दुवारे।

**भौमवारः।** भेदानृतस्तेयविषाग्नि शस्त्रवेधाभिघाता हवशाठ्यदंभान्।। सेनानिवेशाकर धातुहेम प्रवालरत्नानि कुजे विद्ध्यात् ।

**बुधवारः।** नैपुण्यपुण्याध्ययन कलाश्चशिल्पादिसेवालिपिलेखनानि। धातुक्रियाकाञ्चनयुक्तिसंधि व्यायामवादाश्च बुधेविधेयाः।

**गुरुवारः।** धर्मक्रियापौष्टिकयज्ञविद्या मांगल्यहेमांबरवेश्म यात्राः। रथाश्वभैषजयविभूषणा दिकार्यं विद्ध्यात्सुरमंत्रिवारे।

**शुक्रवारः।** स्त्रीगीतशय्यामणिरत्नगन्ध वस्त्रोत्सवालङ्करणादिकर्म। भूपण्यगोकोशकृषिक्रियाश्च सिद्ध्यन्ति शुक्रस्य दिने समस्ताः।

**शनिवारः।** लोहाश्मसीसत्रपुशस्त्रदासपापा नृपस्तेय विषार्कविद्याम्। गृहप्रवेशद्विपवधदीक्षा स्थिरं च कर्मार्कसुतेऽह्नि कुर्यात् ।

## अथ वर्षप्रवेशसारणीयम्। जन्मवारेष्टघटीपलेषु प्रतिवर्षक्षेपको वारादिः।

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | गव. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ५ | ६ | ० | १ | ३ | ४ | ० | ६ | १ | २ | ३ | ४ | ६ | ० | १ | २ | ४ | ५ | ६ | ० | २ | ३ | ४ | ५ | ० | १ | २ | ४ | ५ | वा. |
| १५ | ३१ | ४६ | २ | १७ | ३३ | ४८ | ४ | १९ | ३५ | ५० | ६ | २१ | ३७ | ५२ | ८ | २३ | ३९ | ५४ | १० | २६ | ४१ | ५७ | १२ | २८ | ४३ | ५९ | १४ | ३० | ४५ | १ | १६ | घ. |
| ३१ | ३ | ३४ | ६ | ३७ | ० | ४० | १२ | ४३ | १५ | ४६ | १८ | ४९ | २१ | ५२ | २४ | ५५ | २७ | ५८ | ३० | १ | ३३ | ४ | ३६ | ७ | ३९ | १० | ४२ | १३ | ४५ | १६ | ४८ | प. |
| ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | वि. |
| ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | गव. |
| ६ | ० | २ | ३ | ४ | ५ | ० | १ | २ | ३ | ५ | ६ | ० | १ | ३ | ४ | ५ | ६ | १ | २ | ३ | ४ | ६ | ० | १ | ३ | ४ | ५ | ६ | १ | २ | ३ | वा. |
| ३२ | ४७ | ३ | १८ | ३४ | ४९ | ५ | २१ | ३६ | ५२ | ७ | २३ | ३८ | ५४ | ९ | २५ | ४० | ५६ | ११ | २७ | ४२ | ५८ | १३ | २९ | ४४ | ० | १५ | ३१ | ४७ | २ | १८ | ३३ | घ. |
| १९ | ५१ | २२ | ५४ | २५ | ५७ | २८ | ० | ३१ | ३ | ३४ | ६ | ३७ | ९ | ४० | १२ | ४३ | १५ | ४६ | १८ | ४९ | २१ | ५२ | २४ | ५५ | २७ | ५८ | ३० | १ | ३३ | ४ | ३६ | प. |
| ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | वि. |
| ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | गव. |
| ४ | ६ | ० | १ | २ | ४ | ५ | ६ | ० | २ | ३ | ४ | ५ | ० | १ | २ | ३ | ५ | ६ | ० | १ | ३ | ४ | ५ | ६ | १ | २ | ३ | ५ | ६ | ० | १ | वा. |
| ४९ | ४ | २० | ३५ | ५१ | ६ | २२ | ३७ | ५३ | ८ | २४ | ३९ | ५५ | १० | २६ | ४२ | ५७ | १३ | २८ | ४४ | ५९ | १५ | ३० | ४६ | १ | १७ | ३२ | ४८ | ३ | १९ | ३४ | ५० | घ. |
| ७ | ३९ | १० | ४२ | १३ | ४५ | १६ | ४८ | १९ | ५१ | २२ | ५४ | २५ | ५७ | २८ | ० | ३१ | ३ | ३४ | ६ | ३७ | ९ | ४० | १२ | ४३ | १५ | ४६ | १८ | ४९ | २१ | ५२ | २४ | प. |
| ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | वि. |

अथग्रहाणां सदसत्फलदातृत्वम्।। व्यसनः। [illegible] केन्द्रत्रिकोणगीः। उच्चस्वगेहमित्रस्था उदिताः फलदाग्रहाः। अस्तङ्गताश्च नीचारिराशिस्थाः। [illegible] सौम्याः पापाः केन्द्रत्रिकोणगाः। सौम्यालाभगाः खेटाः श्रेष्ठाः स्युः शुभ कर्मणि [illegible] दशशतानि च। लक्षमेकञ्च दोषाणांगुरुः केन्द्रेव्यपोहति।।

**वाराहमिहिर के मतानुसार वस्तुओं का समर्घ चक्र-** जिस वस्तु को तेजी मन्दी जाननी हो उसकी राशि देख लें, यदि उस राशि से बृहस्पति ४।१०।२।११।७।९।५, बुध २।६।११।८।१२ में व शुक्र ६।७ को छोड़ कर शेष सब भाव में हो तो वह वस्तु सस्ती होगी। ग्रह सूर्य, मङ्गल, शनि व राहु के क्षीणचन्द्र वस्तु के राशि से ३।६।११।१ भाव में हो तो समर्घ अन्य में हो तो महर्घ जानना चाहिये। जिस वस्तु की राशि में ८वें पाप ग्रह हों तो वह वस्तु मँहगी रहेगी तथा जिसमें शुभ ग्रह हों वह वस्तु सस्ती रहेगी।

| मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सुवर्ण | चावल | बाजरा | कोद्रव | चावल | तीसी | उरद | ऊख,गुड़ | अश्व | वृक्ष | जलफल | गोपज |
| गेहूँ, जौ | वस्त्र | कपास | केला | पटरस | जवास | लाल | चीनी | गज | कपड़ा | पुष्प | मोती |
| मसूर, राल | गोधूम | रुई | जायफल | गुड़ | मटर | गेहूँ | शक्कर | लवण | रसकूट | रत्न | हीरा |
| कम्बल | यव | कमलकंद | तमालपत्र | खाँड | कुलथी | सरसों | लाई | धनिया | जमाकंद | पोस्त | तस |
| पश्मीना | महिष | जुवार | दालचीनी | सिंह | मूँग | यव | ककरी | मुरई | सुवर्ण | रस | अँतर |
| दुशाला | बैल | मकाशा | | मृगादिचर्म | गेहूँ | रहर | चमड़ा | तिल | कृष्ण | अपानक | समुद्रदोष |
| स्थलज | पुष्प | लंक | | तुप | सेमदाना | मटर | बल्लीफल | वस्त्र | ऊव | चित्र | मत्स्य |
| औषधीति | सरसों | ककुनी | | | | अरण्ड | पान | आयुध | मंजिष्ट | वि.वस्त्र | गजमोती |

अथ सारणीतो द्वष्टयानयनम्।। द्रष्टाविहीनदृश्यस्य ग्राह्यं राश्यंशतः फलम्। कलादिकं गुणगुणं हराप्तं तन्न संस्कृतम्। धनर्णरीत्यातत्स्पष्टं फलग्राह्यं हि दृक्फलम्।।

### अथात्र त्रिराशिपाः

| लग्न | मे | वृ. | मि. | क. | सिं. | कं. | तु. | वृ. | ध. | म. | कु. | मी. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिवा | र. | शु. | श. | शु. | गु. | चं. | बु. | मं. | श. | मं. | गु. | चं. |
| रात्रौ | गु. | च. | बु. | मं. | र. | शु. | श. | शु. | श. | मं. | गु. | चं. |

### ।। अथ होराचक्रमिदम् ।।

| मे | वृ. | मि. | क. | सिं. | कं. | तु. | वृ. | ध. | म. | कु. | मी. | अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ सू. | ४ चं. | ५ सू. | ४ चं. | ५ सू. | ४ चं. | ५ सू. | ४ चं. | ५ सू. | ४ चं. | ५ सू. | ४ चं. | १५ |
| चं. ४ | सू. ५ | चं. ४ | सू. ५ | चं. ४ | सू. ५ | चं. ४ | सू. ५ | चं. ४ | सू. ५ | चं. ४ | सू. ५ | १५ |

### ।। अथात्र हद्दाचक्रमिदम् ।।

| मे | वृ. | मि. | क. | सिं. | कं. | तु. | वृ. | ध. | म. | कु. | मी. | राशयः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६ गु. | ८ शु. | ६ बु. | ७ मं. | ६ गु. | ७ बु. | ६ श. | ७ मं. | १२ गु. | ७ बु. | ७ शु. | १२ शु. | अं. स्वा. |
| ६ शु. | ६ बु. | ६ शु. | ६ शु. | ५ शु. | १० शु. | ८ बु. | ४ शु. | ५ शु. | ७ गु. | ६ बु. | ४ गु. | अं. स्वा. |
| ८ बु. | ८ गु. | ५ गु. | ६ बु. | ७ श. | ४ गु. | ७ गु. | ८ बु. | ४ बु. | ८ शु. | ७ गु. | ३ बु. | अं. स्वा. |
| ५ मं. | ५ श. | ७ मं. | ७ गु. | ६ बु. | ७ मं. | ७ शु. | ५ गु. | ५ मं. | ४ श. | ५ मं. | ९ मं. | अं. स्वा. |
| ५ श. | ३ मं. | ६ श. | ४ श. | ६ मं. | ३ श. | २ मं. | ६ श. | ८ श. | ८ मं. | ५ श. | २ श. | अं. स्वा. |

### ।। अथ द्रेष्काणचक्रमिदम् ।।

| मे | वृ. | मि. | क. | सिं. | कं. | तु. | वृ. | ध. | म. | कु. | मी. | अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ मं. | २ शु. | ३ बु. | ४ चं. | ५ र. | ६ बु. | ७ शु. | ८ मं. | ९ गु. | १० श. | ११ श. | १२ गु. | १० |
| ५ र. | ६ बु. | ७ शु. | ८ मं. | ९ गु. | १० श. | ११ श. | १२ गु. | १ मं. | २ शु. | ३ बु. | ४ चं. | २० |
| ९ बु. | १० श. | ११ श. | १२ गु. | १ मं. | २ शु. | ३ बु. | ४ चं. | ५ र. | ६ बु. | ७ शु. | ८ मं. | ३० |

तत्रकेन्द्रायुः साधने श्लोकाः।। केन्द्राङ्क संख्यां त्रिगुणीं विधाय राह्वारसंख्याकमतो विहिनम्। आयुप्रमाणं कथितं मुनीन्द्रैश्चिरन्तनैर्ज्यौतिपिकैर्विचार्य केन्द्रस्थान स्थितानङ्कान् त्रिगुणीं कृत्य यावन्तं पिण्डं स्थान द्वये संस्थाप्य यदि केन्द्रे भौमराहु भवतस्तदा तत्संख्याङ्को संमील्य केन्द्राङ्क मध्ये संशोध्य शेषं त्रिगुणीकार्यमिति ज्ञेयम्।।

| राशयः | ध्रुवाङ्काः |
|---|---|
| मेष | १० |
| वृष | ६ |
| मिथुन | २० |
| कर्क | ५ |
| सिंह | ८ |
| कन्या | २ |
| तुला | २० |
| वृश्चिक | ६ |
| धनु | १० |
| मकर | १४ |
| कुम्भ | ३ |
| मीन | ४ |

प्रकारान्तरेण लग्नायः साधन ध्रुवाङ्क जन्मपत्र यत्र ग्रहा भवत [illegible]
ततः ध्रुवाङ्कहीन यागः [illegible] प्रमाण ज्ञयमितिः।

## ।। अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थग्रहाणां फलं ताजिकोक्तम् ।।

| श्री | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्यः | क्लेशः चिन्ता च | शोकः नृ पाद्भीति | पराक्रमो धनलाभः | हानिः पीडाभयम् | रोगभयं पुत्रनाशः | सौख्यम् शत्रुनाशः | स्त्रीकष्टम् पीडाभयम् | शोककष्टा दिभयम् | धर्मवृद्धिः राज्यप्रदः | सुखाप्तिः राज्याप्तिः | सुखार्थ लाभः | उद्वेग पीड़ा च |
| चन्द्रः | कफज्वरः पीडनम् | नेत्रपीडा धनप्राप्तिः | धनप्राप्तिः हर्षश्च | सुखं शत्रुनाशः | सुखम् सुमतिश्च | अङ्गपीडा व्ययः | ज्वरार्तिः भयम् | विविध कष्टभयम् | पुण्योदयः धनागमः | सुकर्म जयाप्तिः | यशोर्थ लाभः | व्यय; नेत्रपीड़ा |
| भौमः | वातार्ति व्रणश्च | दृशोरुक् वित्तनाशः | नैरुज्यं द्रव्यलाभः | व्यसनं रुग्भयं | पुत्राप्तिः दुर्मतिः | सुखम् शत्रुनाशः | स्त्रीनाशः कष्टम् | ज्वरार्तिः व्रणश्च | पुण्योदयः धनाप्तिः | राज्यार्थ लाभः | धनादि लाभः | विरोधः कर्णपीड़ा |
| बुधः | सौख्यम् धनलाभ | द्रव्याप्तिः सुखम् | सुखं सुमानश्च | सुखं द्रव्यलाभः | पुत्रवित्त सुखप्ति | रोगभयं कलहश्च | धनागमः कफार्ति | व्यांग्रंता कफार्ति | धनम् कीर्त्याप्तिः | मानसुखादि लाभः | सुखम् जयाप्तिः | शत्रुरोगादिभयम् |
| गुरुः | सुखय शोर्थलाभ | कीर्तिधना दिलाभः | जयः सौख्यम् | वाहन प्राप्तिसुखं | पुत्राप्तिः सुखञ्च | शत्रुरोगादि भयं | सुखम् वित्तप्राप्तिः | कठिन रुग्भयम् | सुखं भागयवृद्धि | राज्यार्थ लाभः | सुतार्थ लाभः | शोकरोगादिभयम् |
| शुक्रः | सुमानम् धनलाभः | धनाप्तिरा ज्यसुखम् | कीर्तिवृद्धि अर्थागमः | सुखार्थ लाभौ | धनागमः सुखम् | रिपुभतिः कष्टम् | कलत्र सौख्यम् | ज्वरपीडा दिभयम् | धर्म धनागमः | मानजया दिलाभः | क्षेमार्थ लाभः | व्ययः नोलाभः |
| शनिः | रिपोर्भयम् वातार्तिः | पीडाभयम् विरोधः | धनाप्तिः जयश्च | सुखार्थ नाशःकष्टं | सुतहानि पीडा च | धनप्राप्तिः आर्तिनाशः | स्त्रीकष्टम् कलिः | दुःखम् रोगादिभयं | भागयवृद्धि शत्रुनाशः | धनहानि पीडाभयम् | धनाप्तिः पुत्राप्तिः | क्लेशः चिन्ता च |
| राहुः | शिरोर्तिः कलह | नृपभयम् पीडा च | शत्रुनाशः शीघ्र | वातार्तिः दुःखञ्च | बुद्धिनाश अधनी | रिपुक्षयं आरोग्यम् | पीडाभयम् धनक्षयः | धनक्षयः रुग्भय | धनधर्म वृद्धिः | वाहन नाशजयः | विपुत्रः सुलाभः | व्याधिः भयम् |
| केतुः | पीडाभयम् चिन्ता च | क्लेशं धनक्षयं | आरोग्यम् धर्मनाशः | कष्टं नृपतिभयं | पीडाभयं दुर्मतिः | सुखम् धनागमः | क्लेशः रुक् च | ज्वरपीडा दिभयम् | भाग्यः यशोर्थलाभ | कोत्यर्थ लाभः | पुत्रार्थ सुखलाभः | शोकार्तिः भयम् |
| मुन्था | सौख्यम् शत्रुनाशः | सुयशः अर्थागमः | कार्यपुष्टिः धनम् | अङ्गपीडा दुःखञ्च | सुबुद्धि सुखाप्ति | रोगभयं अर्थनाशः | रोगभयम् व्यसनम् | दुर्व्यसनम् रोगभयम् | भाग्योदयम् | राज्यसुखम् धनाप्तिः | धर्मार्थ लाभः | सुव्ययः लाभः |

### ।। सप्तमांशचक्रमिदम् ।।

| मे. | वृ. | मि. | क. | सिं. | कं. | तु. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. | अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ मं. | ८ मं. | ३ बु. | १० श. | ५ र. | १२ गु. | ७ शु. | २ शु. | ९ गु. | ४ चं. | ११ श. | ६ बु. | ४ १७।९ |
| २ शु. | ९ गु. | ४ चं. | ११ श. | ६ बु. | १ मं. | ८ मं. | ३ बु. | १० श. | ५ र. | १२ गु. | ७ शु. | ८ ३४।१७ |
| ३ बु. | १० श. | ५ र. | १२ गु. | ७ शु. | २ शु. | ९ गु. | ४ चं. | ११ श. | ६ बु. | १ मं. | ८ मं. | १२ ५१।२५ |
| ४ चं. | ११ श. | ६ बु. | १ मं. | ८ मं. | ३ बु. | १० श. | ५ र. | १२ गु. | ७ शु. | २ शु. | ९ गु. | १७ ८।३४ |
| ५ सू. | १२ गु. | ७ शु. | २ शु. | ९ गु. | ४ चं. | ११ श. | ६ बु. | १ मं. | ८ मं. | ३ बु. | १० श. | २१ २५।४२ |
| ६ बु. | १ मं. | ८ मं. | ३ बु. | १० श. | ५ र. | १२ गु. | ७ शु. | २ शु. | ९ गु. | ४ चं. | ११ श. | २५ ४२।५१ |
| ७ शु. | २ शु. | ९ गु. | ४ चं. | ११ श. | ६ बु. | १ मं. | ८ मं. | ३ बु. | १० शु. | ५ र. | १२ गु. | ३० ० |

### ।। अथ नवमांशचक्रमिदम् ।।

| मे. | वृ. | मि. | क. | सिं. | कं. | तु. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. | अं.क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मं. | श. | शु. | चं. | मं. | श. | शु. | चं. | मं. | श. | शु. | चं. | ३।२० |
| शु. | श. | मं. | र. | शु. | श. | मं. | र. | शु. | श. | मं. | र. | ६।४० |
| बु. | गु. | गु. | बु. | बु. | गु. | गु. | बु. | बु. | गु. | गु. | बु. | १०।० |
| चं. | मं. | श. | शु. | चं. | मं. | श. | शु. | चं. | मं. | श. | शु. | १३।२० |
| र. | शु. | श. | मं. | र. | शु. | श. | मं. | र. | शु. | श. | मं. | १६।४० |
| बु. | बु. | गु. | गु. | बु. | बु. | गु. | गु. | बु. | बु. | गु. | गु. | २०।० |
| शु. | चं. | मं. | श. | शु. | चं. | मं. | श. | शु. | चं. | मं. | श. | २३।२० |
| मं. | र. | शु. | श. | मं. | र. | शु. | श. | मं. | र. | शु. | श. | २६।४० |
| गु. | बु. | बु. | गु. | गु. | बु. | बु. | गु. | गु. | बु. | बु. | गु. | ३०।० |

### ।। अथ वर्ष मुद्दादशाचक्रम् ।।

| सू. | च. | मं. | रा. | गु. | चं. | बु. | के. | शु. | पतयः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | ० | १ | १ | १ | १ | ० | २ | मासाः |
| १८ | ० | २१ | २४ | १८ | २७ | २१ | २१ | ० | दिनानि |

गताब्द... प्रमाणे जन्मर्क्ष संख्यायुक्तं द्विरूनं विधान नव तष्टे शेषे दशापतिः।

**प्रश्नोपरिवर्षप्रवेशप्रसाधनम्।।** यत्प्रश्नलग्नंप्रथमेप्रदिष्टंवर्ष प्रवेशस्य तदेवलग्नम्। तसमाच्चतुर्थाधिपतिश्च जन्म विलग्ननार्थः कथितो बलार्थम्।१। पृच्छाविलग्नस्य विहायराशीविभाजयेदंश कलाकलापम्। खवाण चन्द्रैरिहराशिपूर्वं फलं विलग्नान्मुंथ हास्थितिः स्यात्।२। अथवा। सत्कालप्रश्न लग्नस्य कलिकाखाक्ष भू १५० हताः। लब्धराश्यादिका मुन्थाप्रश्नपत्रे भवेत्स्फुटा।३। प्रश्नाऽर्कतुल्योऽग्रिमवर्ष भानुर्यदात्तदाऽब्दस्य भवेत्प्रवेशः। तत्काल होराखचराऽनुसारंवर्षे विचारं विदधीतधीमान। समीक्ष्यकेषांचिदिदं मतं वा मया हि संसूचितमत्रसम्यक्।४।

### ।। अथ द्वादशांशचक्रमिदम् ।।

| मे. | वृ. | मि. | क. | सिं. | कं. | तु. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. | अं.क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मं. | शु. | बु. | चं. | र. | बु. | शु. | मं. | गु. | श. | श. | गु. | २।३० |
| शु. | बु. | चं. | र. | बु. | शु. | मं. | गु. | श. | श. | गु. | मं. | ५।० |
| बु. | चं. | र. | बु. | शु. | मं. | गु. | श. | श. | गु. | मं. | शु. | ७।३० |
| चं. | र. | बु. | शु. | मं. | गु. | श. | श. | गु. | मं. | शु. | बु. | १०।० |
| र. | बु. | शु. | मं. | गु. | श. | श. | गु. | मं. | शु. | बु. | चं. | १२।३० |
| बु. | शु. | मं. | गु. | श. | श. | गु. | मं. | शु. | बु. | चं. | र. | १५।० |
| शु. | मं. | गु. | श. | श. | गु. | मं. | शु. | बु. | चं. | र. | बु. | १७।३० |
| मं. | गु. | श. | श. | गु. | मं. | शु. | बु. | चं. | र. | बु. | शु. | २०।० |
| गु. | श. | श. | गु. | मं. | शु. | बु. | चं. | र. | बु. | शु. | मं. | २२।३० |
| श. | श. | गु. | मं. | शु. | बु. | चं. | र. | बु. | शु. | मं. | गु. | २५।० |
| श. | गु. | मं. | शु. | बु. | चं. | र. | बु. | शु. | मं. | गु. | श. | २७।३० |
| गु. | मं. | शु. | बु. | चं. | र. | बु. | शु. | मं. | गु. | श. | श. | ३०।० |

### ।।मेषादिराशिनामत्र द्रेष्काणचक्रम् ।।

| मे. | वृ. | मि. | क. | सिं. | कं. | तु. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. | राशयः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १० मं. | १० बु. | १० गु. | १० शु. | १० श. | १० सू. | १० चं. | १० मं. | १० बु. | १० गु. | १० शु. | १० श. | अंश पतयः |
| २० सू. | २० चं. | २० मं. | २० बु. | २० गु. | २० शु. | २० श. | २० सू. | २० चं. | २० मं. | २० बु. | २० गु. | अंश पतयः |
| ३० शु. | ३० श. | ३० सू. | ३० चं. | ३० मं. | ३० बु. | ३० गु. | ३० शु. | ३० श. | ३० सू. | ३० चं. | ३० मं. | अंश पतयः |

### अथ त्रिशांशचक्रमिदम्

| मे. | वृ. | मि. | क. | सिं. | कं. | तु. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ मं. | ५ शु. | ५ मं. | ५ शु. | ५ मं. | ५ शु. | ५ मं. | ५ शु. | ५ मं. | ५ शु. | ५ मं. | ५ शु. | अं. स्वा. |
| ५ श. | ७ बु. | ५ श. | ७ बु. | ५ श. | ७ बु. | ५ श. | ७ बु. | ५ श. | ७ बु. | ५ श. | ७ बु. | अं. स्वा. |
| ८ गु. | ८ गु. | ८ गु. | ८ गु. | ८ गु. | ८ गु. | ८ गु. | ८ गु. | ८ गु. | ८ गु. | ८ गु. | ८ गु. | अं. स्वा. |
| ७ बु. | ५ श. | ७ बु. | ५ श. | ७ बु. | ५ श. | ७ बु. | ५ श. | ७ बु. | ५ श. | ७ बु. | ५ श. | अं. स्वा. |
| ५ शु. | ५ मं. | ५ शु. | ५ मं. | ५ शु. | ५ मं. | ५ शु. | ५ मं. | ५ शु. | ५ मं. | ५ शु. | ५ मं. | अं. स्वा. |

### पञ्चाधिकारिगणः

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | जन्मलग्नपतिः। | ४ | मुंथहापतिः। |
| २ | वर्षलग्नपतिः। | ५ | दिवारविभपः। |
| ३ | त्रिराशिपतिः। | ६ | रात्रौचन्द्रभपः। |

वर्षमुद्दादशायाः द्वादशोभागः मासदशाकालः।

**वर्षेशनिर्णयः** एषु लग्नापलोकी बलवांश्च वर्षपतिः। लग्नं प्रपश्येदधितीर्वे एषां वर्षेश्वरः स्यादथदृष्ट्यभावे। वीर्याऽधिकोनाऽब्द विभुर्विवोर्यो लग्नं प्रपश्येदपि हायनेशः। वीर्ये समानेऽपि तनुं प्रपश्येद् दृष्ट्याऽधिको वर्षपतिर्विधेयः।। समान दृष्ट्यावधिकाभाजामनल्पवीर्योधिपतित्वमेति। वीर्यस्य दृष्टेरपि तुल्यतायां वर्षेशः स्यान्मुथहाऽधिकारी।। न कोऽपिपश्येद्यदिवर्ष लग्नं यस्तदा जन्मविलग्नदर्शी। न वर्षलग्नं न च जन्मलग्नं चेत्कोऽपि पश्येदधिकारभाजाम्। ज्ञेयस्तदोरविलोऽबलो वा वर्षाधिनाथोमुथहाधिनाथः।। बलादि सामये रवि राशियोऽह्नि निशोन्दुराशिरिति केचिदाहुः। येनेत्थशालोऽब्दविभुः शशी स वर्षाऽधपश्चन्द्र भयोन्ययात्वे।। अथवा- पञ्चाधिकारिणो लग्नं न पश्यन्ति यदा तदा। वर्षलग्नेश्वरो यस्तु स एवाऽब्दपतिर्भवेत्।। अथ वर्षेत्रिपताकचक्रग्रह संस्थापनम्- गताब्दसंख्याया विभक्तानवभिस्ततः। शेषाङ्कैजन्मनिगताच्चन्द्र राशेरिहन्यसेत् शेषाग्रहांश्चतुर्भक्तशेषफलसंख्यासुविन्यसेत्। त्रिपताकेवार्षे लग्नमादौ स्थाप्यं विधूदयौ। शुभैर्विद्धःशुभफलो पापः पापफलप्रदाविति।। वर्षमुंथानयनम्- गतवर्षे जन्मलग्नं संयोज्य १२ हृते वर्षे मुंथाराशिः।। मासदशानयनम्- गतवर्ष संख्यां द्वादशगुणां विधाय तत्र जन्मर्क्षसंख्यां संयोज्य द्विहीनां तां नवभिर्भक्तेशेषेदशा नायको भवति।

### ।। अथाङ्गस्यविभागेनपल्लीपतने फलमिदम् ।।

| स्थानानि | फलानि | स्थानानि | फलानि | स्थानानि | फलानि | स्थानानि | फलानि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शिरसि | राज्यलाभः | कण्ठे | शत्रुनाश | हस्तद्वये | वस्त्रलाभ | वामपादे | नाशः |
| नासाग्रे | व्याधि | जंघयोः२ | शुभावहं | वाममणिबन्धे | कीर्तिविनाश | अधरोष्ठे | ऐश्वर्य |
| वामभुजे | राजभीतिः | दक्षिण | मनस्तापं | दक्षिणपादे | गमनम् | द.भुजे | नृपतुल्यता |
| जानुद्वये | शुभागमः | मणिबन्धे | धननाशः | उत्तरोष्ठे | धननाशः | पृष्ठदेशे | बुद्धिनाशः |
| कटिभागे | अश्वलाभः | केशान्ते | मरणंध्रुवं | नेत्रयोः२ | धनप्राप्तिः | नासायां | बहुधनानि |
| गुल्फयोः | धनलाभः | भ्रुवोर्मध्ये | राजसंबंध | उदरे | भूषणलाभ | मुखे | मिष्ठान्नम |
| ललाटे | बंधुदर्शनं | वामकर्णे | बहुलाभः | स्कन्धयोः | विजयः | पादमध्ये | श्रीनाशः |
| दक्षिणकर्णे | आयुवृद्धि | स्तनद्वये | दौर्भाग्यं | हृदये | धनलाभः | पादान्ते | मरणंभवेत् |

## अथ सर्वनक्षत्रसाधारणः शांतिप्रयोगः

देशकालौ संकीर्त्य ममोत्पन्नव्याधेर्जीवच्छरीराविराधेन समलनाशार्थममुक नक्षत्रशांतिं करिष्ये इति संकल्प गणेशपूजादि। आचार्यं वृत्वा कुम्भोपरिपूर्णपात्रे द्वादशदले नक्षत्रदेवताप्रतिमा सौवर्णी संपूज्य द्वादशदलेषु संकर्षणादिद्वादश मूर्तीर्द्वादशादित्यान्वा संपूज्य दूर्वासमित्तिलक्षी राज्यैर्गायत्र्या तत्तद्देवतायै अष्टोत्तरशतं हुत्वा मरणादिपीडाधिक्योक्तौ सहस्रं हुत्वा दध्योदनबलिं दत्त्वाचार्याय गां प्रतिमां च दद्यादिति संक्षेपः। शांतिमयूखादौ नक्षत्रभेदेन हविर्मंत्रबलिधूपादिभेदस्थिवारदेवतामन्त्रादिभेद इत्यादिविस्तारो द्रष्टव्यः। कर्मविपाके। जातवेदस इत्यृचोऽयुतं लक्षं वा जपो रुद्रे नमकानुवाकैः सहस्रकलशस्नानं वा विष्णौ सहस्रावृतपुरुषसूक्तेन सहस्रघटस्नानं वा ज्वरनाशकम्। यद्वा श्रीभागवतस्थज्वरस्तोत्रजपः।।

### नाडीदोष परिहारः

रोहिण्यार्द्रा मृगेन्द्राग्नी पुष्यश्रवणपौष्णभम्।
अहिर्बुध्न्य भमेतेषां नाडीदोषो न विद्यते।।
(कुत्रचित् मघेन्द्राग्नी इत्यापिपाठः)

### अथतन्वादि भावानांजातकोक्त स्थिरकारकाज्ञानाय चक्रमिदम्

| भाव | कारकः |
|---|---|
| तनु १ | सूर्यः |
| धन २ | गुरुः |
| स. ३ | भौमः |
| मातृ ४ | चन्द्रः |
| पुत्र ५ | गुरुः |
| रोग ६ | भौमः |
| जाया ७ | शुक्रः |
| मृत्यु ८ | शनिः |
| भाग्य ९ | गुरुः |
| कर्म १० | बुधः |
| लाभ ११ | गुरुः |
| व्यय १२ | शनिः |

**अथविशेषपल्लीपतनफलम्-** पादयोर्जंघनेजात्वोर्गुदिगुह्येच मृत्युदा। अन्यत्र शुभदाप्रोक्तसतैलंस्नानमाचरेत्। पल्यास्तु पतने चैव सरठस्याधिरोहणे। यत्रोक्तंहिमनुष्यस्य शुभं वाप्यशुभं फलम्। स्त्रीणातद्वैपरीत्यं बोध्यम्बुद्धिमता सदा। **पल्लीपतनस्यानिष्टफलनिवाराणायामदानजपः** तिलमाषादिदानानि स्नानत्वा देयाद्विजन्मने। पिनाकिनं नमसकृत्य जपेनमंत्रं षडक्षरम्।१। शतंसहस्रमथवासर्वदोषनिवर्हणम्। शिवालये प्रदद्याद्वैदीपदोषोपिशान्तये।२। अशुभध्वस्तये मृत्युञ्जयजपस्वर्णगोदानं कार्यमितिशुभम्।

।। श्री गणेशाय नमः। श्रीकाशीविश्वनाथः शरणम्।।

# श्रीसंवत् २०७९ शकः १९४४ सौम्यायनं याम्यगोलः वसन्तर्त्तुः।।

# चैत्रशुक्लपक्षः।।

राष्ट्रिय तिथि १२ चैत्रतः २६ तिथिं यावत् १९४४ शकः।।
अंग्रेजी दिनांक २ अप्रैलतः १६ दिनांकं यावत् सन् २०२२ ई.।।



| दि.मा. घ. | प. | ति. | वा. | घ. | प. | | घं. | मि. | नक्षत्र | घ. | प. | | घं. | मि. | योग | घ. | प. | | घं. | मि. | करण | घ. | प. | करण | घ. | प. | योगाः | अं. | फ. | सौ. | नै. | रा. | चन्द्र राशि | प्रवेशः | सूर्योदयः घं. | मि. | सूर्यास्तः घं. | मि. | औदयिक स्पष्ट सूर्यः | | | | क्रान्तिः उ. | + | रे. अं. ± | मि. | चन्द्रास्तः स्टै. | टा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३० | ४४ | १ | श | १४ | ४ | दि | ११ | २९ | रेवती | १२ | ५७ | दि | ११ | २ | ऐन्द्र | ६ | १७ | दि | ८ | २२ | बव | १४ | ४ | वा | ४४ | ४६ | धाता | २ | १५ | १९ | १९ | १२ | मेष | १२।५७ | ५ | ५१ | ६ | ९ | ११ | १७ | ५९ | ५३ | ४ | ४२ | + | २ | ७ | २० |
| ३० | ४८ | २ | र | १५ | २८ | दि | १२ | १ | अश्विनी | १५ | ५२ | दि | १२ | ११ | वैधृति | ४ | ३० | दि | ७ | ३८ | कौ | १५ | २८ | तै | ४६ | ४५ | आनन्द | ३ | १६ | २० | २० | १३ | | | ५ | ५० | ६ | १० | ११ | १८ | ५९ | ३ | ५ | ४ | + | १ | ८ | १४ |
| ३० | ५१ | ३ | चं | १८ | २ | दि | १ | ३ | भरणी | १९ | ५६ | दि | १ | ४८ | विष्कुम्भ | ३ | ४१ | दि | ७ | १८ | गर | १८ | २ | व | ४९ | ५५ | चर | ४ | १७ | २१ | २१ | १४ | वृष | ३६।१४ | ५ | ५० | ६ | १० | ११ | १९ | ५८ | ११ | ५ | २७ | + | १ | ९ | १० |
| ३० | ५५ | ४ | मं | २१ | ४७ | दि | २ | ३२ | कृत्तिका | २५ | ९ | दि | ३ | ५३ | प्रीति | ३ | ४४ | दि | ७ | १९ | भ | २१ | ४७ | वव | ५४ | ४ | गद | ५ | १८ | २२ | २२ | १५ | | | ५ | ४९ | ६ | ११ | ११ | २० | ५७ | १६ | ५ | ५० | + | १ | १० | ६ |
| ३० | ५९ | ५ | बु | २६ | २१ | दि | ४ | २१ | रोहिणी | ३१ | ८ | सा | ६ | १६ | आयुष्मान | ४ | ३५ | दि | ७ | ३९ | वा | २६ | २१ | कौ | ५८ | ५५ | शुभ | ६ | १९ | २३ | २३ | १६ | | | ५ | ४९ | ६ | ११ | ११ | २१ | ५६ | २० | ६ | १३ | + | १ | ११ | १ |
| ३१ | २ | ६ | गु | ३१ | २८ | सा | ६ | २३ | मृगशिरा | ३७ | ३७ | रा | ८ | ५१ | सौभाग्य | ५ | ५३ | दि | ८ | ९ | तै | ३१ | २८ | गर | ६० | ० | मृत्यु | ७ | २० | २४ | २४ | १७ | मिथुन | ४।२३ | ५ | ४८ | ६ | १२ | ११ | २२ | ५५ | २१ | ६ | ३६ | + | १ | ११ | ५५ |
| ३१ | ६ | ७ | शु | ३६ | ४४ | रा | ८ | २९ | आर्द्रा | ४४ | १२ | रा | ११ | २८ | शोभन | ७ | २८ | दि | ८ | ४६ | गर | ४ | ६ | व | ३६ | ४४ | पद्म | ८ | २१ | २५ | २५ | १८ | | | ५ | ४७ | ६ | १३ | ११ | २३ | ५४ | १९ | ६ | ५८ | + | ० | १२ | ४५ |
| ३१ | ९ | ८ | श | ४१ | ४१ | रा | १० | २६ | पुनर्वसु | ५० | २५ | रा | १ | ५६ | अतिगण्ड | ८ | ५६ | दि | ९ | २० | भ | ९ | १३ | वव | ४१ | ४१ | छत्र | ९ | २२ | २६ | २६ | १९ | कर्क | ३३।५२ | ५ | ४६ | ६ | १४ | ११ | २४ | ५३ | १५ | ७ | २० | + | ० | १ | ३३ |
| ३१ | १२ | ९ | र | ४५ | ५८ | रा | १२ | ८ | पुष्य | ५५ | ५८ | रा | ४ | ८ | सुकर्मा | १० | १ | दि | ९ | ४५ | वा | १३ | ५० | कौ | ४५ | ५८ | श्रीवत्स | १० | २३ | २७ | २७ | २० | | | ५ | ४५ | ६ | १५ | ११ | २५ | ५२ | ९ | ७ | ४३ | - | ० | २ | १७ |
| ३१ | १७ | १० | चं | ४९ | १४ | रा | १ | २७ | श्लेषा | ६० | ० | स | म | स्त | धृति | १० | २८ | दि | ९ | ५६ | तै | १७ | ३६ | गर | ४९ | १४ | सौम्य | ११ | २४ | २८ | २८ | २१ | | | ५ | ४५ | ६ | १५ | ११ | २६ | ५१ | १ | ८ | ६ | - | १ | २ | ५७ |
| ३१ | २१ | ११ | मं | ५१ | २४ | रा | २ | १८ | श्लेषा | ० | ३१ | प्रा | ५ | ५६ | शूल | १० | ३ | दि | ९ | ४५ | व | २० | १९ | भ | ५१ | २४ | आनन्द | १२ | २५ | २९ | २९ | २२ | सिंह | ०।३१ | ५ | ४४ | ६ | १६ | ११ | २७ | ४९ | ५१ | ८ | २८ | - | १ | ३ | ३४ |
| ३१ | २४ | १२ | बु | ५२ | २० | रा | २ | ३९ | मघा | ३ | ५८ | दि | ७ | १८ | गण्ड | ८ | ४८ | दि | ९ | १४ | वव | २१ | ५२ | वा | ५२ | २० | चर | १३ | २६ | ३० | ३० | २३ | | | ५ | ४३ | ६ | १७ | ११ | २८ | ४८ | ३८ | ८ | ४९ | - | १ | ४ | ८ |
| ३१ | २७ | १३ | गु | ५१ | ४९ | रा | २ | २७ | पू.फा. | ६ | १० | दि | ८ | ११ | वृद्धि | ६ | ३३ | दि | ८ | २० | कौ | २२ | ५ | तै | ५१ | ४९ | गद | १४ | २७ | ३१ | १ | २४ | कन्या | २१।२३ | ५ | ४३ | ६ | १७ | ११ | २९ | ४७ | २३ | ९ | ११ | - | २ | ४ | ४२ |
| ३१ | ३१ | १४ | शु | ५० | ५ | रा | १ | ४४ | उ.फा. | ७ | ३ | दि | ८ | ३१ | ध्रुव | ३/५५ | १८/४४ | प्रा | ०/५ | १/११ | गर | २० | ५७ | व | ५० | ५ | शुभ | १५ | २८ | १ | २ | २५ | | | ५ | ४२ | ६ | १८ | ० | ० | ४६ | ५ | ९ | ३२ | - | २ | ५ | १७ |
| ३१ | ३४ | १५ | श | ४७ | १४ | रा | १२ | ३५ | हस्त | ६ | ४५ | दि | ८ | २३ | हर्षण | ५३ | ५६ | रा | ३ | १५ | भ | १८ | ४० | वव | ४७ | १४ | मृत्यु | १६ | २९ | २ | ३ | २६ | तुला | ३६।३ | ५ | ४१ | ६ | १९ | ० | १ | ४६ | ४५ | ९ | ५४ | - | २ | - | - |

मेषराशिः (दि. ११।२)। चन्द्रदर्शनम्। मु. ३० समा। फलं समता। याम्यशृंगं महर्घताकरम्। चान्द्रसंवत्सरस्य- ☯
मु. रमजान ९ हिजरी सन् १४४३। मत्स्यावतारः ३ (अपराह्णे)। सर्वार्थसिद्धियोगः १५।५२ या.।
भ. ४९।५५ उ. (रा. १।४८)। वृषराशिः (रा. ८।२०)। सौभाग्यसुन्दरी ३ व्रतम्। गणगौरी ३ व्रतम् (राजस्थाने)। ♍
भ. २१।४७ या. (दि. २।३२)। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रतम्। श्रीगणेशदमनकोत्सवः। भौमचतुर्थी। स्थायिजययोगः ●
श्रीरामराज्यमहोत्सवः ५ (ल. ४)। लक्ष्म्याः पूजनम्। कल्पादिः ५। सर्वार्थसिद्धियोगःसमस्त। रवियोगः ३१।८ उ.।
मिथुनराशिः (दि. ७।३३)। श्री सूर्यषष्ठी ६ व्रतम् (विहारे)। श्रीस्कन्दषष्ठी ६। श्री स्कन्ददमनकोत्सवः ६। ⌂
भ. ३६।४४ उ. (रा. ८।२९)। श्री भास्करस्य दमनकपूजा ७। महानिशापूजा बलिदानादिकञ्च। श्री अन्नपूर्णा परिक्रमा ३६।४४ उ. (रा. ८।२९)। ❖
भ. ९।१३ या. (दि. ९।२७)। कर्कराशिः (रा. ७।१९)। महाष्टमी ८। व्रत ८। तारा ८। श्री भवान्युत्पत्तिः। पुनर्वसुयुताअशोककलिकाप्राशनम्। ब्रह्मपुत्रस्नानम्।
श्रीरामनवमी ९ व्रतं सर्वेषाम्। मध्याह्ने कर्कलग्ने श्रीरामजन्ममहोत्सवः। अयोध्यायां श्रीरामजन्मभूमिदर्शनम्। रामावतारः ९। श्रीमहानवमी ९ व्रतम्। ☎
नवरात्र व्रतस्य पारणा। यायिजययोगः४९।१४ उ.। रवियोगः समस्त। ⌂रवियोगः ३७।३७ या.। ❖ओली प्रारम्भ (जैन)। सर्वार्थसिद्धियोगः ४४।१२ उ.।
भ. २०।१९ उ. (दि. १।५२)५१।२४ या. (रा. २।१८)। सिंहराशिः (प्रा. ५।५६)। कामदा ११ एकादशी व्रतं सर्वेषाम्। श्री विष्णुदोलोत्सवः। सायं दोलाधिरूढयोः
मदन द्वादशी १२। लक्ष्मीनारायणयोः पूजनम्। स्थायिजययोगः ५१।२४ उ.। सर्वार्थसिद्धियोगः ०।३१ या.। रवियोगः ०।३१ या.।
कन्याराशिः (दि. २।१६)। प्रदोष १३ व्रतम्। श्री अनङ्ग १३ व्रतम्। श्रीमहावीरजयन्ती (जैन)। ⊙सं. अश्विन्यां मेषे च सूर्यः १२।५४ (दि. १०।५३)। ♏
भ. ५०।५ उ. (रा. १।४४)। श्रीशिवनृसिंह दमनकारोपणं पूजनञ्च। सौरवैशाख मासारम्भः। बंग सन् १४२९प्रारम्भः। मृत्युबाणारम्भः १४।१४ ○
भ. १८।४० या. (दि. १।९)। तुलाराशिः (रा. ८।६)। स्नान-दान-व्रतादौ १५ पूर्णिमा। श्री हनुमज्जयन्ती (दक्षिणे प्रसिद्धा)। सर्वदेवदमनकोत्सवः।□

**।। विवाहमुहूर्त्तपञ्चेष्टलग्नविमर्शः।।**

ति. १४ शुक्रे उ.फा. भे सूर्यवेधावसानं न चन्द्रभुक्तमशुभम्। दि.८।३१ उ. मृत्युबाणात्पूर्वं (दि.११।२४) हस्ते रे. ८ दिवा ल. ३ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. १३।।
ति. १५ शनौ हस्ते विष्टिदोषो मृत्युबाणश्च।

## ॐ सूर्योदये दैनिकस्पष्टभौमादिग्रहाः ॐ

| ति. | वा. | भौमः | | | | बुधः | | | | गुरुः | | | | शुक्रः | | | | शनिः | | | | राहुः | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | श | ९ | २५ | ३६ | २ | ११ | २० | १६ | ५२ | १० | २८ | २३ | ३९ | १० | २ | ८ | ३५ | ९ | २३ | ५९ | २१ | १ | ० | २५ | १६ |
| २ | र | ९ | २६ | २० | ३६ | ११ | २२ | ८ | ३५ | १० | २८ | ३७ | ११ | १० | ३ | १३ | १६ | ९ | २४ | ४ | २४ | १ | ० | २२ | ६ |
| ३ | चं | ९ | २७ | ५ | ९ | ११ | २३ | ५६ | ४६ | १० | २८ | ५० | ४३ | १० | ४ | १७ | ५६ | ९ | २४ | ९ | २६ | १ | ० | १८ | ५५ |
| ४ | मं | ९ | २७ | ४९ | ४९ | ११ | २५ | ४३ | ३२ | १० | २९ | ४ | १६ | १० | ५ | २२ | ३६ | ९ | २४ | १४ | २८ | १ | ० | १५ | ४४ |
| ५ | बु | ९ | २८ | ३४ | ३२ | ११ | २७ | ३० | १८ | १० | २९ | १७ | ४८ | १० | ६ | २७ | १६ | ९ | २४ | १९ | १२ | १ | ० | १२ | ३३ |
| ६ | गु | ९ | २९ | १९ | १५ | ११ | २९ | १७ | ४ | १० | २९ | ३१ | २१ | १० | ७ | ३१ | ५६ | ९ | २४ | २३ | ५ | १ | ० | ९ | २२ |
| ७ | शु | १० | ० | ३ | ५८ | ० | १ | ३ | ४९ | १० | २९ | ४४ | ५६ | १० | ८ | ३६ | ३६ | ९ | २४ | २६ | ५८ | १ | ० | ६ | १२ |
| ८ | श | १० | ० | ४८ | ४२ | ० | २ | ४७ | ४० | १० | २९ | ५८ | ३२ | १० | ९ | ४१ | १६ | ९ | २४ | ३० | ५१ | १ | ० | ३ | १ |
| ९ | र | १० | १ | ३३ | २५ | ० | ४ | ३० | ४३ | ११ | ० | १२ | ८ | १० | १० | ४५ | ५७ | ९ | २४ | ३४ | ४५ | ० | २९ | ५९ | ५० |
| १० | चं | १० | २ | १८ | ८ | ० | ६ | १४ | ३३ | ११ | ० | २५ | ४३ | १० | ११ | ५० | ३७ | ९ | २४ | ३८ | ३८ | ० | २९ | ५६ | ३९ |
| ११ | मं | १० | ३ | २ | ५१ | ० | ७ | ५८ | २५ | ११ | ० | ३९ | १८ | १० | १२ | ५५ | १७ | ९ | २४ | ४२ | ३१ | ० | २९ | ५३ | २८ |
| १२ | बु | १० | ३ | ४७ | ३४ | ० | ९ | ४२ | १७ | ११ | ० | ५२ | ४० | १० | १३ | ५९ | ५८ | ९ | २४ | ४६ | २४ | ० | २९ | ५० | १७ |
| १३ | गु | १० | ४ | ३२ | १७ | ० | ११ | २० | ५८ | ११ | १ | ५ | ५४ | १० | १५ | ४ | ३९ | ९ | २४ | ५० | १८ | ० | २९ | ४७ | ७ |
| १४ | शु | १० | ५ | १७ | ० | ० | १२ | ५८ | ३८ | ११ | १ | १९ | ८ | १० | १६ | १२ | ४३ | ९ | २४ | ५४ | १५ | ० | २९ | ४३ | ५६ |
| १५ | श | १० | ६ | १ | ४३ | ० | १४ | ३६ | १८ | ११ | १ | ३२ | २१ | १० | १७ | २१ | ३३ | ९ | २४ | ५८ | १२ | ० | २९ | ४० | ४५ |

*भौमादीनाञ्चारः- भौमः- ति. ६ गुरौ कुम्भे ५४।४१ (रा. ३।४०)। ति. १५ शनौ शतभिषजि ५१।२२ (रा. २।१४)।। बुधः- ति. ६ गुरौ अश्विन्यां मेषे च २४।८ (दि. ३।२७)। ति. १४ शुक्रे भरण्यां १३।८ (दि. १०।५७)।। गुरुः- ति.८ शनौ पूर्वाभाद्रपदा ४ चरणे मीने च ६।२८ (दि.८।२१)।। शुक्रः- ति. ५ बुधे शतभिषजि ११।४९ (दि. १०।३३)।। शनिः- धनिष्ठा १ चरणे।। राहुः- ति.८ शनौ कृत्तिका १ चरणे मेषे च केतुश्च विशाखा ३ चरणे तुलायाञ्च ५६।५२ (रा. ४।३१)।।*

**चैत्रे च शुक्लपञ्चम्यां रोहिणी यदि दृश्यते। साभ्रं नभस्तदा देवी गर्भस्य परिपूर्णतः।**

**१ पं० चैत्रशुक्ल ८ शनौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।**
द्युगणः २६४३
अयनांशाः २४।९।६

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ११ | २ | १० | ० | १० | १० | ९ | १ | ७ |
| २४ | २३ | ० | २ | २९ | ९ | २४ | ० | ० |
| ५३ | १० | ४८ | ४७ | ५८ | ४१ | ३० | ३ | ३ |
| १५ | ५३ | ४२ | ४० | ३२ | १६ | ५१ | १ | १ |
| ५८ | ७२४ | ४४ | ८२० | १३ | ६४ | ३ | ३ | ३ |
| ५४ | ५४ | ४३ | ३ | ३६ | ४१ | ५४ | ११ | ११ |

१ बु.
म.११गु. शु.
२ रा.
सू. १२
१०श.
चं. ३
९
४
६
८ के.
५
७

पक्षेऽस्मिन् विविधमुहूर्त्ताः- ति. १ शनौ रेवत्यां सूर्ययुतिः। अश्विन्यां सूर्यभोग्यं वेधृश्चि। ति. २ रवौ दि. १२।११ उ. भरण्यां शय्यासनाद्युपभोग वस्तुविक्रय शस्त्रघटन धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ३ सोमे दि.१।३ या. भरण्यां वस्तुविक्रय धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ४ भौमे कृत्तिका भे रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। रोहिण्यां शिरामोक्षण मुहूर्त्तः। रात्रिशेषे सूतीस्नान मुहूर्त्तः। ति. ५ बुधे रोहिण्यां पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन सुभगाविनानववस्त्रधारण कणमर्दन विप्राणामुपनयने (ल.२ रा.दा.) विपणि मुहूर्त्तः। ति. ६ गुरौ मृगे जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन शय्यासनाद्युपभोग लतापादपारोपण पश्चिम दिग्यात्रा (सप्तम्यां) भैषज्य नौकाघटन विपणि व्यापार शिरामोक्षण धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ७ शुक्रे आर्द्रा भे धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ८ शनौ विष्टेःपरं (दि. ९।२७) पुनर्वसौ सुभगाविनाकृष्णवस्त्रधारण मुहूर्त्तः। ति.९ रवौ पुष्ये रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। ति.१० सोमे श्लेषा भे वस्तुविक्रय धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ११ भौमे प्रा. ५।५६उ. मघा भे विष्टेःपूर्वं शस्त्रघटन मुहूर्त्तः। ति. १२ बुधे दि. ७।१८ उ. पू.फा. भे कणमर्दन विप्राणामुपनयने (ल. २) वस्तुविक्रय मुहूर्त्तः। ति. १३ गुरौ दि. ८।११ उ. उ.फा. भे सूर्यवेधः। ति. १४ शुक्रे उ.फा.भे सूर्यवेधावसानं न चन्द्रभुक्तमशुभं रिक्तादोषश्च। ति. १५ शनौ विष्टेःपरं (दि. १।९) चित्रा भे कृष्णवस्त्रधारण गृहारम्भ (ल. ९) गजकृत्य मुहूर्त्तः।

| तिथि ल.अ. | १ श घं. | मि. | २ र घं. | मि. | ३ चं घं. | मि. | ४ मं घं. | मि. | ५ बु घं. | मि. | ६ गु घं. | मि. | ७ शु घं. | मि. | ८ श घं. | मि. | ९ र घं. | मि. | १० चं घं. | मि. | ११ मं घं. | मि. | १२ बु घं. | मि. | १३ गु घं. | मि. | तिथि ल.अ. | १४ शु घं. | मि. | १५ श घं. | मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मीन | ६ | २५ | ६ | २१ | ६ | १८ | ६ | १४ | ६ | १० | ६ | ७ | ६ | ३ | ५ | ५९ | ५ | ५६ | ५ | ५२ | ५ | ४९ | ५ | ४६ | ५ | ४२ | मेष | ७ | १५ | ७ | ११ |
| मेष | ८ | २ | ७ | ५८ | ७ | ५५ | ७ | ५१ | ७ | ४७ | ७ | ४४ | ७ | ४० | ७ | ३६ | ७ | ३३ | ७ | २९ | ७ | २६ | ७ | २३ | ७ | १९ | वृष | ९ | ११ | ९ | ७ |
| वृष | ९ | ५८ | ९ | ५४ | ९ | ५१ | ९ | ४७ | ९ | ४३ | ९ | ४० | ९ | ३६ | ९ | ३२ | ९ | २९ | ९ | २५ | ९ | २२ | ९ | १९ | ९ | १५ | मिथुन | ११ | २५ | ११ | २१ |
| मिथुन | १२ | १२ | १२ | ८ | १२ | ५ | १२ | १ | ११ | ५७ | ११ | ५४ | ११ | ५० | ११ | ४६ | ११ | ४३ | ११ | ३९ | ११ | ३६ | ११ | ३३ | ११ | २९ | कर्क | १ | ४३ | १ | ३९ |
| कर्क | २ | ३० | २ | २६ | २ | २३ | २ | १९ | २ | १५ | २ | १२ | २ | ८ | २ | ४ | २ | १ | १ | ५७ | १ | ५४ | १ | ५१ | १ | ४७ | सिंह | ३ | ५७ | ३ | ५३ |
| सिंह | ४ | ४४ | ४ | ४० | ४ | ३७ | ४ | ३३ | ४ | २९ | ४ | २६ | ४ | २२ | ४ | १८ | ४ | १५ | ४ | ११ | ४ | ८ | ४ | ५ | ४ | १ | कन्या | ६ | १० | ६ | ६ |
| ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | |
| कन्या | ६ | ५७ | ६ | ५३ | ६ | ५० | ६ | ४६ | ६ | ४२ | ६ | ३९ | ६ | ३५ | ६ | ३१ | ६ | २८ | ६ | २४ | ६ | २१ | ६ | १८ | ६ | १४ | तुला | ८ | २६ | ८ | २२ |
| तुला | ९ | १३ | ९ | ९ | ९ | ६ | ९ | २ | ८ | ५८ | ८ | ५५ | ८ | ५१ | ८ | ४७ | ८ | ४४ | ८ | ४० | ८ | ३७ | ८ | ३४ | ८ | ३० | वृश्चिक | १० | ४३ | १० | ३९ |
| वृश्चिक | ११ | ३० | ११ | २६ | ११ | २३ | ११ | १९ | ११ | १५ | ११ | १२ | ११ | ८ | ११ | ४ | ११ | १ | १० | ५७ | १० | ५४ | १० | ५१ | १० | ४७ | धनु | १२ | ४९ | १२ | ४५ |
| धनु | १ | ३६ | १ | ३२ | १ | २९ | १ | २५ | १ | २१ | १ | १८ | १ | १४ | १ | १० | १ | ७ | १ | ३ | १ | ० | १२ | ५७ | १२ | ५२ | मकर | २ | ३६ | २ | ३२ |
| मकर | ३ | २३ | ३ | १९ | ३ | १६ | ३ | १२ | ३ | ८ | ३ | ५ | ३ | १ | २ | ५७ | २ | ५४ | २ | ५० | २ | ४७ | २ | ४४ | २ | ४० | कुम्भ | ४ | ७ | ४ | ३ |
| कुम्भ | ४ | ५४ | ४ | ५० | ४ | ४७ | ४ | ४३ | ४ | ३९ | ४ | ३६ | ४ | ३२ | ४ | २८ | ४ | २५ | ४ | २१ | ४ | १८ | ४ | १५ | ४ | ११ | मीन | ५ | ३५ | ५ | ३१ |

**२ पं० चैत्रशुक्ल १५ शनौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।**
द्युगणः २६५०
अयनांशाः २४।९।७

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ५ | १० | ० | ११ | १० | ९ | ० | ६ |
| १ | २२ | ६ | १४ | १ | १७ | २४ | २९ | २९ |
| ४४ | १४ | १ | ३६ | ३२ | २१ | ५८ | ४० | ४० |
| ४५ | १३ | ४३ | १८ | २१ | ३३ | १२ | ४५ | ४५ |
| ५८ | ८३१ | ४४ | ९७ | १३ | ६८ | ३ | ३ | ३ |
| ३७ | ५३ | ४३ | ४० | १३ | ५० | ५७ | ११ | ११ |

२
सू.
१२ गु.
मं.
३
बु. १ रा.
११
शु.
४
१० श.
५
७ के.
९
६ चं.
८

☯वासन्तनवरात्रस्यचारम्भः। कलशस्थापनं ध्वजारोपणं वर्षपतिपूजा। साभ्यङ्गस्नानं पञ्चाङ्गफल श्रवणञ्च। प्रपादानारम्भः अशक्तौ धर्मघटादिदानम्। आरोग्य विद्यातिलकव्रतानि। अद्यारम्भ वर्षान्तं यावद् 'राक्षस' संवत्सरस्य संकल्पादौ विनियोगः। अभिजिन्मुहूर्त्तः १४।२१ उ. (दि. ११।३५) १६।२४ या. (दि. १२।२५)। गुडीपडवा (दक्षिण भारत)। श्रीझूलेलाल जयन्ती (सिन्धी समाज)। सिन्धीनववर्ष दिवसः। कल्पादिः १। पञ्चकनिवृत्तिः १२।५७ (दि. ११।२)। यायिजययोगः १२।५७ या.। ♍गौरीदोलोत्सवः ३। अद्य दोलाधिरुढयोः शिव पार्वत्योः पूजनमुक्तम्। मन्वादिः ३। सरहुल (बिहार)। रवियोगः १९।५६ उ.। ● २१।४७ या.। सर्वार्थसिद्धियोगः २५।९ या.। रवियोगः २५।९ या.। श्री अन्नपूर्णा परिक्रमा ४१।४१ या. (रा. १०।२६)। यायिजययोगः ४१।४१ उ. ५०।२५ या.। रवियोगः ५०।२५ उ.। ☎ बलिदानम्। नवम्यां होमादिकञ्च। सर्वार्थसिद्धियोगः ५५।५८ या.। रवियोगः समस्त। ♏ मु.४५ वृहत्ती। फलं समर्घता। पूर्वाःपराः१० घट्यः पुण्याः। सौम्यगोलः। खरमास समाप्तिः। प्रातः ६।५३ वादनतः दिवा २।५३ वादनं यावत् मेषसंक्रान्तिजन्य पुण्यकालः। हरिद्वारे काश्यामसी संगमे वा स्नानम्। सक्तुव्यजन जलकुम्भादिदानम्। वैशाखी। डॉ.भीमराव अम्बेडकर जयन्ती। यायिजययोगः ६।१० उ.५१।४९ या.। रवियोगः ६।१० उ. १२।५४या.। ○ (दि.११।२४)। रवियोगः७।३ उ.। □वैशाख-स्नान- दान-यम-नियमाद्यारम्भः। ओली समाप्ति (जैन)। मन्वादिः १५। मृत्युबाणनिवृत्तिः १५।३७ (दि.११।५६)। यायिजययोगः ६।४५ या.। यमघंटयोगः ६।४५ या.। रवियोगः ६।४५या.।

मूल विचार- रेवती/अश्विनी- ति. २ रवौ १५।५२ (दि. १२।११)या.।
श्लेषा/मघा- ति. ९ रवौ ५५।५८ (रा. ४।८) उ.। ति. १२ बुधे ३।५८ (दि. ७।१८) या.।
पञ्चक विचार- ति. १ शनौ १२।५७ (दि. ११।२) या.।

चैत्रमासकृत्यम् - चैत्रकृत्यं मत्स्यपुराणे- वर्जयित्वा मधौ यस्तु दधिक्षीरघृतैर्युतम्। दद्याद्वस्त्राणि सूक्ष्माणि सर्ववर्णयुतानि च। संपूज्य विप्रमिथुनं गौरी मे प्रीयतामिती। एतद् गौरीव्रतं नाम भवानी लोकदायकमिति। भविष्योत्तरे- चैत्रे त्रिरात्रं नक्ताशी नद्यां स्नात्वा ददाति यः। अजाः पञ्च पयस्विन्यो दरिद्राय कुटुम्बिने। न जायते पुनरसौ जीवलोके कदाचन इति। वामनपुराणे- चैत्रे मासि विचित्राणि शयनान्यशनानि च। विष्णोः प्रीत्यर्थमेतानि देयानि ब्राह्मणेष्वथ। इति।। चैत्रशुक्लप्रतिपदि वायुपरीक्षणम्। प्रतिपदिभास्वदुदया- दर्वाग्ग्रामसीम्नि समभूतले पताकामभ्यर्च्य विन्यस्य वायुमभ्यर्चयेत्।। ऐह्यात्मन्सर्वभूतानां कुरङ्गपतिवाहन। समादिश फलं चास्मिन्वत्सरे हि समागते।। १।। श्रीरामनवमी व्रतम् - चैत्रशुक्ल रामनवम्यां रामचन्द्रस्य सुवर्णादिघटितां प्रतिमामग्न्युत्तारण प्राणप्रतिष्ठापूर्वकं पुरुषसूक्तेन षोडशोपचारैः पूजयेत्। अभितोऽक्षतपुञ्जे दक्षे कौशल्या दशरथौ। पृष्ठे लक्ष्मणं पार्श्वे भरतशत्रुघ्नौ, पुरतो हनुमन्तमावाह्य नाममन्त्रैः पूजयेत्।। ततो रामायार्घ्यं निवेदयेत्।

# श्रीसंवत् २०७९ शकः १९४४ सौम्यायनगोलयोः वसन्तर्त्तुः।।

## वैशाखकृष्णपक्षः।।

राष्ट्रिय तिथि २७ चैत्रतः तिथि १० वैशाखं यावत् १९४४ शकः।।
अंग्रेजी दिनांक १७ अप्रैलतः ३० दिनांकं यावत् सन् २०२२ ई.।।

| दि.मा. घ. | प. | ति. | वा. | घ. | प. | | घं. | मि. | नक्षत्र | घ. | प. | | घं. | मि. | योग | घ. | प. | | घं. | मि. | करण | घ. | प. | करण | घ. | प. | योगाः | अं. | फ. | सौ. | ने. | रा. | चन्द्र राशि | प्रवेशः | सूर्योदयः घं. | मि. | सूर्यास्तः घं. | मि. | औदयिक स्पष्ट सूर्यः | | | | क्रान्तिः उ. | + | रे. अं. - | मि. | चन्द्रोदयः स्टै. | टा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३१ | ३८ | १ | र | ४३ | २५ | रा | ११ | २ | चित्रा | ५ | २० | दि | ७ | ४८ | वज्र | ४८ | ३ | रा | १२ | ५३ | वा | १५ | २० | कौ | ४३ | २५ | पद्म | १७ | १ | ३ | ४ | २७ | | | ५ | ४० | ६ | २० | ० | २ | ४३ | २२ | १० | १५ | - | २ | ७ | ४ |
| ३१ | ४१ | २ | चं | ३८ | ४५ | रा | ९ | १० | स्वाती | ३ | ८ | प्रा | ६ | ५५ | सिद्धि | ४१ | ३१ | रा | १० | १६ | तै | ११ | ५ | गर | ३८ | ४५ | छत्र | १८ | २ | ४ | ५ | २८ | वृश्चिक | ४५।५० | ५ | ४० | ६ | २० | ० | ३ | ४१ | ५८ | १० | ३६ | - | ३ | ८ | १० |
| ३१ | ४५ | ३ | मं | ३३ | २८ | रा | ७ | २ | विशाखा | ०/५६ | ४/२५ | प्रा | ५/४ | ४१/१५ | व्यतिपात | ३४ | २६ | रा | ७ | २५ | व | ६ | ७ | भ | ३३ | २८ | श्रीवत्स | १९ | ३ | ५ | ६ | २९ | | | ५ | ३९ | ६ | २१ | ० | ४ | ४० | ३१ | १० | ५७ | - | ३ | ९ | १९ |
| ३१ | ४८ | ४ | बु | २७ | ४२ | दि | ४ | ४३ | ज्येष्ठा | ५२ | ३० | रा | २ | ३८ | वरीयान | २७ | ० | दि | ४ | २६ | बव | ० | ३५ | वा | २७/५४ | ४२/४२ | ध्वांक्ष | २० | ४ | ६ | ७ | ३० | धनु | ५२।३० | ५ | ३८ | ६ | २२ | ० | ५ | ३९ | २ | ११ | १८ | - | ३ | १० | २७ |
| ३१ | ५१ | ५ | गु | २१ | ४२ | दि | २ | १९ | मूल | ४८ | १९ | रा | १२ | ५८ | परिघ | १९ | २३ | दि | १ | २३ | तै | २१ | ४२ | गर | ४८ | ४० | धूम्र | २१ | ५ | ७ | ८ | १ | | | ५ | ३८ | ६ | २२ | ० | ६ | ३७ | ३१ | ११ | ३९ | - | ३ | ११ | ३३ |
| ३१ | ५५ | ६ | शु | १५ | ३७ | दि | ११ | ५२ | पू.षा. | ४४ | १४ | रा | ११ | १९ | शिव | ११ | ३८ | दि | १० | १६ | व | १५ | ३७ | भ | ४२ | ३९ | प्रवर्धमान | २२ | ६ | ८ | ९ | २ | मकर | ५८।१६ | ५ | ३७ | ६ | २३ | ० | ७ | ३५ | ५९ | ११ | ५९ | - | ३ | १२ | ३३ |
| ३१ | ५८ | ७ | श | ९ | ४१ | दि | ९ | २८ | उ.षा. | ४० | २३ | रा | ९ | ४५ | सिद्ध | ४/५३ | ३/४१ | प्रा | ६/४ | ११/१८ | बव | ९ | ४१ | वा | ३६ | ५३ | राक्षस | २३ | ७ | ९ | १० | ३ | | | ५ | ३६ | ६ | २४ | ० | ८ | ३४ | २३ | १२ | १९ | - | ४ | १ | २५ |
| ३२ | २ | ८ | र | ४/५४ | ५/५६ | प्रा | ७/५ | १४/१२ | श्रवण | ३६ | ५८ | रा | ८ | २३ | शुभ | ४९ | ४८ | रा | १ | ३१ | कौ | ४ | ५ | तै | ३१/५१ | ३३/१ | गद | २४ | ८ | १० | ११ | ४ | | | ५ | ३६ | ६ | २४ | ० | ९ | ३२ | ४६ | १२ | ३९ | - | ४ | २ | १० |
| ३२ | ५ | १० | चं | ५४ | ४२ | रा | ३ | २८ | धनिष्ठा | ३४ | १२ | रा | ७ | १६ | शुक्ल | ४३ | २७ | रा | १० | ५८ | व | २६ | ५२ | भ | ५४ | ४२ | शुभ | २५ | ९ | ११ | १२ | ५ | कुम्भ | ५।३५ | ५ | ३५ | ६ | २५ | ० | १० | ३१ | ६ | १२ | ५९ | - | ४ | २ | ५० |
| ३२ | ८ | ११ | मं | ५१ | १४ | रा | २ | ४ | शतभिष | ३२ | १९ | सा | ६ | ३० | ब्रह्म | ३७ | ४८ | रा | ८ | ४१ | बव | २२ | ५८ | वा | ५१ | १४ | मृत्यु | २६ | १० | १२ | १३ | ६ | | | ५ | ३४ | ६ | २६ | ० | ११ | २९ | २५ | १३ | १९ | - | ४ | ३ | २५ |
| ३२ | ११ | १२ | बु | ४८ | ४९ | रा | १ | ६ | पू.भा. | ३१ | १८ | सा | ६ | ५ | ऐन्द्र | ३२ | ५८ | सा | ६ | ४५ | कौ | २० | २ | तै | ४८ | ४९ | पद्म | २७ | ११ | १३ | १४ | ७ | मीन | १६।३३ | ५ | ३४ | ६ | २६ | ० | १२ | २७ | ४१ | १३ | ३७ | - | ४ | ३ | ५८ |
| ३२ | १५ | १३ | गु | ४७ | ३४ | रा | १२ | ३५ | उ.भा. | ३१ | २८ | सा | ६ | ८ | वैधृति | २९ | १ | दि | ५ | ९ | गर | १८ | १२ | व | ४७ | ३४ | छत्र | २८ | १२ | १४ | १५ | ८ | | | ५ | ३३ | ६ | २७ | ० | १३ | २५ | ५५ | १३ | ५६ | - | ४ | ४ | ३० |
| ३२ | १८ | १४ | शु | ४७ | ३३ | रा | १२ | ३३ | रेवती | ३२ | ५१ | सा | ६ | ४० | विष्कुम्भ | २६ | ३ | दि | ३ | ५७ | भ | १७ | ३४ | श | ४७ | ३३ | श्रीवत्स | २९ | १३ | १५ | १६ | ९ | मेष | ३२।५१ | ५ | ३२ | ६ | २८ | ० | १४ | २४ | ५ | १४ | १६ | - | ५ | ५ | २ |
| ३२ | २१ | ३० | श | ४८ | ५२ | रा | १ | ५ | अश्विनी | ३५ | ३१ | रा | ७ | ४४ | प्रीति | २४ | ६ | दि | ३ | १० | च | १८ | १३ | नाग | ४८ | ५२ | सौम्य | ३० | १४ | १६ | १७ | १० | | | ५ | ३२ | ६ | २८ | ० | १५ | २२ | १४ | १४ | ३४ | - | ५ | - | - |

यावन्मासं प्रपा (पौसरा) दानम्। अशक्तौ जलकुम्भादेर्दैनिकं दानम्। अश्वत्थमूले सेचनम्। तुलसी पत्रेण। श्रीविष्णुपूजनम्। ◆
वृश्चिकराशिः (रा. १२।०)। यमघंटयोगः३।८ उ.। ◆कच्छपावतारः १। यायिजययोगः५।२० उ.४३।२५ या.।
भ. ६।७ उ. (दि. ८।६)३३।२८ या. (रा. ७।२)। संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रतम्। चन्द्रोदयः (रा. ९।१९)। श्री ⊠
धनूराशिः (रा. २।३८)। ⊙सायन वृषे सूर्यः १२।८ (दि. १०।२९)। यमघंटयोगः५२।३० उ.।
राष्ट्रियवैशाखमासः दि.३१। रवियोगः ४८।१९ उ.। ☯त्रिपुष्करयोगः९।४१ या.।
भ. १५।३७ उ. (दि. ११।५२)४२।३९ या. (रा. १०।४१)। मकरराशिः (रा. ४।५५)। रवियोगः ४४।१४ या.।
बाबूकुँवरसिंहजयन्ती (विहारे)। गुरुअर्जुनदेवजयन्ती। यायिजययोगः९।४१ या.। सर्वार्थसिद्धियोगः४०।२३ उ.।☯
श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रतम्। पर्युषितान्नपानादिकमत्रविहितम्। मृत्युबाणारम्भः२८।१(दि.४।४८)। यायिजययोगः ♍
भ. २६।५२ उ. (दि. ४।२०) ५४।४२ या. (रा. ३।२८)। कुम्भराशिः (दि. ७।४९)। पञ्चकारम्भः ५।३५ ❖
वरूथिनी ११ एकादशी व्रतं सर्वेषाम्। श्री वल्लभाचार्य जयन्ती ११। स्थायिजययोगः५१।१४ उ.। त्रिपुष्करयोगः
मीनराशिः (दि. १२।११)। ⊙भरण्यां सूर्यः ५३।५४ (रा. ३।८)। ♍३६।५८ उ. ५९।१ या.।
भ. ४७।३४ उ. (रा. १२।३५)। प्रदोष १३ व्रतम्। यायिजययोगः ४७।३४ या.। सर्वार्थसिद्धियोगः ३१।२८ उ.।
भ. १७।३४ या. (दि. १२।३४)। मेषराशिः (सा. ६।४०)। मासशिवरात्रि १४ व्रतम्।पञ्चकनिवृत्तिः ३२।५१ ☎
स्नान-दान-श्राद्धादौ ३० अमावस्या। पापवारान्विते दर्शे दुर्भिक्षं च प्रजाभयम्। ⊂५१।१४ उ.।

### ।। विवाहमुहूर्त्तपञ्चेष्टलग्नविमर्शः।।

तिं. १ रवौ दि. ७।४८ उ. स्वात्यां भौमवेधः।
तिं. २ सोमे स्वात्यां पूर्वदोषः।
तिं. ३ भौमे व्यतिपातात्परं (रा.७।२५) मैत्रे रे. ८ ल. ८ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. १३।। वा ल. ११ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. १२ (द्वादशस्थः शनिर्न शुभः)
तिं. ४ बुधे रा.२।३८ उ. मूले रे.७ ल. ११ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. १७ (द्वादशस्थःशनिर्नशुभः)
तिं. ५ गुरौ मूले रे.७ दिवा ल. ३ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३।। (चं.दा.)वा ल. गोधूलिः वा ल. ८ इष्टाः ७ ग्र.व.वि. १८।।
तिं. ६ शुक्रे रा.११।१९ उ. उ.षा. भे रे. ८ ल. ११ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. १७ (द्वादशस्थः शनिर्न शुभः)वा ल.१२ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. १३
तिं. ७ शनौ उ.षा. भे रे. ८ दिवा ल. ३ इष्टाः ६ ग्र.व. वि. १३।। (अष्टमस्थश्चन्द्रो न शुभः) वा ल. गोधूलिः वा ल. ८ इष्टाः ७ ग्र.व.वि. १८।।
तिं. १२ बुधे सा. ६।५ उ. वैधृतेः पूर्वं (सा. ६।४५) रे. ७ ल. गोधूलिः।
परं मासान्तादिदोषः।

### ॐ सूर्योदये दैनिकस्पष्टभौमादिग्रहाः ॐ

| ति. | वा. | भौमः | | | | बुधः | | | | गुरुः | | | | शुक्रः | | | | शनिः | | | | राहुः | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | र | १० | ६ | ४६ | २६ | ० | १६ | १३ | ५८ | ११ | १ | ४५ | ३४ | १० | १८ | ३० | २२ | ९ | २५ | २ | ९ | ० | २९ | ३७ | ३४ |
| २ | चं | १० | ७ | ३१ | १० | ० | १७ | ५१ | ३८ | ११ | १ | ५८ | ४८ | १० | १९ | ३९ | १२ | ९ | २५ | ६ | ८ | ० | २९ | ३४ | २३ |
| ३ | मं | १० | ८ | १५ | ५३ | ० | १९ | २१ | २० | ११ | २ | १२ | १ | १० | २० | ४८ | १ | ९ | २५ | १० | ११ | ० | २९ | ३१ | १३ |
| ४ | बु | १० | ९ | ० | ३६ | ० | २० | ५० | ३१ | ११ | २ | २५ | १४ | १० | २१ | ५६ | ५१ | ९ | २५ | १४ | १४ | ० | २९ | २८ | २ |
| ५ | गु | १० | ९ | ४५ | १९ | ० | २२ | १९ | २८ | ११ | २ | ३८ | २७ | १० | २३ | ५ | ४० | ९ | २५ | १८ | १७ | ० | २९ | २४ | ५१ |
| ६ | शु | १० | १० | ३० | २ | ० | २३ | ४८ | ३७ | ११ | २ | ५१ | ४१ | १० | २४ | १४ | ३० | ९ | २५ | २२ | २७ | ० | २९ | २१ | ४० |
| ७ | श | १० | ११ | १४ | ४५ | ० | २५ | १८ | ४९ | ११ | ३ | ४ | ५४ | १० | २५ | २३ | १२ | ९ | २५ | २४ | ३१ | ० | २९ | १८ | २९ |
| ८ | र | १० | ११ | ५९ | २८ | ० | २६ | ३९ | ४० | ११ | ३ | १८ | ७ | १० | २६ | ३१ | ४३ | ९ | २५ | २७ | २६ | ० | २९ | १५ | १९ |
| १० | चं | १० | १२ | ४४ | ११ | ० | २७ | ५९ | ५२ | ११ | ३ | ३१ | २० | १० | २७ | ४० | १३ | ९ | २५ | ३० | २० | ० | २९ | १२ | ८ |
| ११ | मं | १० | १३ | २८ | ५५ | ० | २९ | २० | ४ | ११ | ३ | ४४ | ३४ | १० | २८ | ४८ | ४४ | ९ | २५ | ३३ | १४ | ० | २९ | ८ | ५७ |
| १२ | बु | १० | १४ | १३ | ३८ | १ | ० | ४० | १६ | ११ | ३ | ५७ | ४७ | १० | २९ | ५७ | १४ | ९ | २५ | ३६ | ८ | ० | २९ | ५ | ४६ |
| १३ | गु | १० | १५ | ५८ | २१ | १ | २ | ० | २८ | ११ | ४ | ११ | ० | ११ | १ | ५ | ४५ | ९ | २५ | ३९ | २ | ० | २९ | २ | ३५ |
| १४ | शु | १० | १५ | ४३ | ४ | १ | ३ | ४ | ५३ | ११ | ४ | २४ | १३ | ११ | २ | १४ | १५ | ९ | २५ | ४१ | ५६ | ० | २८ | ५९ | २५ |
| ३० | श | १० | १६ | २७ | ४७ | १ | ४ | ८ | ४५ | ११ | ४ | ३६ | २० | ११ | ३ | २२ | ४६ | ९ | २५ | ४४ | ५२ | ० | २८ | ५६ | १४ |

भौमादीनाञ्चारः- भौमः- शतभिषजि।। बुधः-ति. ८ रवौ कृत्तिका भे ०।१५ (प्रा. ५।४२)। ति. ११ भौमे वृषे २१।५३ (सा. ५।३१)।। गुरुः-ति. ८ रवौ उत्तराभाद्रपदा १ चरणे ८।३३(दि.९।१)।। शुक्रः- ति. २ सोमे पूर्वाभाद्रपदा भे १८।८ (दि. १२।५५)। ति. १२ बुधे मीने २।२५ (प्रा. ६।३२)। ति. १४ शुक्रे उत्तराभाद्रपदा भे ५७।३५ (रा. ४।३४)।। शनिः- धनिष्ठा १ चरणे।। राहुः- कृत्तिका १ चरणे केतुश्च विशाखा ३ चरणे।।

वैशाखकृष्ण प्रतिद्युद्रच्छेत्रभास्करः। मेघैराच्छाद्यतेव्योभिन्न संवत्सरहितायसः।

### ३ पं० वैशाखकृष्ण ८ रवौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।

द्युगणः २६५८
अयनांशाः २४।९।८

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ९ | १० | ० | ११ | १० | ९ | ० | ६ |
| ९ | १४ | ११ | २६ | ३ | २६ | २५ | २९ | २९ |
| ३२ | ३७ | ५९ | ३९ | १८ | ३१ | २७ | १५ | १५ |
| ४६ | २० | २८ | ४० | ७ | ४३ | २६ | १९ | १९ |
| ५८ | ८४८ | ६४ | ८० | १३ | ६८ | २ | ३ | ३ |
| २० | १८ | ४३ | १२ | १३ | ३० | ५४ | ११ | ११ |

२, १२ गु. मं., सू., ३, बु. १ रा., ११ शु., ४, चं. १० श., ५, ७ के., ९, ६, ८

पक्षेऽस्मिन् विविधमुहूर्त्ताः- ति. १ रवौ चित्रा भे शय्यासनाद्युपभोग नववस्त्रधारण लतापादपारोपण शिल्पविद्या भैषज्य नौकाघटन विपणि वस्तुक्रय गजकृत्य शिरामोक्षण मुहूर्त्तः। स्वात्यां भौमवेधः। ति. २ सोमे स्वात्यां पूर्वदोषः। विशाखा भे शनिवेधः। ति. ३ भौमे प्रा.५।४१ उ. मैत्रे व्यतिपाततो रिक्तादोपश्च। ति. ४ बुधे ज्येष्ठा भे रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। रिक्तोत्तरं गोक्रय-विक्रय कणमर्दन इष्टिका निर्माण मुहूर्त्तः। रा. २।३८ उ. मूले द्विरागमन (ल. १२) मुहूर्त्तः। ति. ५ गुरौ मूले पुंसवनसीमन्त शिशुताम्बूलभक्षण लतापादपारोपण कणमर्दन शिल्पविद्या भैषज्य विद्यारम्भ (ल. १) वधूप्रवेश (ल. २) द्विरागमन (ल. ३) धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ६ शुक्रे पू.षा. भे विष्टेःपूर्वं शिल्पविद्या नौकाघटन मुहूर्त्तः। रा. ११।१९ उ. उ.षा. भे गर्भाधान वधूप्रवेश (ल. ११) द्विरागमन (ल. १२) इष्टिकादहन मुहूर्त्तः। ति. ७ शनौ उ.षा. भे सुभगांविनाकृष्णवस्त्रधारण बीजोप्ति मुहूर्त्तः। ति.८ रवौ श्रवणे राहुवेधः। नवम्यां रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। ति. १० सोमे धनिष्ठा भे शनियुतिःविष्टिश्च। ति. ११ भौमे शतभिषजि भौमयुतिः। ति. १२ बुधे पू.भा. भे शिल्पविद्या वस्तुविक्रय धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। सा. ६।५ उ.वैधृतेः पूर्वं उ.भा. भे सुभगांविनानववस्त्रधारण द्विरागमन (ल. ७) मुहूर्त्तः। परं मासान्तादिदोषः।

| तिथि | १ र | | २ चं | | ३ मं | | ४ बु | | ५ गु | | ६ शु | | ७ श | | ८ र | | १० चं | | ११ मं | | १२ बु | | १३ गु | | १४ शु | | ३० श | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ल.अ. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. |
| मेष | ७ | ७ | ७ | ३ | ७ | ० | ६ | ५६ | ६ | ५२ | ६ | ४८ | ६ | ४४ | ६ | ४१ | ६ | ३७ | ६ | ३३ | ६ | २९ | ६ | २५ | ६ | २१ | ६ | १७ |
| वृष | ९ | ३ | ८ | ५९ | ८ | ५६ | ८ | ५२ | ८ | ४८ | ८ | ४४ | ८ | ४० | ८ | ३७ | ८ | ३३ | ८ | २९ | ८ | २५ | ८ | २१ | ८ | १७ | ८ | १३ |
| मिथुन | ११ | १७ | ११ | १३ | ११ | १० | ११ | ६ | ११ | २ | १० | ५८ | १० | ५४ | १० | ५१ | १० | ४७ | १० | ४३ | १० | ३९ | १० | ३५ | १० | ३१ | १० | २७ |
| कर्क | १ | ३५ | १ | ३१ | १ | २८ | १ | २४ | १ | २० | १ | १६ | १ | १२ | १ | ९ | १ | ५ | १ | १ | १२ | ५७ | १२ | ५३ | १२ | ४९ | १२ | ४५ |
| सिंह | ३ | ४९ | ३ | ४५ | ३ | ४२ | ३ | ३८ | ३ | ३४ | ३ | ३० | ३ | २६ | ३ | २३ | ३ | १९ | ३ | १५ | ३ | ११ | ३ | ७ | ३ | ३ | २ | ५९ |
| कन्या | ६ | २ | ५ | ५८ | ५ | ५५ | ५ | ५१ | ५ | ४७ | ५ | ४३ | ५ | ३९ | ५ | ३६ | ५ | ३२ | ५ | २८ | ५ | २४ | ५ | २० | ५ | १६ | ५ | १२ |
| ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | |
| तुला | ८ | १८ | ८ | १४ | ८ | ११ | ८ | ७ | ८ | ३ | ७ | ५९ | ७ | ५५ | ७ | ५२ | ७ | ४८ | ७ | ४४ | ७ | ४० | ७ | ३६ | ७ | ३२ | ७ | २८ |
| वृश्चिक | १० | ३५ | १० | ३१ | १० | २८ | १० | २४ | १० | २० | १० | १६ | १० | १२ | १० | ९ | १० | ५ | १० | १ | ९ | ५७ | ९ | ५३ | ९ | ४९ | ९ | ४५ |
| धनु | १२ | ४१ | १२ | ३७ | १२ | ३४ | १२ | ३० | १२ | २६ | १२ | २२ | १२ | १८ | १२ | १५ | १२ | ११ | १२ | ७ | १२ | ३ | ११ | ५९ | ११ | ५५ | ११ | ५१ |
| मकर | २ | २८ | २ | २४ | २ | २१ | २ | १७ | २ | १३ | २ | ९ | २ | ५ | २ | २ | १ | ५८ | १ | ५४ | १ | ५० | १ | ४६ | १ | ४२ | १ | ३८ |
| कुम्भ | ३ | ५९ | ३ | ५५ | ३ | ५२ | ३ | ४८ | ३ | ४४ | ३ | ४० | ३ | ३६ | ३ | ३३ | ३ | २९ | ३ | २५ | ३ | २१ | ३ | १७ | ३ | १३ | ३ | ९ |
| मीन | ५ | २७ | ५ | २३ | ५ | २० | ५ | १६ | ५ | १२ | ५ | ८ | ५ | ४ | ५ | १ | ४ | ५७ | ४ | ५३ | ४ | ४९ | ४ | ४५ | ४ | ४१ | ४ | ३७ |

### ४ पं०वैशाखकृष्ण ३० शनौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।

द्युगणः २६६४
अयनांशाः २४।९।९

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | १० | १ | ११ | ११ | ९ | ० | ६ |
| १५ | ५ | १६ | ४ | ४ | ३ | २५ | २८ | २८ |
| २२ | ४६ | २७ | ८ | ३६ | २२ | ४४ | ५६ | ५६ |
| १४ | ४० | ४७ | ४५ | २० | ४६ | ५२ | १४ | १४ |
| ५८ | ७६५ | ४४ | ६३ | ११ | ६८ | २ | ३ | ३ |
| ८ | ५७ | ४३ | ५२ | ४८ | ३० | ५६ | ११ | ११ |

बु. २, गु.१२शु., सू., ३, चं. १ रा., ११मं., ४, १० श., ५, ७ के., ९, ६, ८

⊠त्रिदण्डी स्वामि जयन्ती बक्सर (बिहार)। स्थायिजययोगः ५६।२९ उ.। ❖(दि. ७।४९)। मृत्युबाणनिवृत्तिः २९।४४ (सा.५।२९)। ☎ (सा. ६।४०)। स्थायिजययोगः ३२।५१ उ. ४७।३३ या.। सर्वार्थसिद्धियोगः समस्त। अमृतसिद्धियोगः ३२।५१ या.।

मूलविचार- ज्येष्ठा/मूल- ति. ३ भौमे५६।२९ (रा. ४।१५) उ.। ति.५ गुरौ ४८।१९ (रा. १२।५८) या.।
रेवती/अश्विनी- ति. १३ गुरौ ३१।२८ (सा. ६।८)उ.। ति. ३० शनौ ३५।३१ (रा. ७।४४) या.।
पञ्चक विचार- ति. १० सोमे ५।३५ (दि. ७।४९) उ.। ति. १४ शुक्रे ३२।५१ (सा. ६।४०) या.।

वैशाखमासे देवस्य जलाधिवास विधिः।। वैशाखे ज्येष्ठे वा यत्र मासे ऊष्मबाहुल्यम्। तत्र प्रातर्नित्यपूजां कृत्वा गंधोदकपूर्णपात्रे विष्णुं संस्थाप्य पंचोपचारैः संपूज्य तत्रैव जले सूर्यास्तपर्यंतमधिवास्य रात्रौ स्वस्थाने स्थापयित्वा पंचोपचारैः संपूजयेत्तेन तीर्थोदकेन गृहदारादि युतमात्मानं पावयेत्। एतच्च द्वादश्यां दिवा न कार्यम्। रात्रौ किंचित्कालं जलस्थं पूजयित्वा स्वस्थाने स्थापयेत्।। अथानुदिनं स्मरणीयः पाठः।। अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः। जयः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः।१। सप्तैतान्संस्मरेन्नित्यं मर्कण्डेयमथाष्टमम्। जीवेद्वर्षशतं साग्रमपमृत्युर्विनश्यति।२। वैशाखस्नान मन्त्रः।। वैशाखं सकलं मासं मेषसंक्रमणे रवेः। प्रातः सनियमं स्नास्ये प्रीयतां मधुसूदन। मधुहन्तुः प्रसादेन ब्राह्मणानामनुग्रहात्। निर्विघ्नमस्तु मे पुण्यं वैशाखस्नानमन्वहम्।१।

*वैशाखमासकृत्यम्- महाभारते-निश्चरेदेकभक्तेन वैशाखे यो जितेन्द्रियः प्रातः स्नायी नरःस्त्री वा जातीनां श्रेष्ठतां व्रजेत्। वामनपुराणे-गंधमाल्यानि च तथा वैशाखे सुरभीणि च। देयानि द्विजमुख्येभ्यो मधुसूदन तुष्टये।*

माधवे मेषगे भानो मुरारे मधुसूदन। प्रातः स्नानेन मे नाथ फलदो भव पापहन्। वैशाखे त्याज्यम्।। कांस्यं मांसं मसूरान्नं चणकं कोद्रवं तथा शाकं मधुपरान्नं च पुनर्भोजन मैथुनमिति।। मेषार्के दानविशेषः।। यो मेषस्थेऽर्के ददाति सक्तूनम्बुघटान्वितान्। उद्दिश्य पितृन् देवांश्च सर्वपापैः प्रमुच्यते।। दानमन्त्रः- सक्तवो धर्मदा नित्यं ब्राह्मणप्रीति कारकाः। त्वद्दानान्ममपापानां क्षयोऽस्तु सुखमस्तु च। वैशाखे संपूर्ण स्नानाशक्तावन्ते त्रयोदश्यादि दिनत्रयेऽपि स्नानस्य विशेष फलमुक्तम्। त्रयोदश्यां चतुर्दश्यां वैशाख्यां वा दिनत्रयम्। अपि सम्यग्विधानेन नारी वा पुरुषोऽपि वा।। प्रातः स्नायी स नियमः सर्वपापैः प्रमुच्यते इति।।

# श्रीसंवत् २०७९ शकः १९४४ सौम्यायनगोलयोः वसन्तर्त्तुः।।

| दि.मा. घ. | प. | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | योगाः | अं. | फ. | सौ. | ने. | रा. | चन्द्र राशि | प्रवेशः | सूर्योदयः घं. | मि. | सूर्यास्तः घं. | मि. | औदयिक स्पष्ट सूर्यः | | | | क्रान्तिः उ. | + | रे. अं. - | मि. | चन्द्रास्तः स्टै. | टा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३२ | २४ | १ | र | ५१ | २२ | रा | २ | ४ | भरणी | ३९ | २३ | रा | ९ | १६ | आयुष्मान | २३ | १२ | दि | २ | ४८ | किं | २० | ७ | वव | ५१ | २२ | कालदण्ड | १ | १५ | १७ | १८ | ११ | वृष | ५५।३८ | ५ | ३१ | ६ | २९ | ० | १६ | २० | २२ | १४ | ५३ | - | ५ | - | - |
| ३२ | २७ | २ | चं | ५५ | १ | रा | ३ | ३१ | कृत्तिका | ४४ | २२ | रा | ११ | १६ | सौभाग्य | २३ | ८ | दि | २ | ४६ | वा | २३ | १२ | कौ | ५५ | १ | सुस्थिर | २ | १६ | १८ | १९ | १२ | | | ५ | ३१ | ६ | २९ | ० | १७ | १८ | २८ | १५ | १० | - | ५ | ७ | ५६ |
| ३२ | ३० | ३ | मं | ५९ | ३१ | रा | ५ | १८ | रोहिणी | ५० | १२ | रा | १ | ३५ | शोभन | २३ | ५२ | दि | ३ | ३ | तै | २७ | १६ | गर | ५९ | ३१ | मातङ्ग | ३ | १७ | १९ | २० | १३ | | | ५ | ३० | ६ | ३० | ० | १८ | १६ | ३२ | १५ | २९ | - | ५ | ८ | ५२ |
| ३२ | ३३ | ४ | बु | ६० | ० | स | म | स्त | मृगशिरा | ५६ | ३७ | रा | ४ | ८ | अतिगण्ड | २५ | ८ | दि | ३ | ३२ | व | ३२ | २ | भ | ६० | ० | अमृत | ४ | १८ | २० | २१ | १४ | मिथुन | २३।२५ | ५ | २९ | ६ | ३१ | ० | १९ | १४ | ३३ | १५ | ४६ | - | ५ | ९ | ४६ |
| ३२ | ३६ | ४ | गु | ४ | ३२ | दि | ७ | १८ | आर्द्रा | ६० | ० | स | म | स्त | सुकर्मा | २६ | ४३ | दि | ४ | १० | भ | ४ | ३२ | वव | ३७ | ८ | काण | ५ | १९ | २१ | २२ | १५ | | | ५ | २९ | ६ | ३१ | ० | २० | १२ | ३३ | १६ | ३ | - | ५ | १० | ३८ |
| ३२ | ३९ | ५ | शु | ९ | ४३ | दि | ९ | २१ | आर्द्रा | ३ | १३ | प्रा | ६ | ४५ | धृति | २८ | १७ | दि | ४ | ४७ | वा | ९ | ४३ | कौ | ४२ | ९ | पद्म | ६ | २० | २२ | २३ | १६ | कर्क | ५३।० | ५ | २८ | ६ | ३२ | ० | २१ | १० | ३० | १६ | २० | - | ५ | ११ | २८ |
| ३२ | ४२ | ६ | श | १४ | ३५ | दि | ११ | १८ | पुनर्वसु | ९ | ३५ | दि | ९ | १८ | शूल | २९ | २९ | दि | ५ | १६ | तै | १४ | ३५ | गर | ४६ | ४१ | छत्र | ७ | २१ | २३ | २४ | १७ | | | ५ | २८ | ६ | ३२ | ० | २२ | ८ | २६ | १६ | ३७ | - | ६ | १२ | १२ |
| ३२ | ४५ | ७ | र | १८ | ४७ | दि | १२ | ५८ | पुष्य | १५ | १६ | दि | ११ | ३३ | गण्ड | ३० | ९ | सा | ५ | ३१ | व | १८ | ४७ | भ | ५० | २३ | श्रीवत्स | ८ | २२ | २४ | २५ | १८ | | | ५ | २७ | ६ | ३३ | ० | २३ | ६ | २० | १६ | ५४ | - | ६ | १२ | ५३ |
| ३२ | ४८ | ८ | चं | २१ | ५९ | दि | २ | १४ | श्लेषा | २० | २ | दि | १ | २७ | वृद्धि | ३० | ० | सा | ५ | २६ | वव | २१ | ५९ | वा | ५३ | २ | सौम्य | ९ | २३ | २५ | २६ | १९ | सिंह | २०।२ | ५ | २६ | ६ | ३४ | ० | २४ | ४ | १२ | १७ | १० | - | ६ | १ | ३० |
| ३२ | ५१ | ९ | मं | २४ | ५ | दि | ३ | ४ | मघा | २३ | ४३ | दि | २ | ५५ | ध्रुव | २९ | ३ | दि | ५ | ३ | कौ | २४ | ५ | तै | ५४ | २९ | कालदण्ड | १० | २४ | २६ | २७ | २० | | | ५ | २६ | ६ | ३४ | ० | २५ | २ | २ | १७ | २६ | - | ६ | २ | ५ |
| ३२ | ५४ | १० | बु | २४ | ५२ | दि | ३ | २२ | पू.फा. | २६ | १० | दि | ३ | ५३ | व्याघात | २७ | ४ | दि | ४ | १५ | गर | २४ | ५२ | व | ५४ | ३६ | सुस्थिर | ११ | २५ | २७ | २८ | २१ | कन्या | ४१।२७ | ५ | २५ | ६ | ३५ | ० | २५ | ५९ | ५१ | १७ | ४२ | - | ६ | २ | ३८ |
| ३२ | ५६ | ११ | गु | २४ | १९ | दि | ३ | ९ | उ.फा. | २७ | १६ | दि | ४ | १९ | हर्षण | २४ | ४ | दि | ३ | ३ | भ | २४ | १९ | वव | ५३ | २७ | मातङ्ग | १२ | २६ | २८ | २९ | २२ | | | ५ | २५ | ६ | ३५ | ० | २६ | ५७ | ३६ | १७ | ५२ | - | ६ | ३ | १२ |
| ३२ | ५९ | १२ | शु | २२ | ३४ | दि | २ | २६ | हस्त | २७ | १३ | दि | ४ | १७ | वज्र | २० | ४ | दि | १ | २६ | वा | २२ | ३४ | कौ | ५१ | ७ | अमृत | १३ | २७ | २९ | ३० | २३ | तुला | ५६।३८ | ५ | २४ | ६ | ३६ | ० | २७ | ५५ | २० | १८ | १३ | - | ६ | ३ | ४७ |
| ३३ | २ | १३ | श | १९ | ३९ | दि | १ | १६ | चित्रा | २६ | २ | दि | ३ | ४९ | सिद्धि | १५ | १५ | दि | ११ | ३० | तै | १९ | ३९ | गर | ४७ | ४३ | काण | १४ | २८ | ३० | ३१ | २४ | | | ५ | २४ | ६ | ३६ | ० | २८ | ५३ | ३ | १८ | २९ | - | ६ | ४ | २४ |
| ३३ | ४ | १४ | र | १५ | ४६ | दि | ११ | ४१ | स्वाती | २४ | १ | दि | २ | ५९ | व्यतिपात | ९ | ३२ | दि | ९ | १२ | व | १५ | ४६ | भ | ४३ | २५ | लुम्बक | १५ | २९ | ३१ | १ | २५ | | | ५ | २३ | ६ | ३७ | ० | २९ | ५० | ४४ | १८ | ४२ | - | ६ | ५ | ७ |
| ३३ | ७ | १५ | चं | ११ | ३ | दि | ९ | ४८ | विशाखा | २१ | ७ | दि | १ | ५० | वरीयान | ३/५३ | ११/५ | प्रा | ६/३ | ३९/५३ | वव | ११ | ३ | वा | ३८ | २२ | मित्र | १६ | ३० | १ | २ | २६ | वृश्चिक | ६।५१ | ५ | २३ | ६ | ३७ | १ | ० | ४८ | २३ | १८ | ५७ | - | ६ | - | - |

## वैशाखशुक्लपक्षः।।

राष्ट्रिय तिथि ११ वैशाखतः २६ तिथिं यावत् १९४४ शकः।। अंग्रेजी दिनांक १ मईतः १६ दिनांक यावत् सन् २०२२ ई.।।

शुक्रः पूर्वे- पूर्वोक्त दिग्भ्यांशान वायव्य विदिग्भ्यश्च द्विरागमः शुभः।।

वृषराशिः (रा. ३।४६)। देवदामोदरतिथि (असम)। मई ५। यायिजययोग: ३९।२३ या.। त्रिपुष्करयोग: ५१।२२ उ.। चन्द्रदर्शनम्। मु. ३० समा.। फलं समता। समशृंगं समताकरम्। दृश्यागस्त्यास्त: ५७।३८ (रा. ४।३४)। ❖ मु. सव्वाल १० हिजरी सन् १४४३। श्रीपरशुरामजयन्ती ३। अक्षयतृतीया ३। जलकुम्भ-छत्र-व्यजनादि दानम्। ◆ भ. ३२।२ उ. (सा. ६।१८)। मिथुनराशिः (दि. २।५१)। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रतम्। मृत्युबाणनिवृत्ति: ४७।१ ☾ भ. ४।३२ या. (दि. ७।१८)। ❖ यायिजययोग: ५५।१ उ.। सर्वार्थसिद्धियोग: ४४।२२ उ.। कर्कराशि: (रा. २।४०)। आद्यजगद्गुरुशंकराचार्य जयन्ती ५। सर्वार्थसिद्धियोग: ३।१३ उ.। रवियोग: ३।१३ उ.। श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती ६। चन्दन षष्ठी (बंगाल)। श्रीगंगासप्तमी ७ (मध्याह्न व्यापिनी) "दिनद्वये तद्व्याप्तौ ☎ भ. १८।७७ उ. (दि. १२।५८) ५०।२३ या. (रा. १।३६)। भानुसप्तमी ७ सूर्यग्रहण सन्निभा। यायिजययोग: १५।१६ उ. ○ सिंहराशि: (दि. १२।७)। रवियोग: २०।२ उ. ○ १८।४७ या.। सर्वार्थसिद्धियोग: १५।१६ या.। श्रीसीतानवमी ९। जानकी जन्मोत्सव:। रवियोग:समस्त। ● २६।१० या.। पुन: रवियोग: ४१।४३ उ.। भ. ५४।३६ उ. (रा. ३।१५)। कन्याराशि: (रा. १०।०)। ⊙ कृत्तिका भे सूर्य: ४१।४३ (रा. १०।६)। रवियोग: ● भ. २४।१९ या. (दि. ३।९)। श्रीमोहिनी ११ एकादशी व्रतं सर्वेषाम्। परशुरामद्वादशी १२ (पूर्वविद्धा)। यायिजययोग: ◑ तुलाराशि: (रा. ४।३)। प्रदोष १२ व्रतम्। रुक्मिणी द्वादशी (बंगाल)। मृत्युबाणारम्भ: ४।५१ (दि. ७।२०)। श्रीनृसिंह १४ चतुर्दशी व्रतं (सायाह्ने)। ओंकारेश्वरयात्रा -दर्शनञ्च। नृसिंहावतार:। मृत्युबाणनिवृत्ति: ७।१४ (दि. ८।१८)। ◔ भ. १५।४६ उ. (दि. ११।४१) ४३।२५ या. (रा. १०।४५)। व्रताय १५ पूर्णिमा। ⊙ सं.वृषे सूर्य: ९।३९ (दि. ९।१५)। ⌂ वृश्चिकराशि: (दि. ८।७)। स्नान- दानादौ १५ पूर्णिमा। बुद्धपूर्णिमा १५। बुद्धजयन्ती। पुष्करादेवीजन्म। ♍

### ।। विवाहमुहूर्त्तपञ्चेष्टलग्नविमर्श:।।

ति. २ सोमे रा. ११।१६ उ. रोहिण्यां रे.७ ल. ९ इष्टा: ५ ग्र.व.वि. १० (षष्ठस्थश्चन्द्रो न शुभ:) वा ल. १२ इष्टा: ६ ग्र.व.वि. १५

ति. ३ भौमे मृत्युबाणात्पूर्वं (रा.११।२९) रोहिण्यां रे.७ दिवा ल. ३ इष्टा: ५ ग्र.व.वि. ११।। वा ल. गोधूलि: वा ल. ८ इष्टा: ५ ग्र.व.वि. ११।। (चं.दा.) वा ल. ९ इष्टा: ५ ग्र.व.वि. १० (षष्ठस्थश्चन्द्रो न शुभ:)। रा.९।३५ उ. मृगे मृत्युबाणव्याप्ति:।

ति. ४ बुधे मृगे विष्टिदोषो मृत्युबाणश्च।

ति. ८ सोमे दि.१।२७ उ. मघा भे रे.८ ल. गोधूलि: वा ल. ८ इष्टा: ५ ग्र.व.वि. ११ (बु.दा.) वा ल. ९ इष्टा: ५ ग्र.व.वि. १० वा ल. १२ इष्टा: ५ ग्र.व.वि.१० (षष्ठस्थश्चन्द्रो न शुभ:)

ति. ९ भौमे मघा भे रे.८ दिवा ल. ३ इष्टा: ६ ग्र.व.वि.१६।।

ति. १० बुधे दि.३।५३ उ. विष्टि:पूर्वं ( रा. ३।१५) उ.फा. भे रे.६ ल. गोधूलि: वा ल. ८ इष्टा: ५ ग्र.व.वि. ११।। (बु.दा.) वा ल. ९ इष्टा: ५ ग्र.व.वि. १० वा ल. १२ इष्टा: ५ ग्र.व.वि. १० (चं.दा.)

ति. ११ गुरौ विष्टि: परं (दि.३।९) उ.फा. भे रे.६ पञ्चेष्टलग्नाभाव:। दि.४।१९ उ. हस्ते रे.७ ल. गोधूलि: वा ल. ८ इष्टा: ६ ग्र.व.वि. १६।। (बु.दा.) वा ल. ९ इष्टा: ५ ग्र.व.वि. १० वा ल. १२ इष्टा: ५ ग्र.व.वि. १० (चं.दा.)

ति. १२ शुक्रे मृत्युबाणात्पूर्वं (दि.७।२०) हस्ते रे.७ दिवा पञ्चेष्टलग्नाभाव:।

ति. १३ शनौ दि.३।४९ उ. स्वात्यां भौमवेधावसानं न चन्द्रभुक्तमशुभं व्यतिपातश्च।

ति. १४ रवौ स्वात्यां पूर्वदोष:।

ति. १५ सोमे दि. १।५० उ. मैत्रे सूर्यवेधावसानं न चन्द्रभुक्तमशुभं मृत्युबाणश्च।

## ॐ सूर्योदये दैनिकस्पष्टभौमादिग्रहाः ॐ

| ति. | वा. | भौमः | | | | मार्गीबुधः | | | | गुरुः | | | | शुक्रः | | | | शनिः | | | | राहुः | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | र | १० | १७ | १२ | ३० | १ | ५ | १२ | ३७ | ११ | ४ | ४८ | ८ | ११ | ४ | ३१ | १६ | ९ | २५ | ४७ | ४८ | ० | २८ | ५३ | ३ |
| २ | चं | १० | १७ | ५७ | ११ | १ | ६ | १६ | २९ | ११ | ४ | ५९ | ५५ | ११ | ५ | ३९ | ४७ | ९ | २५ | ५० | ४५ | ० | २८ | ४९ | ५२ |
| ३ | मं | १० | १८ | ४१ | १२ | १ | ७ | १९ | ५५ | ११ | ५ | ११ | ३९ | ११ | ६ | ४८ | १७ | ९ | २५ | ५३ | ४२ | ० | २८ | ४६ | ४१ |
| ४ | बु | १० | १९ | २५ | ० | १ | ८ | २ | १९ | ११ | ५ | २३ | २४ | ११ | ७ | ५६ | ४८ | ९ | २५ | ५६ | ३९ | ० | २८ | ४३ | ३१ |
| ४ | गु | १० | २० | ८ | ४९ | १ | ८ | ४४ | ३९ | ११ | ५ | ३५ | ८ | ११ | ९ | ५ | १८ | ९ | २५ | ५९ | ३६ | ० | २८ | ४० | २० |
| ५ | शु | १० | २० | ५२ | ३७ | १ | ९ | २६ | ५९ | ११ | ५ | ४६ | ५३ | ११ | १० | १३ | ४९ | ९ | २६ | २ | ३३ | ० | २८ | ३७ | ९ |
| ६ | श | १० | २१ | ३६ | २६ | १ | १० | ९ | १९ | ११ | ५ | ५८ | ३७ | ११ | ११ | २२ | १९ | ९ | २६ | ५ | २९ | ० | २८ | ३३ | ५८ |
| ७ | र | १० | २२ | २० | १४ | १ | १० | ४९ | ० | ११ | ६ | १० | २२ | ११ | १२ | ३० | ५० | ९ | २६ | ७ | २२ | ० | २८ | ३० | ४७ |
| ८ | चं | १० | २३ | ४ | ३ | १ | ११ | १ | ५४ | ११ | ६ | २२ | ६ | ११ | १३ | ४० | १८ | ९ | २६ | ९ | १० | ० | २८ | २७ | ३७ |
| ९ | मं | १० | २३ | ४७ | ५१ | १ | ११ | १४ | ४९ | ११ | ६ | ३३ | ५१ | ११ | १४ | ५१ | १७ | ९ | २६ | १० | ५८ | ० | २८ | २४ | २६ |
| १० | बु | १० | २४ | ३१ | ४० | १ | ११ | २७ | ४३ | ११ | ६ | ४५ | ३६ | ११ | १६ | २ | १५ | ९ | २६ | १२ | ४६ | ० | २८ | २१ | १५ |
| ११ | गु | १० | २५ | १५ | २८ | १ | ११ | ४० | ३७ | ११ | ६ | ५७ | २० | ११ | १७ | १३ | १४ | ९ | २६ | १४ | ३४ | ० | २८ | १८ | ४ |
| १२ | शु | १० | २५ | ५९ | १७ | व | ११ | ४६ | ५८ | ११ | ७ | ९ | ५ | ११ | १८ | २४ | १२ | ९ | २६ | १६ | २२ | ० | २८ | १४ | ५३ |
| १३ | श | १० | २६ | ४३ | ५ | १ | ११ | २६ | ११ | ११ | ७ | २० | ४९ | ११ | १८ | ३५ | ११ | ९ | २६ | १८ | १० | ० | २८ | ११ | ४२ |
| १४ | र | १० | २७ | २६ | ५४ | १ | ११ | ५ | २३ | ११ | ७ | ३२ | ३४ | ११ | २० | ४६ | ९ | ९ | २६ | १९ | ५९ | ० | २८ | ८ | ३२ |
| १५ | चं | १० | २८ | १० | ४३ | १ | १० | ४४ | ३६ | ११ | ७ | ४४ | १८ | ११ | २१ | ५७ | ७ | ९ | २६ | २१ | ४९ | ० | २८ | ५ | २१ |

भौमादीनाञ्चार:- भौम:- ति. ४ बुधे पूर्वाभाद्रपदा भे ४७।५६ (रा. १२।३९)।। मार्गीबुध:- ति. ५ शुक्रे रोहिण्यां ४६।४८ (रा. १२।११)। ति. १२ शुक्रे वक्री १४।२ (दि.११।१)।। गुरु:- ति. ९ भौमे उत्तराभाद्रपदा २ चरणे ३१।२४ (सा. ६।०)।। शुक्र:- ति. १० बुधे रेवत्यां ३१।५५ (सा.६।११)।। शनि:- धनिष्ठा १ चरणे ।। राहु:-कृत्तिका १ चरणे केतुश्च विशाखा ३ चरणे।।

अक्षय्याख्यतृतीयायां सुभिक्षायै व रोहिणी।।

### ५ पं० वैशाखशुक्ल ८ सोमे सूर्योदये स्पष्टग्रहा:।

द्युगण: २३७३

अयनांशा: २४।९।११

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ३ | १० | १ | ११ | ११ | ९ | ० | ६ |
| २४ | २५ | २३ | ११ | ६ | १३ | २६ | २८ | २८ |
| ४ | ५३ | ४ | १ | २२ | ४० | ९ | २७ | २७ |
| १२ | २७ | ३ | ५४ | ६ | १८ | १० | ३७ | ३७ |
| ५७ | ७४९ | ४३ | १२ | १२ | ७० | १ | ३ | ३ |
| ५० | ७ | ४८ | ५५ मा. | ४५ | ५९ | ४८ | ११ | ११ |

२ बु. | गु.१२शु. | ३ | सू. १ रा. | मं.११ | ४ चं. | श.१० | ५ | ७ के. | ९ | ६ | ८

पक्षेऽस्मिन् विविधमुहूर्त्ता:- ति. १ रवौ भरण्यां सूर्ययुति:। ति. २ सोमे कृत्तिका भे राहुयुति:। रा. ११।१६ उ. रोहिण्यां गर्भाधान वधूप्रवेश (ल. ११) द्विरागमन (ल. १२) मुहूर्त्त:। ति. ३ भौमे रोहिण्यां पुंसवनसीमन्त सूतीस्नान सुभगांविनारक्तवस्त्रधारण भूपाघटन हलप्रवहण शिरामोक्षण मुहूर्त्त:। ति. ४ बुधे मृगे रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त:। ति. ४ गुरौ रिक्तोत्तरं (दि. ७।१८) आर्द्रा भे अक्षरारम्भ -विद्यारम्भ (ल. २) उपनयन (ल. २) धान्यच्छेदन मुहूर्त्त:। ति. ५ शुक्रे प्रा.६।४५ उ. पुनर्वसौ पंचम्यां अन्नप्राशन गोक्रय-विक्रय दक्षिणदिग्यात्रा नौकाघटन चौलकेशान्त (ल. २) कर्णवेध (ल. २) अक्षरारम्भ -विद्यारम्भ (ल. २) उपनयन (ल. २) जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. २) द्विरागमन (ल. २ वा ३) हलप्रवहण अश्वकृत्य मुहूर्त्त:। ति. ६ शनौ पुनर्वसौ सुभगांविनाकृष्णवस्त्रधारण मुहूर्त्त:। दि. ११।१८ उ. पुष्ये पूर्वाविनान्यदिग्यात्रा जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. ८) गजाश्वकृत्य मुहूर्त्त:। ति. ७ रवौ पुष्ये पुंसवनसीमन्त जलयन्त्र ( बोरिंग ) (दि.११।६ उ. दि.११।३३ या.) शय्यासनाद्युपभोग सुभगांविनानववस्त्रधारण भूपाघटन लतापादपारोपण गोक्रय-विक्रय पश्चिमांविनान्य दिग्यात्रा नवान्नभक्षण जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल.२) गजाश्वकृत्य शिरामोक्षण मुहूर्त्त:। ति. ८ सोमे श्लेषा भे वस्तुविक्रय धान्यच्छेदन मुहूर्त्त:। ति. ९ भौमे मघा भे सूर्यवेधो रिक्तादोषश्च। ति. १० बुधे पू.फा. भे कणमर्दन विद्यारम्भ (ल. २) वस्तुविक्रय मुहूर्त्त:। दि. ३।५३ उ. विष्टि:पूर्वं (रा. ३।१५) उ.फा. भे गर्भाधान सुभगांविनानववस्त्रधारण कणमर्दन जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. ८) द्विरागमन (ल. ७) गृहारम्भ (ल. ९) गृहप्रवेश (च.शु.) हलप्रवहण बीजोप्ति विपणि मुहूर्त्त:। ति. ११ गुरौ विष्टि:परं (दि. ३।९) उ.फा. भे सुभगांविनानववस्त्रधारण लतापादपारोपण कणमर्दन गृहारम्भ-गृहप्रवेश (च.शु.) हलप्रवहण बीजोप्ति विपणि व्यापार मुहूर्त्त:। ☞

| तिथि ल.अ. | १ र घं. | मि. | २ चं घं. | मि. | ३ मं घं. | मि. | ४ बु घं. | मि. | ४ गु घं. | मि. | ५ शु घं. | मि. | ६ श घं. | मि. | ७ र घं. | मि. | ८ चं घं. | मि. | ९ मं घं. | मि. | १० बु घं. | मि. | ११ गु घं. | मि. | १२ शु घं. | मि. | १३ श घं. | मि. | १४ र घं. | मि. | तिथि घं.मि. | १५ चं घं. | मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेष | ६ | १४ | ६ | १० | ६ | ६ | ६ | २ | ५ | ५८ | ५ | ५४ | ५ | ५० | ५ | ४७ | ५ | ४४ | ५ | ४० | ५ | ३७ | ५ | ३३ | ५ | ३० | ५ | २६ | ५ | २२ | वृष | ७ | १३ |
| वृष | ८ | १० | ८ | ६ | ८ | २ | ७ | ५८ | ७ | ५४ | ७ | ५० | ७ | ४६ | ७ | ४३ | ७ | ४० | ७ | ३६ | ७ | ३३ | ७ | २९ | ७ | २६ | ७ | २२ | ७ | १८ | मिथुन | ९ | २७ |
| मिथुन | १० | २४ | १० | २० | १० | १६ | १० | १२ | १० | ८ | १० | ४ | १० | ० | ९ | ५७ | ९ | ५४ | ९ | ५१ | ९ | ४७ | ९ | ४३ | ९ | ४० | ९ | ३६ | ९ | ३२ | कर्क | ११ | ४५ |
| कर्क | १२ | ४२ | १२ | ३८ | १२ | ३४ | १२ | ३० | १२ | २६ | १२ | २२ | १२ | १८ | १२ | १५ | १२ | १२ | १२ | ८ | १२ | ५ | १२ | १ | ११ | ५८ | ११ | ५४ | ११ | ५० | सिंह | १ | ५९ |
| सिंह | २ | ५६ | २ | ५२ | २ | ४८ | २ | ४४ | २ | ४० | २ | ३६ | २ | ३२ | २ | २९ | २ | २६ | २ | २२ | २ | १९ | २ | १५ | २ | १२ | २ | ८ | २ | ४ | कन्या | ४ | १२ |
| कन्या | ५ | ९ | ५ | ५ | ५ | १ | ४ | ५७ | ४ | ५३ | ४ | ४९ | ४ | ४५ | ४ | ४२ | ४ | ३९ | ४ | ३५ | ४ | ३२ | ४ | २८ | ४ | २५ | ४ | २१ | ४ | १७ | तुला | ६ | २८ |
| ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | ल.अ. | रात्रि | |
| तुला | ७ | २५ | ७ | २१ | ७ | १७ | ७ | १३ | ७ | ९ | ७ | ५ | ७ | १ | ६ | ५८ | ६ | ५५ | ६ | ५१ | ६ | ४८ | ६ | ४४ | ६ | ४१ | ६ | ३७ | ६ | ३३ | वृश्चिक | ८ | ४५ |
| वृश्चिक | ९ | ४२ | ९ | ३८ | ९ | ३४ | ९ | ३० | ९ | २६ | ९ | २२ | ९ | १८ | ९ | १५ | ९ | १२ | ९ | ८ | ९ | ५ | ९ | १ | ८ | ५८ | ८ | ५४ | ८ | ५० | धनु | १० | ५१ |
| धनु | ११ | ४८ | ११ | ४४ | ११ | ४० | ११ | ३६ | ११ | ३२ | ११ | २८ | ११ | २४ | ११ | २१ | ११ | १८ | ११ | १४ | ११ | ११ | ११ | ७ | ११ | ४ | ११ | ० | १० | ५६ | मकर | १२ | ३८ |
| मकर | १ | ३५ | १ | ३१ | १ | २७ | १ | २३ | १ | १९ | १ | १५ | १ | ११ | १ | ८ | १ | ५ | १ | १ | १२ | ५८ | १२ | ५४ | १२ | ५१ | १२ | ४७ | १२ | ४३ | कुम्भ | २ | ९ |
| कुम्भ | ३ | ६ | ३ | २ | २ | ५८ | २ | ५४ | २ | ५० | २ | ४६ | २ | ४२ | २ | ३९ | २ | ३६ | २ | ३२ | २ | २९ | २ | २५ | २ | २२ | २ | १८ | २ | १४ | मीन | ३ | ३७ |
| मीन | ४ | ३४ | ४ | ३० | ४ | २६ | ४ | २२ | ४ | १८ | ४ | १४ | ४ | १० | ४ | ७ | ४ | ४ | ४ | ० | ३ | ५७ | ३ | ५३ | ३ | ५० | ३ | ४६ | ३ | ४२ | मेष | ५ | १४ |

### ६ पं० वैशाखशुक्ल १५ सोमे सूर्योदये स्पष्टग्रहा:।

द्युगण: २६८०

अयनांशा: २४।९।१२

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ६ | १० | १ | ११ | ११ | ९ | ० | ६ |
| ० | २८ | २८ | १० | ७ | २१ | २६ | २८ | २८ |
| ४८ | २४ | १० | ४४ | ४४ | ५७ | २१ | ५ | ५ |
| २३ | १३ | ४३ | ३६ | १८ | ७ | ४९ | २१ | २१ |
| ५७ | ८४० | ४३ | २० | १० | ७० | १ | ३ | ३ |
| ३८ | ३८ | ४८ | ४८ व. | २४ | ५९ | ५० | ११ | ११ |

३ | १ रा. | गु. १२ शु. | ४ | सू. २ बु. | ५ | ११ मं. | ६ | ८ | १०श. | चं. ७ के. | ९

◆ सागरे स्नानम्। श्रीविष्णोश्चन्दनपूजा। श्रीबदरी केदार यात्रा। काश्यां त्रिलोचन यात्रा। कल्पादि: ३। त्रेतायुगादि: ३। मृत्युबाणारम्भ: ४४।५७ (रा.११।२९)। स्थायिजययोग: ५९।३१ उ.। रवियोग: ५०।१२ उ.। ☾ (रा. १२।१७)। सर्वार्थसिद्धियोग: ५६।३७ या.। रवियोग: ५६।३७ या.। ☎ अव्याप्तौ एकदेशेव्याप्तौ वा पूर्वा "। श्रीगंगोत्पत्ति: ७। श्रीगुरुदेव -रविन्द्रनाथ टैगोर जयन्ती। रवियोग: ९।३५ या.। ◑ २४।१९ या.। रवियोग: २७।१६ या.। ◔ सर्वार्थसिद्धियोग: २६।१२ उ.। रवियोग: २६।१२ उ.। ⌂ मु. १५ जघन्या। फलं महर्घता। पूर्वा: १६ घट्य: पुण्या:। गोऽन्नजलतिला -दिदानम्। स्नानं गोदावर्याम्। ग्रीष्मर्त्तु:। कूर्म जयन्ती १५ (मध्याह्ने)। यायिजययोग: १५।३६ उ. २४।१ या.। रवियोग: २४।१ या.। ♍ कृष्णा-जिन-जलकुम्भ-तिल-सुवर्ण-घृत मधुदानेन। सर्वपापक्षय:। सौरज्येष्ठमासारम्भ:। मृत्युबाणारम्भ: १२।६ (दि. १०।२३) यायिजययोग: २१।७ उ.। सर्वार्थसिद्धियोग: २१।७ उ.। यमघंटयोग: २१।७ या.।

मूलविचार-श्लेषा/मघा- ति.७ रवौ १५।१६ (दि. ११।३३) उ.। ति.९ भौमे २३।४३ (दि.२।५५) या.।

☞ दि. ४।१९ उ. हस्ते गर्भाधान नववस्त्रधारण गोक्रय-विक्रय जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल.८) वधूप्रवेश (ल. ८) द्विरागमन (ल. ७) गृहारम्भ (ल. ९) शिरामोक्षण मुहूर्त्त:। ति. १२ शुक्रे हस्ते जातकर्मनामकरण शिशुताम्बुलभक्षण भूम्युपवेशन गोक्रय-विक्रय पश्चिमांविनान्यदिग्यात्रा (त्रयोदश्यां) नवान्नभक्षण नौकाघटन कर्णवेध (ल. २) अक्षरारम्भ-विद्यारम्भ (ल. २) उपनयन (ल. २) जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. २) वधूप्रवेश (ल. २) द्विरागमन (ल. ३) गृहारम्भ (च. शु.) बीजोप्ति विपणि व्यापार गजाश्वकृत्य मुहूर्त्त:। ति. १३ शनौ चित्रा भे भौमवेध:। ति. १४ रवौ स्वात्यां रिक्ततता विष्टिदोष:। ति. १५ सोमे विशाखा भे शनिवेध:। दि. १।५० उ. मैत्रे पूर्वाविनान्यदिग्यात्रा भैषज्य बीजोप्ति विपणि गजकृत्य मुहूर्त्त:।

| दि.मा. घ. | प. | श्रीसंवत् २०७९ शकः १९४४ सौम्यायनगोलयोः ग्रीष्मर्त्तुः।। | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | योगाः | अं. | फ. | सौ. | ने. | रा. | चन्द्र राशि | प्रवेशः | सूर्योदयः घं. | मि. | सूर्यास्तः घं. | मि. | औदयिक स्पष्ट सूर्यः | | | | क्रान्तिः उ. | + | रे. अं. - | मि. | चन्द्रोदयः स्टै. | टा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३३ | ९ | १ | मं | ५/५४ | ४१/११ | प्रा | ७/५ | ३८/१९ | अनुराधा | १७ | ३६ | दि | १२ | २४ | शिव | ४८ | ५७ | रा | १२ | ५७ | कौ ५ | ४१ | तै | ३२/५९ | ४७/५२ | वज्र | १७ | १ | २ | ३ | २७ | | | ५ | २२ | ६ | ३८ | १ | १ | ४६ | ० | १९ | ११ | - | ६ | ८ | ९ |
| ३३ | १२ | ३ | बु | ५३ | ४७ | रा | २ | ५३ | ज्येष्ठा | १३ | ४० | दि | १० | ५० | सिद्ध | ४१ | २६ | रा | ९ | ५६ | व २६ | ५० | भ | ५३ | ४७ | ध्वांक्ष | १८ | २ | ३ | ४ | २८ | धनु | १३।४० | ५ | २२ | ६ | ३८ | १ | २ | ४३ | ३६ | १९ | २४ | - | ६ | ९ | १९ |
| ३३ | १४ | ४ | गु | ४७ | ३८ | रा | १२ | २४ | मूल | ९ | ३४ | दि | ९ | ११ | साध्य | ३३ | ४५ | सा | ६ | ५१ | वव २० | ४३ | वा | ४७ | ३८ | धूम्र | १९ | ३ | ४ | ५ | २९ | | | ५ | २१ | ६ | ३९ | १ | ३ | ४१ | ११ | १९ | ३७ | - | ६ | १० | २३ |
| ३३ | १६ | ५ | शु | ४१ | ३७ | रा | १० | ० | पू.षा. | ५ | २५ | दि | ७ | ३१ | शुभ | २६ | ११ | दि | ३ | ४९ | कौ १४ | ३८ | तै | ४१ | ३७ | प्रवर्धमान | २० | ४ | ५ | ६ | ३० | मकर | १९।२६ | ५ | २१ | ६ | ३९ | १ | ४ | ३८ | ४३ | १९ | ५० | - | ६ | ११ | २१ |
| ३३ | १९ | ६ | श | ३५ | ५५ | रा | ७ | ४२ | उ.षा. | १/५६ | २८/३० | प्रा | ५/४ | ५५/३१ | शुक्ल | १८ | ५१ | दि | १२ | ५२ | गर ८ | ४६ | व | ३५ | ५५ | राक्षस | २१ | ५ | ६ | ७ | ३१ | | | ५ | २० | ६ | ४० | १ | ५ | ३६ | १३ | २० | १ | - | ६ | १२ | ९ |
| ३३ | २१ | ७ | र | ३० | ४२ | सा | ५ | ३७ | धनिष्ठा | ५५ | २ | रा | ३ | २१ | ब्रह्म | ११ | ५२ | दि | १० | ५ | भ ३ | १९ | वव | ३०/५८ | ४२/३९ | मातङ्ग | २२ | ६ | ७ | ८ | १ | कुम्भ | २६।३० | ५ | २० | ६ | ४० | १ | ६ | ३३ | ४३ | २० | १४ | - | ६ | १२ | ५१ |
| ३३ | २३ | ८ | चं | २६ | २२ | दि | ३ | ५२ | शतभिष | ५३ | ० | रा | २ | ३१ | ऐन्द्र | ५/५६ | २८/५५ | प्रा | ३/५ | १०/१७ | कौ २६ | २२ | तै | ५४ | ३५ | अमृत | २३ | ७ | ८ | ९ | २ | | | ५ | १९ | ६ | ४१ | १ | ७ | ३१ | ११ | २० | २६ | - | ५ | १ | २८ |
| ३३ | २५ | ९ | मं | २२ | ४८ | दि | २ | २६ | पू.भा. | ५१ | ४६ | रा | २ | १ | विष्कुम्भ | ५४ | ४६ | रा | ३ | १३ | गर २२ | ४८ | व | ५१ | ३२ | काण | २४ | ८ | ९ | १० | ३ | मीन | ३७।५ | ५ | १९ | ६ | ४१ | १ | ८ | २८ | ३८ | २० | ३८ | - | ५ | २ | १ |
| ३३ | २७ | १० | बु | २० | १५ | दि | १ | २५ | उ.भा. | ५१ | ३९ | रा | १ | ५९ | प्रीति | ५० | ४० | रा | १ | ३५ | भ २० | १५ | वव | ४९ | ३६ | लुम्बक | २५ | ९ | १० | ११ | ४ | | | ५ | १९ | ६ | ४१ | १ | ९ | २६ | ४ | २० | ५० | - | ५ | २ | ३३ |
| ३३ | २९ | ११ | गु | १८ | ५६ | दि | १२ | ५२ | रेवती | ५२ | ४४ | रा | २ | २४ | आयुष्मान | ४७ | ३४ | रा | १२ | २० | वा १८ | ५६ | कौ | ४८ | ५३ | मित्र | २६ | १० | ११ | १२ | ५ | मेष | ५२।४४ | ५ | १८ | ६ | ४२ | १ | १० | २३ | २८ | २१ | १ | - | ५ | ३ | ४ |
| ३३ | ३१ | १२ | शु | १८ | ५० | दि | १२ | ५० | अश्विनी | ५५ | ८ | रा | ३ | २१ | सौभाग्य | ४५ | २९ | रा | ११ | ३० | तै १८ | ५० | गर | ४९ | २७ | वज्र | २७ | ११ | १२ | १३ | ६ | | | ५ | १८ | ६ | ४२ | १ | ११ | २० | ५१ | २१ | १२ | - | ५ | ३ | ३७ |
| ३३ | ३३ | १३ | श | २० | ३ | दि | १ | १८ | भरणी | ५८ | ४६ | रा | ४ | ४७ | शोभन | ४४ | २६ | रा | ११ | ३ | व २० | ३ | भ | ५१ | १४ | ध्वांक्ष | २८ | १२ | १३ | १४ | ७ | | | ५ | १७ | ६ | ४३ | १ | १२ | १८ | १३ | २१ | २२ | - | ५ | ४ | ११ |
| ३३ | ३५ | १४ | र | २२ | २४ | दि | २ | १५ | कृत्तिका | ६० | ० | स | म | स्त | अतिगण्ड | ४४ | १३ | रा | १० | ५८ | श २२ | २४ | च | ५४ | ११ | धूम्र | २९ | १३ | १४ | १५ | ८ | वृष | १४।५७ | ५ | १७ | ६ | ४३ | १ | १३ | १५ | ३२ | २१ | ३१ | - | ५ | ४ | ४८ |
| ३३ | ३६ | ३० | चं | २५ | ५७ | दि | ३ | ४० | कृत्तिका | ३ | ३१ | प्रा | ६ | ४१ | सुकर्मा | ४३ | ५५ | रा | १० | ५१ | नाग २५ | ५७ | किं | ५८ | ८ | सुस्थिर | ३० | १४ | १५ | १६ | ९ | | | ५ | १७ | ६ | ४३ | १ | १४ | १२ | ५१ | २१ | ४० | - | ५ | - | - |

## ज्येष्ठकृष्णपक्षः।।

राष्ट्रिय तिथि २७ वैशाखतः तिथि ९ ज्येष्ठं यावत् १९४४ शकः।।
अंग्रेजी दिनांक १७ मईतः ३० दिनांकं यावत् सन् २०२२ ई.।।

ज्येष्ठमासे पिष्टेन ब्रह्ममूर्ति विधाय वस्त्रादिभिःपूजनेन सूर्यलोकप्राप्तिः। मृत्युबाणनिवृत्तिः १४।३५ (दि.११।१२)।
भ. २६।५० उ. (दि. ४।६) ५३।४७ या. (रा. २।५३)। धनूराशिः (दि. १०।५०)। यमघंटयोगः १३।४० उ.।
संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रतम्। चन्द्रोदयः (रा. १०।२३)। माँ आनन्दमयी जयन्ती।
मकरराशिः (दि. १।७)। ◆द्विपुष्करयोगः ५७।५८ उ.। रवियोगः१।२८ उ. ५७।५८ या.।
भ. ३५।५५ उ. (रा. ७।४२)।⊙सायन मिथुने सूर्यः १५।१२ (दि. ११।२५)। सर्वार्थसिद्धियोगः १।२८ उ.। ◆
भ. ३।१९ या. (प्रा. ६।४०)। कुम्भराशिः (दि. ३।५६)। भानुसप्तमी ७।पौराणिकागस्त्यास्तः२७।२७ (दि.४।१९)।
श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रतम्। पर्युषितान्नपानादिकमत्रविहितम्। त्रिलोचनाष्टमी (बंगाल)।
भ. ५१।३२ उ. (रा. १।५६)। मीनराशिः (रा. ८।९)। सर्वार्थसिद्धियोगः ५१।४६ उ.।
भ. २०।१५ या. (दि. १।२५)। ⊙रोहिण्यां सूर्यः ३५।२८ (रा. ७।३०)। मृत्युबाणारम्भः ३५।२८ (रा. ७।३०)।
मेषराशिः (रा. २।२४)। अचला ११ एकादशी व्रतं सर्वेषाम्। जलक्रीडा एकादशी (उडीसा)। भद्रकाली एकादशी
प्रदोष १२ व्रतम्। वटसावित्री व्रतारम्भः दिनत्रयं यावत्। स्थायिजययोगः १८।५० या.। सर्वार्थसिद्धियोगः ५५।८ या.।
भ. २०।३ उ. (दि. १।१८) ५१।१४ या. (रा. १।४७)। वटसावित्री व्रतस्य द्वितीय दिनम्। मासशिवरात्रि १३ व्रतम्।
वृषराशिः (दि. ११।१६)। वटसावित्री व्रतम्। स्त्रीणां नित्यं काम्यञ्च।
स्नान-दान-श्राद्धादौ ३० अमावस्या। सोमवती अमावस्या। अश्वत्थमूले प्रणिधायविष्णुं विधाय सम्यग्विविधोपचारैः।❖

### ।। विवाहमुहूर्त्तपञ्चेष्टलग्नविमर्शः ।।

तिथि १ भौमे मैत्रे सूर्यवेधावसानं न चन्द्रभुक्तमशुभं मृत्युबाणश्च।

ति. ३ बुधे दि.१०।५० उ. विष्टेः पूर्वं (दि.४।६) मूले रे.९ दिवा पञ्चेष्ट- लग्नाभावः। विष्टेःपरं (रा.२।५३) ल. १२ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. १३।।वा ल. २ इष्टाः५ ग्र.व.वि. १० (अष्टमस्थश्चन्द्रो न शुभः)

ति. ४ गुरौ मूले रे. ९ दिवा ल. २ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. १० (अष्टमस्थश्चन्द्रो न शुभः)

ति. ५ शुक्रे दि. ७।३१ उ. उ.षा.भे रे.८ ल. गोधूलिः वा ल. ९ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. १७ वा ल. १२ इष्टाः ७ ग्र.व.वि. १८।। वा ल. २ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. १०

ति. ६ शनौ उ.षा. भे रे.८ दिवा ल. २ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. १०

ति. ९ भौमे रा. २।१ उ. उ.भा. भे भौमयुतिः विष्टिदोषश्च।

ति. १० बुधे उ.भा. भे पूर्वदोषो मृत्युबाणश्च। रा. १।५९ उ. रेवत्यां मृत्युबाणव्याप्तिः।

ति. ११ गुरौ मृत्युबाणात्परं (रा. ८।३५) रेवत्यां रे. ८ ल. ९ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. १२ वा ल. १० इष्टाः ५ ग्र.व.वि. १३।। वा ल. १२ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. १३।।

### ॐ सूर्योदये दैनिकस्पष्टभौमादिग्रहाः ॐ

| ति. | वा. | भौमः | | | | वक्रीबुधः | | | | गुरुः | | | | शुक्रः | | | | शनिः | | | | राहुः | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | मं | १० | २८ | ५४ | ३१ | १ | १० | २३ | ४८ | ११ | ७ | ५४ | ४२ | ११ | २३ | ८ | ६ | ९ | २६ | २३ | ३९ | ० | २८ | २ | १० |
| ३ | बु | १० | २९ | ३८ | २० | १ | ९ | ५३ | ० | ११ | ८ | ५ | १ | ११ | २४ | १९ | ४ | ९ | २६ | २५ | ३० | ० | २७ | ५८ | ५९ |
| ४ | गु | ११ | ० | २२ | ८ | १ | ९ | २ | २ | ११ | ८ | १५ | १८ | ११ | २५ | ३० | ३ | ९ | २६ | २७ | २१ | ० | २७ | ५५ | ४८ |
| ५ | शु | ११ | १ | ५ | ५७ | १ | ८ | ११ | ४ | ११ | ८ | २५ | ३४ | ११ | २६ | ४१ | १ | ९ | २६ | २९ | १२ | ० | २७ | ५२ | ३८ |
| ६ | श | ११ | १ | ४९ | ४५ | १ | ७ | २० | ५ | ११ | ८ | ३५ | ४९ | ११ | २७ | ५१ | ५२ | ९ | २६ | ३१ | २ | ० | २७ | ४९ | २७ |
| ७ | र | ११ | २ | ३३ | ३४ | १ | ६ | २९ | ७ | ११ | ८ | ४६ | ५ | ११ | २९ | २ | ३३ | ९ | २६ | ३२ | ५३ | ० | २७ | ४६ | १६ |
| ८ | चं | ११ | ३ | १७ | २२ | १ | ५ | ३८ | ८ | ११ | ८ | ५६ | २० | ० | ० | १३ | १३ | ९ | २६ | ३४ | २३ | ० | २७ | ४३ | ५ |
| ९ | मं | ११ | ४ | १ | ११ | १ | ४ | ४७ | १० | ११ | ९ | ६ | ३६ | ० | १ | २३ | ५४ | ९ | २६ | ३४ | ४२ | ० | २७ | ३९ | ५४ |
| १० | बु | ११ | ४ | ४४ | ५९ | १ | ३ | ५६ | ११ | ११ | ९ | १६ | ५१ | ० | २ | ३४ | ३५ | ९ | २६ | ३५ | २ | ० | २७ | ३६ | ४४ |
| ११ | गु | ११ | ५ | २८ | ३८ | १ | ३ | ५ | १३ | ११ | ९ | २७ | ७ | ० | ३ | ४५ | १६ | ९ | २६ | ३५ | २१ | ० | २७ | ३३ | ३३ |
| १२ | शु | ११ | ६ | १२ | १६ | १ | २ | १४ | १५ | ११ | ९ | ३७ | २३ | ० | ४ | ५५ | ५७ | ९ | २६ | ३५ | ४० | ० | २७ | ३० | २२ |
| १३ | श | ११ | ६ | ५५ | ५५ | १ | १ | ४३ | ११ | ११ | ९ | ४७ | ३८ | ० | ६ | ६ | ३७ | ९ | २६ | ३५ | ५९ | ० | २७ | २७ | ११ |
| १४ | र | ११ | ७ | ३९ | ३३ | १ | १ | २२ | २४ | ११ | ९ | ५७ | ५४ | ० | ७ | १७ | १८ | ९ | २६ | ३६ | १८ | ० | २७ | २४ | ० |
| ३० | चं | ११ | ८ | २३ | ११ | १ | १ | १ | ३६ | ११ | १० | ८ | ९ | ० | ८ | २७ | ५९ | ९ | २६ | ३६ | ३७ | ० | २७ | २० | ५० |

*भौमादीनाञ्चारः- भौमः- ति. ३ बुधे मीने २९।४१ (दि.५।१४)। ति. ८ सोमे उत्तराभाद्रपदा भे ३।३६ (प्रा.६।४५)।। वक्रीबुधः- ति. १ भौमे कृत्तिका भे ४६।२२ (रा.११।५५)।। गुरुः- ति.१४ रवौ उत्तराभाद्रपदा ३ चरणे १२।१८(दि. १०।१२)।। शुक्रः- ति. ७ रवौ अश्विन्यां मेषे च ४८।४७(रा.१२।५१)।। शनिः-धनिष्ठा १ चरणे।। राहुः-कृत्तिका १चरणे केतुश्च विशाखा ३ चरणे।।*

*ज्येष्ठकृष्ण एकादश्यां रेवती योगे खण्डवृष्टिः।।*

### ७ पं० ज्येष्ठकृष्ण ८ सोमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।

द्युगणः २६८७

अयनांशाः २४।९।१३

| सू. | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १० | ११ | १ | ११ | ० | ९ | ० | ६ |
| ७ | ७ | ३ | ५ | ८ | ० | २६ | २७ | २७ |
| ३१ | ४८ | १७ | ३८ | ५६ | १३ | ३४ | ४३ | ४३ |
| ११ | २७ | २२ | ८ | २० | १३ | २३ | ५ | ५ |
| ५७ | ८२८ | ४३ | ५० | १० | ७० | ० | ३ | ३ |
| २७ | ४ | ४९ | ५८ व. | १६ | ४१ | ११ | ११ | ११ |

३ | शु. १ रा. मं. | ४ | सू. २ बु. | १२ गु. | ५ | ११चं. | ६ | ८ | १०श. | ७ के. | ९

पक्षेऽस्मिन् विविधमुहूर्त्ताः- ति. १ भौमे मैत्रे सूतीस्नान रक्तवस्त्रधारण उत्तरांविनान्यदिग्यात्रा शिरामोक्षण मुहूर्त्तः। ति. ३ बुधे ज्येष्ठा भे शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन गोक्रय-विक्रय कणमर्दन चौलकेशान्त (ल. २) इष्टिकानिर्माण धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। दि. १०।५० उ. विष्टेःपूर्वं मूले पुंसवनसीमन्त शिशुताम्बूलभक्षण शिल्पविद्या भैषज्य बीजोप्ति धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ४ गुरौ मूले रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। ति. ५ शुक्रे पू.षा. भे शिल्पविद्या नौकाघटन मुहूर्त्तः। दि. ७।३१ उ.उ.षा. भे पुंसवनसीमन्त अन्नप्राशन गर्भाधान शय्यासनाद्युपभोग नववस्त्रधारण लतापादपारोपण शिल्पविद्या नौकाघटन उपनयन (ल. ३ श.के.दा.) बीजोप्ति इष्टिकादहन विपणि धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ६ शनौ प्रा. ५।५५ या. उ.षा. भे कृष्णवस्त्रधारण मुहूर्त्तः। श्रवणे राहुवेधः। ति. ७ रवौ धनिष्ठा भे शनियुतिः विष्टिश्च। ति. ८ सोमे शतभिषजि वैधृतेः पूर्वं (दि. ७।३०) गोक्रय-विक्रय कणमर्दन भैषज्य हलप्रवहण वस्तुक्रय गजाश्वकृत्य धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ९ भौमे पू.भा. भे रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। ति. १० बुधे उ.भा. भे भौमयुतिः विष्टिश्च। रा. १।५९ उ. रेवत्यां पश्चिमदिग्यात्रा गृहप्रवेश (ल. २) मुहूर्त्तः। ति. ११गुरौ रेवत्यां शिशुताम्बूलभक्षण दोलारोहण शय्यासनाद्युपभोग नववस्त्रधारण लतापादपारोपण पश्चिमोत्तर दिग्यात्रा (एकादश्यां) कणमर्दन भैषज्य नौकाघटन चौलकेशान्त (ल. २ वा ४) गृहप्रवेश (ल. २ वा ८) हलप्रवहण इष्टिकानिर्माण विपणि व्यापार वस्तुक्रय गजाश्वकृत्य मुहूर्त्तः। ति. १२ शुक्रे अश्विन्यां जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण शय्यासनाद्युपभोग नववस्त्रधारण लतापादपारोपण गोक्रय-विक्रय पश्चिमांविनान्यदिग्यात्रा (त्रयोदश्यां) नवान्नभक्षण भैषज्य कर्णवेध (ल. २ वा ४) हलप्रवहण इष्टिकानिर्माण विपणि वस्तुक्रय गजाश्वकृत्य मुहूर्त्तः। परं मासान्तादिदोषः।

| तिथि / ल.अ. | १ मं घं. | मि. | ३ बु घं. | मि. | ४ गु घं. | मि. | ५ शु घं. | मि. | ६ श घं. | मि. | ७ र घं. | मि. | ८ चं घं. | मि. | ९ मं घं. | मि. | १० बु घं. | मि. | ११ गु घं. | मि. | १२ शु घं. | मि. | १३ श घं. | मि. | १४ र घं. | मि. | ३० चं घं. | मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वृष | ७ | ९ | ७ | ५ | ७ | १ | ६ | ५७ | ६ | ५३ | ६ | ४९ | ६ | ४५ | ६ | ४१ | ६ | ३७ | ६ | ३३ | ६ | २९ | ६ | २५ | ६ | २१ | ६ | १७ |
| मिथुन | ९ | २३ | ९ | १९ | ९ | १६ | ९ | ११ | ९ | ७ | ९ | ३ | ८ | ५९ | ८ | ५५ | ८ | ५१ | ८ | ४७ | ८ | ४३ | ८ | ३९ | ८ | ३५ | ८ | ३१ |
| कर्क | ११ | ४१ | ११ | ३७ | ११ | ३३ | ११ | २९ | ११ | २५ | ११ | २१ | ११ | १७ | ११ | १३ | ११ | ९ | ११ | ५ | ११ | १ | १० | ५७ | १० | ५३ | १० | ४९ |
| सिंह | १ | ५५ | १ | ५१ | १ | ४७ | १ | ४३ | १ | ३९ | १ | ३५ | १ | ३१ | १ | २७ | १ | २३ | १ | १९ | १ | १५ | १ | ११ | १ | ७ | १ | ३ |
| कन्या | ४ | ८ | ४ | ४ | ४ | ० | ३ | ५७ | ३ | ५२ | ३ | ४८ | ३ | ४४ | ३ | ४० | ३ | ३६ | ३ | ३२ | ३ | २८ | ३ | २४ | ३ | २० | ३ | १६ |
| तुला | ६ | २४ | ६ | २० | ६ | १६ | ६ | १२ | ६ | ८ | ६ | ४ | ६ | ० | ५ | ५६ | ५ | ५२ | ५ | ४८ | ५ | ४४ | ५ | ४० | ५ | ३६ | ५ | ३२ |
| ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | |
| वृश्चिक | ८ | ४१ | ८ | ३७ | ८ | ३३ | ८ | २९ | ८ | २५ | ८ | २१ | ८ | १७ | ८ | १३ | ८ | ९ | ८ | ५ | ८ | १ | ७ | ५७ | ७ | ५३ | ७ | ४९ |
| धनु | १० | ४७ | १० | ४३ | १० | ३९ | १० | ३५ | १० | ३१ | १० | २७ | १० | २३ | १० | १९ | १० | १५ | १० | ११ | १० | ७ | १० | ३ | ९ | ५९ | ९ | ५५ |
| मकर | १२ | ३४ | १२ | ३१ | १२ | २६ | १२ | २२ | १२ | १८ | १२ | १४ | १२ | १० | १२ | ६ | १२ | २ | ११ | ५८ | ११ | ५४ | ११ | ५० | ११ | ४६ | ११ | ४२ |
| कुम्भ | २ | ५ | २ | १ | १ | ५७ | १ | ५३ | १ | ४९ | १ | ४५ | १ | ४१ | १ | ३७ | १ | ३३ | १ | २९ | १ | २५ | १ | २१ | १ | १७ | १ | १३ |
| मीन | ३ | ३३ | ३ | २९ | ३ | २५ | ३ | २१ | ३ | १७ | ३ | १३ | ३ | ९ | ३ | ५ | ३ | १ | २ | ५७ | २ | ५३ | २ | ४९ | २ | ४५ | २ | ४१ |
| मेष | ५ | १० | ५ | ६ | ५ | २ | ४ | ५८ | ४ | ५४ | ४ | ५० | ४ | ४६ | ४ | ४२ | ४ | ३८ | ४ | ३४ | ४ | ३० | ४ | २६ | ४ | २२ | ४ | १८ |

### ८ पं० ज्येष्ठकृष्ण ३० सोमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।

द्युगणः २६९४

अयनांशाः २४।९।१४

| सू. | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | ११ | १ | ११ | ० | ९ | ० | ६ |
| १४ | ९ | ८ | १ | १० | ८ | २६ | २७ | २७ |
| १२ | १६ | २३ | १ | ८ | २७ | ३६ | २० | २० |
| ५१ | २७ | ११ | ३६ | ९ | ५९ | ३७ | ५० | ५० |
| ५७ | ७४१ | ४३ | २० | १० | ७० | ० | ३ | ३ |
| १७ | १९ | ३८ | ४८ व. | १६ | ४१ | ११ | ११ | ११ |

३ | सू. शु. १ रा. मं. | ४ | चं. २ बु. | १२ गु. | ५ | ११ | ६ | ८ | १०श. | ७ के. | ९

राष्ट्रियज्येष्ठमासः दि. ३१। पञ्चकारम्भः २६।३० (दि. ३।५६)। यायिजययोगः ३०।४२ या.। द्विपुष्करयोगः ३०।४२ या.। (पंजाब)। पञ्चकनिवृत्तिः ५२।४४ (रा. २।२४)। मृत्युबाणनिवृत्तिः ३८।१२ (रा. ८।३५)। यायिजययोगः १८।५६ या.। सर्वार्थसिद्धियोगः समस्त। ♍ "भवेद्यत्र त्रयोदश्यां भूतव्याप्ता महानिशेत्युक्तेः।" यायिजययोगः २०।३ या.। ❖ प्रदक्षिणा भीष्टफलादिद्रव्यैः स्त्रीभिर्विधेया पतिसौख्य वृद्ध्यै। शुभवारान्विते दर्शे सुभिक्षं च प्रजासुखम्। यायिजययोगः २५।५७ उ.। सर्वार्थसिद्धियोगः ३।३१ उ.।

### ज्येष्ठमासकृत्यम्

*पिष्टेन कंजजं (ब्रह्मा) कृत्वा ज्येष्ठे मासि सवैदिकम्। पुष्पैः सम्पूज्य गंधाद्यैर्नानावस्त्रविभूषणैः।। वर्षकोटिशतंसाग्रं सूर्यलोके महीयते। 'कंजजं' (ब्रह्मा)। उदकुम्भं जलं धेनुं तालवृन्तं सचन्दनम्। त्रिविक्रमस्य प्रीत्यर्थं प्रदद्यात् ज्येष्ठमासि च।। (वामनपुराण)*

उपवासादिषड्विधंकर्म। उपवास-एकभक्त-नक्त आयाचितव्रतदानभेदात्।। अत्रोपवासे अहोरात्रस्तत्कालः। तस्याहोरात्रावभोजन सङ्कल्परूपत्वात्। तदहोरात्रावच्छिन्न द्वितीय- भोजनाभाव विशिष्टमध्याह्नभोजनमेकभुक्तम्। तादृशं प्रदोष भोजनं नक्तं। अयाचितलब्धस्य तादृश सकृद्भोजनमयाचितम्। तेऽप्वपि विशेष्यांशे मध्याह्नादिः, विशेषणांशे चाहोरात्र एव कालः। एवं दानव्रतयोरपि प्रातरादिः तत्तत्कर्मणि तत्कालव्यापिनीतिथिरित्यर्थः।। अथामायां वटसावित्री विधिः। अमायाञ्च तथा ज्येष्ठे वटमूले महासती। त्रिरात्रोपोषिता नारी विधिनानेन पूजयेत्।। सावित्रीप्रतिमां कुर्यात् सौवर्णी वापि मृण्मयीम्। सप्तधान्येन संयुक्तां सावित्रीप्रतिमां शुभाम्। विधिना षोडषोपचारैः संपूज्य ब्राह्मणाय दद्यात्।। तन्मंत्रः- सावित्रीयं मया दत्ता सहिरण्या महासती। ब्राह्मणः प्रीणनार्थायब्राह्मण प्रतिगृह्यताम् ।।इति।।

मूल विचार- ज्येष्ठा/मूल- ति. १ भौमे १७।३६ (दि. १२।२४) उ.। ति. ४गुरौ ९।३४(दि. ९।११)या.।
रेवती/अश्विनी- ति. १० बुधे ५१।३९(रा. १।५९) उ.। ति. १२ शुक्रे ५५।८ (रा. ३।२१) या.।
पञ्चक विचार- ति. ७ रवौ २६।३० (दि. ३।५६) उ.। ति. ११ गुरौ ५२।४४(रा. २।२४) या.।

# श्रीसंवत् २०७९ शकः १९४४ सौम्यायनगोलयोः ग्रीष्मर्त्तुः।।

## ज्येष्ठशुक्लपक्षः।।

राष्ट्रिय तिथि १० ज्येष्ठतः २४ तिथिं यावत् १९४४ शकः।।
अंग्रेजी दिनांक ३१ मईतः दिनांक १४ जूनं यावत् सन् २०२२ ई.।।

| दि.मा. घ. | प. | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | योगाः | अं. | फ. | सौ. | ने. | रा. | चन्द्र राशि | प्रवेशः | सूर्योदयः घं. | मि. | सूर्यास्तः घं. | मि. | औदयिक स्पष्ट सूर्यः | | | | क्रान्तिः उ. | + | रे. अं. – | मि. | चन्द्रास्तः स्टै. | टा. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३३ | ३८ | १ | मं | ३० | १९ | दि | ५ | २४ | रोहिणी | ९ | ११ | दि | ८ | ५६ | धृति | ४६ | ८ | रा | ११ | ४३ | वव | ३० | १९ | वा | ६० | ० | मातङ्ग | ३१ | १५ | १६ | १७ | १० | मिथुन | ४२।२१ | ५ | १६ | ६ | ४४ | १ | १५ | १० | ८ | २१ | ४९ | – | ५ | ७ | ४० | मिथुनराशिः (रा.१०।१२)। ◡चन्द्रदर्शनम्। मु. ३० समा। फलं समता। समशृंगं समताकरम्। दशाश्वमेधस्नानारम्भः १० ◆ |
| ३३ | ४० | २ | बु | ३५ | १५ | रा | ७ | २२ | मृगशिरा | १५ | ३० | दि | ११ | २८ | शूल | ४७ | ४३ | रा | १२ | २१ | वा | २ | ४७ | को | ३५ | १५ | अमृत | १ | १६ | १७ | १८ | ११ | | | ५ | १६ | ६ | ४४ | १ | १६ | ७ | २४ | २१ | ५९ | – | ५ | ८ | ३२ | मु. जिल्काद ११ हिजरी सन् १४४३। सोपपदा २ *वेदारम्भानध्यायः*/ जून ६। यायि-स्थायि दुर्लभः सन्धिकर ⌂ |
| ३३ | ४१ | ३ | गु | ४० | २२ | रा | ९ | २५ | आर्द्रा | २२ | ६ | दि | २ | ६ | गण्ड | ४९ | २३ | रा | १ | १ | तै | ७ | ४९ | गर | ४० | २२ | काण | २ | १७ | १८ | १९ | १२ | | | ५ | १६ | ६ | ४४ | १ | १७ | ४ | ३९ | २२ | ६ | – | ४ | ९ | २३ | रम्भा ३ व्रतम्। महाराणाप्रतापजयन्ती ३ (राजस्थाने)। यायिजययोगः २२।६ उ. ४०।२२ या.। सर्वार्थसिद्धियोगः २२।६ उ.। ☯ |
| ३३ | ४३ | ४ | शु | ४५ | ९ | रा | ११ | १९ | पुनर्वसु | २८ | ३१ | दि | ४ | ३९ | वृद्धि | ५० | ४५ | रा | १ | ३३ | व | १२ | ४६ | भ | ४५ | ९ | लुम्बक | ३ | १८ | १९ | २० | १३ | कर्क | ११।५५ | ५ | १५ | ६ | ४५ | १ | १८ | १ | ५३ | २२ | १४ | – | ४ | १० | ९ | भ. १२।४६ उ. (दि. १०।२१) ४५।९ या. (रा. ११।१९)। कर्कराशिः (दि. १०।१)। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रतम्। ♍ |
| ३३ | ४४ | ५ | श | ४९ | १८ | रा | १२ | ५८ | पुष्य | ३४ | २४ | रा | ७ | १ | ध्रुव | ५१ | ३९ | रा | १ | ५५ | वव | १७ | १४ | वा | ४९ | १८ | मित्र | ४ | १९ | २० | २१ | १४ | | | ५ | १५ | ६ | ४५ | १ | १८ | ५९ | ५ | २२ | २१ | – | ४ | १० | ५१ | मृत्युबाणारम्भः ०।५८ (प्रा. ५।३८)। यायिजययोगः ३४।२४ उ. ४९।१८ या.। रवियोगः ३४।२४ उ.। ☯ रवियोगः २२।६ उ.। |
| ३३ | ४६ | ६ | र | ५२ | २९ | रा | २ | १५ | श्लेषा | ३९ | २४ | रा | ९ | १ | व्याघात | ५१ | ४६ | रा | १ | ५७ | को | २० | ५४ | तै | ५२ | २९ | वज्र | ५ | २० | २१ | २२ | १५ | सिंह | ३९।२४ | ५ | १५ | ६ | ४५ | १ | १९ | ५६ | १५ | २२ | २८ | – | ४ | ११ | २९ | सिंहराशिः (रा. ९।१)। श्रीस्कन्दषष्ठी ६ व्रतम्। जमाईषष्ठी (बंगाल)। अरण्यषष्ठी। अरण्यगौरी व्रतम्। शीतलाषष्ठी ❖ |
| ३३ | ४७ | ७ | चं | ५४ | ३२ | रा | ३ | ४ | मघा | ४३ | १८ | रा | १० | ३४ | हर्षण | ५१ | १ | रा | १ | ३९ | गर | २३ | ३१ | व | ५४ | ३२ | ध्वांक्ष | ६ | २१ | २२ | २३ | १६ | | | ५ | १५ | ६ | ४५ | १ | २० | ५३ | २६ | २२ | ३४ | – | ४ | १२ | ३ | भ. ५४।३२ उ. (रा. ३।४)। ⌂ योगः १५।३० उ. ३५।१५ या.। सर्वार्थसिद्धियोगः १५।३० या.। |
| ३३ | ४८ | ८ | मं | ५५ | १८ | रा | ३ | २१ | पू.फा. | ४६ | १ | रा | ११ | ३८ | वज्र | ४९ | १४ | रा | १२ | ५६ | भ | २४ | ५५ | वव | ५५ | १८ | धूम्र | ७ | २२ | २३ | २४ | १७ | | | ५ | १४ | ६ | ४६ | १ | २१ | ५० | ३४ | २२ | ४० | – | ४ | १२ | ३६ | भ. २४।५५ या. (दि. ३।१२)। शुक्ला देव्याः पूजनम्। स्थायिजययोगः ४६।१ या.। रवियोगः ४६।१ उ.। |
| ३३ | ४९ | ९ | बु | ५४ | ४५ | रा | ३ | ८ | उ.फा. | ४७ | २५ | रा | १२ | १२ | सिद्धि | ४६ | २८ | रा | ११ | ४९ | वा | २५ | २ | को | ५४ | ४५ | प्रवर्धमान | ८ | २३ | २४ | २५ | १८ | कन्या | १।२२ | ५ | १४ | ६ | ४६ | १ | २२ | ४७ | ४२ | २२ | ४६ | – | ३ | १ | ९ | कन्याराशिः (प्रा. ५।४७)। नवम्यामुपोष्य देविं प्रपूजयेत्। ⊙ मृगे सूर्यः ३३।५६ (सा. ६।४८)। सर्वार्थसिद्धियोगः ☾ |
| ३३ | ५० | १० | गु | ५२ | ५९ | रा | २ | २६ | हस्त | ४७ | ३६ | रा | १२ | १६ | व्यतिपात | ४२ | ४१ | रा | १० | १८ | तै | २३ | ५२ | गर | ५२ | ५९ | राक्षस | ९ | २४ | २५ | २६ | १९ | | | ५ | १४ | ६ | ४६ | १ | २३ | ४४ | ४९ | २२ | ५१ | – | ३ | १ | ४२ | श्रीगंगादशहरा १०। श्री गंगावतरणम्। श्रीगंगाजन्म (ल. २)। अत्र काश्यां दशाश्वमेध तीर्थे स्नात्वा गङ्गापूजनं ☐ |
| ३३ | ५१ | ११ | शु | ५० | ५ | रा | १ | १६ | चित्रा | ४६ | ३७ | रा | ११ | ५३ | वरीयान | ३७ | ५९ | रा | ८ | २६ | व | २१ | ३२ | भ | ५० | ५ | मुसल | १० | २५ | २६ | २७ | २० | तुला | १७।७ | ५ | १४ | ६ | ४६ | १ | २४ | ४१ | ५५ | २२ | ५६ | – | ३ | २ | १७ | भ. २१।३२ उ. (दि. १।५१) ५०।५ या. (रा. १।१६)। तुलाराशिः (दि. १२।५)। निर्जला ११ एकादशी व्रतं ☎ |
| ३३ | ५२ | १२ | श | ४६ | ११ | रा | ११ | ४२ | स्वाती | ४४ | ४५ | रा | ११ | ८ | परिघ | ३२ | २८ | सा | ६ | १३ | वव | १८ | ८ | वा | ४६ | ११ | सिद्धि | ११ | २६ | २७ | २८ | २१ | | | ५ | १४ | ६ | ४६ | १ | २५ | ३८ | ५९ | २३ | १ | – | ३ | २ | ५६ | कूर्म जयन्ती १२। चम्पक द्वादशी (उड़ीसा)। सर्वार्थसिद्धियोगः ४४।४५ या.। त्रिपुष्करयोगः ४४।४५ उ. ४६।११ या.। |
| ३३ | ५३ | १३ | र | ४१ | २७ | रा | ९ | ४८ | विशाखा | ४२ | ० | रा | १० | १ | शिव | २६ | १७ | दि | ३ | ४४ | को | १३ | ४९ | तै | ४१ | २७ | उत्पात | १२ | २७ | २८ | २९ | २२ | वृश्चिक | २७।४१ | ५ | १३ | ६ | ४७ | १ | २६ | ३६ | २ | २३ | ६ | – | ३ | ३ | ४१ | वृश्चिकराशिः (दि. ४।१७)। प्रदोष १३ व्रतम्। दाक्षिणात्यवटसावित्री व्रतारम्भः दिनत्रयं यावत्। गोत्तमेश्वर ○ |
| ३३ | ५३ | १४ | चं | ३६ | ४ | रा | ७ | ३९ | अनुराधा | ३८ | ३४ | रा | ८ | ३९ | सिद्ध | १९ | २८ | दि | १ | ० | गर | ८ | ४६ | व | ३६ | ४ | मानस | १३ | २८ | २९ | ३० | २३ | | | ५ | १३ | ६ | ४७ | १ | २७ | ३३ | ६ | २३ | १० | – | २ | ४ | ३३ | भ. ३६।४ उ. (रा. ७।३९)। दाक्षिणात्य वटसावित्री व्रतस्य द्वितीय दिनम्। मृत्युबाणारम्भः २८।१८ (दि. ४।३२)। ● |
| ३३ | ५४ | १५ | मं | ३० | १३ | दि | ५ | १८ | ज्येष्ठा | ३४ | ४२ | रा | ७ | ६ | साध्य | १२ | १५ | दि | १० | ७ | भ | ३ | ९ | वव | ३० ५७ | १३ ९ | मुद्गर | १४ | २९ | ३० | ३१ | २४ | धनु | ३४।४२ | ५ | १३ | ६ | ४७ | १ | २८ | ३० | ८ | २३ | १४ | – | २ | – | – | भ. ३।९ या. (प्रा. ६।२९)। धनूराशिः (रा. ७।६)। स्नान-दान-व्रतादौ १५ पूर्णिमा। दाक्षिणात्य वटसावित्रीव्रतम्। |

◆ दिनं यावत्। गंगास्तोत्रस्य पाठवृद्ध्या नित्यपाठः। करवीर१ व्रतम्। द्विपुष्करयोगः ३०।१९ उ.। ♍ उमावतारः ४। उमाचतुर्थी (बंगाल)। गुरुअर्जुन देवशहीद दिवस। स्थायिजययोगः २८।३१ उ. ४५।९ या.। सर्वार्थसिद्धियोगः २८।३१ या.। रवियोगः २८।३१ या.। ❖ (उड़ीसा)। मृत्युबाणनिवृत्तिः ३।५६ (प्रा.६।४९)। यमघंटयोगः ३९।२४ उ.। रवियोगः ३९।२४ या.। ☾ ४७।२५ उ.। रवियोगः ३३।५६ या.। ☐ कार्यम्। इतरैः स्वनिहितनद्यां कार्यम्। सेतुबन्धरामेश्वरप्रतिष्ठादिनम्। गंगास्तोत्रपाठदशाश्वमेधस्नान समाप्तिः। रवियोगः समस्त। ☎ सर्वेषाम्। इयमेव भीमसेनी एकादशी। अद्यशर्करायुतं सहिरण्यं उदकुम्भदानम्। दानमन्त्र- "देव-देव हृषीकेश संसारार्णवतारक उदकुम्भप्रदानेन यास्यामिहरिमंदिरम्।" श्रीकाशी विश्वनाथपञ्चाङ्ग प्रवर्तक पं. हृषीकेशोपाध्याय जयन्ती ११। रवियोगः ४६।३७ या.। ○ दर्शनम्। त्रिविक्रमपूजा। रवियोगः ४२।० उ.। ● यायिजययोगः ३६।४ उ. ३८।३४ या.। सर्वार्थसिद्धियोगः ३८।३४ या.। रवियोगः ३८।३४ या.। ⚘ जलयात्रा १५। मन्वादिः १५। बिल्वत्रिरात्रव्रतम्। संत कबीरजयन्ती १५। मृत्युबाणनिवृत्तिः ३१।२६ (सा. ५।४७)।

मूलविचार- श्लेषा/मघा- ति.५ शनौ ३४।२४ (रा. ७।१) उ.। ति.७ सोमे ४३।१८ (रा. १०।३४) या.। ज्येष्ठा/मूल- ति.१४ सोमे ३८।३४ (रा. ८।३९) उ.।

ज्येष्ठशुक्लैकादश्यां दशाश्वमेधस्नानफलम्। ज्येष्ठमासिसिते पक्षे प्राप्य प्रतिपदं तिथिम्। दशाश्वमेध के स्नात्वा मुच्यतेसर्वकिल्बिषैः। दशहरा। ज्येष्ठे मासि सितेपक्षे दशमी हस्तसयुंता। हरते दश पापानि तस्माद् दशहरा स्मृता। दशमीशुक्लपक्षे तु ज्येष्ठे मासिकुजेऽहनि। अवतीर्णा यतः स्वर्गात् हस्तर्क्षे च सरिद्वरा। दशहरायां गंगापूजनमंत्रः। नमोभगवत्यै दशपापहरायै गंगायै कृष्णायै विष्णुरूपिण्यै नन्दिन्यै नमोनमः। दशहरायां दशयोगाः। ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशमीबुधहस्तयोःव्यतीपाते गरानन्दे कन्या चन्द्रे वृषे रवौ। दशयोगे नरः स्नात्वा मुच्यते सर्वकिल्बिषैः। कल्पभेदेन व्यवस्था। इयं च यत्रैव योगबाहुल्यं सैव ग्राह्या।

### ।। विवाहमुहूर्त्तपञ्चेष्टलग्नविमर्शः।।

ति. १ भौमे रोहिण्यां सूर्ययुतिः। दि.८।५६ उ. मृगे सूर्यभोग्यम्।
ति. २ बुधे मृगे पूर्वदोषः।
ति. ६ रवौ रा.९।१ उ. मघा भे रे. ८ ल. ९ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. १२ वा ल. १२ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. १३।। (षष्ठस्थश्चन्द्रो न शुभः)
ति. ७ सोमे मघा भे रे. ८ दिवा ल. ४ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. १५।। (श.दा.) वा ल. गोधूलिः वा ल. ९ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. १२
ति. ८ भौमे रा.११।३८ उ. उ.फा. भे रे. ९ ल. १२ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. १३।। (षष्ठस्थश्चन्द्रो न शुभः)
ति. ९ बुधे व्यतिपातात्पूर्वं (रा.११।४९) उ.फा. भे रे. ९ दिवा ल. ४ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. १५।। (श.दा.) वा ल. गोधूलिः वा ल. ९ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. १२
ति. १० गुरौ हस्ते भौमवेधो व्यतिपातश्च।
ति. ११ शुक्रे विष्टे परं (रा. १।१६) स्वात्यां रे. ८ ल. १२ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. १३।। (अष्टमस्थश्चन्द्रो न शुभः)
ति. १२ शनौ स्वात्यां रे. ८ ल. गोधूलिः वा ल. ९ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. १७
ति. १३ रवौ रा.१०।१ उ. मैत्रे राहुवेधः।
ति. १४ सोमे मैत्रे पूर्वदोषो मृत्युबाणश्च।
ति. १५ भौमे रा.७।६ उ. मूले रे. ९ ल. ९ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. १२ वा ल. १२ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. १३।।

### ॐ सूर्योदये दैनिकस्पष्टभौमादिग्रहाः ॐ

| ति. | वा. | भौमः | | | | वक्रीबुधः | | | | गुरुः | | | | शुक्रः | | | | मार्गीशनिः | | | | राहुः | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | मं | ११ | ९ | ६ | ४९ | १ | ० | ४० | ४९ | ११ | १० | १८ | २५ | ० | ९ | ३८ | ४० | ९ | २६ | ३६ | ५६ | ० | २७ | १७ | ३९ |
| २ | बु | ११ | ९ | ५० | २७ | मा | ० | २० | १ | ११ | १० | २८ | ४० | ० | १० | ४९ | २० | ९ | २६ | ३७ | १९ | ० | २७ | १४ | २८ |
| ३ | गु | ११ | १० | ३४ | ६ | १ | ० | २५ | ५९ | ११ | १० | ३८ | ४३ | ० | १२ | ० | १३ | ९ | २६ | ३७ | ४२ | ० | २७ | ११ | १७ |
| ४ | शु | ११ | ११ | १७ | ४४ | १ | ० | ३८ | ५३ | ११ | १० | ४७ | ११ | ० | १३ | ११ | ५४ | ९ | २६ | ३८ | ५ | ० | २७ | ८ | ६ |
| ५ | श | ११ | १२ | १ | १४ | १ | ० | ५१ | ४७ | ११ | १० | ५५ | ४० | ० | १४ | २३ | ३४ | ९ | २६ | ३८ | २७ | ० | २७ | ४ | ५६ |
| ६ | र | ११ | १२ | ४४ | ४३ | १ | १ | ४ | ४१ | ११ | ११ | ४ | ४ | ० | १५ | ३५ | १५ | ९ | २६ | ३८ | ५० | ० | २७ | १ | ४५ |
| ७ | चं | ११ | १३ | २८ | १२ | १ | १ | १७ | ४८ | ११ | ११ | १२ | २८ | ० | १६ | ४६ | ५५ | ९ | २६ | ३९ | १३ | ० | २६ | ५८ | ३४ |
| ८ | मं | ११ | १४ | ११ | ४१ | १ | १ | ५६ | ५४ | ११ | ११ | २० | ५३ | ० | १७ | ५८ | ३६ | व | २६ | ३९ | ३६ | ० | २६ | ५५ | २३ |
| ९ | बु | ११ | १४ | ५५ | १० | १ | २ | ३८ | ३३ | ११ | ११ | २९ | १७ | ० | १९ | १० | १६ | ९ | २६ | ३९ | १२ | ० | २६ | ५२ | १२ |
| १० | गु | ११ | १५ | ३८ | ३९ | १ | ३ | २१ | ११ | ११ | ११ | ३७ | ४१ | ० | २० | २१ | ५७ | ९ | २६ | ३८ | ४ | ० | २६ | ४९ | १ |
| ११ | शु | ११ | १६ | २२ | ८ | १ | ४ | ३ | ५० | ११ | ११ | ४६ | ५ | ० | २१ | ३३ | ३८ | ९ | २६ | ३६ | ५५ | ० | २६ | ४५ | ५१ |
| १२ | श | ११ | १७ | ५ | ३७ | १ | ४ | ४६ | २८ | ११ | ११ | ५४ | २९ | ० | २२ | ४५ | १८ | ९ | २६ | ३५ | ४६ | ० | २६ | ४२ | ४० |
| १३ | र | ११ | १७ | ४९ | ६ | १ | ५ | ४९ | १ | ११ | १२ | २ | ५३ | ० | २३ | ५६ | ५९ | ९ | २६ | ३४ | ३८ | ० | २६ | ३९ | २९ |
| १४ | चं | ११ | १८ | ३२ | ३५ | १ | ६ | ५१ | ४२ | ११ | १२ | ११ | १७ | ० | २५ | ८ | ३९ | ९ | २६ | ३३ | २९ | ० | २६ | ३६ | १८ |
| १५ | मं | ११ | १९ | १६ | १ | १ | ७ | ५४ | २४ | ११ | १२ | १९ | ४१ | ० | २६ | २० | २० | ९ | २६ | ३२ | २० | ० | २६ | ३३ | ७ |

*भौमादीनाञ्चारः- भौमः- ति. ११ शुक्रे रेवत्यां २४।३९ (दि.३।६)।। वक्रीबुधः- ति.२ बुधे मार्गी ४६।३७ (रा. ११।५५)।। गुरुः-उत्तराभाद्रपदा ३ चरणे ।। शुक्रः- ति. ४ शुक्रे भरण्यां ६।४७ (दि. ७।५८)। ति. १५ भौमे कृत्तिका भे १६।२८ (दि. ११।४८)।। मार्गीशनिः- ति. ८ भौमे वक्री २९।२२ (दि. ४।५९)।। राहुः- ति.१२ शनौ भरणी ४ चरणे केतुश्च विशाखा २ चरणे ५०।१५ (रा. १।२०)।।*

ज्येष्ठशुक्ल द्वितीयायां तृतीयायां प्रजायते। नक्षत्रार्द्रा तदा वृष्टिर्महा दुभिक्षकारिणी।।

### ९ पं० ज्येष्ठशुक्ल ८ भौमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।

द्युगणः २७०२
अयनांशाः २४।९।१५

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ४ | ११ | १ | ११ | ० | ९ | ० | ६ |
| २१ | १६ | १४ | १ | ११ | १७ | २६ | २६ | २६ |
| ५० | ५३ | ११ | ५६ | २० | ५८ | ३९ | ५५ | ५५ |
| ३४ | ७ | ४१ | ५४ | ५३ | ३६ | ३६ | २३ | २३ |
| ५७ | ७६५ | ४३ | ४१ | ८ | ७१ | ९ | ३ | ३ |
| ८ | २१ | २९ | ३९ मा. | २४ | ४० | ८ व. | ११ | ११ |

३ | शु. १ रा. | मं. १२ गु. | ४ | सू. २ बु. | ५ चं. | ११ | ६ | ८ | १०श. | ७ के. | ९

पक्षेऽस्मिन् विविधमुहूर्त्ताः- ति. १ भौमे रोहिण्यां सूर्ययुतिः। मृगे सूर्यभोग्यम्। ति. २ बुधे दि. ११।२८ उ. आर्द्रा भे धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ३ गुरौ आर्द्रा भे अक्षरारम्भ-विद्यारम्भ (ल. २ वा ४) धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। दि. २।६ उ. रा.९।२५ या. पुनर्वसौ शिशुताम्बूलभक्षण शय्यासनाद्युपभोग सुभगांविनानववस्त्रधारण गोक्रय-विक्रय पश्चिम दिग्यात्रा नवान्नभक्षण भैषज्य नौकाघटन जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. ९) हलप्रवहण अश्वकृत्य मुहूर्त्तः। ति. ४ शुक्रे पुनर्वसौ रिक्तादोषो विष्टिश्च। ति. ५ शनौ पुष्ये सुभगांविनाकृष्णवस्त्रधारण पूर्वांविनान्य दिग्यात्रा जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल.४) विपणि मुहूर्त्तः। ति. ६ रवौ श्लेषा भे विद्यारम्भ (ल. ४) वस्तुविक्रय धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ७ सोमे मघा भे कणमर्दन धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ८ भौमे विष्टेःपरं (दि. ३।१२) उ. पू.फा. भे शस्त्रघटन मुहूर्त्तः। ति. ९ बुधे उ.फा. भे रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। ति. १० गुरौ हस्ते भौमवेधो व्यतिपातश्च। रा. १२।१६ उ. चित्रा भे गृहप्रवेश (ल. २) मुहूर्त्तः। ति. ११ शुक्रे विष्टेःपूर्वं (दि. १।५१) चित्रा भे जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण शय्यासनाद्युपभोग नववस्त्रधारण लतापादपारोपण शिल्पविद्या भैषज्य नौकाघटन चौलकेशान्त (ल. २ वा ४) अक्षरारम्भ-विद्यारम्भ (ल. २ वा ४) उपनयन (ल. ४) जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल.४) गृहप्रवेश (ल. २) हलप्रवहण विपणि व्यापार वस्तुक्रय गजकृत्य मुहूर्त्तः। ति. १२ शनौ स्वात्यां कृष्णवस्त्रधारण बीजोप्ति मुहूर्त्तः। ति. १३ रवौ विशाखा भे शनिवेधः। ति. १४ सोमे मैत्रे रिक्तादोषः। ति. १५ भौमे ज्येष्ठा भे विष्टेः परं शिरामोक्षण शस्त्रघटन मुहूर्त्तः।

| तिथि ल.अ. | १ मं | | २ बु | | ३ गु | | ४ शु | | ५ श | | ६ र | | ७ चं | | ८ मं | | ९ बु | | १० गु | | ११ शु | | १२ श | | १३ र | | १४ चं | | १५ मं | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. |
| वृष | ६ | १३ | ६ | ९ | ६ | ५ | ६ | १ | ५ | ५७ | ५ | ५३ | ५ | ४९ | ५ | ४५ | ५ | ४१ | ५ | ३७ | ५ | ३३ | ५ | २९ | ५ | २५ | ५ | २१ | ५ | १७ |
| मिथुन | ८ | २७ | ८ | २३ | ८ | १९ | ८ | १५ | ८ | ११ | ८ | ७ | ८ | ३ | ७ | ५९ | ७ | ५५ | ७ | ५१ | ७ | ४७ | ७ | ४३ | ७ | ३९ | ७ | ३५ | ७ | ३१ |
| कर्क | १० | ४५ | १० | ४१ | १० | ३७ | १० | ३३ | १० | २९ | १० | २५ | १० | २१ | १० | १७ | १० | १३ | १० | ९ | १० | ५ | १० | १ | ९ | ५७ | ९ | ५३ | ९ | ४९ |
| सिंह | १२ | ५९ | १२ | ५५ | १२ | ५१ | १२ | ४७ | १२ | ४३ | १२ | ३९ | १२ | ३५ | १२ | ३१ | १२ | २७ | १२ | २३ | १२ | १९ | १२ | १५ | १२ | ११ | १२ | ७ | १२ | ३ |
| कन्या | ३ | १२ | ३ | ८ | ३ | ४ | ३ | ० | २ | ५६ | २ | ५२ | २ | ४८ | २ | ४४ | २ | ४० | २ | ३६ | २ | ३२ | २ | २८ | २ | २४ | २ | २० | २ | १६ |
| तुला | ५ | २८ | ५ | २४ | ५ | २० | ५ | १६ | ५ | १२ | ५ | ८ | ५ | ४ | ५ | ० | ४ | ५६ | ४ | ५२ | ४ | ४८ | ४ | ४४ | ४ | ४० | ४ | ३६ | ४ | ३२ |
| ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | |
| वृश्चिक | ७ | ४५ | ७ | ४१ | ७ | ३७ | ७ | ३३ | ७ | २९ | ७ | २५ | ७ | २१ | ७ | १७ | ७ | १३ | ७ | ९ | ७ | ५ | ७ | १ | ६ | ५७ | ६ | ५३ | ६ | ४९ |
| धनु | ९ | ५१ | ९ | ४७ | ९ | ४३ | ९ | ३९ | ९ | ३५ | ९ | ३१ | ९ | २७ | ९ | २३ | ९ | १९ | ९ | १५ | ९ | ११ | ९ | ७ | ९ | ३ | ८ | ५९ | ८ | ५५ |
| मकर | ११ | ३८ | ११ | ३४ | ११ | ३० | ११ | २६ | ११ | २२ | ११ | १८ | ११ | १४ | ११ | १० | ११ | ६ | ११ | २ | १० | ५८ | १० | ५४ | १० | ५० | १० | ४६ | १० | ४२ |
| कुम्भ | १ | ९ | १ | ५ | १ | १ | १२ | ५७ | १२ | ५३ | १२ | ४९ | १२ | ४५ | १२ | ४१ | १२ | ३७ | १२ | ३३ | १२ | २९ | १२ | २५ | १२ | २१ | १२ | १७ | १२ | १३ |
| मीन | २ | ३७ | २ | ३३ | २ | २९ | २ | २५ | २ | २१ | २ | १७ | २ | १३ | २ | ९ | २ | ५ | २ | १ | १ | ५७ | १ | ५३ | १ | ४९ | १ | ४५ | १ | ४१ |
| मेष | ४ | १४ | ४ | १० | ४ | ६ | ४ | २ | ३ | ५८ | ३ | ५४ | ३ | ५० | ३ | ४६ | ३ | ४२ | ३ | ३८ | ३ | ३४ | ३ | ३० | ३ | २६ | ३ | २२ | ३ | १८ |

### १० पं० ज्येष्ठशुक्ल १५ भौमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।

द्युगणः २७०९
अयनांशाः २४।९।१६

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ७ | ११ | १ | ११ | ० | ९ | ० | ६ |
| २८ | २१ | १९ | ७ | १२ | २६ | २६ | २६ | २६ |
| ३० | ४५ | १६ | ५४ | १९ | २० | ३२ | ३३ | ३३ |
| ८ | ३३ | १ | २४ | ४१ | २० | २० | ७ | ७ |
| ५७ | ८५५ | ४१ | ६२ | ८ | ७१ | १ | ३ | ३ |
| १ | ६ | ४७ | ४१ मा. | २४ | ४० | ९ व. | ११ | ११ |

३ | शु. १ रा. | मं. १२ गु. | ४ | सू. २ बु. | ५ | ११ | ६ | ८ चं. | १०श. | ७ के. | ९

# श्रीसंवत् २०७९ शकः १९४४ सौम्यायनगोलयोः ग्रीष्मर्त्तुः।।

| दि.मा. घ. | प. | ति. | वा. | तिथि घ. | प. | | घं. | मि. | नक्षत्र | घ. | प. | | घं. | मि. | योग | घ. | प. | | घं. | मि. | करण | घ. | प. | करण | घ. | प. | योगाः | अं. | फ. | सौ. | त्रे. | रा. | चन्द्र राशि | प्रवेशः | सूर्योदयः घं. | मि. | सूर्यास्तः घं. | मि. | औदयिक स्पष्ट सूर्यः | | | | क्रान्तिः उ. | + | रे. अं. ∓ | मि. | चन्द्रोदयः स्टै. | टा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३३ | ५५ | १ | बु | २४ | ५ | दि | २ | ५१ | मूल | ३० | ३७ | सा | ५ | २८ | शुभ | ४/५२ | ४४/२१ | प्रा | ७/४ | ७/३ | कौ | २४ | ५ | तै | ५० | ५९ | ध्वज | १५ | १ | ३१ | १ | २५ | | | ५ | १३ | ६ | ४७ | १ | २९ | २७ | ९ | २३ | १७ | - | २ | ८ | ५ |
| ३३ | ५५ | २ | गु | १७ | ५३ | दि | १२ | २२ | पू.षा. | २६ | २४ | दि | ३ | ४७ | ब्रह्म | ४९ | ३२ | रा | १ | २ | गर | १७ | ५३ | व | ४४ | ५० | धाता | १६ | २ | १ | २ | २६ | मकर | ४०।२४ | ५ | १३ | ६ | ४७ | २ | ० | २४ | ९ | २३ | २० | - | २ | ९ | ८ |
| ३३ | ५६ | ३ | शु | ११ | ४७ | दि | ९ | ५६ | उ.षा. | २२ | २३ | दि | २ | १० | ऐन्द्र | ४२ | ८ | रा | १० | ४ | भ | ११ | ४७ | वव | ३८ | ५४ | आनन्द | १७ | ३ | २ | ३ | २७ | | | ५ | १३ | ६ | ४७ | २ | १ | २१ | ९ | २३ | २२ | - | २ | १० | २ |
| ३३ | ५६ | ४ | श | ६ | १ | दि | ७ | ३७ | श्रवण | १८ | ४५ | दि | १२ | ४३ | वैधृति | ३५ | ६ | रा | ७ | १५ | वा | ६ | १ | कौ | ३३ | २५ | सुस्थिर | १८ | ४ | ३ | ४ | २८ | कुम्भ | ४७।१२ | ५ | १३ | ६ | ४७ | २ | २ | १८ | ७ | २३ | २४ | - | २ | १० | ४८ |
| ३३ | ५६ | ५ | र | ०/५५ | ४८/२८ | प्रा | ५/३ | ३२/४३ | धनिष्ठा | १५ | ३८ | दि | ११ | २८ | विष्कुम्भ | २८ | ३५ | दि | ४ | ३९ | तै | ० | ४८ | गर | २८/५६ | ३२/१६ | मातङ्ग | १९ | ५ | ४ | ५ | २९ | | | ५ | १३ | ६ | ४७ | २ | ३ | १५ | ५ | २३ | २५ | - | १ | ११ | २८ |
| ३३ | ५७ | ७ | चं | ५२ | ३६ | रा | २ | १५ | शतभिष | १३ | २३ | दि | १० | ३४ | प्रीति | २२ | ४४ | दि | २ | १९ | भ | २४ | २६ | वव | ५२ | ३६ | अमृत | २० | ६ | ५ | ६ | ३० | मीन | ५७।१६ | ५ | १३ | ६ | ४७ | २ | ४ | १२ | २ | २३ | २७ | - | १ | १२ | २ |
| ३३ | ५७ | ८ | मं | ४९ | ५६ | रा | १ | ११ | पू.भा. | ११ | ५४ | दि | ९ | ५९ | आयुष्मान | १७ | ३८ | दि | १२ | १६ | वा | २१ | १६ | कौ | ४९ | ५६ | काण | २१ | ७ | ६ | ७ | ३१ | | | ५ | १३ | ६ | ४७ | २ | ५ | ८ | ५८ | २३ | २७ | - | १ | १२ | ३५ |
| ३३ | ५७ | ९ | बु | ४८ | २८ | रा | १२ | ३६ | उ.भा. | ११ | ३१ | दि | ९ | ४९ | सौभाग्य | १३ | २२ | दि | १० | ३४ | तै | १९ | १२ | गर | ४८ | २८ | लुम्बक | २२ | ८ | ७ | ८ | १ | | | ५ | १३ | ६ | ४७ | २ | ६ | ५ | ५५ | २३ | २७ | - | ० | १ | ७ |
| ३३ | ५७ | १० | गु | ४८ | १४ | रा | १२ | ३१ | रेवती | १२ | २० | दि | १० | ९ | शोभन | १० | ७ | दि | ९ | १६ | व | १८ | २१ | भ | ४८ | १४ | मित्र | २३ | ९ | ८ | ९ | २ | मेष | १२।२० | ५ | १३ | ६ | ४७ | २ | ७ | २ | ५१ | २३ | २७ | - | ० | १ | ३९ |
| ३३ | ५७ | ११ | शु | ४९ | २० | रा | १२ | ५७ | अश्विनी | १४ | २३ | दि | १० | ५८ | अतिगण्ड | ७ | ५१ | दि | ८ | २१ | वव | १८ | ४७ | वा | ४९ | २० | वज्र | २४ | १० | ९ | १० | ३ | | | ५ | १३ | ६ | ४७ | २ | ७ | ५९ | ४६ | २३ | २६ | + | ० | २ | १२ |
| ३३ | ५६ | १२ | श | ५१ | ३७ | रा | १ | ५२ | भरणी | १७ | ४५ | दि | १२ | १९ | सुकर्मा | ६ | ४० | दि | ७ | ५३ | कौ | २० | २९ | तै | ५१ | ३७ | ध्वांक्ष | २५ | ११ | १० | ११ | ४ | वृष | ३३।५२ | ५ | १३ | ६ | ४७ | २ | ८ | ५६ | ४१ | २३ | २५ | + | ० | २ | ४८ |
| ३३ | ५६ | १३ | र | ५५ | २ | रा | ३ | १४ | कृत्तिका | २२ | १३ | दि | २ | ६ | धृति | ६ | १८ | दि | ७ | ४४ | गर | २३ | २० | व | ५५ | २ | धूम्र | २६ | १२ | ११ | १२ | ५ | | | ५ | १३ | ६ | ४७ | २ | ९ | ५३ | ३६ | २३ | २४ | + | १ | ३ | २८ |
| ३३ | ५६ | १४ | चं | ५९ | १९ | रा | ४ | ५७ | रोहिणी | २७ | ४२ | दि | ४ | १८ | शूल | ६ | ५० | दि | ७ | ५७ | भ | २७ | ११ | श | ५९ | १९ | प्रवर्धमान | २७ | १३ | १२ | १३ | ६ | | | ५ | १३ | ६ | ४७ | २ | १० | ५० | ३० | २३ | २२ | + | १ | ४ | १२ |
| ३३ | ५५ | ३० | मं | ६० | ० | स | म | स्त | मृगशिरा | ३३ | ५२ | सा | ६ | ४६ | गण्ड | ८ | ० | दि | ८ | २५ | च | ३१ | ४६ | नाग | ६० | ० | राक्षस | २८ | १४ | १३ | १४ | ७ | मिथुन | ०।४७ | ५ | १३ | ६ | ४७ | २ | ११ | ४७ | २३ | २३ | २० | + | १ | ५ | ० |
| ३३ | ५५ | ३० | बु | ४ | १२ | प्रा | ६ | ५४ | आर्द्रा | ४० | २५ | रा | ९ | २३ | वृद्धि | ९ | ३४ | दि | ९ | ३ | नाग | ४ | १२ | किं | ३६ | ४४ | मुसल | २९ | १५ | १४ | १५ | ८ | | | ५ | १३ | ६ | ४७ | २ | १२ | ४४ | १६ | २३ | १७ | + | १ | - | - |

# आषाढकृष्णपक्षः।।

राष्ट्रिय तिथि २५ ज्येष्ठतः तिथि ८ आषाढं यावत् १९४४ शकः।।
अंग्रेजी दिनांक १५ जूनतः २९ दिनांकं यावत् सन् २०२२ ई.।।

आषाढमासे प्रथमे च पक्षे निरभ्रदृष्टे रविमण्डले च। विद्युन्नगर्जत्यथ नैव मेघो मासद्वयं तत्र न वर्षणं स्यात्।। गुरुहर◆
भ. ४४।५० उ. (रा. ११।९)। मकरराशिः (रा. ९।२३)। सौरआषाढमासारम्भः। मृत्युबाणारम्भः ३७।४४ ☒
भ. ११।४७ या. (दि. ९।५६)। संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रतम्। चन्द्रोदयः (रा. १०।२)। मृत्युबाणनिवृत्तिः ४०।५५ ◐
कुम्भराशिः (रा. १२।६)। पञ्चकारम्भः ४७।१२ (रा. १२।६)। यायिजययोगः १८।४५ उ.। सर्वार्थसिद्धियोगः ♍
भ. ५६।१६ उ. (रा. ३।४३)। यायिजययोगः ०।४८ या.। रवियोगः १५।३८ उ.। ♍१८।४५ या.।
भ. २४।२६ या. (दि. २।५९)। मीनराशिः (रा. ४।७)। रवियोगः १३।२३ या.। ☒(रा. ८।१९)। यायिजययोगः २६।२४ उ.।
श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रतम्। पर्युषितान्नपानादिकमत्रविहितम्। कालाष्टमी ८। ⊙सायन कर्के सूर्यः ४३।५९ ❖
⊙आर्द्रा भे सूर्यः ३५।५५ (रा. ७।३५)। स्त्री. पु.-चं.चं. योगः। मेघवाहनं वह्निनाडी तदीशः भौमः खण्डवृष्टियोगः।◐
भ. १८।२१ उ. (दि. १२।३३) ४८।१४ या. (रा. १२।३१)। मेषराशिः (दि. १०।१९)। पञ्चकनिवृत्तिः १२।२० ☐
योगिनी ११ एकादशी व्रतं सर्वेषाम्। "आषाढ़े कृष्णपक्षे तु योगिनीव्रतमाचरेत्। अस्यव्रतस्यपुण्येन कुष्ठो नश्यति ☎
वृषराशिः (सा. ६।८६)। त्रिपुष्करयोगः १७।४५ उ. ५१।३७ या.। ☐(दि. १०।१९)। सर्वार्थसिद्धियोगः समस्त।
भ. ५५।२ उ. (रा. ३।१४)। प्रदोष १३ व्रतम्। मृत्युबाणारम्भः ६।४५ (दि. ७।५५)। यायिजययोगः २२।१३ उ. ५५।२ या.।
भ. २७।११ या. (दि. ४।५)। मासशिवरात्रि १४ व्रतम्। मृत्युबाणनिवृत्तिः १०।१ (दि. ९।१३)। सर्वार्थसिद्धियोगः समस्त। अमृतसिद्धियोगः २७।४२ उ.।
मिथुनराशिः (प्रा. ५।३२)। स्नान-दान-श्राद्धादौ ३० अमावस्या। भौमवती अमावस्या। अमायाश्च यदा वारो भवेद्भूमि सूतस्य च। गंगायां यदि लभ्येत कोटि○
स्नान-दानादौ ३० अमावस्या। शुभवारान्विते दर्शे सुभिक्षं च प्रजासुखम्। ○ सूर्य ग्रहैः समा। यमघंटयोगः ३३।५२ उ.।

।। विवाहमुहूर्त्तपञ्चेष्टलग्नविमर्शः।।

- ति. १ बुधे मूले रे. ९ दिवा पञ्चेष्टलग्नाभावः।
- ति. २ गुरौ दि. ३।४७ उ. उ.षा. भे सूर्यवेधो मृत्युबाणश्च।
- ति. ३ शुक्रे उ.षा. भे पूर्वदोषः।
- ति. ८ भौमे दि.९।४९ उ. उ.भा. भे रे.७ ल. गोधूलिः वा ल. १० इष्टा: ६ ग्र.व.वि. १७ वा ल. २ इष्टा: ६ ग्र.व.वि. १५
- ति. ९ बुधे उ.भा. भेरे.७ दिवा सल्लग्नाभावः। दि.९।४९ उ. रेवत्यां भौमयुतिः।
- ति. १० गुरौ रेवत्यां पूर्वदोषः।

## ॐ सूर्योदये दैनिकस्पष्टभौमादिग्रहाः ॐ

| ति. | वा. | भौमः | | | | बुधः | | | | गुरुः | | | | शुक्रः | | | | वक्रीशनिः | | | | राहुः | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | बु | ११ | १९ | ५७ | ४८ | १ | ८ | ५७ | ५ | ११ | १२ | २८ | ५ | ० | २७ | ३२ | ० | ९ | २६ | ३१ | ११ | ० | २६ | २९ | ५७ |
| २ | गु | ११ | २० | ३९ | ३५ | १ | १० | ० | १९ | ११ | १२ | ३६ | २९ | ० | २८ | ४३ | ४१ | ९ | २६ | ३० | ४ | ० | २६ | २६ | ४६ |
| ३ | शु | ११ | २१ | १९ | २१ | १ | ११ | १९ | १८ | ११ | १२ | ४४ | ५३ | ० | २९ | ५५ | २१ | ९ | २६ | २८ | ५९ | ० | २६ | २३ | ३५ |
| ४ | श | ११ | २२ | ३ | ८ | १ | १२ | ३८ | १६ | ११ | १२ | ५३ | १७ | १ | १ | ६ | ५६ | ९ | २६ | २७ | ५४ | ० | २६ | २० | २४ |
| ५ | र | ११ | २२ | ४४ | ५५ | १ | १३ | ५७ | १५ | ११ | १३ | ० | ५९ | १ | २ | १८ | १० | ९ | २६ | २६ | ४९ | ० | २६ | १७ | १३ |
| ७ | चं | ११ | २३ | २६ | ४१ | १ | १५ | २६ | १३ | ११ | १३ | ७ | १५ | १ | ३ | २९ | ३३ | ९ | २६ | २५ | ४४ | ० | २६ | १४ | ३ |
| ८ | मं | ११ | २४ | ८ | २८ | १ | १६ | ५५ | १२ | ११ | १३ | १३ | २९ | १ | ४ | ४० | ५६ | ९ | २६ | २४ | ३९ | ० | २६ | १० | ५२ |
| ९ | बु | ११ | २४ | ५० | १५ | १ | १८ | ५ | ९ | ११ | १३ | १९ | ३९ | १ | ५ | ५२ | २० | ९ | २६ | २३ | ३४ | ० | २६ | ७ | ४१ |
| १० | गु | ११ | २५ | ३२ | १ | १ | १९ | ३४ | ७ | ११ | १३ | २५ | ४९ | १ | ७ | ३ | ४३ | ९ | २६ | २२ | ३० | ० | २६ | ४ | ३० |
| ११ | शु | ११ | २६ | १३ | ४८ | १ | २१ | ३ | ४ | ११ | १३ | ३१ | ५९ | १ | ८ | १५ | ६ | ९ | २६ | २१ | २५ | ० | २६ | १ | १९ |
| १२ | श | ११ | २६ | ५५ | ३५ | १ | २२ | ३२ | ३ | ११ | १३ | ३८ | ९ | १ | ९ | २६ | ३० | ९ | २६ | २० | १४ | ० | २५ | ५८ | ९ |
| १३ | र | ११ | २७ | ३७ | २१ | १ | २४ | १ | १ | ११ | १३ | ४४ | १८ | १ | १० | ३७ | ५३ | ९ | २६ | १९ | १ | ० | २५ | ५४ | ५८ |
| १४ | चं | ११ | २८ | १९ | ८ | १ | २५ | ३० | ० | ११ | १३ | ५० | २८ | १ | ११ | ४९ | १६ | ९ | २६ | १७ | ५० | ० | २५ | ५१ | ४७ |
| ३० | मं | ११ | २९ | ० | ५५ | १ | २६ | ५८ | ५९ | ११ | १३ | ५६ | ३८ | १ | १३ | ० | ३९ | ९ | २६ | १६ | ३८ | ० | २५ | ४८ | ३६ |
| ३० | बु | ११ | २९ | ४२ | ४१ | १ | २८ | २७ | ५८ | ११ | १४ | २ | ४८ | १ | १४ | १२ | ३ | ९ | २६ | १५ | २५ | ० | २५ | ४५ | २५ |

भौमादिनाक्षत्रचारः:- भौमः- ति. ३० बुधे अश्विन्यां मेषे च २४।५२(दि. ३।१०)।। बुधः- ति. १ बुधे रोहिण्यां ५९।४२ (रा. शे.५।६)। ति. १२ शनौ मृगे ३२।५ (सा. ६।३)। ति. ३० बुधे मिथुने ४१।५८ (रा. १०।०)।। गुरुः- ति. ९ बुधे उत्तराभाद्रपदा ४ चरणे ३।२४(प्रा. ६।३५)।। शुक्रः- ति. ३ शुक्रे वृषे ३।५४ (प्रा. ६।४७)। ति. १२ शनौ रोहिण्यां २८।२(दि. ४।२६)।। वक्रीशनिः- धनिष्ठा १ चरणे।। राहुः- भरणी ४ चरणे केतुश्च विशाखा २ चरणे।।

११ पं० आषाढ़कृष्ण ८ भौमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।
द्युगणः २७१६
अयनांशाः २४।९।१७

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | ११ | ११ | १ | ११ | १ | ९ | ० | ६ |
| ५ | ० | २४ | १६ | १३ | ४ | २६ | २६ | २६ |
| ८ | ३७ | ८ | ३६ | १३ | ४० | २१ | १० | १० |
| ५८ | ७ | ८ | १२ | १२ | ५६ | ३९ | ५२ | ५२ |
| ५६ | ८२९ | ४१ | ८८ | ६ | ७१ | १ | ३ | ३ |
| ५७ | १७ | ४७ | ५७ | ० | २४ | ५ व. | ११ | ११ |

| | | |
|---|---|---|
| ४ | | बु.२ शु. |
| ५ | सू. ३ चं. | १ रा. |
| | ६ | म.१२ गु. |
| ७ के. | ९ | ११ |
| | ८ | १० श. |

पक्षेऽस्मिन् विविधमुहूर्त्ताः- ति. १ बुधे मूले पुंसवनसीमन्त शिशुताम्बूलभक्षण कणमर्दन धान्यारोपण भैषज्य बीजोप्ति धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. २ गुरौ पू.षा.भे शिल्पविद्या नौकाघटन विद्यारम्भ (ल. ४) मुहूर्त्तः। ति. ३ शुक्रे उ.षा. भे सूर्यवेधो रिक्तादोषश्च। ति. ४ शनौ श्रवणे वैधृतिदोषः। चतुर्थ्यां रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। ति. ५ रवौ धनिष्ठा भे शनियुतिः। दि. ११।२८ उ. शतभिषजि भूषाघटन लतापादपारोपण गोक्रय-विक्रय भैषज्य नौकाघटन वस्तुक्रय गजाश्वकृत्य शिरामोक्षण धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ७ सोमे विष्टेःपरं (दि.२।५९) पू.भा. भे धान्यारोपण शिल्पविद्या वस्तुविक्रय धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ८ भौमे पू.भा. भे भूषाघटन वस्तुविक्रय शस्त्रघटन मुहूर्त्तः। दि. ९।५९ उ. उ.भा.भे सुभगांविनारक्तवस्त्रधारण भूषाघटन हलप्रवहण मुहूर्त्तः। ति. ९ बुधे उ.भा. भे रिक्तादोषः। ति. १० गुरौ रेवत्यां भौमयुतिः। अश्विन्यां भौमभोग्यं विष्टिश्च। ति. ११ शुक्रे अश्विन्यां पूर्वदोषः। भरण्यां राहुयुतिः। ति. १२ शनौ भरण्यां पूर्वदोषः। कृत्तिका भे वस्तुविक्रय शस्त्रघटन मुहूर्त्तः। परं मासान्तादिदोषः।

| तिथि ल.अ. | १ बु घं. | मि. | तिथि ल.अ. | २ गु घं. | मि. | ३ शु घं. | मि. | ४ श घं. | मि. | ५ र घं. | मि. | ७ चं घं. | मि. | ८ मं घं. | मि. | ९ बु घं. | मि. | १० गु घं. | मि. | ११ शु घं. | मि. | १२ श घं. | मि. | १३ र घं. | मि. | १४ चं घं. | मि. | ३० मं घं. | मि. | ३० बु घं. | मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वृष | ५ | १४ | मिथुन | ७ | २३ | ७ | १८ | ७ | १४ | ७ | १० | ७ | ६ | ७ | २ | ६ | ५८ | ६ | ५४ | ६ | ४९ | ६ | ४५ | ६ | ४१ | ६ | ३७ | ६ | ३३ | ६ | २९ |
| मिथुन | ७ | २८ | कर्क | ९ | ४१ | ९ | ३६ | ९ | ३२ | ९ | २८ | ९ | २४ | ९ | २० | ९ | १६ | ९ | १२ | ९ | ७ | ९ | ३ | ८ | ५९ | ८ | ५५ | ८ | ५१ | ८ | ४७ |
| कर्क | ९ | ४६ | सिंह | ११ | ५५ | ११ | ५० | ११ | ४६ | ११ | ४२ | ११ | ३८ | ११ | ३४ | ११ | ३० | ११ | २६ | ११ | २२ | ११ | १७ | ११ | १३ | ११ | ९ | ११ | ५ | ११ | १ |
| सिंह | १२ | ० | कन्या | २ | ८ | २ | ३ | १ | ५९ | १ | ५५ | १ | ५१ | १ | ४७ | १ | ४३ | १ | ३९ | १ | ३४ | १ | ३० | १ | २६ | १ | २२ | १ | १८ | १ | १४ |
| कन्या | २ | १३ | तुला | ४ | २४ | ४ | १९ | ४ | १५ | ४ | ११ | ४ | ७ | ४ | ३ | ३ | ५९ | ३ | ५५ | ३ | ५० | ३ | ४६ | ३ | ४२ | ३ | ३८ | ३ | ३४ | ३ | ३० |
| तुला | ४ | २९ | वृश्चिक | ६ | ४१ | ६ | ३६ | ६ | ३२ | ६ | २८ | ६ | २४ | ६ | २० | ६ | १६ | ६ | १२ | ६ | ७ | ६ | ३ | ५ | ५९ | ५ | ५५ | ५ | ५१ | ५ | ४७ |
| ल.अ. | रात्रि | | ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | |
| वृश्चिक | ६ | ४६ | धनु | ८ | ४७ | ८ | ४२ | ८ | ३८ | ८ | ३४ | ८ | ३० | ८ | २६ | ८ | २२ | ८ | १८ | ८ | १३ | ८ | ९ | ८ | ५ | ८ | १ | ७ | ५७ | ७ | ५३ |
| धनु | ८ | ५२ | मकर | १० | ३४ | १० | २९ | १० | २५ | १० | २१ | १० | १७ | १० | १३ | १० | ९ | १० | ५ | १० | ० | ९ | ५६ | ९ | ५२ | ९ | ४८ | ९ | ४४ | ९ | ४० |
| मकर | १० | ३९ | कुम्भ | १२ | ५ | १२ | ० | ११ | ५६ | ११ | ५२ | ११ | ४८ | ११ | ४४ | ११ | ४० | ११ | ३६ | ११ | ३१ | ११ | २७ | ११ | २३ | ११ | १९ | ११ | १५ | ११ | ११ |
| कुम्भ | १२ | १० | मीन | १ | ३३ | १ | २८ | १ | २४ | १ | २० | १ | १६ | १ | १२ | १ | ८ | १ | ४ | १२ | ५९ | १२ | ५५ | १२ | ५१ | १२ | ४७ | १२ | ४३ | १२ | ३९ |
| मीन | १ | ३८ | मेष | ३ | १० | ३ | ५ | ३ | १ | २ | ५७ | २ | ५३ | २ | ४९ | २ | ४५ | २ | ४१ | २ | ३६ | २ | ३२ | २ | २८ | २ | २४ | २ | २० | २ | १६ |
| मेष | ३ | १५ | वृष | ५ | ६ | ५ | १ | ४ | ५७ | ४ | ५३ | ४ | ४९ | ४ | ४५ | ४ | ४१ | ४ | ३७ | ४ | ३२ | ४ | २८ | ४ | २४ | ४ | २० | ४ | १६ | ४ | १२ |

१२ पं० आषाढ़कृष्ण ३०बुधे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।
द्युगणः २७२४
अयनांशाः २४।९।१८

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | २ | ११ | १ | ११ | १ | ९ | ० | ६ |
| १२ | ११ | २९ | २८ | १४ | १४ | २६ | २५ | २५ |
| ४४ | ५४ | ४२ | ५२ | २ | १५ | ७ | ४५ | ४५ |
| १६ | १३ | ४१ | १५ | ४८ | २० | १२ | २५ | २५ |
| ५६ | ७२१ | ४१ | ९६ | ६ | ७२ | २ | ३ | ३ |
| ५२ | १६ | ४७ | ५० | १० | २४ | ३६ व. | ११ | ११ |

| | | |
|---|---|---|
| ४ | | बु.२ शु. |
| ५ | सू. ३ चं. | १ रा. |
| | ६ | मं.१२ गु. |
| ७ के. | ९ | ११ |
| | ८ | १० श. |

◆गोविन्दसिंहजयन्ती। ⊙सं.मिथुने सूर्यः ३४।३५(रा. ७।३)। मु.३० समा। फलं समता। पराः१६ घट्यःपुण्याः। वस्त्रान्नदानम् । स्नानं मन्दाकिन्याम् । यायि-स्थायि दुर्लभःसन्धिकरयोगः २४।५ उ.३०।३७ या.। यमघंटयोगः ३०।३७ या.।
◐(रा. ९।३५)। स्थायिजययोगः २२।२३ उ.। सर्वार्थसिद्धियोगः २२।२३ उ.।
❖(रा. १०।४९)। स्थायिजययोगः ११।५४ या.। सर्वार्थसिद्धियोगः ११।५४ उ.।
◐ राष्ट्रियआषाढमासः दि. ३१। ☎वैधृवम्। श्री देवराहा बाबा पुण्यतिथिः। सर्वार्थसिद्धियोगः१४।२३ या.।

मूल विचार- ज्येष्ठा/मूल- ति. १ बुधे ३०।३७ (सा. ५।२८) या.।
रेवती/अश्विनी- ति. ९ बुधे ११।३१ (दि. ९।४९) उ.। ति. ११ शुक्रे १४।२३ (दि. १०।५८)या.।
पञ्चक विचार- ति. ४ शनौ ४७।१२ (रा. १२।६) उ.। ति. १० गुरौ १२।२० (दि. १०।९) या.।

अथ वृष्टिविचारः।। आर्द्रादिपञ्चकं पू.भा. रेवत्यादिचतुर्थकम्। पूर्वाषाढा चतुष्कञ्च चन्द्रर्क्षाणिचतुर्दश।।१।। शेषाणिरविधिष्ण्यानि विज्ञेयानि मनीषिभिः।। रवेर्नक्षत्राणि- रोहिणी मृ. पू.फा., उ.फा., अभि., हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, शतभिष, उ.भा.। चन्द्रनक्षत्राणिः- आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा, मघा, पू.भा., रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, पू.षा., उ.षा., श्रवण, धनिष्ठा इति। सूर्ये चन्द्रर्क्षगे वृष्टिश्चन्द्रे सूर्यर्क्षगे सति। उभौ चन्द्रर्क्षगौ स्यातां स्वल्पवृष्टिस्तदा भवेत्। तावेव यदि सूर्यर्क्षे तदा वृष्टिर्न जायते। अथ सद्योवृष्टिविचारः। वर्षाप्रश्ने शशिन्याप्यराशिगे लग्नगेऽपि वा। केन्द्रगे वा शुक्लपक्षेवाऽतिवृष्टिः शुभेक्षिते।।१।। अल्पवृष्टिःपापदृष्टे प्रावृट्कालेऽचिराद् भवेत् । चन्द्रवत्भार्गवे सर्वं एवं विध गुणान्विते।।२।। प्रावृषीन्दुः सितात्सप्त राशिगः शुभवीक्षितः।। मन्दात्त्रिकोण सप्तस्थो यदि वा वृष्टिकृद् भवेत् ।।३।। वृष्टियोगकरः शुक्रो यदि बुध समीपगः तयोर्मध्यगते भानौ ध्रुवं वृष्टि विनाशनम् ।।४।। पुरतः पृष्ठतो भानौ शुभा यदि समीपगाः तदा वृष्टिं प्रकुर्वन्ति न चैते प्रति लोमगाः।।५।। ग्रहाणामुदयास्ते वा राश्यभ्यन्तगतेऽयने। संयोगेवाऽपि पक्षान्ते प्रायो वृष्टिः प्रजायते।। ६।। उदयास्त गतः शुक्रो बुधश्च वृष्टिकारकः। चलत्यङ्गारके वृष्टिस्त्रिधा वृष्टिः शनैश्चरे।।७।। वारिपूर्णां महीं कृत्वा पश्चात्सञ्चरते गुरुः। शुक्रे वास्तमितेमन्दे त्रिविधोऽपि प्रजायते।। वृष्टिविचारः- अश्विन्यादिषु धिष्ण्येषु चैव दशसु चेद्भवेत्। आषादिकं तदा गर्भमाद्रादौ वृष्टिदः क्रमात् ।।१।। मेषार्कदिनमारभ्य ज्ञेयमेवमथापि वा।। इति।।

## आषाढ़मासकृत्यम्

आषाढमेकभक्तेनस्थित्वामासमतिंद्रितः। बहुधान्यो बहुधनो बहुपुत्रश्च जायते। वामनपुराणे- उपानाद्युगलं छत्रं लवणामलकानि च। आषाढे ब्राह्मणप्रीत्यै दातव्यानि तु भक्तितः।

# श्रीसंवत् २०७९ शकः १९४४ सौम्यायनगोलयोः ग्रीष्मर्त्तुः।।

# आषाढशुक्लपक्षः।।

राष्ट्रिय तिथि ९ आषाढतः २२ तिथिं यावत् १९४४ शकः।।
अंग्रेजी दिनांक ३० जूनतः दिनांक १३ जुलाई यावत् सन् २०२२ ई.।।

| दि.मा. घ. | प. | ति. | वा. | घ. | प. | | घं. | मि. | नक्षत्र | घ. | प. | | घं. | मि. | योग | घ. | प. | | घं. | मि. | करण | घ. | प. | करण | घ. | प. | योगाः | अं. | फ. | सौ. | ने. | रा. | चन्द्र राशि | प्रवेशः | सूर्योदयः घं. | मि. | सूर्यास्तः घं. | मि. | औदयिक स्पष्ट सूर्यः | | | | क्रान्तिः उ. | + | रे.अं. + | मि. | चन्द्रास्तः स्टै. | टा. | आषाढशुक्लपक्षः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३३ | ५३ | १ | गु | ९ | १५ | दि | ८ | ५५ | पुनर्वसु | ४६ | ५३ | रा | ११ | ५८ | ध्रुव | ११ | १५ | दि | ९ | ४३ | वव | ९ | १५ | वा | ४१ | ३९ | सिद्धि | ३० | १६ | १५ | १६ | ९ | कर्क | ३०।१६ | ५ | १३ | ६ | ४७ | २ | १३ | ४१ | ८ | २३ | १४ | + | १ | ८ | ६ | कर्कराशिः (दि.५।१९)।☽चन्द्रदर्शनम्। मु. ४५ वृहत्ती। फलं समर्घता। सौम्यशृंगं समर्घताकरम्। गुप्तनवरात्रारम्भः। ◆ |
| ३३ | ५३ | २ | शु | १४ | ३ | दि | १० | ५० | पुष्य | ५२ | ५१ | रा | २ | २१ | व्याघात | १२ | ४१ | दि | १० | १७ | कौ | १४ | ३ | तै | ४६ | ७ | उत्पात | १ | १७ | १६ | १७ | १० | | | ५ | १३ | ६ | ४७ | २ | १४ | ३८ | ० | २३ | ११ | + | २ | ८ | ५० | मु. जिलहिज १२ हिजरी सन् १४४३। रथयात्रा २। श्रीराम (बलराम) रथोत्सवः। रथस्थं ये प्रपश्यन्ति न तेषां ⌂ |
| ३३ | ५३ | ३ | श | १८ | ११ | दि | १२ | २९ | श्लेषा | ५८ | ६ | रा | ४ | २७ | हर्षण | १३ | ४१ | दि | १० | ४१ | गर | १८ | ११ | व | ४९ | ४८ | मानस | २ | १८ | १७ | १८ | ११ | सिंह | ५८।६ | ५ | १३ | ६ | ४७ | २ | १५ | ३४ | ५२ | २३ | ७ | + | २ | ९ | २९ | भ. ४९।४८ उ. (रा. १।८)। सिंहराशिः (रा. ४।२७)। यायिजययोगः१८।११ या.। रवियोगः ५८।६ या.। |
| ३३ | ५२ | ४ | र | २१ | २४ | दि | १ | ४८ | मघा | ६० | ० | स | म | स्त | वज्र | १३ | ५७ | दि | १० | ४९ | भ | २१ | २४ | वव | ५२ | २७ | मुद्गर | ३ | १९ | १८ | १९ | १२ | | | ५ | १४ | ६ | ४६ | २ | १६ | ३१ | ४३ | २३ | ३ | + | २ | १० | ४ | भ. २१।२४ या. (दि. १।४८)। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रतम्। यमघंटयोगःसमस्त। |
| ३३ | ५१ | ५ | चं | २३ | २९ | दि | २ | ३८ | मघा | २ | १२ | प्रा | ६ | ७ | सिद्धि | १३ | २० | दि | १० | ३४ | वा | २३ | २९ | कौ | ५३ | ५४ | ध्वांक्ष | ४ | २० | १९ | २० | १३ | | | ५ | १४ | ६ | ४६ | २ | १७ | २८ | ३४ | २२ | ५८ | + | २ | १० | ३७ | श्रीस्कन्दषष्ठी ६ व्रतम्। रवियोगः २।१२ उ.। ⌂ जायते विपत्। विशेषतोजगन्नाथ पुर्याम्। जुलाई ७। रवियोगः ५२।५१ उ.। |
| ३३ | ५० | ६ | मं | २४ | १८ | दि | २ | ५७ | पू.फा. | ५ | ११ | दि | ७ | १८ | व्यतिपात | ११ | ४५ | दि | ९ | ५६ | तै | २४ | १८ | गर | ५४ | ४ | धूम्र | ५ | २१ | २० | २१ | १४ | कन्या | २०।३६ | ५ | १४ | ६ | ४६ | २ | १८ | २५ | २५ | २२ | ५३ | + | २ | ११ | ९ | कन्याराशिः (दि. १।२८)। कुमारषष्ठी ६। कर्दमषष्ठी ६ (बंगाल)। मृत्युबाणारम्भः ३६।३०(रा.७।५०)। त्रिपुष्करयोगः ☯ |
| ३३ | ४९ | ७ | बु | २३ | ४९ | दि | २ | ४६ | उ.फा. | ६ | ५२ | दि | ७ | ५९ | वरीयान | ९ | ९ | दि | ८ | ५४ | व | २३ | ४९ | भ | ५२ | ५७ | प्रवर्धमान | ६ | २२ | २१ | २२ | १५ | | | ५ | १४ | ६ | ४६ | २ | १९ | २२ | १६ | २२ | ४८ | + | २ | ११ | ४१ | भ. २३।४९ उ. (दि. २।४६)५२।५७ या. (रा. २।२५)। विवस्वतसूर्यपूजा ७। ⊙पुनर्वसौ सूर्यः ३९।४९ ♍ |
| ३३ | ४८ | ८ | गु | २२ | ५ | दि | २ | ४ | हस्त | ७ | २० | दि | ८ | १० | परिघ | ५ | ३३ | दि | ७ | २७ | वव | २२ | ५ | वा | ५० | ३९ | राक्षस | ७ | २३ | २२ | २३ | १६ | तुला | ३६।५८ | ५ | १४ | ६ | ४६ | २ | २० | १९ | ७ | २२ | ४२ | + | २ | १२ | १३ | तुलाराशिः (रा. ८।१)। परशुरामाष्टमी (उड़ीसा)। खर्चीपूजा (त्रिपुरा)। |
| ३३ | ४७ | ९ | शु | १९ | १३ | दि | १२ | ५६ | चित्रा | ६ | ३६ | दि | ७ | ५३ | शिव | १/५४ | ३५ | प्रा | ५/३ | ३१/२१ | कौ | १९ | १३ | तै | ४७ | १७ | मुसल | ८ | २४ | २३ | २४ | १७ | | | ५ | १५ | ६ | ४५ | २ | २१ | १५ | ५९ | २२ | ३६ | + | ३ | १२ | ४९ | रवियोगः ६।३६ उ.। ☯२४।१८ उ.। रवियोगः ५।११ या.। |
| ३३ | ४५ | १० | श | १५ | २१ | दि | ११ | २३ | स्वाती | ४ | ५२ | दि | ७ | १२ | साध्य | ४९ | ३३ | रा | १ | ४ | गर | १५ | २१ | व | ४३ | ० | सिद्धि | ९ | २५ | २४ | २५ | १८ | वृश्चिक | ४७।५६ | ५ | १५ | ६ | ४५ | २ | २२ | १२ | ५० | २२ | २९ | + | ३ | १ | ३० | भ. ४३।० उ. (रा. १०।२७)। वृश्चिकराशिः (रा. १२।२५)। सोपपदा १० वेदारम्भानध्यायः। गिरिजापूजा १०। ❖ |
| ३३ | ४४ | ११ | र | १० | ३९ | दि | ९ | ३१ | विशाखा | २/५६ | १७/४३ | प्रा | ६/४ | १०/५९ | शुभ | ४२ | ५० | रा | १० | २३ | भ | १० | ३९ | वव | ३७ | ५८ | उत्पात | १० | २६ | २५ | २६ | १९ | | | ५ | १५ | ६ | ४५ | २ | २३ | ९ | ४३ | २२ | २२ | + | ३ | २ | १७ | भ. १०।३९ या. (दि. ९।३१)। श्रीविष्णुशयनी ११ एकादशी व्रतं सर्वेषाम्। रात्रौ श्रीविष्णुशयनोत्सवः। ☪ |
| ३३ | ४३ | १२ | चं | ५/५४ | १७/१ | प्रा | ७/५ | २२/१ | ज्येष्ठा | ५५ | १३ | रा | ३ | २० | शुक्ल | ३५ | ३९ | रा | ७ | ३१ | वा | ५ | १७ | कौ | ३२/५९ | २२/२६ | पद्म | ११ | २७ | २६ | २७ | २० | धनु | ५५।१३ | ५ | १५ | ६ | ४५ | २ | २४ | ६ | ३५ | २२ | १५ | + | ३ | ३ | १४ | धनूराशिः (रा. ३।२०)। प्रातः७।२२ वादनं यावदेकादशी व्रतस्य पारणा। सोमप्रदोष १२ व्रतम्। पुत्रार्थिभिरत्र☐ |
| ३३ | ४१ | १४ | मं | ५३ | १८ | रा | २ | ३५ | मूल | ५१ | ८ | रा | १ | ४३ | ब्रह्म | २८ | १० | दि | ४ | ३२ | गर | २६ | २२ | व | ५३ | १८ | छत्र | १२ | २८ | २७ | २८ | २१ | | | ५ | १६ | ६ | ४४ | २ | २५ | ३ | २८ | २२ | ७ | + | ३ | ४ | १८ | भ. ५३।१८ उ. (रा. २।३५)। चौमासी चौदस (जैन)। स्थायिजययोगः ५१।८ उ. ५३।१८ या.। रवियोगः ५१।८ या.। |
| ३३ | ४० | १५ | बु | ४७ | ४ | रा | १२ | ६ | पू.षा. | ४६ | ५४ | रा | १२ | २ | ऐन्द्र | २० | ३२ | दि | १ | २९ | भ | २० | ११ | वव | ४७ | ४ | श्रीवत्स | १३ | २९ | २८ | २९ | २२ | | | ५ | १६ | ६ | ४४ | २ | २६ | ० | २३ | २१ | ५९ | + | ३ | - | - | भ.२०।११ या. (दि. १।२०)। स्नान-दान-व्रतादौ १५ पूर्णिमा। गुरुपूर्णिमा १५। गुरुव्यासयोःपूजा १५। कर्णघंटा ☎ |

## ।। विवाहमुहूर्त्तपञ्चेष्टलग्नविमर्शः।।

ति. ३ शनौ रा.४।२७ उ. मघा भे विष्टिदोषः।

ति. ४ रवौ विष्टेः परं (दि.१।४८) मघारे.८ दिवा ल. ८ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. ११ (षष्ठस्थः लग्नेशो न शुभः) वा ल. गोधूलिः वा ल. ३ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. १४।।

ति. ५ सोमे मघा भे रे.८ दिवा ल. ३ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. १४।।

ति. ६ भौमे दि.७।१८ उ. उ.फा.भे भौमवेधावसानं न चन्द्रभुक्तमशुभं मृत्युबाणो व्यतिपातश्च।

ति. ७ बुधे उ.फा. भे पूर्वदोषो मृत्युबाणश्च। विष्टेःपरं (रा.२।२५) हस्ते रे.६ ल. ३ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.९।।

ति. ८ गुरौ हस्ते रे.६ दिवा ल. ३ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. ०।।

ति. ९ शुक्रे दि.७।५३ उ. स्वात्यां रे.९ दिवा ल. ५ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. १५।। वा ल. गोधूलिः वा ल. ३ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. ९।।

ति. १० शनौ स्वात्यां रे. ९ दिवा ल. ३ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. ९।।

परं हरिशयनदोषाद् विवाहमुहूर्त्ताभावः।

## ॐ सूर्योदये दैनिकस्पष्टभौमादिग्रहाः ॐ

| ति. | वा. | भौमः | | | | बुधः | | | | गुरुः | | | | शुक्रः | | | | वक्रीशनिः | | | | राहुः | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | गु | ० | ० | २४ | २८ | २ | ० | २९ | ६ | ११ | १४ | ८ | ५८ | १ | १५ | २७ | ४४ | ९ | २६ | ४ | ३६ | ० | २५ | ४२ | १५ |
| २ | शु | ० | १ | ६ | १४ | २ | २ | ७ | २४ | ११ | १४ | १५ | ८ | १ | १६ | ३९ | ५६ | ९ | २६ | २ | ० | ० | २५ | ३९ | ४ |
| ३ | श | ० | १ | ४८ | १ | २ | ३ | ५० | २६ | ११ | १४ | २१ | १८ | १ | १७ | ५१ | ३० | ९ | २५ | ५९ | २५ | ० | २५ | ३५ | ५३ |
| ४ | र | ० | २ | २९ | ४८ | २ | ५ | ३३ | २९ | ११ | १४ | २७ | २८ | १ | १९ | ३ | ४ | ९ | २५ | ५६ | ५३ | ० | २५ | ३२ | ४२ |
| ५ | चं | ० | ३ | ११ | ३४ | २ | ७ | १६ | ३१ | ११ | १४ | ३३ | ३८ | १ | २० | १४ | ३८ | ९ | २५ | ५४ | २० | ० | २५ | २९ | ३१ |
| ६ | मं | ० | ३ | ५३ | २१ | २ | ८ | ५९ | ३५ | ११ | १४ | ३९ | ४८ | १ | २१ | २६ | १२ | ९ | २५ | ५१ | ४८ | ० | २५ | २६ | २१ |
| ७ | बु | ० | ४ | ३५ | ० | २ | १० | ४३ | ४६ | ११ | १४ | ४४ | २१ | १ | २२ | ३७ | ४६ | ९ | २५ | ४९ | १६ | ० | २५ | २३ | १० |
| ८ | गु | ० | ५ | १६ | २९ | २ | १२ | ३० | १७ | ११ | १४ | ४७ | ४० | १ | २३ | ४९ | २० | ९ | २५ | ४६ | ४३ | ० | २५ | १९ | ५९ |
| ९ | शु | ० | ५ | ५७ | ५८ | २ | १४ | १६ | १३ | ११ | १४ | ५० | ५३ | १ | २५ | ० | ५४ | ९ | २५ | ४४ | ११ | ० | २५ | १६ | ४८ |
| १० | श | ० | ६ | ३९ | २७ | २ | १६ | २ | ९ | ११ | १४ | ५४ | ३ | १ | २६ | १२ | २९ | ९ | २५ | ४१ | ३७ | ० | २५ | १३ | ३७ |
| ११ | र | ० | ७ | २० | ५६ | २ | १७ | ४८ | ७ | ११ | १४ | ५७ | १३ | १ | २७ | २४ | ३ | ९ | २५ | ३७ | ५६ | ० | २५ | १० | २६ |
| १२ | चं | ० | ८ | २ | २५ | २ | १९ | ३६ | १ | ११ | १५ | ० | २४ | १ | २८ | ३५ | ३७ | ९ | २५ | ३४ | १५ | ० | २५ | ७ | १६ |
| १४ | मं | ० | ८ | ४३ | ५४ | २ | २१ | २६ | ५५ | ११ | १५ | ३ | ३४ | १ | २९ | ४७ | ११ | ९ | २५ | ३० | ३४ | ० | २५ | ४ | ५ |
| १५ | बु | ० | ९ | २५ | २३ | २ | २३ | १७ | ४८ | ११ | १५ | ६ | ४४ | २ | ० | ५८ | ४५ | ९ | २५ | २६ | ५३ | ० | २५ | ० | ५४ |

भौमादीनाञ्चारः- भौमः-अश्विन्याम् ।। बुधः- ति.४ रवौ आर्द्रा भे ३८।४४ (रा. ८।४४)। ति. १२ सोमे पुनर्वसौ १२।५९ (दि. १०।२७)।। गुरुः- उत्तराभाद्रपदा ४ चरणे।। शुक्रः- ति. ७ बुधे मृगे ३५।२४ (रा. ७।२४)। ति.१४ भौमे मिथुने १०।४५ (दि. ९।३४)।। वक्रीशनिः- धनिष्ठा १ चरणे ।। राहुः- भरणी ४ चरणे केतुश्च विशाखा २ चरणे।। •

### १३ पं.आषाढशुक्ल ८ गुरौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।

द्युगणः २७३२

अयनांशाः २४।९।१९

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | ५ | ० | २ | ११ | १ | ९ | ० | ६ |
| २० | २१ | ५ | १२ | १४ | २३ | २५ | २५ | २५ |
| १९ | ४२ | १६ | ३० | ४७ | ४९ | ४६ | १९ | १९ |
| ७ | ५३ | २९ | १७ | ४० | २० | ४३ | ५९ | ५९ |
| ५६ | ७९३ | ४१ | १०५ | ३ | ७१ | २ | ३ | ३ |
| ५२ | ५० | २९ | ५६ | २३ | ३४ | ३२ | ११ | ११ |
| | | | | | | व. | | |

४ | २ शु. | मं. १ रा.
५ | सू. ३ बु. | १२ गु.
६ चं. | ९ | ११
७ के. | ८ | १०श.

पक्षेऽस्मिन् विविधमुहूर्त्ताः- ति. १ गुरौ पुनर्वसौ सूर्यभोग्यम्। ति. २ शुक्रे पुष्ये पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण अन्नप्राशन शय्यासनाद्युपभोग सुभगांविनानवस्त्रधारण लतापादपारोपण पश्चिमांविनान्यदिग्यात्रा नवान्नभक्षण भैषज्य नौकाघटन चौलकेशान्त (ल. ४) कर्णवेध (ल. ४) अक्षरारम्भ-विद्यारम्भ (ल. ४) उपनयन (ल. ४) जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. ४) हलप्रवहण विपणि व्यापार गजाश्वकृत्य धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ३ शनौ दि. १२।२९ या. श्लेषा भे वस्तुविक्रय शस्त्रघटन मुहूर्त्तः। ति. ४ रवौ मघा भे राहुवेधो रिक्तादोषश्च। ति. ५ सोमे प्रा. ६।७ उ. पू.फा. भे भौमवेधो व्यतिपातश्च। ति. ६ भौमे व्यतिपातात्परं उ.फा. भे भौमवेधावसानं न चन्द्रभुक्तमशुभम्। ति. ७ बुधे दि. ७।५९ उ. विष्टेःपूर्वं (दि. २।४६) हस्ते अन्नप्राशन नववस्त्रधारण गोक्रय-विक्रय उत्तरांविनान्यदिग्यात्रा नवान्नभक्षण चौलकेशान्त (ल.४) कर्णवेध (ल.४) जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. ४) शिल्पविद्या भैषज्य हलप्रवहण विपणि गजाश्वकृत्य धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ८ गुरौ हस्ते शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन गोक्रय-विक्रय जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. ४) भैषज्य नौकाघटन विपणि व्यापार गजाश्वकृत्य शिरामोक्षण मुहूर्त्तः। दि. ८।१० उ. दि. २।४ या. चित्रा भे लतापादपारोपण नवान्नभक्षण हलप्रवहण बीजोप्ति विपणि वस्तुक्रय गजकृत्य शिरामोक्षण मुहूर्त्तः। ति. ९ शुक्रे रिक्तोत्तरं (दि. १२।५६) स्वात्यां शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन गर्भाधान नववस्त्रधारण नवान्नभक्षण भैषज्य जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा ☞

| तिथि ल.अ. | १ गु घं. | मि. | २ शु घं. | मि. | ३ श घं. | मि. | ४ र घं. | मि. | ५ चं घं. | मि. | ६ मं घं. | मि. | ७ बु घं. | मि. | ८ गु घं. | मि. | ९ शु घं. | मि. | १० श घं. | मि. | ११ र घं. | मि. | १२ चं घं. | मि. | १४ मं घं. | मि. | १५ बु घं. | मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मिथुन | ६ | २५ | ६ | २१ | ६ | १७ | ६ | १३ | ६ | ९ | ६ | ५ | ६ | १ | ५ | ५७ | ५ | ५३ | ५ | ४९ | ५ | ४५ | ५ | ४१ | ५ | ३७ | ५ | ३३ |
| कर्क | ८ | ४३ | ८ | ३९ | ८ | ३५ | ८ | ३१ | ८ | २७ | ८ | २३ | ८ | १९ | ८ | १५ | ८ | ११ | ८ | ७ | ८ | ३ | ७ | ५९ | ७ | ५५ | ७ | ५१ |
| सिंह | १० | ५७ | १० | ५३ | १० | ४९ | १० | ४५ | १० | ४१ | १० | ३७ | १० | ३३ | १० | २९ | १० | २५ | १० | २१ | १० | १७ | १० | १३ | १० | ९ | १० | ५ |
| कन्या | १ | १० | १ | ६ | १ | २ | १२ | ५८ | १२ | ५४ | १२ | ५० | १२ | ४६ | १२ | ४२ | १२ | ३८ | १२ | ३४ | १२ | ३० | १२ | २६ | १२ | २२ | १२ | १८ |
| तुला | ३ | २६ | ३ | २२ | ३ | १८ | ३ | १४ | ३ | १० | ३ | ६ | ३ | २ | २ | ५८ | २ | ५४ | २ | ५० | २ | ४६ | २ | ४२ | २ | ३८ | २ | ३४ |
| वृश्चिक | ५ | ४३ | ५ | ३९ | ५ | ३५ | ५ | ३१ | ५ | २७ | ५ | २३ | ५ | १९ | ५ | १५ | ५ | ११ | ५ | ७ | ५ | ३ | ४ | ५९ | ४ | ५५ | ४ | ५१ |
| ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | |
| धनु | ७ | ४९ | ७ | ४५ | ७ | ४१ | ७ | ३७ | ७ | ३३ | ७ | २९ | ७ | २५ | ७ | २१ | ७ | १७ | ७ | १३ | ७ | ९ | ७ | ५ | ७ | १ | ६ | ५७ |
| मकर | ९ | ३६ | ९ | ३२ | ९ | २८ | ९ | २४ | ९ | २० | ९ | १६ | ९ | १२ | ९ | ८ | ९ | ४ | ९ | ० | ८ | ५६ | ८ | ५२ | ८ | ४८ | ८ | ४४ |
| कुम्भ | ११ | ७ | ११ | ३ | १० | ५९ | १० | ५५ | १० | ५१ | १० | ४७ | १० | ४३ | १० | ३९ | १० | ३५ | १० | ३१ | १० | २७ | १० | २३ | १० | १९ | १० | १५ |
| मीन | १२ | ३५ | १२ | ३१ | १२ | २७ | १२ | २३ | १२ | १९ | १२ | १५ | १२ | ११ | १२ | ७ | १२ | ३ | ११ | ५९ | ११ | ५५ | ११ | ५१ | ११ | ४७ | ११ | ४३ |
| मेष | २ | १२ | २ | ८ | २ | ४ | २ | ० | १ | ५६ | १ | ५२ | १ | ४८ | १ | ४४ | १ | ४० | १ | ३६ | १ | ३२ | १ | २८ | १ | २४ | १ | २० |
| वृष | ४ | ८ | ४ | ४ | ४ | ० | ३ | ५६ | ३ | ५२ | ३ | ४८ | ३ | ४४ | ३ | ४० | ३ | ३६ | ३ | ३२ | ३ | २८ | ३ | २४ | ३ | २० | ३ | १६ |

### १४ पं० आषाढशुक्ल १५ बुधे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।

द्युगणः २७३८

अयनांशाः २४।९।२०

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | ८ | ० | २ | ११ | २ | ९ | ० | ६ |
| २६ | १५ | ९ | २३ | १४ | ० | २५ | २५ | २५ |
| ० | २७ | २५ | १७ | ६ | ५८ | २६ | ० | ० |
| २३ | ७ | २३ | ४८ | ४४ | ४५ | ५३ | ५४ | ५४ |
| ५६ | ८६० | ४१ | ११० | ३ | ७१ | ३ | ३ | ३ |
| ५४ | ४४ | २९ | ५४ | १० | ३४ | ४१ | ११ | ११ |
| | | | | | | व. | | |

४ | २ | मं. १ रा.
५ | सू. बु. ३ शु. | १२ गु.
६ | चं. ९ | ११
७ के. | ८ | १०श.

◆ मनोरथ द्वितीया २(बंगाल)। यायिजययोगः ९।१५ या.। सर्वार्थसिद्धियोगः समस्त। अमृतसिद्धियोगः ४६।५३ उ.। ♍ (रा. ९।१०)। स्त्री.स्त्री.-सू.चं. योगः महिष वाहनं सौम्यानाडी तदीशः गुरुः खण्डवृष्टियोगः मृत्युबाणनिवृत्तिः ३९।४९ (रा. ९।१०)। सर्वार्थसिद्धियोगः ६।५२ उ.। ❖ मन्वादिः १०। सर्वार्थसिद्धियोगः ४।५२ या.। रवियोगः समस्त। ☪ रविनारायण एकादशी (उड़ीसा)। यायिजययोगः २।१७ उ. १०।३९ या.। रवियोगः २।१७ या.। ☐ व्रतारम्भो विधेयः। चातुर्मास्य व्रतारम्भः। शाकत्याग व्रतारम्भः। द्वादश्यां श्रीवामन पूजन। रवियोगः ५५।१३ उ.। ☎ कनखलयोः स्नानम्। प्रदोषे श्रीशिवशयनोत्सवः। श्रीशिवपवित्रारोपणम्। कोकिला १५ पूर्णिमा। कोकिलारुपिशिवायाःप्रत्यहं पूजनम्। नक्तभोजनाद्यारम्भः (प्रदोषे)। सायंकाले ह्रासवृद्धिपरीक्षार्थैसर्वधान्यानामधिवासनम्। प्रातस्तोलनम्। सायं वायुपरीक्षणम्। मन्वादिः १५।

मूलविचार- श्लेषा/मघा-ति. २ शुक्रे ५२।५१ (रा. २।२१) उ.। ति.५ सोमे २।१२ (प्रा. ६।७) या.। ज्येष्ठा/ मूल- ति. ११ रवौ ५९।० (रा. ४।५१) उ.। ति. १४ भौमे ५१।८ (रा. १।४३) या.।

आषाढ मासाच्छुभाशुभनिर्णयः।। आषाढशुक्लपक्षे तु द्वितीया नवमीदिने।। चन्द्रेज्यभृगुवारः स्यात् सुवृष्टिश्च समर्घता।।१।। आषाढे पौर्णिमायां यत्तन्नक्षत्रंविचारयेत्।। पूर्वाषाढे सुभिक्षं स्यान्मूलं दुर्भिक्षसूचकम्।। १।। उत्तराषाढके स्यातां पीडाकटकसंहतीति।।२।। आषाढ शुक्ल २ रथयात्रा।। आषाढस्य सिते पक्षे द्वितीया पुष्यसंयुता। तस्यां रथे समारोप्य रामं सौभद्रया सह। यात्रोत्सवं प्रकर्त्तव्यमिति।। ऋक्षाभावे तिथौ कार्या सदा सा प्रीतये मम।। अत्र रामो बलरामः।।

☞ (ल.९) अश्वकृत्य धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. १० शनौ स्वात्यां कृष्णवस्त्रधारण बीजोप्ति मुहूर्त्तः। विशाखा भे केतुयुतिः। ति. ११ रवौ विष्टेःपरं (दि.९।३१) मैत्रे शय्यासनाद्युपभोग नववस्त्रधारण लतापादपारोपण नवान्नभक्षण भैषज्य नौकाघटन विपणि शिरामोक्षण मुहूर्त्तः। ति. १२ सोमे ज्येष्ठा भे शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन गोक्रय-विक्रय कणमर्दन धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. १४ भौमे मूले रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। ति. १५ बुधे पू.षा. भे सूर्यवेधावसानं न चन्द्रभुक्तमशुभं वैधृतिश्च।

# श्रीसंवत् २०७९ शकः १९४४ सौम्यायनगोलयोः ग्रीष्मर्त्तुः।।

| दि.मा. घ. | प. | दिनांक | वा | ति. घ. | प. | दि/रा | घं. | मि. | नक्षत्र | घ. | प. | दि/रा | घं. | मि. | योग | घ. | प. | दि/रा | घं. | मि. | करण | घ. | प. | करण | घ. | प. | योगाः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३३ | ३८ | १ | गु | ४० | ५७ | रा | ९ | ३९ | उ.षा. | ४२ | ५० | रा | १० | २४ | वैधृति | १२ | ५६ | दि | १० | २६ | वा | १४ | १ | कौ | ४० | ५७ | सौम्य |
| ३३ | ३६ | २ | शु | ३५ | ९ | रा | ७ | २१ | श्रवण | ३९ | ६ | रा | ८ | ५५ | विष्कुम्भ | ५/५२ | ३०/५१ | प्रा | ७/४ | २१/३७ | तै | ८ | ३ | गर | ३५ | ९ | धूम्र |
| ३३ | ३५ | ३ | श | २९ | ५१ | दि | ५ | १३ | धनिष्ठा | ३५ | ५१ | रा | ७ | ३७ | आयुष्मान | ५१ | ४३ | रा | १ | ५८ | व | २ | ३० | भ | २१/५७ | ५१/३० | प्रवर्धमान |
| ३३ | ३३ | ४ | र | २५ | १४ | दि | ३ | २३ | शतभिष | ३३ | २० | सा | ६ | ३७ | सौभाग्य | ४५ | ४४ | रा | ११ | ३५ | वा | २५ | १४ | कौ | ५३ | २२ | राक्षस |
| ३३ | ३१ | ५ | चं | २१ | २९ | दि | १ | ५४ | पू.भा. | ३१ | ३९ | सा | ५ | ५८ | शोभन | ४० | २८ | रा | ९ | २९ | तै | २१ | २९ | गर | ५० | ६ | मुसल |
| ३३ | २९ | ६ | मं | १८ | ४२ | दि | १२ | ४७ | उ.भा. | ३१ | ० | सा | ५ | ४२ | अतिगण्ड | ३६ | २ | रा | ७ | ४३ | व | १८ | ४२ | भ | ४७ | ५४ | सिद्धि |
| ३३ | २७ | ७ | बु | १७ | ६ | दि | १२ | ९ | रेवती | ३१ | ३२ | सा | ५ | ५६ | सुकर्मा | ३२ | ३३ | सा | ६ | २० | बव | १७ | ६ | वा | ४६ | ५६ | उत्पात |
| ३३ | २५ | ८ | गु | १६ | ४६ | दि | १२ | १ | अश्विनी | ३३ | १८ | सा | ६ | ३८ | धृति | ३० | ६ | दि | ५ | २१ | कौ | १६ | ४६ | तै | ४७ | १५ | मानस |
| ३३ | २३ | ९ | शु | १७ | ४३ | दि | १२ | २४ | भरणी | ३६ | २२ | रा | ७ | ५२ | शूल | २८ | ४० | दि | ४ | ४७ | गर | १७ | ४३ | व | ४८ | ४९ | मुद्गर |
| ३३ | २१ | १० | श | १९ | ५५ | दि | १ | १८ | कृत्तिका | ४० | ३२ | रा | ९ | ३३ | गण्ड | २८ | ८ | दि | ४ | ३५ | भ | १९ | ५५ | बव | ५१ | ३५ | ध्वज |
| ३३ | १९ | ११ | र | २३ | १५ | दि | २ | ३८ | रोहिणी | ४५ | ४८ | रा | ११ | ३९ | वृद्धि | २८ | ३१ | दि | ४ | ४४ | वा | २३ | १५ | कौ | ५५ | २२ | धाता |
| ३३ | १६ | १२ | चं | २७ | २८ | दि | ४ | २० | मृगशिरा | ५१ | ४९ | रा | २ | ५ | ध्रुव | २९ | ३१ | दि | ५ | ९ | तै | २७ | २८ | गर | ५९ | ५४ | आनन्द |
| ३३ | १४ | १३ | मं | ३२ | २० | सा | ६ | १७ | आर्द्रा | ५८ | १८ | रा | ४ | ४० | व्याघात | ३० | ५९ | सा | ५ | ४५ | व | ३२ | २० | भ | ६० | ० | चर |
| ३३ | १२ | १४ | बु | ३७ | २४ | रा | ८ | २० | पुनर्वसु | ६० | ० | स | म | स्त | हर्षण | ३२ | ३७ | सा | ६ | २५ | भ | ४ | ५२ | श | ३७ | २४ | गद |
| ३३ | ९ | ३० | गु | ४२ | १६ | रा | १० | १६ | पुनर्वसु | ४ | ४९ | दि | ७ | १८ | वज्र | ३४ | ६ | रा | ७ | ० | च | ९ | ५० | नाग | ४२ | १६ | सिद्धि |

| दिनांक | अं. | फ. | सौ. | ने. | रा. | चन्द्र राशि | प्रवेशः | सूर्योदयः घं. | मि. | सूर्यास्तः घं. | मि. | औदयिक स्पष्ट सूर्यः | | | | क्रान्तिः उ. | + | रे. अं. + | मि. | चन्द्रोदयः स्टै. | टा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १४ | १ | २९ | ३० | २३ | मकर | ०।५३ | ५ | १६ | ६ | ४४ | २ | २६ | ५७ | १७ | २१ | ५१ | + | ४ | ७ | ४७ |
| १५ | २ | ३० | ३१ | २४ | | | ५ | १७ | ६ | ४३ | २ | २७ | ५४ | १२ | २१ | ४२ | + | ४ | ८ | ३८ |
| १६ | ३ | ३१ | ३२ | २५ | कुम्भ | ७।२९ | ५ | १७ | ६ | ४३ | २ | २८ | ५१ | ९ | २१ | ३३ | + | ४ | ९ | २२ |
| १७ | ४ | ३२ | १ | २६ | | | ५ | १७ | ६ | ४३ | २ | २९ | ४८ | ५ | २१ | २२ | + | ४ | १० | ० |
| १८ | ५ | १ | २ | २७ | मीन | १७।४ | ५ | १८ | ६ | ४२ | ३ | ० | ४५ | १ | २१ | १३ | + | ४ | १० | ३४ |
| १९ | ६ | २ | ३ | २८ | | | ५ | १८ | ६ | ४२ | ३ | १ | ४१ | ५९ | २१ | ३ | + | ४ | ११ | ७ |
| २० | ७ | ३ | ४ | २९ | मेष | ३१।३२ | ५ | १९ | ६ | ४१ | ३ | २ | ३८ | ५७ | २० | ५३ | + | ४ | ११ | ४० |
| २१ | ८ | ४ | ५ | ३० | | | ५ | १९ | ६ | ४१ | ३ | ३ | ३५ | ५६ | २० | ४२ | + | ४ | १२ | १३ |
| २२ | ९ | ५ | ६ | ३१ | वृष | ५२।२५ | ५ | १९ | ६ | ४१ | ३ | ४ | ३२ | ५६ | २० | ३१ | + | ४ | १२ | ४८ |
| २३ | १० | ६ | ७ | १ | | | ५ | २० | ६ | ४० | ३ | ५ | २९ | ५६ | २० | १९ | + | ४ | १ | २७ |
| २४ | ११ | ७ | ८ | २ | | | ५ | २० | ६ | ४० | ३ | ६ | २६ | ५९ | २० | ७ | + | ४ | २ | १० |
| २५ | १२ | ८ | ९ | ३ | मिथुन | १८।४९ | ५ | २१ | ६ | ३९ | ३ | ७ | २४ | १ | १९ | ५४ | + | ४ | २ | ५७ |
| २६ | १३ | ९ | १० | ४ | | | ५ | २१ | ६ | ३९ | ३ | ८ | २१ | ५ | १९ | ४१ | + | ४ | ३ | ४८ |
| २७ | १४ | १० | ११ | ५ | कर्क | ४८।११ | ५ | २२ | ६ | ३८ | ३ | ९ | १८ | १० | १९ | २८ | + | ४ | ४ | ४१ |
| २८ | १५ | ११ | १२ | ६ | | | ५ | २२ | ६ | ३८ | ३ | १० | १५ | १६ | १९ | १५ | + | ४ | - | - |

## श्रावणकृष्णपक्षः।।

राष्ट्रिय तिथि २३ आषाढतः तिथि ६ श्रावणं यावत् १९४४ शकः।।
अंग्रेजी दिनांक १४ जुलाईतः२८ दिनांकं यावत् सन् २०२२ ई.।।



मकरराशिः (प्रा.५।३७)। श्रावणे वर्जयेच्छाकम्। श्री काशीविश्वनाथाय नित्यविल्वपत्रार्पणम्। नैमित्तिक पार्थिवार्चनारम्भः। मैथिलनववर्षारम्भः। यायिजययोगः◆
अशून्यशयन २ व्रतम्। चन्द्रोदयः (रा.८।३८)। श्री लक्ष्मीयुतं विष्णुं पर्यंके पूजनादक्षय धन-दाम्पत्यसुखप्राप्तिः। प्रार्थनामन्त्रः-पत्नी भर्तृवियोगं च भर्ता-भार्या ⌂
भ. २।३० उ. (प्रा. ६।१७)२९।५१ या. (दि. ५।१३)। कुम्भराशिः (दि. ८।१७)। संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रतम्। चन्द्रोदयः (रा.९।२२)। पञ्चकारम्भः ७।२९ ●
⊙सं.कर्के सूर्यः १२।३४(दि. १०।१९)। मु. १५ जघन्या। फलं महर्घता।पूर्वाः १६ वा ३० घट्यःपुण्याः। घृत-धेनुदानम्। स्नानं मन्दाकिन्याम्। निरयन याम्यायनं। ♍
मीनराशिः (दि. १२।८)। श्रावण सोमवार व्रतम्। प्रदोष व्रतवदस्य विधिः। नैमित्तिक पार्थिवार्चनम्। सोमवार व्रतं कार्यं श्रावणे वै यथाविधिः शक्तेनोपोषणं ☯
भ. १८।४२ उ. (दि. १२।४७)४७।५४ या. (रा. १२।२८)। भौमव्रतम्। दुर्गायात्रा- गौरीपूजा-हनुमद्दर्शनञ्च। सर्वार्थसिद्धियोगः ३१।० या.। रवियोगः ३१।० या.।
मेषराशिः (सा. ५।५६)। श्री शीतलासप्तमी (उड़ीसा)। कालाष्टमी ८ व्रतम् (सायाह्ने)। मन्वादिः ८ (अपराह्ने)।⊙पुष्ये सूर्यः ४३।१३ (रा. १०।३६)। ❖
यायिजययोगः ३३।१८ उ.। सर्वार्थसिद्धियोगः३३।१८ या.। ⌂समुद्धकम्। नाप्नुवंति यथा दुःखं दाम्पत्यानि तथा कुरुः। सर्वार्थसिद्धियोगः ३९।६ या.।
भ. ४८।४९ उ. (रा. १२।५१)। वृषराशिः (रा. २।१७)। ☯कार्यमथवा निशि भोजनम्। मनसापूजा प्रारम्भः। सौरश्रावणमासारम्भः। रवियोगः ३१।३९ उ.।
भ. १९।५५ या. (दि. १।१८)। ⊙सायन सिंहे सूर्यः २१।४६ (दि. २।२)। राष्ट्रियश्रावणमासः दि.३१। यायिजययोगः ४०।३२ उ.। सर्वार्थामृतसिद्धियोगः४०।३२ उ.।
कामदा ११ एकादशी व्रतं सर्वेषाम्। यायिजययोगः २३।१५ या.। द्विपुष्करयोगः४५।४८ उ.। ●(दि. ८।१७)। यायिजययोगः २९।५१ या.।
मिथुनराशिः (दि. १२।५३)। सोमप्रदोष १२ व्रतम्। पुत्रार्थिभिरत्र व्रतारम्भो विधेयः। श्रावण सोमवार व्रतम्। प्रदोष व्रतवदस्य विधिः। सर्वार्थामृतसिद्धियोगः५१।४९ या.।
भ. ३२।२० उ. (सा. ६।१७)। मासशिवरात्रि १३ व्रतम्। "भवेद्यत्र त्रयोदश्यां भूतव्याप्ता महानिशेत्युक्तेः।" भौमव्रतम्। दुर्गायात्रा-गौरीपूजा-हनुमद्दर्शनञ्च। यमघंटयोगः☾
भ. ४।५२ या. (दि. ७।१९)। कर्कराशिः (रा. १२।३८)। ❖स्त्री.पु.-चं.चं. योगःमण्डूक वाहनं वातनाडी तदीशः रविः खण्डवृष्टियोगः। पञ्चकनिवृत्तिः ३१।३२ (सा. ५।५६)।
स्नान-दान-श्राद्धादौ ३० अमावस्या। हरियाली ३० (पश्चिमे प्रसिद्धा)। शुभवारान्विते दर्शे सुभिक्षं च प्रजासुखम्। मन्वादिः ३०। सर्वार्थसिद्धियोगःसमस्त। ○

## ॐ सूर्योदये दैनिकस्पष्टभौमादिग्रहाः ॐ

| ति. | वा. | भौमः | | | | बुधः | | | | गुरुः | | | | शुक्रः | | | | वक्रीशनिः | | | | राहुः | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | गु | ० | १० | ६ | ५२ | २ | २५ | ८ | ४२ | ११ | १५ | ९ | ५४ | २ | २ | १० | १९ | ९ | २५ | २३ | १२ | ० | २४ | ५७ | ४३ |
| २ | शु | ० | १० | ४८ | २१ | २ | २६ | ५९ | ३६ | ११ | १५ | १३ | ५ | २ | ३ | २१ | ४३ | ९ | २५ | १९ | ३१ | ० | २४ | ५४ | ३२ |
| ३ | श | ० | ११ | २९ | ५० | २ | २८ | ५१ | ७ | ११ | १५ | १६ | १५ | २ | ४ | ३३ | ० | ९ | २५ | १५ | ५१ | ० | २४ | ५१ | २२ |
| ४ | र | ० | १२ | ११ | १९ | ३ | ० | ४३ | १५ | ११ | १५ | १९ | २५ | २ | ५ | ४४ | १८ | ९ | २५ | १२ | १० | ० | २४ | ४८ | ११ |
| ५ | चं | ० | १२ | ५२ | २२ | ३ | २ | ३४ | ४५ | ११ | १५ | २२ | ३६ | २ | ६ | ५५ | ३६ | ९ | २५ | ८ | ३१ | ० | २४ | ४५ | ० |
| ६ | मं | ० | १३ | ३३ | ९ | ३ | ४ | २५ | ३९ | ११ | १५ | २५ | ४६ | २ | ८ | ७ | ४ | ९ | २५ | ४ | ५३ | ० | २४ | ४१ | ४९ |
| ७ | बु | ० | १४ | १३ | ५७ | ३ | ६ | १६ | ३४ | ११ | १५ | २८ | ५६ | २ | ९ | १९ | २४ | ९ | २५ | १ | १५ | ० | २४ | ३८ | ३८ |
| ८ | गु | ० | १४ | ५४ | ४४ | ३ | ८ | ७ | २८ | ११ | १५ | ३२ | ७ | २ | १० | ३१ | ४५ | ९ | २४ | ५७ | ३७ | ० | २४ | ३५ | २८ |
| ९ | शु | ० | १५ | ३५ | ३१ | ३ | ९ | ५८ | २२ | ११ | १५ | ३५ | १७ | २ | ११ | ४४ | ५ | ९ | २४ | ५३ | ५९ | ० | २४ | ३२ | १७ |
| १० | श | ० | १६ | १६ | १८ | ३ | ११ | ४९ | १७ | ११ | १५ | ३६ | २२ | २ | १२ | ५६ | २५ | ९ | २४ | ५० | २१ | ० | २४ | २९ | ६ |
| ११ | र | ० | १६ | ५७ | ६ | ३ | १३ | ४० | ११ | ११ | १५ | ३७ | २ | २ | १४ | ८ | ४५ | ९ | २४ | ४६ | ४४ | ० | २४ | २५ | ५५ |
| १२ | चं | ० | १७ | ३७ | ५३ | ३ | १५ | ३१ | ५ | ११ | १५ | ३७ | ३४ | २ | १५ | २१ | ६ | ९ | २४ | ४२ | ४८ | ० | २४ | २२ | ४४ |
| १३ | मं | ० | १८ | १७ | १ | ३ | १७ | २१ | ३ | ११ | १५ | ३८ | ७ | २ | १६ | ३३ | २६ | ९ | २४ | ३८ | २ | ० | २४ | १९ | ३४ |
| १४ | बु | ० | १८ | ५४ | ३९ | ३ | १९ | १० | ४३ | ११ | १५ | ३८ | ३९ | २ | १७ | ४५ | ४६ | ९ | २४ | ३३ | १५ | ० | २४ | १६ | २३ |
| ३० | गु | ० | १९ | ३२ | १६ | ३ | २१ | ० | २३ | ११ | १५ | ३९ | १२ | २ | १८ | ५८ | ६ | ९ | २४ | २८ | २९ | ० | २४ | १३ | १२ |

*भौमादीनाञ्चारः- भौमः- ति. ५ सोमे भरण्यां ४०।३९ (रा. ९।३४)।। बुधः- ति. ३ शनौ कर्के ३६।५१(रा. ८।१)।ति. ५ सोमे पुष्ये २४।२९(दि. ३।६)।ति. १२ सोमे श्लेषा भे ३७।३६(रा. ८।२३)।। गुरुः- उत्तराभाद्रपदा ४ चरणे।। शुक्रः- ति. ४ रवौ आर्द्रा भे ४६।५२ (रा. १२।२)।ति. ३० गुरौ पुनर्वसौ ५१।२१ (रा. १।५४)।। वक्रीशनिः- धनिष्ठा १ चरणे।। राहुः- भरणी ४ चरणे केतुश्च विशाखा २ चरणे।।*

*श्रावणकृष्णैकादश्यां सुभिक्षं रोहिणी कुर्याद् ।।*

### १५ पं० श्रावणकृष्ण ८ गुरौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।

द्युगणः २७४६
अयनांशाः २४।९।२२

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ० | ० | ३ | ११ | २ | ९ | ० | ६ |
| ३ | ६ | १४ | ८ | १५ | १० | २४ | २४ | २४ |
| ३५ | ८ | ५४ | ७ | ३२ | ३१ | ५७ | ३५ | ३५ |
| ५६ | ४० | ४४ | २८ | ७ | ४५ | ३७ | २८ | २८ |
| ५७ | ७७३ | ४० | ११० | ३ | ७२ | ३ | ३ | ३ |
| ० | ७ | ४७ | ५४ | १० | २० | ३८ व. | ११ | ११ |

५
३ शु.
६
सू. ४ बु.
२
चं.
७ के.
मं. १ रा.
८
१० श.
१२गु.
९
११

पक्षेऽस्मिन् विविधमुहूर्त्ताः- ति. १ गुरौ उ.षा. भे वैधृतेःपरं (दि. १०।२६) पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन सूतीस्नान शय्यासनाद्युपभोग सुभगांविनानववस्त्रधारण लतापादपारोपण शिल्पविद्या नौकाघटन विपणि धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. २ शुक्रे श्रवणे अन्नप्राशन शय्यासनाद्युपभोग पूर्व-दक्षिण दिग्यात्रा नवान्नभक्षण शिल्पविद्या भैषज्य नौकाघटन वस्तुक्रय गजकृत्य धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ३ शनौ धनिष्ठा भे शनियुतिः विष्टिश्च। ति. ४ रवौ शतभिषजि रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। रिक्तोत्तरं (दि. ३।२३) भूषाघटन लतापादपारोपण गोक्रय-विक्रय भैषज्य नौकाघटन वस्तुक्रय गजाश्वकृत्य शिरामोक्षण मुहूर्त्तः। ति. ५ सोमे पू.भा.भे धान्यारोपण शिल्पविद्या वस्तुविक्रय धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ६ भौमे दि. १२।४७ या. उ.भा. भे सुभगांविनारक्तवस्त्रधारण भूषाघटन मुहूर्त्तः। रात्रिशेषे रेवत्यां पश्चिम दिग्यात्रा सूतीस्नान मुहूर्त्तः। ति. ७ बुधे रेवत्यां अन्नप्राशन (सप्तम्यां) नववस्त्रधारण पश्चिम दिग्यात्रा (सप्तम्यां) कणमर्दन नवान्नभक्षण भैषज्य विपणि वस्तुक्रय गजाश्वकृत्य मुहूर्त्तः। ति. ८ गुरौ अश्विन्यां भौमभुक्तमनिन्दुभुक्तमशुभम्। नवम्यां रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। ति. ९ शुक्रे भरण्यां भौमयुतिः। ति. १० शनौ कृत्तिका भे विष्टेःपरं (दि.१।१८) वस्तु विक्रय शस्त्रघटन मुहूर्त्तः। रा. ९।३३ उ. रोहिण्यां जीर्णादिगृहप्रवेश (ल. २) मुहूर्त्तः। ति. ११ रवौ रोहिण्यां पुंसवनसीमन्त शय्यासनाद्युपभोग सुभगां-विनानववस्त्रधारण भूषाघटन लतापादपारोपण शिल्पविद्या विपणि शिरामोक्षण मुहूर्त्तः। ति. १२ सोमे मृगे जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण☞

| तिथि ल.अ. | १ गु घं. | मि. | २ शु घं. | मि. | ३ श घं. | मि. | ४ र घं. | मि. | तिथि ल.अ. | ५ चं घं. | मि. | ६ मं घं. | मि. | ७ बु घं. | मि. | ८ गु घं. | मि. | ९ शु घं. | मि. | १० श घं. | मि. | ११ र घं. | मि. | १२ चं घं. | मि. | १३ मं घं. | मि. | १४ बु घं. | मि. | ३० गु घं. | मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मिथुन | ५ | २९ | ५ | २५ | ५ | २० | ५ | १७ | कर्क | ७ | ३२ | ७ | २८ | ७ | २४ | ७ | १९ | ७ | १६ | ७ | १२ | ७ | ८ | ७ | ३ | ६ | ५९ | ६ | ५५ | ६ | ५१ |
| कर्क | ७ | ४७ | ७ | ४३ | ७ | ३८ | ७ | ३५ | सिंह | ९ | ४६ | ९ | ४२ | ९ | ३८ | ९ | ३३ | ९ | ३० | ९ | २६ | ९ | २२ | ९ | १७ | ९ | १३ | ९ | ९ | ९ | ५ |
| सिंह | १० | १ | ९ | ५७ | ९ | ५२ | ९ | ४९ | कन्या | ११ | ५९ | ११ | ५५ | ११ | ५१ | ११ | ४६ | ११ | ४३ | ११ | ३९ | ११ | ३५ | ११ | ३० | ११ | २६ | ११ | २२ | ११ | १८ |
| कन्या | १२ | १४ | १२ | १० | १२ | ५ | १२ | २ | तुला | २ | १५ | २ | ११ | २ | ७ | २ | २ | १ | ५९ | १ | ५५ | १ | ५१ | १ | ४६ | १ | ४२ | १ | ३८ | १ | ३४ |
| तुला | २ | ३० | २ | २६ | २ | २१ | २ | १८ | वृश्चिक | ४ | ३२ | ४ | २८ | ४ | २४ | ४ | १९ | ४ | १६ | ४ | १२ | ४ | ८ | ४ | ३ | ३ | ५९ | ३ | ५५ | ३ | ५१ |
| वृश्चिक | ४ | ४७ | ४ | ४३ | ४ | ३८ | ४ | ३५ | धनु | ६ | ३८ | ६ | ३४ | ६ | ३० | ६ | २५ | ६ | २२ | ६ | १८ | ६ | १४ | ६ | ९ | ६ | ५ | ६ | १ | ५ | ५७ |
| ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | |
| धनु | ६ | ५३ | ६ | ४९ | ६ | ४४ | ६ | ४१ | मकर | ८ | २५ | ८ | २१ | ८ | १७ | ८ | १२ | ८ | ९ | ८ | ५ | ८ | १ | ७ | ५६ | ७ | ५२ | ७ | ४८ | ७ | ४४ |
| मकर | ८ | ४० | ८ | ३६ | ८ | ३१ | ८ | २८ | कुम्भ | ९ | ५६ | ९ | ५२ | ९ | ४८ | ९ | ४३ | ९ | ४० | ९ | ३६ | ९ | ३२ | ९ | २७ | ९ | २३ | ९ | १९ | ९ | १५ |
| कुम्भ | १० | ११ | १० | ७ | १० | २ | ९ | ५९ | मीन | ११ | २४ | ११ | २० | ११ | १६ | ११ | ११ | ११ | ८ | ११ | ४ | ११ | ० | १० | ५५ | १० | ५१ | १० | ४७ | १० | ४३ |
| मीन | ११ | ३९ | ११ | ३५ | ११ | ३० | ११ | २७ | मेष | १ | १ | १२ | ५७ | १२ | ५३ | १२ | ४८ | १२ | ४५ | १२ | ४१ | १२ | ३७ | १२ | ३२ | १२ | २८ | १२ | २४ | १२ | २० |
| मेष | १ | १६ | १ | १२ | १ | ७ | १ | ४ | वृष | २ | ५७ | २ | ५३ | २ | ४९ | २ | ४४ | २ | ४१ | २ | ३७ | २ | ३३ | २ | २८ | २ | २४ | २ | २० | २ | १६ |
| वृष | ३ | १२ | ३ | ८ | ३ | ३ | ३ | ० | मिथुन | ५ | ११ | ५ | ७ | ५ | ३ | ४ | ५८ | ४ | ५५ | ४ | ५१ | ४ | ४७ | ४ | ४२ | ४ | ३८ | ४ | ३४ | ४ | ३० |

### १६ पं० श्रावणकृष्ण ३०गुरौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।

द्युगणः २७५३
अयनांशाः २४।९।२३

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ३ | ० | ३ | ११ | २ | ९ | ० | ६ |
| १० | २ | १९ | २१ | १५ | १८ | २४ | २४ | २४ |
| १५ | २२ | ३२ | ० | ३९ | ५८ | २८ | १३ | १३ |
| १६ | ० | १६ | २३ | १२ | ६ | २९ | १२ | १२ |
| ५७ | ७२१ | ३७ | १०९ | ० | ७२ | ४ | ३ | ३ |
| ७ | ३७ | ३८ | १९ | ३२ | २० | ४६ व. | ११ | ११ |

५
सू.
३ शु.
६
चं. ४ बु.
२
७ के.
मं. १ रा.
८
१० श.
१२गु.
९
११

◆४०।५७ या.। ♍दैत्यानां दिनं देवानां च रात्रिः। अयन संक्रान्ते रुभयतस्त्रीणिदिनानि न शुभानि विधेयानि। वर्षविश्वा १०। वर्षर्त्तुः। ❖स्त्री.पु.-चं.चं. योगःमण्डूक वाहनं वातनाडी तदीशःरविः सामान्यवृष्टियोगः। पञ्चकनिवृत्तिः ३१।३२ (सा. ५।५६)। ☾५८।१८ या.। ○अमृतसिद्धियोगः ४।४९ उ.।

मूलविचार- रेवती/अश्विनी- ति.६ भौमे ३१।० (सा.५।४२) उ.। ति.८ गुरौ ३३।१८(सा.६।३८) या.।
पञ्चक विचार- ति. ३ शनौ ७।२९ (दि. ८।१७) उ.। ति. ७ बुधे ३१।३२(सा.५।५६) या.।

*श्रावणमासकृत्यम्- महाभारतेश्रावणे नियतोमासमेक भक्तेनयः क्षिपेत्। तत्र तत्राभिषेकेण पूज्यतेज्ञातिवर्द्धनः। वामनपुराणे- घृतं च क्षीरं कुम्भांश्च घृत धेनु फलानि च। श्रावणे श्रीधरप्रीत्यैदातव्यानि विपश्चिता। श्रावणे एक भक्तं व्रतं वा विष्णु शिवाद्याभिषेकश्च कार्यः।*

अथ समस्तप्रदोषनिर्णयः। तत्र त्रयोदशी शुक्ला पूर्वा कृष्णा परा ग्राह्येति माधवः। शुक्ला त्रयोदशी पूर्वा परा कृष्णा त्रयोदशी। प्रदोषसमयो हेमाद्रौ गौडग्रन्थेषु वत्सश्च- प्रदोषोऽस्त मयादूर्ध्वं घटिकाद्वय मिष्यते। यस्तु त्रिमुहूर्त्तः प्रदोषःस्याद्रवावस्तंगते सति। तद्रौणप्रदोषकालपरः। तेन प्रदोषव्यापिनी त्रयोदशी विलोक्या। द्वितीयदिने प्रदोषव्याप्तौ स्पर्श मात्रे वा द्वितीयदिने व्रतम्। दिनद्वये प्रदोषव्याप्तौ तदेकेतरदेशव्याप्तौ वा उत्तरा उत्क्रमिति। सदैव तिथ्योरूभयोः प्रदोषव्यापिनी तिथिः। तत्र वा त्रिविभागस्यादुभयत्रापि मीयते। यदा तु कृष्णपक्षेपरविद्धा न लभ्यते। तदा तत्रापि पूर्वविद्धैव ग्राह्येति। वशिष्ठः- एकादशी तृतीया च षष्ठी चैव त्रयोदशी। पूर्वविद्धापि कर्तव्या यदि न स्यात्परेऽहनि। प्रदोषे शनिवारयोगस्य विशेषफलम्। शनिवासरे प्रदोषोऽयं दुर्लभः सर्वदेहिनाम् तत्रापि दुर्लभस्तस्मिन् कृष्णपक्षे समागते। अथ श्रावणे सोमवासरे व्रतं काम्यम्- सोमवार व्रतं कार्यं श्रावणे वै यथाविधिः। शक्तेनोपोषणं कार्यमथवा निशिभोजनमिति। सप्तनाडीतस्साधारणरीत्या- वृष्टिविमर्शः। एकनाड़ी स्थिता भौमरविचन्द्रमसौ यदा वारिपूर्णा भवेत्पृथ्वी, बहुवृष्ट्यातदाऽखिला।१। भृगुसौम्यौ यदैकत्र स्यातां जीवान्वितौ तदा। वृष्टिः स्याद्बहुलार्कस्य चन्द्रयोगे विशेषतः।२।

☞ भूम्युपवेशन दोलारोहण गर्भाधान पश्चिम -दक्षिण दिग्यात्रा (त्रयोदश्यां) नवान्नभक्षण भैषज्य जीर्णादिगृहप्रवेश (ल.११ वा २) विपणि व्यापार गजाश्वकृत्य धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। परं मासान्तादिदोषः।

# श्रीसंवत् २०७९ शकः १९४४ याम्यायनं सौम्यगोलः वर्षर्त्तुः।।

# श्रावणशुक्लपक्षः।।

राष्ट्रिय तिथि ७ श्रावणतः २१ तिथिं यावत् १९४४ शकः।।
अंग्रेजी दिनांक २९ जुलाईतः दिनांक १२ अगस्तं यावत् सन् २०२२ ई.।।

| दि.मा. घ. | प. | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | योगाः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३३ | ७ | १ | शु | ४६ | २८ | रा | ११ | ५८ | पुष्य | १० | ५६ | दि | ९ | ४५ | सिद्धि | ३५ | ९ | रा | ७ | २७ | किं | १४ | २२ | वव | ४६ | २८ | उत्पात |
| ३३ | ४ | २ | श | ४९ | ४६ | रा | १ | १७ | श्लेषा | १६ | २० | दि | ११ | ५५ | व्यतिपात | ३५ | ३१ | रा | ७ | ३५ | वा | १८ | ७ | कौ | ४९ | ४६ | मानस |
| ३३ | २ | ३ | र | ५१ | ५७ | रा | २ | ११ | मघा | २० | ४३ | दि | १ | ४१ | वरीयान | ३५ | ० | रा | ७ | २४ | तै | २० | ५२ | गर | ५१ | ५७ | मुद्गर |
| ३२ | ५९ | ४ | चं | ५२ | ५४ | रा | २ | ३४ | पू.फा. | २३ | ५९ | दि | ३ | ० | परिघ | ३३ | ३७ | सा | ६ | ५१ | व | २२ | २६ | भ | ५२ | ५४ | ध्वज |
| ३२ | ५६ | ५ | मं | ५२ | ३१ | रा | २ | २५ | उ.फा. | २५ | ५६ | दि | ३ | ४७ | शिव | ३१ | ११ | सा | ५ | ५३ | वव | २२ | ४३ | वा | ५२ | ३१ | धाता |
| ३२ | ५४ | ६ | बु | ५० | ५४ | रा | १ | ४७ | हस्त | २६ | ३८ | दि | ४ | ४ | सिद्ध | २७ | ४५ | दि | ४ | ३१ | कौ | २१ | ४३ | तै | ५० | ५४ | आनन्द |
| ३२ | ५१ | ७ | गु | ४८ | ७ | रा | १२ | ४१ | चित्रा | २६ | ९ | दि | ३ | ५४ | साध्य | २३ | २० | दि | २ | ४६ | गर | १९ | ३१ | व | ४८ | ७ | चर |
| ३२ | ४८ | ८ | शु | ४४ | २१ | रा | ११ | १० | स्वाती | २४ | ३५ | दि | ३ | १६ | शुभ | १८ | ४ | दि | १२ | ४० | भ | १६ | १४ | वव | ४४ | २१ | गद |
| ३२ | ४५ | ९ | श | ३९ | ४३ | रा | ९ | २० | विशाखा | २२ | १४ | दि | २ | २१ | शुक्ल | १२ | ६ | दि | १० | १७ | वा | १२ | २ | कौ | ३९ | ४३ | शुभ |
| ३२ | ४३ | १० | र | ३४ | २५ | रा | ७ | १३ | अनुराधा | १९ | ४ | दि | १ | ५ | ब्रह्म | ५/५२ | २८/५७ | प्रा | ७/४ | ३८/४७ | तै | ७ | ४ | गर | ३४ | २५ | मृत्यु |
| ३२ | ४० | ११ | चं | २८ | ३६ | दि | ४ | ५४ | ज्येष्ठा | १५ | २२ | दि | ११ | ३७ | वैधृति | ५० | ५२ | रा | १ | ४९ | व | १ | ३१ | भ | २८/५५ | ३६/३३ | पद्म |
| ३२ | ३७ | १२ | मं | २२ | ३० | दि | २ | २९ | मूल | ११ | १९ | दि | १० | १ | विष्कुम्भ | ४३ | १४ | रा | १० | ४७ | वा | २२ | ३० | कौ | ४९ | २४ | छत्र |
| ३२ | ३४ | १३ | बु | १६ | १८ | दि | १२ | ० | पू.षा. | ७ | ६ | दि | ८ | १९ | प्रीति | ३५ | ३३ | रा | ७ | ४२ | तै | १६ | १८ | गर | ४३ | १५ | श्रीवत्स |
| ३२ | ३१ | १४ | गु | १० | १२ | दि | ९ | ३५ | उ.षा. | २/५६ | ५९/७ | प्रा | ६/५ | ४२/८ | आयुष्मान | २८ | २ | दि | ४ | ४३ | व | १० | १२ | भ | ३७ | १८ | सौम्य |
| ३२ | २८ | १५ | शु | ४/५४ | २४/४१ | प्रा | ७/८ | १५/८ | धनिष्ठा | ५५ | ४२ | रा | ३ | ४७ | सौभाग्य | २० | ४७ | दि | १ | ४९ | वव | ४ | २४ | वा | ३१/५९ | ४५/५ | धाता |

| योगाः | अं. | फ. | सौ. | ने. | रा. | चन्द्र राशि | प्रवेशः | सूर्योदयः घं. | मि. | सूर्यास्तः घं. | मि. | औदयिक स्पष्ट सूर्यः | | | | क्रान्तिः उ. | + | रे. अं. + | मि. | चन्द्रास्तः स्टै. | टा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उत्पात | २९ | १६ | १२ | १३ | ७ | | | ५ | २३ | ६ | ३७ | ३ | ११ | १२ | २३ | १९ | १ | + | ४ | – | – |
| मानस | ३० | १७ | १३ | १४ | ८ | सिंह | १६।२० | ५ | २३ | ६ | ३७ | ३ | १२ | ९ | ३० | १८ | ४७ | + | ४ | ८ | ६ |
| मुद्गर | ३१ | १८ | १४ | १५ | ९ | | | ५ | २४ | ६ | ३६ | ३ | १३ | ६ | ३१ | १८ | ३३ | + | ४ | ८ | ३९ |
| ध्वज | १ | १९ | १५ | १६ | १० | कन्या | ३९।२८ | ५ | २४ | ६ | ३६ | ३ | १४ | ३ | ४९ | १८ | १९ | + | ४ | ९ | ११ |
| धाता | २ | २० | १६ | १७ | ११ | | | ५ | २५ | ६ | ३५ | ३ | १५ | १ | ० | १८ | ४ | + | ४ | ९ | ४३ |
| आनन्द | ३ | २१ | १७ | १८ | १२ | तुला | ५६।२४ | ५ | २५ | ६ | ३५ | ३ | १५ | ५८ | १२ | १७ | ४९ | + | ४ | १० | १४ |
| चर | ४ | २२ | १८ | १९ | १३ | | | ५ | २६ | ६ | ३४ | ३ | १६ | ५५ | २४ | १७ | ३४ | + | ४ | १० | ४८ |
| गद | ५ | २३ | १९ | २० | १४ | | | ५ | २६ | ६ | ३४ | ३ | १७ | ५२ | ३८ | १७ | १८ | + | ४ | ११ | २६ |
| शुभ | ६ | २४ | २० | २१ | १५ | वृश्चिक | ७।४९ | ५ | २७ | ६ | ३३ | ३ | १८ | ४९ | ५४ | १७ | २ | + | ४ | १२ | ८ |
| मृत्यु | ७ | २५ | २१ | २२ | १६ | | | ५ | २७ | ६ | ३३ | ३ | १९ | ४७ | ११ | १६ | ४६ | + | ४ | १२ | ५९ |
| पद्म | ८ | २६ | २२ | २३ | १७ | धनु | १५।२२ | ५ | २८ | ६ | ३२ | ३ | २० | ४४ | ३० | १६ | २९ | + | ४ | १ | ५८ |
| छत्र | ९ | २७ | २३ | २४ | १८ | | | ५ | २९ | ६ | ३१ | ३ | २१ | ४१ | ४९ | १६ | १२ | + | ४ | ३ | ४ |
| श्रीवत्स | १० | २८ | २४ | २५ | १९ | मकर | २१।४ | ५ | २९ | ६ | ३१ | ३ | २२ | ३९ | ९ | १५ | ५० | + | ३ | ४ | १४ |
| सौम्य | ११ | २९ | २५ | २६ | २० | | | ५ | ३० | ६ | ३० | ३ | २३ | ३६ | ३१ | १५ | ३८ | + | ३ | ५ | २५ |
| धाता | १२ | ३० | २६ | २७ | २१ | कुम्भ | २७।२४ | ५ | ३० | ६ | ३० | ३ | २४ | ३३ | ५४ | १५ | २० | + | ३ | – | – |

श्रीविष्णुशिवात्मकाभिषेकारम्भः। ♍तदीशः:भौमः खण्डवृष्टियोगः। सर्वार्थसिद्धियोगः २६।३८ या.। रवियोगः २६।३८ या.।
सिंहराशिः (दि. ११।५५)। ◡चन्द्रदर्शनम्। मु. ३० समा। फलं समता। सौम्यशृंगं समर्घताकरम्। धर्मसम्राट् स्वामिकरपात्रि जयन्ती २।
मु. मुहर्रम १ हिज़री सन् १४४४। मधुश्रवा ३ (मैथिले गुर्जरे च प्रसिद्धा)। स्वर्णगौरी ३ व्रतम्। सुकृतव्रतम्। ठकुराइन जयन्ती (पश्चिमे प्रसिद्धा)। यमघंटयोगः ◆
भ. २२।२६ उ. (दि. २।२२) ५२।५४ या. (रा. २।३४)। कन्याराशिः (रा. ९।११)। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रतम्। श्रावण सोमवार व्रतम्। प्रदोष व्रतवदस्य विधिः।⍓
श्रीनागपञ्चमी ५। भीत्यादौ लिखिताः मृण्मयादिनागाः वा यथोपचारं पूज्याः। तक्षकपूजा ५। काश्यां नागकूप यात्रा। ग्रामे-ग्रामे विविध व्यायाम प्रदर्शनम्। जागृतगौरी ☯
तुलाराशिः (रा. ३।५९)। कल्क्यवतारः ६। लुठ्ठनषष्ठी (बंगाल)। ⊙श्लेषा भे सूर्यः ४३।५१ (रा. १०।५७)। स्त्री.स्त्री.-सू.चं. योगः मूषक वाहनं वह्निनाडी ♍
भ. ४८।७ उ. (रा. १२।४१)। श्रीगोस्वामितुलसीदास जयन्ती ७। यायिजययोगः २६।९ उ. ४८।७ या.। रवियोगः २६।९ या.। ◆ २०।४३ या.। रवियोगः २०।४३ उ.।
भ. १६।१४ या. (दि. ११।५६)। स्थायिजययोगः २४।३५ उ. ४४।२१ या.। ☾दानं-दधित्याग व्रतारम्भः। नात्रत्यागस्तक्रादिनाम्। स्थायिजययोगः ११।१९ उ. २२।३० या.।
वृश्चिकराशिः (दि. ८।३५)। यायिजययोगः २२।१४ उ. ३९।४३ या.। रवियोगः २२।१४ उ.। ❖ विधिः। झूलनयात्रारम्भः। रवियोगः १५।२२ या.।
रवियोगः समस्त। ⍓ लोकमान्यतिलक स्मृति दिवसः। अगस्त ८। यायिजययोगः ५२।५४ उ.। रवियोगः २३।५९ या.।
भ. १।३१ उ. (प्रा. ६।४) २८।३६ या. (दि. ४।५४)। धनूराशिः (दि. ११।३७)। पुत्रदा ११ एकादशी व्रतं सर्वेषाम्। श्रावण सोमवार व्रतम्। प्रदोष व्रतवदस्य ❖
भौमप्रदोष १२ व्रतम्। ऋणापाकरणायश्रेयस्करम्। भौमव्रतम्। दुर्गायात्रा-गौरीपूजा-हनुमद्दर्शनञ्च। दामोदर द्वादशी। श्रीविष्णुपवित्रारोपण (उड़ीसा)। शाक ☾
मकरराशिः (दि. १।५५)। आखेटक त्रयोदशी (उड़ीसा)। श्रीशिवाधिवासनं पवित्रारोपणञ्च (उड़ीसा)-रात्रि व्यापिनी चतुर्दश्याम्। रवियोगः ७।६ उ.।
भ. १०।१२ उ. (दि. ९।३५) ३७।१८ या. (रा. ८।२५)। व्रताय १५ पूर्णिमा। संस्कृत दिवसः। भद्रान्ते (रा. ८।२५) रक्षाबन्धनम् (राखी)। तैत्तिरीयभिन्नयाजुषां ○
कुम्भराशिः (दि. ४।२८)। स्नान-दानादौ १५ पूर्णिमा। आपस्तम्बतैत्तिरीय शाखिनामुपाकर्म (श्रावणी)। झूलनयात्रा समापन। अमरनाथयात्रा। पञ्चकारम्भः २७।२४ (दि. ४।२८)।

## ॐ सूर्योदये दैनिकस्पष्टभौमादिग्रहाः ॐ

| ति. | वा. | भौमः | | | | बुधः | | | | मार्गीगुरुः | | | | शुक्रः | | | | वक्रीशनिः | | | | राहुः | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | शु | ० | २० | ९ | ५४ | ३ | २२ | ४९ | ४२ | ११ | १५ | ३९ | ४४ | २ | २० | १० | २६ | ९ | २४ | २३ | ४३ | ० | २४ | १० | १ |
| २ | श | ० | २० | ४७ | ३२ | ३ | २४ | ३८ | ५६ | ११ | १५ | ४० | १७ | २ | २१ | २२ | ४७ | ९ | २४ | १८ | ५६ | ० | २४ | ६ | ५० |
| ३ | र | ० | २१ | २५ | १० | ३ | २६ | २३ | ४३ | ११ | १५ | ४० | ४९ | २ | २२ | ३५ | ७ | ९ | २४ | १४ | १० | ० | २४ | ३ | ४० |
| ४ | चं | ० | २२ | २ | ४७ | ३ | २८ | ८ | ० | ११ | १५ | ४१ | २१ | २ | २३ | ४७ | २७ | ९ | २४ | ९ | २३ | ० | २४ | ० | २९ |
| ५ | मं | ० | २२ | ४० | २५ | ३ | २९ | ५२ | १७ | ११ | १५ | ४१ | ५४ | २ | २४ | ५९ | ४७ | ९ | २४ | ४ | ३७ | ० | २३ | ५७ | १८ |
| ६ | बु | ० | २३ | १८ | ३ | ४ | १ | ३६ | ३४ | ११ | १५ | ४२ | २६ | २ | २६ | १२ | ८ | ९ | २३ | ५९ | ५४ | ० | २३ | ५४ | ७ |
| ७ | गु | ० | २३ | ५५ | ४० | ४ | ३ | २० | ३८ | ११ | १५ | ४२ | ५९ | २ | २७ | २४ | २८ | ९ | २३ | ५५ | १० | ० | २३ | ५० | ५६ |
| ८ | शु | ० | २४ | ३२ | २१ | ४ | ५ | १ | ११ | ११ | १५ | ४३ | ३१ | २ | २८ | ३६ | ४८ | ९ | २३ | ५० | २७ | ० | २३ | ४७ | ४५ |
| ९ | श | ० | २५ | १० | ५६ | ४ | ६ | ४१ | ४५ | ११ | १५ | ४४ | ४ | २ | २९ | ४९ | ८ | ९ | २३ | ४५ | ४४ | ० | २३ | ४४ | ३५ |
| १० | र | ० | २५ | ४८ | ३४ | ४ | ८ | २२ | १८ | ११ | १५ | ४४ | ३६ | ३ | १ | १ | २८ | ९ | २३ | ४१ | १ | ० | २३ | ४१ | २४ |
| ११ | चं | ० | २६ | २५ | ४० | ४ | १० | २ | ५२ | व | १५ | ४४ | ४० | ३ | २ | १३ | ४९ | ९ | २३ | ३६ | १७ | ० | २३ | ३८ | १३ |
| १२ | मं | ० | २७ | २ | ४५ | ४ | ११ | ४१ | ३० | ११ | १५ | ४१ | ३६ | ३ | ३ | २६ | ९ | ९ | २३ | ३१ | ३४ | ० | २३ | ३५ | २ |
| १३ | बु | ० | २७ | ३९ | ५० | ४ | १३ | १५ | १ | ११ | १५ | ३८ | २९ | ३ | ४ | ३८ | २९ | ९ | २३ | २६ | ५१ | ० | २३ | ३१ | ५१ |
| १४ | गु | ० | २८ | १६ | ५५ | ४ | १४ | ४८ | ३२ | ११ | १५ | ३५ | १५ | ३ | ५ | ५० | ५८ | ९ | २३ | २२ | ७ | ० | २३ | २८ | ४१ |
| १५ | शु | ० | २८ | ५४ | ० | ४ | १६ | २२ | २ | ११ | १५ | ३२ | १ | ३ | ७ | ३ | ३४ | ९ | २३ | १७ | २४ | ० | २३ | २५ | ३० |

भौमादीनाञ्चारः- भौमः- ति. ११ सोमे कृत्तिका भे २३।११ (दि. २।४४)।। बुधः- ति. ५ भौमे मघायां सिंहे च ४।२६ (दि. ७।११)। ति. १३ बुधे पूर्वाफाल्गुनी भे ३।१२ (प्रा. ६।४६)।। मार्गीगुरुः- ति. ११ सोमे वक्री १।१७ (प्रा. ५।५९)।। शुक्रः- ति. ९ शनौ कर्के ९।१ (दि. ९।३)। ति. ११ सोमे पुष्ये ५४।५४ (रा. ३।२६)।। वक्रीशनिः- ति. १४ गुरौ श्रवण ४ चरणे २६।५६ (दि. ४।१६)।। राहुः- भरणी ४ चरणे केतुश्च विशाखा २ चरणे ।।

**१७ पं० श्रावणशुक्ल ८ शुक्रे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।**
द्युगणः २७६१
अयनांशाः २४।९।२४

| सू. | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ६ | ० | ४ | ११ | २ | ९ | ० | ६ |
| १७ | १४ | २४ | ५ | १५ | २८ | २३ | २३ | २३ |
| ५२ | ३३ | ३२ | १ | ४३ | ३६ | ५० | ४७ | ४७ |
| ३८ | २० | २१ | ११ | २१ | ४८ | २७ | ४५ | ४५ |
| ५७ | ८२१ | ३८ | १०० | ० | ७२ | ४ | ३ | ३ |
| १६ | २७ | ३५ | ३४ | ३३ मा. | २० | ४३ व. | ११ | ११ |

५ बु. | ३ शु. | ६ | सू. ४ | २ | चं. ७ के. | मं. १ रा. | ८ | १० श. | १२ गु. | ९ | ११

पक्षेऽस्मिन् विविधमुहूर्त्ताः- ति. १ शुक्रे पुष्ये सूर्ययुतिः। श्लेषा भे सूर्यभोग्यम्। ति. २ शनौ श्लेषा भे पूर्वदोषो व्यतिपातश्च। ति. ३ रवौ मघा भे भौमवेधः। दि. १।४१ उ. पू.फा. भे नौकाघटन वस्तुविक्रय शस्त्रघटन मुहूर्त्तः। ति. ४ सोमे पू.फा. भे रिक्तादोषो विष्टिश्च। ति. ५ भौमे उ.फा. भे पुंसवनसीमन्त सूतीस्नान सुभगांविनारक्तवस्त्रधारण भूपाघटन मुहूर्त्तः। दि. ३।४७ उ. हस्ते रक्तवस्त्रधारण उत्तरांविनान्यदिग्यात्रा (पंचम्यां) शिरामोक्षण मुहूर्त्तः। ति. ६ बुधे हस्ते जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन नववस्त्रधारण गोक्रय-विक्रय शिल्पविद्या भैषज्य विपणि गजाश्वकृत्य धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। दि. ४।४ उ. चित्रा भे नववस्त्रधारण जीर्णादिगृहप्रवेश (च.शु) विपणि वस्तुक्रय गजाश्वकृत्य मुहूर्त्तः। ति. ७ गुरौ चित्रा भे अन्नप्राशन शय्यासनाद्युपभोग नववस्त्रधारण लतापादपारोपण नवान्नभक्षण नौकाघटन जीर्णादिगृहप्रवेश (च.शु) विपणि व्यापार वस्तुक्रय गजकृत्य शिरामोक्षण धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। दि. ३।५४ उ. विष्टेःपूर्वं (रा. १२।४१) स्वात्यां सूतीस्नान गर्भाधान नववस्त्रधारण जीर्णादिगृहप्रवेश (ल.११) मुहूर्त्तः। ति. ८ शुक्रे स्वात्यां विष्टेः परं (दि. ११।५६) शिशुताम्बूलभक्षण नववस्त्रधारण नवान्नभक्षण भैषज्य नौकाघटन जीर्णादिगृहप्रवेश (च.शु) वस्तुक्रय अश्वकृत्य धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ९ शनौ विशाखा भे रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। ति. १० रवौ मैत्रे सूर्यवेधः। ज्येष्ठा भे सूर्यवेधावसानं न चन्द्रभुक्तमशुभम्। ति. ११ सोमे ज्येष्ठा भे पूर्वदोषो वैधृतिश्च। ति. १२ भौमे मूले शस्त्रघटन मुहूर्त्तः। ति. १३ बुधे दि. ८।१९ उ. दि. १२।० या. उ.षा. ☞

| तिथि ल.अ. | १ शु घं. | मि. | २ श घं. | मि. | ३ र घं. | मि. | ४ चं घं. | मि. | ५ मं घं. | मि. | ६ बु घं. | मि. | ७ गु घं. | मि. | ८ शु घं. | मि. | ९ श घं. | मि. | १० र घं. | मि. | ११ चं घं. | मि. | १२ मं घं. | मि. | १३ बु घं. | मि. | १४ गु घं. | मि. | १५ शु घं. | मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कर्क | ६ | ४७ | ६ | ४४ | ६ | ४० | ६ | ३६ | ६ | ३२ | ६ | २८ | ६ | २४ | ६ | २१ | ६ | १७ | ६ | १३ | ६ | ९ | ६ | ५ | ६ | १ | ५ | ५८ | ५ | ५४ |
| सिंह | ९ | १ | ८ | ५८ | ८ | ५४ | ८ | ५० | ८ | ४६ | ८ | ४२ | ८ | ३८ | ८ | ३५ | ८ | ३१ | ८ | २७ | ८ | २३ | ८ | १९ | ८ | १५ | ८ | १२ | ८ | ८ |
| कन्या | ११ | १४ | ११ | ११ | ११ | ७ | ११ | ३ | १० | ५९ | १० | ५५ | १० | ५१ | १० | ४८ | १० | ४४ | १० | ४० | १० | ३६ | १० | ३२ | १० | २८ | १० | २५ | १० | २१ |
| तुला | १ | ३० | १ | २७ | १ | २३ | १ | १९ | १ | १५ | १ | ११ | १ | ७ | १ | ४ | १ | ० | १२ | ५६ | १२ | ५२ | १२ | ४८ | १२ | ४४ | १२ | ४१ | १२ | ३७ |
| वृश्चिक | ३ | ४७ | ३ | ४३ | ३ | ३९ | ३ | ३६ | ३ | ३२ | ३ | २८ | ३ | २४ | ३ | २० | ३ | १६ | ३ | १२ | ३ | ८ | ३ | ५ | ३ | १ | २ | ५८ | २ | ५४ |
| धनु | ५ | ५३ | ५ | ४९ | ५ | ४६ | ५ | ४२ | ५ | ३८ | ५ | ३४ | ५ | ३० | ५ | २७ | ५ | २३ | ५ | १९ | ५ | १५ | ५ | ११ | ५ | ७ | ५ | ४ | ५ | ० |
| ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | |
| मकर | ७ | ४० | ७ | ३६ | ७ | ३२ | ७ | २८ | ७ | २४ | ७ | २१ | ७ | १७ | ७ | १४ | ७ | १० | ७ | ६ | ७ | २ | ६ | ५८ | ६ | ५५ | ६ | ५१ | ६ | ४७ |
| कुम्भ | ९ | ११ | ९ | ८ | ९ | ४ | ९ | ० | ८ | ५६ | ८ | ५२ | ८ | ४८ | ८ | ४४ | ८ | ४० | ८ | ३६ | ८ | ३२ | ८ | २९ | ८ | २५ | ८ | २२ | ८ | १८ |
| मीन | १० | ३९ | १० | ३५ | १० | ३१ | १० | २७ | १० | २४ | १० | २० | १० | १६ | १० | १२ | १० | ८ | १० | ४ | १० | ० | ९ | ५७ | ९ | ५३ | ९ | ५० | ९ | ४६ |
| मेष | १२ | १६ | १२ | १२ | १२ | ८ | १२ | ४ | १२ | ० | ११ | ५६ | ११ | ५२ | ११ | ४८ | ११ | ४४ | ११ | ४० | ११ | ३७ | ११ | ३४ | ११ | ३० | ११ | २७ | ११ | २३ |
| वृष | २ | १२ | २ | ८ | २ | ४ | २ | ० | १ | ५६ | १ | ५२ | १ | ४८ | १ | ४४ | १ | ४१ | १ | ३७ | १ | ३३ | १ | ३० | १ | २६ | १ | २३ | १ | १९ |
| मिथुन | ४ | २६ | ४ | २३ | ४ | १९ | ४ | १५ | ४ | ११ | ४ | ७ | ४ | ३ | ४ | ० | ३ | ५६ | ३ | ५२ | ३ | ४८ | ३ | ४४ | ३ | ४० | ३ | ३७ | ३ | ३३ |

**१८ पं० श्रावणशुक्ल १५ शुक्रे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।**
द्युगणः २७६८
अयनांशाः २४।९।२५

| सू. | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ९ | ० | ४ | ११ | ३ | ९ | ० | ६ |
| २४ | २३ | २८ | १६ | १५ | ७ | २३ | २३ | २३ |
| ३३ | ३२ | ५४ | २२ | ३२ | ३ | १७ | २५ | २५ |
| ५४ | ४० | ० | २ | १ | ३४ | २४ | ३० | ३० |
| ५७ | ८४८ | ३७ | ९३ | ३ | ७२ | ४ | ३ | ३ |
| २५ | ३ | ४ | ३२ | १४ व. | ३६ | ४३ व. | ११ | ११ |

बु. ५ | ३ | ६ | सू. ४ शु. | २ | ७ के. | मं. १ रा. | ८ | चं. १० श. | १२ गु. | ९ | ११

☯ पञ्चमी (उड़ीसा)। भौमव्रतम्। दुर्गायात्रा-गौरीपूजा-हनुमद्दर्शनञ्च। *श्रवणाभावे* ऋग्वेदिनामुपाकर्म (श्रावणी)। रवियोगः २५।५६ उ.। ○चोपाकर्म (श्रावणी)। हयग्रीवोत्पत्तिः। काश्यां भदैनी स्थित मन्दिरे दर्शनं पूजनञ्च। रवियोगः २।५९ या.।

मूलविचार-श्लेषा/मघा- ति. १ शुक्रे १०।५६ (दि. ९।४५) उ.। ति. ३ रवौ २०।४३ (दि. १।४१) या.।
ज्येष्ठा/मूल- ति. १० रवौ १९।४ (दि. १।५) उ.। ति. १२ भौमे ११।१९ (दि. १०।१) या.।
मूलविचार- ति. १५ शुक्रे २७।२४ (दि. ४।२८) उ.।

रवेर्दक्षिणोत्तरेऽयनेस्वर प्रवाहात्प्रातःकाले उत्थानम् - प्रातर्नित्यं समुत्तिष्ठेत्स्वारम्भस्य स्वरेण हि। अयने दक्षिणेऽब्जस्य स्वरेणैवोत्तरं रवेः।१। निजस्वरोदयं कार्यं न भवेत्प्रोक्तवत्तदा। प्राणायामादि यत्नेन वाहयेत्तं स्वरं सुधिरिति।२। श्रावण शुक्लापञ्चमीनागपञ्चमीयं परविद्धा। पञ्चमी नागपूजायां कार्या षष्ठीसमन्विता। तस्यान्तु तुषिता नागा इतरा सचतुर्थिका।१। श्रावणे पञ्चमी शुक्ला सम्प्रोक्ता नागपञ्चमी। ताम्परित्यज्य पञ्चम्यश्चतुर्थीसहिता हिता।२।
नागपूजन विधिः- श्रावणे मासि पञ्चम्यां शुक्लपक्षे वरानने। द्वारस्योभयतो लेख्या गोमयेन विषोल्वणाः (सर्पाः)।३। घृतोदकाभ्यां पयसा तर्पयित्वा वरानने। गोधूमैः पयसा चैव लाजैश्च विविधैस्तथा। पूजयेद्विविधैर्दीपैर्दधि दूर्वाङ्कुरैस्तथा। माल्यपुष्पोपहारैश्च ब्राह्मणानाञ्च तर्पणम्। तेन तुष्टिं समायान्ति पन्नगास्तक्षकादयः। आसप्तमात्कुले तस्य न भयं सर्पतो भवेत्। मन्त्रोऽप्युच्यते सर्पविषस्य प्रतिशोधकः। तस्य प्रजपमात्रेण न विषं क्रमतेक्वचित्।
मन्त्रः- ॐ कुं कुलाय हुं फट् स्वाहा। अस्य जपात्सर्पविपक्षयः। आदौ लिखितस्थलेसर्वनागेभ्यो नमः सर्वनागानावाहयामीत्यावाह्य सर्वनागेभ्यो नमः। इति मन्त्रेण यथोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत्। मन्त्राः- अनन्तं वासुकिं शेषं पद्मकम्बलमेव च। तथा कर्कोटकं नागं नागमश्वतरन्तथा धृतराष्ट्रं शङ्खपालं कालाख्यं तक्षकं तथा पिङ्गलञ्च महानागं प्रणमामि मुहुर्मुहुरिति। स्नान क्षौर विचारः- शिरः स्नानं प्रकुर्वीत दैवे पित्र्ये च कर्मणि। प्राङ्मुखोदङ्मुखोवापिश्मश्रुकर्म च कारयेत्। श्रावणी कर्म- अथातः श्रावणमासे श्रवणर्क्षयुतेऽहनि। कुर्युर्नभस्युपाकर्म ऋग्यजुः सामगाः क्रमात् श्रावण्यां ग्रहसंक्रान्तौ। श्रावणेशुक्लपञ्चम्यां कुर्यात् हस्तर्क्षसंयुते। दिवसेवंविधातव्यमुपाकर्म यथोदितम्।

☞ भे पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन सुभगांविनानववस्त्रधारण शिल्पविद्या गृहारम्भ -जीर्णादिगृहप्रवेश (च.शु) धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. १४ गुरौ प्रा. ६।४२ उ. श्रवणे चतुर्दश्यां रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। ति. १५ शुक्रे धनिष्ठा भे केतुवेधः।

## भाद्रपदकृष्णपक्षः।।

राष्ट्रिय तिथि २२ श्रावणतः तिथि ५ भाद्रपदं यावत् १९४४ शकः।।
अंग्रेजी दिनांक १३ अगस्ततः २७ दिनांक यावत् सन् २०२२ ई.।।

| दि.मा. घ. | प. | श्रीसंवत् २०७९ शकः १९४४ याम्यायनं सौम्यगोलः वर्षर्तुः।। | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | योगाः | अं. | फ. | सौ. | ने. | रा. | चन्द्र राशि | प्रवेशः | सूर्योदयः घं. | मि. | सूर्यास्तः घं. | मि. | औदयिक स्पष्ट सूर्यः | | | | क्रान्तिः उ. | + | रे. अं. ± | मि. | चन्द्रोदयः स्टै. | टा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३२ | २५ | २ | श | ५४ | २५ | रा | ३ | १७ | शतभिष | ५२ | ५८ | रा | २ | ४२ | शोभन | १४ | ० | दि | ११ | ७ | तै | २६ | ४५ | गर | ५४ | २५ | आनन्द | १३ | १ | २७ | २८ | २२ | | | ५ | ३१ | ६ | २९ | ३ | २५ | ३१ | १९ | १५ | २ | + | ३ | ७ | ५३ |
| ३२ | २१ | ३ | र | ५० | ३८ | रा | १ | ४७ | पू.भा. | ५१ | ५ | रा | १ | ५८ | अतिगण्ड | ७ | ५० | दि | ८ | ४० | व | २२ | ३२ | भ | ५० | ३८ | चर | १४ | २ | २८ | २९ | २३ | मीन | ३६।३३ | ५ | ३२ | ६ | २८ | ३ | २६ | २८ | ४५ | १४ | ४४ | + | ३ | ८ | २९ |
| ३२ | १८ | ४ | चं | ४७ | ४९ | रा | १२ | ४० | उ.भा. | ५० | ९ | रा | १ | ३६ | सुकर्मा | २ ५५ | २० २२ | प्रा | ६ ४ | २८ ३७ | बव | १९ | १४ | वा | ४७ | ४९ | गद | १५ | ३ | २९ | ३० | २४ | | | ५ | ३२ | ६ | २८ | ३ | २७ | २६ | १३ | १४ | २६ | + | ३ | ९ | ४ |
| ३२ | १५ | ५ | मं | ४६ | १० | रा | १२ | १ | रेवती | ५० | २२ | रा | १ | ४२ | शूल | ५३ | ५८ | रा | ३ | ८ | कौ | १७ | ० | तै | ४६ | १० | शुभ | १६ | ४ | ३० | ३१ | २५ | मेष | ५०।२२ | ५ | ३३ | ६ | २७ | ३ | २८ | २३ | ४२ | १४ | ७ | + | २ | ९ | ३७ |
| ३२ | १२ | ६ | बु | ४५ | ४६ | रा | ११ | ५२ | अश्विनी | ५१ | ५० | रा | २ | १८ | गण्ड | ५१ | १५ | रा | २ | ४ | गर | १५ | ५८ | व | ४५ | ४६ | मृत्यु | १७ | ५ | ३१ | १ | २६ | | | ५ | ३४ | ६ | २६ | ३ | २९ | २१ | १२ | १३ | ४८ | + | २ | १० | ११ |
| ३२ | ९ | ७ | गु | ४६ | ४१ | रा | १२ | १४ | भरणी | ५४ | ३४ | रा | ३ | २४ | वृद्धि | ४९ | ३४ | रा | १ | २४ | भ | १६ | १४ | बव | ४६ | ४१ | पद्म | १८ | ६ | १ | २ | २७ | | | ५ | ३४ | ६ | २६ | ४ | ० | १८ | ४४ | १३ | २९ | + | २ | १० | ४६ |
| ३२ | ६ | ८ | शु | ४८ | ४८ | रा | १ | ६ | कृत्तिका | ५८ | २८ | रा | ४ | ५८ | ध्रुव | ४८ | ४७ | रा | १ | ६ | वा | १७ | ४५ | कौ | ४८ | ४८ | छत्र | १९ | ७ | २ | ३ | २८ | वृष | १०।३३ | ५ | ३५ | ६ | २५ | ४ | १ | १६ | १८ | १३ | १० | + | २ | ११ | २४ |
| ३२ | २ | ९ | श | ५२ | ७ | रा | २ | २७ | रोहिणी | ६० | ० | स | म | स्त | व्याघात | ४८ | ५२ | रा | १ | ९ | तै | २० | २८ | गर | ५२ | ७ | श्रीवत्स | २० | ८ | ३ | ४ | २९ | | | ५ | ३६ | ६ | २४ | ४ | २ | १३ | ५३ | १२ | ५१ | + | २ | १२ | ६ |
| ३१ | ५९ | १० | र | ५६ | १९ | रा | ४ | ८ | रोहिणी | ३ | २९ | प्रा | ७ | ० | हर्षण | ४९ | ४२ | रा | १ | २९ | व | २४ | १३ | भ | ५६ | १९ | धाता | २१ | ९ | ४ | ५ | ३० | मिथुन | ३६।२५ | ५ | ३६ | ६ | २४ | ४ | ३ | ११ | ३० | १२ | ३१ | + | २ | १२ | ५२ |
| ३१ | ५६ | ११ | चं | ६० | ० | स | म | स्त | मृगशिरा | ९ | २० | दि | ९ | २१ | वज्र | ५१ | ० | रा | २ | १ | बव | २८ | ४५ | वा | ६० | ० | आनन्द | २२ | १० | ५ | ६ | ३१ | | | ५ | ३७ | ६ | २३ | ४ | ४ | ९ | ९ | १२ | ११ | + | १ | १ | ४२ |
| ३१ | ५३ | ११ | मं | १ | ११ | प्रा | ६ | ५ | आर्द्रा | १५ | ४३ | दि | ११ | ५४ | सिद्धि | ५२ | ३५ | रा | २ | ३९ | वा | १ | ११ | कौ | ३३ | ४४ | चर | २३ | ११ | ६ | ७ | १ | | | ५ | ३७ | ६ | २३ | ४ | ५ | ६ | ४९ | ११ | ५१ | + | १ | २ | ३४ |
| ३१ | ४९ | १२ | बु | ६ | १६ | दि | ८ | ८ | पुनर्वसु | २२ | १६ | दि | २ | ३२ | व्यतिपात | ५४ | ४ | रा | ३ | १६ | तै | ६ | १६ | गर | ३८ | ४४ | गद | २४ | १२ | ७ | ८ | २ | कर्क | ५।३८ | ५ | ३८ | ६ | २२ | ४ | ६ | ४ | ३२ | ११ | ३१ | + | १ | ३ | ३० |
| ३१ | ४६ | १३ | गु | ११ | १२ | दि | १० | ८ | पुष्य | २८ | २९ | दि | ५ | ३ | वरीयान | ५५ | ९ | रा | ३ | ४३ | व | ११ | १२ | भ | ४३ | २२ | शुभ | २५ | १३ | ८ | ९ | ३ | | | ५ | ३९ | ६ | २१ | ४ | ७ | २ | १६ | ११ | ११ | + | ० | ४ | २५ |
| ३१ | ४२ | १४ | शु | १५ | ३१ | दि | ११ | ५२ | श्लेषा | ३४ | ४ | रा | ७ | १८ | परिघ | ५५ | ३८ | रा | ३ | ५५ | श | १५ | ३१ | च | ४७ | १५ | मृत्यु | २६ | १४ | ९ | १० | ४ | सिंह | ३४।४ | ५ | ४० | ६ | २० | ४ | ८ | ० | २ | १० | ५१ | + | ० | ५ | २१ |
| ३१ | ३९ | ३० | श | १८ | ५८ | दि | १ | १५ | मघा | ३८ | ४२ | रा | ९ | ९ | शिव | ५५ | १५ | रा | ३ | ४६ | नाग | १८ | ५८ | किं | ५० | ७ | पद्म | २७ | १५ | १० | ११ | ५ | | | ५ | ४० | ६ | २० | ४ | ८ | ५७ | ४९ | १० | ३० | - | ० | - | - |

दधिभाद्रपदे त्यजेत्। नात्रत्यागस्तक्रादीनाम्। अशून्यशयन २ व्रतम्। चन्द्रोदयः(रा. ७।५३)। श्री लक्ष्मीयुतं विष्णुं पर्यंके पूजनादक्षय धन-दाम्पत्यसुखप्राप्तिः।◆

भ.२२।३२ उ.(दि. २।३३)५०।३८ या. (रा. १।४७)। मीनराशिः (रा. ८।९)। विशालाक्षी यात्रा ३। कज्जली (कजरी) ३। गोपूजा ३। गवामलंकरणं पूजनञ्च।

संकष्टी (बहुला) श्रीगणेश ४ व्रतम्। चन्द्रोदयः(रा. ९।४)। बहुला चतुर्थी (मध्य प्रदेश)। भारतीय स्वतन्त्रता दिवसः ७६ तमः। ध्वजोत्तोलनम्-राष्ट्रगानम्-

मेषराशिः (रा. १।४२)। रक्षापञ्चमी (उड़ीसा)। पञ्चकनिवृत्तिः ५०।२२ (रा. १।४२)। सर्वार्थामृतसिद्धियोगः५०।२२ उ.। रवियोगः ५०।२२ उ.।

भ. ४५।४६ उ. (रा. ११।५२)। श्रीचन्द्रषष्ठी ६। चन्द्रोदयः (रा. १०।११)। हलषष्ठी ६ व्रतम् (ललही छठ)। मनसादेवी पूजा (बंगाल)। मनसा पूजा समाप्त।

भ. १६।१४ या. (दि.१२।४)। सौरभाद्रपदमासारम्भः। यायिजययोगः४६।४१ या.। यमघंटयोगः५४।३४ उ.। रवियोगः५४।३४ या.। सर्वार्थसिद्धियोगः५१।५ उ.।

वृषराशिः (दि. ९।४८)। श्रीकृष्णजन्माष्टमी ८ व्रतम्। कृष्णावतारः ८। चन्द्रोदयः (रा. ११।२४)। गोकुलाष्टमी ८। स्थायिजययोगः४८।४८ या.। यमघंटयोगः❖

उदयव्यापिनी रोहिणी मतावलम्बिनां श्रीकृष्णजन्मव्रतम्। यायिजययोगः५२।७ या.। सर्वार्थामृतसिद्धियोगःसमस्त। ❖५८।२८ उ.।

भ. २४।१३ उ. (दि. ३।१७) ५६।१९ या. (रा. ४।८)। मिथुनराशिः (रा. ८।१०)। राजधान्यां विविधोत्सवायोजनञ्च। यायिजययोगः४७।४९ उ.।

सर्वार्थामृतसिद्धियोगः९।२० या.। ◆विन्ध्याचली-भीमचण्डी देव्योर्जयन्ती २। कज्जली निमित्तकं रात्रौ जागरणम् (रतजगा)। त्रिपुष्करयोगः५२।५८ उ.५४।२५ या.।

जया ११ एकादशी व्रतं सर्वेषाम्। ⊙सायनकन्यायां सूर्यः४५।३० (रा. ११।४९)। दृश्यागस्त्योदयः ३९।४९ (रा. ९।३३)। राष्ट्रियभाद्रपदमासः दि. ३१।

कर्कराशिः (दि.७।५३)। दिवा ८।८ वादनं यावदेकादशी व्रतस्य पारणा। प्रदोष १२ व्रतम्। कलियुगादिः१३। यमघंटयोगः१५।४३ या.। त्रिपुष्करयोगः१५।४३ उ.।

भ. ११।१२ उ. (दि. १०।८) ४३।२२ या. (रा. ११।०)। मासशिवरात्रि १३ व्रतम्। "भवेद्यत्र त्रयोदश्यां भूतव्याप्ता महानिशेत्युक्तेः।" अघोरचतुर्दशी १४ (प्रदोषे)।○

सिंहराशिः (रा. ७।१८)। श्राद्धादौ ३० अमावस्या। ○ सर्वार्थामृतसिद्धियोगः२८।२९ या.।

स्नान-दानादौ ३० अमावस्या। कुशोत्पाटनी ३० अमावस्या। "ऊँ हूँ फट्" मन्त्रेण कुशग्रहणम्। पापवारान्विते दर्शे दुर्भिक्षं च प्रजाभयम्।

### ॐ सूर्योदये दैनिकस्पष्टभौमादिग्रहाः ॐ

| ति. | वा. | भौमः | | | | बुधः | | | | वक्रीगुरुः | | | | शुक्रः | | | | वक्रीशनिः | | | | राहुः | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | श | ० | २९ | ३१ | ४ | ४ | १७ | ५५ | ३४ | ११ | १५ | २८ | ४७ | ३ | ८ | १६ | २० | ९ | २३ | १२ | ४१ | ० | २३ | २२ | १९ |
| ३ | र | १ | ० | ८ | ९ | ४ | १९ | २५ | ३५ | ११ | १५ | २५ | ३३ | ३ | ९ | २८ | ४६ | ९ | २३ | ७ | ५७ | ० | २३ | १९ | ८ |
| ४ | चं | १ | ० | ४५ | १४ | ४ | २० | ५० | २४ | ११ | १५ | २२ | १९ | ३ | १० | ४१ | २३ | ९ | २३ | ३ | १४ | ० | २३ | १५ | ५७ |
| ५ | मं | १ | १ | २१ | १७ | ४ | २२ | १५ | १३ | ११ | १५ | १९ | ५ | ३ | ११ | ५३ | ५९ | ९ | २२ | ५८ | ३१ | ० | २३ | १२ | ४७ |
| ६ | बु | १ | १ | ५६ | ४४ | ४ | २३ | ४० | ३ | ११ | १५ | १५ | ५१ | ३ | १३ | ६ | ३५ | ९ | २२ | ५३ | ४७ | ० | २३ | ९ | ३६ |
| ७ | गु | १ | २ | ३२ | ११ | ४ | २५ | ४ | ५३ | ११ | १५ | १२ | ३७ | ३ | १४ | १९ | ११ | ९ | २२ | ४९ | ४ | ० | २३ | ६ | २५ |
| ८ | शु | १ | ३ | ७ | ३८ | ४ | २६ | २३ | ५२ | ११ | १५ | ९ | २३ | ३ | १५ | ३१ | ४७ | ९ | २२ | ४४ | २१ | ० | २३ | ३ | १४ |
| ९ | श | १ | ३ | ४३ | ५ | ४ | २७ | ३८ | ४५ | ११ | १५ | ६ | ९ | ३ | १६ | ४४ | २४ | ९ | २२ | ३९ | ३८ | ० | २३ | ० | ३ |
| १० | र | १ | ४ | १८ | ३२ | ४ | २८ | ५३ | ३२ | ११ | १५ | २ | ५५ | ३ | १७ | ५७ | ० | ९ | २२ | ३४ | ५४ | ० | २२ | ५६ | ५३ |
| ११ | चं | १ | ४ | ५३ | ५९ | ५ | ० | ८ | १ | ११ | १४ | ५९ | ४१ | ३ | १९ | ९ | ३६ | ९ | २२ | ३० | ११ | ० | २२ | ५३ | ४२ |
| ११ | मं | १ | ५ | २९ | २६ | ५ | १ | २२ | ३४ | ११ | १४ | ५६ | २७ | ३ | २० | २२ | १२ | ९ | २२ | २५ | २८ | ० | २२ | ५० | ३१ |
| १२ | बु | १ | ६ | ४ | ५३ | ५ | २ | २४ | ३३ | ११ | १४ | ५३ | १३ | ३ | २१ | ३४ | ४८ | ९ | २२ | २० | ४४ | ० | २२ | ४७ | २० |
| १३ | गु | १ | ६ | ४० | २० | ५ | ३ | २२ | ५४ | ११ | १४ | ४८ | ४५ | ३ | २२ | ४८ | १२ | ९ | २२ | १६ | १ | ० | २२ | ४४ | ९ |
| १४ | शु | १ | ७ | १५ | ४७ | ५ | ४ | २१ | १४ | ११ | १४ | ४२ | ५९ | ३ | २४ | १ | ३६ | ९ | २२ | १२ | ५ | ० | २२ | ४० | ५९ |
| ३० | श | १ | ७ | ५१ | १४ | ५ | ५ | १९ | ३६ | ११ | १४ | ३७ | ८ | ३ | २५ | १५ | ० | ९ | २२ | ८ | ३० | ० | २२ | ३७ | ४८ |

*भौमादीनाञ्चारः- भौमः-ति. २ शनौ वृषे ४६।४९ (रा.१२।१५)।। बुधः- ति. ८ शुक्रे उत्तराफाल्गुनी भे १२।५६ (दि.१०।४५)।ति. १० रवौ कन्यायां ५३।३३(रा.३।१)।। वक्रीगुरुः- उत्तराभाद्रपदा ४ चरणे ।। शुक्रः- ति. ८ शुक्रे श्लेषा भे ५६।२२ (रा. ४।८)।। वक्रीशनिः- श्रवण ४ चरणे ।। राहुः- ति.२ शनौ भरणी ३ चरणे केतुश्च विशाखा १ चरणे ४३।४०(रा. १०।५९)।।*

**१९पं० भाद्रपदकृष्ण ८ शुक्रे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।**
द्युगणः २७७५
अयनांशाः २४।९।२६

| सू. | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | ० | १ | ४ | ११ | ३ | ९ | ० | ६ |
| १ | २७ | ३ | २६ | १५ | १५ | २२ | २३ | २३ |
| १६ | ४८ | ७ | २३ | ९ | ३१ | ४४ | ३ | ३ |
| १८ | ० | ३८ | ५२ | २३ | ४७ | २१ | १४ | १४ |
| ५७ | ७५२ | ३५ | ७४ | ३ | ७२ | ४ | ३ | ३ |
| ३५ | १० | २७ | ५३ | १४ | ३७ | ४३ | ११ | ११ |
| | | | | व. | | व. | | |

६ | ४ शु. | ७ के. | सू. ५ बु. | ३ | ८ | २ मं. | चं. १ रा. | ९ | ११ | १० श. | १२गु.

पक्षेऽस्मिन् विविधमुहूर्त्ताः- ति. २ शनौ शतभिषजि वस्तुक्रय गजाश्वकृत्य मुहूर्त्तः। ति. ३ रवौ पू.भा. भे विष्टेःपूर्वं (दि. २।३३) भूपाघटन शिल्पविद्या नौकाघटन वस्तुक्रय शस्त्रघटन धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ४ सोमे उ.भा. भे रिक्तादोषः। रा.१।३६ उ.रेवत्यां पश्चिमोत्तरदिग्यात्रा मुहूर्त्तः। ति. ५ भौमे रेवत्यां सूतीस्नान पुंसवनसीमन्त रक्तवस्त्रधारण पश्चिमदिग्यात्रा वस्तुक्रय मुहूर्त्तः। ति. ६ बुधे अश्विन्यां जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन नववस्त्रधारण गोक्रय-विक्रय भैषज्य विपणि वस्तुक्रय गजाश्वकृत्य मुहूर्त्तः। ति. ७ गुरौ भरण्यां राहुयुतिः विष्टिश्च। ति. ८ शुक्रे कृत्तिका भे शनिवेधः। ति. ९ शनौ रोहिण्यां रिक्तादोषः। ति. १० रवौ प्रा. ७।० उ. विष्टेःपूर्वं (दि. ३।१७) मृगे पुंसवनसीमन्त सूतीस्नान शय्यासनाद्युपभोग लतापादपारोपण पूर्व-दक्षिण दिग्यात्रा नवान्नभक्षण शिल्पविद्या भैषज्य नौकाघटन विपणि गजाश्वकृत्य शिरामोक्षण शस्त्रघटन धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ११ सोमे मृगे जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण पश्चिम-दक्षिण दिग्यात्रा भैषज्य विपणि व्यापार गजाश्वकृत्य मुहूर्त्तः। आर्द्रा भे धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ११ भौमे आर्द्रा भे शस्त्रघटन मुहूर्त्तः। दि. ११।५४ उ. पुनर्वसौ सुभगांविनारक्तवस्त्रधारण भूपाघटन नवान्नभक्षण मुहूर्त्तः। ति. १२ बुधे पुनर्वसौ व्यतिपातः। रा. ३।१६ उ. पुष्ये उत्तरांविनान्यदिग्यात्रा मुहूर्त्तः। परं मासान्तादि दोषः।

| तिथि ल.अ. | २ श घं. | मि. | ३ र घं. | मि. | ४ चं घं. | मि. | ५ मं घं. | मि. | ६ बु घं. | मि. | तिथि ल.अ. | ७ गु घं. | मि. | ८ शु घं. | मि. | ९ श घं. | मि. | १० र घं. | मि. | ११ चं घं. | मि. | ११ मं घं. | मि. | १२ बु घं. | मि. | १३ गु घं. | मि. | १४ शु घं. | मि. | ३० श घं. | मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कर्क | ५ | ५० | ५ | ४७ | ५ | ४३ | ५ | ३९ | ५ | ३६ | सिंह | ७ | ४७ | ७ | ४४ | ७ | ४१ | ७ | ३७ | ७ | ३२ | ७ | २८ | ७ | २४ | ७ | २१ | ७ | १७ | ७ | १३ |
| सिंह | ८ | ४ | ८ | १ | ७ | ५७ | ७ | ५३ | ७ | ५० | कन्या | ९ | ५८ | ९ | ५५ | ९ | ५२ | ९ | ४८ | ९ | ४५ | ९ | ४१ | ९ | ३७ | ९ | ३४ | ९ | ३० | ९ | २६ |
| कन्या | १० | १७ | १० | १४ | १० | १० | १० | ६ | १० | २ | तुला | १२ | १४ | १२ | ११ | १२ | ८ | १२ | ४ | १२ | ० | ११ | ५७ | ११ | ५३ | ११ | ५० | ११ | ४६ | ११ | ४२ |
| तुला | १२ | ३३ | १२ | ३० | १२ | २६ | १२ | २२ | १२ | १८ | वृश्चिक | २ | ३१ | २ | २८ | २ | २५ | २ | २१ | २ | १८ | २ | १४ | २ | १० | २ | ७ | २ | ३ | १ | ५९ |
| वृश्चिक | २ | ५० | २ | ४६ | २ | ४२ | २ | ३९ | २ | ३६ | धनु | ४ | ३७ | ४ | ३४ | ४ | ३१ | ४ | २७ | ४ | २४ | ४ | २० | ४ | १६ | ४ | १३ | ४ | ९ | ४ | ५ |
| धनु | ४ | ५६ | ४ | ५३ | ४ | ४९ | ४ | ४५ | ४ | ४२ | मकर | ६ | २५ | ६ | २१ | ६ | १८ | ६ | १४ | ६ | ११ | ६ | ७ | ६ | ३ | ६ | ० | ५ | ५६ | ५ | ५२ |
| ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | |
| मकर | ६ | ४३ | ६ | ४० | ६ | ३६ | ६ | ३२ | ६ | २९ | कुम्भ | ७ | ५५ | ७ | ५२ | ७ | ४९ | ७ | ४५ | ७ | ४२ | ७ | ३८ | ७ | ३४ | ७ | ३१ | ७ | २७ | ७ | २३ |
| कुम्भ | ८ | १४ | ८ | ११ | ८ | ७ | ८ | ३ | ८ | ० | मीन | ९ | २३ | ९ | २० | ९ | १७ | ९ | १३ | ९ | १० | ९ | ६ | ९ | २ | ८ | ५९ | ८ | ५५ | ८ | ५१ |
| मीन | ९ | ४२ | ९ | ३९ | ९ | ३६ | ९ | ३२ | ९ | २८ | मेष | ११ | ० | १० | ५७ | १० | ५४ | १० | ५० | १० | ४७ | १० | ४३ | १० | ३९ | १० | ३६ | १० | ३२ | १० | २८ |
| मेष | ११ | १९ | ११ | १६ | ११ | १२ | ११ | ८ | ११ | ४ | वृष | १२ | ५६ | १२ | ५३ | १२ | ५० | १२ | ४६ | १२ | ४३ | १२ | ३९ | १२ | ३५ | १२ | ३२ | १२ | २८ | १२ | २४ |
| वृष | १ | १५ | १ | १२ | १ | ८ | १ | ४ | १ | १ | मिथुन | ३ | १० | ३ | ७ | ३ | ४ | ३ | ० | २ | ५६ | २ | ५३ | २ | ४९ | २ | ४६ | २ | ४२ | २ | ३८ |
| मिथुन | ३ | २९ | ३ | २६ | ३ | २२ | ३ | १८ | ३ | १५ | कर्क | ५ | २८ | ५ | २५ | ५ | २२ | ५ | १८ | ५ | १५ | ५ | ११ | ५ | ७ | ५ | ४ | ५ | ० | ४ | ५६ |

**२० पं० भाद्रपदकृष्ण ३०शनौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।**
द्युगणः २७८३
अयनांशाः २४।९।२७

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | ४ | १ | ५ | ११ | ३ | ९ | ० | ६ |
| ८ | ५ | ७ | ५ | १४ | २५ | २२ | २२ | २२ |
| ५७ | २० | ५१ | १९ | ३७ | १५ | ८ | ३७ | ३७ |
| ४९ | ५३ | १४ | ३६ | ८ | ० | ३० | ४८ | ४८ |
| ५७ | ७४२ | ३५ | ५८ | ५ | ७३ | ३ | ३ | ३ |
| ४८ | ४ | २७ | २९ | ५४ | २५ | ३५ | ११ | ११ |
| | | | | व. | | व. | | |

६ बु. | ४ शु. | ७ के. | सू. ५ चं. | ३ | ८ | २ मं. | ९ | ११ | १रा. | १० श. | १२गु.

♍ ⊙सं. मघायां सिंहे च सूर्यः ४०।२८(रा. ९।४५)। मु.३० समा। फलं समता। पूर्वाः१६घट्यःपुण्याः। छत्र-सुवर्णदानम्। स्नानं गंगायाम्। स्त्री. पु.-चं.चं. योगः अश्ववाहनं वातनाडी तदीशःरविः खण्डवृष्टियोगः। रवियोगः ५१।५० उ.।

मूलविचार-रेवती/अश्विनी- ति.४सोमे५०।९ (रा. १।३६) उ.। ति.६बुधे५१।५० (रा. २।१८) या.। श्लेषा/मघा- ति. १३ गुरौ २८।२९ (दि. ५।३) उ.। ति. ३० शनौ ३८।४२ (रा. ९।९) या.। पञ्चक विचार- ति. ५ भौमे ५०।२२ (रा. १।४२)या.।

चन्द्रार्घ्यदानमन्त्रः- क्षीरोदार्णवसम्भूत अत्रिगोत्रसमुद्भव।। गृहाणार्घ्यं शशाङ्केदं रोहिणी सहितो मम।।१।। ज्योत्स्नानां पतये तुभ्यं ज्योतिषां पतये नमः।। नमस्ते रोहिणीकान्त सुधावास नमोस्तु ते।।२।। नभोमण्डलदीपाय शिरो रत्नाय धूर्जटेः।। कलाभिर्वर्द्धमानाय नमश्चन्द्राय चारवे।।३।। अगस्त्यार्घ्यदानमन्त्रः- ऋग्वेदसंहितायां-अगस्त्यः खनमानः खनित्रैः प्रजामपत्यं बलमिच्छमानः। उभौ वर्णावृषिपुत्रः पुपोष स त्यादेवेष्वशिषो जगाम। जन्माष्टम्यां विशेषः- अष्टमीकृष्ण पक्षस्य रोहिणीभसमन्विता। भवेत्प्रौष्ठपदे मासि जयन्ती नाम सा स्मृता। विष्णु धर्मोत्तरे- रोहिण्यामर्द्धरात्रे तु सदा कृष्णाष्टमी भवेत्। तस्यामभ्यर्चनं शौरेर्हन्ति पापं त्रिजन्मजम्। समायोगे तु रोहिण्यां निशीथे राजसत्तम। समजायत गोविन्दो बालरूपी चतुर्भुजः। अष्टमीरोहिणी युक्ता निश्यर्द्धे यदि दृश्यते। मुख्यकाल इति ख्यातस्तत्र जातो हरिः स्वयम्। रोहिणी च यदा कृष्णपक्षेऽष्टम्यां द्विजोत्तम। जयंती नाम सा प्रोक्ता सर्व पापहरा तिथिः।

जन्माष्टमी व्रत पारणा निर्णयो निर्णयसिन्धौ- स्मार्त्तानां द्वितीय दिनेऽष्टम्यां यामद्वयाधिकसत्वेऽपि प्रातः काल एव पारणोक्ता तिथ्यन्ते तिथिभान्ते वा पारणा यत्र चोदिता। यामद्वयोर्ध्वगामिन्यां प्रातरेव हि पारणम्।। सर्वत्रव्रतपारण समयः- तिथ्यन्ते चोत्सवान्ते च व्रती कुर्वीत पारणम्।।

सर्वत्रव्रतपारण समयः- तिथ्यन्ते चोत्सवान्ते च व्रती कुर्वीत पारणम् ।।

# श्रीसंवत् २०७९ शकः १९४४ याम्यायनं सौम्यगोलः वर्षर्त्तुः।।

## भाद्रपदशुक्लपक्षः।।

राष्ट्रिय तिथि ६ भाद्रपदतः १९ तिथिं यावत् १९४४ शकः।।
अंग्रेजी दिनांक २८ अगस्ततःदिनांक १० सितम्बरं यावत् सन् २०२२ ई.।।

| दि.मा. घ. | प. | ति. | वा. | घ. | प. | दि./रा. | घं. | मि. | नक्षत्र | घ. | प. | दि./रा. | घं. | मि. | योग | घ. | प. | दि./रा. | घं. | मि. | करण | घ. | प. | करण | घ. | प. | योगाः | अं. | फ. | सौ. | ने. | रा. | चन्द्र राशि | प्रवेशः | सूर्योदयः घं. | मि. | सूर्यास्तः घं. | मि. | औदयिक स्पष्ट सूर्यः | | | | क्रान्तिः उ. | + | रे. अं. | - मि. | चन्द्रास्तः स्टै. | टा. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३१ | ३५ | १ | र | २१ | १६ | दि | २ | ११ | पू.फा. | ४२ | १४ | रा | १० | ३५ | सिद्ध | ५४ | २ | रा | ३ | १८ | वव | २१ | १६ | वा | ५१ | ४८ | छत्र | २८ | १६ | ११ | १२ | ६ | कन्या | ५७।४८ | ५ | ४१ | ६ | १९ | ४ | ९ | ५५ | ३७ | १० | ९ | - | १ | ७ | १३ | कन्याराशिः (रा. ४।४८)।◡चन्द्रदर्शनम्। मु. ३० समा। फलं समता। सौम्यशृंगं समर्घताकरम्। सर्वार्थसिद्धियोगः ४२।१४ उ.। त्रिपुष्करयोगः ४२।१४ उ.। |
| ३१ | ३२ | २ | चं | २२ | २० | दि | २ | ३८ | उ.फा. | ४४ | २९ | रा | ११ | ३० | साध्य | ५१ | ४६ | रा | २ | २४ | कौ | २२ | २० | तै | ५२ | १३ | श्रीवत्स | २९ | १७ | १२ | १३ | ७ | | | ५ | ४२ | ६ | १८ | ४ | १० | ५३ | २९ | ९ | ४८ | - | १ | ७ | ४५ | मु. सफर २ हिजरी सन् १४४४। श्री शंकरदेव तिथि (असम)। यायिजययोगः २२।२० उ.। रवियोगः ४४।२९ उ.। |
| ३१ | २९ | ३ | मं | २२ | ६ | दि | २ | ३२ | हस्त | ४५ | २६ | रा | ११ | ५२ | शुभ | ४८ | ३० | रा | १ | ६ | गर | २२ | ६ | व | ५१ | २२ | सौम्य | ३० | १८ | १३ | १४ | ८ | | | ५ | ४२ | ६ | १८ | ४ | ११ | ५१ | २३ | ९ | २७ | - | १ | ८ | १६ | भ.५१।२२ उ. (रा. २।१५)। हरितालिका ३ व्रतम् (तीज)। स्त्रीणां नित्यं काम्यञ्च। अद्य चन्द्रदर्शनं निषिद्धम्। चन्द्रास्तः (रा. ८।१६)। वाराहावतारः ३। मन्वादिः ३। ◆ |
| ३१ | २५ | ४ | बु | २० | ३७ | दि | १ | ५८ | चित्रा | ४५ | १२ | रा | ११ | ४८ | शुक्ल | ४४ | १३ | रा | ११ | २४ | भ | २० | ३७ | वव | ४९ | १७ | कालदण्ड | ३१ | १९ | १४ | १५ | ९ | तुला | १५।११ | ५ | ४३ | ६ | १७ | ४ | १२ | ४९ | १८ | ९ | ६ | - | २ | ८ | ४९ | भ. २०।३७ या. (दि. १।५८)। तुलाराशिः (दि. ११।५१)। वैनायकी वरद् श्रीगणेश ४ व्रतम्। श्रीगणेशोत्सव प्रारम्भः (महाराष्ट्र)। विनायक चतुर्थी (तमिलनाडु)। ⌂ |
| ३१ | २२ | ५ | गु | १७ | ५६ | दि | १२ | ५४ | स्वाती | ४३ | ५२ | रा | ११ | १७ | ब्रह्म | ३९ | ६ | रा | ९ | २२ | वा | १७ | ५६ | कौ | ४६ | ६ | सुस्थिर | १ | २० | १५ | १६ | १० | | | ५ | ४४ | ६ | १६ | ४ | १३ | ४७ | १५ | ८ | ४४ | - | २ | ९ | २६ | ऋषिपञ्चमी ५ व्रतम्। मध्याह्ने सप्तर्षिपूजा। सप्तवर्षाणि ऋषीन् प्रतिमासु पूजायित्वा ब्राह्मणाय निवेदयेत्। अद्यकर्षण रहित भूमिजन्यशाकहारं कुर्यात्। रक्षापञ्चमी ५ ☯ |
| ३१ | १८ | ६ | शु | १४ | १६ | दि | ११ | २६ | विशाखा | ४१ | ४४ | रा | १० | २६ | ऐन्द्र | ३३ | १३ | रा | ७ | १ | तै | १४ | १६ | गर | ४२ | ० | मातङ्ग | २ | २१ | १६ | १७ | ११ | वृश्चिक | २७।१६ | ५ | ४४ | ६ | १६ | ४ | १४ | ४५ | १४ | ८ | २२ | - | २ | १० | ६ | वृश्चिकराशिः (दि. ४।३८)। लोलार्कषष्ठी ६ व्रतम्। काश्यां भदैनी स्थित लोलार्ककुण्डे पुत्रार्थिभिः स्नानं विधेयम्। लोलार्केश्वर दर्शनम्। श्री सूर्यषष्ठी ६ व्रतम्। ♍ |
| ३१ | १५ | ७ | श | ९ | ४४ | दि | ९ | ३९ | अनुराधा | ३८ | ४२ | रा | ९ | १४ | वैधृति | २६ | ४० | दि | ४ | २५ | व | ९ | ४४ | भ | ३७ | ८ | अमृत | ३ | २२ | १७ | १८ | १२ | | | ५ | ४५ | ६ | १५ | ४ | १५ | ४३ | १५ | ८ | ० | - | ३ | १० | ५२ | भ. ९।४४ उ. (दि. ९।३९) ३७।८ या. (रा. ८।३६)। राधाष्टमी ८। मैत्रे ज्येष्ठा देव्यावाहनम्। दूर्वाष्टमी ८ व्रतम्। स्त्रीणां नित्यं काम्यञ्च। महालक्ष्मी व्रतारम्भः १६ दिनात्मकम्। ❖ |
| ३१ | ११ | ८ | र | ४/५४ | ३१/१६ | प्रा | ०/५ | ३४/२७ | ज्येष्ठा | ३५ | ६ | रा | ७ | ४८ | विष्कुम्भ | १९ | ३४ | दि | १ | ३६ | वव | ४ | ३१ | वा | ३१/५८ | ३९/४७ | काण | ४ | २३ | १८ | १९ | १३ | धनु | ३५।६ | ५ | ४६ | ६ | १४ | ४ | १६ | ४१ | १७ | ७ | ३८ | - | ३ | ११ | ४७ | धनूराशिः (रा. ७।४८)। मध्याह्ने ज्येष्ठा देव्याःपूजनम्। श्रीचन्द्रजयन्ती ९ (श्रौतशाखा उदासीन)। महानन्दानवमी ९। महारविवार व्रतम्। अद्य लवण रहित ☪ |
| ३१ | ८ | १० | चं | ५२ | ४२ | रा | २ | ५१ | मूल | ३१ | ५ | सा | ६ | १२ | प्रीति | १२ | ७ | दि | १० | ३७ | तै | २५ | ४५ | गर | ५२ | ४२ | लुम्बक | ५ | २४ | १९ | २० | १४ | | | ५ | ४६ | ६ | १४ | ४ | १७ | ३९ | २२ | ७ | १६ | - | ३ | १२ | ४८ | दशावतार १० व्रतम्। मूले ज्येष्ठा देव्याः विसर्जनम्। रवियोगःसमस्त। |
| ३१ | ४ | ११ | मं | ४६ | ३२ | रा | १२ | २४ | पू.षा. | २६ | ५२ | दि | ४ | ३२ | आयुष्मान् | ४/५३ | २८/१४ | प्रा | ७/४ | ३४/२८ | व | १९ | ३७ | भ | ४६ | ३२ | मित्र | ६ | २५ | २० | २१ | १५ | मकर | ४०।४९ | ५ | ४७ | ६ | १३ | ४ | १८ | ३७ | २९ | ६ | ५४ | - | ४ | १ | ५५ | भ. १९।३७ उ. (दि. १।३८) ४६।३२ या. (रा. १२।२४)। मकरराशिः (रा. १०।७)। पद्मा ११ एकादशी व्रतं सर्वेषाम्। कर्मा एकादशी (झारखण्ड)। ☐ |
| ३१ | ० | १२ | बु | ४० | २८ | रा | ९ | ५९ | उ.षा. | २२ | ४१ | दि | २ | ५२ | शोभन | ४९ | ५ | रा | १ | २६ | वव | १३ | ३० | वा | ४० | २८ | वज्र | ७ | २६ | २१ | २२ | १६ | | | ५ | ४८ | ६ | १२ | ४ | १९ | ३५ | ३८ | ६ | २२ | - | ४ | ३ | ४ | एकादशी व्रतस्य पारणा। वामन द्वादशी १२। वामनावतारः। श्रवणद्वादशी १२। श्रीविष्णुपरिवर्तनोत्सवः। दधिदानम्। दुग्धत्याग व्रतारम्भः। शाक्रध्वजोत्थानम्। |
| ३० | ५७ | १३ | गु | ३४ | ४२ | रा | ७ | ४२ | श्रवण | १८ | ४३ | दि | १ | १८ | अतिगण्ड | ४१ | ४४ | रा | १० | ३१ | कौ | ७ | ३५ | तै | ३४ | ४२ | ध्वज | ८ | २७ | २२ | २३ | १७ | कुम्भ | ४६।५७ | ५ | ४९ | ६ | ११ | ४ | २० | ३३ | ५० | ६ | १० | - | ४ | ४ | १२ | कुम्भराशिः (रा.१२।३६)। प्रदोष १३ व्रतम्। पौराणिकागस्त्योदयः २६।५९ (दि. ४।३७)। पञ्चकारम्भः ४६।५७ (रा. १२।३६)। यायिजययोगः १८।४३ उ. ☎ |
| ३० | ५३ | १४ | शु | २९ | २५ | सा | ५ | ३५ | धनिष्ठा | १५ | १० | दि | ११ | ५३ | सुकर्मा | ३४ | ४५ | रा | ७ | ४३ | गर | २ | ४ | व | २९/५७ | २५/६ | धाता | ९ | २८ | २३ | २४ | १८ | | | ५ | ४९ | ६ | ११ | ४ | २१ | ३२ | २ | ५ | ४२ | - | ५ | ५ | १९ | भ. २९।२५ उ. (सा. ५।३५) ५७।६ या. (रा. ४।३९)। अनन्त १४ चतुर्दशी व्रतम्। अद्य लवणरहित भोजनं कार्यम्। श्रीशिवपरिवर्तनोत्सवः। व्रताय १५ पूर्णिमा। ○ |
| ३० | ५० | १५ | श | २४ | ४७ | दि | ३ | ४५ | शतभिष | १२ | १३ | दि | १० | ४३ | धृति | २८ | २२ | दि | ५ | ११ | वव | २४ | ४७ | वा | ५२ | ५४ | आनन्द | १० | २९ | २४ | २५ | १९ | मीन | ५५।४२ | ५ | ५० | ६ | १० | ४ | २२ | ३० | १६ | ५ | २५ | - | ५ | - | - | मीनराशिः (रा. ४।७)। स्नान-दानादौ १५ पूर्णिमा। महालयारम्भः। उमामाहेश्वर व्रतम्। अनन्तव्रतवदस्य विधिः। पू.भा.योगे लोकपालपूजा। नान्दीमातामह ● |

### ॐ सूर्योदये दैनिकस्पष्टभौमादिग्रहाः ॐ

| ति. | वा. | भौमः | | | | मार्गीबुधः | | | | वक्रीगुरुः | | | | शुक्रः | | | | वक्रीशनिः | | | | राहुः | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | र | १ | ८ | २६ | ४१ | ५ | ६ | १८ | ५ | ११ | १४ | ३१ | १४ | ३ | २६ | २८ | २५ | ९ | २२ | ४ | ५५ | ० | २२ | ३४ | ३७ |
| २ | चं | १ | ९ | २ | ८ | ५ | ६ | ५६ | ३ | ११ | १४ | २५ | २१ | ३ | २७ | ४१ | ४९ | ९ | २२ | १ | २० | ० | २२ | ३१ | २६ |
| ३ | मं | १ | ९ | ३७ | ३५ | ५ | ७ | ३३ | २१ | ११ | १४ | १९ | २८ | ३ | २८ | ५५ | १३ | ९ | २१ | ५७ | ४५ | ० | २२ | २८ | १५ |
| ४ | बु | १ | १० | १३ | २ | ५ | ८ | १० | ३८ | ११ | १४ | १३ | ३४ | ४ | ० | ८ | ३७ | ९ | २१ | ५४ | ११ | ० | २२ | २५ | ४ |
| ५ | गु | १ | १० | ४८ | २९ | ५ | ८ | ४७ | ५९ | ११ | १४ | ७ | ४१ | ४ | १ | २२ | १ | ९ | २१ | ५० | ३६ | ० | २२ | २१ | ५४ |
| ६ | शु | १ | ११ | २० | १४ | ५ | ९ | २१ | २ | ११ | १४ | १ | ४८ | ४ | २ | ३५ | २५ | ९ | २१ | ४७ | १ | ० | २२ | १८ | ४३ |
| ७ | श | १ | ११ | ४९ | १३ | ५ | ९ | २९ | ५३ | ११ | १३ | ५५ | ५४ | ४ | ३ | ४८ | ५८ | ९ | २१ | ४३ | २४ | ० | २२ | १५ | ३२ |
| ८ | र | १ | १२ | १८ | १३ | ५ | ९ | ३८ | ४४ | ११ | १३ | ५० | १ | ४ | ५ | ३ | ८ | ९ | २१ | ३९ | ४७ | ० | २२ | १२ | २१ |
| १० | चं | १ | १२ | ४७ | १३ | ५ | ९ | ४७ | ३५ | ११ | १३ | ४४ | ८ | ४ | ६ | १७ | १८ | ९ | २१ | ३६ | ९ | ० | २२ | ९ | १० |
| ११ | मं | १ | १३ | १६ | १२ | व | ९ | ५६ | ३२ | ११ | १३ | ३८ | १४ | ४ | ७ | ३१ | २७ | ९ | २१ | ३२ | ३१ | ० | २२ | ६ | ० |
| १२ | बु | १ | १३ | ४५ | १२ | ५ | ९ | ५४ | ४५ | ११ | १३ | ३२ | २१ | ४ | ८ | ४५ | ४८ | ९ | २१ | २८ | ५३ | ० | २२ | २ | ४९ |
| १३ | गु | १ | १४ | १४ | ११ | ५ | ९ | ३१ | ३१ | ११ | १३ | २६ | २८ | ४ | १० | ० | ९ | ९ | २१ | २५ | १५ | ० | २१ | ५९ | ३८ |
| १४ | शु | १ | १४ | ४२ | ४४ | ५ | ९ | ८ | १७ | ११ | १३ | २० | ३४ | ४ | ११ | १४ | ३४ | ९ | २१ | २१ | ३७ | ० | २१ | ५६ | २७ |
| १५ | श | १ | १५ | १० | ४५ | ५ | ८ | ४५ | ३ | ११ | १३ | १४ | ४१ | ४ | १२ | २८ | ५९ | ९ | २१ | १७ | ५९ | ० | २१ | ५३ | १६ |

भौमादीनाञ्चारः- भौमः- ति. ३ भौमे रोहिण्यां ३७।५६ (रा.८।५२)।। मार्गीबुधः-ति. ११ भौमे वक्री५०।२ (रा.१।४८)।। वक्रीगुरुः- ति.१४ शुक्रे उत्तराभाद्रपदा ३ चरणे ५।४७ (दि. ८।८)।। शुक्रः- ति. ३ भौमे मघायां सिंहे च ५२।५७ (रा.२।५३)। ति.१५ शनौ पूर्वाफाल्गुनी भे ४१।९ (रा.१०।१८)।। वक्रीशनिः- श्रवण ४ चरणे।। राहुः- भरणी ३ चरणे केतुश्च विशाखा १ चरणे ।।

भाद्रे शुक्ल द्वितीयायां द्वितीयवारयोगतः।धान्यनिष्पतिरतुलासंपदःस्युश्चतुष्पदे।।

### २१ पं० भाद्रपदशुक्ल ८ रवौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।

द्युगणः २७९१

अयनांशाः२४।९।२८

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | ७ | १ | ५ | ११ | ४ | ९ | ० | ६ |
| २६ | २१ | १२ | ९ | १३ | ५ | २१ | २२ | २२ |
| ४१ | ४३ | १८ | ३८ | ५० | ३ | ३९ | १२ | १२ |
| १७ | १३ | १३ | ४४ | १ | ८ | ४७ | २१ | २१ |
| ५८ | ८५१ | २९ | ८ | ५ | ७४ | ३ | ३ | ३ |
| ५ | ४ | ० | ५१ | ५२ | १० | ३८ | ११ | ११ |
| | | | मा. | व. | | व. | | |

६ बु. | ४ | ७ के. | सू. ५ शु. | ३ | ८ चं. | २ मं. | ९ | ११ | १ रा. | १० श. | १२ गु.

पक्षेऽस्मिन् विविधमुहूर्त्ताः- ति. १ रवौ पू.फा. भे सूर्यभोग्यम्। रात्रिशेषे उ.फा.भे सूतीस्नान मुहूर्त्तः। ति. २ सोमे उ.फा.भे जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण अन्नप्राशन गर्भाधान कणमर्दन धान्यारोपण विपणि धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ३ भौमे दि. २।३२ या. हस्ते पुंसवनसीमन्त सूतीस्नान रक्तवस्त्रधारण भूपाघटन उत्तराविनान्यदिग्यात्रा शिरामोक्षण मुहूर्त्तः। ति. ४ बुधे चित्रा भे चतुर्थ्यां रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। रिक्तोत्तरं (दि. १।५८) शिशुताम्बूलभक्षण नववस्त्रधारण नवान्नभक्षण शिल्पविद्या भैपज्य विपणि वस्तुक्रय गजकृत्य धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ५ गुरौ स्वात्यां जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण पंचम्यां अन्नप्राशन सूतीस्नान नवान्नभक्षण नववस्त्रधारण भैपज्य नौकाघटन वस्तुक्रय अश्वकृत्य शिरामोक्षण धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ६ शुक्रे विशाखा भे केतुयुतिः। ति. ७ शनौ मैत्रे विष्टिदोषो वैधृतिश्च। ति. ८ रवौ प्रा. ७।३४ या. ज्येष्ठा भे गोक्रय-विक्रय शिरामोक्षण धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। नवम्यां रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। ति. १० सोमे मूले शिशुताम्बूलभक्षण कणमर्दन धान्यारोपण शिल्पविद्या भैपज्य धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ११ भौमे पू.पा. भे विष्टेःपूर्वं शस्त्रघटन मुहूर्त्तः। ति. १२ बुधे उ.पा. भे जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन नववस्त्रधारण शिल्पविद्या विपणि धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। श्रवणे शनियुतिः। ति. १३ गुरौ श्रवणे पूर्वदोषः। धनिष्ठा भे केतुवेधः। ति. १४ शुक्रे धनिष्ठा भे पूर्वदोषो रिक्तादोषश्च। ति. १५ शनौ शतभिषजि वस्तुक्रय गजाश्वकृत्य मुहूर्त्तः। पू.भा.भे शस्त्रघटन मुहूर्त्तः।

| तिथि / ल.अ. | १ र घं. | मि. | २ चं घं. | मि. | ३ मं घं. | मि. | ४ बु घं. | मि. | ५ गु घं. | मि. | ६ शु घं. | मि. | ७ श घं. | मि. | ८ र घं. | मि. | १० चं घं. | मि. | ११ मं घं. | मि. | १२ बु घं. | मि. | १३ गु घं. | मि. | १४ शु घं. | मि. | १५ श घं. | मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सिंह | ७ | १० | ७ | ६ | ७ | २ | ६ | ५९ | ६ | ५५ | ६ | ५२ | ६ | ४८ | ६ | ४४ | ६ | ४१ | ६ | ३७ | ६ | ३३ | ६ | ३० | ६ | २६ | ६ | २३ |
| कन्या | ९ | २३ | ९ | १९ | ९ | १५ | ९ | १२ | ९ | ८ | ९ | ५ | ९ | १ | ८ | ५८ | ८ | ५४ | ८ | ५० | ८ | ४६ | ८ | ४३ | ८ | ३९ | ८ | ३६ |
| तुला | ११ | ३९ | ११ | ३५ | ११ | ३१ | ११ | २८ | ११ | २४ | ११ | २१ | ११ | १७ | ११ | १३ | ११ | १० | ११ | ६ | ११ | २ | १० | ५९ | १० | ५५ | १० | ५२ |
| वृश्चिक | १ | ५६ | १ | ५२ | १ | ४८ | १ | ४५ | १ | ४१ | १ | ३८ | १ | ३४ | १ | ३० | १ | २७ | १ | २३ | १ | १९ | १ | १६ | १ | १२ | १ | ९ |
| धनु | ४ | २ | ३ | ५८ | ३ | ५५ | ३ | ५१ | ३ | ४८ | ३ | ४५ | ३ | ४१ | ३ | ३७ | ३ | ३४ | ३ | ३० | ३ | २५ | ३ | २२ | ३ | १८ | ३ | १५ |
| मकर | ५ | ४९ | ५ | ४५ | ५ | ४१ | ५ | ३७ | ५ | ३४ | ५ | ३१ | ५ | २७ | ५ | २३ | ५ | २० | ५ | १६ | ५ | १२ | ५ | ९ | ५ | ५ | ५ | २ |
| ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | |
| कुम्भ | ७ | २० | ७ | १६ | ७ | १२ | ७ | ९ | ७ | ५ | ७ | २ | ६ | ५८ | ६ | ५४ | ६ | ५१ | ६ | ४७ | ६ | ४३ | ६ | ४० | ६ | ३६ | ६ | ३३ |
| मीन | ८ | ४८ | ८ | ४४ | ८ | ४० | ८ | ३७ | ८ | ३३ | ८ | ३० | ८ | २६ | ८ | २२ | ८ | १९ | ८ | १५ | ८ | ११ | ८ | ८ | ८ | ४ | ८ | १ |
| मेष | १० | २५ | १० | २१ | १० | १७ | १० | १४ | १० | १० | १० | ७ | १० | ३ | ९ | ५९ | ९ | ५६ | ९ | ५२ | ९ | ४८ | ९ | ४५ | ९ | ४१ | ९ | ३८ |
| वृष | १२ | २१ | १२ | १७ | १२ | १३ | १२ | १० | १२ | ६ | १२ | ३ | ११ | ५९ | ११ | ५५ | ११ | ५२ | ११ | ४८ | ११ | ४४ | ११ | ४१ | ११ | ३७ | ११ | ३४ |
| मिथुन | २ | ३५ | २ | ३१ | २ | २७ | २ | २४ | २ | २० | २ | १७ | २ | १३ | २ | ९ | २ | ६ | २ | २ | १ | ५८ | १ | ५५ | १ | ५१ | १ | ४८ |
| कर्क | ४ | ५३ | ४ | ४९ | ४ | ४५ | ४ | ४२ | ४ | ३८ | ४ | ३५ | ४ | ३१ | ४ | २७ | ४ | २४ | ४ | २० | ४ | १६ | ४ | १३ | ४ | ९ | ४ | ६ |

### २२पं० भाद्रपदशुक्ल १५ शनौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।

द्युगणः २७९७

अयनांशाः २४।९।२९

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | १० | १ | ५ | ११ | ४ | ९ | ० | ६ |
| २२ | १७ | १५ | ८ | १३ | १२ | २१ | २१ | २१ |
| ३० | ८ | १० | ४५ | १४ | २८ | १७ | ५३ | ५३ |
| १६ | ४० | ४५ | ३ | ४१ | ५९ | ५९ | १६ | १६ |
| ५८ | ८४१ | २८ | २३ | ७ | ७४ | २ | ३ | ३ |
| १६ | २२ | १ | ४ | ४५ | २४ | ३५ | ११ | ११ |
| | | | व. | व. | | व. | | |

६ बु. | ४ | ७ के. | सू. ५ शु. | ३ | ८ | २ मं. | ९ | ११चं. | १ रा. | १० श. | १२ गु.

◆ हस्तर्क्षेसामगानामुपाकर्म (सिंहार्के)। स्थायिजययोगः ४५।२६ उ.। रवियोगः ४५।२६ या.। ⌂ ⊙पूर्वाफाल्गुनी भे सूर्यः ३१।४७ (सा. ६।२६)। स्त्री.स्त्री.-सू.सू. योगःमेषवाहनं वह्निनाडी तदीशःभौमः अल्पवृष्टियोगः। ☯(बंगाल)। सितम्बर १। यायिजययोगः १७।५६ या.। रवियोगः ४३।५२ उ.। ♍देव ६। स्वामिकार्त्तिकेयदर्शनम्। ब्रह्म हत्यादिपापनाशः। सन्तानसप्तमी ७ (मध्याह्ने)। अपराजिता पूजा ७। मुक्ताभरण ७। रवियोगः ४१।४४ या.। ❖प्रत्यहं काश्यां श्रीलक्ष्मी कुण्डे स्नानं दर्शनञ्च। यायिजययोगः९।४४ या.। ☪भोजनं कार्यम्। सर्वार्थसिद्धियोगः ३५।६ उ.। रवियोगः ३५।६ उ.। ☐दोलग्यारस (मध्यप्रदेश)। त्रिपुष्करयोगः ४६।३२ उ.। रवियोगः २६।५२ या.। ☎३४।४२ या.। रवियोगः १८।४३ उ.। ○ रवियोगः १५।१० या.। ●श्राद्धम्-पार्वणवदस्य विधिः। अथर्ववेदिनामुपाकर्म।

मूलविचार- ज्येष्ठा/मूल- ति. ७ शनौ ३८।४२ (रा. ९।१४) उ.। ति. १० सोमे ३१।५ (सा. ६।१२) या.।
पञ्चक विचार- ति. १३ गुरौ ४६।५७ (रा. १२।३६) उ.।

हरितालिकानिर्णयः।। तत्र चतुर्थीसहिता या तु सा तृतीया फलप्रदा। अवैधव्यकरा स्त्रीणां पुत्रपौत्रप्रवर्धिनी।। भाद्रशुक्लपक्ष ४ चन्द्रदर्शनदोषशान्तये मन्त्रः- सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः। सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः इति।। पञ्चम्यामपामार्गेणदन्तधावन मन्त्रः- आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजापशुवसूनि च। ब्रह्मप्रज्ञां च मेधाञ्च त्वन्नो देहि वनस्पते।।१।। मुखदौर्गन्ध्य नाशाय दन्तानाञ्च विशुद्धये। ष्ठीवनाय च गात्राणां कुर्वेऽहं दन्तधावनम् ।।२।। षष्ठ्यां सूर्यपूजनम् 'निर्णयसिन्धौ'- शुक्लेभाद्रपदेषष्ठ्यां स्नानं भास्करपूजनम्। प्राशनं पञ्चगव्यस्य अश्वमेधफलाधिकम्। पञ्चगव्यप्राशनमन्त्रः- यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके। प्राशनात्पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनमिति। श्रवणयुक्तायां द्वादश्यां विष्णु परिवर्तनोत्सवः। रात्रौ षोडशोपचारैः श्री विष्णुं संपूज्य प्रार्थयेत्। वासुदेव जगन्नाथ प्राप्तेयं द्वादशी तव। पार्श्वेन परिवर्तस्व सुखं स्वपीहि माधव। श्रवण १२ उत्तराषाढ़ युक्ता नैवोपोष्या। उत्तराषाढ़संयुक्ता श्रोणामध्याह्नगापि वा। आसुरी सैव तारास्याद्धन्ति पुण्यं पुराकृतम्। बुधे श्रवण संयुक्ता सैव चेद् द्वादशी भवेत्। अत्यन्त महती सा स्यादत्तं भवति चाक्षयम्।

# श्रीसंवत् २०७९ शकः १९४४ याम्यायनं सौम्यगोलः वर्षर्त्तुः।।

## आश्विनकृष्णपक्षः।।

राष्ट्रिय तिथि २० भाद्रपदतः तिथि ३ आश्विनं यावत् १९४४ शकः।।
अंग्रेजी दिनांक ११ सितम्बरतः २५ दिनांकं यावत् सन् २०२२ ई.।।

| दि.मा. घ. | प. | ति. | वा. | घ. | प. | | घं. | मि. | नक्षत्र | घ. | प. | | घं. | मि. | योग | घ. | प. | | घं. | मि. | करण | घ. | प. | करण | घ. | प. | योगाः | अं. | फ. | सौ. | ने. | रा. | चन्द्र राशि | प्रवेशः | सूर्योदयः घं. | मि. | सूर्यास्तः घं. | मि. | औदयिक स्पष्ट सूर्यः | | | | क्रान्तिः उ./द. | ± | रे.अं. | - मि. | चन्द्रोदयः स्टै. | टा. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३० | ४६ | १ | र | २१ | ० | दि | २ | १५ | पू.भा. | १० | ११ | दि | ९ | ५५ | शूल | २२ | ४० | दि | २ | ५५ | कौ | २१ | ० | तै | ४९ | ३६ | चर | ११ | १ | २५ | २६ | २० | | | ५ | ५१ | ६ | ९ | ४ | २३ | २८ | ३२ | ५ | २ | - | ५ | ६ | ५९ | दुग्धमाश्वियुजि त्यजेत्। नात्रत्यागस्तक्रादीनाम्। प्रतिपच्छ्राद्धम्। प्रत्यहं पार्वणं श्राद्धं कर्तव्यन्तु महालये। पितृभ्यश्च जलं देयं तेन संवत्सरं सुखम्। फसली नववर्षारम्भः। ◆ |
| ३० | ४२ | २ | चं | १८ | १२ | दि | १ | ९ | उ.भा. | ८ | ५८ | दि | ९ | २७ | गण्ड | १७ | ४६ | दि | १२ | ५८ | गर | १८ | १२ | व | ४७ | २३ | गद | १२ | २ | २६ | २७ | २१ | | | ५ | ५२ | ६ | ८ | ४ | २४ | २६ | ५२ | ४ | ३९ | - | ६ | ७ | ३३ | भ. ४७।२३ उ. (रा. १२।४९)। द्वितीयाश्राद्धम्। तृतीयाश्राद्धमपि अद्यैव। यायिजययोग:१८।१२ उ.। |
| ३० | ३९ | ३ | मं | १६ | ३४ | दि | १२ | ३० | रेवती | ८ | ५३ | दि | ९ | २५ | वृद्धि | १३ | ४६ | दि | ११ | २२ | भ | १६ | ३४ | वव | ४६ | २२ | शुभ | १३ | ३ | २७ | २८ | २२ | मेष | ८।५३ | ५ | ५२ | ६ | ८ | ४ | २५ | २५ | १४ | ४ | १६ | - | ६ | ८ | ७ | भ. १६।३४ या. (दि. १२।३०)। मेषराशि: (दि. ९।२५)। ललितादेवी यात्रा ३। संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रतम्। चन्द्रोदय: (रा. ८।७)। चतुर्थी श्राद्धम्। |
| ३० | ३५ | ४ | बु | १६ | ९ | दि | १२ | २१ | अश्विनी | ९ | ५९ | दि | ९ | ५३ | ध्रुव | १० | ४० | दि | १० | ९ | वा | १६ | ९ | कौ | ४६ | ३६ | मृत्यु | १४ | ४ | २८ | २९ | २३ | | | ५ | ५३ | ६ | ७ | ४ | २६ | २३ | ३८ | ३ | ५३ | - | ६ | ८ | ४२ | पञ्चमी श्राद्धम्। भरणी श्राद्धम्। पार्वणवदस्य विधि:। भरणी पितृपक्षे तु महती सम्प्रकीर्तिता। तस्यां श्राद्धं कृतं येन स गया श्राद्धकृद् भवेत्। ⊙उत्तराफाल्गुनी |
| ३० | ३१ | ५ | गु | १७ | ३ | दि | १२ | ४३ | भरणी | १२ | २३ | दि | १० | ५१ | व्याघात | ८ | ३५ | दि | ९ | २० | तै | १७ | ३ | गर | ४८ | ९ | पद्म | १५ | ५ | २९ | ३० | २४ | वृष | २८।१८ | ५ | ५४ | ६ | ६ | ४ | २७ | २२ | ३ | ३ | २० | - | ७ | ९ | २० | वृषराशि: (दि. ५।१३)। षष्ठी श्राद्धम्। श्रीचन्द्रषष्ठी ६ व्रतम् (चन्द्रोदयव्यापिनी)। चन्द्रोदय: (रा.९।२०)। यायिजययोग:१२।२३ या.। यमघंटयोग:१२।२३ उ.। |
| ३० | २८ | ६ | शु | १९ | १४ | दि | १ | ३६ | कृत्तिका | १६ | ३ | दि | १२ | १९ | हर्षण | ७ | ३२ | दि | ८ | ५५ | व | १९ | १४ | भ | ५० | ५४ | छत्र | १६ | ६ | ३० | ३१ | २५ | | | ५ | ५४ | ६ | ६ | ४ | २८ | २० | ३१ | ३ | ७ | - | ७ | १० | ० | भ. १९।१४ उ. (दि. १।३६)५०।५४ या. (रा. २।१६)। यमघंटयोग:१६।३ उ.। रवियोग: १६।३ उ.। |
| ३० | २४ | ७ | श | २२ | ३३ | दि | २ | ५६ | रोहिणी | २० | ४८ | दि | २ | १४ | वज्र | ७ | २१ | दि | ८ | ५१ | वव | २२ | ३३ | वा | ५४ | ४१ | श्रीवत्स | १७ | ७ | ३१ | १ | २६ | मिथुन | ५३।३८ | ५ | ५५ | ६ | ५ | ४ | २९ | ११ | २ | २ | ४४ | - | ७ | १० | ४५ | मिथुनराशि: (रा.३।२२)। सप्तमी श्राद्धम्। महालक्ष्मी ८ व्रतम्। चन्द्रोदय: (रा. १०।४५)। लक्ष्मी व्रतं चाभ्युदिते शशाङ्के लक्ष्मी कुण्डे स्नान समाप्ति:। ⊙सं.♍ |
| ३० | २१ | ८ | र | २६ | ४८ | दि | ४ | ३९ | मृगशिरा | २६ | २७ | दि | ४ | ३१ | सिद्धि | ७ | ५८ | दि | ९ | ७ | कौ | २६ | ४८ | तै | ५९ | १५ | सौम्य | १८ | ८ | १ | २ | २७ | | | ५ | ५६ | ६ | ४ | ५ | ० | १७ | ३४ | २ | २१ | - | ८ | ११ | ३४ | जीवत्पुत्रिका ८ व्रतम्। जीमूतवाहनपूजा। अष्टमी श्राद्धम्। गया मध्याष्टमी ८। सौरआश्विनमासारम्भ:। |
| ३० | १७ | ९ | चं | ३१ | ४२ | सा | ६ | ३८ | आर्द्रा | ३२ | ४४ | रा | ७ | ३ | व्यतिपात | ९ | ५ | दि | ९ | ३५ | गर | ३१ | ४२ | व | ६० | ० | कालदण्ड | १९ | ९ | २ | ३ | २८ | | | ५ | ५७ | ६ | ३ | ५ | १ | १६ | ९ | १ | ५८ | - | ८ | १२ | २६ | जीवत्पुत्रिका व्रतस्य पारणा। मातृनवमी ९। सौभाग्यवती स्त्रीणामपि श्राद्धम्। अन्वष्टका श्राद्धम्। |
| ३० | १३ | १० | मं | ३६ | ५२ | रा | ८ | ४२ | पुनर्वसु | ३९ | १५ | रा | ९ | ३९ | वरीयान | १० | ३३ | दि | १० | १० | व | ४ | १७ | भ | ३६ | ५२ | सुस्थिर | २० | १० | ३ | ४ | २९ | कर्क | २२।३७ | ५ | ५७ | ६ | ३ | ५ | २ | १४ | ४६ | १ | ३४ | - | ८ | १ | २१ | भ. ४।१७ उ. (दि. ७।४०)३६।५२ या. (रा. ८।४२)। कर्कराशि:(दि.३।०)। दशमी श्राद्धम्। |
| ३० | ९ | ११ | बु | ४१ | ५२ | रा | १० | ४३ | पुष्य | ४५ | ३५ | रा | १२ | १२ | परिघ | १२ | १ | दि | १० | ४६ | वव | ९ | २२ | वा | ४१ | ५२ | मातङ्ग | २१ | ११ | ४ | ५ | ३० | | | ५ | ५८ | ६ | २ | ५ | ३ | १३ | २५ | १ | ११ | - | ९ | २ | १६ | इन्दिरा ११ एकादशी व्रतं सर्वेषाम्। एकादशी श्राद्धम्। पञ्चकनिवृत्ति: ८।५३ (दि. ९।२५)। स्थायिजययोग:१६।३४ उ.। सर्वार्थामृतसिद्धियोग:८।५३ उ.। |
| ३० | ६ | १२ | गु | ४६ | १६ | रा | १२ | २९ | श्लेषा | ५१ | २० | रा | २ | ३१ | शिव | १३ | ८ | दि | ११ | १४ | कौ | १४ | ४ | तै | ४६ | १६ | अमृत | २२ | १२ | ५ | ६ | ३१ | सिंह | ५१।२० | ५ | ५९ | ६ | १ | ५ | ४ | १२ | ६ | ० | ४८ | - | ९ | ३ | १२ | सिंहराशि: (रा. २।३१)। द्वादशी श्राद्धम्। सन्यासि-यति वैष्णवानां श्राद्धम्। यायिजययोग: ४६।१६ उ. ५१।२० या.। |
| ३० | २ | १३ | शु | ४९ | ५० | रा | १ | ५६ | मघा | ५६ | १२ | रा | ४ | २९ | सिद्ध | १३ | ४४ | दि | ११ | ३० | गर | १८ | ३ | व | ४९ | ५० | काण | २३ | १३ | ६ | ७ | १ | | | ६ | ० | ६ | ० | ५ | ५ | १० | ५० | ० | २४ | - | ९ | ४ | ७ | भ.४९।५० उ. (रा. १।५६)। प्रदोष १३ व्रतम्। मघा -त्रयोदशी श्राद्धम्। ⊙सायन तुलायां सूर्य: ४०।३०(रा. १०।१२)। राष्ट्रियआश्विनमास:दि.३०। स्थायिजययोग: ५६।१२ उ.। |
| २९ | ५८ | १४ | श | ५२ | १४ | रा | २ | ५४ | पू.फा. | ५९ | ५९ | रा | ६ | ० | साध्य | १३ | ३२ | दि | ११ | २५ | भ | २१ | २ | श | ५२ | १४ | लुम्बक | २४ | १४ | ७ | ८ | २ | | | ६ | ० | ६ | ० | ५ | ६ | ९ | ३६ | उ. | १ | - | १० | ५ | २ | भ. २१।२ या. (दि. २।२५)। शस्त्रादिहतानां १४ चतुर्दशी श्राद्धम्। मासशिवरात्रि १४ व्रतम्। |
| २९ | ५५ | ३० | र | ५३ | २७ | रा | ३ | २४ | उ.फा. | ६० | ० | स | म | स्त | शुभ | १२ | २९ | दि | ११ | १ | च | २२ | ५१ | नाग | ५३ | २७ | मित्र | २५ | १५ | ८ | ९ | ३ | कन्या | १५।३८ | ६ | १ | ५ | ५९ | ५ | ७ | ८ | २४ | द. | २३ | - | १० | ५ | ५७ | कन्याराशि: (दि. १२।१६)। स्नान-दान-श्राद्धादौ ३० अमावस्या। सर्वपैत्री ३०। अज्ञात तिथौ नामद्यैव श्राद्धम्। महाविष्णुप्रीत्यर्थ: ब्राह्मण भोजनम्। पितृविसर्जनम्। ❖ |

*श्राद्धकालनिर्णय:–अष्टमो मुहूर्त: कुतुप: नवमो रौहिणेय:। रौहिणं प्रविलङ्घ्य वर्तमानायां तिथौ न श्राद्धम् ।।*

## ॐ सूर्योदये दैनिकस्पष्टभौमादिग्रहाः ॐ

| ति. | वा. | भौमः | | | | वक्रीबुधः | | | | वक्रीगुरुः | | | | शुक्रः | | | | वक्रीशनिः | | | | राहुः | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | र | १ | १५ | ३८ | ४६ | ५ | ८ | २१ | ५९ | ११ | १३ | ६ | ५६ | ४ | १३ | ४३ | २३ | ९ | २१ | १५ | २४ | ० | २१ | ५० | ६ |
| २ | चं | १ | १६ | ६ | ४७ | ५ | ७ | ४४ | ७ | ११ | १२ | ५८ | ४९ | ४ | १४ | ५७ | ४८ | ९ | २१ | १२ | ५४ | ० | २१ | ४६ | ५५ |
| ३ | मं | १ | १६ | ३४ | ४८ | ५ | ६ | ५२ | ४७ | ११ | १२ | ५० | ३९ | ४ | १६ | १२ | १३ | ९ | २१ | १० | २५ | ० | २१ | ४३ | ४४ |
| ४ | बु | १ | १७ | २ | ४९ | ५ | ६ | १ | १४ | ११ | १२ | ४२ | २९ | ४ | १७ | २६ | ३८ | ९ | २१ | ७ | ५५ | ० | २१ | ४० | ३३ |
| ५ | गु | १ | १७ | ३० | ५० | ५ | ५ | ९ | ४२ | ११ | १२ | ३४ | १८ | ४ | १८ | ४१ | ३ | ९ | २१ | ५ | २६ | ० | २१ | ३७ | २२ |
| ६ | शु | १ | १७ | ५८ | ५१ | ५ | ४ | १८ | ९ | ११ | १२ | २६ | ८ | ४ | १९ | ५५ | २८ | ९ | २१ | २ | ५७ | ० | २१ | ३४ | १२ |
| ७ | श | १ | १८ | २६ | ५२ | ५ | ३ | २६ | ३६ | ११ | १२ | १७ | ५८ | ४ | २१ | ९ | ५३ | ९ | २१ | ० | २७ | ० | २१ | ३१ | १ |
| ८ | र | १ | १८ | ५४ | ५३ | ५ | २ | ३५ | ४ | ११ | १२ | ९ | ४७ | ४ | २२ | २४ | १८ | ९ | २० | ५७ | ५८ | ० | २१ | २७ | ५० |
| ९ | चं | १ | १९ | २२ | ४२ | ५ | १ | ४३ | ३१ | ११ | १२ | १ | ३७ | ४ | २३ | ३८ | ४३ | ९ | २० | ५५ | २६ | ० | २१ | २४ | ३९ |
| १० | मं | १ | १९ | ४९ | १३ | ५ | ० | ५१ | ५८ | ११ | ११ | ५३ | २६ | ४ | २४ | ५३ | ८ | ९ | २० | ५२ | ५४ | ० | २१ | २१ | २८ |
| ११ | बु | १ | २० | १५ | ४५ | ४ | २९ | ५९ | ३८ | ११ | ११ | ४५ | १६ | ४ | २६ | ७ | ३३ | ९ | २० | ५० | २१ | ० | २१ | १८ | १८ |
| १२ | गु | १ | २० | ४२ | १७ | ४ | २९ | ३१ | ५८ | ११ | ११ | ३७ | ६ | ४ | २७ | २१ | ५७ | ९ | २० | ४७ | ४९ | ० | २१ | १५ | ७ |
| १३ | शु | १ | २१ | ८ | ४८ | ४ | २९ | ८ | १३ | ११ | ११ | २८ | ५५ | ४ | २८ | ३६ | २२ | ९ | २० | ४५ | १७ | ० | २१ | ११ | ५६ |
| १४ | श | १ | २१ | ३५ | २० | ४ | २८ | ४४ | २८ | ११ | ११ | २० | ४५ | ४ | २९ | ५० | ४७ | ९ | २० | ४२ | ४४ | ० | २१ | ८ | ४५ |
| ३० | र | १ | २२ | १ | ५१ | ४ | २८ | २० | ३९ | ११ | ११ | १२ | ३५ | ५ | १ | ५ | १२ | ९ | २० | ४० | १२ | ० | २१ | ५ | ३४ |

*भौमादीनाञ्चार:- भौम:-रोहिण्याम्।। वक्रीबुध: - ति. १० भौमे वक्रगत्या सिंहे ५९।३५ (रा.शे. ५।४७)।। वक्रीगुरु:-उत्तराभाद्रपदा ३ चरणे ।। शुक्र:-ति. ११ बुधे उत्तराफाल्गुनी भे २६।१० (दि. ४।२६)। ति.१४ शनौ कन्यायां ७।२६(दि. ८।५८)।। वक्रीशनि:-श्रवण ४ चरणे ।। राहु:- भरणी ३ चरणे केतुश्च विशाखा १ चरणे ।।*

*आश्विनैकादशीकृष्णा वारयोर्बुधसोमयो:। महिषीणां गवां मूल्यं महत्संजायते जने।।*

### २३ पं० आश्विनकृष्ण ८ रवौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।

द्युगणः २८०५
अयनांशाः २४।९।३०

| सू. | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | २ | १ | ५ | ११ | ४ | ९ | ० | ६ |
| ० | १ | १८ | २ | १२ | २२ | २० | २१ | २१ |
| १७ | १७ | ५४ | ३५ | ९ | २४ | ५७ | २७ | २७ |
| ३४ | ४७ | ५३ | ४ | ४७ | १८ | ५८ | ५० | ५० |
| ५८ | ७३४ | २७ | ५१ | ८ | ७४ | २ | ३ | ३ |
| ३५ | ९ | ४९ | ३३ | १० | २५ | ३२ | ११ | ११ |
| | | | व. | व. | | व. | | |

७ के.
५ शु.
८
सू. ६ बु.
४
९
३ चं.
१०श.
१२ गु.
२ मं.
११
१ रा.

पक्षेऽस्मिन् विविधमुहूर्त्ताः- तिं. १ रवौ पू.भा.भे भूपाघटन नौकाघटन वस्तुविक्रय धान्यच्छेदन मुहूर्त्त:। दि.९।५५ उ. उ.भा. भे पुंसवनसीमन्त सूतीस्नान शय्यासनाद्युपभोग सुभगांविनानववस्त्रधारण लतापादपारोपण विपणि मुहूर्त्त:। ति.२ सोमे उ.भा. भे जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन धान्यच्छेदन मुहूर्त्त:। दि.९।२७ उ. रेवत्यां विष्टे:पूर्वं अन्नप्राशन पश्चिमोत्तर दिग्यात्रा कणमर्दन नवान्नभक्षण भैषज्य विपणि व्यापार वस्तुक्रय गजाश्वकृत्य मुहूर्त्त:। ति. ३ भौमे रेवत्यां विष्टिस्ततो रिक्तादोष:। ति. ४ बुधे चतुर्थ्यां रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्त:। रिक्तोत्तरं भरण्यां राहुयुति:। ति. ५ गुरौ भरण्यां पूर्वदोष:। कृत्तिका भे शनिवेध:। ति. ६ शुक्रे कृत्तिका भे पूर्वदोष:। रोहिण्यां भौमयुति:विष्टिदोषश्च। ति. ७ शनौ रोहिण्यां पूर्वदोष:। दि.२।१४ उ. मृगे दक्षिणदिग्यात्रा (सप्तम्यां) गजाश्वकृत्य शस्त्रघटन मुहूर्त्त:। ति. ८ रवौ मृगे व्यतिपातात्पूर्वं (दि. ९।७) शय्यासनाद्युपभोग लतापादपारोपण नवान्नभक्षण शिल्पविद्या भैषज्य नौकाघटन विपणि गजाश्वकृत्य शिरामोक्षण धान्यच्छेदन मुहूर्त्त:। ति. ९ सोमे रा. ७।३ उ.पुनर्वसौ गोक्रय-विक्रय पश्चिम-दक्षिण दिग्यात्रा भैषज्य अश्वकृत्य मुहूर्त्त:। ति. १० भौमे पुनर्वसौ विष्टे:पूर्वं (दि. ७।४०) पुंसवनसीमन्त सुभगांविनारक्तवस्त्रधारण भूपाघटन पश्चिम-दक्षिण दिग्यात्रा मुहूर्त्त:। ति. ११ बुधे पुष्ये जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण सुभगांविनानववस्त्रधारण उत्तरांविनान्यदिग्यात्रा (एकादश्यां) गजाश्वकृत्य धान्यच्छेदन मुहूर्त्त:। ति. १२ गुरौ श्लेषा भे वस्तुविक्रय धान्यच्छेदन मुहूर्त्त:। परं मासान्तादिदोष:।

| तिथि ल.अ. | १ र घं. | मि. | २ चं घं. | मि. | ३ मं घं. | मि. | ४ बु घं. | मि. | ५ गु घं. | मि. | ६ शु घं. | मि. | ७ श घं. | मि. | तिथि ल.अ. | ८ र घं. | मि. | ९ चं घं. | मि. | १० मं घं. | मि. | ११ बु घं. | मि. | १२ गु घं. | मि. | १३ शु घं. | मि. | १४ श घं. | मि. | ३० र घं. | मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सिंह | ६ | १९ | ६ | १५ | ६ | १२ | ६ | ८ | ६ | ५ | ६ | १ | ५ | ५७ | कन्या | ८ | ६ | ८ | ३ | ८ | ० | ७ | ५६ | ७ | ५३ | ७ | ४९ | ७ | ४५ | ७ | ४२ |
| कन्या | ८ | ३२ | ८ | २८ | ८ | २५ | ८ | २१ | ८ | १८ | ८ | १४ | ८ | १० | तुला | १० | २२ | १० | १९ | १० | १६ | १० | १२ | १० | ९ | १० | ५ | १० | १ | ९ | ५८ |
| तुला | १० | ४८ | १० | ४४ | १० | ४१ | १० | ३७ | १० | ३४ | १० | ३० | १० | २६ | वृश्चिक | १२ | ३९ | १२ | ३६ | १२ | ३३ | १२ | २९ | १२ | २६ | १२ | २२ | १२ | १८ | १२ | १५ |
| वृश्चिक | १ | ५ | १ | १ | १२ | ५८ | १२ | ५४ | १२ | ५१ | १२ | ४७ | १२ | ४३ | धनु | २ | ४५ | २ | ४२ | २ | ३९ | २ | ३५ | २ | ३२ | २ | २८ | २ | २४ | २ | २१ |
| धनु | ३ | ११ | ३ | ७ | ३ | ४ | ३ | ० | २ | ५७ | २ | ५३ | २ | ४९ | मकर | ४ | ३२ | ४ | २९ | ४ | २६ | ४ | २२ | ४ | १९ | ४ | १५ | ४ | ११ | ४ | ८ |
| मकर | ४ | ५८ | ४ | ५४ | ४ | ५१ | ४ | ४७ | ४ | ४४ | ४ | ४० | ४ | ३६ | कुम्भ | ६ | ३ | ६ | ० | ५ | ५७ | ५ | ५३ | ५ | ५० | ५ | ४६ | ५ | ४२ | ५ | ३९ |
| ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | |
| कुम्भ | ६ | २९ | ६ | २५ | ६ | २२ | ६ | १८ | ६ | १५ | ६ | ११ | ६ | ७ | मीन | ७ | ३१ | ७ | २८ | ७ | २५ | ७ | २१ | ७ | १८ | ७ | १४ | ७ | १० | ७ | ७ |
| मीन | ७ | ५७ | ७ | ५३ | ७ | ५० | ७ | ४६ | ७ | ४३ | ७ | ३९ | ७ | ३५ | मेष | ९ | ८ | ९ | ५ | ९ | २ | ८ | ५९ | ८ | ५५ | ८ | ५१ | ८ | ४७ | ८ | ४४ |
| मेष | ९ | ३४ | ९ | ३० | ९ | २७ | ९ | २३ | ९ | २० | ९ | १६ | ९ | १२ | वृष | ११ | ४ | ११ | १ | १० | ५८ | १० | ५४ | १० | ५१ | १० | ४७ | १० | ४३ | १० | ४० |
| वृष | ११ | ३० | ११ | २६ | ११ | २३ | ११ | १९ | ११ | १६ | ११ | १२ | ११ | ८ | मिथुन | १ | १८ | १ | १५ | १ | १२ | १ | ८ | १ | ५ | १ | १ | १२ | ५७ | १२ | ५४ |
| मिथुन | १ | ४४ | १ | ४० | १ | ३७ | १ | ३३ | १ | ३० | १ | २६ | १ | २२ | कर्क | ३ | ३६ | ३ | ३३ | ३ | ३० | ३ | २६ | ३ | २३ | ३ | १९ | ३ | १५ | ३ | १२ |
| कर्क | ४ | २ | ३ | ५८ | ३ | ५५ | ३ | ५१ | ३ | ४८ | ३ | ४४ | ३ | ४० | सिंह | ५ | ५० | ५ | ४७ | ५ | ४४ | ५ | ४० | ५ | ३७ | ५ | ३३ | ५ | २९ | ५ | २६ |

### २४ पं० आश्विनकृष्ण ३०रवौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।

द्युगणः २८१२
अयनांशाः २४।९।३१

| सू. | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ४ | १ | ४ | ११ | ५ | ९ | ० | ६ |
| ७ | २६ | २२ | २८ | ११ | १ | २० | २१ | २१ |
| ८ | ४० | १ | २० | १२ | ५ | ४० | ५ | ५ |
| २४ | १३ | ५१ | ३९ | ३५ | १२ | १२ | ३४ | ३४ |
| ५८ | ७६७ | २६ | २२ | ८ | ७४ | २ | ३ | ३ |
| ५१ | ११ | ३२ | ४७ | ११ | २५ | १९ | १२ | ११ |
| | | | व. | व. | | व. | | |

के. ७
चं. ५ बु.
८
सू. ६ शु.
४
९
३
श.१०
१२ गु.
२ मं.
११
१ रा.

◆ फसली सन् १४३० प्रारम्भ:। अशून्यशयन २ व्रतम्। चन्द्रोदय: (रा. ६।५९)। श्री लक्ष्मीयुतं विष्णुंपर्यंके पूजनादक्षय धन-दाम्पत्यसुखप्राप्ति:। यायिजययोग:१०।११ उ. २१।० या.। सर्वार्थसिद्धियोग: १०।११ उ.। भे सूर्य: १६।४९(दि. १२।३७)। स्त्री. पु.-सू.चं. योग:नागवाहनं चंडानाडी तदीश: शनि: सामान्यवृष्टियोग:। ♍कन्यायां सूर्य: ४२।०(रा. १०।४३)। मु.३० समा। फलं समता। परा: १६ घट्य:पुण्या:। गृहवस्त्रदानम्। स्नानं गोदावर्याम्। शरदृतु:। श्रीविश्वकर्मापूजा। यायिजययोग: २०।४८ या.। सर्वार्थामृतसिद्धियोग:२०।४८ या.। द्विपुष्करयोग: २०।४८ उ. २२।३३ या.। रवियोग: २०।४८ या.। ❖ महालय समाप्ति:। पापवारान्विते दर्शे दुर्भिक्षं च प्रजाभयम्। यायिजययोग: ५३।२७ उ.। सर्वार्थसिद्धियोग:समस्त।

मूलविचार-रेवती/अश्विनी- ति. २ सोमे ८।५८ (दि. ९।२७) उ.। ति. ४ बुधे ९।५९ (दि. ९।५३) या.। श्लेषा/मघा- ति. ११ बुधे ४५।३५ (रा. १२।१२) उ.। ति. १३ शुक्रे ५६।१२ (रा. ४।२९) या.। पञ्चक विचार- ति. ३ भौमे ८।५३ (दि. ९।२५) या.।

जीवत्पुत्रिकामहालक्ष्मीव्रतयोर्निर्णय:- महालक्ष्मीव्रतेऽष्टमी चन्द्रोदयव्यापिनी ग्राह्या।। पूर्वा वा परविद्धा वा ग्राह्या चन्द्रोदये सदा। जीवत्पुत्रिका तु लक्ष्मी व्रतञ्चाभ्युदिते शशांके यत्राष्टमी आश्विनकृष्ण पक्षे। यत्रोदयं वै लभते दिनेशो जीवत्सुताख्या व्रतमस्तु तत्र।। अत्र विशेष:- पूर्वेद्युरपरेद्युर्वा प्रदोषे यत्र चाष्टमी। तत्र पूज्य: सनारीभि:राजाजीमूतवाहन:।। अन्यच्च। प्रदोषसमये स्त्रीभि: पूज्यो जीमूतवाहन:। इति मैथिलनिबन्धनिर्णय:।। जीवत्पुत्रिका कथायां उदयव्यापिनीग्राह्येति पूर्वोक्ते यत्रोदयं वै कुरुते इत्यतश्च सायं व्यापिन्यां ग्रहणे तैरेव वचनैर्दिनद्वये व्रतोपपत्तिरवसीयते। सा च परदिनेऽन्नकालस्य घटी ११।८ उ. अष्टमीव्याप्तौ सम्भवति। अत: गौड़मैथिल-निर्णयैकवाक्यता न दिनद्वयव्रतापत्तिश्च। अन्नकाल:- दिवाभागद्वयादूर्ध्वमानिशीथात्तु वै निशि। द्विजभोजनकालोऽयं बालवृद्धातुरैर्विनेति। अथ सर्वेषां श्राद्धानां कालविभाग:- पूर्वाह्णे दैविकं श्राद्धमपराह्णेतु पार्वणम्। एकोदिष्टं तु मध्याह्ने प्रातर्वृद्धि-निमित्तकम्। शुक्ल पक्षस्य पूर्वाह्णे श्राद्धं कुर्याद्विचक्षण:। कृष्णपक्षेऽपराह्णे च रौहिणं न तु लघयेत्।। क्षयाहे विशेष:- न ज्ञायते मृताहश्चेत्प्रमीते प्रोषिते सति। मासश्चत्प्रति-विज्ञातस्तद्दर्शेस्यान्मृतेऽहनि। श्राद्धविघ्ननिर्णय: श्राद्धविघ्ने समुत्पन्नेह्यविज्ञाते मृतेऽहनि। एकादश्यां तु कर्त्तव्यं कृष्णपक्षे विशेषत:।। इति। गयाश्राद्धकाल:- मीने मेषेस्थितेसूर्ये कन्यायां कार्मुकेघटे दुर्लभं त्रिषु लोकेषु गयायां पिण्डपातनम्। गयायां सर्वकालेषु पिण्डं दद्याद्विचक्षण:। अधिमासे जन्मदिने तथास्ते गुरुशुक्रयो: न त्यक्तव्यं गयाश्राद्धं सिंहस्थे च बृहस्पतौ। गया श्राद्धं प्रकुर्वीत संक्रान्त्यादौ विशेषत:।। काले वा परपक्षे वा चतुर्थ्यादि तिथिष्वपि। माहलयां गयाश्राद्धं मातापित्रोर्मृतेऽहनि।। कृतोद्वाहोऽपिकुर्वीतपिण्डदानं यथाविधि:। मृताहश्चसपिण्डश्चगयाश्राद्धं महालयम्।।

| दि.मा. घ. | प. | श्रीसंवत् २०७९ शकः १९४४ याम्यायनं सौम्यगोलः शरदृतुः।। | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | योगाः | अं. | फ. | सौ. | ने. | रा. | चन्द्र राशि | प्रवेशः | सूर्योदयः घं. | मि. | सूर्यास्तः घं. | मि. | औदयिक स्पष्ट सूर्यः | | | | क्रान्तिः द. | - | रे. अं. - | मि. | चन्द्रास्तः स्टै. | टा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २९ | ५१ | १ | चं | ५३ | २० | रा | ३ | २२ | उ.फा. | २ | ३३ | दि | ७ | ३ | शुक्ल | १० | २४ | दि | १० | १२ | किं | २३ | २४ | वव | ५३ | २० | श्रीवत्स | २६ | १६ | ९ | १० | ४ | ...... | | ६ | २ | ५ | ५८ | ५ | ८ | ७ | १५ | ० | ४७ | - | १० | - | - |
| २९ | ४७ | २ | मं | ५१ | ५९ | रा | २ | ५१ | हस्त | ३ | ४९ | दि | ७ | ३५ | ब्रह्म | ७ | १७ | दि | ८ | ५८ | वा | २२ | ४० | कौ | ५१ | ५९ | सौम्य | २७ | १७ | १० | ११ | ५ | तुला | ३३।५२ | ६ | ३ | ५ | ५७ | ५ | ९ | ६ | ८ | १ | ११ | - | ११ | ६ | ५० |
| २९ | ४४ | ३ | बु | ४९ | २५ | रा | १ | ४९ | चित्रा | ३ | ५४ | दि | ७ | ३७ | ऐन्द्र | ३ ५५ | १३ २ | प्रा | ७ ५ | २० २१ | तै | २० | ४२ | गर | ४९ | २५ | कालदण्ड | २८ | १८ | ११ | १२ | ६ | | | ६ | ३ | ५ | ५७ | ५ | १० | ५ | ४ | १ | ३४ | - | ११ | ७ | २६ |
| २९ | ४० | ४ | गु | ४५ | ५१ | रा | १२ | २४ | स्वाती | २ | ४९ | दि | ७ | १२ | विष्कुम्भ | ५२ | ३० | रा | ३ | ४ | व | १७ | ३८ | भ | ४५ | ५१ | सुस्थिर | २९ | १९ | १२ | १३ | ७ | वृश्चिक | ४६।२१ | ६ | ४ | ५ | ५६ | ५ | ११ | ४ | १ | १ | ५६ | - | ११ | ८ | ५ |
| २९ | ३६ | ५ | शु | ४१ | २५ | रा | १० | ३९ | विशाखा | ० ५७ | ५१ १० | प्रा | ६ ५ | २५ १७ | प्रीति | ४६ | २ | रा | १२ | ३० | वव | १३ | ३८ | वा | ४१ | २५ | मातङ्ग | ३० | २० | १३ | १४ | ८ | | | ६ | ५ | ५ | ५५ | ५ | १२ | ३ | १ | २ | १९ | - | १२ | ८ | ५० |
| २९ | ३३ | ६ | श | ३६ | १८ | रा | ८ | ३६ | ज्येष्ठा | ५४ | ३२ | रा | ३ | ५४ | आयुष्मान | ३९ | ० | रा | ९ | ४१ | कौ | ८ | ५२ | तै | ३६ | १८ | मुसल | १ | २१ | १४ | १५ | ९ | धनु | ५४।३२ | ६ | ५ | ५ | ५५ | ५ | १३ | २ | ३ | २ | ४२ | - | १२ | ९ | ४२ |
| २९ | २९ | ७ | र | ३० | ३८ | सा | ६ | २१ | मूल | ५० | ३७ | रा | २ | २१ | सौभाग्य | ३१ | ३५ | सा | ६ | ४४ | गर | ३ | २८ | व | ३० ५७ | ३८ ३१ | सिद्धि | २ | २२ | १५ | १६ | १० | | | ६ | ६ | ५ | ५४ | ५ | १४ | १ | ७ | ३ | ६ | - | १२ | १० | ४० |
| २९ | २५ | ८ | चं | २४ | ३९ | दि | ३ | ५९ | पू.षा. | ४६ | २८ | रा | १२ | ४३ | शोभन | २३ | ५४ | दि | ३ | ४१ | वव | २४ | ३९ | वा | ५१ | ३६ | उत्पात | ३ | २३ | १६ | १७ | ११ | | | ६ | ७ | ५ | ५३ | ५ | १५ | ० | १५ | ३ | २८ | - | १३ | ११ | ४५ |
| २९ | २१ | ९ | मं | १८ | ३२ | दि | १ | ३३ | उ.षा. | ४२ | १५ | रा | ११ | २ | अतिगण्ड | १६ | ५ | दि | १२ | ३४ | कौ | १८ | ३२ | तै | ४५ | ३३ | मानस | ४ | २४ | १७ | १८ | १२ | मकर | ०।२५ | ६ | ८ | ५ | ५२ | ५ | १५ | ५९ | २३ | ३ | ५१ | - | १३ | १२ | ५१ |
| २९ | १८ | १० | बु | १२ | ३३ | दि | ११ | ९ | श्रवण | ३८ | १३ | रा | ९ | २५ | सुकर्मा | ८ | २३ | दि | ९ | २९ | गर | १२ | ३३ | व | ३९ | ४१ | छत्र | ५ | २५ | १८ | १९ | १३ | | | ६ | ८ | ५ | ५२ | ५ | १६ | ५८ | ३६ | ४ | १४ | - | १३ | १ | ५८ |
| २९ | १४ | ११ | गु | ६ | ४९ | दि | ८ | ५३ | धनिष्ठा | ३४ | ३५ | रा | ७ | ५९ | धृति | ० ५२ | ५२ ५० | प्रा | ६ ३ | ३० ३८ | भ | ६ | ४९ | वव | ३४ | १२ | श्रीवत्स | ६ | २६ | १९ | २० | १४ | कुम्भ | ६।२४ | ६ | ९ | ५ | ५१ | ५ | १७ | ५७ | ४१ | ४ | ३७ | - | १४ | ३ | ३ |
| २९ | ११ | १२ | शु | १ ५५ | ३४ २५ | प्रा | ६ ४ | ४८ ५८ | शतभिष | ३१ | २९ | सा | ६ | ४६ | गण्ड | ४७ | ५ | रा | १ | ० | वा | १ | ३४ | कौ | २९ ५६ | १७ ५९ | सौम्य | ७ | २७ | २० | २१ | १५ | | | ६ | १० | ५ | ५० | ५ | १८ | ५७ | ५ | ५ | ० | - | १४ | ४ | ५ |
| २९ | ७ | १४ | श | ५३ | १६ | रा | ३ | २९ | पू.भा. | २९ | १४ | सा | ५ | ५३ | वृद्धि | ४१ | ७ | रा | १० | ३८ | गर | २५ | ८ | व | ५३ | १६ | कालदण्ड | ८ | २८ | २१ | २२ | १६ | मीन | १४।४८ | ६ | ११ | ५ | ४९ | ५ | १९ | ५६ | २४ | ५ | २३ | - | १४ | ५ | ६ |
| २९ | ३ | १५ | र | ५० | ३३ | रा | २ | २४ | उ.भा. | २७ | ४५ | सा | ५ | १७ | ध्रुव | ३५ | ५२ | रा | ८ | ३२ | भ | २१ | ५५ | वव | ५० | ३३ | सुस्थिर | ९ | २९ | २२ | २३ | १७ | | | ६ | ११ | ५ | ४९ | ५ | २० | ५५ | ४५ | ५ | ४७ | - | १५ | ६ | ५ |

# आश्विनशुक्लपक्षः।।

राष्ट्रिय तिथि ४ आश्विनतः१७ तिथिं यावत् १९४४ शकः।।
अंग्रेजी दिनांक २६ सितम्बरतःदिनांक ९ अक्टूबरं यावत् सन् २०२२ ई.।।

☞ति.४गुरौशुक्रास्तः पूर्वे।।

दौहित्रकर्तृकमातामहश्राद्धम्। जीवत्पितृकेणापिश्राद्धम् कार्यम्। शारदनवरात्रारम्भः। कलशस्थापनं ध्वजारोपणञ्च। केशसंस्कारद्रव्याणि प्रदद्यात्प्रतिपद्दिने। ◆
तुलाराशिः (रा. ७।३६)।◡चन्द्रदर्शनम्। मु. ३० समा। फलं समता। सौम्यशृंगं समर्घताकरम्। ⊙हस्ते सूर्यः ५४।५० (रा. ३।५९)। स्त्री.स्त्री.-सू.सू. योगः ⍓
मु. रविउल्लवल ३ हिजरी सन् १४४४। दर्पणं च तृतीयायां सिन्दूरालक्तकं तथा। ☯चतुर्थ्यां तु तिलकं नेत्रमण्डनम्। रवियोगः२।४९ उ.।
भ. १७।३८ उ. (दि.१।७)४५।५१ या. (रा. १२।२४)। वृश्चिकराशिः (रा. १२।३६)। शुक्रास्तःपूर्वे ५२।४५(रा.३।१०)। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रतम्। मधुपर्कं ☯
उपाङ्गललिता ५ व्रतम्। पञ्चम्यामङ्गरागं च शक्त्यालंकरणानि च। रवियोगः०।५१ या.। पुनःरवियोगः५८।१ उ.। ☎ ६।२४ (दि. ८।४३)। यायिजययोगः६।४९ या.।
धनूराशिः (रा. ३।५४)। विल्वाभिमंत्रणम्। षष्ठयां विल्वतरौ बोधं सायं सन्ध्यासु कारयेत्। अक्टूबर१०। रवियोगः५४।३२ या.। ❖ रवियोगः४६।२८ उ.।
भ. ३०।३८ उ. (सा. ६।२१)५७।३९ या. (रा. ५।१०)। मूले सरस्वत्यावाहनम्। सप्तम्यां प्रातरानीयगृहमध्ये प्रपूजयेत्। पत्रिका प्रवेशनम्। महात्मागाँधी-♍
महाष्टमी ८ व्रतम्। उपोषणमथाष्टम्यां आत्मशक्त्यथ पूजनम्। पू.षा. भे सरस्वत्याः पूजनम्। अन्नपूर्णापरिक्रमा २४।३९ या. (दि. ३।५९)। संधिपूजा। यायिजययोगः४६।२८ उ.।❖
मकरराशिः (प्रा. ६।१८)। श्रीमहानवमी ९ व्रतम्। श्रीदुर्गानवमी। नवम्यामुग्रचण्डायाः पूजांकुर्याद् बलिं तथा। उत्तरेण नवम्याञ्च बलिभिःपूजयेच्छिवाम्। विजयादशमी १०। ☾
भ. ३९।४१ उ. (रा.१०।०)। *नवरात्र व्रतस्य पारणा।* श्रीदुर्गाविसर्जनम्। राज्ञां पट्टाभिषेक योग्या विजयादशमी। उल्लंघित्वा सीमानं प्रस्थानं स्थापयत्नृपः सम्पूज्यप्रेषणं कुर्याद्दशम्यां ☐
भ. ६।४९ या. (दि. ८।५३)। कुम्भराशिः (दि. ८।४३)। पापाङ्कुशा ११ एकादशी व्रतं सर्वेषाम्। काश्यां प्रसिद्धः नाटी इमली भरतमिलापः। पञ्चकारम्भः ☎
*प्रातः६।४८ वादनं यावदेकादशी व्रतस्य पारणा।* प्रदोष १२ व्रतम्। पद्मनाभ द्वादशी १२ व्रतम्। दुग्धदानम्। द्विदल (दाल) त्याग व्रतारम्भः। स्थायिजययोगः ◔
भ. ५३।१६ उ. (रा. ३।२९)। मीनराशिः(दि.१२।६)। यायिजययोगः५३।१६ उ.। रवियोगः२९।१४ या.। ◔ ५६।५९ उ.। रवियोगः३१।२९ उ.।
भ. २१।५५ या.(दि. २।५७)। स्नान-दान-व्रतादौ १५ पूर्णिमा। शरत्पूर्णिमा १५। कोजागरी १५। रात्रौ लक्ष्मीन्द्रकुबेरादिपूजा। महर्षिवाल्मीकी जयन्ती।○

## ॐ सूर्योदये दैनिकस्पष्टभौमादिग्रहाः ॐ

| ति. | वा. | भौमः | | | | मार्गीबुधः | | | | वक्रीगुरुः | | | | शुक्रः | | | | वक्रीशनिः | | | | राहुः | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | चं | १ | २२ | २८ | २३ | ४ | २७ | ५७ | ५२ | ११ | ११ | ४ | २४ | ५ | २ | १९ | ३७ | ९ | २० | ३७ | ५३ | ० | २१ | २ | २४ |
| २ | मं | १ | २२ | ५४ | ५५ | ४ | २८ | ५ | ५१ | ११ | १० | ५६ | १४ | ५ | ३ | ३४ | २ | ९ | २० | ३६ | ५२ | ० | २० | ५९ | १३ |
| ३ | बु | १ | २३ | २१ | २६ | ४ | २८ | १३ | ५० | ११ | १० | ४८ | ३ | ५ | ४ | ४८ | २७ | ९ | २० | ३५ | ५१ | ० | २० | ५६ | २ |
| ४ | गु | १ | २३ | ४७ | ५८ | ४ | २८ | २१ | ४९ | ११ | १० | ३९ | ५३ | ५ | ६ | २ | ५२ | ९ | २० | ३४ | ५० | ० | २० | ५२ | ५१ |
| ५ | शु | १ | २४ | १४ | २९ | ४ | २८ | २९ | ३८ | ११ | १० | ३१ | ४३ | ५ | ७ | १७ | १७ | ९ | २० | ३३ | ४९ | ० | २० | ४९ | ४० |
| ६ | श | १ | २४ | ४१ | १ | ४ | २८ | ४४ | २७ | ११ | १० | २३ | ३२ | ५ | ८ | ३१ | ४२ | ९ | २० | ३२ | ४८ | ० | २० | ४६ | २९ |
| ७ | र | १ | २५ | ७ | ३३ | ४ | २९ | २० | ३९ | ११ | १० | १५ | २२ | ५ | ९ | ४६ | ७ | ९ | २० | ३१ | ४७ | ० | २० | ४३ | १९ |
| ८ | चं | १ | २५ | ३४ | ४ | ४ | २९ | ५६ | ५२ | ११ | १० | ७ | १२ | ५ | ११ | ० | ३१ | ९ | २० | ३० | ४६ | ० | २० | ४० | ८ |
| ९ | मं | १ | २६ | ० | ३६ | ५ | ० | ३३ | ४ | ११ | ९ | ५९ | ३ | ५ | १२ | १५ | ५ | ९ | २० | २९ | ४५ | ० | २० | ३६ | ५७ |
| १० | बु | १ | २६ | २७ | ७ | ५ | १ | ९ | ६ | ११ | ९ | ५० | ५१ | ५ | १३ | २९ | ४६ | ९ | २० | २८ | ४० | ० | २० | ३३ | ४६ |
| ११ | गु | १ | २६ | ५२ | २९ | ५ | १ | ५५ | १ | ११ | ९ | ४२ | ४० | ५ | १४ | ४४ | २६ | ९ | २० | २७ | ३५ | ० | २० | ३० | ३५ |
| १२ | शु | १ | २७ | ३ | २५ | ५ | २ | ५२ | ११ | ११ | ९ | ३४ | ३० | ५ | १५ | ५९ | ७ | ९ | २० | २६ | ३० | ० | २० | २७ | २५ |
| १४ | श | १ | २७ | १४ | २२ | ५ | ३ | ४९ | २१ | ११ | ९ | २६ | २० | ५ | १७ | १३ | ४७ | ९ | २० | २५ | २५ | ० | २० | २४ | १४ |
| १५ | र | १ | २७ | २५ | १८ | ५ | ४ | ४६ | ३१ | ११ | ९ | १८ | ९ | ५ | १८ | २८ | २७ | ९ | २० | २४ | २० | ० | २० | २१ | ३ |

*भौमादीनाञ्चारः- भौमः- ति. २ भौमे मृगे ५६।४५ (रा. ४।४५)।। वक्रीबुधः- ति. १ सोमे मार्गी ४४।२६ (रा. ११।४८)। ति. ८ सोमे कन्यायां ५।१२ (दि. ८।१२)।। वक्रीगुरुः- ति. ८ सोमे उत्तराभाद्रपदा २ चरणे ५२।४७ (रा. ३।१४)।। शुक्रः- ति. ७ रवौ हस्ते ११।१२ (दि. १०।३५)।। वक्रीशनिः- श्रवण ४ चरणे ।। राहुः- भरणी ३ चरणे केतुश्च विशाखा १ चरणे।।*

२५ पं० आश्विनशुक्ल ८ सोमे
सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।
द्युगणः २८२०
अयनांशाः २४।१।३२

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ८ | १ | ४ | ११ | ५ | ९ | ० | ६ |
| १५ | १५ | २५ | २९ | १० | ११ | २० | २० | २० |
| ० | ३४ | ३४ | ५६ | ७ | ० | ३० | ४० | ४० |
| १५ | २७ | ४ | ५२ | १२ | ३१ | ४६ | ८ | ८ |
| ५९ | ८५९ | २६ | ३६ | ८ | ७४ | १ | ३ | ३ |
| ८ | २७ | ३२ | १२ | १२ | ३४ | १ | ११ | ११ |
| | | | मा. | व. | | व. | | |

७ के. | ५ बु. | ८ | सू. ६ शु. | ४ | चं. ९ | ३ | श. १० | १२ गु. | २ मं. | ११ | १ रा.

पक्षेऽस्मिन् विविधमुहूर्त्ताः- ति. १ सोमे उ.फा. भे सूर्ययुतिः। हस्ते सूर्यभोग्यम्। ति. २ भौमे दि. ७।३५ उ. चित्रा भे रक्तवस्त्रधारण वस्तुक्रय गजकृत्य शिरामोक्षण मुहूर्त्तः। ति. ३ बुधे प्रा. ७।२० या. चित्रा भे जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण दोलारोहण अन्नप्राशन नववस्त्रधारण शिल्पविद्या विपणि वस्तुक्रय गजकृत्य धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ४ गुरौ दि. ७।१२ उ. विशाखा भे केतुयुतिः। रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। ति. ५ शुक्रे प्रा. ६।२५ उ. मैत्रे जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण अन्नप्राशन गर्भाधान (पंचम्यां) शय्यासनाद्युपभोग नववस्त्रधारण लतापादपारोपण पश्चिमांविनान्यदिग्यात्रा (पंचम्यां) कणमर्दन नवान्नभक्षण शिल्पविद्या भैषज्य नौकाघटन विपणि व्यापार गजकृत्य मुहूर्त्तः। ति. ६ शनौ ज्येष्ठा भे शस्त्रघटन मुहूर्त्तः। ति. ७ रवौ विष्टेःपूर्व (सा. ६।२१)मूले पुंसवनसीमन्त लतापादपारोपण भैषज्य नौकाघटन शस्त्रघटन धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ८ सोमे दि. ३।५९ या. पू.षा. भे शिल्पविद्या मुहूर्त्तः। ति. ९ भौमे उ.षा. भे भौमवेधः। अभिजिन्नमुहूर्त्तः १३।४२ उ. (दि. ११।३७) १५।३९ या. (दि. १२।२४)। अपराह्णकालः१७।३७ उ. (दि. १।११) २३।२९ या. (दि. ३।३२)। विजयमुहूर्त्तः १९।३४ उ. (दि. १।५८)२१।३१या. (दि. २।४४)अथवा किंचिदुद्भिन्नतारकोदये। ति. १० बुधे श्रवणे शनियुतिः। ति. ११ गुरौ धनिष्ठा भे केतुवेधो विष्टिश्च। ति. १२ शुक्रे शतभिषजि जातकर्मनामकरण अन्नप्राशन (त्रयोदश्यां) लतापादपारोपण गोक्रय-विक्रय नवान्नभक्षण शिल्पविद्या भैषज्य नौकाघटन वस्तुक्रय गजाश्वकृत्य धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. १४ शनौ☞

| तिथि ल.अ. | १ चं घं. | मि. | २ मं घं. | मि. | ३ बु घं. | मि. | ४ गु घं. | मि. | ५ शु घं. | मि. | ६ श घं. | मि. | ७ र घं. | मि. | ८ चं घं. | मि. | ९ मं घं. | मि. | १० बु घं. | मि. | ११ गु घं. | मि. | १२ शु घं. | मि. | १४ श घं. | मि. | १५ र घं. | मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कन्या | ७ | ३८ | ७ | ३४ | ७ | ३१ | ७ | २७ | ७ | २३ | ७ | २० | ७ | १६ | ७ | १२ | ७ | ९ | ७ | ५ | ७ | १ | ६ | ५७ | ६ | ५३ | ६ | ५० |
| तुला | ९ | ५४ | ९ | ५० | ९ | ४७ | ९ | ४३ | ९ | ३९ | ९ | ३६ | ९ | ३२ | ९ | २८ | ९ | २५ | ९ | २१ | ९ | १७ | ९ | १३ | ९ | ९ | ९ | ६ |
| वृश्चिक | १२ | ११ | १२ | ७ | १२ | ४ | १२ | ० | ११ | ५६ | ११ | ५३ | ११ | ४९ | ११ | ४५ | ११ | ४२ | ११ | ३८ | ११ | ३४ | ११ | ३० | ११ | २६ | ११ | २३ |
| धनु | २ | १७ | २ | १३ | २ | १० | २ | ६ | २ | २ | १ | ५९ | १ | ५५ | १ | ५१ | १ | ४८ | १ | ४४ | १ | ४० | १ | ३६ | १ | ३३ | १ | २९ |
| मकर | ४ | ४ | ४ | ० | ३ | ५७ | ३ | ५३ | ३ | ४९ | ३ | ४६ | ३ | ४२ | ३ | ३८ | ३ | ३५ | ३ | ३१ | ३ | २७ | ३ | २३ | ३ | २० | ३ | १६ |
| कुम्भ | ५ | ३५ | ५ | ३१ | ५ | २८ | ५ | २४ | ५ | २० | ५ | १७ | ५ | १३ | ५ | ९ | ५ | ६ | ५ | २ | ४ | ५८ | ४ | ५४ | ४ | ५१ | ४ | ४७ |
| ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | |
| मीन | ७ | ३ | ६ | ५९ | ६ | ५६ | ६ | ५२ | ६ | ४८ | ६ | ४५ | ६ | ४१ | ६ | ३७ | ६ | ३४ | ६ | ३० | ६ | २६ | ६ | २२ | ६ | १९ | ६ | १५ |
| मेष | ८ | ४० | ८ | ३६ | ८ | ३३ | ८ | २९ | ८ | २५ | ८ | २२ | ८ | १८ | ८ | १४ | ८ | ११ | ८ | ७ | ८ | ३ | ७ | ५९ | ७ | ५६ | ७ | ५३ |
| वृष | १० | ३६ | १० | ३२ | १० | २९ | १० | २५ | १० | २२ | १० | १९ | १० | १५ | १० | ११ | १० | ७ | १० | ३ | ९ | ५९ | ९ | ५५ | ९ | ५१ | ९ | ४८ |
| मिथुन | १२ | ५० | १२ | ४६ | १२ | ४३ | १२ | ३९ | १२ | ३५ | १२ | ३२ | १२ | २८ | १२ | २४ | १२ | २१ | १२ | १७ | १२ | १३ | १२ | ९ | १२ | ५ | १२ | २ |
| कर्क | ३ | ८ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ५७ | २ | ५३ | २ | ५० | २ | ४६ | २ | ४२ | २ | ३९ | २ | ३५ | २ | ३१ | २ | २७ | २ | २३ | २ | २० |
| सिंह | ५ | २२ | ५ | १८ | ५ | १५ | ५ | ११ | ५ | ८ | ५ | ४ | ५ | १ | ४ | ५७ | ४ | ५३ | ४ | ४९ | ४ | ४५ | ४ | ४१ | ४ | ३८ | ४ | ३४ |

२६ पं० आश्विनशुक्ल १५ रवौ
सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।
द्युगणः २८२६
अयनांशाः २४।१।३३

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ११ | १ | ५ | ११ | ५ | ९ | ० | ६ |
| २० | १० | २७ | ४ | ९ | १८ | २० | २० | २० |
| ५५ | २० | २५ | ४६ | १८ | २८ | २४ | २१ | २१ |
| ४५ | ४० | १८ | ३१ | ९ | २७ | २० | ३ | ३ |
| ५९ | ८२० | १० | ५७ | ८ | ७४ | १ | ३ | ३ |
| २३ | १७ | ५६ | ० | १० | ४१ | ५ | ११ | ११ |
| | | | मा. | व. | | व. | | |

७ के. | ५ | सू. | ८ | बु. ६ शु. | ४ | ९ | ३ | १० श. | चं. १२ गु. | २ मं. | ११ | १ रा.

◆महाराजाअग्रसेनजयन्ती। शुक्रवार्द्धक्यारम्भः५२।५०(रा.३।१०)। यायिजययोगः५३।२० या.।
⍓जम्बूकवाहनं वह्निनाडी तदीशः भौमः अल्पवृष्टियोगः। पट्टदोरं द्वितीयायां केशसंयम् हेतवे।
द्विपुष्करयोगः३।४९ उ. ५१।५९ या.। ♍लालबहादुरशास्त्री जयन्ती। निशीथे महानिशापूजा बलिदानादिकञ्च। अन्नपूर्णापरिक्रमा ३०।३८ उ. (सा. ६।२१)। ओलीप्रारम्भ (जैन)।
देव्यागमनम्- गजेन। फलं-सुवृष्टि। भानुसप्तमी ७। सर्वार्थसिद्धियोगः५०।३७ या.।
☾ शमीपूजन। अपराजितापूजा। सीमोल्लंघनम्। जयन्ती ग्रहणम्। नीलकण्ठदर्शनम्। विजययात्रा। पूजयेद् राजचिह्नानि देविमप्यपराजिताम्। देव्याः गमनम्-चरणायुध। फलं-राज्यविग्रहम्। उ.षा. भे बलि दानं-सरस्वत्या पूजनञ्च। यावन्नवमी होमादिकञ्च। मन्वादिः९। बौधावतारः १०(सायं)।
रवियोगः समस्त।☐ शावरोत्सवैः। श्रवणे सरस्वत्याःविसर्जनम्। श्री साईबाबापुण्यतिथिः।
रवियोगः३८।१३ या.।○कार्तिकव्रत-स्नान-यम-नियमाद्यारम्भः। कार्त्तिक मास दीप दानारम्भः।
ओली समाप्ति (जैन)। यायिजययोगःसमस्त। सर्वार्थसिद्धियोगः२७।४५ या.।

मूल विचार- ज्येष्ठा/मूल- ति.५ शुक्रे ५८।१ (रा.शे.५।१७) उ.। ति.७ रवौ ५०।३७(रा. २।२१) या.।
रेवती/अश्विनी- ति. १५ रवौ २७।४५ (सा. ५।१७) उ.।
पञ्चक विचार- ति. ११ गुरौ ६।२४ (दि. ८।४३)उ.।

आश्विनशुक्लप्रतिपदि कलशस्थापनम्। तत्र विधिः माङ्गलिकं कृत्वा ततो देवीं प्रपूजयेत्। शुभाभिर्मृत्तिकाभिश्च पूर्वं कृत्वा तु वेदिकाम्।।१।। अन्नान् वै वापयेत्तत्र जलकुम्भसमन्वितान्।। तत्र संस्थापयेत्कुम्भं विधिना मन्त्रपूर्वकम्।।२।। सौवर्णं राजतं वापि ताम्रं मृण्मयन्तु वा। आदौ संकल्पः- देशकालौ संकीर्त्य ममेहजन्मनि श्रीदुर्गाप्रीतिद्वारा सकलापच्छान्तिपूर्वक दीर्घायु विपुलधनपुत्रपौत्राद्यन- वच्छिन्नसन्ततिवृद्धिस्थिरलक्ष्मीकीर्तिलाभ शत्रुपराजय सदभीष्ट सिध्यर्थं शारदनवरात्रप्रतिपदि विहितकलश स्थापनं दुर्गापूजनं कुमारी पूजनादिकं च करिष्ये।। ततो यथाविधि कलशं। वैदिकमंत्रैः संस्थाप्य तदुपरि वरुणमावाह्य संपूज्य नूतनप्रतिमायां प्रत्यब्दपूजनप्रतिमायां दुर्गामावाह्य पूजयेत्। पूजनमंत्र- जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनि। दुर्गाक्षमाशिवाधात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते। ॐ दुर्गे २ रक्षणि २ स्वाहेति मन्त्रेण प्रपूज्य प्रार्थयेत् आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिपातिनी। पूजा गृहाणसुमुखि नमस्ते शंकरप्रिये।।१।। सर्वतीर्थमये वारि सर्वदेवसमन्विते।। इमं घटं समागच्छ तिष्ठ देवगणैस्सह।।२।। दुर्गेदिविसमागच्छसान्निध्यमिह कल्पय। बलिपूजां गृहाणत्वमष्टाभि शाक्तिभिः सहेत्वाह्य षोडशोपचारैः देवीं अभ्यर्चयेत्।

☞पू.भा.भे रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। ति. १५ रवौ उ.भा. भे सूर्यवेधो विष्टिश्च। रेवत्यां सूर्यवेधावसानं न चन्द्रभुक्तमशुभम्।

सन्तोष मिश्र

# कार्तिककृष्णपक्षः।।

राष्ट्रिय तिथि १८ आश्विनतः तिथि ३ कार्तिकं यावत् १९४४ शकः।।
अंग्रेजी दिनांक १० अक्टूबरतः २५ दिनांकं यावत् सन् २०२२ ई.।।

पक्षेऽस्मिन् शुक्रास्तः।।

श्रीसंवत् २०७९ शकः १९४४ याम्यायनं सौम्यगोलः शरदृतुः।।

| दि.मा. घ. | प. | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | योगाः | अं. | फ. | सौ. | ने. | रा. | चन्द्र राशि | प्रवेशः | सूर्योदयः घं. | मि. | सूर्यास्तः घं. | मि. | औदयिक स्पष्ट सूर्यः | | | | क्रान्तिः द. | - | रे.अं. - | मि. | चन्द्रोदयः स्टै. | टा. | कार्तिककृष्णपक्षः।। |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २९ | ० | १ | चं | ४८ | ५८ | रा | १ | ४७ | रेवती | २७ | २४ | दि | ५ | १० | व्याघात | ३१ | २७ | सा | ६ | ४७ | वा | ११ | ४६ | कौ | ४८ | ५८ | मातङ्ग | १० | १ | २३ | २४ | १८ | मेष | २७।२४ | ६ | १२ | ५ | ४८ | ५ | २१ | ५५ | ८ | ६ | ११ | - | १५ | ६ | २ | मेषराशिः (दि. ५।१०)। कार्तिके द्विदलं (दाल) त्यजेत्। पञ्चकनिवृत्तिः २७।२४ (दि. ५।१०)। यायिजययोगः२७।२४ या.। |
| २८ | ५६ | २ | मं | ४८ | ३५ | रा | १ | ३९ | अश्विनी | २८ | १५ | सा | ५ | ३१ | हर्षण | २८ | २ | सा | ५ | २६ | तै | १८ | ४७ | गर | ४८ | ३५ | अमृत | ११ | २ | २४ | २५ | १९ | | | ६ | १३ | ५ | ४७ | ५ | २२ | ५४ | ३३ | ६ | ३४ | - | १५ | ६ | ३७ | अशून्यशयन २ व्रतम्। चन्द्रोदयः (रा. ६।३७)। श्री लक्ष्मीयुतं विष्णुंपर्यंके पूजनादक्षय धन-दाम्पत्यसुखप्राप्तिः। प्रार्थनामन्त्रः-पत्नी भर्तृवियोगं च भर्ता-भार्या ◆ |
| २८ | ५२ | ३ | बु | ४९ | ३५ | रा | २ | ४ | भरणी | ३० | २० | सा | ६ | २२ | वज्र | २५ | ३६ | दि | ४ | २८ | व | ११ | ५ | भ | ४९ | ३५ | काण | १२ | ३ | २५ | २६ | २० | वृष | ४६।११ | ६ | १४ | ५ | ४६ | ५ | २३ | ५४ | १ | ६ | ५७ | - | १६ | ७ | १४ | भ. ११।५ उ. (दि. १।५२)४९।३५ या. (रा. २।४)। वृषराशिः (रा. १२।४२)। सर्वार्थसिद्धियोग:३०।२०उ.। |
| २८ | ४९ | ४ | गु | ५१ | ५१ | रा | २ | ५८ | कृत्तिका | ३३ | ४३ | रा | ७ | ४३ | सिद्धि | २४ | १४ | दि | ३ | ५६ | वव | २० | ४३ | वा | ५१ | ५१ | लुम्बक | १३ | ४ | २६ | २७ | २१ | | | ६ | १४ | ५ | ४६ | ५ | २४ | ५३ | ३१ | ७ | २१ | - | १६ | ७ | ५४ | संकष्टी करक (करवा) श्रीगणेश ४ व्रतम्। चन्द्रोदयः (रा. ७।५४)। चन्द्रार्घ्यदानम्। दशरथचतुर्थी (बंगाल)। यायिजययोग:५१।५१ उ.। यमघंटयोग:३३।४३ या.। |
| २८ | ४५ | ५ | शु | ५५ | १५ | रा | ४ | २१ | रोहिणी | ३८ | १२ | रा | ९ | ३२ | व्यतिपात | २३ | ४१ | दि | ३ | ४३ | कौ | २३ | ३३ | तै | ५५ | १५ | मित्र | १४ | ५ | २७ | २८ | २२ | | | ६ | १५ | ५ | ४५ | ५ | २५ | ५३ | ४ | ७ | ४३ | - | १६ | ८ | ३७ | यमघंटयोग:३८।१२ या.। ☾अमायाञ्च यदा वारो भवेद्भूमि सूतस्य च। गंगायां यदि लभ्येत कोटि सूर्य ग्रहैः समा। पापवारान्विते दर्शे दुर्भिक्षं च प्रजाभयम्। |
| २८ | ४२ | ६ | श | ५९ | ३५ | रा | ६ | ६ | मृगशिरा | ४३ | ४० | रा | ११ | ४४ | वरीयान | २४ | १ | दि | ३ | ५२ | गर | २७ | २५ | व | ५९ | ३५ | वज्र | १५ | ६ | २८ | २९ | २३ | मिथुन | १०।५६ | ६ | १६ | ५ | ४४ | ५ | २६ | ५२ | ३९ | ८ | ५ | - | १६ | ९ | २५ | भ. ५९।३५ उ. (रा.शे. ६।६)। मिथुनराशिः (दि. १०।३८)। रवियोग:४३।४० उ.। |
| २८ | ३८ | ७ | र | ६० | ० | स | म | स्त | आर्द्रा | ४९ | ४८ | रा | २ | ११ | परिघ | २४ | ५८ | दि | ४ | १५ | भ | ३२ | ५ | वव | ६० | ० | ध्वांक्ष | १६ | ७ | २९ | ३० | २४ | | | ६ | १६ | ५ | ४४ | ५ | २७ | ५२ | १६ | ८ | २७ | - | १६ | १० | १६ | भ. ३२।५ या. (रा. ७।६)। भानुसप्तमी ७। यायिजययोग:४९।४८ उ.। त्रिपुष्करयोग:४९।४८ उ.। रवियोग:४९।४८ या.। |
| २८ | ३४ | ७ | चं | ४ | ३४ | दि | ८ | ७ | पुनर्वसु | ५६ | २० | रा | ४ | ४९ | शिव | २६ | १८ | दि | ४ | ४८ | वव | ४ | ३४ | वा | ३७ | १२ | धूम्र | १७ | ८ | ३० | ३१ | २५ | कर्क | ३९।४२ | ६ | १७ | ५ | ४३ | ५ | २८ | ५१ | ५६ | ८ | ४९ | - | १७ | ११ | १० | कर्कराशिः (रा. १०।१०)। अहोई ८ व्रतम्। चन्द्रोदयः (रा. ११।१०)। यायिजययोग:४।३४ या.। सर्वार्थसिद्धियोग:५६।२०उ.। |
| २८ | ३१ | ८ | मं | ९ | ५० | दि | १० | १४ | पुष्य | ६० | ० | स | म | स्त | सिद्ध | २७ | ४३ | सा | ५ | २३ | कौ | ९ | ५० | तै | ४२ | २३ | प्रवर्धमान | १८ | ९ | ३१ | १ | २६ | | | ६ | १८ | ५ | ४२ | ५ | २९ | ५१ | ३८ | ९ | १० | - | १७ | १२ | ५ | श्रीराधाजयन्ती ८। अरुणोदये मथुरायां श्री राधाकुण्डे स्नानम्। ⊙सं.तुलायां सूर्यः ८।२४(दि. ९।४०)। मु.३० समा। फलं समता। पूर्वाः १६ घटयः पुण्याः। दीप- |
| २८ | २७ | ९ | बु | १४ | ५६ | दि | १२ | १७ | पुष्य | २ | ४५ | दि | ७ | २५ | साध्य | २८ | ५४ | सा | ५ | ५३ | गर | १४ | ५६ | व | ४७ | ११ | मातङ्ग | १९ | १० | १ | २ | २७ | | | ६ | १९ | ५ | ४१ | ६ | ० | ५१ | २१ | ९ | ३२ | - | १७ | १ | ० | भ. ४७।११ उ. (रा. १।११)। सौरकार्तिकमासारम्भः। तिल-गोरसादिदानम्। स्नानं गोदावर्याम्। स्थायिजययोगः ९।५० या.। |
| २८ | २४ | १० | गु | १९ | २५ | दि | २ | ५ | श्लेषा | ८ | ४० | दि | ९ | ४७ | शुभ | २९ | ३७ | सा | ६ | १० | भ | १९ | २५ | वव | ५१ | १४ | अमृत | २० | ११ | २ | ३ | २८ | सिंह | ८।४० | ६ | १९ | ५ | ४१ | ६ | १ | ५१ | ७ | ९ | ५४ | - | १७ | १ | ५५ | भ. १९।२५ या. (दि. २।५)। सिंहराशिः (दि. ९।४७)। ☾अमायाञ्च यदा वारो भवेद्भूमि सूतस्य च। गंगायां यदि लभ्येत |
| २८ | २० | ११ | शु | २३ | २ | दि | ३ | ३३ | मघा | १३ | ४९ | दि | ११ | ५२ | शुक्ल | २९ | ३६ | सा | ६ | १० | वा | २३ | २ | कौ | ५४ | १६ | काण | २१ | १२ | ३ | ४ | २९ | | | ६ | २० | ५ | ४० | ६ | २ | ५० | ५६ | १० | १६ | - | १७ | २ | ५० | रम्भा ११ एकादशी व्रतं सर्वेषाम्। गोवत्सद्वादशी १२ व्रतम् (प्रदोषे)। स्थायिजययोग:२३।२ उ.। कोटि सूर्य ग्रहैः समा। पापवारान्विते दर्शे दुर्भिक्षं च प्रजाभयम्। रात्रौ बलि पूजा |
| २८ | १७ | १२ | श | २५ | ३० | दि | ४ | ३३ | पू.फा. | १७ | ५१ | दि | १ | २९ | ब्रह्म | २८ | ४३ | सा | ५ | ५० | तै | २५ | ३० | गर | ५६ | ९ | लुम्बक | २२ | १३ | ४ | ५ | ३० | कन्या | ३३।३४ | ६ | २१ | ५ | ३९ | ६ | ३ | ५० | ४६ | १० | ३८ | - | १७ | ३ | ४५ | कन्याराशिः (रा.७।४७)। शनिप्रदोष १२ व्रतम्। पुत्रार्थिभिरत्र व्रतारम्भो विधेयः। धनत्रयोदशी १३ (धनतेरस)। अपमृत्युनाशार्थं निशामुखे सायं गृहाद्बहिर्यमाय ☯ |
| २८ | १३ | १३ | र | २६ | ४८ | दि | ५ | ४ | उ.फा. | २० | ४३ | दि | २ | ३८ | ऐन्द्र | २६ | ५१ | दि | ५ | ५ | व | २६ | ४८ | भ | ५६ | ४७ | मित्र | २३ | १४ | ५ | ६ | १ | | | ६ | २१ | ५ | ३९ | ६ | ४ | ५० | ३९ | १० | ५९ | - | १७ | ४ | ४१ | भ. २६।४८ उ. (दि. ५।४)५६।४७ या. (रा. ५।४)। मासशिवरात्रि १३ व्रतम्। "भवेद्यत्र त्रयोदश्यां भूतव्याप्ता महानिशेत्युक्तेः।" सायं मेषलग्ने श्रीहनुमज्जनम्। ♍ |
| २८ | १० | १४ | चं | २६ | ४६ | दि | ५ | ४ | हस्त | २२ | २० | दि | ३ | १८ | वैधृति | २४ | ० | दि | ३ | ५८ | श | २६ | ४६ | च | ५६ | ८ | वज्र | २४ | १५ | ६ | ७ | २ | तुला | ५२।३२ | ६ | २२ | ५ | ३८ | ६ | ५ | ५० | ३४ | ११ | २१ | - | १७ | ५ | ४० | तुलाराशिः (रा. ३।२३)। दीपावली ३०(प्रदोषे)। प्रातर्यमतर्पणम्। प्रातः हनुमद्दर्शन पूजनञ्च। लक्ष्मीन्द्रकुबेरादिपूजा। सायं देवायतनादौदीपदानम्। शेषरात्रौ दरिद्रानिः ❖ |
| २८ | ६ | ३० | मं | २५ | ३० | दि | ४ | ३५ | चित्रा | २२ | ४३ | दि | ३ | २८ | विष्कुम्भ | २० | ८ | दि | २ | २६ | नाग | २५ | ३० | किं | ५४ | १६ | ध्वांक्ष | २५ | १६ | ७ | ८ | ३ | | | ६ | २३ | ५ | ३७ | ६ | ६ | ५० | ३२ | ११ | ४२ | - | १८ | - | - | स्नान-दान-श्राद्धादौ ३० अमावस्या। साभ्यंगस्नानम्। महावीर निर्वाण दिवसः (जैन)। काश्यां ग्रस्तास्त खण्डसूर्यग्रहणम् (विवरणं २ पृष्ठे द्रष्टव्यम्)। भौमवती अमावस्या। ☾ |

## ॐ सूर्योदये दैनिकस्पष्टभौमादिग्रहाः ॐ

| ति. | वा. | भौमः | | | | बुधः | | | | वक्रीगुरुः | | | | शुक्रः | | | | वक्रीशनिः | | | | राहुः | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | चं | १ | २७ | ३६ | १४ | ५ | ५ | ४३ | ३१ | ११ | ९ | ९ | ५९ | ५ | १९ | ४३ | ८ | ९ | २० | २३ | १५ | ० | २० | १७ | ५२ |
| २ | मं | १ | २७ | ४७ | ११ | ५ | ६ | ५१ | ४७ | ११ | ९ | १ | ४९ | ५ | २० | ५७ | ४८ | ९ | २० | २२ | ११ | ० | २० | १४ | ४१ |
| ३ | बु | १ | २७ | ५७ | १८ | ५ | ८ | ४ | २७ | ११ | ८ | ५३ | ३८ | ५ | २२ | १२ | २९ | मा | २० | २१ | ४२ | ० | २० | ११ | ३१ |
| ४ | गु | १ | २८ | ७ | २३ | ५ | ९ | १६ | ५३ | ११ | ८ | ४५ | २८ | ५ | २३ | २७ | ९ | ९ | २० | २२ | ८ | ० | २० | ८ | २० |
| ५ | शु | १ | २८ | १७ | २७ | ५ | १० | २९ | १८ | ११ | ८ | ३८ | ५० | ५ | २४ | ४१ | ५० | ९ | २० | २२ | ३५ | ० | २० | ५ | ९ |
| ६ | श | १ | २८ | २७ | ३२ | ५ | ११ | ४१ | ३४ | ११ | ८ | ३२ | ५० | ५ | २५ | ५६ | ३० | ९ | २० | २३ | २ | ० | २० | १ | ५८ |
| ७ | र | १ | २८ | ३७ | ३७ | ५ | १३ | ३ | २० | ११ | ८ | २६ | ५६ | ५ | २७ | ११ | १० | ९ | २० | २३ | २८ | ० | १९ | ५८ | ४७ |
| ७ | चं | १ | २८ | ४७ | ४१ | ५ | १४ | २५ | ४० | ११ | ८ | २१ | ३ | ५ | २८ | २५ | ५१ | ९ | २० | २३ | ५५ | ० | १९ | ५५ | ३७ |
| ८ | मं | १ | २८ | ५७ | ४६ | ५ | १५ | ४८ | १ | ११ | ८ | १५ | ९ | ५ | २९ | ४० | ३१ | ९ | २० | २४ | २१ | ० | १९ | ५२ | २६ |
| ९ | बु | १ | २९ | ७ | ५१ | ५ | १७ | १० | २१ | ११ | ८ | ९ | १६ | ६ | ० | ५५ | १२ | ९ | २० | २४ | ४८ | ० | १९ | ४९ | १५ |
| १० | गु | १ | २९ | १७ | ५५ | ५ | १८ | ३४ | १९ | ११ | ८ | ३ | २३ | ६ | २ | ९ | ५२ | ९ | २० | २५ | १४ | ० | १९ | ४६ | ४ |
| ११ | शु | १ | २९ | २८ | ० | ५ | २० | ५ | २० | ११ | ७ | ५७ | २९ | ६ | ३ | २४ | ३३ | ९ | २० | २५ | ३७ | ० | १९ | ४२ | ५३ |
| १२ | श | १ | २९ | ३८ | ५ | ५ | २१ | ३६ | २२ | ११ | ७ | ५१ | ३६ | ६ | ४ | ३९ | १३ | ९ | २० | २६ | ० | ० | १९ | ३९ | ४३ |
| १३ | र | १ | २९ | ४८ | ९ | ५ | २३ | ७ | २३ | ११ | ७ | ४५ | ४३ | ६ | ५ | ५३ | ५४ | ९ | २० | २६ | २२ | ० | १९ | ३६ | ३२ |
| १४ | चं | १ | २९ | ५८ | १४ | ५ | २४ | ३८ | ८ | ११ | ७ | ३९ | ४९ | ६ | ७ | ८ | ३० | ९ | २० | २६ | ४५ | ० | १९ | ३३ | २१ |
| ३० | मं | २ | ० | ८ | १९ | ५ | २६ | ११ | १० | ११ | ७ | ३३ | ५६ | ६ | ८ | २३ | १४ | ९ | २० | २७ | ८ | ० | १९ | ३० | १० |

*भौमादीनाञ्चारः- भौमः- ति. १४ सोमे मिथुने १०।३१(दि.१०।३४)।। बुधः- ति. ४ गुरौ हस्ते ३५।४३ (रा.८।३१)। ति. १३ रवौ चित्रा भे ८।२० (दि. ९।४१)।। वक्रीगुरुः- उत्तराभाद्रपदा २ चरणे ।। शुक्रः- ति. ३ बुधे चित्रा भे ५४।१५ (रा. ३।५६)। ति. ८ भौमे तुलायां १५।३९ (दि. १२।३४)। ति. १३ रवौ स्वात्यां३७।५(रा. ९।११)।। वक्रीशनिः- ति. ३ बुधे मार्गी ३१।३८ (सा.६।५३)।। राहुः- ति.६ शनौ भरणी २ चरणे केतुश्च स्वाती ४ चरणे ३७।४(रा. ९।६)।।*

२७ पं० कार्तिककृष्णा ८ भौमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।

द्युगणः २८३५

अयनांशाः २४।९।३५

| सू. | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ३ | १ | ५ | ११ | ५ | ९ | ० | ६ |
| २१ | १७ | २८ | १५ | ८ | २९ | २० | १९ | १९ |
| ५१ | २४ | ५७ | ४८ | १५ | ४० | २४ | ५२ | ५२ |
| ३८ | १३ | ४६ | १ | ९ | ३१ | २१ | २६ | २६ |
| ५९ | ७२२ | १० | ८२ | ५ | ७४ | ० | ३ | ३ |
| ४३ | ४३ | ५ | २० | ५३ | ४१ | २७ | ११ | ११ |
| | | | | व. | | मा. | | |

| | | |
|---|---|---|
| ७ के. | सू. बु. ६ शु. | ५ |
| ८ | | ४ चं. |
| ९ | | ३ |
| १० श. | १२ गु. | २ मं. |
| ११ | | १ रा. |

पक्षेऽस्मिन् विविधमुहूर्त्ताः- ति. १ सोमे रेवत्यां सूर्यवेधावसानं न चन्द्रभुक्तमशुभम्। अश्विन्यां गोक्रय-विक्रय पूर्वाविनान्यदिग्यात्रा भैषज्य मुहूर्त्तः। ति.२ भौमे अश्विन्यां सूतीस्नान रक्तवस्त्रधारण भूषाघटन उत्तरांविनान्यदिग्यात्रा शिरामोक्षण मुहूर्त्तः। ति. ३ बुधे भरण्यां राहुयुतिःविष्टिदोषश्च। ति. ४ गुरौ कृत्तिका भे रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। ति. ५ शुक्रे व्यतिपातात्परं (दि. ३।४३) रोहिण्यां शय्यासनाद्युपभोग सुभगांविनानववस्त्रधारण लतापादपारोपण कर्णमर्दन शिल्पविद्या विपणि मुहूर्त्तः। ति. ६ शनौ मृगे भौमयुतिः। ति. ७ रवौ आर्द्रा भे विष्टेःपरं (रा. ७।६) शस्त्रघटन मुहूर्त्तः। रा.२।११उ. पुनर्वसौ दक्षिण दिग्यात्रा मुहूर्त्तः। ति. ७ सोमे पुनर्वसौ सप्तम्यां जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन गोक्रय-विक्रय पश्चिम-दक्षिण दिग्यात्रा नवान्नभक्षण शिल्पविद्या अश्वकृत्य मुहूर्त्तः। रा. ४।४९ उ.पुष्ये जीर्णादिगृहप्रवेश (च.शु) मुहूर्त्तः। ति. ८ भौमे दि.१०।१४ या. पुष्ये सुभगांविनारक्तवस्त्रधारण भूषाघटन शिरामोक्षण मुहूर्त्तः। नवम्यां रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। ति. ९ बुधे पुष्ये रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। रिक्तोत्तर (दि. १२।१७) श्लेषा भे वस्तुविक्रय धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. १० गुरौ विष्टेःपरं मघा भे राहुवेधः। ति. ११ शुक्रे दि. ११।५२ उ. पू.फा. भे कर्णमर्दन नौकाघटन वस्तुविक्रय मुहूर्त्तः। ति. १२ शनौ पू.फा. भे वस्तुविक्रय शस्त्रघटन मुहूर्त्तः। दि. १।२९ उ.उ.फा. भे सुभगांविनाकृष्णवस्त्रधारण जीर्णादिगृहप्रवेश (ल. २) मुहूर्त्तः। परं मासान्तादिदोषः।

| तिथि ल.अ. | १ चं घं. | मि. | २ मं घं. | मि. | ३ बु घं. | मि. | ४ गु घं. | मि. | ५ शु घं. | मि. | ६ श घं. | मि. | ७ र घं. | मि. | ७ चं घं. | मि. | ८ मं घं. | मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कन्या | ६ | ४६ | ६ | ४२ | ६ | ३८ | ६ | ३५ | ६ | ३१ | ६ | २७ | ६ | २३ | ६ | २० | ६ | १६ |
| तुला | ९ | २ | ८ | ५८ | ८ | ५४ | ८ | ५१ | ८ | ४७ | ८ | ४३ | ८ | ३९ | ८ | ३६ | ८ | ३२ |
| वृश्चिक | ११ | १९ | ११ | १५ | ११ | ११ | ११ | ८ | ११ | ४ | ११ | ० | १० | ५६ | १० | ५३ | १० | ४९ |
| धनु | १ | २५ | १ | २१ | १ | १७ | १ | १४ | १ | १० | १ | ६ | १ | २ | १२ | ५९ | १२ | ५५ |
| मकर | ३ | १२ | ३ | ८ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ५७ | २ | ५३ | २ | ४९ | २ | ४६ | २ | ४२ |
| कुम्भ | ४ | ४३ | ४ | ३९ | ४ | ३५ | ४ | ३२ | ४ | २८ | ४ | २४ | ४ | २० | ४ | १७ | ४ | १३ |
| ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | |
| मीन | ६ | ११ | ६ | ७ | ६ | ३ | ५ | ५९ | ५ | ५६ | ५ | ५२ | ५ | ४८ | ५ | ४५ | ५ | ४१ |
| मेष | ७ | ४८ | ७ | ४४ | ७ | ४० | ७ | ३७ | ७ | ३३ | ७ | २९ | ७ | २५ | ७ | २२ | ७ | १८ |
| वृष | ९ | ४४ | ९ | ४० | ९ | ३६ | ९ | ३३ | ९ | २९ | ९ | २५ | ९ | २१ | ९ | १८ | ९ | १४ |
| मिथुन | ११ | ५८ | ११ | ५४ | ११ | ५० | ११ | ४७ | ११ | ४३ | ११ | ३९ | ११ | ३५ | ११ | ३२ | ११ | २८ |
| कर्क | २ | १६ | २ | १२ | २ | ८ | २ | ५ | २ | १ | १ | ५७ | १ | ५३ | १ | ५० | १ | ४६ |
| सिंह | ४ | ३० | ४ | २६ | ४ | २२ | ४ | १९ | ४ | १५ | ४ | ११ | ४ | ७ | ४ | ४ | ४ | ० |

| तिथि ल.अ. | ९ बु घं. | मि. | १० गु घं. | मि. | ११ शु घं. | मि. | १२ श घं. | मि. | १३ र घं. | मि. | १४ चं घं. | मि. | ३० मं घं. | मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुला | ८ | २९ | ८ | २५ | ८ | २१ | ८ | १७ | ८ | १३ | ८ | ९ | ८ | ५ |
| वृश्चिक | १० | ४६ | १० | ४२ | १० | ३८ | १० | ३४ | १० | ३० | १० | २६ | १० | २२ |
| धनु | १२ | ५२ | १२ | ४८ | १२ | ४४ | १२ | ४० | १२ | ३६ | १२ | ३२ | १२ | २८ |
| मकर | २ | ३९ | २ | ३५ | २ | ३१ | २ | २७ | २ | २३ | २ | १९ | २ | १५ |
| कुम्भ | ४ | १० | ४ | ६ | ४ | २ | ३ | ५८ | ३ | ५४ | ३ | ५० | ३ | ४६ |
| मीन | ५ | ३८ | ५ | ३४ | ५ | ३० | ५ | २६ | ५ | २२ | ५ | १८ | ५ | १४ |
| ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | |
| मेष | ७ | १५ | ७ | ११ | ७ | ७ | ७ | ३ | ६ | ५९ | ६ | ५५ | ६ | ५१ |
| वृष | ९ | ११ | ९ | ७ | ९ | ३ | ८ | ५९ | ८ | ५५ | ८ | ५१ | ८ | ४७ |
| मिथुन | ११ | २५ | ११ | २१ | ११ | १७ | ११ | १३ | ११ | ९ | ११ | ५ | ११ | १ |
| कर्क | १ | ४३ | १ | ३९ | १ | ३५ | १ | ३१ | १ | २७ | १ | २३ | १ | १९ |
| सिंह | ३ | ५७ | ३ | ५३ | ३ | ४९ | ३ | ४५ | ३ | ४१ | ३ | ३७ | ३ | ३३ |
| कन्या | ६ | १० | ६ | ६ | ६ | २ | ५ | ५८ | ५ | ५४ | ५ | ५० | ५ | ४६ |

२८ पं० कार्तिककृष्ण ३० भौमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।

द्युगणः २८४२

अयनांशाः २४।९।३६

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६ | ६ | २ | ५ | ११ | ६ | ९ | ० | ६ |
| ६ | १ | ० | २६ | ७ | ८ | २० | १९ | १९ |
| ५० | ३९ | ८ | ११ | ३३ | २३ | २७ | ३० | ३० |
| ३२ | ७ | १९ | २० | ५६ | १४ | ८ | १० | १० |
| ५९ | ७१४ | १० | ९६ | ५ | ७४ | ० | ३ | ३ |
| ५७ | ५५ | ४ | २५ | ५३ | ४१ | २३ | ११ | ११ |
| | | | | व. | | मा. | | |

| | | |
|---|---|---|
| ८ | सू. चं. ७ शु. के. | ६ बु. |
| ९ | | ५ |
| १० श. | | ४ |
| ११ | १२ गु. | मं. ३ |
| | १ रा. | २ |

◆समुद्भवम्। नाप्नुवंति यथा दुखं दाम्पत्यानि तथा कुरु। ⊙चित्रा भे सूर्यः २५।४१ (दि. ४।२९)। स्त्री.पु.-सू.चं. योगःमूषक वाहनं वातनाडी तदीशः रविः सामान्यवृष्टियोगः। सर्वार्थामृतसिद्धियोगः २८।१५ या.। ☯चतुर्वर्ति दीपदानम्। धनवन्तरिजयन्ती १३। कामेश्वरीजयन्ती १३। गोत्रिरात्रयमपञ्चकारम्भः। यायिजययोगः २५।३० उ.। त्रिपुष्करयोगः १७।५१ उ. २५।३० या.। ♍नरकचतुर्दशी १४(चन्द्रोदय व्यापिनी)। चन्द्रोदये १४ योगे सीतालोष्टापामार्ग चक्रमर्दशाखा भ्रामणपूर्वक स्नानम्। चन्द्रोदयः (रा.४।४१)। सायं गृहाद्बहिर्यमाय चतुर्वर्ती दीपदानम्। ⊙सायन वृश्चिके सूर्यः ५९।५०(रा.शे. ६।१७)। राष्ट्रिय कार्तिकमासः दि. ३०। यायिजययोगः २६।४८ या.। सर्वार्थसिद्धियोगः समस्त। अमृतसिद्धियोगः २०।४३ उ.। ❖सारणम् उल्कामुखा नराः कुर्युःपितृणां मार्गदर्शनम्। निशीथे महाकालीपूजा। गोत्रिरात्र निवृत्तिः। ⊙स्वात्यां सूर्यः ४९।२८ (रा. २।९)। स्त्री.स्त्री.-सू.सू. योगःअश्व वाहनं वातनाडी तदीशःरविःअल्पवृष्टियोगः।

मूलविचार-रेवती/अश्विनी- ति. २ भौमे २८।१५ (सा. ५।३१) या.।
श्लेषा/मघा- ति. ९ बुधे २।४५ (दि. ७।२५) उ.। ति. ११ शुक्रे १३।४९ (दि. ११।५२) या.।
पञ्चक विचार- ति. १ सोमे २७।२४(दि.५।१०)या.।

हनुमज्जन्मनिर्णयः वायुपुराणे:- आश्विनस्यासिते पक्षे स्वात्यां भौमे चतुर्दशी। मेषलग्नेऽञ्जनागर्भात् स्वयं जातो हरः शिवः। शुक्लादिमासपक्षनया कार्तिक कृष्ण आश्विन कृष्ण तुलार्के मेषलग्ने सायंकाले। अतश्चतुर्दश्यां सायंकाले जन्मोत्सवः द्वितीयदिने दर्शनं पूजनेयुक्ते।। आमायां लक्ष्मीपूजा- देशकालौ संकीर्त्य मम गृहेऽचलश्रीनिवासाय लक्ष्मीपूजनं करिष्ये। विहितोपचारैः संपूज्यान्ते प्रार्थना- नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये। या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात्।। कार्तिककृष्ण १४ साभ्यङ्गस्नानम्।। तत्र शेषरात्रौ चन्द्रोदये कृततिलतैलानुलेपनो लाङ्गलोद्धृतापामार्गतुम्बी प्रपुन्नाटशाखानां स्नानं वारिमध्ये त्रिवारभ्रामणे मन्त्रः। सितालोष्टसमायुक्तः संकण्टक दलान्वितः।। हर पापमपामार्ग भ्राम्यमाणं पुनः पुनरिति। तुलासंक्रमणे दीपदानम् तुलायां तिल तैलेन सायङ्काले समागते। आकाश दीपं यो दद्यान्मासमेकं हरिप्रिये।। महतीं श्रियमाप्नोति रूपसौभाग्यसम्पदः। आकाशदीपदानमन्त्रः। दामोदराय नभसि तुलायां लोलया सह। प्रदीपन्ते प्रयच्छामि नमोऽनन्ताय वेधसे। प्रतिपदादितुला संक्रान्त्यवधीति।

*एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पञ्च वा ग्रहाः। प्लावयन्ति महीं कृत्स्नां रुधिरेण जलेन वा।।*

# श्रीसंवत् २०७९ शकः १९४४ याम्यायनगोलयोः शरदृतुः।।

# कार्तिकशुक्लपक्षः।।

राष्ट्रिय तिथि ४ कार्तिकतः १७ तिथिं यावत् १९४४ शकः।।
अंग्रेजी दिनांक २६ अक्टूबरतः दिनांक ८ नवम्बरं यावत् सन् २०२२ ई.।।

(पक्षेऽस्मिन् शुक्रास्तः।।)

| दि.मा. घ. | प. | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | योगाः | अं. | फ. | सौ. | ने. | रा. | चन्द्र राशि | प्रवेशः | सूर्योदयः घं. | मि. | सूर्यास्तः घं. | मि. | औदयिक स्पष्ट सूर्यः | | | | क्रान्तिः द. | | रे.अं. - | मि. | चन्द्रास्तः स्टै. | टा. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २८ | ३ | १ | बु | २३ | १ | दि | ३ | ३५ | स्वाती | २१ | ५५ | दि | ३ | ९ | प्रीति | १५ | २१ | दि | १२ | ३१ | वव | २३ | १ | वा | ५१ | १६ | धूम्र | २६ | १७ | ८ | ९ | ४ | | | ६ | २३ | ५ | ३७ | ६ | ७ | ५० | २९ | १२ | ३ | - | १८ | ६ | १ | चन्द्रदर्शनम्। मु. ४५ वहत्ती। फलं समर्घता। सौम्य श्रृंगं समर्घताक्रम। काशीतोऽन्यत्र गोवर्धनपूजा। अन्नकट १। गोक्रीडनम्। मार्गपालीबन्धनम्। |
| २७ | ५९ | २ | गु | १९ | ३१ | दि | २ | १२ | विशाखा | २० | ७ | दि | २ | २७ | आयुष्मान | ९ | ४४ | दि | १० | १८ | कौ | १९ | ३१ | तै | ४७ | २१ | प्रवर्धमान | २७ | १८ | ९ | १० | ५ | वृश्चिक | ५।३४ | ६ | २४ | ५ | ३६ | ६ | ८ | ५० | ३० | १२ | २४ | - | १८ | ६ | ४५ | वृश्चिकराशिः (दि. ८।३८)। मु. रविउस्सानी ४ हिजरी सन् १४४४। काश्यां गोवर्धनपूजा। यमद्वितीया २। भ्रातृद्वितीया (भइया दूज)। भगिनी गृहे भोजनं |
| २७ | ५६ | ३ | शु | १५ | १० | दि | १२ | २९ | अनुराधा | १७ | २९ | दि | १ | २५ | सौभाग्य | ३/५३ | २६/४ | प्रा | ७/५ | ४७/१ | गर | १५ | १० | व | ४२ | २९ | राक्षस | २८ | १९ | १० | ११ | ६ | | | ६ | २५ | ५ | ३५ | ६ | ९ | ५० | ३५ | १२ | ४४ | - | १८ | ७ | ३६ | भ. ४२।३९ उ. (रा. ११।२९)। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रतम्। सूर्यषष्ठी व्रतारम्भः दिनत्रयं यावत्। स्थायिजययोगः१७।२९ उ.। रवियोगः१७।२९ उ.। |
| २७ | ५३ | ४ | श | १० | ७ | दि | १० | २८ | ज्येष्ठा | १४ | ९ | दि | १२ | ५ | अतिगण्ड | ४९ | ६ | रा | २ | ३ | भ | १० | ७ | वव | ३७ | २० | मुसल | २९ | २० | ११ | १२ | ७ | धनु | १४।१९ | ६ | २५ | ५ | ३५ | ६ | १० | ५० | ४१ | १३ | ४ | - | १८ | ८ | ३३ | भ. १०।७ या. (दि. १०।२८)। धनूराशिः (दि. १२।५)। सूर्यषष्ठी व्रतस्य द्वितीय दिनम्। रवियोगः१८।९ या.। ◐१०।१९ या.। रवियोगः१०।१९ उ.। |
| २७ | ४९ | ५ | र | ४/५४ | ३३/५ | प्रा | ८/५ | १५/५३ | मूल | १० | १९ | दि | १० | ३४ | सुकर्मा | ४१ | २५ | रा | ११ | ० | वा | ४ | ३३ | कौ | ३१/५८ | ३६/३८ | सिद्धि | ३० | २१ | १२ | १३ | ८ | | | ६ | २६ | ५ | ३४ | ६ | ११ | ५० | ४९ | १३ | २४ | - | १८ | ९ | ३८ | श्रीसूर्यषष्ठी ६ व्रतम्। सायं कालीनार्घ्यमन्त्रविहितम्। शेषरात्रौ अरुणोदये द्वितीयार्घ्यदानम्। डालाछठ (बिहार)। श्रीस्कन्दषष्ठी ६ व्रतम्। सर्वार्थसिद्धियोगः ◐ |
| २७ | ४६ | ७ | चं | ५२ | ३६ | रा | ३ | २९ | पू.षा. | ६ | १२ | दि | ८ | ५६ | धृति | ३३ | ३४ | रा | ७ | ५३ | गर | २५ | ३७ | व | ५२ | २६ | उत्पात | ३१ | २२ | १३ | १४ | ९ | मकर | २०।१८ | ६ | २७ | ५ | ३३ | ६ | १२ | ५० | ५८ | १३ | ४४ | - | १८ | १० | ४४ | भ. ५२।३६ उ. (रा. ३।२९)। मकरराशिः (दि. २।३०)। श्रीसूर्यषष्ठी व्रतस्य पारणा। कल्पादिः ७। यायिजययोगः ६।१२ उ.५२।३६ या.। रवियोगः६।१२ या.। |
| २७ | ४३ | ८ | मं | ४६ | ४२ | रा | १ | ८ | उ.षा. | १/५५ | ५७/५५ | प्रा | ७/५ | १४/३६ | शूल | २५ | ४६ | दि | ४ | ४५ | भ | १९ | ३९ | वव | ४६ | ४२ | मानस | १ | २३ | १४ | १५ | १० | | | ६ | २७ | ५ | ३३ | ६ | १३ | ५१ | ९ | १४ | ५ | - | १८ | ११ | ५१ | भ. १९।३९ या. (दि. २।१९)। गोपाष्टमी ८। सायं गवामलंकरणं पूजनञ्च। नवम्बर ११। स्थायिजययोगः १।५७ उ. ४६।४२ या.। रवियोगः ५७।५२ उ.। |
| २७ | ३९ | ९ | बु | ४१ | ३ | रा | १० | ५३ | धनिष्ठा | ५४ | ६ | रा | ४ | ६ | गण्ड | १८ | ६ | दि | १ | ४२ | वा | १३ | ५३ | कौ | ४१ | ३ | मित्र | २ | २४ | १५ | १६ | ११ | कुम्भ | २५।५९ | ६ | २८ | ५ | ३२ | ६ | १४ | ५१ | २३ | १४ | २५ | - | १८ | १२ | ५५ | कुम्भराशिः (दि. ४।५२)। अक्षयनवमी ९। रत्नगर्भकुष्माण्डादि दानम्। नवम्यामुपोष्यअयोध्या-मथुरा परिक्रमा। श्रीविष्णुत्रिरात्रारम्भः। सुवर्ण विष्णुमूर्ति ♍ |
| २७ | ३६ | १० | गु | ३५ | ५४ | रा | ८ | ५० | शतभिष | ५० | ५१ | रा | २ | ४८ | वृद्धि | १० | ४५ | दि | १० | ४६ | तै | ८ | २९ | गर | ३५ | ५४ | वज्र | ३ | २५ | १६ | १७ | १२ | | | ६ | २८ | ५ | ३२ | ६ | १५ | ५१ | ३८ | १४ | ४४ | - | १८ | १ | ५७ | रवियोगः ५०।५१ या.। ◑ (उड़ीसा)। यायिजययोगः २७।४३ उ.। रवियोगः४६।४० उ.। ☐ रवियोगः४६।० या.। |
| २७ | ३३ | ११ | शु | ३१ | २२ | रा | ३ | ७ | पू.भा. | ४८ | ३२ | रा | १ | ४९ | ध्रुव | ३ | ५८ | प्रा | ७ | ४ | व | ३ | ३८ | भ | ३१ | ३३ | ध्वांक्ष | ४ | २६ | १७ | १८ | १३ | मीन | ३३।५९ | ६ | २९ | ५ | ३१ | ६ | १६ | ५१ | ५६ | १५ | २ | - | १८ | २ | ५६ | भ. ३।३८ उ. (दि.७।५६) ३१।२२ या. (रा. ७।२)। मीनराशिः (रा. ८।५)। प्रबोधिनी ११ एकादशी व्रतं सर्वेषाम्। विष्टेःपूर्वं इक्षुरसपानम्। श्रीविष्णुप्रबोधनोत्सवः। ❖ |
| २७ | ३० | १२ | श | २७ | ४३ | सा | ५ | ३५ | उ.भा. | ४६ | ४० | रा | १ | १८ | हर्षण | ५२ | १ | रा | ३ | १८ | वा | २७ | ४३ | कौ | ५६ | २४ | धूम्र | ५ | २७ | १८ | १९ | १४ | | | ६ | ३० | ५ | ३० | ६ | १७ | ५२ | १६ | १५ | २० | - | १८ | ३ | ५४ | एकादशी व्रतस्य पारणा। शनिप्रदोष १२ व्रतम्। पुत्रार्थिभिरत्र व्रतारम्भो विधेयः। तुलसी विवाहः। चातुर्मास्य व्रत समाप्त। द्विदलदानम्। नारायण द्वादशी। गरुण द्वादशी ◑ |
| २७ | २७ | १३ | र | २५ | ५ | दि | ४ | ३३ | रेवती | ४६ | ० | रा | १२ | ५५ | वज्र | ४७ | १७ | रा | १ | २६ | तै | २५ | ५ | गर | ५४ | २१ | प्रवर्धमान | ६ | २८ | १९ | २० | १५ | मेष | ४६।० | ६ | ३१ | ५ | २९ | ६ | १८ | ५२ | ३७ | १५ | ३९ | + | १८ | ४ | ५१ | मेषराशिः (रा. १२।५५)। श्रीवैकुण्ठ चतुर्दशी निमित्त उपवासः। पञ्चकनिवृत्तिः४६।०(रा.१२।५५)। यायिजययोगः २५।५ या.। सर्वार्थसिद्धियोगः४६।० उ.।☐ |
| २७ | २४ | १४ | चं | २३ | ३७ | दि | ३ | ५८ | अश्विनी | ४६ | ३३ | रा | १ | ८ | सिद्धि | ४३ | ३० | रा | ११ | ५५ | व | २३ | ३७ | भ | ५३ | ३० | राक्षस | ७ | २९ | २० | २१ | १६ | | | ६ | ३१ | ५ | २९ | ६ | १९ | ५३ | ० | १५ | ५६ | + | १८ | ५ | ४९ | भ. २३।३७ उ. (दि. ३।५८) ५३।३० या. (रा. ३।५५)। श्रीवैकुण्ठ १४ चतुर्दशी। श्री महाविष्णुपूजा। अरुणोदये चतुर्दश्यां मणिकर्णिका स्नानम्। श्रीकाशीविश्वनाथ ☎ |
| २७ | २१ | १५ | मं | २३ | २३ | दि | ३ | ५३ | भरणी | ४८ | २० | रा | १ | ५२ | व्यतिपात | ४० | ४३ | रा | १० | ४९ | वव | २३ | २३ | वा | ५३ | ५६ | मुसल | ८ | ३० | २१ | २२ | १७ | | | ६ | ३२ | ५ | २८ | ६ | २० | ५३ | २६ | १६ | ४ | + | १८ | - | - | स्नान-दानादौ १५ कार्तिकी पूर्णिमा। काश्यां ग्रस्तोदित खग्रासचन्द्रग्रहणम् (विवरणं २ पृष्ठे द्रष्टव्यम्)। गुरुनानक जयन्ती। कार्तिकेय दर्शनम्। भीष्मपञ्चकनिवृत्तिः। ○ |

## ॐ सूर्योदये दैनिकस्पष्टभौमादिग्रहाः ॐ

| ति. | वा. | मार्गीभौमः | | | | बुधः | | | | वक्रीगुरुः | | | | शुक्रः | | | | मार्गीशनिः | | | | राहुः | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | बु | २ | ० | १८ | २३ | ५ | २७ | ४७ | ३५ | ११ | ७ | २८ | ३ | ६ | ९ | ३७ | ५५ | ९ | २० | २७ | ३१ | ० | १९ | २६ | ५९ |
| २ | गु | २ | ० | २८ | २८ | ५ | २९ | २७ | ० | ११ | ७ | २२ | ९ | ६ | १० | ५२ | ३५ | ९ | २० | २७ | ५४ | ० | १९ | २३ | ४९ |
| ३ | शु | २ | ० | ३८ | ३३ | ६ | १ | ० | २५ | ११ | ७ | १६ | १६ | ६ | १२ | ७ | १६ | ९ | २० | २९ | १७ | ० | १९ | २० | ३८ |
| ४ | श | २ | ० | ४८ | ३७ | ६ | २ | ३६ | ४९ | ११ | ७ | १० | २३ | ६ | १३ | २१ | ५६ | ९ | २० | ३१ | ११ | ० | १९ | १७ | २७ |
| ५ | र | २ | ० | ५८ | ४२ | ६ | ४ | १६ | ४ | ११ | ७ | ४ | ४५ | ६ | १४ | ३६ | ३७ | ९ | २० | ३३ | ६ | ० | १९ | १४ | १६ |
| ७ | चं | २ | १ | ८ | ४७ | ६ | ५ | ५६ | १३ | ११ | ७ | १ | २४ | ६ | १५ | ५१ | २७ | ९ | २० | ३५ | ० | ० | १९ | ११ | ५ |
| ८ | मं | २ | १ | १८ | ५१ | ६ | ७ | ३६ | २३ | ११ | ६ | ५८ | ४ | ६ | १७ | ६ | २३ | ९ | २० | ३६ | ५५ | ० | १९ | ७ | ५४ |
| ९ | बु | २ | १ | २८ | ५६ | ६ | ९ | १६ | ३२ | ११ | ६ | ५४ | ५० | ६ | १८ | २१ | १९ | ९ | २० | ३८ | ४९ | ० | १९ | ४ | ४४ |
| १० | गु | २ | १ | ३९ | १ | ६ | १० | ५६ | ५६ | ११ | ६ | ५१ | ३६ | ६ | १९ | ३६ | १५ | ९ | २० | ४० | ४३ | ० | १९ | १ | ३३ |
| ११ | शु | २ | १ | ४९ | ५ | ६ | १२ | ४१ | ५० | ११ | ६ | ४८ | २२ | ६ | २० | ५१ | ११ | ९ | २० | ४२ | ३८ | ० | १८ | ५८ | २२ |
| १२ | श | २ | १ | ५९ | १० | ६ | १४ | २५ | ४५ | ११ | ६ | ४५ | ८ | ६ | २२ | ६ | ७ | ९ | २० | ४४ | ३१ | ० | १८ | ५५ | ११ |
| १३ | र | २ | २ | ९ | १५ | ६ | १६ | ९ | ४० | ११ | ६ | ४१ | ५४ | ६ | २३ | २१ | ३ | ९ | २० | ४६ | २१ | ० | १८ | ५२ | ० |
| १४ | चं | २ | २ | १९ | १९ | ६ | १७ | ५३ | ३५ | ११ | ६ | ३८ | ४० | ६ | २४ | ३५ | ५९ | ९ | २० | ४८ | १२ | ० | १८ | ४८ | ५० |
| १५ | मं | व | २ | २७ | ५१ | ६ | १९ | ३७ | ५९ | ११ | ६ | ३५ | २६ | ६ | २५ | ५० | ५५ | ९ | २० | ५० | ३ | ० | १८ | ४५ | ३९ |

भौमादीनाञ्चारः- मार्गीभौमः- ति. १५ भौमे वक्री ३०।३९ (सा. ६।४८)।। बुधः- ति. २ गुरौ तुलायां २२।२४ (दि. ३।२२)। ति. ७ सोमे स्वात्यां २६।१४ (दि. ४।५७)। ति. १५ भौमे विशाखा भे १२।३४ (दि. ११।३४)।। वक्रीगुरुः- ति. १३ रवौ उत्तराभाद्रपदा १ चरणे ३५।१५ (रा.८।३७)।। शुक्रः- ति. १० गुरौ विशाखा भे १९।१२ (दि. २।४)।। मार्गीशनिः- श्रवण ४ चरणे।। राहुः- भरणी २ चरणे केतुश्च स्वाती ४ चरणे।।

☞ एक राशौ यदा यन्ति चत्वारःपञ्च वा ग्रहाः। प्लावयन्ति महीं कृत्स्नां रुधिरेण जलेन वा।।

### २९ पं० कार्तिकशुक्ल ८ भौमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।

द्युगणः २८४९

अयनांशाः २४।९।३७

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६ | ९ | २ | ६ | ११ | ६ | ९ | ० | ६ |
| १३ | ९ | १ | ७ | ६ | १७ | २० | १९ | १९ |
| ५१ | ३२ | १८ | ३६ | ५८ | ६ | ३६ | ७ | ७ |
| ९ | ० | ५१ | २३ | ८ | २३ | ५५ | ५४ | ५४ |
| ६० | ८६० | १० | १०० | ३ | ७४ | १ | ३ | ३ |
| १४ | ५९ | ५ मा. | ९ | १४ व. | ५६ | ५४ मा. | ११ | ११ |

८ | सू. | ६
९ | बु. ७ शु. के. | ५
चं. १० श. | ४
११ | १ रा. | ३ मं.
१२ गु. | २

पक्षेऽस्मिन् विविधमुहूर्त्ताः- ति. १ बुधे स्वात्यां सूर्ययुतिः। विशाखा भे सूर्यभोग्यम्। ति. २ गुरौ विशाखा भे पूर्वदोषः। दि.२।२७ उ.मैत्रे शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण गर्भाधान शय्यासनाद्युपभोग नववस्त्रधारण लतापादपारोपण दक्षिणांविनान्य दिग्यात्रा कणमर्दन नवान्नभक्षण शिल्पविद्या भैषज्य नौकाघटन विपणि व्यापार गजकृत्य शिरामोक्षण मुहूर्त्तः। ति. ३ शुक्रे दि.१२।२९ या. मैत्रे जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण अन्नप्राशन शय्यासनाद्युपभोग नववस्त्रधारण लतापादपारोपण पश्चिमांविनान्यदिग्यात्रा कणमर्दन नवान्नभक्षण शिल्पविद्या भैषज्य नौकाघटन विपणि गजकृत्य मुहूर्त्तः। ति. ४ शनौ ज्येष्ठा भे रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। दि. १२।५ उ. मूले शस्त्रघटन मुहूर्त्तः। ति. ५ रवौ मूले पुंसवनसीमन्त (पंचम्यां) लतापादपारोपण शिल्पविद्या भैषज्य नौकाघटन धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। दि. १०।३४ उ. पू.षा.भे शस्त्रघटन मुहूर्त्तः। ति. ७ सोमे पू.षा. भे शिल्पविद्या मुहूर्त्तः। उ.षा. भे. भौमवेधः। ति. ८ भौमे प्रा. ७।१४ उ. श्रवणे शनियुतिः विष्टिदोषश्च। ति. ९ बुधे धनिष्ठा भे रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। रिक्तोत्तरं (रा. १०।५३) पश्चिम-दक्षिण दिग्यात्रा जीर्णादिगृहप्रवेश (च.शु) मुहूर्त्तः। ति. १० गुरौ शतभिषजि सूर्यवेधः। ति. ११ शुक्रे विष्टेःपूर्वं (दि. ७।५६) पू.भा. भे शिल्पविद्या नौकाघटन वस्तुविक्रय धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. १२ शनौ उ.भा. ☞

| तिथि ल.अ. | १ बु घं. | मि. | २ गु घं. | मि. | ३ शु घं. | मि. | ४ श घं. | मि. | ५ र घं. | मि. | ७ चं घं. | मि. | ८ मं घं. | मि. | ९ बु घं. | मि. | १० गु घं. | मि. | ११ शु घं. | मि. | १२ श घं. | मि. | १३ र घं. | मि. | १४ चं घं. | मि. | १५ मं घं. | मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुला | ८ | २ | ७ | ५८ | ७ | ५४ | ७ | ५० | ७ | ४६ | ७ | ४२ | ७ | ३८ | ७ | ३५ | ७ | ३२ | ७ | २८ | ७ | २४ | ७ | २० | ७ | १६ | ७ | १२ |
| वृश्चिक | १० | १९ | १० | १५ | १० | ११ | १० | ७ | १० | ३ | ९ | ५९ | ९ | ५५ | ९ | ५२ | ९ | ४९ | ९ | ४५ | ९ | ४१ | ९ | ३७ | ९ | ३३ | ९ | २९ |
| धनु | १२ | २५ | १२ | २१ | १२ | १७ | १२ | १३ | १२ | ९ | १२ | ५ | १२ | १ | ११ | ५८ | ११ | ५५ | ११ | ५१ | ११ | ४७ | ११ | ४३ | ११ | ३९ | ११ | ३५ |
| मकर | २ | १२ | २ | ८ | २ | ४ | २ | ० | १ | ५६ | १ | ५२ | १ | ४८ | १ | ४५ | १ | ४२ | १ | ३८ | १ | ३४ | १ | ३० | १ | २६ | १ | २२ |
| कुम्भ | ३ | ४३ | ३ | ३९ | ३ | ३५ | ३ | ३१ | ३ | २७ | ३ | २३ | ३ | १९ | ३ | १६ | ३ | १३ | ३ | ९ | ३ | ५ | ३ | १ | २ | ५७ | २ | ५३ |
| मीन | ५ | ११ | ५ | ७ | ५ | ३ | ४ | ५९ | ४ | ५५ | ४ | ५१ | ४ | ४७ | ४ | ४४ | ४ | ४१ | ४ | ३७ | ४ | ३३ | ४ | २९ | ४ | २५ | ४ | २१ |
| ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | |
| मेष | ६ | ४८ | ६ | ४४ | ६ | ४० | ६ | ३६ | ६ | ३२ | ६ | २८ | ६ | २४ | ६ | २१ | ६ | १८ | ६ | १४ | ६ | १० | ६ | ६ | ६ | २ | ५ | ५८ |
| वृष | ८ | ४४ | ८ | ४० | ८ | ३६ | ८ | ३२ | ८ | २८ | ८ | २४ | ८ | २० | ८ | १७ | ८ | १४ | ८ | १० | ८ | ६ | ८ | २ | ७ | ५८ | ७ | ५४ |
| मिथुन | १० | ५८ | १० | ५४ | १० | ५० | १० | ४६ | १० | ४२ | १० | ३८ | १० | ३४ | १० | ३१ | १० | २८ | १० | २४ | १० | २० | १० | १६ | १० | १२ | १० | ८ |
| कर्क | १ | १६ | १ | १२ | १ | ८ | १ | ४ | १ | ० | १२ | ५६ | १२ | ५२ | १२ | ४९ | १२ | ४६ | १२ | ४२ | १२ | ३८ | १२ | ३४ | १२ | ३० | १२ | २६ |
| सिंह | ३ | ३० | ३ | २६ | ३ | २२ | ३ | १८ | ३ | १४ | ३ | १० | ३ | ६ | ३ | ३ | ३ | ० | २ | ५७ | २ | ५२ | २ | ४८ | २ | ४४ | २ | ४० |
| कन्या | ५ | ४३ | ५ | ३९ | ५ | ३५ | ५ | ३१ | ५ | २७ | ५ | २३ | ५ | १९ | ५ | १६ | ५ | १३ | ५ | ९ | ५ | ५ | ५ | १ | ४ | ५७ | ४ | ५३ |

### ३० पं० कार्तिकशुक्ल १५ भौमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।

द्युगणः २८५६

अयनांशाः २४।९।३८

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६ | ० | २ | ६ | ११ | ६ | ९ | ० | ६ |
| २० | १६ | २ | १९ | ६ | २५ | २० | १८ | १८ |
| ५३ | १४ | २७ | ३७ | ३५ | ५० | ५० | ४५ | ४५ |
| २६ | २३ | ५१ | ५९ | २६ | ५५ | ३ | ३९ | ३९ |
| ६० | ७७६ | ८ | १०५ | ३ | ७४ | १ | ३ | ३ |
| २६ | ५५ | १० व. | १० | १४ व. | ५६ | ५१ मा. | ११ | ११ |

८ | सू. | ६
९ | बु. ७ शु. के. | ५
१० श. | ४
११ | चं. १ रा. | ३ मं.
१२गु. | २

◆ यष्ट्याकर्षणम्। साभ्यङ्ग स्नानम्। द्यूतक्रीड़ा। प्रातः नारीकर्तृक नीराजनम्। सायं मंगलमालिका च। यमपञ्चकनिवृत्तिः। ⌂ वस्त्रादिभिः भगिनी पूजनम्। दूतचित्रगुप्तसहित यमपूजन। अपराह्ने यमुना स्नानम्। दवातपूजा (बिहार)। यायिजययोगः २०।७ उ.। सर्वार्थसिद्धियोगः२०।७ उ.। ♍ तुलसीं च सम्पूज्य द्वादश्यां दानम्। धात्रीमूले भोजनम्। धात्रीपूजनम्। कृत्तयुगादिः ९। पञ्चकारम्भः २५।५९ (दि.४।५२)। यायि-स्थायि दुर्लभःसन्धिकरयोगः ५४।६ उ.। रवियोगःसमस्त। ❖ श्रीविष्णुत्रिरात्रनिवृत्तिः। भीष्मपञ्चकारम्भः। स्थायिजययोगः३१।२२ उ. ४८।२१ या.। ☎ प्रतिष्ठादिनम्। श्रीनर्मदेश्वरायतुलसी समर्पणम्। व्रताय १५ पूर्णिमा। ⊙ विशाखा भे सूर्यः ६।५७ (दि.ङ्ग ९।१८)। यायिजययोगः ४६।३३ उ.। रवियोगः ६।५७ उ. ४६।३३ या.। ○ त्रिपुरोत्सवः। पुष्करे त्रिपुराय दीपदानम्। सायं क्षीरसागरादिदानम्। काश्यां देवदीपावलीमहोत्सवः। मन्वादिः १५। सर्वार्थसिद्धियोगः४८।२० उ.।

मूलविचार-ज्येष्ठा/मूल- ति.३ शुक्रे १७।२९ (दि. १।२५) उ.। ति.५ रवौ १०।१९ (दि. १०।३४) या.।
रेवती/अश्विनी- ति. १२ शनौ ४६।४० (रा. १।१०) उ.। ति. १४ सोमे ४६।३३ (रा. १।८) या.।
पञ्चक विचार- ति. ९ बुधे २५।५९ (दि. ४।५२) उ.। ति. १३ रवौ ४६।० (रा. १२।५५) या.।

प्रबोधनोत्सवः- अथैकादश्यां द्वादश्यां वा षोडशोपचारैः विष्णुं तुलसीञ्च विधिवत्सम्पूज्य प्रबोधयेत्। प्रबोधनमन्त्राः- (वाराहपुराणोक्ताः) ब्रह्मेन्द्ररुद्राग्निकुबेरसूर्य सोमादिभिर्वन्दितवन्दनीय। बुध्यस्व देवेश जगन्निवास मन्त्र प्रभावेण सुखेन देव। इयन्तु द्वादशी देव प्रबोधनार्थं विनिर्मिता। त्वयैव सर्वलोकानां हितार्थं शेषशायिना।। उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते। त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत्सुप्तं भवेदिदम्।। उत्थिते चेष्टते सर्वमुत्तिष्ठोत्तिष्ठ माधव। गति मेघा वियच्चैव निर्मलं निर्मला दिशः।। शारदानि च पुष्पाणि गृहाण मम केशव। इदं विष्णुरितिप्रोक्तो मन्त्र उत्थापने हरेः।। इति।।

☞ भे सुभगांविनाकृष्णवस्त्रधारण जीर्णादिगृहप्रवेश (ल.११वा २) विपणि मुहूर्त्तः। ति. १३ रवौ दि. ४।३३ या. रेवत्यां पुंसवनसीमन्त सूतीस्नान शय्यासनाद्युपभोग नववस्त्रधारण लतापादपारोपण उत्तरदिग्यात्रा नवान्नभक्षण भैषज्य नौकाघटन विपणि वस्तुक्रय गजाश्वकृत्य मुहूर्त्तः। ति. १४ सोमे अश्विन्यां रिक्ताततो विष्टिदोषो व्यतिपातश्च। ति. १५ भौमे भरण्यां राहुयुतिःव्यतिपातश्च।

| दि.मा. घ. प. | | श्रीसंवत् २०७९ शकः १९४४ याम्यायनगोलयोः शरदृतुः।। | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | योगाः | अं. | फ. | सौ. | नै. | रा. | चन्द्र राशि | प्रवेश | सूर्योदयः घं. | मि. | सूर्यास्तः घं. | मि. | औदयिक स्पष्ट सूर्यः | | | | क्रान्तिः द. | | रे.अं. - मि. | | चन्द्रोदयः स्टे. टा. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २७ | १७ | १ | बु | २४ | २८ | दि | ४ | २० | कृत्तिका | ५१ | २४ | रा | ३ | ७ | वरीयान | ३८ | ५६ | रा | १० | ७ | कौ | २४ | २८ | तै | ५५ | ४० | सिद्धि | ९ | १ | २२ | २३ | १८ | वृष | ४।६ | ६ | ३३ | ५ | २७ | ६ | २१ | ५३ | ४२ | १६ | २२ | - | १८ | ५ | ४८ |
| २७ | १४ | २ | गु | २६ | ५१ | दि | ५ | १७ | रोहिणी | ५५ | ३४ | रा | ४ | ४७ | परिघ | ३८ | ५ | रा | ९ | ४७ | गर | २६ | ५१ | व | ५८ | ३६ | उत्पात | १० | २ | २३ | २४ | १९ | | | ६ | ३३ | ५ | २७ | ६ | २२ | ५३ | ५२ | १६ | ४० | - | १८ | ६ | ३० |
| २७ | ११ | ३ | शु | ३० | २१ | सा | ६ | ४२ | मृगशिरा | ६० | ० | स | म | स्त | शिव | ३८ | ८ | रा | ९ | ४९ | भ | ३० | २१ | वव | ६० | ० | मानस | ११ | ३ | २४ | २५ | २० | मिथुन | २८।१२ | ६ | ३४ | ५ | २६ | ६ | २३ | ५४ | ३ | १७ | २ | - | १८ | ७ | १७ |
| २७ | ९ | ४ | श | ३४ | ४८ | रा | ८ | २९ | मृगशिरा | ० | ५० | प्रा | ६ | ५४ | सिद्ध | ३८ | ५२ | रा | १० | ७ | वव | २ | ३५ | वा | ३४ | ४८ | वज्र | १२ | ४ | २५ | २६ | २१ | | | ६ | ३४ | ५ | २६ | ६ | २४ | ५४ | १६ | १७ | २४ | - | १८ | ८ | ७ |
| २७ | ६ | ५ | र | ३९ | ५४ | रा | १० | ३३ | आर्द्रा | ६ | ५० | दि | ९ | १९ | साध्य | ४० | २ | रा | १० | ३६ | कौ | ७ | २१ | तै | ३९ | ५४ | ध्वांक्ष | १३ | ५ | २६ | २७ | २२ | कर्क | ५६।४१ | ६ | ३५ | ५ | २५ | ६ | २५ | ५४ | ३० | १७ | ४१ | - | १८ | ९ | ० |
| २७ | ३ | ६ | चं | ४५ | १५ | रा | १२ | ४१ | पुनर्वसु | १३ | १८ | दि | ११ | ५४ | शुभ | ४१ | २५ | रा | ११ | ९ | गर | १२ | ३५ | व | ४५ | १५ | धूम्र | १४ | ६ | २७ | २८ | २३ | | | ६ | ३५ | ५ | २५ | ६ | २६ | ५४ | ४६ | १७ | ५७ | - | १८ | ९ | ५४ |
| २७ | ० | ७ | मं | ५० | २५ | रा | २ | ४६ | पुष्य | १९ | ४६ | दि | २ | ३० | शुक्ल | ४२ | ४० | रा | ११ | ४० | भ | १७ | ५० | वव | ५० | २५ | प्रवर्धमान | १५ | ७ | २८ | २९ | २४ | | | ६ | ३६ | ५ | २४ | ६ | २७ | ५५ | ४ | १८ | १३ | - | १७ | १० | ४९ |
| २६ | ५७ | ८ | बु | ५४ | ५८ | रा | ४ | ३६ | श्लेषा | २५ | ५० | दि | ४ | ५७ | ब्रह्म | ४३ | २८ | रा | १२ | ० | वा | २२ | ४२ | कौ | ५४ | ५८ | राक्षस | १६ | ८ | २९ | ३० | २५ | सिंह | २५।५० | ६ | ३७ | ५ | २३ | ६ | २८ | ५५ | २४ | १८ | २८ | - | १७ | ११ | ४४ |
| २६ | ५५ | ९ | गु | ५८ | ३९ | रा | ६ | ५ | मघा | ३१ | १२ | रा | ७ | ६ | ऐन्द्र | ४३ | ४० | रा | १२ | ५ | तै | २६ | ४९ | गर | ५८ | ३९ | मुसल | १७ | ९ | ३० | १ | २६ | | | ६ | ३७ | ५ | २३ | ६ | २९ | ५५ | ४६ | १८ | ४३ | - | १७ | १२ | ३७ |
| २६ | ५२ | १० | शु | ६० | ० | स | म | स्त | पू.फा. | ३५ | ३० | रा | ८ | ४९ | वैधृति | ४२ | ५९ | रा | ११ | ४९ | व | २९ | ५४ | भ | ६० | ० | सिद्धि | १८ | १० | १ | २ | २७ | कन्या | ५१।१८ | ६ | ३७ | ५ | २३ | ७ | ० | ५६ | १० | १८ | ५८ | - | १७ | १ | ३२ |
| २६ | ४९ | १० | श | १ | ९ | प्रा | ९ | ६ | उ.फा. | ३८ | ४३ | रा | १० | ७ | विष्कुम्भ | ४१ | २६ | रा | ११ | १२ | भ | १ | ९ | वव | ३१ | ४८ | उत्पात | १९ | ११ | २ | ३ | २८ | | | ६ | ३८ | ५ | २२ | ७ | १ | ५६ | ३६ | १९ | १३ | - | १७ | २ | २६ |
| २६ | ४७ | ११ | र | २ | २६ | दि | ७ | ३७ | हस्त | ४० | ३८ | रा | १० | ५४ | प्रीति | ३८ | ५१ | रा | १० | ११ | वा | २ | २६ | कौ | ३२ | २५ | मानस | २० | १२ | ३ | ४ | २९ | | | ६ | ३९ | ५ | २१ | ७ | २ | ५७ | ४ | १९ | २७ | - | १६ | ३ | २३ |
| २६ | ४५ | १२ | चं | २ | २४ | दि | ७ | ३७ | चित्रा | ४१ | १६ | रा | ११ | १० | आयुष्मान | ३५ | १७ | रा | ८ | ४६ | तै | २ | २४ | गर | ३१ | ४७ | मुद्गर | २१ | १३ | ४ | ५ | ३० | तुला | १०।५८ | ६ | ३९ | ५ | २१ | ७ | ४ | १ | ३७ | १९ | ४१ | - | १६ | ४ | २२ |
| २६ | ४३ | १३ | मं | १/५७ | ९/३२ | प्रा | ७/६ | ८/८ | स्वाती | ४० | ४५ | रा | १० | ५८ | सौभाग्य | ३० | ४३ | सा | ६ | ५७ | व | १ | ९ | भ | २९/५८ | ५५/४१ | ध्वज | २२ | १४ | ५ | ६ | १ | | | ६ | ४० | ५ | २० | ७ | ५ | २ | २७ | १९ | ५४ | - | १६ | ५ | २६ |
| २६ | ४० | ३० | बु | ५५ | १४ | रा | ४ | ४६ | विशाखा | ३९ | ९ | रा | १० | २० | शोभन | २५ | २० | दि | ४ | ४८ | च | २६ | ५८ | नाग | ५५ | १४ | धाता | २३ | १५ | ६ | ७ | २ | वृश्चिक | २४।३३ | ६ | ४० | ५ | २० | ७ | ६ | ३ | १७ | २० | ७ | - | १६ | ६ | ३३ |

## मार्गशीर्षकृष्णपक्षः।।

राष्ट्रिय तिथि १८ कार्तिकतः तिथि २ अग्रहायणं यावत् १९४४ शकः।। अंग्रेजी दिनांक ९ नवम्बरतः २३ दिनांकं यावत् सन् २०२२ ई.।।

तिं. ११ रवौ शुक्रोदयः पश्चिमे।।

वृषराशिः (दि. ८।११)। कार्तिक व्रतस्य पारणा। सर्वार्थसिद्धियोगः समस्त। पद्मकयोगः पुष्करतीर्थे स्नानं कार्यम्।

भ. ५८।३६ उ. (रा.शे. ५।५९)। यायिजययोगः २६।५१ उ. ५५।३४ या.।

भ. ३०।२१ या. (सा. ६।४२)। मिथुनराशिः (सा. ५।५१)। सौभाग्यसुन्दरी ३ व्रतम्। संकष्टीश्रीगणेश ४ व्रतम्। चन्द्रोदयः (रा. ७।१७)। स्थायिजययोगः ३०।२१ उ.।

☐ ४०।३८ या.। द्विपुष्करयोगः ४०।३८ उ.। ♍ स्थायिजययोगः ४०।४५ उ. ५८।४१ या.।

कर्कराशिः (रा. ५।१५)। यायिजययोगः ६।५० उ. ३९।५४ या.।

भ. ४५।१५ उ. (रा. १२।४१)। नेहरु जयन्ती (बाल दिवस)। सर्वार्थसिद्धियोगः १३।१८ उ.। रवियोगः १३।१८ उ.। ◑ सर्वार्थामृतसिद्धियोगः ३९।९ उ.।

भ. १७।५० या. (दि. १।४४)। सर्वार्थसिद्धियोगः १९।४६ उ.। रवियोगः १९।४६ या.। ◐ (चन्द्रोदय व्यापिनी) (बंगाल)। चन्द्रोदयः (रा. ११।४४)। बुधाष्टमी ८।

सिंहराशिः (दि. ४।५७)। श्रीभैरवाष्टमी ८ व्रतम्। सायं भैरवोत्पतिः। भैरवयात्रा दर्शनं पूजनञ्च। अष्टकाश्राद्धम्। कालाष्टमी ८। रुकमीणी अष्टमी ८ व्रतम् ◐

अन्वष्टका श्राद्धम्। ⊙ सं. वृश्चिके सूर्यः १।२४ (दि. ७।११)। मु. ३० समा। फलं समता। पूर्वाः १६ घट्यः पुण्याः। दीपवस्त्रदानम्। स्नानं नर्मदायाम्। हेमन्तर्त्तुः।

भ. २९।५४ उ. (सा. ६।३५)। कन्याराशिः (रा. ३।८)। श्रीत्रिदण्डी स्वामि पुण्यतिथि बक्सर (बिहार)। सौरमार्गशीर्षमासारम्भः।

भ. १।९ या. (दि. ७।६)। यायिजययोगः १।९ उ.। यमघंटयोगः ३८।४३ उ.।

उत्पन्ना ११ एकादशी व्रतं सर्वेषाम्। ⊙ मैत्रे सूर्यः १८।५६ (दि. २।१३)। शुक्रोदयः पश्चिमे ५७।२३ (रा.शे. ५।३६)। यायिजययोगः २।२६ या.। सर्वार्थामृतसिद्धियोगः ☐

तुलाराशिः (दि. ११।२)। *दिवा ७।३७ वादनं यावदेकादशी व्रतस्य पारणा।* सोमप्रदोष १२ व्रतम्। पुत्रार्थिभिरत्र व्रतारम्भो विधेयः। यायिजययोगः ४१।१७ उ.।

भ. १।९ उ. (दि. ७।८) २९।५५ या. (सा. ६।३८)। मासशिवरात्रि १४ व्रतम्। ⊙ सायन धनुषि सूर्यः ४७।१४ (रा. १।३४)। राष्ट्रिय अग्रहायणमासः दि. ३०। ♍

वृश्चिकराशिः (दि. ४।२९)। स्नान-दान-श्राद्धादौ ३० अमावस्या। शुक्रबालत्वनिवृत्तिः ५७।२० (रा.शे. ५।३६)। शुभवारान्विते दर्शे सुभिक्षं च प्रजासुखम्। ◑

## ॐ सूर्योदये दैनिकस्पष्टभौमादिग्रहाः ॐ

| ति. | वा. | वक्रीभौमः | | | | बुधः | | | | वक्रीगुरुः | | | | शुक्रः | | | | शनिः | | | | राहुः | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | बु | २ | २ | १९ | ४१ | ६ | २१ | २३ | ९ | ११ | ६ | ३२ | १२ | ६ | २७ | ५ | ५१ | ९ | २० | ५१ | ५४ | ० | १८ | ४२ | २८ |
| २ | गु | २ | २ | ११ | ३२ | ६ | २३ | ८ | १९ | ११ | ६ | २८ | ५८ | ६ | २८ | २० | ४७ | ९ | २० | ५३ | ४४ | ० | १८ | ३९ | १७ |
| ३ | शु | २ | २ | ३ | २२ | ६ | २४ | ५३ | २९ | ११ | ६ | २५ | ४४ | ६ | २९ | ३५ | ४३ | ९ | २० | ५५ | ३५ | ० | १८ | ३६ | ६ |
| ४ | श | २ | १ | ५५ | १३ | ६ | २६ | ३८ | ३९ | ११ | ६ | २२ | ३० | ७ | ० | ५० | ३९ | ९ | २० | ५७ | २६ | ० | १८ | ३२ | ५६ |
| ५ | र | २ | १ | ४७ | ३ | ६ | २८ | २३ | ४९ | ११ | ६ | १९ | १६ | ७ | २ | ५ | ३५ | ९ | २१ | ० | २२ | ० | १८ | २९ | ४५ |
| ६ | चं | २ | १ | ३८ | ५३ | ७ | ० | ८ | ५९ | ११ | ६ | १६ | २ | ७ | ३ | २० | ३१ | ९ | २१ | ३ | २१ | ० | १८ | २६ | ३४ |
| ७ | मं | २ | १ | ३० | ४४ | ७ | १ | ५४ | ९ | ११ | ६ | १२ | ४८ | ७ | ४ | ३५ | २७ | ९ | २१ | ६ | २० | ० | १८ | २३ | २३ |
| ८ | बु | २ | १ | २२ | ३४ | ७ | ३ | ३९ | १९ | मा | ६ | ११ | १५ | ७ | ५ | ५० | २३ | ९ | २१ | ९ | २० | ० | १८ | २० | १२ |
| ९ | गु | २ | १ | १४ | २५ | ७ | ५ | २४ | २४ | ११ | ६ | ११ | ३७ | ७ | ७ | ५ | १९ | ९ | २१ | १२ | १९ | ० | १८ | १७ | २ |
| १० | शु | २ | १ | ६ | १५ | ७ | ७ | ८ | १९ | ११ | ६ | १२ | ६ | ७ | ८ | २० | १५ | ९ | २१ | १५ | १९ | ० | १८ | १३ | ५१ |
| १० | श | २ | ० | ५८ | ६ | ७ | ८ | ५२ | १४ | ११ | ६ | १२ | ३८ | ७ | ९ | ३५ | ११ | ९ | २१ | १८ | १८ | ० | १८ | १० | ४० |
| ११ | र | २ | ० | ४९ | ५६ | ७ | १० | ३६ | ९ | ११ | ६ | १३ | ११ | ७ | १० | ५० | ७ | ९ | २१ | २१ | १८ | ० | १८ | ७ | २९ |
| १२ | चं | २ | ० | ४१ | ४६ | ७ | १२ | २० | ४ | ११ | ६ | १३ | ४३ | ७ | १२ | ५ | २ | ९ | २१ | २४ | १५ | ० | १८ | ४ | १८ |
| १३ | मं | २ | ० | ३३ | ३७ | ७ | १४ | १ | ५३ | ११ | ६ | १४ | १६ | ७ | १३ | १९ | ५८ | ९ | २१ | २७ | १२ | ० | १८ | १ | ८ |
| ३० | बु | २ | ० | २५ | २७ | ७ | १५ | ४० | ४८ | ११ | ६ | १४ | ४८ | ७ | १४ | ३४ | ५४ | ९ | २१ | ३० | ९ | ० | १७ | ५७ | ५७ |

*भौमादीनाञ्चारः- वक्रीभौमः- मृगे।। बुधः- ति. ५ रवौ वृश्चिके ५४।५३ (रा. ४।३२)। ति. ७ भौमे मैत्रे ४८।५९ (रा. २।१२)। ति. ३० बुधे ज्येष्ठा भे ३५।५५ (रा. ९।२)।। वक्रीगुरुः- ति. ८ बुधे मार्गी ४८।३१ (रा. २।१)।। शुक्रः- ति. ३ शुक्रे वृश्चिके १९।२७ (दि. २।२१)। ति. ५ रवौ मैत्रे ५९।३५ (रा.शे. ६।२५)।। शनिः- श्रवण ४ चरणे।। राहुः- भरणी २ चरणे केतुश्च स्वाती ४ चरणे ।।*

*मार्गे यदि स्यादादित्य एकादश्यां तिथौ तदा। कार्पासादिकसूत्राणां ग्राह्यं वैशाखलाभकृत्।।*

### ३१ पं० मार्गशीर्षकृष्ण ८ बुधे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।

द्युगणः २८६४

अयनांशाः २४।९।३९

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६ | ३ | २ | ७ | ११ | ७ | ९ | ० | ६ |
| २८ | २४ | १ | ३ | ६ | ५ | २१ | १८ | १८ |
| ५७ | ४७ | २२ | ३९ | ११ | ५० | ९ | २० | २० |
| ५४ | ७ | ३४ | १९ | १५ | २३ | २० | १२ | १२ |
| ६० | ७२६ | ८ | १०५ | ० | ७४ | २ | ३ | ३ |
| ४१ | ३२ | ९ | ५ | २२ | ५६ | ५९ | ११ | ११ |
| | | व. | | मा. | | | | |

बु. ८ शु. | ६ | ९ | सू. ७ के. | ५ | १० श. | ४ चं. | ११ | १ रा. | ३ मं. | १२गु. | २

पक्षेऽस्मिन् विविधमुहूर्त्ताः- ति. १ बुधे कृत्तिका भे शनिवेधः। ति. २ गुरौ रोहिण्यां पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन सूतीस्नान गर्भाधान शय्यासनाद्युपभोग सुभगांविनानववस्त्रधारण लतापादपारोपण कणमर्दन शिल्पविद्या इष्टिकादहन विपणि शिरामोक्षण मुहूर्त्तः। ति. ३ शुक्रे मृगे भौमयुतिः विष्टिदोषश्च। ति. ४ शनौ प्रा. ६।५४ उ. आर्द्रा भे रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। ति. ५ रवौ आर्द्रा भे धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। दि. ९।१९ उ. पुनर्वसौ पुंसवनसीमन्त शय्यासनाद्युपभोग सुभगांविनानववस्त्रधारण भूपाघटन गोक्रय-विक्रय दक्षिण दिग्यात्रा (पंचम्यां) नवान्नभक्षण शिल्पविद्या भैषज्य नौकाघटन अश्वकृत्य मुहूर्त्तः। ति. ६ सोमे पुनर्वसौ जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण गोक्रय-विक्रय भैषज्य अश्वकृत्य मुहूर्त्तः। दि. ११।५४ उ. विष्टेःपूर्वं पुष्ये भूम्युपवेशन शिल्पविद्या गजाश्वकृत्य धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ७ भौमे विष्टेःपरं (दि. १।४४) पुष्ये पुंसवनसीमन्त सुभगांविनारक्तवस्त्रधारण भूपाघटन उत्तरांविनान्यदिग्यात्रा शिरामोक्षण मुहूर्त्तः। दि. २।३० उ. श्लेषा भे वस्तुविक्रय शस्त्रघटन मुहूर्त्तः। ति. ८ बुधे श्लेषा भे वस्तुविक्रय धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ९ गुरौ मघा भे रिक्तादोषः। ति. १० शुक्रे पू.फा. भे वैधृतिदोषो विष्टिश्च। ति. १० शनौ विष्टेःपरं (दि. ७।६) उ.फा. भे सुभगांविनाकृष्णवस्त्रधारण जीर्णादिगृहप्रवेश (ल. २) मुहूर्त्तः। ति. ११ रवौ हस्ते पुंसवनसीमन्त शय्यासनाद्युपभोग नववस्त्रधारण भूपाघटन गोक्रय-विक्रय पश्चिमांविनान्यदिग्यात्रा (एकादश्यां) भैषज्य नौकाघटन विपणि गजाश्वकृत्य शिरामोक्षण धान्यच्छेदन☞

| तिथि | १ बु | | २ गु | | ३ शु | | ४ श | | ५ र | | ६ चं | | ७ मं | | ८ बु | | ९ गु | | तिथि | १० शु | | १० श | | ११ र | | १२ चं | | १३ मं | | ३० बु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ल.अ. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | ल.अ. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. |
| तुला | ७ | ९ | ७ | ५ | ७ | १ | ६ | ५७ | ६ | ५३ | ६ | ४९ | ६ | ४५ | ६ | ४१ | ६ | ३७ | वृश्चिक | ८ | ४९ | ८ | ४५ | ८ | ४१ | ८ | ३७ | ८ | ३३ | ८ | २८ |
| वृश्चिक | ९ | २६ | ९ | २२ | ९ | १८ | ९ | १४ | ९ | १० | ९ | ६ | ९ | २ | ८ | ५८ | ८ | ५४ | धनु | १० | ५५ | १० | ५१ | १० | ४७ | १० | ४३ | १० | ३९ | १० | ३५ |
| धनु | ११ | ३२ | ११ | २८ | ११ | २४ | ११ | २० | ११ | १६ | ११ | १२ | ११ | ८ | ११ | ४ | ११ | ० | मकर | १२ | ४२ | १२ | ३८ | १२ | ३४ | १२ | ३० | १२ | २६ | १२ | २२ |
| मकर | १ | १९ | १ | १५ | १ | ११ | १ | ७ | १ | ३ | १२ | ५९ | १२ | ५५ | १२ | ५१ | १२ | ४७ | कुम्भ | २ | १३ | २ | ९ | २ | ५ | २ | १ | १ | ५७ | १ | ५२ |
| कुम्भ | २ | ५० | २ | ४६ | २ | ४२ | २ | ३८ | २ | ३४ | २ | ३० | २ | २६ | २ | २२ | २ | १८ | मीन | ३ | ४१ | ३ | ३७ | ३ | ३३ | ३ | २९ | ३ | २५ | ३ | २० |
| मीन | ४ | १८ | ४ | १४ | ४ | १० | ४ | ६ | ४ | २ | ३ | ५८ | ३ | ५४ | ३ | ५० | ३ | ४६ | मेष | ५ | १८ | ५ | १४ | ५ | १० | ५ | ६ | ५ | २ | ४ | ५७ |
| ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | |
| मेष | ५ | ५४ | ५ | ५१ | ५ | ४७ | ५ | ४३ | ५ | ३९ | ५ | ३५ | ५ | ३१ | ५ | २७ | ५ | २३ | वृष | ७ | १४ | ७ | १० | ७ | ६ | ७ | २ | ६ | ५८ | ६ | ५३ |
| वृष | ७ | ५१ | ७ | ४७ | ७ | ४३ | ७ | ३९ | ७ | ३५ | ७ | ३१ | ७ | २७ | ७ | २३ | ७ | १९ | मिथुन | ९ | २८ | ९ | २४ | ९ | २० | ९ | १६ | ९ | १२ | ९ | ७ |
| मिथुन | १० | ५ | १० | १ | ९ | ५७ | ९ | ५३ | ९ | ४९ | ९ | ४५ | ९ | ४१ | ९ | ३७ | ९ | ३३ | कर्क | ११ | ४६ | ११ | ४२ | ११ | ३८ | ११ | ३४ | ११ | ३० | ११ | २५ |
| कर्क | १२ | २३ | १२ | १९ | १२ | १५ | १२ | ११ | १२ | ७ | १२ | ३ | ११ | ५९ | ११ | ५५ | ११ | ५१ | सिंह | २ | ० | १ | ५६ | १ | ५२ | १ | ४८ | १ | ४४ | १ | ३९ |
| सिंह | २ | ३६ | २ | ३३ | २ | २९ | २ | २५ | २ | २१ | २ | १७ | २ | १३ | २ | ९ | २ | ५ | कन्या | ४ | १३ | ४ | ९ | ४ | ५ | ४ | १ | ३ | ५७ | ३ | ५२ |
| कन्या | ४ | ५० | ४ | ४६ | ४ | ४२ | ४ | ३८ | ४ | ३४ | ४ | ३० | ४ | २६ | ४ | २२ | ४ | १८ | तुला | ६ | २९ | ६ | २५ | ६ | २१ | ६ | १७ | ६ | १३ | ६ | ८ |

### ३२ पं० मार्गशीर्षकृष्ण ३० बुधे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।

द्युगणः २८७१

अयनांशाः २४।९।४०

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७ | ६ | २ | ७ | ११ | ७ | ९ | ० | ६ |
| ६ | २४ | ० | १५ | ६ | १४ | २१ | १७ | १७ |
| ३ | १० | २५ | ४० | १४ | ३४ | ३० | ५७ | ५७ |
| १७ | ५३ | २७ | ४८ | ४८ | ५४ | ९ | ५७ | ५७ |
| ६० | ७८१ | ८ | ९८ | ० | ७४ | २ | ३ | ३ |
| ५१ | ४६ | ९ | ५५ | ३३ | ५६ | ५७ | ११ | ११ |
| | | व. | | मा. | | | | |

९ | सू. चं. ७ के. | १० श. | बु. ८ शु. | ६ | ११ | ५ | १२गु. | २ | ४ | १ रा. | ३ मं.

अथ वधूप्रवेशद्विरागमनादिनिर्णयः। तत्र वधूप्रवेश शब्दार्थः। वधूप्रवेशो नाम नूतनपरिणीतायाः कन्यायाः प्रथमतः करिष्यामाणो भर्तृगृहे प्रवेशोवधूप्रवेश शब्दवाच्यः। द्विरागमनशब्दार्थः। पूर्वं नववधूप्रवेशे जाते तदनन्तरं। परावृत्त्यापि पितृगृह प्राप्तायाः अपि वध्वाः यथेष्टवर्षाणि स्थितायाः पुनर्भर्तृगृहे प्रवेशोद्विरागमन शब्दवाच्यः इति। पीयूषधारायाम्। तेन प्रथम प्रवेशे न शुक्रदोषोऽभिहितः रात्रौ विवाहभे शस्तः सन्मुहूर्त्तस्थिरोदये। वधूप्रवेशो नैवाऽत्रप्रतिशुक्राद्भयं विदुः।१। वधूप्रवेशे प्रथमादिवर्षफलम् ज्योतिर्निबन्धे। धन हानिः सुखं नाशो भोगो वैरन्ततः शुभम्। प्रथमाब्दात्फलं ज्ञेयं क्रमाद्वध्वाः प्रवेशने। "स्त्रीविवाहः कुलेनिर्गमः कथ्यते" इत्यादिना यद्वशिष्ठादिमतं द्योतितं। तन्निरूपयतिस्वाभिप्रायं नार्षमतं प्रतिपादयति। वधूप्रवेशो द्विरागमनतोऽन्यत् प्रवेश निर्गमोभये मुहूर्त्तादि निर्णयेऽपि पदार्थैक्यं नावसीयते। दिनोत्तरं यात्रासु समये प्रवेशस्समुचित एवेति। 'कृतेग्रन्थि' बन्धेइत्यादि वचनममूलकम्। विलम्बित वधूप्रवेशो। वैशाखमार्गशीर्ष फाल्गुनसौरचान्द्रयोगे विवाहवत्। तृतीयवारागमने राहुविचारः। आद्यर्के भ्रमते राहुः पूर्वाशादि चतुष्टये। स राहुर्दक्षिणे त्याज्यस्तृतीयागमने स्त्रियः।

अन्यच्च। गमोक्ततिथ्यादिषु कारयेद्बुधो बध्वास्तृतीयः पतिवेश्मनो गमः। तत्र प्रचलित स्थितनिषिद्धा न हि नवोढा शद्बेन वधूप्रवेशोऽग्रिमपद "नववधूप्रवेशने प्रतिभार्गवो भवति दोष कृन्नहि" इत्याद्यभिधानात्। नवोढायास्तु वैधव्यं। यदुक्त सम्मुखे भृगौ तदेव विबुधैर्ज्ञेयं केवलन्तु द्विरागमे। विवाहात् षोडशदिनाभ्यन्तरम्।

*मार्गशीर्षमासकृत्यम्- भारते- मार्गशीर्षे तु यो मासमेकभक्तेन संक्षिपेत्। भोजयेत्तु द्विजान्भक्त्या सर्वपापैःप्रमुच्यते। कृषिभागी बहुधान्यश्चजायते।। वामनपुराणे-खरोष्ट्र श्वग जागावः शकटादिअजादिकम्। दातव्यं केशवप्रीत्ये मासि मार्गशिरे नरैः।।*

मूलविचार-श्लेषा/मघा- ति. ७ भौमे १९।४६ (दि. २।३०) उ.। ति. ९ गुरौ ३१।१२ (रा. ७।६) या.।

☞ मुहूर्त्तः। ति. १२ सोमे चित्रा भे जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण दोलारोहण अन्नप्राशन (त्रयोदश्यां) जीर्णादिगृहप्रवेश (ल. ११ वा २) विपणि व्यापार वस्तुक्रय गजकृत्य धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। स्वात्यां केतुयुतिः। परं मासान्तादिदोषः।।

# श्रीसंवत् २०७९ शकः १९४४ याम्यायनगोलयोः हेमन्तर्तुः।।

| दि.मा. घ. | प. | ति. | वा. | घ. | प. | | घं. | मि. | नक्षत्र | घ. | प. | | घं. | मि. | योग | घ. | प. | | घं. | मि. | करण | घं. | मि. | करण | घ. | प. | योगाः | अं. | फ. | सौ. | ने. | रा. | चन्द्र राशि | प्रवेशः | सूर्योदयः घं. | मि. | सूर्यास्तः घं. | मि. | औदयिक स्पष्ट सूर्यः | | | | क्रान्तिः | द. | रे. अं. | – मि. | चन्द्रास्तः स्टै. | टा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६ | ३७ | १ | गु | ५० | ५५ | रा | ३ | ३ | अनुराधा | ३६ | ४७ | रा | ९ | २४ | अतिगण्ड | १९ | ११ | दि | २ | २१ | किं | २३ | ५ | बव | ५० | ५५ | आनन्द | २४ | १६ | ७ | ८ | ३ | | | ६ | ४१ | ५ | १९ | ७ | ७ | ४ | ८ | २० | २० | - | १५ | - | - |
| २६ | ३५ | २ | शु | ४५ | ५४ | रा | १ | ३ | ज्येष्ठा | ३३ | ३५ | रा | ८ | ७ | सुकर्मा | १२ | २४ | दि | ११ | ३९ | बा | १८ | २५ | कौ | ४५ | ५४ | चर | २५ | १७ | ८ | ९ | ४ | धनु | ३३।३५ | ६ | ४१ | ५ | १९ | ७ | ८ | ५ | १ | २० | ३२ | - | १५ | ६ | २१ |
| २६ | ३३ | ३ | श | ४० | २३ | रा | १० | ५० | मूल | २९ | ५२ | सा | ६ | ३८ | धृति | [illegible] | [illegible] | प्रा | [illegible] | [illegible] | तै | १३ | ९ | गर | ४० | २३ | गद | २६ | १८ | ९ | १० | ५ | | | ६ | ४१ | ५ | १९ | ७ | ९ | ५ | ५५ | २० | ४४ | - | १५ | ७ | २५ |
| २६ | ३१ | ४ | र | ३४ | ३२ | रा | ८ | ३१ | पू.षा. | २५ | ४८ | दि | ५ | १ | गण्ड | ४९ | ३६ | रा | २ | ३२ | व | ७ | २८ | भ | ३४ | ३२ | शुभ | २७ | १९ | १० | ११ | ६ | मकर | ३९।४५ | ६ | ४२ | ५ | १८ | ७ | १० | ६ | ५१ | २० | ५६ | - | १५ | ८ | ३३ |
| २६ | २९ | ५ | चं | २८ | ३६ | सा | ६ | ८ | उ.षा. | २१ | ३४ | दि | ३ | २० | वृद्धि | ४१ | ४१ | रा | ११ | २३ | बव | १ | ३४ | बा | [illegible] | [illegible] | मृत्यु | २८ | २० | ११ | १२ | ७ | | | ६ | ४२ | ५ | १८ | ७ | ११ | ७ | ४८ | २१ | ८ | - | १४ | ९ | ४२ |
| २६ | २७ | ६ | मं | २२ | ४४ | दि | ३ | ४९ | श्रवण | १७ | २६ | दि | १ | ४१ | ध्रुव | ३३ | ५३ | रा | ८ | १६ | तै | २२ | ४४ | गर | ४९ | ५८ | लुम्बक | २९ | २१ | १२ | १३ | ८ | कुम्भ | ४५।३० | ६ | ४३ | ५ | १७ | ७ | १२ | ८ | ४६ | २१ | १८ | - | १४ | १० | ४८ |
| २६ | २५ | ७ | बु | १७ | ११ | दि | १ | ३५ | धनिष्ठा | १३ | ३४ | दि | १२ | ९ | व्याघात | २६ | २१ | दि | ५ | १५ | व | १७ | ११ | भ | ४४ | ३९ | मित्र | ३० | २२ | १३ | १४ | ९ | | | ६ | ४३ | ५ | १७ | ७ | १३ | ९ | ४६ | २१ | २९ | - | १४ | ११ | ५१ |
| २६ | २३ | ८ | गु | १२ | ७ | दि | ११ | ३४ | शतभिष | १० | १० | दि | १० | ४७ | हर्षण | १९ | १४ | दि | २ | २५ | बव | १२ | ७ | बा | ३९ | ५५ | वज्र | १ | २३ | १४ | १५ | १० | मीन | ५३।१८ | ६ | ४३ | ५ | १७ | ७ | १४ | १० | ४६ | २१ | ३९ | - | १३ | १२ | ५१ |
| २६ | २१ | ९ | शु | ७ | ४३ | दि | ९ | ४९ | पू.भा. | ७ | २७ | दि | ९ | ४३ | वज्र | १२ | ४३ | दि | ११ | ४९ | कौ | ७ | ४३ | तै | ३५ | ५८ | ध्वांक्ष | २ | २४ | १५ | १६ | ११ | | | ६ | ४४ | ५ | १६ | ७ | १५ | ११ | ४८ | २१ | ४९ | - | १३ | १ | ४९ |
| २६ | २० | १० | श | ४ | १२ | दि | ८ | २५ | उ.भा. | ५ | ३४ | दि | ८ | ५८ | सिद्धि | ६ | ५२ | दि | ९ | २९ | गर | ४ | १२ | व | ३२ | ५६ | धूम्र | ३ | २५ | १६ | १७ | १२ | | | ६ | ४४ | ५ | १६ | ७ | १६ | १२ | ५१ | २१ | ५८ | - | १२ | २ | ४५ |
| २६ | १८ | ११ | र | १ | ३९ | दि | ७ | २४ | रेवती | ४ | ४० | दि | ८ | ३६ | व्यतिपात | [illegible] | [illegible] | प्रा | [illegible] | [illegible] | व | १ | ३९ | बव | २९ | ५९ | प्रवर्धमान | ४ | २६ | १७ | १८ | १३ | मेष | ४।४० | ६ | ४४ | ५ | १६ | ७ | १७ | १३ | ५६ | २२ | ६ | - | १२ | ३ | ४१ |
| २६ | १७ | १२ | चं | ० | १८ | प्रा | ६ | ५२ | अश्विनी | ४ | ५४ | दि | ८ | ४३ | परिघ | ५४ | ३२ | रा | ४ | ३४ | बा | ० | १८ | कौ | ३० | १७ | राक्षस | ५ | २७ | १८ | १९ | १४ | | | ६ | ४५ | ५ | १५ | ७ | १८ | १५ | २ | २२ | १४ | - | १२ | ४ | ३८ |
| २६ | १५ | १३ | मं | ० | १५ | प्रा | ६ | ५१ | भरणी | ६ | २३ | दि | ९ | १८ | शिव | ५२ | २१ | रा | ३ | ४१ | तै | ० | १५ | गर | ३० | ५४ | मुसल | ६ | २८ | १९ | २० | १५ | वृष | २२।४ | ६ | ४५ | ५ | १५ | ७ | १९ | १६ | ९ | २२ | २२ | - | ११ | ५ | ३६ |
| २६ | १४ | १४ | बु | १ | ३२ | दि | ७ | २२ | कृत्तिका | ९ | ८ | दि | १० | २४ | सिद्ध | ५१ | १४ | रा | ३ | १५ | व | १ | ३२ | भ | ३२ | ४७ | सिद्धि | ७ | २९ | २० | २१ | १६ | | | ६ | ४५ | ५ | १५ | ७ | २० | १७ | १७ | २२ | २९ | - | ११ | ६ | ३२ |
| २६ | १३ | १५ | गु | ४ | २ | दि | ८ | २२ | रोहिणी | १३ | ३ | दि | ११ | ५८ | साध्य | ५० | ५७ | रा | ३ | ८ | बव | ४ | २ | बा | ३५ | ५२ | उत्पात | ८ | ३० | २१ | २२ | १७ | मिथुन | ४५।३४ | ६ | ४५ | ५ | १५ | ७ | २१ | १८ | २६ | २२ | ३६ | - | १० | - | - |

## मार्गशीर्षशुक्लपक्षः।।

राष्ट्रिय तिथि ३ अग्रहायणतः १७ तिथिं यावत् १९४४ शकः।।
अंग्रेजी दिनांक २४ नवम्बरतः दिनांक ८ दिसम्बरं यावत् सन् २०२२ ई.।।

1. रुद्रव्रतम् (पीड़िया)। यायिजययोगः ३६।४७ या.। सर्वार्थसिद्धियोगः ३६।४७ या.।
2. धनूराशिः (रा. ८।७)। ◡चन्द्रदर्शनम्। मु. १५ जघन्या। फलं महर्वता। सौम्य श्रृंगं समर्घताकरम्।
3. मु. जमादिउल्लवल ५ हिजरी सन् १४४४। मृत्युबाणारम्भः ५३।१५ (रा. ३।५९)। रवियोगः २९।५२ उ.।
4. भ.७।२८ उ. (दि. ९।४१) ३४।३२ या. (रा. ८।३१)। मकरराशिः (रा. १०।३६)। रविवतीवैनायकी श्रीगणेश◆
5. श्रीरामविवाहोत्सवः ५। द्वितीयानागपञ्चमी ५। यायिजययोगः२१।३४ या.। सर्वार्थसिद्धियोगः २१।३४ उ.। ⌂
6. कुम्भराशिः (रा. १२।५५)। श्रीस्कन्दषष्ठी ६ व्रतम्। चम्पाषष्ठी ६ व्रतम् (महाराष्ट्रे प्रसिद्धम्)। पञ्चकारम्भः☯
7. भ. १७।११ उ. (दि. १।३५) ४४।३९ या. (रा. १२।३५)। मित्रसप्तमी ७। ⌂रवियोगः२१।३४ उ.।
8. मीनराशिः (रा. ३।५८)। दिसम्बर १२। रवियोगः १०।१० उ.। ♍ पुनःरवियोगः२६।४० उ.।
9. श्रीमहानन्दानवमी ९। अद्य देवी पूजनेन श्री विष्णुलोकप्राप्तिः। कल्पादिः ९। रवियोगःसमस्त।
10. भ. ३२।५६ उ. (रा. ७।५४)। ⊙ज्येष्ठा भे सूर्यः २६।४०(सा. ५।२४)। यायिजययोगः ४।१२ उ.। रवियोगः ५।३४ या.।♍
11. भ. १।३९ या. (दि. ७।२४)। मेषराशिः (दि. ८।३६)। मोक्षदा ११ एकादशी व्रतं सर्वेषाम्। गीताजयन्ती ११।❖
12. *प्रातः६।५२ वादनं यावदेकादशी व्रतस्य पारणा।* सोमप्रदोष १२ व्रतम्। पुत्रार्थिभिरत्र व्रतारम्भो विधेयः। ☾
13. वृषराशिः (दि. ३।३५)। काश्यां पिशाचमोचनयात्रा-दर्शनञ्च! पिशाचत्वविमुक्तेश्राद्धं तर्पणम्। पार्वणश्राद्धम्। □
14. भ. १।३२ उ. (दि. ७।२२) ३२।४७ या. (रा. ७।५२)। व्रताय १५ पूर्णिमा। दत्तात्रेयावतारः १५(प्रदोषे)। ☎
15. मिथुनराशिः (रा. १२।५९)। स्नान-दानादौ १५ पूर्णिमा। नगरपरिक्रमा। यायिजययोगः १३।३ या.।

### ।। विवाहमुहूर्त्तपञ्चेष्टलग्नविमर्शः ।।

- ति. १ गुरौ मैत्रे सूर्ययुतिः।
- ति. २ शुक्रे रा.८।७ उ. मूले रे.१० ल. ३ इष्टाः५ ग्र.व.वि. ११।। (षष्ठस्थःशुक्रो न शुभः)
- ति. ३ शनौ मूले रे.१० दिवा ल. १२ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. ११।। वा ल.गोधूलिः।
- ति. ४ रवौ दि.५।१ उ. उ.षा. भे भौमवेधो विष्टिदोषो मृत्युबाणश्च।
- ति. ५ सोमे उ.षा. भे भौमवेधः।
- ति. ९ शुक्रे दि. ९।४३ उ. उ.भा. भे रे.७ दिवा ल. १२ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. ११।। वा ल. गोधूलिः। रात्रौ सल्लग्नाभावः।
- ति. १० शनौ उ.भा. भे रे.७ दिवा सल्लग्नाभावः। दि.८।५८ उ. व्यति- पातात्पूर्वं (दि.९।२९) रेवत्यां रे.९ पञ्चेष्टलग्नाभावः।
- ति. ११ रवौ व्यतिपातात्परं (प्रा.७।२८) रेवत्यां रे.९ दिवा सल्लग्नाभावः।
- ति. १४ बुधे विष्टेःपरं (रा.७।५२) रोहिण्यां रे.८ सल्लग्नाभावः।
- ति. १५ गुरौ रोहिण्यां रे. ८ दिवा ल. ९ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. १०(षष्ठस्थश्चन्द्रो न शुभः)। दि.११।५८ उ. मृगे भौमयुतिः।

## ॐ सूर्योदये दैनिकस्पष्टभौमादिग्रहाः ॐ

| ति. | वा. | वक्रीभौमः | | | | बुधः | | | | मार्गीगुरुः | | | | वक्रीशुक्रः | | | | शनिः | | | | राहुः | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | गु | २ | ० | १७ | १८ | ७ | १७ | ११ | ४३ | ११ | ६ | १५ | २१ | ७ | १५ | ४९ | ५० | ९ | २१ | ३३ | ६ | ० | १७ | ५४ | ४६ |
| २ | शु | २ | ० | ९ | ८ | ७ | १८ | ५८ | ३८ | ११ | ६ | १५ | ५३ | ७ | १७ | ४ | ४६ | ९ | २१ | ३६ | ३ | ० | १७ | ५१ | ३५ |
| ३ | श | १ | २९ | ४३ | ५ | ७ | २० | ३८ | २७ | ११ | ६ | १६ | २६ | ७ | १८ | १९ | ४२ | ९ | २१ | ३९ | ० | ० | १७ | ४८ | २४ |
| ४ | र | १ | २९ | २३ | ५९ | ७ | २२ | १५ | ४९ | ११ | ६ | १६ | ५८ | ७ | १९ | ३४ | ५० | ९ | २१ | ४१ | ५६ | ० | १७ | ४५ | १३ |
| ५ | चं | १ | २९ | ४ | ५३ | ७ | २३ | ५२ | १४ | ११ | ६ | १७ | ३१ | ७ | २० | ५० | २ | ९ | २१ | ४५ | १० | ० | १७ | ४२ | ३ |
| ६ | मं | १ | २८ | ४५ | ४७ | ७ | २५ | २८ | ३९ | ११ | ६ | १८ | ३ | ७ | २२ | ५ | १३ | ९ | २१ | ४९ | १५ | ० | १७ | ३८ | ५२ |
| ७ | बु | १ | २८ | २६ | ४० | ७ | २७ | ५ | ४ | ११ | ६ | १८ | ३६ | ७ | २३ | २० | २५ | ९ | २१ | ५३ | २१ | ० | १७ | ३५ | ४१ |
| ८ | गु | १ | २८ | ७ | ३४ | ७ | २८ | ४१ | १७ | ११ | ६ | १९ | ८ | ७ | २४ | ३५ | ३६ | ९ | २१ | ५७ | २६ | ० | १७ | ३२ | ३० |
| ९ | शु | १ | २७ | ४८ | २८ | ८ | ० | ११ | २४ | ११ | ६ | १९ | ४० | ७ | २५ | ५० | ४८ | ९ | २२ | १ | ३२ | ० | १७ | २९ | १९ |
| १० | श | १ | २७ | २९ | १ | ८ | १ | ४१ | ३६ | ११ | ६ | २२ | १३ | ७ | २७ | ५ | ५९ | ९ | २२ | ५ | ३८ | ० | १७ | २६ | ९ |
| ११ | र | १ | २७ | ७ | ५७ | ८ | ३ | ११ | ४८ | ११ | ६ | २१ | १५ | ७ | २८ | २१ | १० | ९ | २२ | ९ | ४३ | ० | १७ | २२ | ५८ |
| १२ | चं | १ | २६ | ४६ | ५५ | ८ | ४ | ४१ | ५९ | ११ | ६ | २८ | २५ | ७ | २९ | ३६ | २२ | ९ | २२ | १३ | ४९ | ० | १७ | १९ | ४७ |
| १३ | मं | १ | २६ | २५ | ५३ | ८ | ६ | ९ | २० | ११ | ६ | ३१ | ३५ | ८ | ० | ५१ | ३३ | ९ | २२ | १७ | ५५ | ० | १७ | १६ | ३६ |
| १४ | बु | १ | २६ | ४ | ५० | ८ | ७ | ३० | ५८ | ११ | ६ | ३४ | ४६ | ८ | २ | ६ | ४५ | ९ | २२ | २१ | ५८ | ० | १७ | १३ | २५ |
| १५ | गु | १ | २५ | ४३ | ४८ | ८ | ८ | ५३ | १८ | ११ | ६ | ३७ | ५६ | ८ | ३ | २१ | ५६ | ९ | २२ | २६ | १ | ० | १७ | १० | १५ |

*भौमादीनाञ्चारः- वक्रीभौमः- ति. २ शुक्रे वक्रगत्या वृषे २१।२ (दि.३।६)।। बुधः- ति. ८ गुरौ मूले धनुषि च ५२।२५ (रा.३।४१)।। मार्गीगुरुः- ति. १५ गुरौ उत्तराभाद्रपदा २ चरणे ३९।९ (रा. १०।२५)।। शुक्रः- ति.१ गुरौ ज्येष्ठा भे ४०।१० (रा. १०।४५)। ति. १२ सोमे मूले धनुषि च १८।५२ (दि. २।१८)।। शनिः- श्रवण ४ चरणे।। राहुः- भरणी २ चरणे केतुश्च स्वाती ४ चरणे।।*

### ३३ पं० मार्गशीर्षशुक्ल ८ गुरौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।

द्युगणः २८७९
अयनांशाः २४।९।४१

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७ | १० | १ | ७ | ११ | ७ | ९ | ० | ६ |
| १४ | १७ | २८ | २८ | ६ | २४ | २१ | १७ | १७ |
| १० | ३६ | ७ | ४१ | १९ | ३५ | ५७ | ३२ | ३२ |
| ४६ | १३ | ३४ | १७ | ८ | ३६ | २६ | ३० | ३० |
| ६१ | ८४८ | ११ | ९० | ० | ७५ | ४ | ३ | ३ |
| २ | ३ | ६ व. | ७ | ३२ मा. | १२ | ६ | ११ | ११ |

९ | सू. | ७ के. | १० श. | बु. ८ शु. | ६ | ११ चं. | ५ | १२ गु. | २ मं. | ४ | १ रा. | ३

पक्षेऽस्मिन् विविधमुहूर्त्ताः- ति. १ गुरौ मैत्रे सूर्ययुतिः। ति. २ शुक्रे ज्येष्ठा भे सूर्यपोऽयम्। रा. ८।७ उ. मूले वधूप्रवेश (ल. ८) द्विरागमन (ल. ७) मुहूर्त्तः। ति. ३ शनौ मूले शस्त्रघटन मुहूर्त्तः। ति. ४ रवौ पू.षा. भे रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। ति. ५ सोमे उ.षा. भे भौमवेधः। ति. ६ भौमे श्रवणे शनियुतिः। दि. १।४१ उ. धनिष्ठा भे सूर्यवेधावसानं न चन्द्रभुक्तमशुभम्। ति. ७ बुधे धनिष्ठा भे पूर्वदोषः। ति. ८ गुरौ शतभिषजि केतुवेधः। दि. १०।४७ उ. दि.११।३४ या. पू.भा. भे शिल्पविद्या नौकाघटन वस्तुविक्रय धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। नवम्यां रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। ति. ९ शुक्रे रिक्तोत्तरं (दि.९।४९) उ.भा. भे पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन गर्भाधान शय्यासनाद्युपभोग सुभगांविनानववस्त्रधारण लतापादपारोपण नौकाघटन वधूप्रवेश (ल. ११) द्विरागमन (ल. १२) गृहारम्भ (च.शु.) जीर्णादिगृहप्रवेश (ल. ८) विपणि धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. १० शनौ उ.भा. भे सुभगांविनाकृष्णवस्त्रधारण गृहारम्भ (च.शु.) जीर्णादिगृहप्रवेश (ल. ८) मुहूर्त्तः। दि. ८।५८ उ. व्यतिपातात्पूर्वं (दि. ९।२९) रेवत्यां पश्चिमोत्तर दिग्यात्रा गजाश्वकृत्य मुहूर्त्तः। ति. ११ रवौ व्यतिपातात्परं (प्रा. ७।२८) रेवत्यां शय्यासनाद्युपभोग लतापादपारोपण भैषज्य नौकाघटन गजाश्वकृत्य मुहूर्त्तः। दि. ८।३६ उ. अश्विन्यां भूषाघटन गोक्रय-विक्रय नवान्नभक्षण विपणि वस्तुक्रय गजाश्वकृत्य शिरामोक्षण मुहूर्त्तः। ति. १२ सोमे अश्विन्यां अन्नप्राशन (त्रयोदश्यां) गोक्रय-विक्रय पूर्वाविनान्यदिग्यात्रा (त्रयोदश्यां) भैषज्य वधूप्रवेश-द्विरागमन (ल. ८) विपणि व्यापार गजाश्वकृत्य मुहूर्त्तः। भरण्यां राहुयुतिः। ति. १३ भौमे चतुर्दश्यां रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। ति.१४ बुधे विष्टेःपरं रोहिण्यां द्विरागमन (ल. ७) मुहूर्त्तः। ति.१५ गुरौ रोहिण्यां अन्नप्राशन (पूर्णिमायाम्) सूतीस्नान शय्यासनाद्युपभोग सुभगांविनानववस्त्रधारण ☞

| तिथि ल.अ. | १ गु घं. | मि. | २ शु घं. | मि. | ३ श घं. | मि. | ४ र घं. | मि. | ५ चं घं. | मि. | ६ मं घं. | मि. | ७ बु घं. | मि. | ८ गु घं. | मि. | ९ शु घं. | मि. | १० श घं. | मि. | ११ र घं. | मि. | १२ चं घं. | मि. | १३ मं घं. | मि. | १४ बु घं. | मि. | १५ गु घं. | मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वृश्चिक | ८ | २४ | ८ | २० | ८ | १५ | ८ | ११ | ८ | ७ | ८ | ३ | ७ | ५९ | ७ | ५५ | ७ | ५० | ७ | ४६ | ७ | ४१ | ७ | ३७ | ७ | ३२ | ७ | २८ | ७ | २३ |
| धनु | १० | ३० | १० | २६ | १० | २१ | १० | १७ | १० | १३ | १० | ९ | १० | ५ | १० | १ | ९ | ५६ | ९ | ५२ | ९ | ४७ | ९ | ४३ | ९ | ३८ | ९ | ३४ | ९ | २९ |
| मकर | १२ | १८ | १२ | १४ | १२ | ९ | १२ | ५ | १२ | १ | ११ | ५७ | ११ | ५३ | ११ | ४९ | ११ | ४४ | ११ | ४० | ११ | ३५ | ११ | ३० | ११ | २५ | ११ | २१ | ११ | १६ |
| कुम्भ | १ | ४८ | १ | ४३ | १ | ३८ | १ | ३४ | १ | ३० | १ | २६ | १ | २२ | १ | १८ | १ | १३ | १ | ९ | १ | ५ | १ | १ | १२ | ५६ | १२ | ५२ | १२ | ४७ |
| मीन | ३ | १६ | ३ | १२ | ३ | ८ | ३ | ३ | २ | ५९ | २ | ५५ | २ | ५१ | २ | ४७ | २ | ४३ | २ | ३९ | २ | ३३ | २ | २९ | २ | २४ | २ | २० | २ | १५ |
| मेष | ४ | ५३ | ४ | ४९ | ४ | ४५ | ४ | ४१ | ४ | ३६ | ४ | ३२ | ४ | २८ | ४ | २४ | ४ | १९ | ४ | १५ | ४ | १० | ४ | ६ | ४ | १ | ३ | ५७ | ३ | ५२ |
| ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | |
| वृष | ६ | ४९ | ६ | ४५ | ६ | ४१ | ६ | ३७ | ६ | ३२ | ६ | २८ | ६ | २४ | ६ | २० | ६ | १५ | ६ | ११ | ६ | ६ | ६ | २ | ५ | ५७ | ५ | ५३ | ५ | ४८ |
| मिथुन | ९ | ३ | ८ | ५९ | ८ | ५५ | ८ | ५१ | ८ | ४६ | ८ | ४२ | ८ | ३८ | ८ | ३४ | ८ | ३० | ८ | २६ | ८ | २० | ८ | १६ | ८ | ११ | ८ | ७ | ८ | २ |
| कर्क | ११ | २१ | ११ | १७ | ११ | १३ | ११ | ९ | ११ | ४ | ११ | ० | १० | ५६ | १० | ५२ | १० | ४७ | १० | ४३ | १० | ३८ | १० | ३४ | १० | २९ | १० | २५ | १० | २० |
| सिंह | १ | ३५ | १ | ३१ | १ | २७ | १ | २३ | १ | १८ | १ | १४ | १ | १० | १ | ६ | १ | १ | १२ | ५७ | १२ | ५२ | १२ | ४८ | १२ | ४३ | १२ | ३९ | १२ | ३४ |
| कन्या | ३ | ४८ | ३ | ४४ | ३ | ४० | ३ | ३६ | ३ | ३१ | ३ | २७ | ३ | २३ | ३ | १९ | ३ | १४ | ३ | १० | ३ | ५ | ३ | १ | २ | ५६ | २ | ५२ | २ | ४७ |
| तुला | ६ | ४ | ६ | ० | ५ | ५६ | ५ | ५२ | ५ | ४७ | ५ | ४३ | ५ | ३९ | ५ | ३५ | ५ | ३० | ५ | २६ | ५ | २१ | ५ | १७ | ५ | १२ | ५ | ८ | ५ | ३ |

### ३४ पं० मार्गशीर्षशुक्ल १५ गुरौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।

द्युगणः २८८६
अयनांशाः २४।९।४२

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७ | १ | १ | ८ | ११ | ८ | ९ | ० | ६ |
| २१ | २० | २५ | ८ | ६ | ३ | २२ | १७ | १७ |
| १८ | ३६ | ४३ | ५३ | ३७ | २१ | २६ | १० | १० |
| २६ | ४० | ४८ | १८ | ५६ | ५६ | १ | १५ | १५ |
| ६१ | ७५० | २० | ८२ | ३ | ७५ | ४ | ३ | ३ |
| १० | ५९ | ४३ व. | २० | १० मा. | १२ | ३ | ११ | ११ |

बु. ९ शु. | ७ के. | १० श. | सू. ८ | ६ | ११ | ५ | १२ गु. | चं. २ मं. | ४ | १ रा. | ३

◆४ व्रतम्। मृत्युबाणनिवृत्तिः ५२।१९ (रा.३।३८)। यायिजययोगः ३४।३२ उ.। सर्वार्थसिद्धियोगः २५।४८ उ.। रवियोगः २५।४८ या.। ☯४५।३० (रा.१२।५५)। द्विपुष्करयोगः २२।४४ उ.। रवियोगः १७।२६ या.। ❖मत्स्य द्वादशी १२। धरणी व्रतम्। पञ्चकनिवृत्तिः ४।४० (दि. ८।३६)। यायिजययोगः १।३९ या.। सर्वार्थसिद्धियोगः ४।४० उ.। रवियोगः ४।४० या.। ☾ मृत्युबाणारम्भः ४४।९ (रा.१२।२५)। यायिजययोगः ४।५४ उ.। □कपर्दीश्वर दर्शनम्। मृत्युबाणनिवृत्तिः ४३।२ (रा. ११।५८)। स्थायिजययोगः ६।२३ उ.। सर्वार्थसिद्धियोगः ६।२३ उ.। रवियोगः ६।२३ उ.। ☎दत्तात्रेयजयन्ती। सर्वार्थसिद्धियोगः समस्त। रवियोगः ९।८ या.।

मूलविचार- ज्येष्ठा/मूल- ति. १ गुरौ ३६।४७ (रा. ९।२४) उ.। ति. ३ शनौ २९।५२ (सा.६।३८) या.। रेवती/अश्विनी- ति. १० शनौ ५।३४ (दि. ८।५८) उ.। ति.१२ सोमे ४।५४ (दि. ८।४३) या.। पञ्चक विचार- ति. ६ भौमे ४५।३० (रा. १२।५५) उ.। ति. ११ रवौ ४।४० (दि. ८।३६) या.।

मम विवाहो भविष्यति न वेति प्रश्नाङ्गाद्विचारः। जीवार्क सौम्यास्त्रिसुतार्थं लाभ द्विपड्सुदृष्टः सितगुस्थितश्चेत्। विवाहमेकं प्रकरोति पूर्णं केन्द्रत्रिकोणोच्चगतः शुभश्चेत्।।१।। अन्यच्च केन्द्रोपगैर्नवमगैः सुतगैश्चसौम्यैर्लग्नाच्छशित्रिसुत मार्गरसायगो वा। उष्णांशुजीव बुधदृष्टियुतो विवाहकर्त्ता वरस्तुलभते प्रमदां मनोज्ञाम्।। अन्यदपि गुरुपति रविसौम्यैर्दृष्टस्त्रिसुतमदनायगः शशिलग्नात्। भवति तु विवाहकर्त्ता त्रिकोण केन्द्रेषु सौम्यश्चेत् ।।१।। **पुत्रप्राप्तिप्रश्नकथनम्।।** स्वभावसंस्थाः पुरुषग्रहाश्चेन्निरीक्षितास्ते बुधभार्गवाभ्याम्।। पुत्रस्त्वसाभोयुवतिग्रहाश्चेत् कन्या सुरूपा च नरस्य जन्म।।२।। पुंसंज्ञकैः खेचरकैश्च पुत्रो युतेक्षिते स्यात्तनयोऽथ कन्या।। स्त्रीखेचरैर्दृष्टयुतोऽथपण्ढः।।३।। कतिसंख्यकाः पुत्रा भवेयुरित्यस्य-कथनम्। पुंस्त्रीग्रहा पुत्रगृहं विलग्नात् पश्यन्ति यावन्त इह प्रकुर्यात्। तत्संख्यकाः स्युस्तनयाश्च कन्या शुभेशयोगात् सुतमङ्ग तुल्यः।।४।।

☞ लतापादपारोपण कणमर्दन शिल्पविद्या वधूप्रवेश - द्विरागमन (ल. ८) गृहारम्भ (च.शु.) (पूर्णिमायाम्) इष्टिकादहन विपणि शिरामोक्षण मुहूर्त्तः। मृगे भौमयुतिः।

# श्रीसंवत् २०७९ शकः १९४४ याम्यायनगोलयोः हेमन्तर्त्तुः।।

# पौषकृष्णपक्षः।।

राष्ट्रिय तिथि १८ अग्रहायणतः तिथि २ पौषं यावत् १९४४ शकः।।
अंग्रेजी दिनांक ९ दिसम्बरतः २३ दिनांकं यावत् सन् २०२२ ई.।।

| दि.मा. घ. | प. | ति. | वा. | घ. | प. | | घं. | मि. | नक्षत्र | घ. | प. | | घं. | मि. | योग | घ. | प. | | घं. | मि. | करण | घ. | प. | करण | घ. | प. | योगाः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६ | ११ | १ | शु | ७ | ४२ | दि | ९ | ५० | मृगशिरा | १८ | ५ | दि | १ | ५९ | शुभ | ५१ | २७ | रा | ३ | २० | कौ | ७ | ४२ | तै | ३९ | ५९ | मानस |
| २६ | १० | २ | श | १२ | १६ | दि | ११ | ४० | आर्द्रा | २३ | ५६ | दि | ४ | २० | शुक्ल | ५२ | २७ | रा | ३ | ४५ | गर | १२ | १६ | व | ४४ | ५३ | मुद्गर |
| २६ | ९ | ३ | र | १७ | ३० | दि | १ | ४६ | पुनर्वसु | ३० | १९ | सा | ६ | ५४ | ब्रह्म | ५३ | ४७ | रा | ४ | १७ | भ | १७ | ३० | बव | ५० | १४ | ध्वज |
| २६ | ८ | ४ | चं | २२ | ५७ | दि | ३ | ५७ | पुष्य | ३६ | ५१ | रा | ९ | ३० | ऐन्द्र | ५५ | ५ | रा | ४ | ४८ | वा | २२ | ५७ | कौ | ५५ | ३४ | धाता |
| २६ | ७ | ५ | मं | २८ | ११ | सा | ६ | ३ | श्लेषा | ४३ | ३ | रा | १२ | ० | वैधृति | ५६ | २ | रा | ५ | १२ | तै | २८ | ११ | गर | ६० | ० | आनन्द |
| २६ | ७ | ६ | बु | ३२ | ४५ | रा | ७ | ५३ | मघा | ४८ | ३६ | रा | २ | १३ | विष्कुम्भ | ५६ | २६ | रा | ५ | २१ | गर | ० | २८ | व | ३२ | ४५ | चर |
| २६ | ६ | ७ | गु | ३६ | २६ | रा | ९ | २१ | पू.फा. | ५३ | १२ | रा | ४ | ४ | प्रीति | ५६ | २ | रा | ५ | १२ | भ | ४ | ३६ | बव | ३६ | २६ | गद |
| २६ | ५ | ८ | शु | ३८ | ५७ | रा | १० | २२ | उ.फा. | ५६ | ४४ | रा | ५ | २९ | आयुष्मान | ५४ | ४८ | रा | ४ | ४२ | वा | ७ | ४२ | कौ | ३८ | ५७ | शुभ |
| २६ | ५ | ९ | श | ४० | १३ | रा | १० | ५२ | हस्त | ५८ | ५९ | रा | ६ | २३ | सौभाग्य | ५२ | ३२ | रा | ३ | ४८ | तै | ९ | ३५ | गर | ४० | १३ | मृत्यु |
| २६ | ४ | १० | र | ४० | १० | रा | १० | ५१ | चित्रा | ५९ | ५७ | रा | ६ | ४६ | शोभन | ४९ | १४ | रा | २ | २९ | व | १० | १२ | भ | ४० | १० | पद्म |
| २६ | ४ | ११ | चं | ३८ | ५२ | रा | १० | २० | स्वाती | ५९ | ४४ | रा | ६ | ४१ | अतिगण्ड | ४४ | ५९ | रा | १२ | ४७ | बव | ९ | ३१ | वा | ३८ | ५२ | छत्र |
| २६ | ४ | १२ | मं | ३६ | २२ | रा | ९ | २० | विशाखा | ५८ | २५ | रा | ६ | ९ | सुकर्मा | ३९ | ५१ | रा | १० | ४३ | कौ | ७ | ३७ | तै | ३६ | २२ | श्रीवत्स |
| २६ | ३ | १३ | बु | ३२ | ५३ | रा | ७ | ५६ | अनुराधा | ५६ | १७ | रा | ५ | २८ | धृति | ३३ | ५६ | रा | ८ | २१ | गर | ४ | ३८ | व | ३२ | ५३ | सौम्य |
| २६ | ३ | १४ | गु | २८ | ३२ | सा | ६ | १२ | ज्येष्ठा | ५३ | १६ | रा | ४ | ५ | शूल | २७ | १९ | सा | ५ | ४३ | भ | ० | ४३ | श | २८ ५६ | ३२ १ | कालदण्ड |
| २६ | ३ | ३० | शु | २३ | ३० | दि | ४ | ११ | मूल | ४९ | ४१ | रा | २ | ३९ | गण्ड | २० | ८ | दि | २ | ५० | नाग | २३ | ३० | किं | ५० | ४५ | सुस्थिर |

| ति. | अं. | फ. | सौ. | ने. | रा. | चन्द्र राशि | प्रवेशः | सूर्योदयः घं. | मि. | सूर्यास्तः घं. | मि. | औदयिक स्पष्ट सूर्यः | | | | क्रान्तिः द. | – | रे. अं. – | मि. | चन्द्रोदयः स्टै. | टा. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ९ | १ | २२ | २३ | १८ | | | ६ | ४५ | ५ | १५ | ७ | २२ | १९ | ३६ | २२ | ४३ | – | १० | ५ | ५९ | ☐मु. ४५ वृहत्ती। फलं समर्घता। पराः १६ घट्यः पुण्याः। नववस्त्रसुवर्णदानम्। स्नानं गोदावर्याम्। खरमासारम्भः। |
| २ | १० | २ | २३ | २४ | १९ | | | ६ | ४६ | ५ | १४ | ७ | २३ | २० | ४७ | २२ | ४९ | – | १० | ६ | ५२ | भ. ४४।५३ उ. (रा. १२।४३)। यायिजययोग:२३।५६ उ.। |
| ३ | ११ | ३ | २४ | २५ | २० | कर्क | १३।४३ | ६ | ४६ | ५ | १४ | ७ | २४ | २१ | ५९ | २२ | ५५ | – | ९ | ७ | ४६ | भ. १७।३० या. (दि. १।४६)। कर्कराशिः (दि. १२।१५)। संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रतम्। चन्द्रोदयः (रा. ७।४६)।◆ |
| ४ | १२ | ४ | २५ | २६ | २१ | | | ६ | ४६ | ५ | १४ | ७ | २५ | २३ | १२ | २३ | ० | – | ९ | ८ | ४० | यायिजययोग:३६।५१ उ.। सर्वार्थसिद्धियोग:३६।५१ या.।◆ यायिजययोग:१७।३० या.। सर्वार्थसिद्धियोग:३०।१९ उ.। |
| ५ | १३ | ५ | २६ | २७ | २२ | सिंह | ४३।३ | ६ | ४७ | ५ | १३ | ७ | २६ | २४ | २६ | २३ | ५ | – | ८ | ९ | ३५ | सिंहराशिः (रा. १२।०)। सर्वार्थसिद्धियोग:४३।३ या.। रवियोग:४३।३ उ.। |
| ६ | १४ | ६ | २७ | २८ | २३ | | | ६ | ४७ | ५ | १३ | ७ | २७ | २५ | ४१ | २३ | ९ | – | ८ | १० | २८ | भ. ३२।४५ उ. (रा. ७।५३)। मृत्युबाणारम्भ:३३।३७ (रा.८।१४)। रवियोग:४८।३६ या.। |
| ७ | १५ | ७ | २८ | २९ | २४ | | | ६ | ४७ | ५ | १३ | ७ | २८ | २६ | ५६ | २३ | १३ | – | ७ | ११ | २१ | भ. ४।३६ या. (दि. ८।३७)। मृत्युबाणनिवृत्ति:३२।२२(रा. ७।४४)। |
| ८ | १६ | ८ | २९ | १ | २५ | कन्या | ९।५ | ६ | ४७ | ५ | १३ | ७ | २९ | २८ | १३ | २३ | १७ | – | ७ | १२ | १४ | कन्याराशिः (दि. १०।२५)। अष्टकाश्राद्धम्। पार्वणवदस्य विधिः। ⊙सं.मूले धनुषि च सूर्यः ३१।७ (रा. ७।१४)।☐ |
| ९ | १७ | ९ | १ | २ | २६ | | | ६ | ४७ | ५ | १३ | ८ | ० | २९ | ३० | २३ | २० | – | ६ | १ | ८ | अन्वष्टका श्राद्धम्। सौरपौषमासारम्भः। यायिजययोग:४०।१३ या.। यमघंटयोग:५८।५९ या.। |
| १० | १८ | १० | २ | ३ | २७ | तुला | २९।२८ | ६ | ४७ | ५ | १३ | ८ | १ | ३० | ४८ | २३ | २३ | – | ६ | २ | ४ | भ. १०।१२ उ. (दि. १०।५२)४०।१० या. (रा. १०।५१)। तुलाराशिः (सा. ६।३४)। यायिजययोग:५९।५७ उ.। |
| ११ | १९ | ११ | ३ | ४ | २८ | | | ६ | ४७ | ५ | १३ | ८ | २ | ३२ | ७ | २३ | २५ | – | ५ | ३ | ५ | सफला ११ एकादशी व्रतं सर्वेषाम्। यायिजययोग:३८।५२ या.। |
| १२ | २० | १२ | ४ | ५ | २९ | वृश्चिक | ४३।४५ | ६ | ४७ | ५ | १३ | ८ | ३ | ३३ | २७ | २३ | २६ | – | ५ | ४ | ९ | वृश्चिकराशिः (रा. १२।१७)। स्थायिजययोग:३६।२२ या.। त्रिपुष्करयोग:३६।२२ या.। |
| १३ | २१ | १३ | ५ | ६ | ३० | | | ६ | ४७ | ५ | १३ | ८ | ४ | ३४ | ४७ | २३ | २७ | – | ४ | ५ | १८ | भ. ३२।५३ उ. (रा. ७।५६)। प्रदोष १३ व्रतम् । मासशिवरात्रि १३ व्रतम्।"भवेद्यत्र त्रयोदश्यां भूतव्याप्ता महानिशेत्युक्तेः।"सर्वार्थामृतसिद्धियोग:५६।१७ या.। |
| १४ | २२ | १४ | ६ | ७ | १ | धनु | ५३।१६ | ६ | ४७ | ५ | १३ | ८ | ५ | ३६ | ८ | २३ | २७ | – | ४ | ६ | २८ | भ. ०।४३ या. (दि. ७।४)। धनूराशिः (रा. ४।५)। ⊙सायन मकरे सूर्यः १३।४९ (दि. १२।१९)। राष्ट्रियपौषमासः दि. ३०। |
| ३० | २३ | १५ | ७ | ८ | २ | | | ६ | ४७ | ५ | १३ | ८ | ६ | ३७ | २९ | २३ | २७ | – | ३ | – | – | स्नान-दान-श्राद्धादौ ३० अमावस्या। शुभवारान्विते दर्शे सुभिक्षं च प्रजासुखम्। |

**।। विवाहमुहूर्त्तपञ्चेष्टलग्नविमर्शः।।**

ति. १ शुक्रे मृगे भौमयुतिः।
ति. ५ भौमे रा.१२।० उ.मघा भे शनिवेधो वैधृतिश्च।
ति. ६ बुधे मघा भे शनिवेधो मृत्युबाणश्च।
ति. ७ गुरौ रा.४।४ उ. उ.फा. भे रे.८ ल.८ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. १०(सप्तमस्थः भौमो न शुभः) परं धनुर्रक सत्वाद् विवाह मुहूर्त्ताभावः।

## ॐ सूर्योदये दैनिकस्पष्टभौमादिग्रहाः ॐ

| ति. | वा. | वक्रीभौमः | | | | बुधः | | | | गुरुः | | | | शुक्रः | | | | शनिः | | | | राहुः | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | शु | १ | २५ | २३ | ५ | ८ | १० | १५ | ३८ | ११ | ६ | ४१ | ६ | ८ | ४ | ३७ | ८ | ९ | २२ | ३० | ४ | ० | १७ | ७ | ४ |
| २ | श | १ | २५ | १ | ४४ | ८ | ११ | ३७ | ५८ | ११ | ६ | ४४ | १६ | ८ | ५ | ५३ | ६ | ९ | २२ | ३४ | ७ | ० | १७ | ३ | ५३ |
| ३ | र | १ | २४ | ४० | ४२ | ८ | १२ | ५४ | २४ | ११ | ६ | ४७ | २७ | ८ | ७ | ७ | २२ | ९ | २२ | ३८ | १० | ० | १७ | ० | ४२ |
| ४ | चं | १ | २४ | १९ | ३९ | ८ | १४ | ६ | ४७ | ११ | ६ | ५० | ३७ | ८ | ८ | २२ | ३८ | ९ | २२ | ४२ | १३ | ० | १६ | ५७ | ३१ |
| ५ | मं | १ | २३ | ५८ | ३७ | ८ | १५ | १९ | १३ | ११ | ६ | ५३ | ४७ | ८ | ९ | ३७ | ५४ | ९ | २२ | ४६ | १६ | ० | १६ | ५४ | २१ |
| ६ | बु | १ | २३ | ३७ | ३५ | ८ | १६ | ३१ | ३९ | ११ | ६ | ५६ | ५८ | ८ | १० | ५३ | १० | ९ | २२ | ५० | ५६ | ० | १६ | ५१ | १० |
| ७ | गु | १ | २३ | १६ | ३३ | ८ | १७ | ४४ | ४ | ११ | ७ | ० | ८ | ८ | १२ | ८ | २६ | ९ | २२ | ५६ | ८ | ० | १६ | ४७ | ५९ |
| ८ | शु | १ | २२ | ५४ | १२ | ८ | १८ | ४२ | ४६ | ११ | ७ | ३ | १८ | ८ | १३ | २३ | ४१ | ९ | २३ | १ | २० | ० | १६ | ४४ | ४८ |
| ९ | श | १ | २२ | ३१ | ४८ | ८ | १९ | ३९ | ८ | ११ | ७ | ६ | २८ | ८ | १४ | ३८ | ५७ | ९ | २३ | ६ | ३२ | ० | १६ | ४१ | ३७ |
| १० | र | १ | २२ | ९ | २३ | ८ | २० | ३५ | ३१ | ११ | ७ | ९ | ३९ | ८ | १५ | ५४ | १३ | ९ | २३ | ११ | ४४ | ० | १६ | ३८ | २७ |
| ११ | चं | १ | २१ | ४६ | ५९ | ८ | २१ | ३१ | ५३ | ११ | ७ | १२ | ५९ | ८ | १७ | ९ | २९ | ९ | २३ | १६ | ५६ | ० | १६ | ३५ | १६ |
| १२ | मं | १ | २१ | २४ | ३४ | ८ | २२ | २६ | ३३ | ११ | ७ | १९ | २ | ८ | १८ | २४ | ४५ | ९ | २३ | २२ | ७ | ० | १६ | ३२ | ५ |
| १३ | बु | १ | २१ | २ | १० | ८ | २३ | २ | ७ | ११ | ७ | २५ | ७ | ८ | १९ | ४० | १ | ९ | २३ | २७ | १९ | ० | १६ | २८ | ५४ |
| १४ | गु | १ | २० | ३९ | ४५ | ८ | २३ | ३८ | २० | ११ | ७ | ३१ | १७ | ८ | २१ | ५५ | १७ | ९ | २३ | ३२ | ३० | ० | १६ | २५ | ४३ |
| ३० | शु | १ | २० | १७ | २० | ८ | २४ | १४ | ३२ | ११ | ७ | ३७ | २७ | ८ | २२ | १० | ३३ | ९ | २३ | ३७ | ४० | ० | १६ | २२ | ३३ |

*भौमादीनाञ्चारः- वक्रीभौमः- ति.६ बुधे रोहिण्यां ५०।९ (रा. २।५१)।। बुधः- ति. ३ रवौ पूर्वाषाढ़ा भे २१।१३ (दि.३।१५)।। गुरुः- उत्तराभाद्रपदा २ चरणे ।। शुक्रः- ति. ७ गुरौ पूर्वाषाढ़ा भे ५७।४ (रा. ५।३७)।। शनिः- ति. ११ सोमे धनिष्ठा १ चरणे ३५।३० (रा. ८।५९)।। राहुः- ति. ९ शनौ भरणी १ चरणे केतुश्च स्वाती ३ चरणे ३०।२८ (सा. ६।५८)।।*

३५ पं० पौषकृष्ण ८ शुक्रे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।
द्युगणः २८९४
अयनांशाः २४।९।४३

| सू. | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७ | ४ | १ | ८ | ११ | ८ | ९ | ० | ६ |
| २१ | २८ | २२ | १८ | ७ | १३ | २३ | १६ | १६ |
| २८ | ५ | ५४ | ४२ | ३ | २३ | १ | ४४ | ४४ |
| १३ | ३३ | १२ | ४६ | १८ | ४१ | २० | ४८ | ४८ |
| ६१ | ७५५ | २२ | ५६ | ३ | ७५ | ५ | ३ | ३ |
| १७ | ३१ | २८ व. | २२ | १० | १६ | १२ | ११ | ११ |

बु. ९ शु. | ७ के. | १०श. | सू. ८ | ६ | ११ | ५ चं. | १२गु. | २ मं. | ४ | १ रा. | ३

पक्षेऽस्मिन् विविधमुहूर्त्ताः- ति. १ शुक्रे मृगे भौमयुतिः। आर्द्रा भे धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति.२ शनौ आर्द्रा भे शस्त्रघटन मुहूर्त्तः। दि.४।२० उ. विष्टेःपूर्वं पुनर्वसौ सुभगांविनाकृष्णवस्त्रधारण पश्चिम-दक्षिण दिग्यात्रा मुहूर्त्तः। ति. ३ रवौ पुनर्वसौ विष्टिस्ततो रिक्तादोषः। ति. ४ सोमे पुष्ये सूर्यवेधो रिक्तादोषश्च । ति. ५ भौमे श्लेषा भे वैधृतिदोषः। ति. ६ बुधे मघा भे राहुवेधो विष्टिश्चः। ति. ७ गुरौ विष्टेःपरं (दि. ८।३७) पू.फा. भे कणमर्दन नौकाघटन वस्तु विक्रय मुहूर्त्तः। ति. ८ शुक्रे रा. १०।२२ या.उ.फा. भे शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण गर्भाधान शय्यासनाद्युपभोग सुभगांविनानववस्त्रधारण लतापादपारोपण कणमर्दन शिल्पविद्या नौकाघटन विपणि धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ९ शनौ हस्ते रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। रिक्तोत्तरं पूर्वाविनान्यदिग्यात्रा मुहूर्त्तः। ति. १० रवौ चित्रा भे विष्टेःपूर्वं (दि. १०।५२) शय्यासनाद्युपभोग नववस्त्रधारण लतापादपारोपण भैषज्य नौकाघटन विपणि वस्तुक्रय गजकृत्य शिरामोक्षण मुहूर्त्तः। ति. ११ सोमे स्वात्यां केतुयुतिः। ति. १२ भौमे विशाखा भे शनिवेधः। परं मासान्तादिदोषः।

| तिथि ल.अ. | १ शु घं. | मि. | २ श घं. | मि. | ३ र घं. | मि. | ४ चं घं. | मि. | ५ मं घं. | मि. | ६ बु घं. | मि. | ७ गु घं. | मि. | ८ शु घं. | मि. | तिथि ल.अ. | ९ श घं. | मि. | १० र घं. | मि. | ११ चं घं. | मि. | १२ मं घं. | मि. | १३ बु घं. | मि. | १४ गु घं. | मि. | ३० शु घं. | मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वृश्चिक | ७ | १९ | ७ | १४ | ७ | १० | ७ | ६ | ७ | १ | ६ | ५७ | ६ | ५३ | ६ | ४८ | धनु | ८ | ५० | ८ | ४५ | ८ | ४१ | ८ | ३७ | ८ | ३३ | ८ | २८ | ८ | २४ |
| धनु | ९ | २४ | ९ | २० | ९ | १६ | ९ | १२ | ९ | ७ | ९ | ३ | ८ | ५९ | ८ | ५४ | मकर | १० | ३७ | १० | ३२ | १० | २८ | १० | २४ | १० | २० | १० | १५ | १० | ११ |
| मकर | ११ | १२ | ११ | ७ | ११ | ३ | १० | ५९ | १० | ५४ | १० | ५० | १० | ४६ | १० | ४१ | कुम्भ | १२ | ८ | १२ | ३ | ११ | ५९ | ११ | ५५ | ११ | ५१ | ११ | ४६ | ११ | ४२ |
| कुम्भ | १२ | ४३ | १२ | ३८ | १२ | ३४ | १२ | ३० | १२ | २५ | १२ | २१ | १२ | १७ | १२ | १२ | मीन | १ | ३६ | १ | ३१ | १ | २७ | १ | २३ | १ | १९ | १ | १४ | १ | १० |
| मीन | २ | ११ | २ | ६ | २ | २ | १ | ५८ | १ | ५३ | १ | ४९ | १ | ४५ | १ | ४० | मेष | ३ | १३ | ३ | ८ | ३ | ४ | ३ | ० | २ | ५६ | २ | ५१ | २ | ४७ |
| मेष | ३ | ४८ | ३ | ४३ | ३ | ३९ | ३ | ३५ | ३ | ३० | ३ | २६ | ३ | २२ | ३ | १७ | वृष | ५ | ९ | ५ | ४ | ५ | ० | ४ | ५६ | ४ | ५२ | ४ | ४७ | ४ | ४३ |
| ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | |
| वृष | ५ | ४४ | ५ | ३९ | ५ | ३५ | ५ | ३१ | ५ | २६ | ५ | २२ | ५ | १८ | ५ | १३ | मिथुन | ७ | २३ | ७ | १८ | ७ | १४ | ७ | १० | ७ | ६ | ७ | १ | ६ | ५७ |
| मिथुन | ७ | ५८ | ७ | ५३ | ७ | ४९ | ७ | ४५ | ७ | ४० | ७ | ३६ | ७ | ३२ | ७ | २७ | कर्क | ९ | ४१ | ९ | ३६ | ९ | ३२ | ९ | २८ | ९ | २४ | ९ | १९ | ९ | १५ |
| कर्क | १० | १६ | १० | ११ | १० | ७ | १० | ३ | ९ | ५८ | ९ | ५४ | ९ | ५० | ९ | ४५ | सिंह | ११ | ५५ | ११ | ५० | ११ | ४६ | ११ | ४२ | ११ | ३८ | ११ | ३३ | ११ | २९ |
| सिंह | १२ | ३० | १२ | २५ | १२ | २१ | १२ | १७ | १२ | १२ | १२ | ८ | १२ | ४ | ११ | ५९ | कन्या | २ | ८ | २ | ३ | १ | ५९ | १ | ५५ | १ | ५१ | १ | ४६ | १ | ४२ |
| कन्या | २ | ४३ | २ | ३८ | २ | ३४ | २ | ३० | २ | २५ | २ | २१ | २ | १७ | २ | १२ | तुला | ४ | २४ | ४ | १९ | ४ | १५ | ४ | ११ | ४ | ७ | ४ | २ | ३ | ५८ |
| तुला | ४ | ५९ | ४ | ५४ | ४ | ५० | ४ | ४६ | ४ | ४२ | ४ | ३७ | ४ | ३३ | ४ | २८ | वृश्चिक | ६ | ४१ | ६ | ३६ | ६ | ३२ | ६ | २८ | ६ | २४ | ६ | १९ | ६ | १५ |

३६ पं० पौषकृष्ण ३० शुक्रे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।
द्युगणः २९०१
अयनांशाः २४।९।४४

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८ | ८ | १ | ८ | ११ | ८ | ९ | ० | ६ |
| ६ | १ | २० | २४ | ७ | २२ | २३ | १६ | १६ |
| ३७ | ३५ | १७ | १४ | ३७ | १० | ३७ | २२ | २२ |
| २९ | ३३ | २० | ३२ | २७ | ३३ | ४० | ३३ | ३३ |
| ६१ | ८५० | २२ | ३६ | ६ | ७५ | ५ | ३ | ३ |
| २० | ४९ | २४ व. | १३ | १० | २८ | ९ | ११ | ११ |

१० श. | सू. | ८ | ११ | चं. ९ बु. शु. | ७ के. | १२ गु. | ६ | १ रा. | ३ | ५ | २ मं. | ४

मूलविचार- श्लेषा/मघा- ति. ४ सोमे ३६।५१ (रा. ९।३०) उ.। ति. ६ बुधे ४८।३६ (रा. २।१३) या.। ज्येष्ठा/मूल- ति. १३ बुधे ५६।१७ (रा. ५।१८) उ.। ति. ३० शुक्रे ४९।४१ (रा. २।३९) या.।

अथ बहुविध प्रश्नानां योगः- प्रस्नाक्षरं द्विगुणितं सैकयुग्वह्निभाजितम् । विषमांके जीवचिन्ता समे धातुः प्रकीर्तितः। मूलं शून्ये विजानीयाच्छारदावचनं यथा।।१।। दृष्टिवशात्प्रश्नकथनम्। व्योमदृष्टिर्भवेज्जीव मूलं भूम्यवलोकने। समावलोकने धातुर्ज्ञेयः केवलदृष्टितः।। राशिवशात्प्रश्नकथनम्- द्विपाद चिन्ता अजभे नाराणां चतुष्पदानां वृषभे च चिन्ता।। स्याद्गर्भचिन्ता मिथुनाख्यराशौ कर्के भवेच्च व्यहारचिन्ता स्याद्रोगचिन्ता मृगराजराशौ स्याद्वल्लुभार्या- प्रमदाख्यराशौ। वाणिज्यचिन्ता तुलनाम्निराशौ। स्याद् वृश्चिके दुष्टभयादिचिन्ता।।२३।। धनस्य चापे मकरे कलेश्च स्याद्गर्भचिन्ता घटनाम्नि राशौ। स्थानस्य मीने सुधिया विचिन्त्यो यो राशिरंगं बलावान्स तस्मादिति।। मम कार्यसिद्धिर्भविष्यति न वेतिप्रश्ने- तात्कालिकलग्नवशाद्विमर्शः- शीर्षोदयगते लग्ने परिपूर्णेन्दुसंयुते। कार्यसिद्धिर्विजानीयादितिगर्गेण भाषितम् ।।१।। केन्द्रत्रिकोणसंस्थाः सौम्याःपापाः रस त्रिलाभेषु लाभं सिद्धिं ब्रूयात्कार्याणां प्रोषितागमनं चेति।।२।। अथाक्षरोपरि- प्रश्नाक्षरंद्विगुणितं सैकयुग्वह्निभाजितम्। एकेसिद्धिर्द्विके स्थैर्यं शून्ये शून्यफलं भवेत् ।।१।। अथ सर्वप्रश्ने कार्यसिद्धेरवधिकथनम्- शीघ्रं चरस्थे स्थिरभे स्थिरत्वं द्वन्द्वे चिरात्स्पृष्टतनौ च चन्द्रे। कार्यस्य सिद्ध्यैरिपुरोगनाशो गमागमाद्येपरचक्रभीतिः।।२।। अथप्रश्नात्समीप दूरज्ञानम्- चरे दूरं विजानीयात् स्थिरे लाभं स्वमन्दिरे। द्विस्वभावे बहिर्लाभं ग्रहयोगवशाद्वदेत् ।।३।। अथ लाभप्रश्ने कस्यां दिशि लाभो भवेदित्यस्य ज्ञानम्। चरे लग्ने शुभदृष्टिःलाभे चन्द्र बलान्विते। त्रिकोणकेन्द्रगैः सौम्यैर्लाभो भवति तद्दिशः।।४।। केन्द्रगे यदि धर्मेशे शुभदृष्टियुतेऽपि वा।। धनुः संक्रमणे सकलशुभाना निषेधमाह- रविक्षेत्रगते भानौ भानुक्षेत्रगते गुरौ। गुर्वादित्यः स विज्ञेयः प्रवर्ज्यः सर्वकर्मसु।।

**पौषमासकृत्यम्**

*पौषमासेतु कौन्तेय एक भक्तेन यः क्षिपेत्।*
*सुभगोदर्शनीयश्च यशोभागी च जायते।।*
*( महाभारते )*
*प्रासाद नगरादीनि गृहप्रावरणानि च।*
*नारायणस्यतुष्ट्यर्थे पौषे देयानि यत्नतः।।*
*( वामनपुराणे )*

☞ *एक राशौ यदा यान्ति चत्वारःपञ्च वा ग्रहाः।*
*प्लावयन्ति महीं कृत्स्नां रुधिरेण जलेन वा।।*

# श्रीसंवत् २०७९ शकः १९४४ याम्यायनगोलयोः हेमन्तर्त्तुः।।

# पौषशुक्लपक्षः।।

राष्ट्रिय तिथि ३ पौषतः १६ तिथिं यावत् १९४४ शकः।। अंग्रेजी दिनांक २४ दिसम्बरतः दिनांक ६ जनवरीं यावत् सन् २०२२-२३ (पक्षेऽस्मिन् खरमासः।।)

| दि.मा. | घ.प. | ति. | वा. | घ. | प. | दि./रा. | घं. | मि. | नक्षत्र | घ. | प. | दि./रा. | घं. | मि. | योग | घ. | प. | दि./रा. | घं. | मि. | करण | घ. | प. | करण | घ. | प. | योगाः | अं. | फ. | सौ. | ने. | रा. | चन्द्र राशि | प्रवेशः | सूर्योदयः घं. | मि. | सूर्यास्तः घं. | मि. | औदयिक स्पष्ट सूर्यः | | | | क्रान्तिः द. | - | रे. अं. ∓ | मि. | चन्द्रास्तः स्टै. | टा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६ | ३ | १ | श | १७ | ५९ | दि | १ | ५९ | पू.षा. | ४५ | ४२ | रा | १ | ४ | वृद्धि | १२ | ३४ | दि | ११ | ४९ | वव | १७ | ५९ | वा | ४५ | ४ | मातङ्ग | २४ | १६ | ८ | ९ | ३ | मकर | ५९।४० | ६ | ४७ | ५ | १३ | ८ | ७ | ३८ | ४९ | २३ | २६ | - | ३ | ६ | १२ |
| २६ | ४ | २ | र | १२ | ९ | दि | ११ | ३९ | उ.षा. | ४१ | ३२ | रा | ११ | २४ | ध्रुव | ४ ५२ | ५६ ३ | प्रा | ८ ५ | ४१ ३० | कौ | १२ | ९ | तै | ३९ | १२ | अमृत | २५ | १७ | ९ | १० | ४ | | | ६ | ४७ | ५ | १३ | ८ | ८ | ४० | ११ | २३ | २५ | - | २ | ७ | २३ |
| २६ | ४ | ३ | चं | ६ | १५ | दि | ९ | १७ | श्रवण | ३७ | २३ | रा | ९ | ४४ | हर्षण | ४८ | ५९ | रा | २ | २३ | गर | ६ | १५ | व | ३३ | २१ | सिद्धि | २६ | १८ | १० | ११ | ५ | | | ६ | ४७ | ५ | १३ | ८ | ९ | ४१ | ३२ | २३ | २२ | - | २ | ८ | ३४ |
| २६ | ४ | ४ | मं | ० ५४ | २६ ३१ | प्रा | ६ ४ | ५७ ४६ | धनिष्ठा | ३३ | २८ | रा | ८ | १० | वज्र | ४१ | २० | रा | ११ | ११ | भ | ० | २६ | वव | २७ ५४ | ४२ ५७ | उत्पात | २७ | १९ | ११ | १२ | ६ | कुम्भ | ५।२६ | ६ | ४७ | ५ | १३ | ८ | १० | ४२ | ५५ | २३ | २२ | - | १ | ९ | ४१ |
| २६ | ५ | ६ | बु | ४९ | ५८ | रा | २ | ४६ | शतभिष | २९ | ५७ | सा | ६ | ४६ | सिद्धि | ३४ | ३ | सा | ८ | २४ | कौ | २२ | २८ | तै | ४९ | ५८ | मानस | २८ | २० | १२ | १३ | ७ | | | ६ | ४७ | ५ | १३ | ८ | ११ | ४४ | १८ | २३ | २० | - | १ | १० | ४४ |
| २६ | ५ | ७ | गु | ४५ | ४१ | रा | १ | ३ | पू.भा. | २७ | ४ | सा | ५ | ३७ | व्यतिपात | २७ | १९ | सा | ५ | ४३ | गर | १७ | ५० | व | ४५ | ४१ | मुद्गर | २९ | २१ | १३ | १४ | ८ | मीन | १२।४७ | ६ | ४७ | ५ | १३ | ८ | १२ | ४५ | ४२ | २३ | १६ | - | ० | ११ | ४३ |
| २६ | ६ | ८ | शु | ४२ | १६ | रा | ११ | ४१ | उ.भा. | २५ | ४ | दि | ४ | ४९ | वरीयान | २१ | १४ | दि | ३ | १७ | भ | १३ | ५९ | वव | ४२ | १६ | ध्वज | ३० | २२ | १४ | १५ | ९ | | | ६ | ४७ | ५ | १३ | ८ | १३ | ४७ | ६ | २३ | १४ | + | ० | १२ | ४० |
| २६ | ७ | ९ | श | ३९ | ५१ | रा | १० | ४३ | रेवती | २३ | ५५ | दि | ४ | २१ | परिघ | १५ | ५६ | दि | १ | ९ | वा | ११ | ४ | कौ | ३९ | ५१ | धाता | ३१ | २३ | १५ | १६ | १० | मेष | २३।५५ | ६ | ४७ | ५ | १३ | ८ | १४ | ४८ | ३१ | २३ | १० | + | १ | १ | ३७ |
| २६ | ७ | १० | र | ३८ | ३८ | रा | १० | १४ | अश्विनी | २३ | ५५ | दि | ४ | २१ | शिव | ११ | २७ | दि | ११ | २२ | तै | ९ | १५ | गर | ३८ | ३८ | आनन्द | १ | २४ | १६ | १७ | ११ | | | ६ | ४७ | ५ | १३ | ८ | १५ | ४९ | ५५ | २३ | ६ | + | १ | २ | ३३ |
| २६ | ८ | ११ | चं | ३८ | ४१ | रा | १० | १४ | भरणी | २५ | ५ | दि | ४ | ४८ | सिद्ध | ७ | ५८ | दि | ९ | ५७ | व | ८ | ४० | भ | ३८ | ४१ | चर | २ | २५ | १७ | १८ | १२ | वृष | ४०।४२ | ६ | ४६ | ५ | १४ | ८ | १६ | ५१ | २१ | २३ | १ | + | २ | ३ | ३० |
| २६ | ९ | १२ | मं | ४० | ४ | रा | १० | ४८ | कृत्तिका | २७ | ३४ | सा | ५ | ४८ | साध्य | ५ | २८ | दि | ८ | ५७ | वव | ९ | २३ | वा | ४० | ४ | गद | ३ | २६ | १८ | १९ | १३ | | | ६ | ४६ | ५ | १४ | ८ | १७ | ५२ | ४६ | २२ | ५६ | + | २ | ४ | २६ |
| २६ | ११ | १३ | बु | ४२ | ४१ | रा | ११ | ५० | रोहिणी | ३१ | १८ | रा | ७ | १७ | शुभ | ४ | २ | दि | ८ | २३ | कौ | ११ | २३ | तै | ४२ | ४१ | शुभ | ४ | २७ | १९ | २० | १४ | | | ६ | ४६ | ५ | १४ | ८ | १८ | ५४ | १२ | २२ | ५१ | + | ३ | ५ | २३ |
| २६ | १२ | १४ | गु | ४६ | २८ | रा | १ | २१ | मृगशिरा | ३६ | ८ | रा | ९ | १३ | शुक्ल | ३ | २४ | दि | ८ | ८ | ग | १४ | ३५ | व | ४६ | २८ | मृत्यु | ५ | २८ | २० | २१ | १५ | मिथुन | ३।४३ | ६ | ४६ | ५ | १४ | ८ | १९ | ५५ | ३७ | २२ | ४५ | + | ३ | ६ | १६ |
| २६ | १३ | १५ | शु | ५१ | ९ | रा | ३ | १४ | आर्द्रा | ४१ | ५० | रा | ११ | ३० | ब्रह्म | ३ | ४० | दि | ८ | १४ | भ | १८ | ४९ | वव | ५१ | ९ | पद्म | ६ | २९ | २१ | २२ | १६ | | | ६ | ४६ | ५ | १४ | ८ | २० | ५७ | २ | २२ | ३९ | + | ४ | - | - |

मकरराशिः (रा.शे. ६।३९)। चन्द्रदर्शनम्। मु. ३० समा। फलं समता। सौम्यशृंगं समर्घताकरम्। त्रिपुष्करयोगः ४५।४२ उ.।
मु. जमादिउसानी ६ हिजरी सन् १४४४। यायिजययोगः१२।९ उ. ४१।३२ या.। सर्वार्थसिद्धियोगः ४१।३२ या.। त्रिपुष्करयोगः १२।९ या.। रवियोगः ४१।३२ उ.।
भ. ३३।२१ उ. (रा. ८।७)। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रतम्। सर्वार्थसिद्धियोगः ३७।२३ या.। रवियोगः ३७।२३ या.।
भ. ०।२६ या. (प्रा. ६।५७)। कुम्भराशिः (दि. ८।५७)। पञ्चकारम्भः ५।२६(दि.८।५७)। रवियोगः ३३।२८ उ.।
अन्नरूपाषष्ठी व्रतम् (बंगाल)। यायि-स्थायि दुर्लभःसन्धिकरयोगः २९।५७ या.। रवियोगः २९।५७ या.।
भ. ४५।४१ उ. (रा. १।३)। मीनराशिः (दि. ११।५४)। श्रीगुरुगोविन्दसिंह जयन्ती (प्राचीनतम)। ⊙पूर्वाषाढा भे सूर्यः ३३।३१ (रा. ८।११)। यायिजययोगः
भ. १३।५९ या. (दि. १२।२३)। महाभद्राष्टमी ८ व्रतम्। सर्वार्थसिद्धियोगः२५।४ उ.। २७।४ उ. ४५।४१ या.।
मेषराशिः (दि. ४।२१)। पञ्चकनिवृत्तिः २३।५५ (दि. ४।२१)। यायिजययोगः २३।५५ या.। रवियोगः२३।५५ उ.।
साम्बदशमी (उड़ीसा)। जनवरी १ सन् २०२३ ई० प्रारम्भः। ईसाई नववर्षारम्भः। यायिजययोगः ३८।३८ उ.। सर्वार्थसिद्धियोगः २३।५५ या.। रवियोगःसमस्त।
भ.८।४० उ. (दि. १०।१४) ३८।४१ या. (रा. १०।१४)। वृषराशिः (रा. ११।३)। पुत्रदा ११ एकादशी व्रतं सर्वेषाम्। मन्वादिः ११। यायिजययोगः २५।५ या.।
कूर्मद्वादशी १२। स्थायिजययोगः२७।३४ या.। सर्वार्थसिद्धियोगः २७।३४ या.। त्रिपुष्करयोगः २७।३४ या.। रवियोगः २५।५ या.।
प्रदोष १३ व्रतम्। सर्वार्थसिद्धियोगः समस्त। रवियोगः ३१।१८ उ.। ❖दशाश्वमेधे प्रयागे वा स्नानं विधेयम्। प्रयाग माघमेला प्रारंभः। पुष्याभिषेक यात्रा।○
भ. ४६।२८ उ. (रा. १।२१)। मिथुनराशिः (दि. ८।१५)। श्रीगुरुगोविन्दसिंह जयन्ती (नवीनतम)। रवियोगः ३६।८ या.। ○ सर्वार्थसिद्धियोगः ४१।५० उ.।
भ. १८।४९ या. (दि. २।१८)। स्नान-दान-व्रतादौ १५ पूर्णिमा। शाकम्भरी जयन्ती। माघस्नान-व्रत-यम-नियमाद्यारम्भः। प्रतिदिनं अरुणोदये समुद्रे काश्यां ❖

## ॐ सूर्योदये दैनिकस्पष्टभौमादिग्रहाः ॐ

| ति. | वा. | वक्रीभौमः | | | | मार्गीबुधः | | | | गुरुः | | | | शुक्रः | | | | शनिः | | | | राहुः | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | श | १ | १९ | ५४ | ५६ | ८ | २४ | ५० | ४५ | ११ | ७ | ४३ | ३७ | ८ | २३ | २६ | १ | ९ | २३ | ४२ | ४९ | ० | १६ | १९ | २२ |
| २ | र | १ | १९ | ३२ | ३१ | ८ | २५ | १८ | २३ | ११ | ७ | ४९ | ४७ | ८ | २४ | ४१ | ३३ | ९ | २३ | ४७ | ५८ | ० | १६ | १६ | ११ |
| ३ | चं | १ | १९ | ४ | ३९ | ८ | २५ | २५ | ५९ | ११ | ७ | ५५ | ५७ | ८ | २५ | ५७ | ५ | ९ | २३ | ५३ | ८ | ० | १६ | १३ | ० |
| ४ | मं | १ | १८ | ५३ | ३९ | ८ | २५ | ३३ | ५८ | ११ | ८ | २ | ७ | ८ | २७ | १२ | ३७ | ९ | २३ | ५८ | १७ | ० | १६ | ९ | ४९ |
| ६ | बु | १ | १८ | ४२ | ३९ | ८ | २५ | ४१ | ५७ | ११ | ८ | ८ | १७ | ८ | २८ | २८ | ९ | ९ | २४ | ३ | २६ | ० | १६ | ६ | ३८ |
| ७ | गु | १ | १८ | ३१ | ३९ | व | २५ | ४९ | ५६ | ११ | ८ | १४ | २७ | ८ | २९ | ४३ | ४१ | ९ | २४ | ८ | ३५ | ० | १६ | ३ | २८ |
| ८ | शु | १ | १८ | २० | ३८ | ८ | २५ | ४१ | ३८ | ११ | ८ | २० | ३८ | ९ | ० | ५९ | १२ | ९ | २४ | १४ | २५ | ० | १६ | ० | १७ |
| ९ | श | १ | १८ | ९ | ३८ | ८ | २५ | १७ | ३१ | ११ | ८ | २६ | ५० | ९ | २ | १४ | ४४ | ९ | २४ | २० | २० | ० | १५ | ५७ | ६ |
| १० | र | १ | १७ | ५८ | ३८ | ८ | २४ | ५३ | ४६ | ११ | ८ | ३३ | २ | ९ | ३ | ३० | १६ | ९ | २४ | २६ | १५ | ० | १५ | ५३ | ५५ |
| ११ | चं | १ | १७ | ४७ | ३८ | ८ | २४ | ३० | १ | ११ | ८ | ३९ | १४ | ९ | ४ | ४५ | ४८ | ९ | २४ | ३२ | १० | ० | १५ | ५० | ४४ |
| १२ | मं | १ | १७ | ३६ | ३७ | ८ | २४ | ६ | १६ | ११ | ८ | ४५ | २६ | ९ | ६ | १ | २० | ९ | २४ | ३८ | ५ | ० | १५ | ४७ | ३४ |
| १३ | बु | १ | १७ | २५ | ३७ | ८ | २३ | २२ | ४२ | ११ | ८ | ५१ | ३८ | ९ | ७ | १६ | ५२ | ९ | २४ | ४४ | १ | ० | १५ | ४४ | २३ |
| १४ | गु | १ | १७ | १४ | ३७ | ८ | २२ | ३० | ४९ | ११ | ८ | ५८ | २८ | ९ | ८ | ३२ | २३ | ९ | २४ | ४९ | ५६ | ० | १५ | ४१ | १२ |
| १५ | शु | १ | १७ | ३ | ३६ | ८ | २१ | ३९ | ९ | ११ | ९ | ६ | ४९ | ९ | ९ | ४७ | ५५ | ९ | २४ | ५५ | ५१ | ० | १५ | ३८ | १ |

*भौमादीनाञ्चारः- वक्रीभौमः- रोहिण्याम्।। मार्गीबुधः- ति. ७ गुरौ वक्री २९।२५ (सा. ६।३३)।। गुरुः- उत्तराभाद्रपदा २ चरणे ।। शुक्रः- ति. ३ सोमे उत्तराषाढ़ा भे ३४।५ (रा. ८।२५)। ति. ७ गुरौ मकरे १२।५८(दि. ११।५८) । ति.१५ शुक्रे श्रवणे ९।३६ (दि. १०।३६)।। शनिः- धनिष्ठा १ चरणे ।। राहुः-भरणी १ चरणे केतुश्च स्वाती ३ चरणे ।।*

### ३७ पं० पौषशुक्ल ८ शुक्रे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।

द्युगणः २९०८

अयनांशाः २४।९।४५

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८ | ११ | १ | ८ | ११ | ९ | ९ | ० | ६ |
| १३ | १० | १८ | २५ | ८ | ० | २४ | १६ | १६ |
| ४७ | ५४ | २० | ४१ | २० | ५९ | १४ | ० | ० |
| ६ | १३ | ३८ | ३८ | ३८ | १२ | २५ | १७ | १७ |
| ६१ | ८२४ | ११ | ८ | ६ | ७५ | ५ | ३ | ३ |
| २५ | ३५ | ० | १८ | १२ | ३२ | ५५ | ११ | ११ |
| | | व. | व. | | | | | |

शु.१०श. | ८ | ११ | सू. ९ बु. | ७ के. | चं. १२ गु. | ६ | १ रा. | ३ | ५ | २ मं. | ४

पक्षेऽस्मिन् विविधमुहूर्त्ताः- ति. १ शनौ पू.पा. भे सूर्यभोग्यम्। ति. २ रवौ उ.पा. भे पुंसवनसीमन्त सूतीस्नान शय्यासनाद्युपभोग सुभगांविनानववस्त्रधारण भूपाघटन लतापादपारोपण शिल्पविद्या नौकाघटन विपणि धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ३ सोमे दि. ९।१७ या. श्रवणे जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन दक्षिण दिग्यात्रा कणमर्दन भैषज्य वस्तुक्रय गजकृत्य धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ४ भौमे धनिष्ठा भे शनियुतिः। चतुर्थ्यां रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। ति. ६ बुधे शतभिषजि केतुवेधः। ति. ७ गुरौ पू.भा. भे व्यतिपातः। व्यतिपातात्परं (सा. ५।४३) उ.भा. भे सप्तम्यां गर्भाधान शय्यासनाद्युपभोग सुभगांविनानववस्त्रधारण लतापादपारोपण नौकाघटन विपणि मुहूर्त्तः। ति. ८ शुक्रे विष्टेःपरं (दि. १२।२३) उ.भा. भे शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन शय्यासनाद्युपभोग सुभगांविनानववस्त्रधारण लतापादपारोपण नौकाघटन विपणि धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। दि. ४।४९ उ. अष्टम्यां रेवत्यां नववस्त्रधारण लतापादपारोपण कणमर्दन भैषज्य वस्तुक्रय गजाश्वकृत्य मुहूर्त्तः। ति. ९ शनौ रेवत्यां रिक्तादोषः। ति. १० रवौ अश्विन्यां सूतीस्नान शय्यासनाद्युपभोग नववस्त्रधारण भूपाघटन लतापादपारोपण गोक्रय-विक्रय पश्चिमांविनान्यदिग्यात्रा शिल्पविद्या भैषज्य विपणि वस्तुक्रय गजाश्वकृत्य शिरामोक्षण मुहूर्त्तः। ति. ११ सोमे भरण्यां राहुयुतिः विष्टिश्च। ति. १२ भौमे कृत्तिका भे भूपाघटन वस्तुविक्रय शस्त्रघटन मुहूर्त्तः। ति. १३ बुधे रोहिण्यां भौमयुतिः। रा. ७।१७ उ. त्रयोदश्यां मृगे गर्भाधान पूर्व-दक्षिण दिग्यात्रा भैषज्य गजाश्वकृत्य मुहूर्त्तः। ति. १४ गुरौ मृगे रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। ति. १५ शुक्रे आर्द्रा भे सूर्यवेधः।

| तिथि ल.अ. | १ श घं. | मि. | २ र घं. | मि. | ३ चं घं. | मि. | ४ मं घं. | मि. | ६ बु घं. | मि. | ७ गु घं. | मि. | ८ शु घं. | मि. | ९ श घं. | मि. | १० र घं. | मि. | ११ चं घं. | मि. | १२ मं घं. | मि. | १३ बु घं. | मि. | १४ गु घं. | मि. | १५ शु घं. | मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| धनु | ८ | २० | ८ | १६ | ८ | १२ | ८ | ७ | ८ | ३ | ७ | ५९ | ७ | ५५ | ७ | ५० | ७ | ४६ | ७ | ४२ | ७ | ३७ | ७ | ३२ | ७ | २८ | ७ | २३ |
| मकर | १० | ७ | १० | २ | ९ | ५८ | ९ | ५४ | ९ | ५० | ९ | ४६ | ९ | ४२ | ९ | ३७ | ९ | ३३ | ९ | २९ | ९ | २४ | ९ | १९ | ९ | १५ | ९ | १० |
| कुम्भ | ११ | ३८ | ११ | ३४ | ११ | ३० | ११ | २५ | ११ | २१ | ११ | १७ | ११ | १३ | ११ | ८ | ११ | ४ | ११ | ० | १० | ५५ | १० | ५० | १० | ४६ | १० | ४१ |
| मीन | १ | ६ | १ | २ | १२ | ५८ | १२ | ५३ | १२ | ४९ | १२ | ४५ | १२ | ४१ | १२ | ३६ | १२ | ३२ | १२ | २८ | १२ | २३ | १२ | १८ | १२ | १४ | १२ | ९ |
| मेष | २ | ४३ | २ | ३९ | २ | ३५ | २ | ३० | २ | २६ | २ | २२ | २ | १८ | २ | १३ | २ | ९ | २ | ५ | २ | ० | १ | ५५ | १ | ५१ | १ | ४६ |
| वृष | ४ | ३९ | ४ | ३५ | ४ | ३१ | ४ | २६ | ४ | २२ | ४ | १८ | ४ | १४ | ४ | ९ | ४ | ५ | ४ | १ | ३ | ५६ | ३ | ५१ | ३ | ४७ | ३ | ४२ |
| ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | |
| मिथुन | ६ | ५३ | ६ | ४९ | ६ | ४५ | ६ | ४० | ६ | ३६ | ६ | ३२ | ६ | २८ | ६ | २३ | ६ | १९ | ६ | १५ | ६ | १० | ६ | ५ | ६ | १ | ५ | ५६ |
| कर्क | ९ | ११ | ९ | ७ | ९ | ३ | ८ | ५८ | ८ | ५४ | ८ | ५० | ८ | ४६ | ८ | ४१ | ८ | ३७ | ८ | ३३ | ८ | २८ | ८ | २३ | ८ | १९ | ८ | १४ |
| सिंह | ११ | २५ | ११ | २१ | ११ | १७ | ११ | १२ | ११ | ८ | ११ | ४ | ११ | ० | १० | ५५ | १० | ५१ | १० | ४७ | १० | ४२ | १० | ३७ | १० | ३३ | १० | २८ |
| कन्या | १ | ३८ | १ | ३४ | १ | ३० | १ | २५ | १ | २१ | १ | १७ | १ | १३ | १ | ८ | १ | ४ | १ | ० | १२ | ५५ | १२ | ५० | १२ | ४६ | १२ | ४१ |
| तुला | ३ | ५४ | ३ | ५० | ३ | ४६ | ३ | ४१ | ३ | ३७ | ३ | ३३ | ३ | २९ | ३ | २४ | ३ | २० | ३ | १६ | ३ | ११ | ३ | ६ | ३ | २ | २ | ५७ |
| वृश्चिक | ६ | ११ | ६ | ७ | ६ | ३ | ५ | ५८ | ५ | ५४ | ५ | ५० | ५ | ४६ | ५ | ४१ | ५ | ३७ | ५ | ३३ | ५ | २८ | ५ | २३ | ५ | १९ | ५ | १४ |

### ३८ पं० पौषशुक्ल १५ शुक्रे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।

द्युगणः २९१५

अयनांशाः २४।९।४६

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८ | २ | १ | ८ | ११ | ९ | ९ | ० | ६ |
| २० | ११ | १७ | २१ | ९ | ९ | २४ | १५ | १५ |
| ५७ | ३० | ३ | ३९ | ६ | ४७ | ५५ | ३८ | ३८ |
| २ | ४० | ३६ | ९ | ४२ | ५५ | ५१ | १ | १ |
| ६१ | ७३० | ११ | ५१ | ८ | ७५ | ५ | ३ | ३ |
| २४ | ३६ | ० | ४० | २५ | ३२ | ५४ | ११ | ११ |
| | | व. | व. | | | | | |

शु. १०श. | ८ | ११ | सू. ९ बु. | के.७ | १२ गु. | ६ | १ रा. | ३ चं. | ५ | २ मं. | ४

मूलविचार-रेवती/अश्विनी- ति.८ शुक्रे २५।४ (दि. ४।४९)उ.। ति. १० रवौ २३।५५ (दि. ४।२१) या.।
पञ्चक विचार-ति. ४ भौमे ५।२६ (दि. ८।५७)उ.। ति. ९ शनौ २३।५५ (दि. ४।२१) या.।

**अथान्यद्भावकारकविमर्शः।** जनुर्लग्नञ्च विद्याद्वै आत्मकारकमेव च। धनभावं विजानीयाद्दाराकारकमेव च।।१।। एकादशे ज्येष्ठभ्रातुस्तृतीये च कनिष्ठकः। सुते सुतं विजानीयत्ततः सप्तम भावतः।।२।। सुतस्थाने ग्रहस्थिष्ठेत्सोऽपि कारक उच्यते।।३।। लाभं तृतीयं रन्ध्रञ्च शत्रुं स्वं च व्ययन्तथा। एषां योगेन यो भावस्तन्नाशं प्राप्नुयाद्ध्रुवम्।।४।। चत्वारो राशयो होते केन्द्रकोण शुभावहाः। तेषां संयोगमात्रेण ह्यशुभोऽपि शुभो भवेदिति। **भूमिशयने परिहारः-** प्रद्योतनात्पञ्चनगाङ्क- सूर्यनवेन्दुषड्विंशतिभेषु भेषु। शेते महीत्यत्र। **परिहारः वास्तुभूषणे-** स्यान्नाडी शयने शशिमिता १ तुर्ये ४ स्तथार्के १२ र्मिता। ऋक्षै २७ भूपतिभि १६ र्नगैः ७ परमिते शेषे भवेज्जागृतिः।। अन्यच्चः- वेदाष्ट पञ्चाग्निरसाद्रिघट्यः शेते महीतद्दिनभेषु तेषु। प्रद्योतनात् ५।७।९।१२।१९।२६ भेष्वाद्याः घट्यः क्रमशो ज्ञेयाः। **पौषपूर्णिमातोमाघस्नानमन्त्राः।** दुःखदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च। प्रातः स्नानं करोम्यद्य माघे पाप विनाशने। मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युतमाधव स्नानेनानेन मे देव यथोक्तफलदो भव।। मंत्राविमौ पठन्। **स्नानयत्ततोऽर्घ्यदानमन्त्रः-** सवित्रे प्रसवित्रे च परं धाम जले मम। त्वत्तेजसा परिभ्रष्टं पापं यातु सहस्रधा।। ततस्तर्पणादिकं कर्त्तव्यमिति। **अथ निधनंचन्द्रज्ञानमाह।** अष्टमेशत्रिकोणे विधुः स्याद्यदायोगमिन्दोस्तदा तन्नवांशेपिवा। तत् त्रिकोणेपि याते मृतिंनिर्दिशेन्निश्चयात्स्वल्परेखोद्भवे वासरे इति। **निधिप्रश्नविचारः-** जीवेन्दुलग्नगौ स्यातां सुखे जीवे च भार्गवे। निधिरस्ति भवेल्लाभः कृते यत्नेऽत्रवत्सरे।। चन्द्रज्ञगुरुशुक्राणामेकोऽपि यदि वेश्मगः। स्वीयं वा परकीयं वा सदसल्लभते निधिमिति।

# श्रीसंवत् २०७९ शकः १९४४ याम्यायनगोलयोः हेमन्तर्त्तुः।।

# माघकृष्णपक्षः।।

राष्ट्रिय तिथि १७ पौषतः तिथि १ माघं यावत् १९४४ शकः।।
अंग्रेजी दिनांक ७ जनवरीतः २१ दिनांकं यावत् सन् २०२३ ई.।।

| दि.मा. घ. | प. | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | योगाः | अं. | फ. | सौ. | ने. | रा. | चन्द्र राशि | प्रवेशः | सूर्योदयः घं. | मि. | सूर्यास्तः घं. | मि. | औदयिक स्पष्ट सूर्यः | | | | क्रान्तिः द. | – | रे. अं. + | मि. | चन्द्रोदयः स्टै. | टा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६ | १४ | १ | श | ५६ | २६ | रा | ५ | १९ | पुनर्वसु | ४८ | ९ | रा | २ | १ | ऐन्द्र | ४ | ३२ | दि | ८ | ३४ | वा | २३ | ४८ | कौ | ५६ | २६ | छत्र | ७ | १ | २२ | २३ | १७ | कर्क | ३१।३४ | ६ | ४५ | ५ | १५ | ८ | २१ | ५८ | २६ | २२ | ३१ | + | ४ | ५ | ४० |
| २६ | १६ | २ | र | ६० | ० | स | म | स्त | पुष्य | ५४ | ४३ | रा | ४ | ३८ | वैधृति | ५ | ४७ | दि | ९ | ४ | तै | २९ | १० | गर | ६० | ० | श्रीवत्स | ८ | २ | २३ | २४ | १८ | | | ६ | ४५ | ५ | १५ | ८ | २२ | ५९ | ५१ | २२ | २४ | + | ४ | ६ | ३४ |
| २६ | १८ | २ | चं | १ | ५४ | प्रा | ७ | ३१ | श्लेषा | ६० | ० | स | म | स्त | विष्कुम्भ | ७ | ८ | दि | ९ | ३६ | गर | १ | ५४ | व | ३४ | ३० | सौम्य | ९ | ३ | २४ | २५ | १९ | | | ६ | ४५ | ५ | १५ | ८ | २४ | १ | १५ | २२ | १६ | + | ५ | ७ | २९ |
| २६ | १९ | ३ | मं | ७ | ५ | दि | ९ | ३५ | श्लेषा | १ | ५ | दि | ७ | ११ | प्रीति | ८ | १४ | दि | १० | ३ | भ | ७ | ५ | वव | ३९ | २२ | आनन्द | १० | ४ | २५ | २६ | २० | सिंह | १।५ | ६ | ४५ | ५ | १५ | ८ | २५ | २ | ३८ | २२ | ८ | + | ५ | ८ | २२ |
| २६ | २० | ४ | बु | ११ | ३८ | दि | ११ | २३ | मघा | ६ | ५० | दि | ९ | २८ | आयुष्मान | ८ | ५३ | दि | १० | १७ | वा | ११ | ३८ | कौ | ४३ | २६ | चर | ११ | ५ | २६ | २७ | २१ | | | ६ | ४४ | ५ | १६ | ८ | २६ | ४ | १ | २१ | ५९ | + | ६ | ९ | १५ |
| २६ | २२ | ५ | गु | १५ | १४ | दि | १२ | ५० | पू.फा. | ११ | ४३ | दि | ११ | २५ | सौभाग्य | ८ | ४८ | दि | १० | १५ | तै | १५ | १४ | गर | ४६ | २८ | गद | १२ | ६ | २७ | २८ | २२ | कन्या | २७।४० | ६ | ४४ | ५ | १६ | ८ | २७ | ५ | २३ | २१ | ५० | + | ६ | १० | ७ |
| २६ | २४ | ६ | शु | १७ | ४२ | दि | १ | ४९ | उ.फा. | १५ | ३२ | दि | १२ | ५७ | शोभन | ७ | ५० | दि | ९ | ५२ | व | १७ | ४२ | भ | ४८ | १७ | शुभ | १३ | ७ | २८ | २९ | २३ | | | ६ | ४४ | ५ | १६ | ८ | २८ | ६ | ४४ | २१ | ४० | + | ६ | १० | ५९ |
| २६ | २६ | ७ | श | १८ | ५२ | दि | २ | १६ | हस्त | १८ | ५ | दि | १ | ५७ | अतिगण्ड | ५ | ५५ | दि | ९ | ५ | वव | १८ | ५२ | वा | ४८ | ४७ | मृत्यु | १४ | ८ | २९ | ३० | २४ | तुला | ४८।४३ | ६ | ४३ | ५ | १७ | ८ | २९ | ८ | ५ | २१ | ३० | + | ७ | ११ | ५३ |
| २६ | २८ | ८ | र | १८ | ४२ | दि | २ | ११ | चित्रा | १९ | २१ | दि | २ | २६ | सुकर्मा | ३/५६ | ६/८ | प्रा | ७/६ | ४४/३० | कौ | १८ | ४२ | तै | ४८ | ० | पद्म | १५ | ९ | १ | १ | २५ | | | ६ | ४२ | ५ | १८ | ९ | ० | ९ | २६ | २१ | १९ | + | ७ | १२ | ४९ |
| २६ | ३० | ९ | चं | १७ | १८ | दि | १ | ३७ | स्वाती | १९ | २६ | दि | २ | २८ | शूल | ५४ | १४ | रा | ४ | २४ | गर | १७ | १८ | व | ४६ | २ | छत्र | १६ | १० | २ | २ | २६ | | | ६ | ४२ | ५ | १८ | ९ | १ | १० | ४६ | २१ | ८ | + | ७ | १ | ५० |
| २६ | ३२ | १० | मं | १४ | ४५ | दि | १२ | ३६ | विशाखा | १८ | २१ | दि | २ | २ | गण्ड | ४८ | ३३ | रा | २ | ७ | भ | १४ | ४५ | वव | ४२ | ५८ | श्रीवत्स | १७ | ११ | ३ | ३ | २७ | वृश्चिक | ३।३७ | ६ | ४२ | ५ | १८ | ९ | २ | १२ | ५ | २० | ५७ | + | ७ | २ | ५५ |
| २६ | ३४ | ११ | बु | ११ | ११ | दि | ११ | ९ | अनुराधा | १६ | २३ | दि | १ | १४ | वृद्धि | ४२ | १२ | रा | ११ | ३४ | वा | ११ | ११ | कौ | २९ | ० | सौम्य | १८ | १२ | ४ | ४ | २८ | | | ६ | ४१ | ५ | १९ | ९ | ३ | १३ | २३ | २० | ४६ | + | ८ | ४ | ३ |
| २६ | ३६ | १२ | गु | ६ | ४८ | दि | ९ | २४ | ज्येष्ठा | १३ | ३५ | दि | १२ | ७ | ध्रुव | ३५ | १४ | रा | ८ | ४७ | तै | ६ | ४८ | गर | ३४ | १६ | कालदण्ड | १९ | १३ | ५ | ५ | २९ | धनु | १३।३५ | ६ | ४१ | ५ | १९ | ९ | ४ | १४ | ४१ | २० | ३४ | + | ८ | ५ | १२ |
| २६ | ३८ | १३ | शु | १/५४ | ४३/२८ | प्रा | ७/८ | २१/८ | मूल | १० | ६ | दि | १० | ४२ | व्याघात | २७ | ४९ | सा | ५ | ४८ | व | १ | ४३ | भ | २८/५६ | ५७/११ | सुस्थिर | २० | १४ | ६ | ६ | ३० | | | ६ | ४० | ५ | २० | ९ | ५ | १५ | ५९ | २० | २१ | + | ८ | ६ | १७ |
| २६ | ४१ | ३० | श | ५० | २२ | रा | २ | ४९ | पू.षा. | ६ | १३ | दि | ९ | ९ | हर्षण | २० | ५ | दि | २ | ४२ | च | २३ | १७ | नाग | ५० | २२ | मातङ्ग | २१ | १५ | ७ | ७ | १ | मकर | २०।११ | ६ | ४० | ५ | २० | ९ | ६ | १७ | १४ | २० | ८ | + | ९ | – | – |

कर्कराशिः (रा.७।२३)। यत्र कुत्रापि यो माघेस्मरणन्वितः। करोति मज्जनं तीर्थे सलभेत् गाङ्गमज्जनम्। माघेमूलकं◆
सर्वार्थसिद्धियोगः५४।४३ या.।
भ. ३४।३० उ. (रा. ८।३३)। यायिजययोगः१।५४ उ.।
भ. ७।५ या.(दि. ९।३५)। सिंहराशिः (दि. ७।११)। संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रतम्। चन्द्रोदयः (रा. ८।२२)।
☉उत्तराषाढा भे सूर्यः ३५।११ (रा. ८।४८)।
कन्याराशिः (सा. ५।४८)। यायिजययोगः११।४३ उ. १५।१४ या.।
भ. १७।४२ उ. (दि. १।४९)४८।१७ या. (रा. २।३)। रवियोगः१५।३२ उ.।
तुलाराशिः (रा. २।१२)। श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती ७। ☉सं.मकरे सूर्यः ५०।४६(रा. ३।१)। मु.३० समा।
अष्टकाश्राद्धम्। सूर्योदयात् सूर्यास्तं यावत् *मकरसंक्रान्तिजन्य पुण्यकालः।* कृसरान्नमुद्गमोदकादिदानम्। प्रयागे♍
भ. ४६।२ उ. (रा. १।७)। अन्वष्टका श्राद्धम्। मृत्युबाणनिवृत्तिः४८।११(रा. १।५८)। यायिजययोगः१७।१८ या.।❖
भ. १४।४५ या.(दि.१२।३६)। वृश्चिकराशिः (दि. ८।९)। ◆ (मूली) भक्षणं न कार्यम्। मासपर्यंत स्नाने प्यशक्तत्र्यहं एकाहं वा स्यात्। यायिजययोगः४८।९ या.।
षट्तिला ११ एकादशी व्रतं सर्वेषाम्। सर्वार्थामृतसिद्धियोगः१६।२३ या.। ❖ यमघंटयोगः१९।२६ उ.।
धनूराशिः (दि. १२।७)। प्रदोष १२ व्रतम्। तिलद्वादशी १२। अत्रतिलोत्पत्तिः।
भ. १।४३ उ. (दि.७।२१)२८।५७ या. (सा. ६।१५)। मासशिवरात्रि १४ व्रतम्। ☉सायन कुम्भे सूर्यः ३३।३१(रा.८।४)। स्थायिजययोगः१०।६ उ.५६।११ या.।
मकरराशिः (दि. २।४४)। स्नान-दान-श्राद्धादौ ३० अमावस्या। मौनी अमावस्या। प्रयागे काश्यां दशाश्वमेधे समुद्रे वा मौन व्रताचरणेन स्नानं विधेयम्।

**।। विवाहमुहूर्त्तपञ्चेष्टलग्नविमर्शः।।**

ति. ८ रवौ दि. २।२६ उ. स्वात्यां केतुयुतिः मृत्युबाणश्च।
ति. ९ सोमे स्वात्यां पूर्वदोषः।
ति. १० भौमे दि.२।२ उ. मैत्रे राहुवेधः।
ति. ११ बुधे मैत्रे पूर्वदोषः।
ति. १२ गुरौ दि.१२।७ उ. मूले रे.९ ल.गोधूलिःवा ल. ९ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. १० परं मासान्तादिदोषः।

## ॐ सूर्योदये दैनिकस्पष्टभौमादिग्रहाः ॐ

| ति. | वा. | वक्रीभौमः | | | | वक्रीबुधः | | | | गुरुः | | | | शुक्रः | | | | शनिः | | | | राहुः | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | श | १ | १६ | ५२ | ३६ | ८ | २० | ४७ | २९ | ११ | ९ | १५ | १४ | ९ | ११ | ३ | २७ | ९ | २५ | १ | ४५ | ० | १५ | ३४ | ५० |
| २ | र | १ | १६ | ४१ | ३६ | ८ | १९ | ५५ | ४९ | ११ | ९ | २३ | ४१ | ९ | १२ | १८ | ५९ | ९ | २५ | ७ | ३९ | ० | १५ | ३१ | ४० |
| २ | चं | १ | १६ | ३० | ३६ | ८ | १९ | ४ | ९ | ११ | ९ | ३२ | ७ | ९ | १३ | ३४ | ३१ | ९ | २५ | १३ | ३२ | ० | १५ | २८ | २९ |
| ३ | मं | १ | १६ | १९ | ३५ | ८ | १८ | ६ | ३३ | ११ | ९ | ४० | ३४ | ९ | १४ | ५० | ३ | ९ | २५ | १९ | २६ | ० | १५ | २५ | १८ |
| ४ | बु | मा | १६ | ८ | ३५ | ८ | १७ | २० | ४९ | ११ | ९ | ४९ | ० | ९ | १६ | ५ | ३५ | ९ | २५ | २५ | १९ | ० | १५ | २२ | ७ |
| ५ | गु | १ | १६ | ११ | ३८ | ८ | १६ | २९ | ९ | ११ | ९ | ५७ | २७ | ९ | १७ | २१ | ६ | ९ | २५ | ३१ | १३ | ० | १५ | १८ | ५६ |
| ६ | शु | १ | १६ | १९ | ३८ | ८ | १५ | ३८ | ४४ | ११ | १० | ५ | ५३ | ९ | १८ | ३६ | ३८ | ९ | २५ | ३७ | ६ | ० | १५ | १५ | ४६ |
| ७ | श | १ | १६ | २७ | ३८ | ८ | १५ | १५ | ३८ | ११ | १० | १४ | २० | ९ | १९ | ५२ | १० | ९ | २५ | ४३ | १ | ० | १५ | १२ | ३५ |
| ८ | र | १ | १६ | ३५ | ३९ | ८ | १४ | ५१ | ५३ | ११ | १० | २२ | ४६ | ९ | २१ | ७ | ४२ | ९ | २५ | ४९ | ४९ | ० | १५ | ९ | २४ |
| ९ | चं | १ | १६ | ४३ | ३९ | ८ | १४ | २८ | ८ | ११ | १० | ३१ | १३ | ९ | २२ | २३ | १४ | ९ | २५ | ५६ | २८ | ० | १५ | ६ | १३ |
| १० | मं | १ | १६ | ५१ | २३ | ८ | १४ | ४ | २३ | ११ | १० | ३९ | ३९ | ९ | २३ | ३८ | ४६ | ९ | २६ | ३ | ८ | ० | १५ | ३ | २३ |
| ११ | बु | १ | १६ | ५८ | ४९ | मा | १३ | ४८ | १ | ११ | १० | ४८ | ६ | ९ | २४ | ५४ | १८ | ९ | २६ | ९ | ४७ | ० | १४ | ५९ | ५२ |
| १२ | गु | १ | १७ | ६ | १५ | ८ | १३ | ५६ | ३२ | ११ | १० | ५६ | ३२ | ९ | २६ | ९ | ४९ | ९ | २६ | १६ | २७ | ० | १४ | ५६ | ४१ |
| १३ | शु | १ | १७ | १३ | ४० | ८ | १४ | ४ | ३१ | ११ | ११ | ४ | ५९ | ९ | २७ | २५ | ९ | ९ | २६ | २३ | ६ | ० | १४ | ५३ | ३० |
| ३० | श | १ | १७ | २१ | ६ | ८ | १४ | १२ | ३० | ११ | ११ | १३ | २५ | ९ | २८ | ४० | २५ | ९ | २६ | २९ | ४६ | ० | १४ | ५० | १९ |

*भौमादीनाञ्चारः:- वक्रीभौमः- ति.४ बुधे मार्गी ४६।५८(रा.१।३१)।। वक्रीबुधः- ति.११बुधे मार्गी ३९।२८ (रा. १०।२८)।। गुरुः- ति. ५ गुरौ उत्तराभाद्रपदा ३ चरणे १८।९(दि. २।०)।। शुक्रः- ति. ९ सोमे धनिष्ठा भे ४५।६ (रा. १२।४४)।। शनिः- धनिष्ठा १ चरणे ।। राहुः-भरणी १ चरणे केतुश्च स्वाती ३ चरणे ।।*

*सौरश्चवारे रविसंक्रमश्चेद्दुर्भिक्षमायाति च सर्वधान्यम्।*
*पृथ्वी सरोगानृपतेः प्रजासुभवेन्महायुद्ध भयं तदानीम्।।*

### ३९ पं० माघकृष्ण ८ रवौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।

द्युगणः २९२४
अयनांशाः २४।९।४७

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९ | ६ | १ | ८ | ११ | ९ | ९ | ० | ६ |
| ० | २ | १६ | १४ | १० | २१ | २५ | १५ | १५ |
| ९ | २७ | ३५ | ५१ | २२ | ७ | ४९ | ९ | ९ |
| २६ | २० | ३१ | ५३ | ४६ | ४२ | ४९ | २४ | २४ |
| ६१ | ७८३ | ८ | २३ | ८ | ७५ | ६ | ३ | ३ |
| २० | २८ | ० | ४५ | २७ | ३२ | २३ | ११ | ११ |
| | मा. | व. | | | | | | |

११ | ९ बु. | सू. | १२गु. | शु.१० श. | ८ | १ रा. | चं. ७ के. | २ मं. | ४ | ६ | ३ | ५

पक्षेऽस्मिन् विविधमुहूर्त्ताः- ति. १ शनौ पुनर्वसौ सूर्यवेधावसाने न चन्द्रभुक्तमशुभम् वैधृतिश्च। ति. २ रवौ वैधृतेः परं ( दि. ९।४) पुष्ये पुंसवनसीमन्त शय्यासनाद्युपभोग सुभगांविनानववस्त्रधारण भूपाघटन लतापादपारोपण गोक्रय-विक्रय पश्चिमांविनान्यदिग्यात्रा नवान्नभक्षण शिल्पविद्या भैषज्य नौकाघटन विपणि गजाश्वकृत्य शिरामोक्षण धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. २ सोमे श्लेषा भे वस्तुविक्रय धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ३ भौमे श्लेषा भे विष्टिततो रिक्तादोषः। ति. ४ बुधे रिक्तोत्तरं (दि. ११।२३) पू.फा. भे कणमर्दन वस्तुविक्रय मुहूर्त्तः। ति. ५ गुरौ पू.फा. भे कणमर्दन नौकाघटन वस्तुविक्रय मुहूर्त्तः। दि. ११।२५ उ. उ.फा. भे अन्नप्राशन (पंचम्यां) सूतीस्नान (पंचम्यां) शय्यासनाद्युपभोग सुभगांविनानववस्त्रधारण लतापादपारोपण शिल्पविद्या विपणि धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ६ शुक्रे उ.फा. भे जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन शय्यासनाद्युपभोग सुभगांविनानववस्त्रधारण लतापादपारोपण कणमर्दन शिल्पविद्या नौकाघटन विपणि धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। दि. १२।५७ उ. हस्ते विष्टेःपूर्वं (दि. १।४९) नववस्त्रधारण गोक्रय-विक्रय भैषज्य गजाश्वकृत्य धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ७ शनौ हस्ते कृष्णवस्त्रधारण पूर्वांविनान्यदिग्यात्रा गजाश्वकृत्य मुहूर्त्तः। ति. ८ रवौ चित्रा भे दि. २। ११ या. शय्यासनाद्युपभोग नववस्त्रधारण लतापादपारोपण नवान्नभक्षण भैषज्य नौकाघटन विपणि वस्तुक्रय गजाश्वकृत्य शिरामोक्षण धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति.९ सोमे स्वात्यां केतुयुतिःरिक्तादोषश्च। विशाखा भे शनिवेधः। ति. १० भौमे विशाखा भे पूर्वदोषो विष्टिश्च। दि.२।२ उ. मैत्रे रक्तवस्त्रधारण☞

| तिथि | १ श | | २ र | | २ चं | | ३ मं | | ४ बु | | ५ गु | | ६ शु | | ७ श | | तिथि | ८ र | | ९ चं | | १० मं | | ११ बु | | १२ गु | | १३ शु | | ३० श | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ल.अ. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | ल.अ. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. |
| धनु | ७ | १८ | ७ | १४ | ७ | ९ | ७ | ५ | ७ | ० | ६ | ५५ | ६ | ५१ | ६ | ४७ | मकर | ८ | २८ | ८ | २४ | ८ | २० | ८ | १६ | ८ | १२ | ८ | ८ | ८ | ४ |
| मकर | ९ | ५ | ९ | १ | ८ | ५६ | ८ | ५२ | ८ | ४७ | ८ | ४२ | ८ | ३८ | ८ | ३३ | कुम्भ | ९ | ५९ | ९ | ५५ | ९ | ५१ | ९ | ४७ | ९ | ४३ | ९ | ३९ | ९ | ३५ |
| कुम्भ | १० | ३६ | १० | ३२ | १० | २७ | १० | २३ | १० | १८ | १० | १३ | १० | ९ | १० | ४ | मीन | ११ | २७ | ११ | २३ | ११ | १९ | ११ | १५ | ११ | ११ | ११ | ७ | ११ | ३ |
| मीन | १२ | ४ | १२ | ० | ११ | ५५ | ११ | ५१ | ११ | ४६ | ११ | ४१ | ११ | ३७ | ११ | ३२ | मेष | १ | ४ | १ | ० | १२ | ५६ | १२ | ५२ | १२ | ४८ | १२ | ४४ | १२ | ४० |
| मेष | १ | ४१ | १ | ३७ | १ | ३२ | १ | २७ | १ | २३ | १ | १८ | १ | १४ | १ | ९ | वृष | ३ | ० | २ | ५६ | २ | ५२ | २ | ४८ | २ | ४४ | २ | ४० | २ | ३६ |
| वृष | ३ | ३७ | ३ | ३३ | ३ | २८ | ३ | २४ | ३ | १९ | ३ | १४ | ३ | १० | ३ | ५ | मिथुन | ५ | १४ | ५ | १० | ५ | ६ | ५ | २ | ४ | ५८ | ४ | ५४ | ४ | ५० |
| ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | |
| मिथुन | ५ | ५१ | ५ | ४७ | ५ | ४२ | ५ | ३८ | ५ | ३३ | ५ | २८ | ५ | २४ | ५ | १९ | कर्क | ७ | ३२ | ७ | २८ | ७ | २४ | ७ | २० | ७ | १६ | ७ | १२ | ७ | ८ |
| कर्क | ८ | ९ | ८ | ५ | ८ | ० | ७ | ५६ | ७ | ५१ | ७ | ४६ | ७ | ४२ | ७ | ३७ | सिंह | ९ | ४६ | ९ | ४२ | ९ | ३८ | ९ | ३४ | ९ | ३० | ९ | २६ | ९ | २२ |
| सिंह | १० | २३ | १० | १९ | १० | १४ | १० | १० | १० | ५ | १० | ० | ९ | ५६ | ९ | ५१ | कन्या | ११ | ५९ | ११ | ५५ | ११ | ५१ | ११ | ४७ | ११ | ४३ | ११ | ३९ | ११ | ३५ |
| कन्या | १२ | ३६ | १२ | ३२ | १२ | २७ | १२ | २३ | १२ | १८ | १२ | १३ | १२ | ९ | १२ | ४ | तुला | २ | १५ | २ | ११ | २ | ७ | २ | ३ | १ | ५९ | १ | ५५ | १ | ५१ |
| तुला | २ | ५२ | २ | ४८ | २ | ४३ | २ | ३९ | २ | ३४ | २ | २९ | २ | २५ | २ | २० | वृश्चिक | ४ | ३२ | ४ | २८ | ४ | २४ | ४ | २० | ४ | १६ | ४ | १२ | ४ | ८ |
| वृश्चिक | ५ | ९ | ५ | ५ | ५ | ० | ४ | ५६ | ४ | ५१ | ४ | ४६ | ४ | ४२ | ४ | ३७ | धन | ६ | ३८ | ६ | ३४ | ६ | ३० | ६ | २६ | ६ | २२ | ६ | १८ | ६ | १४ |

### ४० पं० माघकृष्ण ३० शनौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।

द्युगणः २९३०
अयनांशाः २४।९।४८

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९ | ८ | १ | ८ | ११ | ९ | ९ | ० | ६ |
| ६ | २५ | १७ | १४ | ११ | २८ | २६ | १४ | १४ |
| १७ | ११ | २१ | १२ | १३ | ४० | २९ | ५० | ५० |
| १४ | २० | ६ | ३० | २५ | २५ | ४६ | १९ | १९ |
| ६१ | ८५५ | ४ | ७ | ९ | ७५ | ६ | ३ | ३ |
| १५ | २२ | ५३ | ५९ | १९ | १६ | ३९ | ११ | ११ |
| | | मा. | मा. | | | | | |

११ | चं. ९ बु. | सू. | १२गु. | शु.१० श. | ८ | १ रा. | ७ के. | २ मं. | ४ | ६ | ३ | ५

माघकृष्ण चतुर्थ्यांतु प्रादुर्भूतो गणेश्वरः। अद्यगणेशोत्पत्तिः। अर्घ्यदानम्। गौरी चतुर्थी व्रत (प्रदोषे)। स्थायिजययोगः ७।५ उ.। सर्वार्थसिद्धियोगः १।५ या.। ☯ फलं समता। पराः २० वा ४०घट्यः पुण्याः। निरयन सौम्यायनम्। देवानां दिनं दैत्यानाञ्च रात्रिअयनसंक्रान्ते रुभयतस्त्रीणि -दिनानि न शुभानि विधेयानि। खरमास समाप्तिः। शिशिरर्त्तुः। परदिने पुण्यकालः। यायिजययोगः १८।५ या.। यमघंटयोगः १८।५ या.। द्विपुष्करयोगः १८।५ उ. १८।५२ या.। रवियोगः १८।५ या.। ♍ गोदावर्याम् वा स्नानम्। सौरमाघमासारम्भः। मृत्युबाणारम्भः ४९।२८ (रा. २।२९)। यायिजययोगः १९।२१ उ.। ☪द्वापरयुगादिः ३०। त्रिवेणी अमावस्या (उड़ीसा)। पापवारान्विते दर्शे दुर्भिक्षं च प्रजाभयम्। ☉अभिजितिः सूर्यः २२।१८ (दि. ३।३५)। राष्ट्रियमाघमासः दि. ३०। यायिजययोगः ५०।२२ उ.।

मूलविचार- श्लेषा/मघा- ति. २ रवौ५४।४३ (रा.४।३८)उ.। ति. ४ बुधे६।५० (दि. ९।२८)या.।
ज्येष्ठा/मूल- ति. ११ बुधे १६।२३(दि. १।१४) उ.। ति. १३ शुक्रे १०।६ (दि. १०।४२) या.।

यावन्माघं स्नानाशक्तौ त्र्यहं स्नायात्।। महामाघीं पुरस्कृत्य स्नायात्तत्रदिनत्रयमिति।। माघे प्रयागस्नानमाहात्म्यम्।। प्रयागे माघ मासे तु त्र्यहं स्नानस्य यत्फलम्। अश्वमेघसहस्त्रेण तत्फलं लभ्यते भुवि।।१।। अथ मकरसंक्रान्तौ देयाः। स्कन्दे- धेनुं तिलमयीं राजन् यो दद्याच्चोत्तरायणे। सर्वान् कामानवाप्नोति विन्दते परमं सुखम्। माघे देयाः- तैलमामलकञ्चैव तीर्थे देयास्तु नित्यशः। ततः प्रज्वालयेद्वह्निं सेवनार्थं द्विजन्मनाम्।। एवं स्नानावसाने तु भोज्यं देयमवारितम्। भोजयेद्द्विजदाम्पत्यं भूषयेद्वस्त्रभूषणैः। कम्बलाजिन रत्नानि वासांसि विविधानि च। चोलकानि च देयानि प्राच्छादन पटानथ।३। उपानहौ तथा गुप्तमोचकौ पाप मोचकौ। अनेन विधिना स्नानान्माधवः प्रीयतामिति।।४।। माघसनियमाः।। भूमौ शयीतहोतव्यं साज्यं तिलसमन्वितम्। सर्वान् कामानवाप्नोति विन्दते परमं सुखम् ।।१।।

☞ उत्तरांविनान्यदिग्यात्रा शिरामोक्षण मुहूर्त्तः। ति. ११ बुधे मैत्रे जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूल-भक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण नववस्त्रधारण उत्तरांविनान्यदिग्यात्रा (एकादश्यां) कणमर्दन शिल्पविद्या भैषज्य गृहप्रवेश (च.शु.) विपणि गजकृत्य मुहूर्त्तः। दि. १।१४ उ. ज्येष्ठा भे गोक्रय-विक्रय धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति.१२ गुरौ ज्येष्ठा भे शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन गोक्रय-विक्रय कणमर्दन चौलकेशान्त (ल.११) (त्रयोदश्यां) शिरामोक्षण धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। मूले लतापादपारोपण शिल्पविद्या भैषज्य नौकाघटन मुहूर्त्तः। परं मासान्तादिदोषः।

राष्ट्रिय तिथि २ माघतः १६ तिथिं यावत् १९४४ शकः।।
अंग्रेजी दिनांक २२ जनवरीतः दिनांक ५ फरवरीं यावत् सन् २०२३ ई.।।

| दि.मा. घ. | प. | श्रीसंवत् २०७९ शकः १९४४ सौम्यायनं याम्यगोलः शिशिरर्त्तुः।। | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | योगाः | अं. | फ. | सौ. | ने. | रा. | चन्द्र राशि | प्रवेशः | सूर्योदयः घं. | मि. | सूर्यास्तः घं. | मि. | औदयिक स्पष्ट सूर्यः | | | | क्रान्तिः द. | - | रे. अं. + | मि. | चन्द्रास्तः स्टै. | टा. | माघशुक्लपक्षः।। |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६ | ४३ | १ | र | ४४ | २८ | रा | १२ | २६ | उ.षा. | २/५५ | ५/५० | प्रा | ०/५ | २९/४९ | वज्र | १२ | १४ | दि | ११ | ३३ | किं | १७ | २५ | वव | ४४ | २८ | अमृत | २२ | १६ | ८ | ८ | २ | | | ६ | ३९ | ५ | २१ | ९ | ७ | १८ | २१ | १९ | ५६ | + | ९ | - | - | यावन्माघमशक्तावन्ते दिनत्रयं स्नानम् विधेयम्। वल्लभाचार्य जयन्ती १। गुप्तनवरात्रप्रारम्भः। यायिजययोगः ◆ |
| २६ | ४५ | २ | चं | ३८ | ४१ | रा | १० | ७ | धनिष्ठा | ५३ | ५५ | रा | ४ | १३ | सिद्धि | ४/५२ | २३/१८ | प्रा | ८/५ | २४/११ | वा | ११ | ३५ | कौ | ३८ | ४१ | शुभ | २३ | १७ | ९ | ९ | ३ | कुम्भ | २५।५५ | ६ | ३९ | ५ | २१ | ९ | ८ | १९ | ४२ | १९ | ४२ | + | ९ | ७ | २० | कुम्भराशिः (दि. ५।१)। चन्द्रदर्शनम्। मु. ३० समा। फलं समता। समशृंगं समताकरम्। श्रीनेताजी जयन्ती। |
| २६ | ४८ | ३ | मं | ३३ | १५ | रा | ७ | ५६ | शतभिष | ५० | २० | रा | २ | ४६ | वरीयान | ४९ | १७ | रा | २ | २१ | तै | ५ | ५८ | गर | ३३ | १५ | मृत्यु | २४ | १८ | १० | १० | ४ | | | ६ | ३८ | ५ | २२ | ९ | ९ | २० | ५५ | १९ | २८ | + | १० | ८ | २७ | मु. रज्जब ७ हिज़री सन् १४४४। ⊙श्रवणे सूर्यः ३८।१९(रा. ९।५८)। मृत्युबाणारम्भः३८।१९(रा.९।५८)। |
| २६ | ५० | ४ | बु | २८ | २० | सा | ५ | ५८ | पू.भा. | ४७ | १८ | रा | १ | ३३ | परिघ | ४२ | २३ | रा | ११ | ३५ | व | ० | ४८ | भ | २८/५५ | २०/१५ | पद्म | २५ | १९ | ११ | ११ | ५ | मीन | ३३।१४ | ६ | ३८ | ५ | २२ | ९ | १० | २२ | ७ | १९ | १४ | + | १० | ९ | ३१ | भ. ०।४८ उ. (प्रा. ६।५७) २८।२० या. (सा. ५।५८)। मीनराशिः (रा. ७।५२)। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रतम्। |
| २६ | ५३ | ५ | गु | २४ | १० | दि | ४ | १७ | उ.भा. | ४५ | ८ | रा | १२ | ४० | शिव | ३६ | ७ | रा | ९ | ४ | वा | २४ | १० | कौ | ५२ | ३० | छत्र | २६ | २० | १२ | १२ | ६ | | | ६ | ३७ | ५ | २३ | ९ | ११ | २३ | १८ | १८ | ५९ | + | १० | १० | ३१ | श्रीवसन्तपञ्चमी ५। तक्षक पूजा ५। वागीश्वरी जयन्ती यात्रा च। रतिकाम महोत्सवः। सरस्वती पूजनम्। भारतीय गणतन्त्र ❖ |
| २६ | ५६ | ६ | शु | २० | ५० | दि | २ | ५७ | रेवती | ४३ | ४५ | रा | १२ | ७ | सिद्ध | ३० | ३४ | सा | ६ | ५१ | तै | २० | ५० | गर | ४९ | ४१ | श्रीवत्स | २७ | २१ | १३ | १३ | ७ | मेष | ४३।४५ | ६ | ३७ | ५ | २३ | ९ | १२ | २४ | २८ | १८ | ४५ | + | ११ | ११ | ३० | मेषराशिः (रा. १२।७)। श्रीशीतलाषष्ठी (बंगाल)। पञ्चकनिवृत्तिः ४३।४५ (रा. १२।७)। सर्वार्थसिद्धियोगः |
| २६ | ५८ | ७ | श | १८ | ३२ | दि | २ | १ | अश्विनी | ४३ | २८ | रा | ११ | ५९ | साध्य | २५ | ५० | दि | ४ | ५६ | व | १८ | ३२ | भ | ४८ | ० | सौम्य | २८ | २२ | १४ | १४ | ८ | | | ६ | ३६ | ५ | २४ | ९ | १३ | २५ | ३७ | १८ | २९ | + | ११ | १२ | २७ | भ. १८।३२ उ. (दि. २।१) ४८।० या. (रा. १।४८)। रथसप्तमी ७। अचलासप्तमी ७ व्रतम्। *पष्ठ्यामेक भक्तं* ☐ |
| २७ | १ | ८ | र | १७ | २८ | दि | १ | ३५ | भरणी | ४४ | २४ | रा | १२ | २२ | शुभ | २२ | २ | दि | ३ | २५ | वव | १७ | २८ | वा | ४७ | ३३ | कालदण्ड | २९ | २३ | १५ | १५ | ९ | वृष | ५९।५७ | ६ | ३६ | ५ | २४ | ९ | १४ | २६ | ४६ | १८ | १३ | + | ११ | १ | २५ | वृषराशिः (रा.शे. ६।३५)। भीष्माष्टमी ८। भीष्मोद्देशेन श्राद्धं तर्पणञ्च। यायिजययोगः१७।२८ उ. ४४।२४ या.। |
| २७ | ४ | ९ | चं | १७ | ३८ | दि | १ | ३८ | कृत्तिका | ४६ | ३५ | रा | १ | १३ | शुक्ल | १९ | १५ | दि | २ | १७ | कौ | १७ | ३८ | तै | ४८ | २४ | सुस्थिर | ३० | २४ | १६ | १६ | १० | | | ६ | ३५ | ५ | २५ | ९ | १५ | २७ | ५२ | १७ | ५६ | + | ११ | २ | २१ | श्रीहरसूब्रह्मजयन्ती ९ (चैनपुर-भभुआ)। महानन्दानवमी ९। महात्मागाँधी स्मृति दिवसः। शहीद दिवसः। ○ |
| २७ | ७ | १० | मं | १९ | १० | दि | २ | १५ | रोहिणी | ५० | ४ | रा | २ | ३७ | ब्रह्म | १७ | २७ | दि | १ | २४ | गर | १९ | १० | व | ५० | ३१ | मातङ्ग | ३१ | २५ | १७ | १७ | ११ | | | ६ | ३५ | ५ | २५ | ९ | १६ | २८ | ५८ | १७ | ४१ | + | ११ | ३ | १८ | भ. ५०।३१ उ. (रा. २।४७)। रवियोगः ५०।४ या.। ○सर्वार्थसिद्धियोगः४६।३५ उ.। रवियोगःसमस्त। |
| २७ | १० | ११ | बु | २१ | ५२ | दि | ३ | १९ | मृगशिरा | ५४ | ३९ | रा | ४ | २६ | ऐन्द्र | १६ | ३७ | दि | १ | १३ | भ | २१ | ५२ | वव | ५३ | ४९ | अमृत | १ | २६ | १८ | १८ | १२ | मिथुन | २२।२२ | ६ | ३४ | ५ | २६ | ९ | १७ | ३० | ३ | १७ | २४ | + | १२ | ४ | १२ | भ. २१।५२ या. (दि. ३।१९)। मिथुनराशिः (दि. ३।३१)। जया ११ एकादशी व्रतं सर्वेषाम्। भैमी एकादशी ● |
| २७ | १३ | १२ | गु | २५ | ४५ | दि | ४ | ५१ | आर्द्रा | ६० | ० | स | म | स्त | वैधृति | १६ | ३९ | दि | १ | १३ | वा | २५ | ४५ | कौ | ५८ | ७ | काण | २ | २७ | १९ | १९ | १३ | | | ६ | ३३ | ५ | २७ | ९ | १८ | ३१ | ७ | १७ | ७ | + | १२ | ५ | ३ | प्रदोष १२ व्रतम्। भीष्मद्वादशी १२। भीष्मोद्देशेन श्राद्धं तर्पणञ्च। तिलद्वादशी १२। सोपपदा १२ वेदारम्भानध्यायः। |
| २७ | १६ | १३ | शु | ३० | २८ | सा | ६ | ४४ | आर्द्रा | ० | १३ | प्रा | ६ | ३८ | विष्कुम्भ | १७ | २३ | दि | १ | ३० | तै | ३० | २८ | गर | ६० | ० | पद्म | ३ | २८ | २० | २० | १४ | कर्क | ४९।५२ | ६ | ३३ | ५ | २७ | ९ | १९ | ३२ | ११ | १६ | ४९ | + | १२ | ५ | ५० | कर्कराशिः (रा. २।३०)। कल्पादिः१३। मृत्युबाणनिवृत्तिः२७।२१(सा. ५।२९)। सर्वार्थसिद्धियोगः०।१३ उ.। |
| २७ | १९ | १४ | श | ३५ | ४३ | रा | ८ | ४९ | पुनर्वसु | ६ | २५ | दि | ९ | ६ | प्रीति | १८ | ३५ | दि | १ | ५८ | गर | ३ | ६ | व | ३५ | ४३ | छत्र | ४ | २९ | २१ | २१ | १५ | | | ६ | ३२ | ५ | २८ | ९ | २० | ३३ | १२ | १६ | ३१ | + | १२ | ६ | ३१ | भ. ३५।४३ उ. (रा. ८।४९)। रवियोगः६।२५ या.। मृत्युबाणारम्भः२८।२३(सा.५।५४)। |
| २७ | २२ | १५ | र | ४१ | ११ | रा | ११ | ० | पुष्य | १३ | ० | दि | ११ | ४४ | आयुष्मान | १९ | ५८ | दि | २ | ३१ | भ | ८ | २७ | वव | ४१ | ११ | श्रीवत्स | ५ | ३० | २२ | २२ | १६ | | | ६ | ३२ | ५ | २८ | ९ | २१ | ३४ | १२ | १६ | १६ | + | १२ | - | - | भ. ८।२७ या. (दि. ९।५५)। स्नान-दान-व्रतादौ १५ माघी पूर्णिमा। तिल पात्र-उर्णवस्त्र-कम्बलादिदानम्। |

### ।। विवाहमुहूर्त्तपञ्चेष्टलग्नविमर्शः।।

ति. १ रवौ उ.षा. भे सूर्ययुतिः।
ति. ४ बुधे रा.१।३३ उ. उ.भा. भे रे.९ ल. ८ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. १३।। (सप्तमस्थः भौमो न शुभः)
ति. ५ गुरौ उ.भा. भे रे.९ दिवा ल. १२ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. १३ वा ल. ३ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. ११।। (बु.दा.) वा ल. गोधूलिः। रा.१२।४० उ. रेवत्यां रे.१० ल. ८ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. १३।। (सप्तमस्थः भौमो न शुभः)
ति. ६ शुक्रे रेवत्यां रे.१० दिवा ल. १२ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. १३ वा ल. ३ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. ११।। (बु.दा.) वा ल. गोधूलिः। रात्रौ पञ्चेष्टलग्नाभावः।
ति. ९ सोमे रा.१।१३ उ. रोहिण्यां भौमयुतिः।
ति. १० भौमे रोहिण्यां पूर्वदोषः। रा.२।३७ उ. मृगे सूर्यवेधावसानं न चन्द्रभुक्तमशुभम् विष्टिश्च।
ति. ११ बुधे मृगे पूर्वदोषो वैधृतिश्च।

## ॐ सूर्योदये दैनिकस्पष्टभौमादिग्रहाः ॐ

| ति. | वा. | मार्गीभौमः | | | | मार्गीबुधः | | | | गुरुः | | | | शुक्रः | | | | शनिः | | | | राहुः | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | र | १ | १७ | २५ | ५९ | ८ | १४ | २० | २९ | ११ | ११ | २२ | ४४ | ९ | २९ | ५५ | ४१ | ९ | २६ | ३६ | २५ | ० | १४ | ४७ | ८ |
| २ | चं | १ | १७ | ३० | २१ | ८ | १४ | ४० | ४४ | ११ | ११ | ३२ | ५९ | १० | १ | १० | ५७ | ९ | २६ | ४३ | ३ | ० | १४ | ४३ | ५७ |
| ३ | मं | १ | १७ | ३४ | ४२ | ८ | १५ | १७ | १६ | ११ | ११ | ४३ | १७ | १० | २ | २६ | १३ | ९ | २६ | ४९ | ४१ | ० | १४ | ४० | ४७ |
| ४ | बु | १ | १७ | ३९ | ४ | ८ | १५ | ५३ | २८ | ११ | ११ | ५३ | ३५ | १० | ३ | ४१ | २९ | ९ | २६ | ५६ | १९ | ० | १४ | ३७ | ३६ |
| ५ | गु | १ | १७ | ४३ | २६ | ८ | १६ | ३० | ९ | ११ | १२ | ३ | ५४ | १० | ४ | ५६ | ४१ | ९ | २७ | २ | ५७ | ० | १४ | ३४ | २५ |
| ६ | शु | १ | १७ | ४७ | ४८ | ८ | १७ | ७ | २६ | ११ | १२ | १४ | १२ | १० | ६ | १२ | ० | ९ | २७ | ९ | ३५ | ० | १४ | ३१ | १४ |
| ७ | श | १ | १७ | ५२ | ९ | ८ | १७ | ५८ | २ | ११ | १२ | २४ | ३० | १० | ७ | २७ | १६ | ९ | २७ | १६ | १२ | ० | १४ | २८ | ३ |
| ८ | र | १ | १७ | ५६ | ३१ | ८ | १८ | ५६ | २७ | ११ | १२ | ३४ | ४८ | १० | ८ | ४२ | ३२ | ९ | २७ | २२ | ५० | ० | १४ | २४ | ५३ |
| ९ | चं | १ | १८ | ० | ५३ | ८ | १९ | ५४ | ४७ | ११ | १२ | ४५ | ७ | १० | ९ | ५७ | ४७ | ९ | २७ | २९ | ५३ | ० | १४ | २१ | ४२ |
| १० | मं | १ | १८ | ५ | १४ | ८ | २० | ५३ | ८ | ११ | १२ | ५५ | २५ | १० | ११ | १३ | ३१ | ९ | २७ | ३७ | १७ | ० | १४ | १८ | ३१ |
| ११ | बु | १ | १८ | ९ | ३६ | ८ | २१ | २१ | २९ | ११ | १३ | ५ | ४३ | १० | १२ | २६ | ५० | ९ | २७ | ४४ | ४१ | ० | १४ | १५ | २० |
| १२ | गु | १ | १८ | १३ | ५८ | ८ | २३ | ३ | ७ | ११ | १३ | १६ | १ | १० | १३ | ४१ | ९ | ९ | २७ | ५२ | ४ | ० | १४ | १२ | ९ |
| १३ | शु | १ | १८ | १८ | २० | ८ | २४ | १७ | ३७ | ११ | १३ | २६ | १९ | १० | १४ | ५४ | ३० | ९ | २७ | ५९ | २८ | ० | १४ | ८ | ५९ |
| १४ | श | १ | १८ | २२ | ४१ | ८ | २५ | ३२ | ६ | ११ | १३ | ३६ | ३८ | १० | १६ | ८ | ० | ९ | २८ | ६ | ५२ | ० | १४ | ५ | ४८ |
| १५ | र | १ | १८ | २७ | ३ | ८ | २६ | ४६ | ३४ | ११ | १३ | ४६ | ५६ | १० | १७ | २१ | ३० | ९ | २८ | १४ | १६ | ० | १४ | २ | ३७ |

*भौमादीनाञ्चारः- मार्गीभौमः- रोहिण्याम् ।। मार्गीबुधः- ति.१४ शनौ उत्तरापाढ़ा भे ५४।४३ (रा. ४।२५)।। गुरुः- ति. १२ गुरौ उत्तराभाद्रपदा ४ चरणे २३।१२(दि. ३।५०)।। शुक्रः- ति. १ रवौ कुम्भे ३।२६ (दि. ८।१)। ति.६ शुक्रे शतभिषजि २२।१८(दि. ३।३२)।। शनिः- ति. १ रवौ धनिष्ठा २ चरणे ३२।२५(रा. ७।३७)।। राहुः-भरणी १ चरणे केतुश्च स्वाती ३ चरणे ।।*

**४१ पं० माघशुक्ल ८ रवौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।**
द्युगणः २९३८
अयनांशाः २४।९।४९

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९ | ० | १ | ८ | ११ | १० | ९ | ० | ६ |
| १४ | १६ | १७ | १८ | १२ | ८ | २७ | १४ | १४ |
| २६ | ५७ | ५६ | ५६ | ३४ | ४२ | २२ | २४ | २४ |
| ४६ | ७ | ३१ | २७ | ४८ | ३२ | ५० | ५३ | ५३ |
| ६१ | ७८७ | ४ | ५८ | १० | ७५ | ७ | ३ | ३ |
| ६ | ४५ | २२ | २० | ११ | १५ | ३ | ११ | ११ |
| | | मा. | मा. | | | | | |

११ शु. | ९ बु. | १२गु. | सू. १० श. | ८ | चं. १ रा. | ७ के. | २ मं. | ४ | ६ | ३ | ५

पक्षेऽस्मिन् विविधमुहूर्त्ताः- ति. १ रवौ उ.षा. भे सूर्ययुतिः। श्रवणे सूर्यभोग्यम्। ति. २ सोमे धनिष्ठा भे शनियुतिः व्यतिपातश्च। ति. ३ भौमे शतभिषजि केतुवेधः। ति. ४ बुधे पू.भा. भे रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। ति. ५ गुरौ उ.भा. भे पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन दोलारोहण अन्नप्राशन सूतीस्नान शय्यासनाद्युपभोग सुभगांविनानववस्त्रधारण लतापादपारोपण नौकाघटन उपनयन (ल. ११) जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. ११) विपणि व्यापार धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ६ शुक्रे रेवत्यां जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण शय्यासनाद्युपभोग नववस्त्रधारण लतापादपारोपण उत्तरदिग्यात्रा (सप्तम्यां) कणमर्दन भैषज्य नौकाघटन कर्णवेध (ल. ११) अक्षरारम्भ (ल. ११) जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. ११) गृहप्रवेश (ल.१२ के.दा.) इष्टिकादहन विपणि वस्तुक्रय गजाश्वकृत्य मुहूर्त्तः। ति. ७ शनौ अश्विन्यां विष्टेःपूर्वं (दि. २।१) कृष्णवस्त्रधारण पूर्वांविनान्यदिग्यात्रा वस्तुक्रय गजाश्वकृत्य मुहूर्त्तः। ति. ८ रवौ भरण्यां राहुयुतिः। ति. ९ सोमे कृत्तिका भे सूर्यवेधः। ति. १० भौमे रोहिण्यां भौमयुतिः। ति. ११ बुधे मृगे सूर्यवेधावसानं न चन्द्रभुक्तमशुभम् वैधृतिश्च। ति. १२ गुरौ आर्द्रा भे वैधृतेःपरं ( दि.१।१३) उपनयन (सोपपदादोषः) धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. १३ शुक्रे प्रा. ६।३८ उ. सा. ६।४४ या. पुनर्वसौ पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण अन्नप्राशन शय्यासनाद्युपभोग सुभगांविनानववस्त्रधारण गोक्रय-विक्रय दक्षिण दिग्यात्रा नवान्नभक्षण शिल्पविद्या भैषज्य नौकाघटन चौलकेशान्त (ल. ११वा १) कर्णवेध (ल. ११ वा १) ☞

| तिथि / ल.अ. | १ र घं. | मि. | २ चं घं. | मि. | ३ मं घं. | मि. | ४ बु घं. | मि. | ५ गु घं. | मि. | ६ शु घं. | मि. | ७ श घं. | मि. | ८ र घं. | मि. | ९ चं घं. | मि. | १० मं घं. | मि. | ११ बु घं. | मि. | १२ गु घं. | मि. | १३ शु घं. | मि. | १४ श घं. | मि. | १५ र घं. | मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मकर | ८ | ० | ७ | ५५ | ७ | ५१ | ७ | ४७ | ७ | ४३ | ७ | ३९ | ७ | ३५ | ७ | ३१ | ७ | २७ | ७ | २२ | ७ | १८ | ७ | १४ | ७ | ९ | ७ | ५ | ७ | १ |
| कुम्भ | ९ | ३१ | ९ | २६ | ९ | २२ | ९ | १८ | ९ | १४ | ९ | १० | ९ | ६ | ९ | २ | ८ | ५८ | ८ | ५३ | ८ | ४९ | ८ | ४५ | ८ | ४० | ८ | ३६ | ८ | ३२ |
| मीन | १० | ५९ | १० | ५४ | १० | ५० | १० | ४६ | १० | ४२ | १० | ३८ | १० | ३४ | १० | ३० | १० | २६ | १० | २१ | १० | १७ | १० | १३ | १० | ८ | १० | ४ | १० | ० |
| मेष | १२ | ३६ | १२ | ३१ | १२ | २७ | १२ | २३ | १२ | १९ | १२ | १५ | १२ | ११ | १२ | ७ | १२ | ४ | ११ | ५९ | ११ | ५४ | ११ | ५० | ११ | ४५ | ११ | ४१ | ११ | ३७ |
| वृष | २ | ३२ | २ | २७ | २ | २३ | २ | १९ | २ | १५ | २ | ११ | २ | ७ | २ | ३ | १ | ५९ | १ | ५४ | १ | ५० | १ | ४६ | १ | ४१ | १ | ३७ | १ | ३३ |
| मिथुन | ४ | ४६ | ४ | ४१ | ४ | ३७ | ४ | ३३ | ४ | २९ | ४ | २५ | ४ | २१ | ४ | १७ | ४ | १३ | ४ | ८ | ४ | ४ | ४ | ० | ३ | ५५ | ३ | ५१ | ३ | ४७ |
| ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | |
| कर्क | ७ | ४ | ६ | ५९ | ६ | ५५ | ६ | ५१ | ६ | ४७ | ६ | ४३ | ६ | ३९ | ६ | ३५ | ६ | ३१ | ६ | २६ | ६ | २२ | ६ | १८ | ६ | १३ | ६ | ९ | ६ | ५ |
| सिंह | ९ | १८ | ९ | १३ | ९ | ९ | ९ | ५ | ९ | १ | ८ | ५७ | ८ | ५३ | ८ | ४९ | ८ | ४५ | ८ | ४० | ८ | ३६ | ८ | ३२ | ८ | २७ | ८ | २३ | ८ | १९ |
| कन्या | ११ | ३१ | ११ | २६ | ११ | २२ | ११ | १८ | ११ | १४ | ११ | १० | ११ | ६ | ११ | २ | १० | ५८ | १० | ५३ | १० | ४९ | १० | ४५ | १० | ४० | १० | ३६ | १० | ३२ |
| तुला | १ | ४७ | १ | ४२ | १ | ३८ | १ | ३४ | १ | ३० | १ | २६ | १ | २२ | १ | १८ | १ | १४ | १ | ९ | १ | ५ | १ | १ | १२ | ५६ | १२ | ५२ | १२ | ४८ |
| वृश्चिक | ४ | ४ | ३ | ५९ | ३ | ५५ | ३ | ५१ | ३ | ४७ | ३ | ४३ | ३ | ३९ | ३ | ३५ | ३ | ३१ | ३ | २६ | ३ | २२ | ३ | १८ | ३ | १३ | ३ | ९ | ३ | ५ |
| धनु | ६ | १० | ६ | ५ | ६ | १ | ५ | ५७ | ५ | ५३ | ५ | ४९ | ५ | ४५ | ५ | ४१ | ५ | ३७ | ५ | ३२ | ५ | २८ | ५ | २४ | ५ | १९ | ५ | १५ | ५ | ११ |

**४२ पं० माघशुक्ल १५ रवौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।**
द्युगणः २९४५
अयनांशाः २४।९।५०

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९ | ३ | १ | ८ | ११ | १० | ९ | ० | ६ |
| २१ | १४ | १८ | २६ | १३ | १७ | २८ | १४ | १४ |
| ३४ | ३ | २७ | ४६ | ४६ | २१ | १४ | २ | २ |
| १२ | ४७ | ३ | ३४ | ५६ | ३० | १६ | ३७ | ३७ |
| ६० | ७२० | ४ | ७४ | १० | ७३ | ७ | ३ | ३ |
| ५९ | ५४ | २२ | ३६ | १८ | ३० | २४ | ११ | ११ |
| | | मा. | मा. | | | | | |

११ शु. | बु. ९ | १२गु. | सू. १० श. | ८ | १ रा. | ७ के. | २ मं. | ४ चं. | ६ | ३ | ५

◆२।५ या.। सर्वार्थसिद्धियोगः २।५ या.। द्विपुष्करयोगः ५७।५५ उ.। ⌂ पञ्चकारम्भः २५।५५ (दि.५।१)। यायिजययोगः ३८।४१ उ. ५३।५५ या.। रवियोगः ५३।५५ उ.। ☯ स्थायिजययोगः ५०।२० उ.। रवियोगः ५०।२० उ.। ♍ तिल ४। कुन्द ४ चतुर्थी "माघशुक्ल चतुर्थ्यान्तु कुन्द पुष्पैः सदाशिवम् सम्पूज्ययो हि नक्ताशी स प्रप्नोति श्रियं नरः।" ढुण्ढिराज ४। प्रदोषे ढुण्ढिराजपूजा। सोपपदा ४ वेदारम्भानध्यायः। ⊙अभिजिन्निवृतः सूर्यः २७।२१ (सा. ५।३४)। मृत्युबाणनिवृत्तिः ३७।९(रा. ९।३०)। रवियोगः ४७।१८ या.। ❖दिवसः ७३ तमः। ध्वजोत्तोलनम्-राष्ट्रगानम्-राजधान्यां विविधोत्सवायोजनञ्च। यायिजययोगः२४।१० या.। सर्वार्थसिद्धियोगः ४५।८ उ.। रवियोगः ४५।८ उ.। ☪समस्त। अमृतसिद्धियोगः ४३।४५ या.। रवियोगः ४३।४५ या.। ☐ *कुर्यात् अरुणोदये सप्तम्यां स्नानम्।* मन्वादिः ७। ☎रवियोगः ४४।२४ उ.। ● (बंगाल)। फरवरी २। सर्वार्थसिद्धियोगः ५४।३९ या.। रवियोगः ०।१३ उ.। माघस्नान-व्रत-यम-नियमादि समाप्तिः। सन्तरविदासजयन्ती १५। काश्यां सीरगोवर्धनग्राम यात्रा-दर्शनञ्च। यायिजययोगः १३।० उ.। सर्वार्थसिद्धियोगः १३।० या.।

मूलविचार- रेवती/अश्विनी- ति. ५ गुरौ ४५।८ (रा. १२।४०) उ.। ति.७ शनौ ४३।२८ (रा. ११।५९) या.।
श्लेषा/मघा- ति. १५ रवौ १३।० (दि. ११।४४) उ.।
पञ्चक विचार- ति. २ सोमे २५।५५ (दि. ५।१) उ.। ति. ६ शुक्रे ४३।४५ (रा. १२।७) या.।

☞ जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. ११वा १) अश्वकृत्य मुहूर्त्तः। ति. १४ शनौ दि.९।६ उ. पुष्ये रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। ति. १५ रवौ विष्टेःपरं (दि. ९।५५) पुष्ये शय्यासनाद्युपभोग सुभगांविनानववस्त्रधारण भूषाघटन लतापादपारोपण गोक्रय-विक्रय नवान्नभक्षण शिल्पविद्या भैषज्य नौकाघटन विपणि गजाश्वकृत्य शिरामोक्षण मुहूर्त्तः। श्लेषा भे वस्तुविक्रय शस्त्रघटन मुहूर्त्तः।

## श्रीसंवत् २०७९ शकः १९४४ सौम्यायनं याम्यगोलः शिशिरर्त्तुः।।

## फाल्गुनकृष्णपक्षः।।

राष्ट्रिय तिथि १७ माघतः तिथि १ फाल्गुनं यावत् १९४४ शकः।।
अंग्रेजी दिनांक ६ फरवरीतः २० दिनांकं यावत् सन् २०२३ ई.।।

| दि.मा. घ. | प. | ति. | वा. | | | | | | नक्षत्र | | | | | | योग | | | | | | करण | | | करण | | | योगाः | अं. | फ. | सौ. | ने. | रा. | चन्द्र राशि | प्रवेशः | सूर्योदयः घं. | मि. | सूर्यास्तः घं. | मि. | औदयिक स्पष्ट सूर्यः | | | | क्रान्तिः द. | - | रे. अं. + | मि. | चन्द्रोदयः स्टै. | टा. | फाल्गुनकृष्णपक्षः।। |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २७ | २५ | १ | चं | ४६ | १८ | रा | १ | २ | श्लेषा | १९ | २६ | दि | २ | १७ | सौभाग्य | २१ | १४ | दि | ३ | १ | वा | १३ | ४५ | कौ | ४६ | १८ | सौम्य | ६ | १ | २३ | २३ | १७ | सिंह | १९।२६ | ६ | ३१ | ५ | २९ | ९ | २२ | ३५ | ११ | १५ | ५५ | + | १२ | ६ | १८ | सिंहराशिः (दि..२।१७)। ⊙धनिष्ठा भे सूर्यः ४४।७ (रा. १२।१०)। यायिजययोगः१९।२६ या.। |
| २७ | २८ | २ | मं | ५० | ४५ | रा | २ | ४८ | मघा | २५ | २२ | दि | ४ | ३९ | शोभन | २२ | ४ | दि | ३ | २० | तै | १८ | ३२ | गर | ५० | ४५ | कालदण्ड | ७ | २ | २४ | २४ | १८ | | | ६ | ३० | ५ | ३० | ९ | २३ | ३६ | ८ | १५ | ३५ | + | १२ | ७ | ११ | ♍(दि. ९।७)। यायि-स्थायि दुर्लभःसन्धिकरयोगः ३४।८ उ. ४४।५५ या.। यमघंटयोगः ३४।८ उ.। |
| २७ | ३१ | ३ | बु | ५४ | १३ | रा | ४ | ११ | पू.फा. | ३० | ३० | सा | ६ | ४२ | अतिगण्ड | २२ | १८ | दि | ३ | २५ | व | २२ | २९ | भ | ५४ | १३ | सुस्थिर | ८ | ३ | २५ | २५ | १९ | कन्या | ४६।३१ | ६ | ३० | ५ | ३० | ९ | २४ | ३७ | ५ | १५ | १६ | + | १२ | ८ | ३ | भ. २२।२९ उ. (दि. ३।३०) ५४।१३ या. (रा. ४।११)। कन्याराशिः (रा. १।६)। |
| २७ | ३५ | ४ | गु | ५६ | ३३ | रा | ५ | ६ | उ.फा. | ३४ | ३२ | रा | ८ | १८ | सुकर्मा | २१ | ३८ | दि | ३ | ८ | वव | २५ | २३ | वा | ५६ | ३३ | मातङ्ग | ९ | ४ | २६ | २६ | २० | | | ६ | २९ | ५ | ३१ | ९ | २५ | ३८ | ० | १४ | ५६ | + | १२ | ८ | ५५ | संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रतम्। चन्द्रोदयः (रा. ८।५५)। यायिजययोगः ५६।३३ उ.। |
| २७ | ३८ | ५ | शु | ५७ | ३४ | रा | ५ | ३० | हस्त | ३७ | २४ | रा | ९ | २६ | धृति | २० | ७ | दि | २ | ३१ | कौ | २७ | ४ | तै | ५७ | ३४ | अमृत | १० | ५ | २७ | २७ | २१ | | | ६ | २८ | ५ | ३२ | ९ | २६ | ३८ | ५४ | १४ | ३९ | + | १२ | ९ | ४८ | रोगवाणनिवृत्तिः २०।४८ (दि.२।४७)। ◆५७।१५ उ.। सर्वार्थसिद्धियोगः ३९।१० उ.। रवियोगः ३९।१० उ.। |
| २७ | ४१ | ६ | श | ५७ | १५ | रा | ५ | २२ | चित्रा | ३९ | ० | रा | १० | ४ | शूल | १७ | ३४ | दि | १ | ३० | गर | २७ | २५ | व | ५७ | १५ | काण | ११ | ६ | २८ | २८ | २२ | तुला | ८।२२ | ६ | २८ | ५ | ३२ | ९ | २७ | ३९ | ४७ | १४ | २० | + | १२ | १० | ४२ | भ. ५७।१५ उ. (रा. ५।२२)। तुलाराशिः (दि. ९।४५)। मृत्युबाणारम्भः १९।५६ (दि.२।२६)। यायिजययोगः◆ |
| २७ | ४४ | ७ | र | ५५ | ४३ | रा | ४ | ४४ | स्वाती | ३९ | २२ | रा | १० | १२ | गण्ड | १४ | २ | दि | १२ | ४ | भ | २६ | २९ | वव | ५५ | ४३ | लुम्बक | १२ | ७ | २९ | २९ | २३ | | | ६ | २७ | ५ | ३३ | ९ | २८ | ४० | ३७ | १४ | १ | + | १२ | ११ | ४० | भ. २६।२९ या. (दि. ५।३)। भानुसप्तमी ७। मृत्युबाणनिवृत्तिः १९।७ (दि. २।६)। यायिजययोगः ३९।२२ या.।⍓ |
| २७ | ४८ | ८ | चं | ५३ | ३ | रा | ३ | ३९ | विशाखा | ३८ | ३४ | रा | ९ | ५२ | वृद्धि | ९ | २९ | दि | १० | १४ | वा | २४ | २३ | कौ | ५३ | ३ | मित्र | १३ | ८ | ३० | १ | २४ | वृश्चिक | २३।४६ | ६ | २६ | ५ | ३४ | ९ | २९ | ४१ | २७ | १३ | ४१ | + | १२ | १२ | ४१ | वृश्चिकराशिः (दि. ३।५६)। जानकी जयन्ती। अष्टका श्राद्धम्। अन्यास्वष्टकास्वशक्तावत्रश्राद्धमावश्यकम्।☯ |
| २७ | ५१ | ९ | मं | ४९ | २४ | रा | २ | १२ | अनुराधा | ३६ | ४६ | रा | ९ | ८ | ध्रुव | ४/५३ | ११/५६ | प्रा | ४/८ | ५/४४ | तै | २१ | १४ | गर | ४९ | २४ | वज्र | १४ | ९ | १ | २ | २५ | | | ६ | २६ | ५ | ३४ | १० | ० | ४२ | १५ | १३ | २१ | + | १२ | १ | ४५ | अन्वष्टका श्राद्धम्। सौरफाल्गुनमासारम्भः। मृत्युबाणारम्भः १७।३१ (दि. १।२६)। |
| २७ | ५४ | १० | बु | ४४ | ५५ | रा | १२ | २३ | ज्येष्ठा | ३४ | ८ | रा | ८ | ४ | हर्षण | ५१ | २४ | रा | २ | ५९ | व | १७ | १० | भ | ४४ | ५५ | ध्वांक्ष | १५ | १० | २ | ३ | २६ | धनु | ३४।८ | ६ | २५ | ५ | ३५ | १० | १ | ४३ | २ | १३ | ० | + | १२ | २ | ५२ | भ. १७।१० उ. (दि. १।१७) ४४।५५ या. (रा. १२।२३)। धनूराशिः (रा. ८।४)। मृत्युबाणनिवृत्तिः १६।४५ ♍ |
| २७ | ५८ | ११ | गु | ३९ | ४८ | रा | १० | १९ | मूल | ३० | ४९ | सा | ६ | ४४ | वज्र | ४४ | ९ | रा | १२ | ४ | वव | १२ | २२ | वा | ३९ | ४८ | धूम्र | १६ | ११ | ३ | ४ | २७ | | | ६ | २४ | ५ | ३६ | १० | २ | ४३ | ४७ | १२ | ३९ | + | १२ | ३ | ५७ | विजया ११ एकादशी व्रतं सर्वेषाम्। ⍓ त्रिपुष्करयोगः ३९।२२ उ. ५५।४३ या.। रवियोगः ३९।२२ या.। |
| २८ | १ | १२ | शु | ३४ | १२ | रा | ८ | ५ | पू.षा. | २७ | १ | दि | ५ | २२ | सिद्धि | ३६ | ३४ | रा | ९ | २ | कौ | ७ | ० | तै | ३४ | १२ | प्रवर्धमान | १७ | १२ | ४ | ५ | २८ | मकर | ४१।० | ६ | २४ | ५ | ३६ | १० | ३ | ४४ | ३१ | १२ | १८ | + | १२ | ४ | ५८ | मकरराशिः (रा. १०।४८)। स्थायिजययोगः २७।१ या.। |
| २८ | ५ | १३ | श | २८ | २० | सा | ५ | ४३ | उ.षा. | २२ | ५७ | दि | ३ | ३४ | व्यतिपात | २८ | ४८ | सा | ५ | ५४ | गर | १ | १६ | व | ३८/५५ | २०/२२ | राक्षस | १८ | १३ | ५ | ६ | २९ | | | ६ | २३ | ५ | ३७ | १० | ४ | ४५ | १३ | ११ | ५७ | + | १२ | ५ | ५१ | भ. २८।२० उ. (सा. ५।४३) ५५।२२ या. (रा. ४।३२)। शनिप्रदोष १३ व्रतम्। पुत्रार्थिभिरत्र व्रतारम्भो विधेयः। श्रीमहाशिवरात्रि ❖ |
| २८ | ८ | १४ | र | २२ | २३ | दि | ३ | १९ | श्रवण | १८ | ४६ | दि | १ | ५२ | वरीयान | २० | ५७ | दि | २ | ४५ | श | २२ | २३ | च | ४९ | ३० | गद | १९ | १४ | ६ | ७ | ३० | कुम्भ | ४६।४५ | ६ | २२ | ५ | ३८ | १० | ५ | ४५ | ५४ | ११ | ३६ | + | १२ | - | - | कुम्भराशिः (रा. १।४)। छत्रपतिशिवाजी जयन्ती (नवीनतम)। ⊙शतभिषजि सूर्यः ५३।३२ (रा. ३।४७)।☾ |
| २८ | १२ | ३० | चं | १६ | ३६ | दि | १ | ० | धनिष्ठा | १४ | ४४ | दि | १२ | १६ | परिघ | १३ | १४ | दि | ११ | ४० | नाग | १६ | ३६ | किं | ४३ | ५३ | शुभ | २० | १५ | ७ | ८ | १ | | | ६ | २२ | ५ | ३८ | १० | ६ | ४६ | ३२ | ११ | १५ | + | १२ | - | - | स्नान-दान-श्राद्धादौ ३० अमावस्या। सोमवती अमावस्या। अश्वत्थमूले प्रणिधायविष्णुं विधाय सम्यग्विविधोपचारैः।□ |

### ।। विवाहमुहूर्त्तपञ्चेष्टलग्नविमर्शः।।

- ति. १ सोमे दि.२।१७ उ.मघा भे सूर्यवेधः।
- ति. २ भौमे मघा भे पूर्वदोषः।
- ति. ३ बुधे विष्टेःपरं (रा.४।११) उ.फा.भे रे.९ पञ्चेष्टलग्नाभावः।
- ति. ४ गुरौ उ.फा.भे रे.९ दिवा ल. १२ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. १३(चं.दा.) वा ल. ३ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. ११।। वा ल.गोधूलिः। रा.८।१८ उ. हस्ते रे.८ ल. ८ इष्टाः ७ ग्र.व.वि. १८।। (सप्तमस्थः भौमो न शुभः)
- ति. ५ शुक्रे हस्ते रे.८ दिवा ल. १२ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. १३ (चं.दा.) वा ल. ३ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. ११।। वा ल. गोधूलिःरात्रौ सल्लग्नाभावः।
- ति. ६ शनौ रा.१०।४ उ. स्वात्यां केतुयुतिः विष्टिदोषो मृत्युबाणश्च।
- ति. ७ रवौ स्वात्यां पूर्वदोषः।
- ति. ८ सोमे रा.९।५२ उ. मैत्रे राहुवेधः।
- ति. ९ भौमे मैत्रे पूर्वदोषो मृत्युबाणश्च।
- ति. १० बुधे विष्टेःपरं (रा.१२।२३) मूले रे.८ ल. ९ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. १३।।
- ति. ११ गुरौ मूले रे. ८ दिवा ल. १२ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. ११।। वा ल. गोधूलिः।
- ति. १२ शुक्रे दि. ५।१२ उ. उ.षा. भे व्यतिपातात्पूर्वं (रा.९।२) रे.९ ल.गोधूलिः। परं मासान्तादिदोषः।

### ॐ सूर्योदये दैनिकस्पष्टभौमादिग्रहाः ॐ

| ति. | वा. | भौमः | | | | बुधः | | | | गुरुः | | | | शुक्रः | | | | शनिः | | | | राहुः | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | चं | १ | १८ | ३१ | २५ | ८ | २८ | १ | १० | ११ | १३ | ५७ | १४ | १० | १८ | ३५ | ० | ९ | २८ | २१ | ४० | ० | १३ | ५९ | २६ |
| २ | मं | १ | १८ | ३५ | ४७ | ८ | २९ | २५ | ३८ | ११ | १४ | ७ | ३२ | १० | १९ | ४८ | ३० | ९ | २८ | २९ | ३ | ० | १३ | ५६ | १५ |
| ३ | बु | १ | १८ | ४० | ८ | ९ | ० | ५० | ३ | ११ | १४ | १८ | ४७ | १० | २१ | २ | ० | ९ | २८ | ३६ | २६ | ० | १३ | ५३ | ५ |
| ४ | गु | १ | १८ | ४४ | ३० | ९ | २ | १४ | २७ | ११ | १४ | ३० | ३३ | १० | २२ | १५ | ३० | ९ | २८ | ४३ | ४८ | ० | १३ | ४९ | ५४ |
| ५ | शु | १ | १८ | ४८ | ५२ | ९ | ३ | ३९ | १२ | ११ | १४ | ४२ | २० | १० | २३ | २९ | ० | ९ | २८ | ५१ | १० | ० | १३ | ४६ | ४३ |
| ६ | श | १ | १९ | ४ | ५८ | ९ | ५ | ५ | ४८ | ११ | १४ | ५४ | ८ | १० | २४ | ४२ | ३० | ९ | २८ | ५८ | ३२ | ० | १३ | ४३ | ३२ |
| ७ | र | १ | १९ | २७ | ३ | ९ | ६ | ३९ | २० | ११ | १५ | ५ | ५५ | १० | २५ | ५६ | ० | ९ | २९ | ५ | ५४ | ० | १३ | ४० | २१ |
| ८ | चं | १ | १९ | ४९ | ७ | ९ | ८ | १२ | ५१ | ११ | १५ | १७ | ४२ | १० | २७ | ९ | ३० | ९ | २९ | १३ | १६ | ० | १३ | ३७ | ११ |
| ९ | मं | १ | २० | ११ | १२ | ९ | ९ | ४६ | २२ | ११ | १५ | २९ | ३० | १० | २८ | २३ | ० | ९ | २९ | २० | ३९ | ० | १३ | ३४ | ० |
| १० | बु | १ | २० | ३३ | १६ | ९ | ११ | १९ | ५३ | ११ | १५ | ४१ | १७ | १० | २९ | ३६ | ३० | ९ | २९ | २८ | १ | ० | १३ | ३० | ४९ |
| ११ | गु | १ | २० | ५५ | २१ | ९ | १२ | ५५ | ५० | ११ | १५ | ५३ | ४ | ११ | ० | ४९ | ५१ | ९ | २९ | ३५ | २३ | ० | १३ | २७ | ३८ |
| १२ | शु | १ | २१ | १७ | २६ | ९ | १४ | ३५ | ३५ | ११ | १६ | ४ | ५२ | ११ | २ | ३ | ४ | ९ | २९ | ४२ | ४५ | ० | १३ | २४ | २७ |
| १३ | श | १ | २१ | ३९ | ३० | ९ | १६ | १५ | १८ | ११ | १६ | १६ | ३९ | ११ | ३ | १६ | १७ | ९ | २९ | ५० | ७ | ० | १३ | २१ | १७ |
| १४ | र | १ | २२ | १ | १० | ९ | १७ | ५५ | २ | ११ | १६ | २८ | २६ | ११ | ४ | २९ | ३१ | ९ | २९ | ५७ | २९ | ० | १३ | १८ | ६ |
| ३० | चं | १ | २२ | २२ | ४८ | ९ | १९ | ३४ | ४६ | ११ | १६ | ४० | १४ | ११ | ५ | ४२ | ४४ | १० | ० | ४ | ५१ | ० | १३ | १४ | ५५ |

*भौमादीनाञ्चारः:- भौमः:- रोहिण्याम्।। बुधः:-ति.२ भौमे मकरे २४।२६ (दि. ४।१६)। ति.९ भौमे श्रवणे ८।४५ (दि. ९।५६)।। गुरुः:- ति. १४ रवौ रेवती १ चरणे ५८।४९(रा.शे. ५।५४)।। शुक्रः:- ति. २ भौमे पूर्वाभाद्रपदा भे ९।२३ (दि. १०।१५)। ति.१० बुधे मीने १९।१३(दि. २।६)। ति.१३ शनौ उत्तराभाद्रपदा भे ३।३(दि.७।३६)।। शनिः:-ति. १४ रवौ धनिष्ठा ३ चरणे कुम्भे च २०।३०(दि.२।३४)।। राहुः:-ति. १३ शनौ अश्विनी ४ चरणे केतुश्च स्वाती २ चरणे २४।११(दि.४।३)।।*

### ४३ पं० फाल्गुनकृष्ण ८ सोमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।

द्युगणः २९५३
अयनांशाः २४।९।५१

| सू. | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९ | ६ | १ | ९ | ११ | १० | ९ | ० | ६ |
| २१ | २४ | १९ | ८ | १५ | २७ | २९ | १३ | १३ |
| ४१ | ३८ | ४९ | १२ | १७ | ९ | १३ | ३७ | ३७ |
| २७ | ५२ | ७ | ५१ | ४२ | ३० | १६ | ११ | ११ |
| ६० | ८१० | २२ | ९३ | ११ | ७३ | ७ | ३ | ३ |
| ४८ | ४९ | ५ | ३१ | ४८ | ३० | २३ | ११ | ११ |

११शु. सू. ९
१२गु. बु. १० श. ८
१ रा. चं. ७ के.
२ मं. ४ ६
३ ५

पक्षेऽस्मिन् विविधमुहूर्त्ताः:- ति. १ सोमे श्लेषा भे वस्तुविक्रय धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. २ भौमे मघा भे राहुवेधः। दि. ४।३९ उ.पू.फा. भे वस्तुविक्रय शस्त्रघटन मुहूर्त्तः। ति. ३ बुधे विष्टेःपूर्वं (दि. ३।३०) पू.फा. भे कणमर्दन विद्यारम्भ (ल. ११वा १) उपनयन (ल. ११ वा १रा.दा.) वस्तुविक्रय मुहूर्त्तः। ति. ४ गुरौ उ.फा. भे रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। रिक्तोत्तरं हस्ते रात्रिशेषे सूतीस्नान मुहूर्त्तः। ति.५ शुक्रे हस्ते शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन अन्नप्राशन शय्यासनाद्युपभोग नववस्त्रधारण गोक्रय-विक्रय पश्चिमांविनान्यदिग्यात्रा नवान्नभक्षण शिल्पविद्या भैषज्य नौकाघटन चौलकेशान्त (ल. १वा २) कर्णवेध (ल. १ वा २) अक्षरारम्भ-विद्यारम्भ (ल.१वा २) उपनयन (रोगवाणः) गृहारम्भ (च.शु.) इष्टिका निर्माण-इष्टिकादहन विपणि व्यापार गजाश्वकृत्य धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ६ शनौ चित्रा भे कृष्णवस्त्रधारण मुहूर्त्तः। ति. ७ रवौ स्वात्यां केतुयुतिःविष्टिश्च। ति. ८ सोमे विशाखा भे शनिवेधः। ति. ९ भौमे मैत्रे रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। ति. १० बुधे विष्टेःपूर्वं (दि. १।१७)ज्येष्ठा भे शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन गोक्रय-विक्रय कणमर्दन चौलकेशान्त (ल. ११वा २)धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ११ गुरौ मूले पुंसवनसीमन्त। शिशुताम्बूलभक्षण लतापादपारोपण कणमर्दन शिल्पविद्या वधूप्रवेश (ल. ११) द्विरागमन (ल. १२) धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. १२ शुक्रे पू.षा. भे दोलारोहण शिल्पविद्या नौकाघटन मुहूर्त्तः। दि. ५।१२ उ. व्यतिपातात्पूर्वं (रा. ९।२) उ.षा. भे शय्यासनाद्युपभोग सुभगांविनानववस्त्रधारण लतापादपारोपण भैषज्य वधूप्रवेश (ल. ५) द्विरागमन (ल. ६) गृहप्रवेश (च.शु.) इष्टिका निर्माण विपणि मुहूर्त्तः। परं मासान्तादिदोषः।

| तिथि | १ चं | | २ मं | | ३ बु | | ४ गु | | ५ शु | | ६ श | | ७ र | | ८ चं | | तिथि | ९ मं | | १० बु | | ११ गु | | १२ शु | | १३ श | | १४ र | | ३० चं | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ल.अ. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | ल.अ. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. |
| मकर | ६ | ५६ | ६ | ५२ | ६ | ४८ | ६ | ४३ | ६ | ३९ | ६ | ३५ | ६ | ३१ | ६ | २६ | कुम्भ | ७ | ५३ | ७ | ५० | ७ | ४६ | ७ | ४२ | ७ | ३८ | ७ | ३५ | ७ | ३१ |
| कुम्भ | ८ | २७ | ८ | २३ | ८ | १९ | ८ | १४ | ८ | १० | ८ | ६ | ८ | २ | ७ | ५७ | मीन | ९ | २१ | ९ | १८ | ९ | १४ | ९ | १० | ९ | ६ | ९ | ३ | ८ | ५९ |
| मीन | ९ | ५५ | ९ | ५१ | ९ | ४७ | ९ | ४२ | ९ | ३८ | ९ | ३४ | ९ | ३० | ९ | २५ | मेष | १० | ५८ | १० | ५५ | १० | ५१ | १० | ४७ | १० | ४३ | १० | ४० | १० | ३६ |
| मेष | ११ | ३२ | ११ | २८ | ११ | २४ | ११ | १९ | ११ | १५ | ११ | ११ | ११ | ७ | ११ | २ | वृष | १२ | ५४ | १२ | ५१ | १२ | ४७ | १२ | ४३ | १२ | ३९ | १२ | ३६ | १२ | ३२ |
| वृष | १ | २८ | १ | २४ | १ | २० | १ | १५ | १ | ११ | १ | ७ | १ | ३ | १२ | ५८ | मिथुन | ३ | ८ | ३ | ५ | ३ | १ | २ | ५७ | २ | ५३ | २ | ५० | २ | ४६ |
| मिथुन | ३ | ४२ | ३ | ३८ | ३ | ३४ | ३ | २९ | ३ | २५ | ३ | २१ | ३ | १७ | ३ | १२ | कर्क | ५ | २६ | ५ | २३ | ५ | १९ | ५ | १५ | ५ | ११ | ५ | ८ | ५ | ४ |
| ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | |
| कर्क | ६ | ० | ५ | ५६ | ५ | ५२ | ५ | ४७ | ५ | ४३ | ५ | ३९ | ५ | ३५ | ५ | ३० | सिंह | ७ | ४० | ७ | ३७ | ७ | ३३ | ७ | २९ | ७ | २५ | ७ | २२ | ७ | १८ |
| सिंह | ८ | १४ | ८ | १० | ८ | ६ | ८ | १ | ७ | ५७ | ७ | ५३ | ७ | ४९ | ७ | ४४ | कन्या | ९ | ५३ | ९ | ५० | ९ | ४६ | ९ | ४२ | ९ | ३८ | ९ | ३५ | ९ | ३१ |
| कन्या | १० | २७ | १० | २३ | १० | १९ | १० | १४ | १० | १० | १० | ६ | १० | २ | ९ | ५७ | तुला | १२ | ९ | १२ | ६ | १२ | २ | ११ | ५८ | ११ | ५४ | ११ | ५१ | ११ | ४७ |
| तुला | १२ | ४३ | १२ | ३९ | १२ | ३५ | १२ | ३० | १२ | २६ | १२ | २२ | १२ | १८ | १२ | १३ | वृश्चिक | २ | २६ | २ | २३ | २ | १९ | २ | १५ | २ | ११ | २ | ८ | २ | ४ |
| वृश्चिक | ३ | ० | २ | ५६ | २ | ५२ | २ | ४७ | २ | ४३ | २ | ३९ | २ | ३५ | २ | ३० | धनु | ४ | ३२ | ४ | २९ | ४ | २५ | ४ | २१ | ४ | १७ | ४ | १४ | ४ | १० |
| धनु | ५ | ६ | ५ | २ | ४ | ५८ | ४ | ५३ | ४ | ४९ | ४ | ४५ | ४ | ४० | ४ | ३६ | मकर | ६ | १९ | ६ | १६ | ६ | १२ | ६ | ८ | ६ | ४ | ६ | १ | ५ | ५७ |

### ४४पं० फाल्गुनकृष्ण ३० सोमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।

द्युगणः २९६०
अयनांशाः २४।९।५२

| सू. | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १० | १० | १ | ९ | ११ | ११ | १० | ० | ६ |
| ६ | ३ | २२ | १९ | १६ | ५ | ० | १३ | १३ |
| ४६ | ९ | २२ | ३४ | ४० | ४२ | ४ | १४ | १४ |
| ३२ | २० | ४८ | ४६ | १४ | ४६ | ५१ | ५५ | ५५ |
| ६० | ८५७ | २१ | १०१ | ११ | ७३ | ७ | ३ | ३ |
| ३६ | ३९ | ३९ | ५७ | ४७ | १४ | २३ | ११ | ११ |

गु.१२शु. सू. १० बु.
१ रा. चं. ११ श. ९
२ मं. ८
३ ५ ७ के.
४ ६

☯ ⊙सं.कुम्भे सूर्यः १८।१८ (दि. १।४५)। मु. ४५ वृहत्ती। फलं समर्घता। पराः १६ घट्यःपुण्याः। गोऽन्नतिलादि - दानम्। स्नानं गोदावर्याम्। यायिजययोगः ५३।३ उ.। सर्वार्थसिद्धियोगः ३८।३४ उ.। यमघंटयोगः ३८।३४ या.। ❖व्रतम्। चतुर्दशलिंग पूजा। श्रीवैद्यनाथ जयन्ती। कृत्तिवासेश्वर दर्शनम्। यायिजययोगः २२।५७ या.। सर्वार्थसिद्धियोगः २२।५७ उ.। ☾ ⊙सायन मीने सूर्यः ४।११ (दि. ८।२)। पञ्चकारम्भः ४६।४५ (रा. १।४)।□प्रदक्षिणाभीष्टफलादिद्रव्यैः स्त्रीभिर्विधेयापतिसौख्य वृद्ध्यै। शुभवारान्विते दर्शे सुभिक्षं च प्रजासुखम्। राष्ट्रियफाल्गुनमासः दि. ३०

मूलविचार-श्लेषा/मघा- ति. २ भौमे २५।२२ (दि. ४।३९)या.।
ज्येष्ठा/मूल- ति. ९ भौमे ३६।४६ (रा. ९।८)उ.। ति. ११.गुरौ ३०।४९ (सा. ६।४४) या.।
पञ्चक विचार- ति. १४ रवौ ४६।४५ (रा. १।४)उ.।

अथ शिवरात्रिव्रतमाहात्म्यम्। परात्परतरं नास्ति शिवरात्रिः परात्परम्। ये नार्चयन्ति भक्तेशं रुद्रंत्रिभुवनेश्वरम् ।।१।। जन्तुजन्मसहस्रेषु भ्रमन्ते नात्र संशयः। वर्षेवर्षे महादेवं नरोनारीपतिव्रता।।२।। शिवरात्रि महादेवं नित्यंभक्त्या- प्रपूजयेत्। अर्णवो यदि शुष्येत क्षीयेत हिमवानपि।।३।। चलत्यन्ते कदाचिद्वैनिश्चलं हि शिवव्रतम्। शिव उवाचमम भक्तस्तु यो देवि शिवरात्रिमुपोषकः। गणत्वमक्षयं दिव्यं लभते शिवशासनम्।।४।। सर्वान् भुक्त्वा महाभोगान् ततो मोक्षमवाप्नुयात् ।।५।।

# श्रीसंवत् २०७९ शकः १९४४ सौम्यायनं याम्यगोलः शिशिरर्त्तुः।।

| दि.मा. घ. | प. | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | योगाः | अं. | फ. | सौ. | ने. | रा. | चन्द्र राशि | प्रवेशः | सूर्योदयः घं. | मि. | सूर्यास्तः घं. | मि. | औदयिक स्पष्ट सूर्यः | | | | क्रान्तिः द. | - | रे. अं. + | मि. | चन्द्रास्तः स्टै. | टा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २८ | १५ | १ | मं | ११ | ९ | दि | १० | ४९ | शतभिष | ११ | ३ | दि | १० | ४६ | शिव | ५/५२ | ४७/५८ | प्रा | ८/५ | ४०/५१ | वव | ११ | ९ | वा | ३८ | ४२ | मृत्यु | २१ | १६ | ८ | ९ | २ | मीन | ५३।४० | ६ | २१ | ५ | ३९ | १० | ७ | ४७ | ८ | १० | ५० | + | १२ | ७ | १० |
| २८ | १९ | २ | बु | ६ | १४ | दि | ८ | ५० | पू.भा. | ७ | ५२ | दि | ९ | २९ | साध्य | ५२ | १९ | रा | ३ | १६ | कौ | ६ | १४ | तै | ३४ | १० | पद्म | २२ | १७ | ९ | १० | ३ | | | ६ | २० | ५ | ४० | १० | ८ | ४७ | ४३ | १० | ३३ | + | १२ | ८ | १३ |
| २८ | २३ | ३ | गु | २/५६ | ५/४२ | प्रा | ७/५ | ९/५० | उ.भा. | ५ | ३१ | दि | ८ | ३१ | शुभ | ४६ | ३४ | रा | १२ | ५७ | गर | २ | ५ | व | ३०/५८ | २६/४७ | छत्र | २३ | १८ | १० | ११ | ४ | | | ६ | १९ | ५ | ४१ | १० | ९ | ४८ | १७ | १० | ११ | + | १२ | ९ | १५ |
| २८ | २६ | ५ | शु | ५६ | ३३ | रा | ४ | ५६ | रेवती | ३ | ५७ | दि | ७ | ५४ | शुक्ल | ४१ | ३८ | रा | १० | ५८ | वव | २७ | ४० | वा | ५६ | ३३ | श्रीवत्स | २४ | १९ | ११ | १२ | ५ | मेष | ३।५७ | ६ | १९ | ५ | ४१ | १० | १० | ४८ | ४८ | ९ | ४९ | + | १२ | १० | १४ |
| २८ | ३० | ६ | श | ५५ | ३२ | रा | ४ | ३१ | अश्विनी | ३ | २६ | दि | ७ | ४० | ब्रह्म | ३७ | ३४ | रा | ९ | २० | कौ | २६ | ३ | तै | ५५ | ३२ | सौम्य | २५ | २० | १२ | १३ | ६ | | | ६ | १८ | ५ | ४२ | १० | ११ | ४९ | १८ | ९ | २६ | + | १२ | ११ | १४ |
| २८ | ३३ | ७ | र | ५५ | ४६ | रा | ४ | ३५ | भरणी | ४ | ७ | दि | ७ | ५६ | ऐन्द्र | ३४ | ३१ | रा | ८ | ५ | गर | २५ | ३९ | व | ५५ | ४६ | कालदण्ड | २६ | २१ | १३ | १४ | ७ | वृष | १९।३६ | ६ | १७ | ५ | ४३ | १० | १२ | ४९ | ४६ | ९ | ४ | + | ११ | १२ | १३ |
| २८ | ३७ | ८ | चं | ५६ | २१ | रा | ४ | ४९ | कृत्तिका | ६ | ४ | दि | ८ | ४३ | वैधृति | ३२ | २६ | रा | ७ | १५ | भ | २६ | ४ | वव | ५६ | २१ | सुस्थिर | २७ | २२ | १४ | १५ | ८ | | | ६ | १७ | ५ | ४३ | १० | १३ | ५० | १३ | ८ | ४२ | + | ११ | १ | ११ |
| २८ | ४१ | ९ | मं | ६० | ० | स | म | स्त | रोहिणी | ९ | १७ | दि | ९ | ५९ | विष्कुम्भ | ३१ | २५ | सा | ६ | ५० | वा | २८ | १४ | कौ | ६० | ० | मातङ्ग | २८ | २३ | १५ | १६ | ९ | मिथुन | ४१।२७ | ६ | १६ | ५ | ४४ | १० | १४ | ५० | ३६ | ८ | २० | + | ११ | २ | ६ |
| २८ | ४४ | ९ | बु | ० | ६ | प्रा | ६ | १७ | मृगशिरा | १३ | ३७ | दि | ११ | ४२ | प्रीति | ३१ | १५ | सा | ६ | ४५ | कौ | ० | ६ | तै | ३२ | ३ | अमृत | १ | २४ | १६ | १७ | १० | | | ६ | १५ | ५ | ४५ | १० | १५ | ५० | ५९ | ७ | ५७ | + | ११ | २ | ५९ |
| २८ | ४८ | १० | गु | ४ | ० | दि | ७ | ५० | आर्द्रा | १९ | ० | दि | १ | ५० | आयुष्मान | ३१ | ५१ | सा | ६ | ५८ | गर | ४ | ० | व | ३६ | २३ | काण | २ | २५ | १७ | १८ | ११ | | | ६ | १४ | ५ | ४६ | १० | १६ | ५१ | २० | ७ | ३४ | + | १० | ३ | ४७ |
| २८ | ५२ | ११ | शु | ८ | ४५ | दि | ९ | ४४ | पुनर्वसु | २५ | ७ | दि | ४ | १७ | सौभाग्य | ३२ | ५८ | रा | ७ | २५ | भ | ८ | ४५ | वव | ४१ | २३ | लुम्बक | ३ | २६ | १८ | १९ | १२ | कर्क | ८।३५ | ६ | १४ | ५ | ४६ | १० | १७ | ५१ | ३८ | ७ | ११ | + | १० | ४ | ३० |
| २८ | ५५ | १२ | श | १४ | १ | दि | ११ | ४९ | पुष्य | ३१ | ४० | सा | ६ | ५३ | शोभन | ३४ | २३ | रा | ७ | ५८ | वा | १४ | १ | कौ | ४६ | ४२ | मित्र | ४ | २७ | १९ | २० | १३ | | | ६ | १३ | ५ | ४७ | १० | १८ | ५१ | ५४ | ६ | ४८ | + | १० | ५ | ९ |
| २८ | ५९ | १३ | र | १९ | २२ | दि | १ | ५७ | श्लेषा | ३८ | ११ | रा | ९ | २८ | अतिगण्ड | ३५ | ४७ | रा | ८ | ३१ | तै | १९ | २२ | गर | ५१ | ५३ | वज्र | ५ | २८ | २० | २१ | १४ | सिंह | ३८।११ | ६ | १२ | ५ | ४८ | १० | १९ | ५२ | ९ | ६ | २८ | + | १० | ५ | ४४ |
| २९ | ३ | १४ | चं | २४ | २३ | दि | ३ | ५६ | मघा | ४४ | १६ | रा | ११ | ५३ | सुकर्मा | ३६ | ५० | रा | ८ | ५५ | व | २४ | २३ | भ | ५६ | ३२ | ध्वांक्ष | ६ | २९ | २१ | २२ | १५ | | | ६ | ११ | ५ | ४९ | १० | २० | ५२ | २२ | ६ | २ | + | १० | - | - |
| २९ | ६ | १५ | मं | २८ | ४१ | सा | ५ | ३९ | पू.फा. | ४९ | ३८ | रा | २ | २ | धृति | ३७ | २० | रा | ९ | ७ | वव | २८ | ४१ | वा | ६० | ० | धूम्र | ७ | ३० | २२ | २३ | १६ | | | ६ | ११ | ५ | ४९ | १० | २१ | ५२ | ३२ | ५ | ३८ | + | ९ | - | - |

## फाल्गुनशुक्लपक्षः।।

राष्ट्रिय तिथि २ फाल्गुनतः १६ तिथिं यावत् १९४४ शकः।। अंग्रेजी दिनांक २१ फरवरीतः दिनांक ७ मार्च यावत् सन् २०२३ ई.।।

मीनराशिः (रा. ३।४९)। ◡चन्द्रदर्शनम्। मु. ३० समा। फलं समता। समशृंगं समताकरम्। त्रिपुष्करयोगः ११।९ उ.।
मु. सावान ८ हिजरी सन् १४४४। श्रीरामकृष्णपरमहंस जयन्ती। रोगबाणनिवृत्तिः १२।१० (दि. ११।१२)।
भ. ३०।२६ उ. (सा. ६।२९) ५८।४७ या. (रा.शे. ५।५०)। वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रतम्। मृत्युबाणारम्भः ◆
मेषराशिः (दि. ७।५४)। पञ्चकनिवृत्तिः ३।५७ (दि. ७।५४)। मृत्युबाणनिवृत्तिः ११।६ (दि. १०।४५)। ⍓
गोरुपिणीषष्ठी (बंगाल)। यायिजययोगः ५५।३२ उ.। रवियोगः ३।२६ उ.। ❖रवियोगः १९।० या.।
भ. ५५।४६ उ. (रा. ४।३५)। वृषराशिः (दि. २।७)। कामदा सप्तमी ७ व्रतम्। भानुसप्तमी ७। यायिजययोगः ☯
भ. २६।४ या. (दि. ४।४३)। होलाष्टकारम्भः। विपाशेरावतीतीरे शुतुद्र्याञ्च त्रिपुष्करे। विवाहादि शुभे नेष्टं होलिका♍
मिथुनराशिः (रा. १०।५१)। रवियोगः ९।१७ उ.। ☯ ४।७ या.। त्रिपुष्करयोगः ४।७ उ. ५५।४६ या.। रवियोगः ४।७ या.।
यायि-स्थायि दुर्लभः सन्धिकरयोगः १३।३७ उ.। सर्वार्थसिद्धियोगः १३।३७ या.। रवियोगः समस्त। मार्च ३।
भ. ३६।२३ उ. (रा. ८।४७)। फगुदशमी (उड़ीसा)। यायिजययोगः १९।० उ.। सर्वार्थसिद्धियोगः १९।० उ.। ❖
भ. ८।४५ या. (दि. ९।४४)। कर्कराशिः (दि. ९।४०)। आमलकी ११ एकादशी व्रतं सर्वेषाम्। रंगभरी ☪
*द्वादशी पुष्य योगे* गोविन्द द्वादशी १२। शनिप्रदोष १२ व्रतम्। पुत्रार्थिभिरत्र व्रतारम्भो विधेयः। मृत्युबाणारम्भः □
सिंहराशिः (रा. ९।२८)। ⊙पूर्वाभाद्रपदा भे सूर्यः ७।४९ (दि. ९।२०)। मृत्युबाणनिवृत्तिः ७।४९ (दि. ९।२०)। ☎
भ. २४।२३ उ. (दि. ३।५६) ५६।३२ या. (रा. ४।४८)। *भद्रापुच्छे ४५।२९ उ. (रा. १२।२३) ४८।३० या. (रा. १।३५)* ○
स्नान-दानादौ १५ पूर्णिमा। काश्यां होली। सायं काश्यां चतुःषष्टिःयात्रा दर्शन-पूजनञ्च। दोलयात्रा १५। मन्वादिः १५। ◑

*शुक्रः पश्चिमे- पश्चिमदक्षिणदिग्भ्यां नैऋत्याग्निविदिग्भ्यां च द्विरागमः शुभः।।*

### ।। विवाहमुहूर्त्तपञ्चेष्टलग्नविमर्शः।।

तिः २ बुधे दि.९।२९ उ. उ.भा. भे रे.८ दिवा ल. २ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. १३।। वा ल. ४ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.११।। (बु.दा.) वा ल. गोधूलिः वा ल. ९ इष्टाः ७ ग्र.व.वि.१५

ति. ३ गुरौ उ.भा. भे रे. ८ दिवा सल्लग्नाभावः। दि.८।३१ उ. मृत्युबाणात्पूर्वं (दि.१०।५८) रेवत्यां रे. ८ ल. २ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. १३।।

ति. ५ शुक्रे रेवत्यां मृत्युबाण व्याप्तिः।

ति. ८ सोमे दि.८।४३ उ. रोहिण्यां भौमभुक्तमनिन्दुभुक्तमशुभम् वैधृतिदोषो विष्टिश्च।

ति. ९ भौमे रोहिण्यां पूर्वदोषः। दि. ९।५९ उ. मृगे भौमयुतिः।

ति. ९ बुधे मृगे पूर्वदोषः।

ति. १३ रवौ रा.९।२८ उ. मघा भे रे.९ ल. ९ इष्टाः ७ ग्र.व.वि. १५

ति. १४ सोमे विष्टेः पूर्वं (दि.३।५६) मघा भे रे.९ दिवा ल. ३ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. १३।। वा ल.४ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. १६।।

ति. १५ भौमे रा. २।२ उ. उ.फा. भे रे.६ ल. ९ इष्टाः ७ ग्र.व.वि. १५

## ॐ सूर्योदये दैनिकस्पष्टभौमादिग्रहाः ॐ

| ति. | वा. | भौमः | | | | बुधः | | | | गुरुः | | | | शुक्रः | | | | शनिः | | | | राहुः | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | मं | १ | २२ | ४४ | २७ | ९ | २१ | १६ | ४३ | ११ | १६ | ५२ | १ | ११ | ६ | ५५ | ५८ | १० | ० | १२ | १४ | ० | १३ | ११ | ४४ |
| २ | बु | १ | २३ | ४ | ३२ | ९ | २३ | ० | ५९ | ११ | १६ | ३ | ४९ | ११ | ८ | ९ | ११ | १० | ० | १९ | ३६ | ० | १३ | ८ | ३३ |
| ३ | गु | १ | २३ | २३ | ५२ | ९ | २४ | ४५ | १७ | ११ | १७ | १५ | ३६ | ११ | ९ | २२ | २४ | १० | ० | २६ | ५८ | ० | १३ | ५ | २२ |
| ५ | शु | १ | २३ | ४३ | १० | ९ | २६ | २९ | ३४ | ११ | १७ | २७ | २३ | ११ | १० | ३५ | ३८ | १० | ० | ३४ | २० | ० | १३ | २ | १२ |
| ६ | श | १ | २४ | २ | २८ | ९ | २८ | १३ | ५१ | ११ | १७ | ४० | २० | ११ | ११ | ४८ | ११ | १० | ० | ४१ | ४२ | ० | १२ | ५९ | १ |
| ७ | र | १ | २४ | २१ | ४६ | १० | ० | १ | ४७ | ११ | १७ | ५३ | ३६ | ११ | १३ | ० | २६ | १० | ० | ४९ | ४ | ० | १२ | ५५ | ५० |
| ८ | चं | १ | २४ | ४१ | ५ | १० | १ | ५१ | २ | ११ | १८ | ६ | ५२ | ११ | १४ | १२ | ४१ | १० | ० | ५६ | २७ | ० | १२ | ५२ | ३९ |
| ९ | मं | १ | २५ | ० | २३ | १० | ३ | ४० | १७ | ११ | १८ | २० | ८ | ११ | १५ | २४ | ५६ | १० | १ | ३ | ४९ | ० | १२ | ४९ | २८ |
| ९ | बु | १ | २५ | १९ | ४१ | १० | ५ | २९ | ३२ | ११ | १८ | ३३ | २५ | ११ | १६ | ३७ | ११ | १० | १ | ११ | ११ | ० | १२ | ४६ | १८ |
| १० | गु | १ | २५ | ३८ | ५९ | १० | ७ | १८ | ४७ | ११ | १८ | ४६ | ४३ | ११ | १७ | ४९ | २५ | १० | १ | १८ | २२ | ० | १२ | ४३ | ७ |
| ११ | शु | १ | २५ | ५८ | १८ | १० | ९ | ९ | ९ | ११ | १८ | ५९ | ५७ | ११ | १९ | १ | ४० | १० | १ | २५ | ५८ | ० | १२ | ३९ | ५६ |
| १२ | श | १ | २६ | १७ | ३६ | १० | १० | ५९ | ४३ | ११ | १९ | १३ | १३ | ११ | २० | १३ | ५५ | १० | १ | ३१ | ३४ | ० | १२ | ३६ | ४५ |
| १३ | र | १ | २६ | ३६ | ५४ | १० | १२ | ५० | ३८ | ११ | १९ | २६ | ३० | ११ | २१ | २६ | १० | १० | १ | ३८ | १० | ० | १२ | ३३ | ३४ |
| १४ | चं | १ | २६ | ५६ | १३ | १० | १४ | ४१ | ३२ | ११ | १९ | ३९ | ४६ | ११ | २२ | ३८ | २४ | १० | १ | ४४ | ४६ | ० | १२ | ३० | २४ |
| १५ | मं | १ | २७ | १५ | ३१ | १० | १६ | ३२ | २६ | ११ | १९ | ५३ | २ | ११ | २३ | ५० | ३९ | १० | १ | ५१ | २३ | ० | १२ | २७ | १३ |

*भौमादीनाञ्चारः- भौमः- ति.२ बुधे मृगे ४८।० (रा.१।३२)।। बुधः- ति.२ बुधे धनिष्ठा भे १०।५६ (दि. १०।४२)। ति.६ शनौ कुम्भे ५९।१ (रा.शे. ५।५४)। ति.९ बुधे शतभिषजि ३८।४२ (रा. ९।४४)।। गुरुः- ति. १५ भौमे रेवती २ चरणे ३१।३० (सा. ६।४७)।। शुक्रः- ति. ९ बुधे रेवत्यां २।२० (दि. ७।११)।। शनिः- धनिष्ठा ३ चरणे ।। राहुः- अश्विनी ४ चरणे केतुश्च स्वाती २ चरणे ।।*

**४५ पं० फाल्गुनशुक्ल ८ सोमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।**

द्युगणः २९६७

अयनांशाः २४।९।५३

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १० | १ | १ | १० | ११ | ११ | १० | ० | ६ |
| १३ | ८ | २४ | १ | १८ | १४ | ० | १२ | १२ |
| ५० | ४१ | ४१ | ५१ | ६ | १२ | ५६ | ५२ | ५२ |
| १३ | ३२ | ५ | २ | ५२ | ४१ | २७ | ३९ | ३९ |
| ६० | ७७४ | १९ | १०९ | १३ | ७२ | ७ | ३ | ३ |
| २३ | ४९ | १८ | १५ | १६ | १५ | २२ | ११ | ११ |

गु.१२शु. १० सू. १ रा. बु. ११ श. ९ चं. २ मं. ८ ३ ५ ७ के. ४ ६

पक्षेऽस्मिन् विविधमुहूर्त्ताः- ति. १ भौमे शतभिषजि सूर्ययुतिः। पू.भा. भे सूर्यभोग्यम्। ति. २ बुधे दि.९।२९ उ. उ.भा. भे अन्नप्राशन गर्भाधान सुभगांविनानववस्त्रधारण उपनयन (ल.२ भौ.दा.) जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. २) द्विरागमन (ल. २) वस्तुक्रय धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ३ गुरौ प्रा.७।९ या. उ.भा. भे अन्नप्राशन सूतीस्नान शय्यासनाद्युपभोग सुभगांविनानववस्त्रधारण लतापादपारोपण नौकाघटन वधूप्रवेश- द्विरागमन (ल. ११) विपणि धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ५ शुक्रे रेवत्यां दोलारोहण अन्नप्राशन लतापादपारोपण उत्तर दिग्यात्रा कणमर्दन भैषज्य नौकाघटन चौलकेशान्त (ल. ११) कर्णवेध (ल. ११) अक्षरारम्भ (ल. ११) उपनयन (ल. १२ के.दा.) वधूप्रवेश (ल. ११) द्विरागमन (ल. १२) जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. ११) विपणि गजाश्वकृत्य मुहूर्त्तः। अश्विन्यां राहुयुतिः। ति. ६ शनौ दि. ७।४० उ. भरण्यां वस्तुविक्रय शस्त्रघटन मुहूर्त्तः। ति. ७ रवौ भरण्यां शय्यासनाद्युपभोग वस्तुविक्रय मुहूर्त्तः। दि. ७।५६ उ. कृत्तिका भे भूषाघटन गोक्रय-विक्रय वस्तुविक्रय शस्त्रघटन धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ८ सोमे वैधृतेः परं रोहिण्यां भौमभुक्तमनिन्दुभुक्तमशुभम्। ति. ९ भौमे रोहिण्यां पूर्वदोषः। मृगे रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। ति. ९ बुधे मृगे भौमयुतिः। दि. ११।४२ उ. आर्द्रा भे अक्षरारम्भ (ल. २) उपनयन (ल. ३ के.दा.) धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. १० गुरौ आर्द्रा भे अक्षरारम्भ (ल. २) उपनयन (ल. २ भौ.दा.) धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। दि.१।५० उ. विष्टेः पूर्वं (रा. ८।४७) पुनर्वसौ शिशुताम्बूलभक्षण शय्यासनाद्युपभोग सुभगांविनानववस्त्रधारण गोक्रय-विक्रय पश्चिम दिग्यात्रा शिल्पविद्या भैषज्य नौकाघटन द्विरागमन (ल. ३ वा ६) अश्वकृत्य मुहूर्त्तः। ति.११ शुक्रे विष्टेः परं (दि. ९।४४) पुनर्वसौ जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण गोक्रय-विक्रय☞

| तिथि ल.अ. | १ मं घं. | मि. | २ बु घं. | मि. | ३ गु घं. | मि. | ५ शु घं. | मि. | ६ श घं. | मि. | ७ र घं. | मि. | ८ चं घं. | मि. | ९ मं घं. | मि. | ९ बु घं. | मि. | १० गु घं. | मि. | ११ शु घं. | मि. | १२ श घं. | मि. | १३ र घं. | मि. | १४ चं घं. | मि. | १५ मं घं. | मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुम्भ | ७ | २७ | ७ | २४ | ७ | २० | ७ | १६ | ७ | १३ | ७ | ९ | ७ | ५ | ७ | १ | ६ | ५७ | ६ | ५३ | ६ | ४९ | ६ | ४५ | ६ | ४१ | ६ | ३८ | ६ | ३४ |
| मीन | ८ | ५५ | ८ | ५२ | ८ | ४८ | ८ | ४४ | ८ | ४१ | ८ | ३७ | ८ | ३३ | ८ | ३० | ८ | २५ | ८ | २१ | ८ | १७ | ८ | १३ | ८ | ९ | ८ | ६ | ८ | २ |
| मेष | १० | ३२ | १० | २९ | १० | २५ | १० | २१ | १० | १८ | १० | १४ | १० | १० | १० | ६ | १० | २ | ९ | ५८ | ९ | ५४ | ९ | ५० | ९ | ४६ | ९ | ४३ | ९ | ३९ |
| वृष | १२ | २८ | १२ | २५ | १२ | २१ | १२ | १७ | १२ | १४ | १२ | १० | १२ | ६ | १२ | २ | ११ | ५८ | ११ | ५४ | ११ | ५० | ११ | ४६ | ११ | ४२ | ११ | ३९ | ११ | ३५ |
| मिथुन | २ | ४२ | २ | ३९ | २ | ३५ | २ | ३१ | २ | २८ | २ | २४ | २ | २० | २ | १७ | २ | १२ | २ | ८ | २ | ४ | २ | ० | १ | ५६ | १ | ५३ | १ | ४९ |
| कर्क | ५ | ० | ४ | ५७ | ४ | ५३ | ४ | ४९ | ४ | ४६ | ४ | ४२ | ४ | ३८ | ४ | ३४ | ४ | ३० | ४ | २६ | ४ | २२ | ४ | १८ | ४ | १४ | ४ | ११ | ४ | ७ |
| ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | |
| सिंह | ७ | १८ | ७ | ११ | ७ | ७ | ७ | ३ | ७ | ० | ६ | ५६ | ६ | ५२ | ६ | ४८ | ६ | ४४ | ६ | ४० | ६ | ३६ | ६ | ३२ | ६ | २८ | ६ | २५ | ६ | २१ |
| कन्या | ९ | २७ | ९ | २४ | ९ | २० | ९ | १६ | ९ | १३ | ९ | ९ | ९ | ५ | ९ | १ | ८ | ५७ | ८ | ५३ | ८ | ४९ | ८ | ४५ | ८ | ४१ | ८ | ३८ | ८ | ३४ |
| तुला | ११ | ४३ | ११ | ४० | ११ | ३६ | ११ | ३२ | ११ | २९ | ११ | २५ | ११ | २१ | ११ | १७ | ११ | १३ | ११ | ९ | ११ | ५ | ११ | १ | १० | ५७ | १० | ५४ | १० | ५० |
| वृश्चिक | २ | ० | १ | ५७ | १ | ५३ | १ | ४९ | १ | ४६ | १ | ४२ | १ | ३८ | १ | ३४ | १ | ३० | १ | २६ | १ | २२ | १ | १८ | १ | १४ | १ | ११ | १ | ७ |
| धनु | ४ | ६ | ४ | ३ | ३ | ५९ | ३ | ५५ | ३ | ५२ | ३ | ४८ | ३ | ४४ | ३ | ४० | ३ | ३६ | ३ | ३२ | ३ | २८ | ३ | २४ | ३ | २० | ३ | १७ | ३ | १३ |
| मकर | ५ | ५३ | ५ | ५० | ५ | ४६ | ५ | ४२ | ५ | ३९ | ५ | ३५ | ५ | ३१ | ५ | २७ | ५ | २३ | ५ | १९ | ५ | १५ | ५ | ११ | ५ | ७ | ५ | ४ | ५ | ० |

**४६ पं० फाल्गुनशुक्ल १५ भौमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।**

द्युगणः २९७५

अयनांशाः २४।९।५४

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १० | ४ | १ | १० | ११ | ११ | १० | ० | ६ |
| २१ | १६ | २७ | १६ | १९ | २३ | १ | १२ | १२ |
| ५२ | ३२ | १५ | ३२ | ५३ | ५० | ५१ | २७ | २७ |
| ३२ | २७ | ३१ | २६ | २ | ३९ | २३ | १३ | १३ |
| ६० | ७३४ | १९ | ११० | १३ | ७२ | ६ | ३ | ३ |
| १० | १९ | १८ | ५५ | १६ | १५ | ३६ | ११ | ११ |

गु.१२शु. १० सू. १ रा. बु.११ श. ९ २ मं. ८ ३ ५ चं. ७ के. ४ ६

◆ ११।३७ (दि.१०।५८)। यायिजययोगः २।५ या.। सर्वार्थसिद्धियोगः ५।३१ उ.। रवियोगः ५।३१ उ.। ⍓सर्वार्थसिद्धियोगः समस्त। अमृतसिद्धियोगः ३।५७ या.। रवियोगः ३।५७ या.। ♍ प्राड्विनाष्टकम्। यायिजययोगः ५६।२१ उ.। सर्वार्थसिद्धियोगः ६।४ उ.। ☪एकादशी। श्रीकाशी विश्वनाथ श्रृंगार दिनम्। रोगबाणनिवृत्तिः ८।२० (दि.९।३४)। स्थायिजययोगः २५।७ उ.। सर्वार्थसिद्धियोगः २५।७ या.। □८।४ (दि.९।२७)। यायिजययोगः ३१।४० उ.। रवियोगः ३१।४० उ.। ☎ यायिजययोगः १९।२२ या.। यमघंटयोगः ३८।११ उ.। रवियोगः ७।४९ या.। पुनः रवियोगः ३८।११ उ.। ○*होलिकादाहः। व्रताय १५* पूर्णिमा। चौमासी चौदस (जैन)। रवियोगः ४४।१६ या.। ◑श्रीचैतन्यमहाप्रभु जयन्ती।

मूलविचार- रेवती/अश्विनी- ति. ३ गुरौ ५।३१ (दि. ८।३१) उ.। ति.६ शनौ ३।२६ (दि.७।४०) या.। श्लेषा/मघा- ति. १२ शनौ ३१।४० (सा. ६।५३) उ.। ति. १४ सोमे ४४।१६ (रा. ११।५३) या.।
पञ्चक विचार- ति. ५ शुक्रे ३।५७ (दि. ७।५४) या.।

फाल्गुनशुक्लपूर्णिमायां होलिकादाहः। तत्र पूजा- देशकालौ संकीर्त्य मम सकुटुम्बस्य ढुण्ढाराक्षसीपीडा-परिहारार्थं होलिकापूजनमहं करिष्ये। असृक्पाभयसंत्रस्तैः कृत्वा त्वं होलिबालिशैः। अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूते भूतिप्रदा भव। इति ध्यात्वा। होलिकायै नम इति विहितोपचारान्दत्वा। दीपदानमन्त्रः। दीपयाम्यद्य ते घोरचितिराक्षसिसत्तमे। हिताय सर्व जगतां प्रीतये पार्वतीपतेः। अनेनार्चनेन होलिकाधिष्ठातृदेवता प्रीयताम्। होलिकायां प्रज्वलितायाम्। तामग्निं त्रिपरिक्रम्य शब्दैर्लिङ्गभगाङ्कितैः। तेन शब्देन सा पापा राक्षसी तृप्तिमाप्नुयात्।।१।

☞ नवान्नभक्षण नौकाघटन कर्णवेध (ल. २) अक्षरारम्भ (ल. २) उपनयन (ल.३ के.दा.) जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. ३) द्विरागमन (ल. ३) अश्वकृत्य मुहूर्त्तः। दि.४।१७ उ. पुष्ये लतापादपारोपण वधूप्रवेश (ल.५ वा ११) द्विरागमन (ल. ६) गृहारम्भ (ल.११) (भूपयनदोषो स परिहारः) इष्टिकानिर्माण विपणिव्यापार मुहूर्त्तः। ति.१२ शनौ पुष्ये सुभगांविनाकृष्णवस्त्रधारण पूर्वाविनान्यदिग्यात्रा (त्रयोदश्यां) जलाश्यारामसुरप्रतिष्ठा (ल. २) गृहारम्भ (ल.११) गजाश्वकृत्य मुहूर्त्तः। ति. १३ रवौ श्लेषा भे दि. १।५७ या. वस्तुविक्रय शस्त्रघटन धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. १४ सोमे मघा भे रिक्तातो विष्टिश्च। ति. १५ भौमे पू.फा. भे राहुवेधः। उ.फा. भे रात्रिशेषे सूतीस्नान मुहूर्त्तः।

# श्रीसंवत् २०७९ शकः १९४४ सौम्यायनं याम्यगोलः शिशिरर्त्तुः।।

# चैत्रकृष्णपक्षः।।

राष्ट्रिय तिथि १७ फाल्गुनतः ३० तिथिं यावत् १९४४ शकः।।
अंग्रेजी दिनांक ८ मार्चतः २१ दिनांकं यावत् सन् २०२३ ई.।।

| दि.मा. घ. | प. | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | योगाः | अं. | फ. | सौ. | ते. | रा. | चन्द्र राशि | प्रवेशः | सूर्योदयः घं. | मि. | सूर्यास्तः घं. | मि. | औदयिक स्पष्ट सूर्यः | | | | क्रान्तिः द. | – | रे. अं. + | मि. | चन्द्रोदयः स्टै. | टा. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २९ | १० | १ | वु | ३१ | ५९ | सा | ६ | ५८ | उ.फा. | ५३ | ५४ | रा | ३ | ४४ | शूल | ३७ | १ | रा | ८ | ५८ | वा | ० | २० | कौ | ३१ | ५९ | प्रवर्धमान | ८ | १ | २३ | २४ | १७ | कन्या | ५।४२ | ६ | १० | ५ | ५० | १० | २२ | ५२ | ४२ | ५ | १४ | + | ९ | ६ | ५१ | कन्याराशिः (दि.८।२७)। काशीतोऽन्यत्र होली। वसन्तोत्सवः। साभ्यंगस्नानम्। श्वपचस्पर्शहोलिका विभूतिधारणम्। |
| २९ | १४ | २ | गु | ३४ | १२ | रा | ७ | ५० | हस्त | ५७ | ३ | रा | ४ | ५८ | गण्ड | ३५ | ५२ | रा | ८ | ३० | तै | ३ | ६ | गर | ३४ | १२ | राक्षस | ९ | २ | २४ | २५ | १८ | | | ६ | ९ | ५ | ५१ | १० | २३ | ५२ | ४७ | ४ | ५१ | + | ९ | ७ | ४४ | यायिजययोगः ३४।१२ उ. ५७।३ या.। सायंचूतकुसुमप्राशनम्। रतिकाम महोत्सवः। सर्वार्थसिद्धियोगः ५३।५४ उ.। |
| २९ | १८ | ३ | शु | ३५ | ३ | रा | ८ | १० | चित्रा | ५८ | ५६ | रा | ५ | ४३ | वृद्धि | ३३ | ४० | रा | ७ | ३७ | व | ४ | ३८ | भ | ३५ | ३ | मुसल | १० | ३ | २५ | २६ | १९ | तुला | २८।० | ६ | ९ | ५ | ५१ | १० | २४ | ५२ | ५२ | ४ | २८ | + | ९ | ८ | ३८ | भ. ४।३८ उ. (दि. ८।१०) ३५।३ या. (रा. ८।१०)। तुलाराशिः (दि. ५।२१)। संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रतम्। |
| २९ | २१ | ४ | श | ३४ | ३३ | रा | ७ | ५७ | स्वाती | ५९ | ३४ | रा | ५ | ५८ | ध्रुव | ३० | ३० | सा | ६ | २० | वव | ४ | ४८ | वा | ३४ | ३३ | सिद्धि | ११ | ४ | २६ | २७ | २० | | | ६ | ८ | ५ | ५२ | १० | २५ | ५२ | ५५ | ४ | ५ | + | ८ | ९ | ३५ | यायिजययोगः ३४।३३ उ. ५९।३४ या.। सर्वार्थसिद्धियोगः ५९।३४ या.। |
| २९ | २५ | ५ | र | ३२ | ५४ | रा | ७ | १७ | विशाखा | ५९ | ० | रा | ५ | ४३ | व्याघात | २६ | २३ | दि | ४ | ४० | कौ | ३ | ४४ | तै | ३२ | ५४ | उत्पात | १२ | ५ | २७ | २८ | २१ | वृश्चिक | ४४।९ | ६ | ७ | ५ | ५३ | १० | २६ | ५२ | ५७ | ३ | ४१ | + | ८ | १० | ३४ | वृश्चिकराशिः (रा. ११।४७)। रंगपञ्चमी ५। विजयगोविन्द हलंकर दिवस (मणिपुर)। रवियोगः ५९।० उ.। |
| २९ | २९ | ६ | चं | ३० | ६ | सा | ६ | ८ | अनुराधा | ५७ | २४ | रा | ५ | ४ | हर्षण | २१ | २३ | दि | २ | ३९ | गर | १ | ३० | व | ३० ५८ | ६ ३३ | मानस | १३ | ६ | २८ | २९ | २२ | | | ६ | ६ | ५ | ५४ | १० | २७ | ५२ | ५६ | ३ | १८ | + | ८ | ११ | ३७ | भ. ३०।६ उ. (सा. ६।८) ५८।१३ या. (रा.शे. ५।२३)। मृत्युबाणारम्भः ७।५ (दि. ८।५६)। यायिजययोगः |
| २९ | ३२ | ७ | मं | २६ | २० | दि | ४ | ३८ | ज्येष्ठा | ५४ | ५८ | रा | ४ | ५ | वज्र | १५ | ३५ | दि | १२ | २० | वव | २६ | २० | वा | ५४ | २ | मुद्गर | १४ | ७ | २९ | ३० | २३ | धनु | ५४।५८ | ६ | ६ | ५ | ५४ | १० | २८ | ५२ | ५१ | २ | ५४ | + | ८ | १२ | ४१ | धनूराशिः (रा. ४।५)। काश्यांवृद्धाङ्गारक (बुढ़वा मंगल) पर्वः। मृत्युबाणनिवृत्तिः ७।१० (दि. ८।५८)। |
| २९ | ३६ | ८ | वु | २१ | ४४ | दि | २ | ४७ | मूल | ५१ | ४८ | रा | २ | ४८ | सिद्धि | ९ | ६ | दि | ९ | ४३ | कौ | २१ | ४४ | तै | ४९ | ७ | ध्वज | १५ | ८ | ३० | १ | २४ | | | ६ | ५ | ५ | ५५ | १० | २९ | ५२ | ४५ | २ | ३१ | + | ७ | १ | ४५ | श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रतम्। पर्युषितान्नपानादिकमत्र विहितम्। ⊙सं. मीने सूर्यः ७।१६ (दि. ८।५९)। मु. ३० समा। |
| २९ | ४० | ९ | गु | १६ | ३० | दि | १२ | ४० | पू.षा. | ४८ | ६ | रा | १ | १८ | व्यतिपात | २ ५२ | ३ ३४ | प्रा | ६ ३ | ५३ ५५ | गर | १६ | ३० | व | ४३ | ४० | धाता | १६ | ९ | १ | २ | २५ | | | ६ | ४ | ५ | ५६ | ११ | ० | ५२ | ३७ | २ | ७ | + | ७ | २ | ४५ | भ. ४३।४० उ. (रा. ११।३२)। सौरचैत्रमासारम्भः। स्थायिजययोगः २६।२० उ. ५४।५८ या.। |
| २९ | ४४ | १० | शु | १० | ५० | दि | १० | २३ | उ.षा. | ४४ | ४ | रा | ११ | ४१ | परिघ | ४६ | ५७ | रा | १२ | ५० | भ | १० | ५० | वव | ३७ | ५३ | आनन्द | १७ | १० | २ | ३ | २६ | मकर | २।६ | ६ | ३ | ५ | ५७ | ११ | १ | ५२ | २७ | १ | ४३ | + | ७ | ३ | ४० | भ. १०।५० या. (दि. १०।२३)। मकरराशिः (प्रा. ६।५३)। पापमोचनी ११ एकादशी व्रतं स्मार्त्तानाम्। |
| २९ | ४७ | ११ | श | ४ ५४ | ५५ १ | प्रा | ८ ५ | १ ३८ | श्रवण | ३९ | ५३ | रा | १० | ० | शिव | ३९ | ९ | रा | ९ | ४३ | वा | ४ | ५६ | कौ | ३१ ५८ | ५५ ५३ | सुस्थिर | १८ | ११ | ३ | ४ | २७ | | | ६ | ३ | ५ | ५७ | ११ | २ | ५२ | १४ | १ | १९ | + | ६ | ४ | २८ | वैष्णवानामेकादशी व्रतम्। *दिवा ८।१ वादनात्परं एकादशी व्रतस्य पारणा।* ⊙उत्तराभाद्रपदा भे सूर्यः २७।५३ |
| २९ | ५१ | १३ | र | ५३ | ६ | रा | ३ | १६ | धनिष्ठा | ३५ | ४९ | रा | ८ | २२ | सिद्ध | ३१ | २७ | सा | ६ | ३७ | गर | २६ | २ | व | ५३ | ६ | मातंग | १९ | १२ | ४ | ५ | २८ | कुम्भ | ७।५१ | ६ | २ | ५ | ५८ | ११ | ३ | ५१ | ५९ | ० | ५५ | + | ६ | ५ | ११ | भ. ५३।६ उ. (रा. ३।१६)। कुम्भराशिः (दि. ९।१०)। प्रदोष १३ व्रतम्। पञ्चकारम्भः ७।५१ (दि. ९।१०)। |
| २९ | ५५ | १४ | चं | ४७ | ३८ | रा | १ | ४ | शतभिष | ३२ | ३ | सा | ६ | ५० | साध्य | २३ | ५९ | दि | ३ | ३७ | भ | २० | २२ | श | ४७ | ३८ | अमृत | २० | १३ | ५ | ६ | २९ | | | ६ | १ | ५ | ५९ | ११ | ४ | ५१ | ४२ | ० | ३१ | + | ६ | ५ | ५० | भ. २०।२२ या. (दि. २।१०)। मासशिवरात्रि १४ व्रतम्। ⊙सायन मेषे सूर्यः ५८।४१ (रा.शे. ५।२९)। |
| २९ | ५८ | ३० | मं | ४२ | ४० | रा | ११ | ४ | पू.भा. | २८ | ४७ | सा | ५ | ३१ | शुभ | १६ | ५२ | दि | १२ | ४५ | च | १५ | ९ | नाग | ४२ | ४० | काण | २१ | १४ | ६ | ७ | ३० | मीन | १४।३६ | ६ | ० | ६ | ० | ११ | ५ | ५१ | २३ | द. | ७ | + | ६ | – | – | मीनराशिः (दि. ११।५०)। स्नान-दान-श्राद्धादौ ३० अमावस्या। भौमवती अमावस्या। अमायाञ्च यदा वारो |

## ॥ विवाहमुहूर्तपञ्चेष्टलग्नविमर्शः॥

| | |
|---|---|
| ति. १ | बुधे उ.फा. भे रे.६ दिवा ल. ४ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. १६॥ वा ल.गोधूलिःवा ल. ९ इष्टाः ७ ग्र.व.वि.१५। रा.३।४४ उ. हस्ते रे.८ पञ्चेष्टलग्नाभावः। |
| ति. २ | गुरौ हस्ते रे.८ दिवा ल. ४ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. १६॥ वा ल.गोधूलिःवा ल. ९ इष्टाः ७ ग्र.व.वि.१५ |
| ति. ३ | शुक्रे रा.५।४३ उ. स्वात्यां केतुयुतिः। |
| ति. ४ | शनौ स्वात्यां पूर्वदोषः। |
| ति. ५ | रवौ रा. ५।४३ उ. मैत्रे रे.८ पञ्चेष्टलग्नाभावः। |
| ति. ६ | सोमे मृत्युबाणात्पूर्वं (दि.८।५६) मैत्रे रे.८ दिवा पञ्चेष्टलग्नाभावः। |
| ति. ७ | भौमे रा.४।५ उ. मूले रे. ७ पञ्चेष्टलग्नाभावः। परं मीनार्के सत्वाद् विवाह मुहूर्त्ताभावः॥ |

## ॐ सूर्योदये दैनिकस्पष्टभौमादिग्रहाः ॐ

| ति. | वा. | भौमः | | | | बुधः | | | | गुरुः | | | | शुक्रः | | | | शनिः | | | | राहुः | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | वु | १ | २७ | ३४ | ४९ | १० | १८ | २३ | २१ | ११ | २० | ६ | १८ | ११ | २५ | २ | ५४ | १० | १ | ५७ | ५९ | ० | १२ | २४ | २ |
| २ | गु | १ | २७ | ५४ | ७ | १० | २० | १४ | १५ | ११ | २० | १९ | ३५ | ११ | २६ | १५ | ९ | १० | २ | ४ | ३५ | ० | १२ | २० | ५१ |
| ३ | शु | १ | २८ | १३ | २६ | १० | २२ | ५ | १० | ११ | २० | ३२ | ५१ | ११ | २७ | २७ | २४ | १० | २ | ११ | ११ | ० | १२ | १७ | ४० |
| ४ | श | १ | २८ | ३७ | ९ | १० | २३ | ५६ | ४ | ११ | २० | ४६ | ७ | ११ | २८ | ३९ | ३८ | १० | २ | १७ | ४८ | ० | १२ | १४ | ३० |
| ५ | र | १ | २९ | ४ | ५९ | १० | २५ | ४६ | ४५ | ११ | २० | ५९ | २४ | ११ | २९ | ५१ | ५३ | १० | २ | २४ | २६ | ० | १२ | ११ | १९ |
| ६ | चं | १ | २९ | ३२ | ५० | १० | २७ | ३६ | २५ | ११ | २१ | १२ | ४० | ० | १ | ४ | ८ | १० | २ | ३१ | ३ | ० | १२ | ८ | ८ |
| ७ | मं | २ | ० | ० | ४० | १० | २९ | २६ | ५ | ११ | २१ | २६ | १६ | ० | २ | १६ | २३ | १० | २ | ३७ | ४१ | ० | १२ | ४ | ५७ |
| ८ | बु | २ | ० | २८ | ३० | ११ | १ | १६ | २४ | ११ | २१ | ३९ | ५५ | ० | ३ | २८ | ३५ | १० | २ | ४४ | १९ | ० | १२ | १ | ४६ |
| ९ | गु | २ | ० | ५६ | २१ | ११ | ३ | ७ | १८ | ११ | २१ | ५३ | ३३ | ० | ४ | ४० | ३३ | १० | २ | ५० | ५७ | ० | ११ | ५८ | ३६ |
| १० | शु | २ | १ | २४ | ११ | ११ | ४ | ५६ | ४२ | ११ | २२ | ७ | १२ | ० | ५ | ५२ | ३० | १० | २ | ५७ | ३५ | ० | ११ | ५५ | २५ |
| ११ | श | २ | १ | ५२ | १ | ११ | ६ | ४२ | ४१ | ११ | २२ | २० | ५० | ० | ७ | ४ | २८ | १० | ३ | ३ | ४५ | ० | ११ | ५२ | १४ |
| १३ | र | २ | २ | १९ | ५२ | ११ | ८ | २८ | ३८ | ११ | २२ | ३४ | २९ | ० | ८ | १६ | २६ | १० | ३ | ९ | ३७ | ० | ११ | ४९ | ३ |
| १४ | चं | २ | २ | ४७ | ४२ | ११ | १० | १४ | ३४ | ११ | २२ | ४८ | ७ | ० | ९ | २८ | २३ | १० | ३ | १५ | २९ | ० | ११ | ४५ | ५२ |
| ३० | मं | २ | ३ | १५ | ३३ | ११ | १२ | ० | ३० | ११ | २३ | १ | ४६ | ० | १० | ४० | १३ | १० | ३ | २१ | २१ | ० | ११ | ४२ | ४१ |

*भौमादीनाञ्चारः- भौमः-ति. ६ सोमे मिथुने ५८।३४ (रा.शे.५।३२)॥ बुधः-ति. १ बुधे पूर्वाभाद्रपदा भे ५२।१७ (रा. ३।५)। ति. ७ भौमे मीने १८।२७ (दि.१।२९)। ति. ९ गुरौ उत्तराभाद्रपदा भे ६।५८ (दि.८।५१)॥ गुरुः- रेवती २ चरणे॥ शुक्रः- ति. ५ रवौ अश्विन्यां मेषे च ६।४४ (दि. ८।४९)॥ शनिः- ति. १४ सोमे धनिष्ठा ४ चरणे ४६।१२ (रा.१२।३०)॥ राहुः- अश्विनी ४ चरणे केतुश्च स्वाती २ चरणे॥*

*बुधस्यवारे यदि सक्रमश्चेत्समानवस्तुनिभवेच्चधान्यम्। असौख्यलोकाभयभीतपीडासुवृष्टिकालेपु च मंद वर्षा॥*

### ४७ पं.चैत्रकृष्ण ८ वुधे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।
द्युगणः २९८३
अयनांशाः २४।९।५५

| सू. | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १० | ८ | २ | ११ | ११ | ० | १० | ० | ६ |
| २९ | १ | ० | १ | २१ | ३ | २ | १२ | १२ |
| ५२ | १० | २८ | १६ | ३९ | २८ | ४४ | १ | १ |
| ४५ | ५३ | ३० | २४ | ५५ | ३५ | १९ | ४६ | ४६ |
| ५९ | ८४६ | २७ | ११० | १३ | ७१ | ६ | ३ | ३ |
| ५२ | ३४ | ५१ | ५४ | ३८ | ५८ | ३८ | ११ | ११ |

बु.१२गु. | १० | शु. १ रा. | सू. ११ श. | ९ चं. | २ | ८ | ३ मं. | ५ | ७ के. | ४ | ६

पक्षेऽस्मिन् विविधमुहूर्त्ताः- ति. १ वुधे उ.फा. भे पुंसवनसीमन्त जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन गर्भाधान (द्वितीयायाम्) सुभगांविनानववस्त्रधारण कणमर्दन शिल्पविद्या **इष्टिकादहन** विपणि धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. २ गुरौ हस्ते अन्नप्राशन सूतीस्नान गर्भाधान शय्यासनाद्युपभोग नववस्त्रधारण गोक्रय-विक्रय दक्षिणांविनान्यदिग्यात्रा नवान्नभक्षण भैपज्य **इष्टिकानिर्माण-इष्टिकादहन** विपणि व्यापार गजाश्वकृत्य शिरामोक्षण मुहूर्त्तः। ति. ३ शुक्रे चित्रा भे सूर्यवेधो विष्टिश्च। ति. ४ शनौ स्वात्यां केतुयुतिः। ति. ५ रवौ विशाखा भे शनिवेधः। ति. ६ सोमे मैत्रे विष्टेः पूर्वं (सा. ६।८) जातकर्मनामकरण शिशुताम्बूलभक्षण भूम्युपवेशन कणमर्दन भैपज्य विपणि गजकृत्य मुहूर्त्तः। ति. ७ भौमे ज्येष्ठा भे शस्त्रघटन शिरामोक्षण मुहूर्त्तः। ति. ८ बुधे मूले व्यतिपातात्पूर्वं (दि. ९।४३) शिशुताम्बूलभक्षण कणमर्दन शिल्पविद्या भैपज्य धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः। ति. ९ गुरौ पू.षा. भे नवम्यां रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त्तः। रिक्तोत्तरं शिल्पविद्या नौकावटन मुहूर्त्तः। ति. १० शुक्रे उ.षा. भे भौमवेधो विष्टिश्च। रा. ११।४१ उ. श्रवणे पूर्व-दक्षिण दिग्यात्रा मुहूर्त्तः। ति. ११ शनौ श्रवणे दक्षिण दिग्यात्रा (एकादश्यां) वस्तुक्रय गजाश्वकृत्य मुहूर्त्तः। परं मासान्तादिदोपः।

| तिथि | १ वु | | २ गु | | ३ शु | | ४ श | | ५ र | | ६ चं | | ७ मं | | ८ वु | | तिथि | ९ गु | | १० शु | | ११ श | | १३ र | | १४ चं | | ३० मं | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ल.अ. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | ल.अ. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. | घं. | मि. |
| कुम्भ | ६ | ३० | ६ | २६ | ६ | २३ | ६ | १९ | ६ | १५ | ६ | ११ | ६ | ८ | ६ | ४ | मीन | ७ | २८ | ७ | २५ | ७ | २१ | ७ | १८ | ७ | १४ | ७ | १० |
| मीन | ७ | ५८ | ७ | ५४ | ७ | ५१ | ७ | ४७ | ७ | ४३ | ७ | ३९ | ७ | ३६ | ७ | ३२ | मेष | ९ | ५ | ९ | २ | ८ | ५९ | ८ | ५५ | ८ | ५१ | ८ | ४७ |
| मेष | ९ | ३५ | ९ | ३१ | ९ | २८ | ९ | २४ | ९ | २० | ९ | १६ | ९ | १३ | ९ | ९ | वृष | ११ | १ | १० | ५८ | १० | ५५ | १० | ५१ | १० | ४७ | १० | ४३ |
| वृष | ११ | ३१ | ११ | २७ | ११ | २४ | ११ | २० | ११ | १६ | ११ | १२ | ११ | ९ | ११ | ५ | मिथुन | १ | १५ | १ | १२ | १ | ९ | १ | ५ | १ | १ | १२ | ५७ |
| मिथुन | १ | ४५ | १ | ४१ | १ | ३८ | १ | ३४ | १ | ३० | १ | २६ | १ | २३ | १ | १९ | कर्क | ३ | ३३ | ३ | ३० | ३ | २७ | ३ | २३ | ३ | १९ | ३ | १५ |
| कर्क | ४ | ३ | ३ | ५९ | ३ | ५६ | ३ | ५२ | ३ | ४८ | ३ | ४४ | ३ | ४१ | ३ | ३७ | सिंह | ५ | ४७ | ५ | ४४ | ५ | ४१ | ५ | ३७ | ५ | ३३ | ५ | २९ |
| ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | ल.अ. | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | | रात्रि | |
| सिंह | ६ | १७ | ६ | १३ | ६ | १० | ६ | ६ | ६ | ३ | ५ | ५८ | ५ | ५५ | ५ | ५१ | कन्या | ८ | ० | ७ | ५७ | ७ | ५४ | ७ | ५० | ७ | ४६ | ७ | ४२ |
| कन्या | ८ | ३० | ८ | २६ | ८ | २३ | ८ | १९ | ८ | १५ | ८ | ११ | ८ | ८ | ८ | ४ | तुला | १० | १६ | १० | १३ | १० | १० | १० | ६ | १० | २ | ९ | ५८ |
| तुला | १० | ४६ | १० | ४२ | १० | ३८ | १० | ३४ | १० | ३१ | १० | २७ | १० | २४ | १० | २० | वृश्चिक | १२ | ३३ | १२ | ३० | १२ | २७ | १२ | २३ | १२ | १९ | १२ | १५ |
| वृश्चिक | १ | ३ | १२ | ५९ | १२ | ५६ | १२ | ५२ | १२ | ४८ | १२ | ४४ | १२ | ४१ | १२ | ३७ | धनु | २ | ३९ | २ | ३६ | २ | ३३ | २ | २९ | २ | २५ | २ | २१ |
| धनु | ३ | ९ | ३ | ५ | ३ | १ | २ | ५८ | २ | ५४ | २ | ५० | २ | ४७ | २ | ४३ | मकर | ४ | २६ | ४ | २३ | ४ | २० | ४ | १६ | ४ | १२ | ४ | ८ |
| मकर | ४ | ५६ | ४ | ५२ | ४ | ४८ | ४ | ४५ | ४ | ४१ | ४ | ३७ | ४ | ३४ | ४ | ३० | कुम्भ | ५ | ५७ | ५ | ५४ | ५ | ५१ | ५ | ४७ | ५ | ४३ | ५ | ३९ |

### ४८ पं० चैत्रकृष्ण ३० भौमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।
द्युगणः २९८९
अयनांशाः २४।९।५६

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ११ | १० | २ | ११ | ११ | ० | १० | ० | ६ |
| ५ | २६ | ३ | १२ | २३ | १० | ३ | ११ | ११ |
| ५१ | ३४ | १५ | ० | १ | ४० | २१ | ४२ | ४२ |
| २३ | १३ | ३३ | ३० | ४६ | १३ | २१ | ४१ | ४१ |
| ५९ | ८४६ | २७ | १०४ | १३ | ७० | ५ | ३ | ३ |
| ३८ | ४ | २० | २७ | ३८ | ५९ | ५२ | ११ | ११ |

शु.१ रा. | सू. | चं.११श. | २ | बु. १२ गु. | १० | ३ मं. | ९ | ४ | ६ | ८ | ५ | ७ के.

चन्द्रोदयः (रा. ८।३८)। कल्पादिः ३१ छत्रपतिशिवाजी जयन्ती (प्राचीनतम)। स्थायिजययोगः ३५।३ उ. ५८।५६ या.। ३०।६ उ. ५७।२४ या.। सर्वार्थसिद्धियोगः ५७।२४ या.। रवियोगः ५७।२४ या.। फलं समता। पराः १६ घट्यः पुण्याः। गोऽन्नदानम्। स्नानं गोदावर्याम्। खरमासारम्भः। वसन्तर्त्तुः। बुधाष्टमी ८। यमघंटयोगः ५१।४८ या.। सर्वार्थसिद्धियोगः ४४।४ उ.। (दि. ५।१२)। सर्वार्थसिद्धियोगः ३९।५३ या.। द्विपुष्करयोगः ३९।५३ उ. ५८।५७ या.। यायिजययोगः ३५।४९ या.। भवेद्भूमि सुतस्य चा गंगायां यदि लभ्येत कोटि सूर्य ग्रहैः समा। पापवारान्विते दर्शे दुर्भिक्षं च प्रजाभयम्। सर्वार्थसिद्धियोगः २८।४७ उ.।

मूलविचार-ज्येष्ठा/मूल-ति.६ सोमे ५७।२४ (रा.५।४) उ.। ति.८ बुधे ५१।४८ (रा. २।४८) या.।
पञ्चक विचार- ति. १३ रवौ ७।५१ (दि. ९।१०) उ.।

अथ मूलादिगण्डान्तर्क्षफलशान्त्यादि निर्णयः। तत्र मूलयानि। पौष्णाश्विन्यो गुरोमार्गमघाचित्रेन्द्रमूलभे। एषु ऋक्षेषु जातानां कुर्याच्छोजनन्त्रयेति सामान्योक्तिः। मूलजातानां विशेषः- मूलाद्यपादजो हन्ति पितरञ्चद्वितीयजः। मातरञ्च तृतीयेऽर्थाच्चतुर्थदस्तु तुरीयजः। फलं तदेव सर्पर्क्षे प्रतीपं त्वन्त्यपादतः। तथाप्यभुक्तमूलं वासिष्ठोक्तम्। ज्येष्ठान्ते घटिका चैका मूलादौ घटिकाद्वयम्। अभुक्तमूलमित्याहुर्जातंतत्र विवर्जयेत्॥१॥ अत्र मनुरपि। ज्येष्ठान्ते घटिकार्द्धंञ्च मूलादौ घटिकार्द्धकम्। तयोरन्तर्गता नाडी अभुक्तं मूलमुच्यते॥ अथ विशेषः- शुभाशुभं च ज्ञानाय मूलवृक्षोजपार्णवे मूलस्तम्भत्वचाशाखा पत्रं पुष्पं फलं शिखा॥ वेदाश्च मुनयश्चैव दिशश्च वसवस्तथा॥१॥ नवबाण रसारुद्रमूल भेदाः प्रकीर्तताः॥ फलानि- मूले मूल विनाशः स्यात् स्तम्भेहानिर्धनक्षयः त्वचिभ्रातृ विनाशः स्याच्छाखा मातृविनाशकृत॥ पत्रे तु परिवारस्य पुष्पे राजप्रियस्य वै। फलेषु फलते राज्यं शाखायामल्पजीवितम्। अन्यमूलवृक्षः॥ मूले सप्तघटीषुमूलहननं स्तम्भे च सौख्यक्षयम्, त्वचिबंधुविनाशनञ्च विटपे स्वैर्हंतामातुलः। पत्रेकसुकृता तु वाणकुसुमे मन्त्रीफले सागरः। राज्यं वहिशिखाल्पमायुरिति सन्मूलांध्रिभे स्यात् फलम्॥३॥ मूलाहिजननशान्तिसमय निर्देशः- जातस्य द्वादशाहे तु जन्मर्क्षे वा शुभे दिने। शुभदिने इतिसप्तम्यन्तविशेषणमितिकेशाश्चिन्मतम्॥ पृथगभिधानमितिधर्मसिन्धुकाराणाम्॥ द्वादशाहे विशेषो धर्मसिन्धौ जन्माहाद्द्वादशाहेशांतिकरणे शान्तियुक्तनक्षत्राहुतौवह्निचक्रावलोकनादिकंनावश्यकम्। कालान्तरे आवश्यकम्। एवमन्याशान्तिष्वपि ज्ञेयम्। अन्येविशेषस्तत्रैवसंस्कारे नित्यकर्मसु निमित्ताव्यवहितोनिमित्तकेषु रोगातुरे च वह्निचक्रादिकं न विवक्षितमिति। क्व विलोक्यमिति अग्निस्थापनवेलायां पूर्णाहुत्यामथापि च। आहुतिर्वह्निवासश्च विलोक्याः शान्तिकर्मणि।

*वारुणीपर्वयोगः*
*वारुणेन समायुक्ता मधौ कृष्णात्रयोदशी। गङ्गायां यदि लभ्यते कोटिसूर्यग्रहैः समा॥१। शनिवारसमा युक्ता सा महावारुणी स्मृता। शुभ योगसमा युक्ता शनौ शतभिषा यदि। महामहेति विख्याता त्रिकोटि कुलमुद्धरेत्। अत्र गङ्गास्नानस्यैव फलाधिक्यः। चैत्रकृष्ण चतुर्दश्यां वै स्नायाच्छिव सन्निधौ। न प्रेतत्व मवाप्नोति गङ्गायां तु विशेषतः इतिः॥*

## अथ जन्मकालद्दीर्घादि ३ भेदानामत्रचरादिराशिवशादायुर्बोधकचक्रमिदम्

होरालग्नानयनम्- द्विघ्नेष्टनाड्य: पञ्चाप्ता: यच्छेषञ्च पलीकृतम्। दशाप्तमंशास्तेयुक्ता रवौ होरादयो भवेत्।

| दीर्घायु | मध्यायु | अल्पायु |
|---|---|---|
| चरभे १ लग्नेश: चरभे १ अष्टमेश: | चरभे १ लग्नेश: स्थिरभे २ अष्टमेश: | चरभे १ लग्नेश: द्विस्वभावभे ३ रन्ध्रेश: |
| स्थिरभे २ लग्नेश: द्विस्वभाभे ३ अष्टमेश: | स्थिरभे २ लग्नेश: चरभे २ रन्ध्रेश: | स्थिरभे १ लग्नेश: स्थिरभे १ रन्ध्रेश: |
| द्विस्वभावभे ३ लग्नेश: स्थिरभे २ अष्टमेश: | द्विस्वभावभे ३ लग्नेश: द्विस्वभावभे ३ रन्ध्रेश: | द्विस्वभावभे३ लग्नेश: चरभे १ रन्ध्रेश: |

### रोगेत्रिनाडीचक्रम्

| | | |
|---|---|---|
| आर्द्रा | पुनवसु | पुष्य |
| पू.फा. | मघा | श्लेषा |
| उ.फा. | हस्त | चित्रा |
| अनुरा. | विशाखा | स्वाती |
| ज्येष्ठा | मूल | पू.षा. |
| धनिष्ठा | श्रवण | उ.षा. |
| शतभिष | पू.भा. | उ.भा. |
| भरणी | अश्विनी | रेवती |
| कृतिका | रोहिणी | मृगशिरा |

अथायुर्निर्णयचक्रानुसारेण जन्मलग्नाष्टमलग्नेशाभ्यां लग्नचन्द्राभ्यां लग्नहोरालग्नाभ्यां चेतिप्रकारत्रयेणायुर्निर्णेतव्यम्।। त्रिपाऽप्येकरूपायुष्यागततदेव ग्राह्यम्।। विसंवादे प्रकारद्वयागतायुर्ग्राह्यम्।। त्रयाणां विसंवादे लग्नहोरालग्नायुर्ग्राह्यम् एवं विसंवादे लग्नसप्तमयोरन्यतरे चन्द्रे लग्न चन्द्रायुर्ग्राह्यम्।। शनौयोगकर्तरिदीर्घायुपि मध्यमायु:।। मध्यमायुपिहीनायु:।। हीनायुपिकिञ्चिदिति नैवंस्वर्क्षेच्चगतेशनौ कक्षाहानि:।। लग्नसप्तमयोरष्टमनाथयो र्योबलीतस्य केन्द्रेस्थित्यादीर्घायु:।। पणफरेस्थित्यामध्यायु:।। आपोक्लिमस्थित्याहीनायुरेव।। कारकस्थित स्थानप्रसप्तमाच्चाष्टम् नाथयोर्मेबलवांस्तेनापिनिर्णे तव्यं।। सारण्युदाहरणम्।। कस्यचिजन्मेष्टम् ५।३।४ जन्मलग्नं ९।५।४७।२५ होरालग्नं ६।१९।४७।२२ लग्नेश: शनि ११।२१।४८।३२ अष्टमेशोऽर्क: १०।४।८।१२ चन्द्र ७।६।३४।१६। अत्र लग्नेशाष्टमेशयो: स्थित्या दीर्घायु:।। किन्त्वत्र शनियोगकर्तृत्वान्मध्यमायु:।। लग्नेंदुभ्यां मध्यमायु:।। लग्नहोरालग्नाभ्यां दीर्घायु:।। एवमत्र मध्यमायु: प्रमाणासिद्धम्।। तत्रशनि सूर्ययोगदलम् ०।१२।५८।१२ आत्रांशाना वर्षादिफलं १२।५८।१२ कलानां मासादि १२।११।१२ विकलानां दिनानि १।१६।४८ तेषामेकोपचितस्थानयोगाद्वर्षादि: १३।१०।०।२८।४८ मध्यायुपि ६४ शुद्धंस्पष्टमायुर्वोवर्षादिकम् ५०।१।२९।३१।१२ एवं लग्नेन्दुभ्यां स्फुटम्।। एवमत्रायुरानयने।। भोग्यां शानुक्रमात्प्रत्येकयोगकारकग्रहांशादिवशात्।। एवं मन्दचन्द्राभ्याम् इत्यस्यसूत्रस्यार्थान्तरात। भवन्ति बहूनि भेदानि नात्र विस्तृतिमि यालिखितान्यपि बुद्धिमद्भिर्गणकवरैस्स्कंधपारीणनानुचिन्तनीयानीति। अथ मारकस्थानायु: स्थानयोर्ज्ञानमाह।। अष्टमर्क्षतृतीयञ्च लग्नादायुरुदाहृतम्। द्वितीयं सप्तमस्थानं मारकस्थानमुच्यते।। क्वचिद्रोगेशव्येश्चाष्टमेशदशास्वपिमारकसम्भव:। परस्परपष्ठाष्टमेशयोर्दश्चाऽन्तरं न शोभनम्। मारकेमारकान्तरान्तरं न शोभनम्। व्ययद्वितीयेशौसम्बन्धत: फलप्रदौ। लग्नेशदशाऽनिष्टसम्बन्धरहिता न मारककारिणी पापदशाप्यनिष्टेवेति। चरकारक:। सर्वेभ्योऽपि स्फुटग्रहेभ्यो राशिं विहाय योऽधिकांश: सआत्मकारक: तदल्पो ऽमात्यस्तत: क्रमातभ्रातु: मातु: पिता: पुत्रस्यज्ञातकारकाभवन्ति। अथत्रिधायुर्योगोस्ति।। तदाह। त्रिविधाश्चायुषांयोगा: स्वल्पायुर्मध्यमोत्तमा:।। द्वात्रिंशत्पूर्वमल्पायुर्मध्यमायुस्ततो भवेत् ।१। चत:षष्ट्यापुरस्तातु ततो दीर्घमुदाहृतम् उत्तमायु शतादूर्ध्वमिति। अथाल्पाद्यायुस्त्रयेपित्रिधायु र्योगोस्तितदाह।। अल्पायुरल्पमध्यंतुपूर्णायुस्त्रिविधं भवेत्।। मध्यमादल्पमध्यं तु पूर्णा युस्त्रिविधं भवेत्। एवं नवविधं प्रोक्तमायुषां तु विनिर्णय:।। अल्पायुर्योगजातस्य विपद्येमूर्ति वदेत्। जातस्य मध्यमे योगे प्रत्यरेतु मूर्तिर्भवेत्।। दीर्घायुर्योगजातानां वध भे तु मृतिर्भवेत्। त्रिपु योगेपु चैतेपु प्रत्येकं त्रिविधं भवेदिति।।

### जातकपारिजातोक्त: आयुर्विचार:

अल्पायुर्व्ययगोऽथवा रिपुगते पापान्विते रन्ध्रपे। लग्नेशेन युते तु वत्र बिबले जातोऽल्पजीवी नर:।।१।। कर्मेशरन्ध्रतनुपा बलशालिन श्चज्जातश्चिरायुरिननन्दनयोगहीना:। द्वावप्यतीवबलिनौ यदि मध्यमायुरेकोबली लघुतरायुरनायुरन्य:।।२।। रन्ध्राधिपेपापगृहोपयाते दु:स्थानगेपापयुतेऽल्पमायु:। शुभान्विते शोभनराशियुक्ते शुभेक्षिते रन्ध्रगते चिरायु:।।३।। नाशस्थे तनुपेऽथवानिधनपे पापेनयुक्तेक्षिते मूढेऽदृश्यगतेऽथवारिपुगृहे जातोगतायुर्भवेत। दीर्घायुर्निजतुंगगेशुभयुते केन्द्रत्रिकोणोऽथवा रन्ध्रेरन्ध्रपतौ चिरायुरुदयं यातो विलग्नाधिपे।।४।। लग्नादन्त्यगृहाधिपे बलवति स्वर्क्षेचिरायु: सुखी। लग्नेशो यदि रन्ध्रपश्च बलिनौ केन्द्रस्थितौ चेत्तथा आपानोदयराशितोष्टमगृहान्नोपूरणं जन्ममभं शुक्रज्ञामरवन्दितेक्षितयुतं पद्मायुरारोग्यभाक्।।५।। लग्नाद्धनाष्टमेशौ च तयोर्मध्ये च यो बली। प्राणीरुद्र: सविज्ञेय: सूर्यादिग्रह सम्भव:।। रुद्रशूलान्तमायु: स्यात् त्रिकोणान्ते तथा पुन: लग्नान्ते पञ्चमान्ते च नवमान्ते स्थलत्रये। आयु: स्थानाधिप: पापै: सहैव यदि संस्थित:। करोत्यल्पायुषं जातं लग्नेशोऽप्यत्र संयुत:।। षष्ठेव्ययेऽपिषष्ठेशो व्ययेशोरिपौ व्ययेशो। लग्नेऽष्टमे स्थितोवाऽपि दीर्घमायु: प्रयच्छति।। स्वस्थाने स्वनवांशे वा मित्रांशे मित्रमन्दिरे। दीर्घायुष्यं करोत्येव लग्नेशोऽष्टमपस्तथा।। रन्ध्रेशे नीचराशिस्थेरन्ध्रेपापग्रहैर्युते। लग्नेशोदुर्बलोयस्य ही नायुर्भवति ध्रुवम्।। लग्नाष्टमपकर्मेशमन्दा: केन्द्रत्रिकोणगा:। लाभे वा संस्थितास्तद्वद्दिशेयुर्दीर्घमायुषम्।। लग्नेशेस्वोच्चराशिस्थेचन्द्रे लाभसमन्विते। अष्टमस्थे गुरौवाऽपि दीर्घायुष्यं न संशय:।।

## ।। अथजैमिनीसूत्रोक्तायु: साधने अंशफलज्ञानाय सारिणीयम् ।।

| अंशा: | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ष | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| मास | ० | ० | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | १० | ११ |
| दिन | ० | २४ | १८ | १२ | ६ | ० | २४ | १८ | १२ | ६ | ० | २४ | १८ | १२ | ६ | ० | २४ | १८ | १२ | ६ | ० | २४ | १८ | १२ | ६ | ० | २४ | १८ | १२ | ६ |

## ।। अथाऽत्रजैमिनीसूत्रोक्तायु: साधने कलाफलज्ञानाय सारिणीयम् ।।

| कला | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | ६ | ६ |
| दिन | ६ | १२ | १९ | २५ | ३ | ८ | १४ | २१ | २७ | ४ | १० | १६ | २३ | २९ | ६ | १२ | १८ | २५ | १ | ८ | १४ | २० | २७ | ३ | १० | १६ | २२ | २९ | ५ | १२ |
| घटी | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० |
| कला | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० |
| मास | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ |
| दिन | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | १७ | २० |
| घटी | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | ३६ | ४ |

## ।। अथाऽत्रजैमिनीसूत्रोक्तायु: साधने विकलाफलज्ञानाय सारिणीयम् ।।

| विकला | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| घटी | ६ | १२ | १९ | २५ | ३२ | ३८ | ४४ | ५१ | ५७ | ४ | १० | १६ | २३ | २९ | ३६ | ४२ | ४८ | ५५ | १ | ८ | १४ | २० | २७ | ३३ | ४० | ४६ | ५२ | ५९ | ५ | १२ |
| पल | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० |
| विकला | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० |
| दिन | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| घटी | १८ | २४ | ३१ | ३७ | ४४ | ५० | ५६ | ३ | ९ | १६ | २२ | २८ | ३५ | ४१ | ४८ | ५४ | ० | ७ | १३ | २० | २६ | ३२ | ३९ | ४५ | ५२ | ५८ | ४ | ११ | १७ | २४ |
| पल | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० |

## ।। यथाऽत्रप्रत्येकग्रहाणां रेखाष्टकज्ञानाय सारिणीयम् ।।

### तत्रादौरवेरष्टकवर्गाङ्का: ४८

| सू. | चं. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ३ | १ | ३ | ५ | ६ | १ | ३ |
| २ | ६ | २ | ५ | ६ | ७ | २ | ४ |
| ४ | १० | ४ | ६ | ९ | १२ | ४ | ६ |
| ७ | ११ | ७ | ९ | ११ | | ७ | १० |
| ८ | | ८ | १० | | | ८ | ११ |
| ९ | | ९ | ११ | | | ९ | १२ |
| १० | | १० | १२ | | | १० | |
| ११ | | ११ | | | | ११ | |

### अथचन्द्रस्याष्टकवर्गाङ्का: ४९

| चं. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | सू. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ६ | ६ |
| ६ | ५ | ४ | ७ | ५ | ६ | ७ | १० |
| ७ | ६ | ५ | ८ | ७ | ११ | ८ | ११ |
| १० | ९ | ७ | १० | ९ | | १० | |
| ११ | १० | ८ | ११ | १० | | ११ | |
| | ११ | १० | १२ | ११ | | | |
| | | ११ | | | | | |

### भौमस्याष्टकवर्गाङ्का: ३९

| मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | सू. | चं. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ३ | ६ | ६ | १ | ३ | ३ | १ |
| २ | ५ | १० | ८ | ४ | ५ | ६ | ३ |
| ४ | ६ | ११ | ११ | ७ | ६ | ११ | ६ |
| ७ | ११ | १२ | १२ | ८ | १० | | १० |
| ८ | | | | ९ | ११ | | ११ |
| १० | | | | १० | | | |
| ११ | | | | ११ | | | |

### बुधस्याष्टकवर्गाङ्का: ५४

| बु. | वृ. | शु. | श. | सू. | चं. | मं. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ६ | १ | १ | ५ | २ | १ | १ |
| ३ | ८ | २ | २ | ६ | ४ | २ | २ |
| ५ | ११ | ३ | ४ | ९ | ६ | ४ | ४ |
| ६ | १२ | ४ | ७ | ११ | ८ | ७ | ६ |
| ९ | | ५ | ८ | १२ | १० | ८ | ८ |
| १० | | ८ | ९ | | | ९ | १० |
| ११ | | ९ | १० | | | १० | ११ |
| १२ | | ११ | ११ | | | ११ | |

### अथ गुरोष्टकवर्गाङ्का: ५६

| वृ. | शु. | श. | सू. | चं. | मं. | बु. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | १ | २ | १ | १ | १ |
| २ | ५ | ५ | २ | ५ | २ | २ | २ |
| ३ | ६ | ६ | ३ | ७ | ४ | ४ | ४ |
| ४ | ९ | १२ | ४ | ९ | ७ | ५ | ५ |
| ७ | १० | | ७ | ११ | ८ | ६ | ६ |
| ८ | ११ | | ८ | | १० | ९ | ७ |
| १० | | | ९ | | ११ | १० | ९ |
| ११ | | | १० | | | ११ | १० |
| | | | ११ | | | | ११ |

### शुक्रस्याष्टकवर्गाङ्का: ५२

| शु. | श. | सू. | चं. | मं. | बु. | वृ. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ३ | ८ | १ | ३ | ३ | ५ | १ |
| २ | ४ | ११ | २ | ५ | ५ | ८ | २ |
| ३ | ५ | १२ | ३ | ६ | ६ | ९ | ३ |
| ४ | ८ | | ४ | ९ | ९ | १० | ४ |
| ५ | ९ | | ५ | ११ | ११ | ११ | ५ |
| ८ | १० | | ८ | १२ | | | ८ |
| ९ | ११ | | ९ | | | | ९ |
| १० | | | ११ | | | | ११ |
| ११ | | | १२ | | | | |

### अथशनेरष्टकवर्गाङ्का: ३९

| श. | सू. | चं. | मं. | बु. | वृ. | शु. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | १ | ३ | ३ | ६ | ५ | ६ | १ |
| ५ | २ | ६ | ५ | ८ | ६ | ११ | ३ |
| ६ | ४ | ११ | ६ | ९ | ११ | १२ | ४ |
| ११ | ७ | | १० | १० | १२ | | ६ |
| | ८ | | ११ | ११ | | | १० |
| | १० | | १२ | १२ | | | ११ |
| | ११ | | | | | | |

### लग्नस्याष्टकवर्गाङ्का: ४९

| सू. | चं. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ३ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ |
| ४ | ६ | ३ | २ | २ | २ | ३ | ६ |
| ६ | १० | ६ | ४ | ४ | ३ | ४ | १० |
| १० | ११ | १० | ६ | ५ | ४ | ६ | ११ |
| ११ | | ११ | ८ | ६ | ५ | १० | |
| १२ | | | १० | ७ | ८ | ११ | |
| | | | ११ | ९ | ९ | | |
| | | | | १० | ११ | | |
| | | | | ११ | | | |

अष्टकवर्गराशिगुणका: मे.७, वृ.१०, मि.८, क.४, सिं.१०, कं.५, तु.७, वृ.८, धन.९, मं.५, कु.११, मी.१२। ग्रहगुणका: सर्य५, चं.५, मं.८, बु.५, वृ.१०, शु.७, श.५,। रेखाफलम्- १ क्लेश:, २ अर्थहानि:, ३ प्रवास-कष्टम्, ४ समलाभ:, ५ सुखं, ६ धनाप्ति, ७ परमानन्दं, ८ कार्यसिद्धि:।

## ।। योगिनीदशान्तर्दशयोर्ज्ञानार्थं चक्रमिदम् ।।

| मङ्गला१ आर्द्रा चित्रा श्रवण | | | पिङ्गला२ पुन.स्वा. धनि. | | | धान्या ३ पुष्य विशा. शत. | | | भ्रामरी ४ अश्वि.श्ले.अ. पू.भा. | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मा. | १२ | चं. | मा. | २४ | सू. | मा. | ३६ | वृ. | मा. | ४८ | मं. |
| मं. | ० | १० | पि. | १ | १० | धा. | ३ | ० | भ्रा. | ५ | १० |
| पि. | ० | २० | धा. | २ | ० | भ्रा. | ४ | ० | भ. | ६ | २० |
| धा. | १ | ० | भ्रा. | २ | २० | उ. | ५ | ० | उ. | ८ | ० |
| भ्रा. | १ | १० | उ. | ३ | १० | सि. | ६ | ० | सि. | ९ | १० |
| उ. | १ | २० | सि. | ४ | ० | म. | ७ | ० | सं. | १० | २० |
| सि. | २ | ० | म. | ४ | २० | स. | ८ | ० | मं. | १ | १० |
| म. | २ | १० | स. | ५ | १० | मं. | १ | ० | पि. | २ | २० |
| स. | २ | २० | मं. | ० | २० | पि. | २ | ० | धा. | ४ | ० |

| भद्रिका ५ भर.मघा.ज्ये. उ.भा. | | | उल्का ६ कृत्ति.पू.फा. मू.रेव. | | | सिद्धा ७ रोहि. उ.फा. पू.षा. | | | सङ्कटा ८ मृग. हस्त उ.षा. | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मा. | ६० | बु. | मा. | ७२ | श. | मा. | ८४ | शु. | मा. | ९६ | के. |
| भ. | ८ | १० | उ. | १२ | ० | सि. | १६ | १० | सं. | २१ | १० |
| उ. | १० | ० | सि. | १४ | ० | सं. | १८ | २० | मं. | २ | २० |
| सि. | ११ | २० | सं. | १६ | ० | मं. | २ | १० | पि. | ५ | १० |
| सं. | १३ | १० | मं. | २ | ० | पि. | ४ | २० | धा. | ८ | ० |
| मं. | १ | २० | पि. | ४ | ० | धा. | ७ | ० | भ्रा. | १० | २० |
| पि. | ३ | १० | धा. | ६ | ० | भ्रा. | ९ | १० | भ. | १३ | १० |
| धा. | ५ | ० | भ्रा. | ८ | ० | भ. | ११ | २० | उ. | १६ | ० |
| भ्रा. | ६ | २० | भ. | १० | ० | उ. | १४ | ० | सि. | १८ | २० |

जन्मभं त्रियुतं तष्टमष्टभि: शेषतोदशा।। मङ्गलाया वर्षवृद्ध्या संकटाष्टौ समामता:।।१।। भस्यभुक्तघटीस्वी धैवर्यगुण्याभभोगत:।। लब्धं वर्षादिकं भुक्तं योग्यं तच्छेषमुच्यते।।२।।

### केवलजन्माङ्गात् सायुरष्टिद्वर्षाणां चक्रम्

| जन्म लग्न | अत्रारिष्टवर्णांर्पि | | | | | आयु: |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ मेष | ४ | ११ | १६ | ४४ | ५८ | १०० |
| २ वृष | १ | २८ | ३३ | ४४ | ६१ | ९० |
| ३ मिथुन | ४ | १० | १४ | ३८ | ५८ | ८६ |
| ४ कर्क | ५ | २५ | ४० | ४८ | ६२ | १०० |
| ५ सिंह | ५ | १३ | २८ | ३६ | ४८ | ६३ |
| ६ कन्या | ४ | १६ | २३ | ३६ | ४५ | १०० |
| ७ तुला | १५ | ३१ | ३५ | ६२ | ६४ | ७५ |
| ८ वृश्चिक | ११ | २८ | ३८ | ५२ | ६२ | १०० |
| ९ धनु | २ | १० | १८,३१,३८ | | ४२,६७ | ८१ |
| १० मकर | ५ | १३ | २७ | ३६ | ५७,६२ | ९५ |
| ११ कुम्भ | २ | २८ | ३३ | ४८ | ६४ | ९० |
| १२ मीन | १ | ८ | १३ | ३६ | ४८ | ८३ |

द्वादशभावेषु किं विचार्यमिति।। जन्मकुण्डल्यां लग्नं तनु:। शरीरवर्णाकृतिलक्षणं यश: स्थागुणसुखदु:ख प्रवासतेजोबल दौर्बल्यं।। धनभावे वित्तनेत्रसुखं विद्या वाक्कुटुम्बाशनानि च।। तृतीये ज्येष्ठानुजस्थिति पराक्रम साहसानि कण्ठस्वर श्रुतिवरा भरणां शुकानि। धैर्यञ्च वीर्यबलमूलफलाशनानि। चतुर्थे विद्याजनानिसुखासुगन्ध बन्धुमनोगुणमहीपयान क्षितिगृहाणि।। पञ्चमे देवमहीपपुत्रपितृधी पुण्यानिचयोवा। षष्ठे रोगरिपुव्यसन क्षतानि। सप्तमे यात्रापुत्रकलत्रसौख्य मखिलं सच्चिन्तयेत्सप्तमादुक्तं पुत्रसुखागमागमफलम्। अष्टमे आयुर्दायमनिष्ट हेतुमुदयव्योमायुरीशार्कजै:। नवमे भाग्यप्रभावगुरुधर्मतप: शुभानिसञ्चिन्तयेन्नवमदेव पुरोहिताभ्याम्। भाग्यकर्मेशयो: सम्बन्धाद्राजयोगश्च।। दशमे आज्ञामानविभूषणानिवसन व्यापार निद्रा कृषि प्रव्रज्यागमकर्म जीवनयशोविज्ञान विद्याक्रमात। कर्मस्वामी दिनेशबोधन गुरुच्छायासुतै:।। एकादशे अखिलधनचय प्राप्ति:।। द्वादशे लग्नादत्यतदोश भानुतनयैर्दूराअनं दुर्गतिं तादृत्वं शयनादिसौख्याविभवं वित्तक्षयमिति।

### अथात्र जन्मकालिकचन्द्र लग्ने च भौमादि ६ ग्रहाणां वृहज्जातकोक्तदृष्टिफलम्

| ल.द.चं. | द्र.मं. | द्र.बु. | द्र.गु. | द्र.शु. | द्र.श. | द्र.सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मेष १ | भूप: | पण्डित: | राजातुल्य | गुणाग्रणि: | चौर: | दरिद्र: |
| वृष २ | निस्व: | चौर: | नृमान्य: | पृथ्वीपति: | धनवान् | प्रेष्य: |
| मिथुन ३ | शस्त्रव्यापार | पार्थिव | पण्डित: | निर्भय: | तंतुवाय: | दरिद्र: |
| कर्क ४ | युद्धकुशल | काव्यकर्त्ता | पण्डित: | भूमिपति: | शास्त्रोपजीवी | नेत्ररोगी |
| सिंह ५ | भूपति: | ज्योतिर्ज्ञ: | धनवान् | भूपति: | नापित: | भूमिपति: |
| कन्या ६ | स्त्रीवृत्तिक: | भूपति: | सेनापति: | निपुण: | स्त्रीवृत्तिक: | स्त्रीवृत्तिक: |
| तुला ७ | निकृत: | भूपति: | सुवर्णकार: | वणिक: | पक्षिघात: | प्राणिघातक: |
| वृश्चिक ८ | भूपति: | युग्मजनक: | नत:सह: | रजक: | अंगहीन: | दरिद्र: |
| धनु ९ | शठ: | बन्धुश्रेष्ठ | पृथ्वीश: | जनाश्रय: | पाखण्डी | दांभिक |
| मकर १० | भूपति: | राजाधिरा. | नरेन्द्र | पण्डित: | वित्तवान् | दरिद्र: |
| कुम्भ ११ | परस्त्रीरत: | भूपति: | राज्यतुल्य | परस्त्रीरत: | अन्यदार: | परस्त्रीरत |
| मीन १२ | पापयुक्त | हास्यदक्ष: | अवनीश: | पण्डित: | पापरत: | पापकर्मी |

अथप्रश्नोपरिनष्टार्थसयोगाल्लाभालाभविचार:।। अत्राह। तत्र प्रश्नलग्नात्सौम्या: केन्द्रोपचये वित्तलाभाय। पापास्तत्रस्थिताहानये। पूर्णेन्दुज्ञजीवभृगुणाभेकोऽपिलग्नगोलाभ:। चन्द्रो यत्र तिष्ठितितद् भवनं स्वामिनादृष्टं चेल्लाभ:। लग्नेशे सप्तमे सप्तमेशे लग्ने लाभ:। उभयो सप्तमे मुथशीलिनोराजलाभ:। तयोर्लग्ने मुथशीलिनो चौरोगृहमागत्यार्थम्प्रयच्छति। सूर्ये लग्ने चन्द्रे सप्तमे न लभ्यम्। कर्मेशलग्नेशयोरित्थशालेचौर: पलायते। सप्तमेशेकेन्द्रे चौरोऽन्यत्रगतोनहिगत: स्वधर्मस्वामिभ्यामित्थशालिनी। सप्तमेश लग्नेशसप्तमपतयोर्मिथोऽङ्गे दृष्टभावे निर्बलेवापि लग्नेचौरोराजार्थं समर्पयेत्। सप्तमेश दशमेशयोरित्थशाले राज्यबन्धनंभयम्। लग्नेश दशमेशायोरित्थ शाले स्वल्पो लाभ:। लग्नचन्द्र योश्शुभयोगे क्षणाल्लाभ:। धर्मेशरन्ध्रेशेत्थशाले लाभ:। अथ दिक्ज्ञानं। चन्द्रो यदि भवेल्लग्ने तदा पूर्वगतं भवेत्। दशमस्थो यदा चन्द्र: तदा नष्टं च दक्षिणे। सप्तमे च भवेच्चन्द्रस्तदा वित्तं च पश्चिमे। चतुर्थे च भवेच्चन्द्रस्तदा सौम्यादिगुच्यते।इति।

### सर्वघातचक्रम्। रोगार्तेगमनेरणे नो मङ्गले

| राशय: | में | वृ. | मि. | क. | सिं. | कं. | तु. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सू.घा. | ४ | ८ | १२ | ७ | ९ | १ | ६ | १० | ७ | ११ | २ | ३ |
| चं.घा. | १ | ५ | ९ | २ | ६ | १० | ३ | ७ | ४ | ८ | ११ | १२ |
| मं.घा. | ५ | ९ | १ | ६ | १० | २ | ७ | १ | ८ | १२ | ३ | ४ |
| बु.घा. | २ | ६ | १० | ३ | ७ | ११ | ४ | ८ | ५ | ९ | १२ | १ |
| गु.घा. | ६ | १० | २ | ७ | ११ | ३ | ८ | १२ | ९ | १ | ४ | ५ |
| शु.घा. | ७ | १० | ३ | ८ | १२ | ४ | ९ | १ | १० | २ | ५ | ६ |
| श.घा. | ३ | ७ | ११ | ४ | ८ | १२ | ५ | ९ | ६ | १० | १ | २ |
| रा.घा. | ८ | ७ | ६ | ४ | ५ | १० | १२ | १ | २ | ९ | ११ | ३ |
| के.घा. | ८ | ७ | १० | १ | ११ | ५ | ६ | ४ | २ | ३ | १२ | ९ |
| मा.घा. | का. | मा. | पौ. | मा. | फा. | चै. | वै. | ज्ये. | आ. | श्रा. | भा. | आ. |
| ति.घा. | १ ६ ११ | ५ १० १५ | २ ७ १२ | २ ७ १२ | ३ ८ १३ | ५ १० १५ | ४ ९ १४ | १ ६ ११ | ३ ८ १३ | ४ ९ १४ | ३ ८ १३ | ५ १० १५ |
| वा.घा. | सू. | श. | चं. | बु. | श. | श. | वृ. | शु. | शु. | मं. | वृ. | शु. |
| न.घा. | मं. | ह. | स्वा | ऽनु. | मू. | श्र. | श. | रे. | भ. | रो. | आ. | श्ले. |
| यो.घा. | वि. | शू. | प. | धृ. | प्र. | शु. | शु. | ब्र. | वै. | गं. | व्या. | व. |
| ल.घा. | १ | २ | ४ | ७ | १० | १२ | ६ | ८ | ९ | ११ | ३ | ५ |
| ग्र.घा. | मं. | शु. | बु. | चं. | सू. | बु. | शु. | मं. | वृ. | श. | श. | वृ. |
| धा.घा. | पि. | वा. | स. | क. | पि. | वा. | स. | क. | पि. | वा. | स. | क. |
| व.घा. | क्ष. | वै. | शू. | वि. | क्ष. | वै. | शू. | वि. | क्ष. | वै. | शू. | वि |
| सं.घा. | पु. | स्त्री | पु. | स्त्री | पु. | स्त्री | पु. | स्त्री | पु. | स्त्री | पु. | स्त्री |
| सं.घा. | क्रू. | सौ. | क्रू. | सौ. | क्रू. | सौ. | क्रू. | सौ. | क्रू. | सौ. | क्रू. | सौ. |
| सं.घा. | च. | स्थि | द्वि. | च | स्थि | द्वि. | च. | स्थि | द्वि. | च. | स्थि | द्वि. |
| व.घा. | रक्त | श्वे | हरि | पा. | धूम्र | चि. | कृ. | लक | पी. | कृ. | धू. | श्वे. |
| स्त्री. | मे. | वृ. | मि. | क. | सिं. | क. | तु. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. |
| चं.घा. | १ | ८ | ७ | ९ | ४ | ३ | ६ | २ | १० | ११ | ५ | १२ |

अथ वर्षाज्ञानायं सर्पाकारत्रिनाडीचक्रमिदम्।। सर्पचक्रं तथा लेख्यमश्विन्यादित्रिनाडिकम्।। नवन्दनवर्क्षाणिस्वर्ग पातालभूमिपु।।१।। एकनाडीस्थिता: सर्वे क्रूरा: सौम्याश्च खेचरा:। तदा सद्यो वदेद्वृष्टि: प्रभूतं जलमादिशेत्।।२।। सर्वगनाडीगतक्रूरा: सौम्या पातालचारगा:।। तदा वृष्टिर्भवेदेवं क्षिपेत्तोयं समुद्रगम्।।३।। नपुंसकानां योग: स्याद्वायु: स्त्रीयोगतो ध्रुवम्। पुंस्त्रीसंयोगतो वृष्टि- र्ग्रहाश्चेन्निर्बलसतदा।।४।। क्लीबस्त्रियोगत: शीतं पुंयोगे वातजं भयम्। वातनाड्यादिगा: खेटा: कुर्युनाडीभवं फलम्।।५।। एकोऽपि तत्फलं दत्ते सुनाडी संस्थितो ग्रह:। भूसुत: सर्वनाडीपु दत्ते नाडीभवं फलम्।।६।। बुधशुक्र महीसुनुगुरुश्चैकनाडिग:। नि:संशयं तदाकाले जयते वृष्टिरुत्तमा।।७।। चल त्यङ्गारके वृष्टिरुदये च बृहस्पतौ। शुक्रस्यास्तङ्गते वृष्टिस्त्रिधावृष्टि: शनैश्चरे।।

स्वर्ग

अ. भ. कृ. | आ. मृ. रो. | पु. पुन. श्ले. | उ. पू. म. | ह. चि. स्वा. | ज्ये. अ. वि. | मू. पू. उ. | श. ध. श्र. | उ. पू. रे. मृत्यु

पाताल

## ।। अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहाणां फलानि।।

| भावा | तनु १ | धनं २ | भ्राता३ | सुखं ४ | पुत्रः५ | शत्रु ६ | स्त्री ७ | मृत्युः ८ | धर्मः ९ | कर्म १० | लाभ ११ | व्यय १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्यः | शूरः, अगदः | वक्ता,रोगी,धनी | सुखी, विक्रमी | असुखी, सोद्विग्न | निस्वः, असुतः | बलवान,शत्रुजित | स्त्रीजितः,खलः | नेत्ररोगी,अल्पायुः | सुतार्थ,सुखभाक् | सुखशौर्यभाक् | बहुधनवान् | व्यङ्गः,पतितः |
| चन्द्रः | सुरूपः, अन्धः | कुटुम्बी, धनी | हिंसः, सात्त्विकः | समुखी, सुशीलः | धनी, पुत्रवान् | अल्पायुः,बहुशत्रुः | ईर्ष्यायुक्तोमदः | व्याध्यर्दितस्सुधीः | सौभाग्य,धनीत्व | धर्मार्थः,शौर्ययुक्तः | ख्यातः, सलाभः | अङ्गहीनः,हिंस्रः |
| भौमः | क्रूरः, व्रणी | कोपी, कुटिलः | विक्रमी, सुधीः | विसुखः,पीडितः | असुतः, दरिद्रः | अरिजितः,सुखी | दारजित्,रुगरुचि | अल्पपुत्रः, रोगी | पापरतः,दुष्मनोरथः | सुखशौर्यवान् | बहुधनी, सुखी | जातिभ्रष्टः,दारहा |
| बुधः | विद्वान्, सुखी | धनी, गुणी | दुर्जनः,अरिमर्दनः | पंडितः, सुखी | मंत्री, असुतः | अशत्रुः, विशीलः | धर्मज्ञः, सुकीर्तिः | सद् गुणी, धनी | पुत्रार्थसुखभाक् | सुखी, पराक्रमी | यशस्वी, धनी | अज्ञः, पतितः |
| गुरुः | चिरायुः, विद्वान् | सुवाक्, धनी | कृपणः, पापी | सुखी, धनी | धीमान्, प्रतापी | अशत्रुः, कामी | पितृतोधिकः | नीचः, अनायुः | तपस्वी,पुत्रवान् | सधनः, सुकृत | सलाभः,पुत्रादिः | खलः, दरिद्र |
| शुक्रः | सकामी, सुखी | धनी, सुवाक्यः | पापी, कृपणः | सुखी, सुधीः | सुखी, धीमान् | रोगी, अशत्रुः | कलहप्रियः | नीचः, दीर्घायुः | प्रतापी,तपस्वी | सुधनी,मानवान् | सुभृतिः,सलाभः | खलः, बंधुनाशः |
| शनिः | निस्वः, रोगी | वक्ता,रोगी,धनी | मति, विक्रमवान् | विसुखः, दुःखी | दरिद्री, विपुत्रः | शत्रुजितः, सुखी | स्त्रीजितः,दुःखी | नेत्ररोगी,अल्पपुत्रः | सुतार्थ,सुखभाक् | सुखी, पराक्रमी | प्रभूत,धनवान् | दुःखी, पतितः |
| राहुः | सुकामी, रोगी | अधर्मी, विरोधी | सुधीः, विक्रमी | असुखी, मातृहा | कुमतिः, दुर्भगः | सबलः, श्रीयुतः | सप्रेमहः,अशुचिः | रोगी, गतायुः | विकलः,दैन्ययुक्तः | मानी, सुखी | धनी,अपुत्रः,ख्यातः | कष्टः, पतितः |
| केतुः | गतायुः, सकाम | खलः, धनहानि | शूरः, पराक्रमी | मातृहा, दुःखी | असुतः, मूर्खः | धनी, सर्वार्यः | प्रमेहरोगी,दारहा | क्लेशयुक्तः,व्रणी | पापी,दुर्भगः | श्रेष्ठः, पितृहानिः | सधनः | दुर्जनः, पतितः |
| गुलिका | रोगार्तः, मन्दधीः | क्रोधी, विषयी | विषोदरः,अशोकः | रोगी, पापकृत | स्वल्पपुत्रः,अनायुः | रिपुहन्ता,विनोदी | कुदारः,कृतघ्नः | निस्वः,दःखार्त्त | पापकृत्, निर्दयी | सुखी, विमानः | सुभगोविपुत्रः | होनाङ्गः,नीचरतः |

## ।। अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहाणां फलानि।।

| भावा | तनुः १ | धनं २ | भ्राता३ | सुखं ४ | पुत्रः५ | शत्रु ६ | पति ७ | मृत्युः ८ | धर्मः ९ | कर्म १० | लाभ ११ | व्यय १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्यः | विधव,सक्रोधा | दरिद्रा,दुःखार्त्ता | सुतधनान्विता | दरिद्रा, सुपीड़ा | नष्टात्मजा | सुखधनाढ्या | सर्वसुखविमुक्ता | विधवा,दुःखार्त्ता | धनधर्मान्विता | सुकर्मरता | सुलाभा,बहुपुत्रा | सरोगा,विधवा |
| चन्द्रः | अल्पायुषी | बहुधनपुत्रान्वित | सुखार्थयुक्ता | सुभगार्थयुक्ता | सुपुत्रा, सुसखा | सरोगा,विधवा | पतिप्रियानुदेहाच | रोगर्दिता,कुनेत्रा | सुखपुत्रान्विता | धनधर्मयुक्ता | भव्या,विधिज्ञा | होनाङ्गी,व्ययढ्या |
| भौमः | विधवा,दुःखार्त्ता | वन्ध्या,सरोगा | सहजविरहिता | दुःखार्त्ता,विधवा | अपुत्रा,कुसंमता | रोगादिरहिता | विधवा,कुलटा | विधर्मा,रोगार्ता | विधर्मादुःखिनी | कुकर्मरताकुपुत्रा | नृपादर्थलाभा | खला,रुगार्ता |
| बुधः | सौभाग्यवृद्धिः | धनाढ्या,सतीच | धनाढ्या,पुत्रवती | सुखगृहान्विता | धीकान्तियुक्ता | गतायुषा,सकोपा | विद्वापतिव्रता | कृतघ्ना,भीतियुक्ता | सुभोगा,सुधर्मा | सत्कर्मबुद्धियुता | सुलाभापतिव्रता | कृशांगी,सुपुत्रा |
| गुरुः | सती, सुभगा | वित्तसौभाग्युता | सहजान्विता | सौख्यार्थयुक्ता | साध्वी, सगुणा | बहापदासत्यहन्त्री | सौभाग्यकीर्तियुक्ता | सरोगा,विशीला | कृतज्ञा,पुत्राढ्या | साध्वी,सुभगा | सुपुत्रा,सुरूपा | सरुजा,सुव्यया |
| शुक्रः | सुसुखा,पतिव्रता | सधनामुद्यान्विता | धनाढ्य,परहंत्री | सत्सुखाकीर्तियुक्ता | सुखसुतान्विता | विसुखा,दरिद्रा | पतिप्रियाशालरत | विसुखा,प्रमत्ता | धर्मपरा,सुभगा | सुकर्मार्थयुक्ता | पुत्रार्थ,लाभयुता | सुव्यया,दुःखार्त्ता |
| शनिः | वन्ध्या, दरिद्रा | निर्धना,दुःखार्त्ता | सुभगा, सुदक्षा | हद्रोगार्त, वन्ध्या | विपुत्रा,विसुखा | सगुण, सुभगा | विधवा,सरोगा | विधवा,दुःखार्त्ता | वन्ध्या,शोकार्ता | पापरता,सधना | सुलाभा,विपुत्रा | रोगार्तामूढ़ा च |
| राहुः केतुः | पुत्रहाः,दुःखार्त्ता | दरिद्रा,दुःखार्त्ता | सचित्ता, रोगढ्या | रोगार्ता, मातृहा | सुतार्थरहिता | निरोगार्थयुक्ता | सदुःखा,विधवा | सदुःखा,विधवा | वन्ध्या,शोकार्ता | कुकर्मरता | निरोगी,सुभगा | खला,सरोगी |

## ।। जन्मकाले वृहज्जातकोक्तस्वगृहादिस्थितग्रहाणां फलम् ।। ग्रहाणां दृष्टिः

| ग्र.सं. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | सूर्यः | चन्द्रः | मंगल | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | सूर्यादिग्रहाः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| स्वक्षेत्र | कुलसमः | कुलमुख्य | बन्धुपूज्यः | धनी | सुखान्वितः | भोगी | नृपतिः | ३।१० | ३।१० | ७ | ३।१० | ४।८ | ३।१० | ५।९ | एकपाददृष्टिः |
| स्वमित्रभे | परविभवपोष्य | सुहृदपोष्यः | स्वज्ञातिःपोष्यः | बन्धुपोष्यः | गणस्वामी | सेनाःपतिः | भूमिपतिः | ५।९ | ५।९ | ३।१० | ५।९ | ७ | ५।९ | ४।८ | द्विपाददृष्टिः |
| स्वशत्रुनीचर्क्षभे | धनरहितः | दुखान्वितः | मूढ़ः | व्याधिपीड़ितः | बन्धनतप्तः | बहुदुःखाढ्यः | बहुदुःखाढ्यः | ४।८ | ४।८ | ५।९ | ४।८ | ३।१० | ४।८ | ७ | त्रिपाददृष्टिः |
| स्वतुङ्गभे | सुखिनः | धनीसामन्तः | सामन्तभूपतिः | भूपालराट् | लोकेश्वरः | राज्याधिराजः | राज्याधिराजः | ७ | ७ | ४।८ | ७ | ५।९ | ७ | ३।१० | सम्पूर्णदृष्टिः |

## ।। अथ ग्रहाणामन्तर्दशाकालः।।

| सूर्यदशावर्ष ६ कृ.,उ.फा.,उ.षा. अन्तर्दशा १८ | | | | चन्द्रदशावर्ष १० रोहि.,हस्त,श्रवण अन्तर्दशा ३० | | | | भौमदशावर्ष ७ मृ.,चित्रा,ध. अन्तर्दशा २१ | | | | राहुदशावर्ष १८ आर्द्रा,स्वा.,शत. अन्तर्दशा ५४ | | | | गुरुदशावर्ष १६ पुन.,वि.,पू.भा. अन्तर्दशा ४८ | | | | शनिदशावर्ष १९ पुष्य,अनु.,उ.भा. अन्तर्दशा ५७ | | | | बुधदशावर्ष १७ श्ले.,ज्ये.,रेवती अन्तर्दशा ५१ | | | | केतुदशावर्ष ७ मघा.,मू.,अश्वि. अन्तर्दशा २१ | | | | शुक्रदशावर्ष २० पू.फा.,पू.षा.,भर. अन्तर्दशा ६० | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग्र. | व. | मा. | दि. | ग्र. | व. | मा. | दि. | ग्र. | व. | मा. | दि. | ग्र. | व. | मा. | दि. | ग्र. | व. | मा. | दि. | ग्र. | व. | मा. | दि. | ग्र. | व. | मा. | दि. | ग्र. | व. | मा. | दि. | ग्र. | व. | मा. | दि. |
| सू. | ० | ३ | १८ | चं. | ० | १० | ० | मं. | ० | ४ | २७ | रा. | २ | ८ | १२ | वृ. | २ | १ | १८ | श. | ३ | ० | ३ | बु. | २ | ४ | २७ | के. | ० | ४ | २७ | शु. | ३ | ४ | ० |
| चं. | ० | ६ | ० | मं. | ० | ७ | ० | रा. | १ | ० | १८ | वृ. | २ | ४ | २४ | श. | २ | ६ | १२ | बु. | २ | ८ | ९ | के. | ० | ११ | २७ | शु. | १ | २ | ० | सू. | १ | ० | ० |
| मं. | ० | ४ | ६ | रा. | १ | ६ | ० | वृ. | ० | ११ | ६ | श. | २ | १० | ६ | बु. | २ | ३ | ६ | के. | १ | १ | ९ | शु. | २ | १० | ० | सू. | ० | ४ | ६ | चं. | १ | ८ | ० |
| रा. | ० | १० | २४ | वृ. | १ | ४ | ० | श. | १ | १ | ९ | बु. | २ | ६ | १८ | के. | ० | ११ | ६ | शु. | ३ | २ | ० | सू. | ० | १० | ६ | चं. | ० | ७ | ० | मं. | १ | २ | ० |
| वृ. | ० | ९ | १८ | श. | १ | ७ | ० | बु. | ० | ११ | २७ | के. | १ | ० | १८ | शु. | २ | ८ | ० | सू. | ० | ११ | १२ | चं. | १ | ५ | ० | मं. | ० | ४ | २७ | रा. | ३ | ० | ० |
| श. | ० | ११ | १२ | बु. | १ | ५ | ० | के. | ० | ४ | २७ | शु. | ३ | ० | ० | सू. | ० | ९ | १८ | चं. | १ | ७ | ० | मं. | ० | ११ | २७ | रा. | १ | ० | १८ | वृ. | २ | ८ | ० |
| बु. | ० | १० | ६ | के. | ० | ७ | ० | शु. | १ | २ | ० | सू. | ० | १० | २४ | चं. | १ | ४ | ० | मं. | १ | १ | ९ | रा. | २ | ६ | १८ | वृ. | ० | ११ | ६ | श. | ३ | २ | ० |
| के. | ० | ४ | ६ | शु. | १ | ८ | ० | सू. | ० | ४ | ६ | चं. | १ | ६ | ० | मं. | ० | ११ | ६ | रा. | २ | १० | ६ | वृ. | २ | ३ | ६ | श. | १ | १ | ९ | बु. | २ | १० | ० |
| शु. | १ | ० | ० | सू. | ० | ६ | ० | चं. | ० | ७ | ० | मं. | १ | ० | १८ | रा. | २ | ४ | २४ | वृ. | २ | ६ | १२ | श. | २ | ८ | ९ | बु. | ० | ११ | २७ | के. | १ | २ | ० |

## पल्लीपतनेप्रशस्तवारतिथ्यक्षांणि

| | |
|---|---|
| सद्वारा | चं.बु.गु.शु. |
| तिथयः | १,२,३,५,६,१०,११,१२ |
| शुभ भानि | पुष्य अश्विरो.मृ.उ.फा.पुन.हस्त स्वा. अनु. ध.रे. श. एषु शुभः। |

दक्षिणांगेऽखिलेपुंसावामांगेतु मृगीदृशाम् शुभम्। जन्मर्क्षैमृत्यु योगेऽह्निदग्ध विष्टयादि दूषिते।। लग्ने पापयुते चन्द्रेऽमेष्टरिष्ट प्रजायते।।इति।।

**अथस्वप्नविचारः-** स्वप्नोद्विविधः।। इष्टफलोऽनिष्टफलश्चेति।। सामान्यतः इष्टफलो यथा- नदीसमुद्रतरणमाकाशगमनं तथा। ग्रहनक्षत्रमार्त्तण्डचन्द्र मण्डलदर्शनम्।। हर्म्यस्यारोहणं चैव प्रासाद शिरसोऽपि वा स्वप्ने च मदिरापानं वसामांसस्य भक्षणम्।। कृमिविष्ठानुलेपश्च रुधिरेणाभिसेचनम्। भोजनं दधिभक्तस्यश्वेत वस्त्रानुलेपम्। रसान्याभरणादीनि स्वप्ने दृष्ट्वा प्रसीदति। देवताविप्रपृथ्वीशानप्रशस्ताभरणङ्गनाः। वृषेभपर्वतक्षीरीफलवृक्षाधि रोहणम्।। दर्पणामिषमाल्याप्तिं शुक्लपुष्पाम्बरान्वितान् ।। द्रष्टुः स्वप्नेऽर्थलाभः स्याद्व्याधिमोक्षश्च जायते।

**।।अथ सामान्यतः दशान्तर्दशादिफलज्ञानाय सूत्राण्याह।।**

ग्रहोभावराशिदृग्योगजीविकादिफलं स्वदशान्तर्दशायां ददाति।।१।। अतिबलस्य परमोच्चगस्य वा दशा सम्पूर्णाभिधा। धनारोग्यविवर्धिनी।।२।। विबलस्वा नीचगस्य रिक्ता धनहानिदा।।३।। किञ्चिद्बलोपेतस्योच्चगस्यपूर्णा धनदा।।४।। परमनीचगस्य वा नीचांशगस्य वारिष्वंशगस्यानिष्ठ धनारोग्यनाशिनी।।५।। नीचाद्विगतस्य सुप्तस्यावरोहिणी कष्टदा सैवमित्रोच्चराश्यन्तर्गस्यामध्यमा।।६।। उच्चाभिमुखस्यारोहिणी शुभदा सैव नीचारिभांशगस्याधमाल्पशुभदा।।७।। तुङ्गात्ममित्रभगस्य शत्रुनीचांशगत्वे पूर्वार्द्धशुभा परार्द्धमिश्रा।।८।। मित्रोच्चात्मत्रिकोणेवर्गोत्तमस्ववर्गस्य-शुभा।।९।। अस्तारिनीचभांशगस्यकष्टा।।१०।। अवरोहिण्यधमाचेत् कष्टा।।११।। आरोहिणीमध्याचेत् सम्पूर्णा।।१२।। सद्दृष्टयुतस्याधिकरश्चमेः केन्द्र कोणगस्य शुभान्यथाकष्टा।।१३।। लग्नदशा चरभेऽङ्गद्रेष्काण-क्रमाच्छ्रेष्ठामध्याधमा।। द्विस्वभावे व्यत्येयेन स्थिरे नेष्ट सभा।।१४।। वक्रगस्य पाके स्थाननमानसौख्याद्यापचयः।।१५।। त्रिकेतरगस्यापाकेऽभीष्ट-सिद्धिः।।१६।। भाग्येशरिपुपाके बुद्धिभ्रंशो राजभयश्च।।१७।। राहुयुतस्य दशारिष्टदा।।१८।। रन्ध्रागाक्लेशस्य पाकेऽतिपीड़ा।।१९।। पापदशा पापान्तरे शत्रुताऽर्थ हानि महाभयम् ।।२०।। इष्टाधिकस्य श्रेष्ठा कष्टाधिकस्यनेष्टा समस्य सभा।।२१।। लग्नेशदशाबल धनदा।।२२।। धनेशदशाकष्टार्थदा।।२३।। सोत्थशपाके प्रायेण नेष्टफलम्।।२४।। सुखेशपाके गृहादि सुखम्।।२५।। सुतेशदशावित्तार्थदा।।२५।। षष्ठेशदशारिपुभयदा।।२७।। जायेशदशाशोकदा।।२८।। मृत्युपदशायां मृत्युः।।२९।। धर्मेशदशायां धर्म क्रिया।।३०।। खेशदशानृपादर्थदा।।३१।। लाभेशदश लाभदा।।३२।। व्ययेशदशार्थ हानिकष्टदा।।३३।। दिग्बलोपेतस्य पाकेमहाप्रतिस्वद्विभांशे।।३४।। अन्योन्य षष्ठाष्ट मगयोरन्तरे महाभयम्।।३५।। पाकेशाधिपस्य भुक्ता स्थानच्युति-हानिश्च।।३६।। पापपाकेशुभान्तरे आदौ कष्टं ततः सुखम् ।।३७।। शुभपाके शुभान्तरे सुखम् ।।३८।। शुभपाके पापान्तरे आदौ सुखं ततो भयम् ।।३९।।

## ।। अथ यात्रायां शुभाशुभनक्षत्रज्ञानाय चक्रमिदम् ।।

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अश्विनी | पुनर्वसु | अनुराधा | मृगशिर | पुष्य | रेवती | हस्त | श्रवण | धनिष्ठा | एषु शुभा |
| रोहिणी | उत्तरा ३ | | पूर्वा ३ | | मूल | शतभिष | | ज्येष्ठा | एषु मध्या |
| भरणी | कृतिका | आर्द्रा | अश्लेषा | मघा | चित्रा | स्वाती | | विशाखा | एतद्भेषु निन्द्या |
| श्रवण | हस्त | मृगशिर | पुनर्वसु | पुष्य | अश्विनी | अनुराधा | एषु सर्वदा सर्वदिक् रिक्तादिक् शूलविहाय | | |
| पू.३ | कृतिका | मघा | भरणी | स्वाती | ज्येष्ठा | विशाखा | श्लेषा | चित्रा | एषु आवश्यके |
| १६ | २१ | ११ | ७ | १४ | १४ | १४ | १४ | ३० | यात्रायांत्याज्यघटी |

### आवश्यके दिक्शूलदोषनाशाय वारक्रमात् वस्तुनाम।

| सूर्य | चन्द्र | भौम | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | वाराः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| घृतम् | पयः | गुड़म् | तिलान्न | दधिः | यावान्न | माषान्नं | धारणं |
| ताम्बूलं | चन्दनं | मृद् | पुष्पं | दधिः | घृतं | तिलम् | भक्षणं |

### अथवा दानं दोषनिष्टनाशाय कार्यम् । यात्रायां वारदोहदज्ञानाय चक्रम् ।

| रविः | चन्द्रः | भौमः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| रसालं | पायस | कांजी | पक्वदूध | दधिः | पयोधि | तिल |

### ।। अथदोहदे भक्ष्याभक्ष्यविचारः।।

कथिते दोहदे द्रव्यं भक्ष्याभक्ष्यं विचार्य च।
भक्ष्यमास्वाद्य संयायादभक्ष्यमवलोक्य च।।
दोहदस्याप्यलाभे तु ध्यात्वा तद्दोहदं व्रजेत्।।

### ।। दिग्लग्नानि।।

| पूर्व | दक्षिण | पश्चिम | उत्तर | दिक |
|---|---|---|---|---|
| १।५।९ | २।१०।६ | ३।७।११ | ४।८।१२ | शुभ |
| २।६।१० | ३।७।११ | ४।८।१२ | १।५।९ | मध्य |
| ४।८।१२ | १।५।९ | २।६।१० | ३।७।११ | नेष्ट |
| ३।७।११ | ४।८।१२ | १।५।९ | २।६।१० | नेष्ट |

### ।। चन्द्रवासः।।

| पूर्व | दक्षिण | पश्चिम | उत्तर |
|---|---|---|---|
| मेष | वृष | मिथुन | कर्क |
| सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक |
| धनू | मकर | कुम्भ | मीन |

### अथ समयशूलचक्रम्

सम्मुखे त्वर्थलाभाय स्याद्दक्षिणे सुखसम्पदः। पृष्ठतो मरणश्चैव वामे चन्द्रेः धनक्षयः सर्वे दोषालयं यान्ति चन्द्रे हिसंमुखे।

### ।। पूर्वादौलालाटिका।।

ई. बृ. २ | अ. शु. १२ | ई. बृ. ३ | पू. सू. १० | अ. शु. ११ | उ. बु. ४ | द. मं. १० | बा. च. ३ | प. श. ७ | रा.नै.९ | बा.च.६ | रा.नै.८

### अथ समय शूल चक्रम्।

| | |
|---|---|
| पूर्वस्याम् | प्रातःकाल |
| दक्षिणे | मध्याह्न |
| पश्चिमे | संध्यायां |
| उत्तरस्यां | अर्धरात्रौ |

**अथोत्सवाद्यसमाप्तौ यात्रा न कार्या।** प्रतिष्ठोद्वाहमुत्साहं व्रतं चौलश्च सूतकम्। असमाप्य न गन्तव्यमार्तवं योषितामपि।।

**अथ यात्रायां शकुनादिप्राशस्त्यम्।।** यात्रायां शकुनं जीव ऊषो गर्गः प्रशंसति। अङ्गिरा मनोत्साहं विष्णुर्वाचं द्विजन्मनाम्।।

**अथचित्तोत्साहादि प्राशस्त्यम्।।** प्रसादश्चेतसः श्रेष्ठैर्निमित्तैः शकुनैः शुभैः। प्राप्तलग्नबलं राज्ञो गच्छतो विजयो ध्रुवम्।। चेतोविशुद्धिः प्रबला निमित्ताच्छकुनादिभिः। सत्यामस्यामतो यापानैव यायात्तु तां विना।।

**आवश्यकतीर्थयात्रायां च न दोषः।।** अर्धोदयोपरागादौ पुण्ययोगे सुदुर्लभे। तीर्थार्थि च सुखं यायात् कालेऽप्यस्तादिकेष्वपि।।

**यात्रानिवृतौ प्रवेशविचारः।।** षष्ठाष्टमी-विष्णुदिनानिरिक्तां विहाय चित्रोत्तररोहिणीश्च। मृगान्त्यमैत्रेशनिवित् सितेज्ये निवृत्य गेहं प्रविशेत्प्रयाणात्। स्थिरराशिलग्ने ४।८ शुद्धौ १।७।४।१०।५।९ स्थानेषु शुभैः ३।६।११ स्थानेषु पापैः। योजनान्तं लघुयात्रा। २५ योजनं मध्यानऽतः परं दीर्घा ज्ञेया।

**यात्रासमयविचारः-** जन्मेशे जन्मदशेऽस्तंगतेपि न गन्तव्यम्। तीर्थयात्रायां गुरुशुक्रयोरस्तो वर्ज्यः सिंहस्थ गुरु नीचगोऽपि वर्ज्यः।

**यात्रायांलग्नशुद्धिः-** जन्मराशिलग्नाभ्यामष्टमराशिलग्ने कुम्भकुम्भांशकौ मीनपृष्ठोदय राशयः त्याज्याः। लग्नात् १।४।७।१०।५।९ स्थानेषु शुभाः ३।६।११ स्थानेषु पापाः। १० शनि, ७ शुक्रो नेष्टः। लग्नात् १।६।७।८ स्थानगश्चचन्द्रो, ६।७।८।१२ लग्नेशो सत्। शुभाशुभहीन मष्टमभवनम्।

**कुलगणः-** पूर्वा ३, अश्विन, पुष्य, मघा, मृगशिर, श्रवण, कृतिका, ज्येष्ठा, चित्रा, विशाखा। मङ्गल, शुक्र वारौ। ४।८।१२।१४ तिथयोऽत्र स्थायी जयति।।

**अकुलगणः-** भरणी,पुर्नवसु, अश्लेषा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, रोहिणी, उत्तरा३, धनिष्ठा, रेवती भानिविषमास्तिथयः।। सूर्य, चन्द्र, गुरु, शनि वाराः। अत्र यायि जयति।।

**कुलाकुलगणः-** आर्द्रा, मूल, अभिजित् शतभिष २।६।१० तिथयः। बुधश्च। अत्र सन्धिः।।

**अथपुष्यप्रसंशा-** पापैर्विद्धेयुते हीने चन्द्रताराबलेऽपि च। पुष्येसिध्यन्ति सर्वाणि कार्याणि मङ्गलानि च।।१।। ग्रहेण विद्धोप्यशुभान्वितोऽपि विलामगोऽपि। करोत्यवश्यं सकलार्थासिद्धिं विहाय पाणिग्रहमेव पुष्ये।।२।। क्रूरैर्विद्धोयुतो वापिपुष्यो यदि बलान्वितः। विना पाणिग्रहे सर्वमङ्गलेष्विष्टदः सदा।।३।। मृगगणमध्ये सिंहो हुडुगण मध्ये तथैव पुष्यश्च। निजबलसहितोऽप्येवं त्रिविधोत्पातैर्न शक्तिमान्निहतः।।४।।

कदा द्वादशस्यश्चन्द्रमाः शुभदः। आधाने सम्प्रदाने च विवाहे राजविग्रहे। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः। अभिषेके-निषेके च गृहे पुंसवनादिषु। यात्रा युद्धे विवाहे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः। उदितः स्वगृहस्थश्च मित्रगेहस्थितोऽपि वा। मित्रवर्गेः मित्रदृष्टः स ग्रहः सबलः स्मृतः।।

**यात्रायां प्रस्थानस्थापनम्।** प्रस्थाने भूमिपालो दशदिवस मभिव्याप्यनैकत्र तिष्ठेत् सामन्तः सप्तरात्रं तदितरमनुजः पञ्चरात्रमित्यादि। दिक्परत्वेन प्रस्थानस्थापनम्। सप्ताहानेव पूर्वस्यां प्रस्थानंपञ्चदक्षिणे। पश्चिमेत्रीणि शस्तानि सौम्यायान्तु दिनद्वयम्।।

**अथ प्रस्थानवस्तूनि।** प्रस्थाने ब्राह्मणदीनां यज्ञसूत्रमथायुधम्। मध्वामलफलं चैव प्रशस्तं वृद्धिकारणम्।

**अथ पन्था राहुचक्राद्यात्रायां शुभाशुभ-ज्ञानमाह।** सूर्ये धर्म्मगते चन्द्रो धने मोक्षे शुभप्रदः। सूर्ये धनगते धर्म मोक्षमार्गे शुभः शशी। कामेर्के धर्ममोक्षार्थे संस्थश्चन्द्रो जयप्रदः। मोक्षेऽर्क धर्मगश्चन्द्रः शुभोऽन्यत्र न शोभनः। इति।

## अथ यात्रायां चन्द्रविचारः

आद्याचन्द्रः श्रियं कुर्याद्द्वितीये धनधान्यदः। तृतीये राजसम्मानं चतुर्थे: कलहागमः॥१॥ पञ्चमे ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे सम्पत्तिरूत्तमा। सप्तमे सुखकृच्चन्द्रो ह्यष्टमे मृतिदायकः (कष्टंवा)॥२॥ नवमे भाग्यवृद्धिश्च दशमे सुखसंपदः। एकादशे सर्वलाभं द्वादशे चाशुभावहः॥३॥ आवश्यके द्वादशगतेऽपि यात्राकार्याऽनिष्ट चन्द्रदानात्। दधिश्वेतण्डुलघृतरजतमुक्तादयः॥

### अथ वारस्यात्र सविदिक्शूलज्ञानायचक्रम्

| पूर्व | अग्नि | दक्षिण | नैऋत्य | पश्चिम | वायव्य | उत्तर | ईशान | दिक् ८ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चं.श. | चं.बृ. | गुरु | सू.शु. | सू.शु. | भौम | मं.बु. | बु.श. | वाराः |

### अथ नक्षत्रशूलचक्रम्

| पूर्व | दक्षिण | पश्चिम | उत्तर | दिशः |
|---|---|---|---|---|
| ज्ये. | पू.भा. | रोहिणी | उ.फा. | भानि |

### अथयात्रायादिग्वाहनानि

| पूर्व | दक्षिण | पश्चिम | उत्तर | दिशः |
|---|---|---|---|---|
| गज | रथ | अश्व | शिविका | वाहन |

### ॥ अथ वारपरत्वेन कालचक्रम् ॥

| पूर्व | अग्नि | दक्षिण | नैऋत्य | पश्चिम | वायव्य | उत्तर | ईशान | दिक् ८ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शनि | शुक्र | गुरु | बुध | भौम | चन्द्र | सूर्य | ० | वाराः |

### ॥ अथ वारपरत्वेन पाशचक्रम् ॥

| पूर्व | अग्नि | दक्षिण | नैऋत्य | पश्चिम | वायव्य | उत्तर | ईशान | दिक् ८ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भौम | चन्द्र | सूर्य | ० | शनि | शुक्र | गुरु | बुध | वाराः |

### ॥ अथ यात्रायां दिग्दोहदचक्रम् ॥

| पूर्व | अग्नि | दक्षिण | नैऋत्य | पश्चिम | वायव्य | उत्तर | ईशान | दिक् ८ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| घृतम् | तण्डुलं | तिलौदनं | सत्तुकं | मत्स्यं | गोधूमं | दुग्धम् | पायसं | वस्तूनि |

### परिघदण्डम्

पूर्व: कृतिकादि ७ भानि
दक्षिण: मघादि ७ भानि
पश्चिम: अनुराधादि ७ भानि
उत्तर: धनिष्ठा ७ भानि

अथावश्यके परिघोल्लंघनम्

कृत्ये चावश्यके गच्छेद् विलंध्य खलु पारिघम्।

कृत्वाशूलं यदा शुद्धिर्दिग्लग्नस्य तदा नृपः॥

## अथ यात्रायां तिथिदोहदज्ञानाय चक्रम्

| तिथयः | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वस्तुनी | अर्कपत्रम् | तंडुलोदकम् | घृतम् | यवागुः | हविष्यं | स्वर्णजलम् | अपूपम् |

| तिथयः | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वस्तुनी | बीजपूरफलं | जलम् | गोमूत्रम् | यवान्नम् | पायसम् | गुडम् | रुधिरम् | मुद्गदानं |

### ॥ अथ वारस्यात्र सविदिक्शूलज्ञानायचक्रम् ॥

| पूर्व | अग्नि | दक्षिण | नैऋत्य | पश्चिम | वायव्य | उत्तर | ईशान | दिशाः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १।९ | ३।११ | ५।१३ | ४।१२ | ६।१४ | ७।१५ | २।१० | ८।३० | तिथयः |

### अथैकस्मिन् दिनेऽप्यावश्यके योगिनी भोगस्तद्बोधकचक्रम्

| पू. | वा. | द. | ई. | प. | आ. | उ. | नै. | दिशा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ७ | ११ | १५ | १८ | २२ | २६ | ३० | घटी |
| ४२ | ३० | १५ | ० | ४५ | ३० | १५ | ० | पल |
| ३३ | ३७ | ४१ | ४५ | ४८ | ५२ | ५६ | ६० | घटी |
| ५५ | ३० | १५ | ० | ४५ | ३० | १५ | ० | पल |

अथास्यफलम्

योगिनी संमुखे द्युते गमे युद्धे च मृत्युदा। अशुभा वामभागस्था पृष्ठे दक्षे जयप्रदा।

### ॥ यात्रायां छिक्काफलम् ॥

| पूर्व | अग्नि | दक्षिण | नैऋत्य | पश्चिम | वायव्य | उत्तर | ईशान | मध्ये |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अशुभं | दुःखी | अनिष्टः | शुभम् | सुभोज्य | धनाप्ति | कलहः | शुभम् | भयम् |

### ॥ अथ पन्थाराहुचक्रमिदम् ॥

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अश्विनी | पुष्य | श्लेषा | विशाखा | अनुराधा | धनिष्ठा | शतभिष | धर्मभानि |
| भरणी | पुनर्वसु | मघा | स्वाती | ज्येष्ठा | श्रवण | पू.भा. | अर्थभानि |
| कृतिका | आर्द्रा | पू.फा. | चित्रा | मूल | ऽभि. | उ.भा. | कामभानि |
| रोहिणी | मृगशिर | उ.फा. | हस्त | पू.षा. | उ.षा. | रेवती | मोक्षभानि |

## अथ यात्रायां दिनरात्रिमानस्याष्टमांशेनवेलाफलमिदम्

| घं. | सू.दि. | सू.रा. | चं.दि. | चं.रा. | भौ.दि. | भौ.रा. | बु.दि. | बु.रा. | बृ.दि. | बृ.रा. | शु.दि. | शु.रा. | श.दि. | श.रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | उद्वेग | चर | अमृत | काल | रोग | उद्वेग | लाभ | अमृत | शुभ | रोग | चर | लाभ | काल | शुभ |
| ४ | चर | लाभ | काल | शुभ | उद्वेग | चर | अमृत | काल | रोग | उद्वेग | लाभ | अमृत | शुभ | रोग |
| ४ | लाभ | अमृत | शुभ | रोग | चर | लाभ | काल | शुभ | उद्वेग | चर | अमृत | काल | रोग | उद्वेग |
| ४ | अमृत | काल | रोग | उद्वेग | लाभ | अमृत | शुभ | रोग | चर | लाभ | काल | शुभ | उद्वेग | चर |
| ४ | काल | शुभ | उद्वेग | चर | अमृत | काल | रोग | उद्वेग | लाभ | अमृत | शुभ | रोग | चर | लाभ |
| ४ | शुभ | रोग | चर | लाभ | काल | शुभ | उद्वेग | चर | अमृत | काल | रोग | उद्वेग | लाभ | अमृत |
| ४ | रोग | उद्वेग | लाभ | अमृत | शुभ | रोग | चर | लाभ | काल | शुभ | उद्वेग | चर | अमृत | काल |
| ४ | उद्वेग | चर | अमृत | काल | रोग | उद्वेग | लाभ | अमृत | शुभ | रोग | चर | लाभ | काल | शुभ |

यात्रायां विशेषविचारः। यात्रायां दक्षिणे राहुर्योगिनी वामतः शुभाः। पृष्ठेतो द्वयमाख्यातं चन्द्रमा सन्मुखः शुभः॥ उत्सवादौ गमनागमन विचारः। उद्वाहे व्रतबन्धे च प्रतिष्ठायां महोत्सवे। असमाप्तेर्न गन्तव्यं मृतके सूतकेऽपि वा। अभिजित् मुहूर्तविचारः। अभिजित्क्षणयोगोयमभीष्टफलसिद्धिदः। पञ्चाङ्गशुद्धिरहिते दिवसेऽपि फलप्रदः॥ गर्गादिऋषिमत प्रयाणमुहूर्तविचारः। ऊषः प्रशंसते गर्गः शकुनं च बृहस्पतिः। अङ्गिरा मनउत्साहं विप्रवाक्यं जनार्दनः॥ घात चन्द्रादिदोषः। प्रयाणकाले युद्धे च कृषौ वाणिज्य संग्रहे। वादे चैव गृहारम्भे वर्ज्यो वै घात चन्द्रमाः॥ विजययोगः। लग्नोपतौ जीवचन्द्रौ प्रयाणे षष्ठे यातौ भौममंदौ जय स्यात्। तद्वल्लाभे सौम्यशुक्रौ च जीवे कर्मण्यर्के वांछितार्थस्य सिद्धिः।

## सूर्यनक्षत्रात्तडागचक्रम् दिनभाविघगणना

| | | |
|---|---|---|
| पूर्वे | २ | वारिशेषम् |
| अग्नि | ३ | बहुजलम् |
| दक्षिणे | २ | जलनाशः |
| नैऋत्ये | २ | अमृतजलम् |
| पश्चिमे | ३ | स्वादुजलम् |
| वायव्ये | २ | जलशेषम् |
| उत्तरे | ३ | स्थिरजलम् |
| ईशान्यां | २ | नष्टजलम् |
| मध्ये | ५ | पूर्णजलम् |
| वायव्ये | ३ | अमृतजलम् |

### रोहिणीभाद्वापी चक्रम्

| | | |
|---|---|---|
| कोष्ठे | ४ | शुभम् |
| नाभौ | ४ | बुद्धिनाशः |
| हृदि | ४ | स्थिरता |
| मध्ये | ४ | कलहः |
| नेत्रे | ४ | धनप्राप्तिः |
| पादौ | ४ | अनर्थः |

### ग्रामवासचक्रं ग्रामभात् वासकर्तृभयावत्

| | | |
|---|---|---|
| मस्तके | ७ | धनमान,लाभः |
| पृष्ठे | ७ | हानि,नैःस्वः |
| हृदये | ७ | सुखं,लाभः |
| पादे | ७ | पर्यटनम् |

### रविभात् चुल्हीचक्रम्

| | | |
|---|---|---|
| पृष्ठे | ६ | श्रीलाभः |
| शीर्षे | ४ | मृत्युभयम् |
| बाहौ | ८ | सुखम् |
| गर्भे | ५ | विनाशः |
| हस्ते | २ | सुभुक्तिः |
| पादे | २ | कलहमृतिः |

### हलचक्रमन्यत् सूर्यनक्षत्रात्

| | | | |
|---|---|---|---|
| ३ | अशुभम् | ३ | अशुभम् |
| ३ | शुभम् | ५ | शुभम् |
| ३ | अशुभम् | ३ | अशुभम् |
| ५ | शुभम् | ३ | शुभम् |

## द्वारशाखा चक्रम् सूर्यनक्षत्रात्

| स्थान | न. | फलानि |
|---|---|---|
| शिरसि | ४ | श्रीप्राप्तिः |
| कोणे | ८ | उद्वसनं |
| शाखा | ८ | सौख्यं |
| देहल्यां | ३ | गृहनाशः |
| मध्ये | ४ | सौख्यं |

### गृहारम्भे वत्सचक्रम् सूर्यनक्षत्राद्गणनासाभिजित्

| स्थान | न. | फलानि |
|---|---|---|
| शीर्षे | ३ | अग्निभयं |
| अग्रपादे | ४ | शून्यमस्तु |
| पृष्ठपादे | ४ | स्थिरता |
| पृष्ठे | ३ | लक्ष्मीप्राप्तिः |
| द.कुक्षौ | ४ | लाभः |
| पुच्छे | ३ | स्वामिनाशः |
| वा.कुक्षौ | ४ | दारिद्रता |
| मुखे | ३ | पीडा |

### गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम् सूर्यनक्षत्राद्गणना

| स्थान | न. | फलानि |
|---|---|---|
| मुखे | १ | अग्निदाहः |
| पूर्वे | ४ | उद्वसनम् |
| दक्षिणे | ४ | लाभः |
| पश्चिमे | ४ | लक्ष्मीप्राप्तिः |
| उत्तरे | ४ | कलहः |
| गर्भे | ४ | विनाशः |
| अधः | ३ | स्थिरतासत् |
| कण्ठे | ३ | स्थिरम्, शुभ |

### सूर्यभुक्तभात् हलचक्रम्

| | |
|---|---|
| २ | हानिरस्तु |
| ८ | समृद्धिः |
| ९ | कर्तृनाशः |
| ८ | द्रव्यलाभः |

## रोहिणीनक्षत्रात्कूप चक्रमिदम्

| स्थान | न. | फलानि |
|---|---|---|
| मध्ये | ३ | शीघ्रस्वादुः |
| पूर्वे | ३ | निर्जलम् |
| अग्नि | ३ | आशुजलम् |
| दक्षिणे | ३ | निर्जलम् |
| नैऋत्ये | ३ | अमृतजलम् |
| पश्चिमे | ३ | निर्मलजलम् |
| वायव्ये | ३ | जलहानिः |
| उत्तरे | ३ | मधुरजलम् |
| ईशाने | ३ | क्षारजलम् |

### ॥ कूपचक्रसूर्यभात् ॥

| स्थान | न. | फलानि |
|---|---|---|
| मध्ये | ३ | स्वादुजलम् |
| पूर्वे | ३ | खण्डितजलं |
| अग्नि | ३ | स्वादुजलम् |
| दक्षिणे | ३ | जलहानिः |
| नैऋत्ये | ३ | स्वादुजलम् |
| पश्चिमे | ३ | क्षीरोदकम् |
| वायव्ये | ३ | मिश्रितजलम् |
| उत्तरे | ३ | मिष्ठजलम् |
| ईशान | ३ | क्षारजलम् |

### ॥ द्वारचक्रमर्कभात् ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| ४ | राज्यलाभः | २ | मृत्यु |
| २ | हानिः | ४ | द्रव्यप्राप्तिः |
| ४ | धनप्राप्तिः | २ | शोकभयम् |
| २ | भयम् | ३ | धनलाभः |
| ४ | मृत्युभयम् | ३ | [illegible] |

अथेष्टनक्षत्रकल्पनाऽनेन गणनाविचारः॥

आर्द्रादित्रिगुरुश्चैव सर्पश्चैव पितृ भगम्। शतभं पूर्वयुग्मं च नवैता गृहताराः॥१॥ तत्राशि कूटादिकं सर्वं दृष्टव्यांरिच चिन्तयेत्। सेव्यसेवकयोश्चैव गृहतत्त्वा मित्रेऽपि। परस्परं मित्रयोश्च एकनाडी प्रशस्यते। सर्व विवाहवज्ज्ञेयं विपरीता तु नाडिका। एकनाडी यदा जाता तत्स्यामेव न चिन्तयेत्॥इति॥

## अथायानां नामानि उपयोगस्थानकथनम्

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ध्वजः | धूम्रः | हरिः | श्वानः | वृषः | गर्दभः | हस्ती | काकः |

वापिकूपतडागादौ गजो देयो विचक्षणैः॥ असने योजयेत्सिंह शयने काककुञ्जरौ॥१॥ वृषं भोजनपात्रेषु दद्याच्छत्रादिषु ध्वजम्। महानसोऽग्निशालायां गृहे धाम्रपजीविनाम्॥२॥ धूम्रं दद्यात्श्वानं यवनात्पजयोगृहे। खरोवेश्यागृहे योज्यो ध्वांक्षः पक्षिगृहे॥३॥ वृषं सिंह गजं दद्यात् प्रासादे पुरमंदिरे शुभम्।

### शल्यानयनरीतिः

| अ. | क. | च. | ट. | त. | प. | य. | श. | ह.प.य. | वर्णाः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पूर्व. | अग्नि | दक्षिणे | नैऋत्ये | पश्चिमे | वायव्ये | उत्तरे | ईशाने | मध्ये | दिक् |
| मनुष्य | खरस्य | मनुष्य | शुनः | शिशोः | तुषाङ्गार | विप्रश. | गोश. | नृकपा. | शल्यः |
| ११। | २ | २ | ११। | ११। | ४ | २ | १ | ३ | हस्ता |
| मृत्यु | राजभ. | स्वा.मृ. | बा.भू. | गृ.वि. | दु.स्व. | दरिद्रता | गो.ना. | कु.ना. | फलानि |

स्मृत्वेष्टदेवतां प्रष्टुर्वचनस्याद्यमक्षरम्। गृहीत्वा च ततः शल्यशल्ये पूर्व विचारयेत्। इत्युक्तवाप्रश्नाक्षराणामादिमवर्णतो विचारः कर्त्तव्यः॥

देवालयगेहविधौ जलाशये राहु मुख ज्ञानम्। यत्र राहुमुखं तत्पृष्ठकोणे खातं शुभं भवति भूमिशोधनार्थम्।

| ० | ऐशान्यां | वायव्यां | नैऋत्यां | आग्नेय |
|---|---|---|---|---|
| देवालयारम्भे | मी.मे.वृ.स्थितेर्के | मि.क.सि.स्थितेर्के | क.तु.वृ.सूर्ये | ध.म.कु.सूर्ये |
| जलाशयारम्भे | मं.कुं.मी.सूर्ये | मं.वृ.मि.सूर्ये | क.सि.कं.सूर्ये | तु.वृ.ध.सूर्ये |
| गृहारम्भे | सिं.क.तु.सूर्ये | वृ.ध.म.सूर्ये | कु.मी.मे.सूर्ये | वृ.मि.क.सूर्ये |

क्षेत्रभित्तिशिलान्यासस्तम्भस्यारोपणं तथा पूर्वदक्षिणयोर्मध्ये कुर्यादित्याह कश्यपः॥

### अथ चैत्रादिमासे गृहकरणे मासफलम् ज्ञानम्

| चैत्र | वैशाख | ज्येष्ठ | आषाढ़ | श्रावण | भाद्रपद |
|---|---|---|---|---|---|
| शोकम् | धान्यम् | मृतिः | पशुहानिः | द्रव्यवृद्धि | नाशः |
| आश्विन | कार्तिक | मार्गशीर्ष | पौष | माघ | फाल्गुन |
| युद्धम् | भृत्यक्षयं | धनम् | श्रीप्राप्तिः | वह्निभयम् | लक्ष्मीप्राप्तिः |

### गृहारम्भमुहूर्त्तविचारः

| | |
|---|---|
| भानि | उत्तरा३, मृग, पुष्य, अनु, ध.श्रव.चि.ह.स्वा.रो.रे.पञ्चक छिल्वा द्वारशाखास्थापने शुभानि। |
| मासा | वै.श्रा.मार्ग.फाल्गुन, सूर्ये, मे.कं.सिं.वृश्चिक,मकर,कुम्भ स्थिते च श्रेष्ठः। |
| वारा | चं.बु.बृ.शु. शनयः। |
| तिथयः | १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ शुभाः। |
| लग्नानि | २।३।५।६।९।८।११।१२ स्वामिशुभदृष्टे। |
| लग्नशुद्धिः | लग्नात् १।४।७।१०।५।९ शुभाः। पापाः ३।६।११ स्थानेषु ८।१२ शुभपापरहितेषु शुक्लपक्षे गुरु शुक्राणामुदये बाल्यवार्द्धक्येनीच राश्यादिस्थिति रहिते समये॥ |
| त्याज्या | भद्राकुयोगाष्टमचन्द्रचक्रशुद्धरहितं च। |

एतेष्वेव नक्षत्रवारतिथिसमयेषु मङ्गदेवालयाद्यारम्भोऽपि शुभः। भौमवारसूर्य वाररिक्तातिथौ अमाचरलग्नेषु कदापि न गृहारम्भः कर्त्तव्यः॥

## वास्तुभूमिशुभाशुभज्ञानप्रकारः

सायंकाले हस्तप्रमितायां विस्तृतिप्रमाणं गर्तविधाय तज्जलपूर्णं कृत्वा प्रातःकाले पुनर्विलोक्यं तत्सजलं शुभम्॥ निर्जलं मध्यम॥ स्फुटितं असदिति।

### अथगृहे शिलाप्रमाणानि

शिलाप्रमाणं क्रमशः प्रदिष्टंवर्णानुपूर्वेण तथाङ्गुलानाम्॥ अथैकविंशद्धनविश्वनन्दाविस्तारके व्यासमितं तदर्धम्। तदर्धमानं त्वथपिण्डिका सयात् ऊर्ध्वाधिकान्यूनतरा न कार्या। नामानि च। नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णेति। पञ्च कुम्भ नामानि। पद्म महापद्म शङ्ख मकर समुद्र इति। प्रधान शिलाधः पञ्चाधारशिला भवन्ति॥

### ॥ अथ गृहे गृहस्योच्छ्रायानिर्णयः॥

विस्तारषोडशांशः सचतुर्हस्तो भवेद्गृहोच्छ्रायः द्वादशभागेनोनो भूमौ भूमौ समस्तानाम्। गृहभित्तिप्रमाणम्। व्यासात षोडशभागः सर्वेषां सद्मनां भवतिस भित्तिः। पक्वेष्टकाकृतानां दारुकृतानान्तु न विकल्पः। तथा च गर्गः। विस्तारषोडशांशेन गृहभित्तिं प्रकल्पयेत्। पक्वेष्टिकाकृतानां दारुकृतानां तु न विकल्पः॥

### ॥ गृहे सूर्येचन्द्रवेधनिर्णयः॥

चन्द्रविद्धं गृहं कार्यंसूर्यविद्धं जलाशयम्। हृदो वा वाटिका वापि द्वाभ्यां विद्धा प्रशस्यते॥ पूर्वापरदैर्घ्ये रविवेधो। याम्योत्तरदैर्घ्ये चन्द्रवेधः उक्तः। अन्यच्च:- मन्दिरं दैवायतनं तत्र पिण्डविचारोऽपि न कर्त्तव्यः॥

### जलाशयारम्भमुहूर्त्तः

भानि॥ ह. अनु. उ.३, ध., श., म., रो., पुष्य, मृ., पू.षा., गुरुसितयोरस्तादि दोषरहिते चं., बु., बृ., शु., वारे च रिक्तोन तिथौ शुभः। लग्नेजीवेज्ञेऽथवा दुर्बलैश्च क्रूरैःशुक्रे वापिमेपूरम्णस्ये। आद्ये चन्द्रे सर्वतोयाश्रयाणामारम्भः स्युः सिद्धये निर्विकल्पम्॥ आग्नेय्यांखननं कुर्यास्त्सिंहाद्राशित्रये रवौ ईशान्याञ्च तथावास्तौ वृश्चिकस्थे खनिः शुभाः॥

### अथगृहप्रवेशमुहूर्त्तस्य विचारः

| | |
|---|---|
| मासाः | वै.ज्ये,माघ, फा. जीर्णेगृहे श्राव. मार्ग. कार्तिके, मासे अपि नेवऽप्यग्न्यादिभयसत्वे॥ |
| भानि | उत्तरा३,अनु.रो. मृ.चि.रे. कुम्भ चक्रशुद्धौ। |
| वारा | चं.बु.बृ.शु.श. |
| तिथयः | १,२,३,४,५,६,७,८,१०,११,१२,१३॥ |
| लग्नानि | शुभाः २५८११ मध्य ३६९१२ |
| लग्नशुद्धिः | जन्मराशिलग्नाभ्यामुपचय राश्यंशयोः स्थिराशौ लग्नात् १।२।३।५।७।९।१०।११ स्थानेषु शुभाः श्रेष्ठाः। पापाः ३।६।११ शुभ पापरहिते ४।८ स्थाने वामार्के स्थिताविति। |

### अथ जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा मुहूर्त्तस्यविचारः

| | |
|---|---|
| समयः | उत्तरायणे न मीनसंक्रान्तौ बृ.शु.चं.दृश्ये बलवेतिच। |
| भानीः | मृ.रे.चि.अनु.ह.अश्वि.पुष्य.स्वा.पुन.श्र.ध.। |
| लग्नशुद्धिः | लग्नात् केन्द्रकोणे २।११ स्थानेषु शुभाः। ३।६।११ पापाः शुभाः। पञ्चेष्टेखोटोन लग्ने न कार्यम्। कर्तुर्जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नेहेयम्। पूर्वोक्तनक्षत्रेऽग्नि शुद्धौवास्त्वर्चन भूतबलिंगृहप्रवेशे च कुर्यादिति। |

## गृहाभ्यन्तर व्यवस्था

गृह प्रायोज्यस्य काष्ठः। कारंजार्जुनसालनी पकुटजाः पारादमन्दारकाः, वैल्ववैणवयुग्म पत्र खदिरा वृक्षाः शुभा सद्मसु। त्याज्या दग्ध विभीत कारनुहिवटानिम्बाश्च ये कंटकाः, अश्वत्थाम्रकपि त्थातालवकुलप्लक्षा अगस्त्योदयः। गृहपिण्ड- प्राच्यां स्नानगृहं च पाकसदनं वह्नौ तु सुप्तालयो, याम्यायामथ शस्त्रसद्मदनुजे भत्स्यालयः पश्चिमे। वायव्यां पशुमन्दिरं शुभकरं भंडारवेश्मोत्तरे, शैवे देवगृहं प्रशस्तमखिलं स्वस्वास्थ्य कार्यं सदा॥ इन्द्राग्न्योरथ मन्थनस्य सदनं त्याज्यं यमाग्न्योर्गृहं, दैतेयान्तकयोः पुरीषसदनं विद्यागृहं मध्यमे। रक्षोवारुणयोश्च रोदनगृहं तोयेशवायव्ययोः, मध्यं कामगृहं कुबेरमरुतोः कुर्याःसदा भूपतिः॥ भाण्डागारं तूत्तरं स्याद्वायव्यां पशुमन्दिरम्॥ उत्तरस्यां जलस्थानं पूर्वस्यां श्रीगृहं तथा। पुरन्दरेशयोर्मध्ये सर्ववस्तु संग्रहम्॥ कौबेरीश्वरयोश्चा वैद्यभवनं शाक्रेशयोः सौतिकं, ज्येष्ठभ्रातृ पितृव्य मातृभवनं स्वस्माद्यमे पश्चिमे। शालानामुपरिस्थितेषु भवनेष्वेवं विचिन्त्यं बुधैः, अत्युच्चं न हि नातिनीचमथवा साम्यं गृहं कारयेत्॥ आयविचारः। आयाः स्युर्ध्वजधूमसिंहशुनका उक्षाखराख्यो गजः, काकोऽष्टौ हि कृतार्थतां च मरणं शाक्ज्जयं चामयम्। राज्यं दुःखकरं सदा शुभकरं तन्निष्फलं च क्रमात्, प्रागादिष्वपि संयुता गृहपते दद्युर्ध्वजाद्याः फलम्॥ गृहारंभलग्नतः राजयोगः। लग्ने कर्कटके यदा गुरुदिने जीवेन्दुसंस्थऽथवा, निर्माणे भवनेऽपि जातपुरुषो राजा भवेत्सर्वदा। लग्ने चापगृहे क्षपे गुरुदिने शुक्रार्यसंस्थे तदा, निर्माणे भवनेऽपि जातपुरुषो भुपोऽथवातत्समः॥ द्वारस्थापनविचारः। कृत्वादौ नवधा स्वनिर्मितगृहक्षेत्रं नवस्वेव तत् भागेष्वर्कमुखान, नवप्रति-दिशं संस्थाप्य तत्सद्मसु। मर्त्यामर्त्यचतुष्पदां फणिगुरुज्ञांशेषु कुर्युः क्रमाद् द्वाराणी धरवह्निराक्षसमरुत्कोणादि रव्यादिषु॥ द्वारस्थापने वैकल्पिक विचारः। सर्वेषामथवा यथारुचिगृहद्वाराणि कुर्युः रवेराचार्यस्य बुधस्य वा प्रतिदिशं भागे समस्तालये। अष्टस्वष्टसु वा त्रिषु त्रिषु गृहे कार्येषु भागेषु तत्, मध्ये वाधिकधामभागसहितं वामे कपाटान्वितम्॥ जन्मराशि व मुख्यद्वार। प्राग्द्वारं झषकर्क टालिगृहिणां द्वारं तु याम्यं शुभं, युग्मस्त्री मृगसद्मिनां घटतुलागोवेश्मनां पश्चिमम्। द्वारं तूत्तरमर्थदं हरिधनुर्मेषालयानां नृणां, यद्वैकैकमजादि च प्रतिदिशं प्रागादि तद्देहिनाम्।

पूर्व

| देवगृह पूजास्थान | प्रसूति गृह | सर्व वस्तुस्थान | स्नान गृह | गोरस कक्ष | पाकशाला रसोई |
|---|---|---|---|---|---|
| चिकित्सा, रोगी कक्ष | | | | | घृत स्थान |
| कोषागार | | | | | शयनकक्ष |
| पेयजल | | | | | |
| मनोरंजन स्थान | | | | | शौचालय |
| पशुशाला वाहन,भण्डार | कोप भवन | भोजन कक्ष | | अध्ययन कक्ष | शस्त्रागार |

पश्चिम

## सहमसारिणी दिनरात्रिवश दिन सहमों के शोध्य शोधक में भेद होता है।

| दिने | एषऊन | अस्मिन् | युक्तं | दिने | एषऊन | अस्मिन् | युक्तं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पुण्यः | सूर्यः | चन्द्रे | तनु | प्रसूति | बुध | गुरुतः | तनु |
| गुरुः | चन्द्र | रवौ | तनु | जाड्य | शनि | भौमतः | बुध |
| यशः. | पुण्यः | गुरौ | तनु | जल | चन्द्र | शनौ | लग्न |
| मित्रं | गुरुतः | पुण्ये | तनु | शत्रु | शनि | भौमतः | लग्न |
| माहात्म्य | भौमः | पुण्ये | तनु | दरिद्र | बुध | पुण्यतः | बुध |
| आशा | शुक्रः | शनौ | तनु | शास्त्र | शनि | गुरुतः | बुध |
| राज. | सूर्यः | शनौ | तनु | वंदक | बुध | चन्द्रात् | तनु |
| भ्राता | शुक्रः | चन्द्रे | तनु | बन्धन | शनि | पुण्यात् | तनु |
| जीविका | गुरुः | शनौ | तनु | अश्व | सूर्य | पुण्यात् | लाभ |
| कर्म | बुधः | भौमतः | तनु | अन्यक | शनि | चन्द्रात् | तनु |
| कलि. | भौमः | गुरुतः | तनु | वृद्धि | सूर्य | जीवित् | तनु |
| चेतः | भावः | १२भा | तनु | अरि | शनि | भौमात् | तनु |
| रात्रौ | अस्मिन् | एषऊन | युक्तं | अस्मिन् | अस्मिन् | एषऊन | युक्तं |

विद्या १ ज्ञान २ ज्ञाति ३ सहम गुरु ही होता है। पिता सहम राजा सहम समान् है। बल १ देह २ यश के सदृश है। विवाह सहम से स्त्री का विचार होता है। सामर्थ्य सहम के साधन में लग्नेश यदि भौम हो तो भौम को गुरु में घटायें। गौरव सहम के लिये दिन में बृ.-चं.-सू.+रात्रि में बृ.-र.+चं. कार्य सहम दिन में चं.-लग्नेप+ ल. रात्रि में लग्नप-चं.+ल. कार्यसिद्धि- श. सू. रा. प. रात्रि में- श.-चं.+चन्द्रराः. प. गुरूतां दिन में सूर्योच्च- सू.+ल. रात्रि में चन्द्रोच्च-चं.+ल.।।

### दिन रात्रि मे समान साधनयुक्त 'सहम'

| सहमा | एषऊन | अस्मिन् | युक्तं | सहमाः | एषऊन | अस्मिन् | युक्तं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मातृ | शनि | गुरुतः | लग्न | श्रद्धा | भौमः | शुक्रात् | तनु |
| पुत्र | चन्द्र | गुरुतः | लग्न | प्रभात | पुण्यः | शुक्रात् | तनु |
| रोग | चन्द्र | तनुतः | तनु | व्यापार | बुधः | ज्ञानात् | तनु |
| बंधु | चन्द्र | बुधात | तनु | कन्या | चन्द्र | भौमात् | तनु |
| मृत्यु | चन्द्र | भावात् | शनि | संताप | चन्द्र | शनौ | ६भाव |
| यात्रा | धर्मेशः | धर्मतः | तनु | गर्भ | शनि | ज्ञानतः | तनु |
| धन | लग्नेश | धनात् | तनु | जलाध्व | शनि | शतशः | आयभाव |
| परस्त्री | सूर्य | शुक्रात् | तनु | गज | गुरुः | कर्काद्धतः | मतभ |
| वणिक | बुध | भौमात् | तनु | घातक | पुण्यः | चन्द्रतः | तनु |
| विवाह | शनि | शुक्रतः | तनु | घातक | पुण्यः | गुरुतः | तनु |

**उदाहरण-** दिन में पूर्ण सहम बनाने के लिये चन्द्र से सूर्य को घटाकर लग्न जोड़ना चाहिये। रात्रि में सूर्य में चन्द्र घटाकर लग्न जोड़ दें अतः दिन में जो घटता है उस पर '*एषऊन*' जिसमें घटता है उसपर '*अस्मिन्*' लिखा है। कुछ सहम दिनरात्रि में समान ही रहते हैं। '*एषऊन*' '*अस्मिन्*' यह संकेत दिन के लिये ऊपर तथा रात्रि के लिये नीचे लिखा है। जिसमें से जो घटता है उन दोनों के बीच में लग्न न आये तो स्पष्ट सहम राशि में १ राशि जोड़ना चाहिये।

## दीर्घ विस्तारशुद्ध्यादियुता सिद्ध पिण्डसारिणी

| दीर्घ | विस्ता | आय | वार | अंश | द्रव्य | ऋण | ऋक्ष | तिथि | योग | आयु | दीर्घ | विस्ता | आय | वार | अंश | द्रव्य | ऋण | ऋक्ष | तिथि | योग | आयु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७ | १५ | ७ | ६ | ९ | १२ | ५ | १५ | १५ | २१ | १२० | ४९ | ४५ | ५ | ७ | ९ | १२ | ७ | ९ | १५ | १८ | १२० |
| १९ | १५ | ५ | ३ | ९ | १२ | ३ | १२ | १२ | ६ | १२० | ५१ | ३५ | १ | ७ | ९ | १२ | ३ | २४ | १५ | १२ | १२० |
| २१ | १५ | ३ | ७ | ९ | १२ | १ | ९ | १५ | १८ | १२० | ५१ | ३७ | ७ | १ | ९ | १२ | ५ | ३ | ६ | १५ | ९६ |
| २१ | १७ | ५ | ७ | ९ | १२ | ७ | २१ | ६ | २४ | ९६ | ५१ | ४५ | ७ | ५ | ९ | १२ | ५ | २७ | १५ | २७ | १२० |
| २१ | १९ | ७ | ७ | ९ | १२ | ५ | ६ | १२ | ३ | ७२ | ५१ | ४७ | ५ | ६ | ९ | १२ | ७ | ६ | ६ | ३ | ९६ |
| २५ | १५ | ७ | १ | ९ | १२ | ५ | ३ | १५ | १५ | १२० | ५१ | ४९ | ३ | ७ | ९ | १२ | १ | १२ | १२ | ६ | ७२ |
| २५ | १९ | ३ | ५ | ६ | ८ | १ | २० | ५ | १० | ८० | ५५ | ४९ | ७ | ७ | ६ | ८ | ५ | २४ | ५ | ७ | ८० |
| २५ | २१ | ५ | ७ | ९ | १२ | ७ | १५ | १५ | २१ | १२० | ५७ | ५१ | ३ | ४ | ९ | १२ | १ | ९ | ६ | १८ | ९६ |
| २७ | १५ | ५ | ५ | ९ | १२ | ७ | २७ | १५ | २७ | १२० | ५७ | ५५ | ७ | ५ | ९ | १२ | ५ | २४ | १५ | १२ | १२० |
| २७ | २५ | ३ | ६ | ९ | १२ | १ | २७ | १५ | २७ | १२० | ५९ | ४९ | ३ | ७ | ३ | ४ | १ | १६ | १३ | ८ | ८८ |
| २९ | २५ | ७ | ३ | ६ | ८ | ५ | १७ | ५ | २२ | ८० | ५९ | ५१ | १ | ५ | ९ | १२ | ३ | १५ | १२ | २१ | १२० |
| ३१ | २१ | १ | ७ | ९ | १२ | ३ | १२ | १२ | ६ | ७२ | ५९ | ५३ | ७ | ३ | ६ | ८ | ५ | १४ | ११ | ७ | ५६ |
| ३१ | २७ | ५ | १ | ९ | १२ | ७ | २७ | ६ | २७ | ९६ | ६१ | ५५ | ३ | ४ | ६ | ८ | १ | २ | ५ | १ | ८० |
| ३१ | २९ | ३ | ६ | ३ | ४ | १ | १० | ७ | ५ | ११२ | ६१ | ५७ | ५ | ३ | ९ | १२ | ७ | ६ | ६ | ३ | ९६ |
| ३३ | २५ | १ | ५ | ९ | १२ | ३ | १२ | १५ | ६ | १२० | ६३ | ५३ | ३ | ७ | ९ | १२ | १ | ९ | १२ | १८ | ७२ |
| ३३ | २९ | ५ | ३ | ९ | १२ | ७ | १५ | ६ | २१ | ९६ | ६३ | ५५ | १ | ७ | ९ | १२ | ३ | १८ | १५ | ९ | १२० |
| ३५ | २९ | ७ | ७ | ६ | ८ | ५ | २० | ५ | १० | ८० | ६३ | ५९ | ५ | ७ | ९ | १२ | ७ | ९ | ६ | १८ | ९६ |
| ३५ | ३३ | ३ | ७ | ९ | १२ | १ | ६ | १५ | ३ | १२० | ६५ | ५३ | ५ | २ | ६ | ८ | ७ | २० | ५ | १० | ८० |
| ३७ | ३१ | ३ | ५ | ६ | ८ | १ | २३ | ११ | २५ | ५६ | ६५ | ५७ | १ | ४ | ९ | १२ | ३ | २१ | १५ | २४ | १२० |
| ३७ | ३३ | ५ | ६ | ९ | १२ | ७ | २१ | ३ | २४ | ४८ | ६५ | ५९ | ३ | ५ | ६ | ८ | १ | ८ | ५ | ४ | ८० |
| ३९ | ३१ | १ | ३ | ९ | १२ | ३ | ६ | १३ | ३ | ७२ | ६५ | ६३ | ७ | ७ | ९ | १२ | ५ | ९ | १५ | १८ | १२० |
| ३९ | ३३ | ७ | ५ | ९ | १२ | ५ | ९ | ६ | १८ | ९६ | ६७ | ५५ | ५ | ६ | ६ | ८ | ७ | २३ | ५ | २५ | ८० |
| ३९ | ३५ | ५ | ७ | ९ | १२ | ७ | १२ | १५ | ६ | १२० | ६७ | ५७ | ३ | १ | ९ | १२ | १ | १५ | १२ | २१ | ७२ |
| ३९ | २३ | ७ | ३ | ९ | ८ | ५ | ११ | १४ | १९ | १०४ | ६९ | ६१ | १ | ४ | ९ | १२ | ३ | ३ | १२ | १५ | ७२ |
| ४१ | ३५ | ३ | ७ | ६ | ८ | १ | ५ | ५ | १६ | ८० | ६९ | ६३ | ३ | ७ | ९ | १२ | १ | २७ | ६ | २७ | ९६ |
| ४१ | ३९ | ७ | ६ | ६ | १२ | ५ | २१ | १२ | २४ | ७२ | ६९ | ६५ | ५ | ३ | ९ | ९ | ७ | २७ | १५ | १२ | १२० |
| ४१ | ३३ | ३ | ३ | ९ | १२ | १ | १२ | १२ | ६ | ७२ | ७१ | ७ | ७ | २ | ९ | १२ | ५ | ३ | ६ | १५ | ९६ |
| ४३ | ३९ | ५ | १ | ९ | १२ | ७ | २४ | ६ | १२ | ९६ | ७१ | ६५ | ७ | ४ | ६ | ८ | ५ | ११ | ५ | १९ | ८० |
| ४३ | ४१ | ३ | ५ | ३ | ४ | १ | १० | ४ | ५ | ६४ | ७१ | ६९ | ३ | ५ | ९ | १२ | १ | १५ | १२ | ११ | ७२ |
| ४३ | ३५ | ७ | ७ | ९ | १२ | ५ | १८ | १५ | ९ | १२० | ७३ | ६३ | ७ | ७ | ९ | १२ | ५ | १८ | १२ | ९ | १०४ |
| ४५ | ३७ | १ | ५ | ९ | १२ | ३ | ९ | १५ | १८ | १२० | ७३ | ६१ | ५ | २ | ६ | ८ | ७ | ११ | १८ | १९ | ७२ |
| ४५ | ३९ | ३ | ३ | ९ | १२ | १ | २७ | १५ | २७ | १२० | ७३ | ६९ | ५ | १ | ९ | १२ | ७ | १२ | ६ | ६ | ९६ |
| ४५ | ४१ | ५ | १ | ९ | १२ | ७ | १८ | १५ | ९ | १२० | ७५ | ६३ | ५ | ७ | ९ | १२ | ७ | २७ | १५ | २७ | १२० |
| ४५ | २५ | ७ | ४ | ९ | १२ | ५ | २४ | १५ | १२ | १२० | ७५ | ६५ | ३ | ६ | ९ | १२ | १ | १२ | १५ | ६ | १२० |
| ४५ | ४३ | ७ | ६ | ९ | १२ | ५ | ९ | १५ | १८ | १२० | ७५ | ६७ | १ | ५ | ९ | १२ | ३ | २८ | १५ | १२ | १२० |
| ४७ | ४१ | ७ | ४ | ६ | ८ | ५ | २६ | ११ | १३ | ५६ | ७५ | ६९ | ७ | ४ | ९ | १२ | ५ | ९ | १५ | १८ | १२० |
| ४७ | ४५ | ३ | २ | ९ | १२ | १ | १८ | १५ | ९ | १२० | ७५ | ७३ | ३ | २ | ९ | १२ | १ | ६ | १५ | ३ | १२० |
| ४९ | ३७ | ५ | ७ | ६ | ८ | ७ | ५ | १४ | १६ | १०४ | ७७ | ६५ | ५ | ७ | ६ | ८ | ७ | २६ | ५ | १३ | ८० |
| ४९ | ४१ | १ | ७ | ३ | ४ | ३ | ७ | ७ | १७ | ११२ | ७७ | ७१ | ३ | ७ | ६ | ८ | १ | २१ | ११ | २५ | ५६ |
| ४९ | ४३ | ३ | ७ | ६ | ८ | १ | ८ | ११ | ४ | ५६ | ७७ | ७५ | ७ | ७ | ३ | १२ | ५ | ३ | १५ | २५ | १२० |

**लग्नानयनम्-** सूर्यराश्यकोष्टङ्क स्वेष्टकालेन संयुतम्। यत्र तत्तिर्यगुर्ध्वाङ्क लग्न राश्यादिकं गतम् । लग्नसारिणीम् गाजीपुर, मिर्जापुर, प्रतापगढ़, झाँसी, बलिया, बाँदा, इलाहाबाद, छपरा, पटना, मुंगेर, भागलपुर, हाजीपुर, विहार, हैदराबाद, (सि), चित्रकूट, बूँदी, पूर्णिया, शाहाबाद, सहसराम, कुदरा, जहाँनाबाद, डुमराँव, मालदह, निरन्तरा ज्ञेया।

## श्रीकाश्यां चैत्रपक्षीय २४।०।० अयनांश सम्बन्धि सायनस्फुटलग्नसारिणीयम्

| म. | श्री | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० ७ २२ | मे. ० | [illegible] | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ० ८ २६ | वृ. १ | [illegible] | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ० १० ८ | मि. २ | [illegible] | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ० ११ २४ | क. ३ | [illegible] | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ० ११ ३० | सिं. ४ | [illegible] | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ० ११ १० | क. ५ | [illegible] | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ० ११ १० | तु. ६ | [illegible] | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ० ११ ३० | वृ. ७ | [illegible] | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ० ११ २४ | ध. ८ | [illegible] | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ० १० ८ | म. ९ | [illegible] | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ० ८ २६ | कु. १० | [illegible] | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ० ७ २२ | मी. ११ | ० ० ० ० ० ० ० ० १ १ १ १ १ १ १ १ २ २ २ २ २ २ | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

चैत्र अयनांशानयनाय एकादिगुणकाः १ गुणोत्तराः १० गुणोत्तराः

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | ० | ५० | १० | ८ | २२ |
| २ | १ | ४० | २० | १६ | ४४ |
| ३ | २ | ३१ | ३० | २५ | ७ |
| ४ | ३ | २१ | ४० | ३३ | २९ |
| ५ | ४ | ११ | ५० | ४१ | ५२ |
| ६ | ५ | १ | ६० | ५० | १४ |
| ७ | ५ | ५१ | ७० | ५८ | ३६ |
| ८ | ६ | ४२ | ८० | ६६ | ५९ |
| ९ | ७ | ३२ | ९० | ७५ | २२ |
| ० | क. | वि. | १०० | ८३ | ४३ |

अस्मिन्वर्षे स्फुटायन भागे प्रत्याब्दिक गतियोगादग्रिम वर्षादावयनभागा भवन्ति। शके १८०० वर्षस्फुटाऽयनांशाः २२।८।३३ अतोऽग्रेपृष्ठे च।।

### अथ काश्यां निरयण सायनालिग्नमानानि लंकोदयाश्च

| राशयः | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताध | ३ | ४ | ५ | ७ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ३ |
| | ४१ | १३ | ४ | ४२ | ४५ | ३५ | ३५ | ४५ | ४२ | ४ | १३ | ४१ |
| निध | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ४ | ३ | ३ |
| | ५ | ५९। | ३।। | ४४।। | ३७।। | ३५ | ४२।। | ४२ | १३।। | २४।। | ३९ | ४१ |
| पलात्म | २२१ | २५३ | ३०४ | ३४२ | ३४५ | ३३५ | ३४५ | ३४५ | ३४२ | ३०४ | २५३ | २२१ |
| लंकोद | २७८ | २९९ | ३२३ | ३२३ | २९९ | २७८ | २९९ | २९९ | ३२३ | ३२३ | २९९ | २७८ |

## नतसाधनानपेक्षिता-दशमलग्नानयनसारिणीयम्। विलग्नलग्नांशसमानकोष्ठेद्वघः फलं तद्दशमं निरुक्तम्

| श्री | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेष ० | [illegible] | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| वृष १ | [illegible] | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| मिथुन २ | [illegible] | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| कर्क ३ | [illegible] | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| सिंह ४ | [illegible] | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| कन्या ५ | [illegible] | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| तुला ६ | [illegible] | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| वृश्चिक ७ | [illegible] | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| धनु ८ | [illegible] | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| मकर ९ | [illegible] | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| कुम्भ १० | [illegible] | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| मीन ११ | ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ ८ | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | ३ ४ ४ ५ ६ ६ ७ ८ ८ ९ १० ११ ११ १२ १२ १३ १४ १५ १६ १६ १७ १७ १८ १९ १९ २० २१ २१ २२ २२ | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | २५ ६ ४० २९ ९ ५० १५ १२ ४३ ३३ १५ ० ३७ १६ ५६ ४० २१ ४३ ४० ५५ १८ ४७ २८ ९ ५० ३१ २२ ५३ ३४ १६ | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

।।पिण्डतः आयाद्यानयनप्रकारः।। पिण्डे क्रमात् ९।९।६।८।३।८।८।४।८ नवस्थानस्थापिते: एभिर्गुणिते एते: ८।७।९।१२।८।२७।१५।२७।१२० विभक्ते शेषे क्रमात् आयः १ वारः २ अंशकः ३ द्रव्यं ४ ऋणं ५ ऋक्षं ६ तिथिः ७ योगः ८ आयुश्च ९ भवति। बहुऋणमल्पद्रव्यं गृहमसत्।। गृहगृहेश- नक्षत्रयैक्ष्न सदिति। सर्वमादौ विचार्यम्।।६।। [illegible] वारोर्कादिः। अंशको मेषादिनवमांशः। अंकस्थेन केवल जन्मादि तथा गम- यदि तदनुचितं तस्याऽन्यथा पंचानोकेरन्यत्प्रसिद्धम्। अथभूमेर्लक्षणानि (तत्फलम्) [illegible] सर्वांश्चतुरस्रे धनागमः। वृत्ते तु बुद्धिवृद्धिः स्यात् [illegible] भवेत्।। [illegible] दरिद्रमित्याहुर्विषमे शोकलक्षणम्। राजपीतिलिङ्गेषे स्याच्छकटे तु धन क्षयः।। दण्डे पशुक्षयं प्राहुः शूर्पे वासे गवां क्षयम्। [illegible] तु बन्धनं पीडाः धनुः क्षेत्रे भयं महत्।। कुम्भाकारे कुष्ठरोगो भवत्येव न संशयः। पवने नश्यति नेत्रं धनं च बन्धुक्षयो मुखे।। अथभूमिदोषाः (तत्फलम्) स्फुटिता च सशल्या च [illegible] रोहिणी तथा। दूरतः परिवर्ज्येयं कर्तुरायुर्धनापहा।। स्फुटिता मरणं कुर्यात् [illegible] सशल्या क्लेशदा नित्यं विषमा शत्रुवर्द्धिनी।। चैत्ये भयं गृहकृतं वल्मीकेषु- प्रसतूले विपद्ः। [illegible] तु विनाशः कूर्माकारे धनक्षयः।। अथ भूमेरुद्दिक्प्लवत्वफलमुक्तम् कारिकायाम्- श्रियं दाई तथा मृत्युं धनहानिं सुतक्षयम्। प्रवासं धन लाभं च विद्यालाभं क्रमेण च।। [illegible] पूर्वादिप्लवतो मही। मध्यप्लवा मही नेष्टा न शुभा प्लवकारा।।अन्यच्च।। [illegible] प्लवा भूमिः कर्तुः श्रीसुखदायिनी। पूर्वप्लवा वृद्धिकरी धनदा चुत्तरप्लवा।। मृत्युक्लेशप्रदा नित्यं [illegible] दक्षिणप्लवा। गृहक्षयकरी सा च भूमिर्या नैर्ऋतिप्लवा।। धनक्षयकरी [illegible] प्लवा मनुष्लवा तथा भूमिर्नित्यमुद्वेगकारिणी।। अथगृहभूमिसाधनाय सूत्रनियममाह- विप्रस्य दर्भ [illegible] सूत्रं मौञ्जं तु क्षत्रियस्य वा। कार्पासं च भवेद्वैश्यं शूद्रस्य [illegible]।। अथशल्यज्ञानम्।। [illegible] सूत्रिते धरणीतले। सूत्रिते समये तस्मिन् सूत्रं केनापि लंघितम्।। तदस्थि तत्र जानीयात्पुरुषस्य प्रमाणतः। अभ्यतो दृश्येव यस्यां दिशि शल्यं समादिशेत्।। तस्यामेव तदस्थीनि सप्ताव्यंगुलमानतः। सूत्रिते समये यत्र श्वा सर्वोपरि संस्थितः।। तदस्थि तत्र जानीयात्पञ्चांगुलमिताक्षितौ। उन्मादे चागते तस्मिन्समये यत्र संस्थितो। तदस्थि तत्र जानीयाद्धस्तद्वयमिते क्षितौ। चाण्डाले जटिल वापि तदा यस्यां दिशि स्थिते।। तदस्थि तत्र जानीयादशीत्यंगुलमानतः। नृगजाश्वपशूनां हि लोकेऽस्मिन् यत्र संस्थितम्। तदस्थि तत्र जानीयात्पञ्चांगुलमितक्षितौ। तस्मिन्नवसरे यत्र गृहदाहे भवेत्तदि। मेषास्थि तत्र जानीयात्पुरुषाष्टप्रमाणतः।। सूत्रे विसूत्रिते तस्मिन् छिन्ने कुंभेषवा यदि। आदिशेन्निधनं तत्र दम्पत्योः क्रमशस्तदा।। प्रवेशलग्नात्- 'वामोऽथविर्मृत्युसुतार्थलाभतोऽर्केच पञ्चमे प्राग्वदनादिमन्दिरे।'

# अक्षांश काशीतोदेशान्तरज्ञानसारिणी। ग्रीनह्विच ( GREENWHICH ) नगरात् - काश्यां घट्यात्मकं देशान्तरम् १३।५०।

| उत्तरप्रदेश | अक्षांश | दि. | घ. | प. | वि. |
|---|---|---|---|---|---|
| अमरोहा | २९।०४ | प | ० | ४५ | ० |
| अयोध्या | २६।४८ | प | ० | ७ | ४० |
| अल्मोड़ा | २९।३७ | प | ० | ३३ | २० |
| अलीगढ़ | २७।५५ | प | ० | ४९ | ० |
| अहरौरा | २४।५९ | पू | ० | ० | २० |
| आगरा | २७।१० | प | ० | ४९ | १० |
| आजमगढ़ | २६।३ | पू | ० | २ | १० |
| इटावा | २६।४७ | प | ० | ३९ | ४० |
| इलाहाबाद | २५।२८ | प | ० | ११ | ० |
| उन्नाव | २६।३२ | प | ० | २५ | ५० |
| एटा | २७।३५ | प | ० | ४४ | १० |
| कानपुर | २६।२८ | प | ० | २६ | ४० |
| काशी | २५।१८ | ० | ० | ० | ० |
| गढ़वाल | ३०।१५ | प | ० | ३५ | ० |
| गाज़ीपुर | २५।३४ | पू | ० | ५ | ५० |
| गोंडा | २७।२८ | प | ० | ९ | ४० |
| गोरखपुर | २६।४५ | पू | ० | ४ | ० |
| चुनार | २५।०८ | प | ० | ० | ४० |
| चित्रकूट | २५।२२ | प | ० | २० | ० |
| जालौन | २६।०८ | प | ० | ३६ | १० |
| जौनपुर | २५।४६ | प | ० | २ | ४० |
| झाँसी | २५।२७ | प | ० | ४३ | ५० |
| देहरादून | ३०।१९ | प | ० | ४९ | २० |
| देवरिया | २६।२३ | पू | ० | ७ | ० |
| नैनीताल | २९।२३ | प | ० | ३५ | ० |
| प्रतापगढ़ | २५।५४ | प | ० | १० | १० |
| पीलीभीत | २८।४० | प | ० | ३१ | ३० |
| फर्रूखाबाद | २७।२४ | प | ० | ३३ | ५० |
| बरेली | २८।२२ | प | ० | ३५ | ३० |
| बलिया | २५।४४ | पू | ० | ११ | ५० |
| बस्ती | २६।४८ | प | ० | ९ | २० |
| बहराइच | २७।३४ | प | ० | १५ | ० |
| बाँदा | २५।२८ | प | ० | २७ | ४० |
| बाराबंकी | २६।५६ | प | ० | १७ | ५० |
| बिजनौर | २९।२३ | प | ० | ४८ | ३० |
| मथुरा | २७।२८ | प | ० | ५३ | १० |
| मिर्ज़ापुर | २५।१० | प | ० | ३ | ५० |
| मुज़फ्फरनगर | २९।२८ | प | ० | ५२ | ४० |
| मुरादाबाद | २८।५० | प | ० | ४१ | ५० |

| नगर | अक्षांश | दि. | घ. | प. | वि. |
|---|---|---|---|---|---|
| मेरठ | २९।१ | प | ० | ५२ | ३० |
| मैनपुरी | २७।१४ | प | ० | ३९ | ४० |
| रामपुर | २८।४९ | प | ० | ३९ | ५० |
| रायबरेली | २६।१४ | प | ० | १७ | २० |
| राबर्ट्सगंज | २४।४९ | प | ० | ० | ५० |
| रुड़की | २९।५२ | प | ० | ५१ | १० |
| लखनऊ | २६।५५ | प | ० | २० | १० |
| ललितपुर | २४।२२ | प | ० | ४५ | २० |
| शाहजहाँपुर | २७।५४ | प | ० | ३० | ३० |
| सहारनपुर | २९।५८ | प | ० | ५६ | १० |
| सुल्तानपुर | २६।१६ | प | ० | ८ | ५० |
| हमीरपुर | २५।५८ | प | ० | २८ | ० |
| हरदोई | २७।२३ | प | ० | २८ | २० |
| हरिद्वार | २९।५८ | प | ० | ४७ | ५० |
| हाथरस | २७।३६ | प | ० | ४९ | ० |
| हल्द्वानी | २९।२३ | प | ० | ३४ | ० |
| **बिहार झारखण्ड उड़ीसा के प्रमुख नगर** | | | | | |
| आरा | २५।३२ | पू | ० | १५ | २० |
| औरंगाबाद | २४।४५ | पू | ० | १४ | १० |
| कटक | २०।२८ | पू | ० | २९ | ० |
| कालाहाँडी | १९।४० | पू | ० | ० | ० |
| किसनगंज | २६।१० | पू | ० | ५० | ० |
| कोटापाद | १९।०४ | पू | ० | २ | ४० |
| गया | २४।४९ | पू | ० | २० | ४० |
| गंजाम | १९।२२ | पू | ० | २० | १० |
| गिद्धौर | २४।५१ | पू | ० | ३३ | ० |
| चाइबासा | २२।३४ | पू | ० | ३१ | ४० |
| छपरा | २५।४७ | पू | ० | १७ | ० |
| छोटानागपुर | २३।० | पू | ० | २० | ० |
| जमशेदपुर | २२।५० | पू | ० | ३२ | ४० |
| जोगबनी | २६।२५ | पू | ० | २६ | २५ |
| झरिया | २३।५० | पू | ० | ३५ | ३० |
| डाल्टेनगंज | २४।२ | पू | ० | १० | ४० |
| डुमराँव | २५।३३ | पू | ० | १३ | ३० |
| तालचर | २०।५७ | पू | ० | २२ | ४० |
| दरभंगा | २६।१० | पू | ० | २९ | ३० |
| देवघर | २४।३० | पू | ० | ३७ | ३० |
| धमरा | २०।४८ | पू | ० | ३९ | २० |

| नगर | अक्षांश | दि. | घ. | प. | वि. |
|---|---|---|---|---|---|
| पचगछिया | २५।५५ | पू | ० | ३५ | ४० |
| पटना | २५।२५ | पू | ० | २२ | १० |
| पुर्णिया | २५।२५ | पू | ० | ४५ | १० |
| पुरूलिया | २३।२० | पू | ० | ४६ | १० |
| पुरी(जगन्नाथ) | १९।५१ | पू | ० | २८ | ४० |
| बक्सर | २५।३४ | पू | ० | ११ | ४० |
| बराम्बा | २०।२५ | पू | ० | २३ | ५० |
| बलासोर | २१।३० | पू | ० | ३९ | ० |
| बेतिया | २६।४८ | पू | ० | १५ | ३० |
| भागलपुर | २५।१५ | पू | ० | ४० | २० |
| भुवनेश्वर | २०।१७ | पू | ० | २८ | ४० |
| मधुबनी | २६।२१ | पू | ० | ३१ | ० |
| मयूरभंज | २१।५६ | पू | ० | ३७ | ४० |
| मानभूमि | २३।२४ | पू | ० | ३९ | ० |
| मुंगेर | २५।२३ | पू | ० | ३५ | ० |
| मुज़फ्फरपुर | २६।७ | पू | ० | २४ | ३० |
| मोतिहारी | २६।४० | पू | ० | १९ | ३० |
| रक्सौल | २७।० | पू | ० | २० | ० |
| रोहतासगढ़ | २४।४० | पू | ० | ९ | ५० |
| राँची | २३।२३ | पू | ० | २३ | ५० |
| राउरकेला | २२।१२ | पू | ० | १९ | ० |
| संभलपुर | २१।२८ | पू | ० | १० | ० |
| समस्तीपुर | २५।५५ | पू | ० | २८ | २० |
| सासाराम | २४।५७ | पू | ० | १० | ३० |
| सिवान | २६।१२ | पू | ० | १२ | १० |
| सीतामढ़ी | २६।३५ | पू | ० | २५ | २० |
| सोनपुर | २५।४२ | पू | ० | २२ | १० |
| हजारीबाग | २४।० | पू | ० | २४ | १० |
| हथुआ | २६।२५ | पू | ० | १४ | ० |
| हासडीह | २४।३७ | पू | ० | ४३ | २० |
| हाजीपुर | २५।४१ | पू | ० | २१ | २० |
| **भारतवर्ष के प्रमुख नगर** | | | | | |
| अकोला | २०।२० | प | ० | ५६ | ४० |
| अदृष्ट(सेलम) | ११।११ | प | ० | ४३ | ३० |
| अनन्तनाग | ३३।३३ | प | १ | १८ | २० |
| अजमेर | २६।२६ | प | १ | २३ | ० |
| अमरावती | २०।२० | प | ० | ५२ | ० |
| अम्बाला | ३०।३० | प | १ | १ | २० |
| अम्बिकापुर | २३।२३ | प | ० | ८ | २० |

| नगर | अक्षांश | दि. | घ. | प. | वि. |
|---|---|---|---|---|---|
| अलवर | २७।३४ | प | १ | ३ | ४० |
| अहमदाबाद | २३।१ | प | १ | ४३ | ४० |
| इन्दौर | २२।४४ | प | १ | १३ | ० |
| उज्जैन | २३।९ | प | १ | १३ | ४० |
| उदयपुर | २४।३२ | प | १ | ३२ | ३० |
| एकलिंगजी | २४।४३ | प | १ | ३१ | ४० |
| ॐकारेश्वर | २२।१३ | प | १ | ९ | ३० |
| कच्छ | २३।२० | प | १ | ५४ | ५० |
| कलकत्ता | २२।३५ | पू | ० | ५४ | ० |
| करनाल | २९।४२ | प | १ | ० | ० |
| कलिमपोंग | २७।५ | पू | ० | ५५ | ० |
| कांगड़ा | ३२।५ | प | १ | ५ | २० |
| कोचीन | ९।५८ | प | १ | ७ | १० |
| कोयम्बटूर | ११।० | प | १ | ० | ० |
| कोल्हापुर | १६।४२ | प | १ | २७ | २० |
| कोहिमा | २५।४० | पू | १ | ५० | ५० |
| खैरागढ़ | २१।२६ | प | ० | २० | १० |
| गंगटोक | २७।१० | पू | ० | ५५ | ० |
| ग्वालियर | २६।१४ | प | ० | ४८ | २० |
| गिलगिट | ३५।५५ | प | १ | २८ | २० |
| गोधरा | २२।४५ | प | १ | ३३ | २० |
| गोलकुण्डा | १७।४१ | प | ० | ४ | ५० |
| गोवा | १५।३० | प | १ | ३० | ३० |
| चम्बा | ३२।३३ | प | १ | ८ | २० |
| चेन्नई | १३।७ | प | ० | २७ | १० |
| जबलपुर | २३।१० | प | ० | ३० | ० |
| जम्मू | ३२।४४ | प | १ | २१ | ० |
| जयपुर | २६।५५ | प | १ | ११ | २० |
| जोधपुर | २६।२० | प | १ | ३९ | २० |
| टीकमगढ़ | २४।४५ | प | ० | ४० | ३० |
| तिरुपति | १३।४० | प | ० | ३६ | ४० |
| थाणे | १९।२२ | प | १ | ४० | ० |
| दार्जिलिंग | २७।३ | प | ० | ५३ | ० |
| दिल्ली | २८।३८ | प | ० | ५८ | ० |
| दतिया | २५।३९ | प | ० | ४५ | ३० |
| दुर्ग | २१।११ | प | १ | १६ | ३० |
| धवलपुर | २६।४२ | प | १ | ५१ | २० |
| धारवाड़ | १५।२७ | प | १ | २० | ० |
| नागपुर | २१।९ | प | २ | ३९ | ० |

| नगर | अक्षांश | दि. | घ. | प. | वि. |
|---|---|---|---|---|---|
| पटियाला | ३०।२० | प | १ | ४ | १० |
| पुणे | १८।३० | प | १ | ३० | २० |
| बंगलौर | १३।५८ | प | ० | ५३ | ४० |
| बड़ौदा | २२।१५ | प | १ | ३८ | १० |
| बर्दवान | २३।१६ | पू | ० | ४९ | ० |
| बूँदी | २५।२७ | प | १ | १२ | २० |
| भरतपुर | २७।१५ | प | ० | ५५ | ० |
| भोपाल | २३।१६ | प | ० | ५७ | ० |
| मालदह | २५।३ | पू | ० | ५१ | ३० |
| मुम्बई | १८।५५ | प | १ | ३१ | ० |
| रायपुर | २३।१५ | प | ० | १३ | १० |
| रीवाँ | २४।३१ | प | ० | १५ | १० |
| विजयनगर | १८।७ | पू | ० | ४ | ३० |
| विलासपुर | २२।५ | प | ० | ७ | ५० |
| शिमला | ३१।६ | प | ० | ५७ | ५० |
| सागर | २३।५० | प | ० | ४१ | १० |
| हैदराबाद | १७।२४ | प | ० | ४५ | ० |
| त्रिचनापल्ली | १०।५० | प | ० | ४२ | २० |
| त्रिचूर | १०।३० | प | १ | ७ | ३० |
| त्रिवेन्द्रम | ८।२९ | प | ० | ५५ | ० |
| **विश्व के प्रमुख नगर** | | | | | |
| कराँची | २४।५१ | प | २ | ३९ | २० |
| कसूर | ३१।७ | प | १ | २४ | ५० |
| कोलम्बो | ६।५६ | प | ० | ३० | ३० |
| काठमाण्डो | २७।४२ | पू | ० | २२ | ० |
| काबुल | ३४।३० | प | २ | १७ | ० |
| टोक्यो | ३५।४० | पू | ९ | १७ | ३० |
| ढाका | २३।४३ | पू | १ | ५ | ४० |
| न्यूयार्क | ४०।४३ | प | २१ | ११ | १० |
| पेरिस | ४८।५० | प | १३ | २५ | ० |
| पेशावर | ३४।२ | प | १ | ५३ | ५० |
| पेरू | २७।२४ | पू | १ | २ | २० |
| बर्लिन | ५२।३२ | प | १६ | ३५ | ५० |
| मास्को | ५५।४५ | प | ७ | ३३ | ५० |
| रंगून | १६।४५ | पू | २ | १२ | १० |
| लाहौर | ३१।३७ | प | १ | २५ | ४० |
| लन्दन | ५१।३० | प | १३ | ५० | ५० |
| सिंगापुर | १।१० | पू | ३ | २७ | ५० |
| हैदराबाद(सिन्ध) | २५।२५ | प | २ | २३ | ४० |

## पलभाज्ञानसारिणी

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ० | १२ | ३४ | ३३ | ७ | ४७ | ३१ |
| २ | ० | २५ | ९ | ३४ | ८ | ५ | ३८ |
| ३ | ० | ३७ | ४४ | ३५ | ८ | २४ | ७ |
| ४ | ० | ५० | २१ | ३६ | ८ | ४३ | ५ |
| ५ | १ | ३ | ० | ३७ | ९ | २ | ३५ |
| ६ | १ | १५ | ४० | ३८ | ९ | २२ | ३० |
| ७ | १ | २८ | २३ | ३९ | ९ | ४३ | १ |
| ८ | १ | ४१ | १० | ४० | १० | ४ | ९ |
| ९ | १ | ५४ | ० | ४१ | १० | २५ | ५३ |
| १० | २ | ६ | ५० | ४२ | १० | ४८ | १८ |
| ११ | २ | १९ | ५५ | ४३ | ११ | ११ | २४ |
| १२ | २ | ३३ | ० | ४४ | ११ | ३५ | १८ |
| १३ | २ | ४६ | १२ | ४५ | १२ | ० | ० |
| १४ | २ | ५९ | ३८ | ४६ | १२ | २५ | ३४ |
| १५ | ३ | १२ | ५६ | ४७ | १२ | ५२ | ७ |
| १६ | ३ | २६ | २४ | ४८ | १३ | १९ | ३७ |
| १७ | ३ | ४० | ५ | ४९ | १३ | ४८ | १७ |
| १८ | ३ | ५३ | ५६ | ५० | १४ | १८ | ५ |
| १९ | ४ | ७ | ५५ | ५१ | १४ | ४९ | ८ |
| २० | ४ | २२ | २ | ५२ | १५ | २१ | ३२ |
| २१ | ४ | ३६ | २१ | ५३ | १५ | ५५ | ३ |
| २२ | ४ | ५० | ५३ | ५४ | १६ | ३१ | १ |
| २३ | ५ | ५ | ३८ | ५५ | १७ | ८ | १४ |
| २४ | ५ | २० | ३१ | ५६ | १७ | ४७ | २८ |
| २५ | ५ | ३५ | ४२ | ५७ | १८ | २८ | ४४ |
| २६ | ५ | ५१ | ७ | ५८ | १९ | १२ | १३ |
| २७ | ६ | ६ | ४२ | ५९ | १९ | ५८ | १८ |
| २८ | ६ | २२ | ४८ | ६० | २० | ४७ | ७ |
| २९ | ६ | ३९ | ४ | ६१ | २१ | ३८ | ५३ |
| ३० | ६ | ५५ | ४१ | ६२ | २२ | ३४ | ६ |
| ३१ | ७ | १२ | ४८ | ६३ | २३ | ३३ | ४ |
| ३२ | ७ | २९ | ५३ | ६४ | २४ | ३६ | १३ |

पलभानयनम्।। अयोध्या अक्षांशः २६।४८ पलभाचक्रे २६ कोष्ठफलं ५।५१।७ अग्रिम २७ कोष्ठफलम् ६।६।५२ द्वयोरन्तरम् ०।१५।४५ शेषं ४८ गुणितं ७२०।२१६० षष्ठि भक्तं १२।३६ पूर्वोक्त २६ कोष्ठफलैर्युक्तं तत्र स्पष्टपलभा ६।३।४३।

## सावयवपलात्मिका चरान्तरसारिणी पार्श्वेऽक्षांशाः/उपरि क्रान्त्यंशाः

| ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३ | २ | ४ | ७ | ९ | १२ | १४ | १७ | १९ | २१ | २४ | २७ | २९ | ३२ | ३४ | ३७ | ३९ | ४२ | ४५ | ४८ | ५० | ५३ | ५६ | ५९ | ६२ |
| | २५ | ५० | १६ | ४२ | ८ | ३५ | २ | ३० | ५९ | ३० | १ | ३३ | ७ | ४२ | १९ | ५८ | ३९ | २१ | ६ | ५४ | ४९ | ३७ | ३४ | ३२ |
| १४ | २ | ४ | ६ | ८ | ११ | १३ | १५ | १८ | २० | २२ | २४ | २७ | २९ | ३२ | ३४ | ३६ | ३९ | ४१ | ४४ | ४७ | ४९ | ५२ | ५५ | ५७ |
| | १४ | २८ | ४३ | ५७ | १२ | २८ | ४४ | १ | १९ | ३८ | ५७ | १८ | ४० | ४ | २९ | ५६ | २४ | ५५ | २७ | २ | ३९ | १९ | २ | ४८ |
| १५ | २ | ४ | ६ | ८ | १० | १२ | १४ | १६ | १८ | २० | २२ | २५ | २७ | २९ | ३१ | ३३ | ३६ | ३८ | ४० | ४३ | ४५ | ४७ | ५० | ५३ |
| | ३ | ६ | ९ | १३ | १६ | २१ | २६ | ३१ | ३८ | ४५ | ५३ | २ | १२ | २४ | ३७ | ५१ | ८ | २६ | ४६ | ८ | ३२ | ४९ | २९ | १ |
| १६ | १ | ३ | ५ | ७ | ९ | ११ | १३ | १५ | १६ | १८ | २० | २२ | २४ | २६ | २८ | ३० | ३२ | ३४ | ३७ | ३९ | ४१ | ५३ | ४५ | ४८ |
| | ५२ | ४३ | ३५ | २७ | २० | १३ | ६ | ० | ५५ | ५० | ४७ | ४४ | ४३ | ४२ | ४३ | ४६ | ४९ | ५५ | २ | ११ | २३ | ३६ | ५२ | ११ |
| १७ | १ | ३ | ५ | ६ | ८ | १० | ११ | १३ | १५ | १६ | १८ | २० | २२ | २३ | २५ | २७ | २९ | ३१ | ३३ | ३५ | ३७ | ३९ | ४१ | ४३ |
| | ४० | २१ | १ | ४२ | २३ | ४ | ४६ | २९ | १२ | ५५ | ४० | २५ | १२ | ५९ | ४८ | ३८ | २९ | २२ | १६ | १३ | ११ | ११ | १३ | १८ |
| १८ | १ | २ | ४ | ५ | ७ | ८ | १० | ११ | १३ | १४ | १६ | १८ | १९ | २१ | २२ | २४ | २६ | २७ | २९ | ३१ | ३२ | ३४ | ३६ | ३८ |
| | २९ | ५८ | २६ | ५६ | २५ | ५५ | २५ | ५६ | २७ | ५९ | ३१ | ५ | ३९ | १४ | ५० | २८ | ६ | ४६ | २८ | ११ | ५६ | ४२ | ३१ | २१ |
| १९ | १ | २ | ३ | ५ | ६ | ७ | ९ | १० | ११ | १३ | १४ | १५ | १७ | १८ | १९ | २१ | २२ | २४ | २५ | २७ | २८ | ३० | ३१ | ३३ |
| | १७ | ३४ | ५२ | ९ | २७ | ४५ | ३ | २२ | ४१ | १ | २१ | ४२ | ४ | २७ | ५१ | १६ | ४१ | ८ | ३७ | ६ | ३७ | १० | ४४ | २१ |
| २० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | ११ | ११ | १३ | १४ | १५ | १६ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २४ | २५ | २६ | २८ |
| | ५ | ११ | १६ | २२ | २८ | ३४ | ४० | ४७ | ५४ | २ | १० | १९ | २८ | ३८ | ४९ | १ | १४ | २७ | ४२ | ५८ | १६ | ३४ | ५४ | १६ |
| २१ | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २२ | २३ |
| | ५३ | ४७ | ४० | ३४ | २८ | २२ | १६ | ११ | ६ | १ | ५७ | ५३ | ५० | ४७ | ४५ | ४४ | ४३ | ४४ | ४५ | ४८ | ५० | ५५ | १ | ८ |
| २२ | ० | १ | २ | २ | ३ | ४ | ४ | ५ | ६ | ६ | ७ | ८ | ९ | ९ | १० | ११ | १२ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १७ |
| | ४१ | २३ | ४ | ४५ | २७ | ९ | ५१ | ३३ | १६ | ५८ | ४१ | २५ | ९ | ५३ | ३८ | २३ | १० | ५७ | ४४ | ३३ | २२ | ११ | २ | ५४ |
| २३ | ० | ० | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | १० | १० | ११ | ११ | १२ |
| | २९ | ५८ | २७ | ५६ | २५ | ५५ | २४ | ५४ | २४ | ५४ | २४ | ५५ | २६ | ५७ | २९ | १ | ३३ | ६ | ३९ | १३ | ४८ | २३ | ५९ | ३६ |
| २४ | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ७ |
| | १६ | ३३ | ५० | ६ | २३ | ४० | ५७ | १४ | ३१ | ४८ | ५ | २३ | ४० | ५८ | १६ | ३५ | ५३ | १२ | ३१ | ५० | १० | ३० | ५१ | १२ |
| २५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| | ४ | ८ | १२ | १६ | २० | २४ | २८ | ३२ | ३६ | ४० | ४४ | ४८ | ५२ | ५६ | १ | ५ | ९ | १४ | १८ | २३ | २८ | ३२ | ३७ | ४२ |
| २६ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| | ९ | १८ | २७ | ३६ | ४५ | ५४ | ३ | १२ | २१ | ३१ | ४० | ४९ | ५९ | ८ | १८ | २८ | ३८ | ४८ | ५९ | ९ | २० | ३१ | ४२ | ५३ |
| २७ | ० | ० | १ | १ | १ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ |
| | २२ | ४४ | ६ | २८ | ५० | १३ | ३५ | ५८ | २० | ४३ | ६ | २९ | ५३ | १७ | ४१ | ५ | ३० | ५५ | २० | ४७ | १३ | ४० | ८ | ३५ |
| २८ | ० | १ | १ | २ | २ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ७ | ७ | ८ | ९ | ९ | १० | ११ | ११ | १२ | १३ | १३ | १४ | १५ |
| | ३५ | ११ | ४६ | २२ | ५७ | ३३ | ९ | ४५ | २१ | ५८ | ३५ | १२ | ५० | २८ | ७ | ४६ | २६ | ६ | ४७ | २९ | ११ | ५५ | ३९ | २४ |
| २९ | ० | १ | २ | ३ | ४ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| | ४९ | ३८ | २७ | १६ | ५ | ५४ | ४४ | ३५ | २५ | १६ | ७ | ५९ | ५१ | ४४ | ३७ | ३२ | २७ | २३ | २० | १८ | १६ | १७ | १८ | २१ |
| ३० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २२ | २३ | २४ | २६ | २७ |
| | ३ | ५ | ८ | ११ | १४ | १८ | २२ | २६ | ३१ | ३६ | ४२ | ४८ | ५५ | ३ | २२ | २२ | ३३ | ४५ | ५८ | १२ | २८ | ४५ | ४ | २५ |
| ३१ | १ | २ | ३ | ५ | ६ | ७ | ९ | १० | ११ | १२ | १४ | १५ | १७ | १८ | १९ | २१ | २२ | २४ | २५ | २७ | २८ | ३० | ३१ | ३३ |
| | १७ | ३४ | ५१ | ८ | २५ | ४३ | १ | २० | ३९ | ५९ | २० | ४१ | ४ | २७ | ५२ | १७ | ४४ | १२ | ४२ | १३ | ४६ | २२ | ५९ | ३८ |
| ३२ | १ | ३ | ४ | ६ | ७ | ९ | १० | १२ | १३ | १५ | १७ | १८ | २० | २१ | २३ | २५ | २७ | २८ | ३० | ३२ | ३४ | ३६ | ३८ | ४० |
| | ३१ | २ | ३४ | ६ | ३८ | १० | ४३ | १७ | ५१ | २६ | २ | ३८ | १६ | ५५ | ३६ | १८ | २ | ४६ | ३३ | २२ | १२ | ६ | २ | ० |
| ३३ | १ | ३ | ५ | ७ | ८ | १० | १२ | १४ | १६ | १७ | १९ | २१ | २३ | २५ | २७ | २९ | ३१ | ३३ | ३५ | ३७ | ३९ | ४१ | ४४ | ४६ |
| | ४६ | ३२ | १८ | ५ | ५३ | ३९ | २७ | १६ | ५ | ५६ | ४७ | ३९ | ३३ | २८ | २५ | २४ | २४ | २६ | ३० | ३७ | ४६ | ५९ | १४ | ३२ |
| ३४ | २ | ४ | ६ | ८ | १० | १२ | १४ | १६ | १८ | २० | २२ | २४ | २६ | २९ | ३१ | ३३ | ३५ | ३८ | ४० | ४३ | ४५ | ४८ | ५० | ५३ |
| | १ | २ | ४ | ५ | ७ | १० | १३ | १८ | २३ | २९ | ३६ | ४५ | ५५ | ७ | २० | ३६ | ५४ | १३ | ३६ | १ | २९ | २ | ३५ | १४ |
| ३५ | २ | ४ | ६ | ९ | ११ | १३ | १६ | १८ | २१ | २३ | २५ | २७ | ३० | ३२ | ३५ | ३७ | ४० | ४३ | ४५ | ४८ | ५१ | ५४ | ५७ | ६० |
| | १६ | ३३ | ५० | ७ | २५ | ४३ | २ | २२ | ४३ | ६ | २९ | ५५ | २१ | ५० | २१ | ५४ | ३० | ८ | ४९ | ३३ | २१ | १२ | ७ | ० |

## इस पञ्चाङ्ग द्वारा किसी इष्टस्थान का शुद्ध इष्टकाल, ग्रहगणित, दिनमान तथा तिथ्यादि के आयनन का संक्षेप में प्रकार।

१. **देशान्तर।** इष्टस्थान का काशी से देशान्तर देखकर यदि पूर्व हो तो धन (+) और पश्चिम हो तो ऋण (-) चिह्न कर एक स्थान पर लिखें।

२. **चरान्तर।** क्रान्ति तथा इष्टदेश के अक्षांश से चरान्तर ज्ञात करें। क्रान्ति के अंश और कला का फल, इष्ट देशीय अक्षांश के अंश तथा इसके अग्रिम अंश कला द्वारा अलग-अलग ग्रहण करें इन दोनों फलों के इष्ट अक्षांश से प्राप्त कलातुल्य फल के अनुमान का इष्टदेशीय अक्षांश से प्राप्त पूर्णफल में स्थिति वश योगान्तर ही चरान्तर है। यह फल केवल दो अवस्था में धन होगा। १. यदि इष्ट स्थान का आक्षांश काशी के अक्षांश (२५।१८) से अधिक हो तथा क्रान्ति उत्तरा हो। २. इष्टस्थान का अक्षांश काशी के अक्षांश (२५।१८) से कम तथा क्रान्ति दक्षिणा हो तो फल धन (+) होगा अन्यथा फल ऋण (-) होगा। देशान्तर की तरह इस चरफल को भी + या - संकेत कर देशान्तर के पास लिख लें।

३. **इष्टफल।** देशान्तर तथा चरान्तर दोनों के धन (+) होने पर योग फल धन (+), दोनों के ऋण (-) होने पर योगफल ऋण (-), दोनों में धन (+) अधिक होने पर अंतर धन (+), ऋण (-) अधिक होने पर अंतर ऋण (-) होगा। इस इष्टफल का भी (+) या (-) जैसा हो तीसरे स्थान पर लिखें और इसकी संज्ञा '**इष्टफल**' समझे। *चरान्तर तथा इष्टफल दिनमानादि का साधन निम्नलिखित प्रकार से होगा।*

१. **इष्टदेशीय दिनमान।** काशी के दिनमान में द्विगुण चरान्तर का संस्कार करने से इष्टदेशीय शुद्ध दिनमान होगा।

२. **इष्टदेशीय तिथि नक्षत्रादि।** पूर्वागत धन + या ऋण - 'इष्टफल' आदि धन (+) हो तो काशी के तिथ्यादि घटी पल में योग करें। यदि ऋण (-) हो तो घटा देने से इष्टदेशीय तिथ्यादि का मान होगा।

३. **इष्टदेशीय जन्मेष्टकाल।** यदि जन्म समय रेलवे घड़ी के अनुसार मालूम हो तो उसमें पञ्चाङ्गस्थ रेलवे अन्तर धन (+) का ऋण (-) और ऋण (-) का धन (+) करने से काशी का इष्टकाल घं.मि. में होगा। इस घं.मि. का घटीपल बना लें। पुनः पुर्वागत + या - '**इष्टफल**' का संस्कार करने पर इष्टदेशीय स्पष्ट इष्टकाल होगा।

४. **ग्रहगणित।** तद्देशीय इष्टकालवश ग्रहों के दिनादि चालन में 'इष्टकाल' का विलोम संस्कार धन (+) हो तो ऋण (-) ऋण (-) हो तो धन (+) करने पर इष्टदेशीय ग्रहगणित के लिए शुद्ध चालन होगा।



Scanned by CamScanner

## संदिग्धव्रतोपवास तथा पर्व निर्णय

१-चैत्रशुक्ल प्रतिपदा-चैत्रशुक्ल प्रतिपदा दिनांक (२-४-२०२२) दिन शनिवार को नवसंवत्सरारम्भ हो रहा है। इसी प्रतिपदा को वासन्तिक देवी नवरात्रारम्भ होता है। इस दिन घट्यादि ६।१७ (दि.८।२२) से वैधृतियोग आ रहा है। वैधृतियोग में नवरात्रारम्भ का निषेध है। अत: कलशस्थापनादि पूजन प्रात: ८।२२ के पूर्व या अभिजिन्मुहूर्त्त (दि.११।३५ से १२।२५ तक) में किया जा सकता है।

२-वटसावित्री व्रतम् -ज्येष्ठकृष्ण अमावस्या को वटसावित्री व्रत होता है। वटसावित्री व्रत त्रयोदशी से तीन दिनों का व्रत होता है। इसमें चतुर्दशी के उपरान्त सूर्यास्त के पूर्व पूर्णिमा/अमावस्या तीन मुहूर्त्त से अधिक होनी चाहिए। इस वर्ष ज्येष्ठकृष्ण १४ रविवार को चतुर्दशी के उपरान्त सूर्यास्त के पूर्व अमावस्या त्रिमुहूर्त्ताधिक्य है। *''तत्र पूर्णिमा सूर्यास्तमयात्पूर्व त्रिमुहूर्त्ताधिक व्यापिनी चतुर्दशी विद्धा ग्राह्या''* (धर्मसिन्धु)। अत: दिनांक २९ मई २०२२ रविवार को वटसावित्री व्रत होगा। व्रत का प्रारम्भ २७ मई शुक्रवार को होगा।

३-रक्षाबन्धन-''अथ रक्षाबन्धनमस्यामेव पूर्णिमायां भद्रारहितायां त्रिमुहूर्त्ताधिकोदयव्यापिन्यामपराह्णे प्रदोषे वा कार्यम् । उदये त्रिमुहूर्त्त न्यूनत्वे पूर्वेद्युर्भद्रारहिते प्रदोषादिकाले कार्यम् ।''-(धर्मसिन्धु)। श्रावणशुक्ल पूर्णिमा को सूर्योदय से तीन मुहूर्त्त से अधिक व्याप्त तिथि में भद्रा रहित अपराह्न या प्रदोषकाल में रक्षाबन्धन करना चाहिए। यदि सूर्योदयकाल से पूर्णिमा तिथि तीन मुहूर्त्त से कम हो तो पूर्व दिन भद्रा रहित प्रदोषादिकाल में रक्षाबन्धन करना चाहिए।

''तत्सत्त्वे तु रात्रावपि तदन्ते कुर्यादिति निर्णयामृते।'' इदं प्रतिपद्युतायां न कार्यम् -(निर्णयसिन्धु) अर्थात् रक्षाबन्धन का कृत्य रात्रि में भी किया जा सकता है,परन्तु प्रतिपदा में नहीं करना चाहिए। इस वर्ष श्रावणशुक्ल पूर्णिमा शुक्रवार को घट्यादि ४।२४ (दि.७।१६) तक ही है जो त्रिमुहूर्त्ताल्प है। पूर्वदिन (दिनांक ११ अगस्त २०२२) दिन गुरुवार को अपराह्नकाल में भद्रा के होने से भद्रा (रा. ८।२५) के बाद रक्षाबन्धन करना चाहिए।

४-श्रावणी-इस वर्ष श्रावणशुक्ल पूर्णिमा (१२-८-२०२२) शुक्रवार को घट्यादि ४।२४ (दि.७।१६) तक ही है।'' पूर्व दिने मुहूर्त्ताद्यनंतरं प्रवृत्ता द्वितीयदिने मुहूर्त्तद्वयत्र्यादिव्यापिनी षण्मुहूर्त्तन्यूना तदा तैत्तिरीयैरुत्तरा ग्राह्या तैत्तिरीयभिन्नयाजुषैः पूर्वा ग्राह्या''। इस वचनानुसार तैत्तिरीयशाखा के लोग अर्थात् आपस्तम्बीय श्रावणशुक्ल १५ शुक्रवार (१२-८-२२) को श्रावणी करेंगे तथा पूर्व दिन श्रावणशुक्ल १४ गुरुवार (११-८-२२) को पूर्वाह्न में संगवकालस्पर्शिनी पूर्णिमा में तैत्तिरीय से भिन्न यजुर्वेदी-माध्यन्दिनीय आदि शाखावलम्बि श्रावणी करेंगे तथा अथर्ववेदीय लोग भाद्रपदशुक्ल पूर्णिमा को उपाकर्म करेंगे।

ऋग्वेदियों के लिए श्रवण नक्षत्र प्रमुख है,जो उदयकाल में होना चाहिए तथा उत्तराषाढ़ा से विद्ध नहीं होना चाहिए। ऋग्वेदियों के लिए श्रवण नक्षत्र न मिले तो पंचमी या हस्त में उपाकर्म होता है। '' तत्र बह्वृचानां श्रावणशुक्लपक्षे श्रवण नक्षत्रं पंचमी हस्त इतिकालत्रयम्। तत्र श्रवणं मुख्यकालस्तदलाभे पंचम्यादि:।'' इस वर्ष श्रवण नक्षत्र उत्तराषाढ़ा से विद्ध होने और सूर्योदयकाल में न होने से '' पंचम्यादि कालो ग्राह्य:'' । अत:श्रावणशुक्ल पंचमी (२-८-२०२२) मंगलवार को ऋग्वेदियों का उपाकर्म (श्रावणी) होगा।

५-विजयादशमी-आश्विनशुक्ल दशमी को विजयादशमी होती है। जिसमें अपराह्नकाल की प्रधानता है। इस वर्ष ति.९ मंगलवार (४-१०-२२) को घट्यादि १८।३२ (दि.१।३३) पर दशमी आ रही है और द्वितीयदिन तिथि १० बुधवार (५-१०-२२) को घट्यादि १२।३३ (दि.११।९) तक है,जो अपराह्नकाल के पूर्व ही समाप्त हो जाती है। इसी दिन श्रवण नक्षत्र भी है। पूर्वदिन ही अपराह्नकाल (दि.१।११ से दि.३।३२ तक) में दशमी के होने से पूर्वदिन ही दिनांक (४-१०-२०२२) को विजयादशमी मनानी चाहिए। इसी दिन विजयमुहूर्त्त (दि.१।५८ से दि.२।४४ तक)भी है।

६-दीपावली-कार्तिककृष्ण अमावस्या को प्रदोषकाल में दीपावली का पर्व होता है। इस दिन प्रदोषकाल में दीपदान,लक्ष्मीपूजनादि कृत्य विहित है। इस वर्ष कार्तिककृष्ण चतुर्दशी (२४-१०-२२) सोमवार को घट्यादि २६।४६(दि.५।४) से अमावस्या लग रही है और द्वितीय दिन दिनांक (२५-१०-२२) मंगलवार को घट्यादि २५।३०(दि. ४।३५) तक है। पूर्व दिन ही प्रदोषकाल (सा.५।३८ से रा. ८।१० तक) में अमावस्या है। अत: ''पूर्वत्रैव प्रदोषव्याप्तौ लक्ष्मीपूजनादौ पूर्वा अभ्यंगस्नानादौ परा''। अत:२४-१०-२०२२ सोमवार को दीपावली मनाई जायेगी।

कार्तिकशुक्ल प्रतिपदा को बलिपूजा, गोक्रीडन, गोवर्धनपूजा, मार्गपालीबंधन, यष्टयाकर्षण, द्यूतक्रीडा नीराजन आदि कृत्य होते हैं। जिसमें बलिपूजा रात्रि का कृत्य है। ६ मुहूर्त्त द्वितीया आने पर स्थूल चन्द्रदर्शन होता है। दिनांक (२६-१०-२२) बुधवार को सूक्ष्म चन्द्रदर्शन है, स्थूल चन्द्रदर्शन नहीं है। पूर्व दिन (२५-१०-२२) मंगलवार को रात्रि में बलिपूजा होगी। इसके अतिरिक्त उपर्युक्त सभी कृत्य कार्तिकशुक्ल प्रतिपदा (२६-१०-२२) को होंगे ।

७-सूर्यषष्ठी-कार्तिकशुक्ल षष्ठी को सूर्यषष्ठी व्रत किया जाता है। इस वर्ष षष्ठी तिथि की हानि है अर्थात् पंचमी रविवार दिनांक (३०-१०-२२) को ही षष्ठी समाप्त हो जाती है तथा पंचमी रविवार के बाद दूसरे दिन दिनांक (३१-१०-२२) सोमवार को सूर्योदयकाल में सप्तमी तिथि रहती है। अत:दिनांक ३० अक्टूबर रविवार को उपवास तथा दिनांक ३१ अक्टूबर २०२२ दिन सोमवार को व्रत का पारण होगा।

८-होलिकादाह-इस वर्ष फाल्गुनशुक्ल पूर्णिमा मंगलवार को घट्यादि २८।४१(सा.५।३९) पर ही समाप्त हो जा रही है तथा पूर्व दिन सोमवार को चतुर्दशी घट्यादि २४।२३ (दि. ३।५६)पर समाप्त होकर पूर्णिमा लग रही है। इस दिन रात्रि पर्यन्त भद्रा भी है। फाल्गुनशुक्ल १५ मंगलवार को प्रदोषकाल में पूर्णिमा न मिलने के कारण तथा काशी में मंगलवार को प्रदोषकाल में प्रतिपदा में चतु:षष्टि योगिनीयात्रा होने से काशी में पूर्वदिन सोमवार (दि.६-३-२०२३) को रात्रि में भद्रापुच्छ (रा.१२।२३ से रा.१।३५ तक) में होलिकादाह होगा।

परम्परानुसार काशी में होली (दि.७-३-२०२३)मंगलवार को होगी तथा काशी से अन्यत्र होली वसन्तोत्सव बुधवार दिनांक (८-३-२०२३) को होगा।

( पृष्ठ ३ का शेष )

कार्तिकशुक्ल से मार्गशीर्षकृष्ण तक- चन्द्रदर्शन मुहूर्त के विचार से खाद्य पदार्थों के मूल्य में सस्ती रहेगी। गेहूँ, चना, मोठ में घटाबढ़ी तथा सरसों आदि खाद्य तेलों में तेजी का रुख रहेगा। ऊनी वस्त्रों और चाँदी में तेजी का रुख रहेगा। वृश्चिक के बुध से गुड़, शक्कर, सरसों, सोयाबीन में तेजी आयेगी। शेयर बाजारों में मंदी का रुख रहेगा। विश्व के कुछ मुस्लिम राष्ट्रों में अशान्ति से बिखराव की स्थिति बनेगी। भारत में तूफान व कहीं भयंकर प्राकृतिक प्रकोप से विनाशलीला का दृश्य उपस्थित होगा। एक राशि पर चार ग्रहों का योग उत्पात कारक होगा। पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात व ओलावृष्टि हो सकती है। मध्य भारत और उत्तर भारत में तापमान में गिरावट हो सकती है। कार्तिकशुक्ल १,५,१२ तथा मार्गशीर्षकृष्ण २,७,३० उपद्रवकारी रहेंगे।

मार्गशीर्षशुक्ल से पौषकृष्ण तक- चन्द्रदर्शन मुहूर्त के विचार से खाद्य पदार्थों के मूल्य में महँगी का रुख रहेगा। सूती वस्त्र महँगे होंगे। तेलहन के मूल्य में पूर्व की अपेक्षा सस्ती का रुख रहेगा, परन्तु पौषकृष्ण के उत्तरार्ध में कुछ तेजी भी आयेगी। सोना, चाँदी के भाव में भी तेजी आयेगी। रसायनिक व इमारती सामानों में भी तेजी का रुख रहेगा। सूर्य-राहु का षडाष्टक योग होने से प्रान्तीय राज्यों में परिवर्तन तथा राजनायकों में आपसी मतभेद पर विवाद होंगे। उत्तरी राज्यों में प्राकृतिक आपदाओं से जन-धन की हानि होगी। ऊनी वस्त्र सस्ते होंगे। अपहरण तथा दुर्घटनाओं का योग है। मार्गशीर्षशुक्ल ६,११,१४ तथा पौषकृष्ण ३,१३,३० उपद्रवकारी रहेंगे।

पौषशुक्ल से माघकृष्ण तक- चन्द्रदर्शन मुहूर्त के विचार से खाद्य पदार्थों का मूल्य सामान्य रहेगा। फल, साग, तरकारी के मूल्य में उत्तरोत्तर सस्ती का रुख रहेगा। मीठे पदार्थ विशेष सस्ते होंगे। सूती वस्त्र गुड़ और रुई के मूल्यों में तेजी आयेगी। सरसों आदि खाद्य तेलों में तेजी आयेगी। पश्चिम के कुछ देशों में राजनैतिक संकट गहरायेंगे। व्यापार की स्थिति में गिरावट आयेगी। सोना-चाँदी तथा शेयर भाव तेज होंगे। ठंड की अधिकता बढ़ेगी। पश्चात शीतलहर से जनजीवन अस्त-व्यस्त रहेगा। पौषशुक्ल८,१३,१४ तथा माघकृष्ण २,७,१३ उपद्रवकारी रहेंगे।

माघशुक्ल से फाल्गुनकृष्ण तक- चन्द्रदर्शन मुहूर्त के विचार से खाद्य पदार्थों का मूल्य सामान्य रहेगा। जौ, चावल आदि में तेजी होकर मंदी आयेगी। चीनी-गुड़ के भावों में भी घटाबढ़ी रहेगी। इनका संग्रह करना भविष्य के लिए लाभदायक रहेगा। ग्रह स्थिति के विचार से भौमान्तरिक्ष उत्पात, दुर्घटना की सम्भावना बनी रहेगी। भारत की शासन सत्ता के समक्ष विषम समस्यायें उपस्थित होंगी लेकिन शान्ति के साथ सफलता मिल जायेगी। सोना-चाँदी में मंदी का रुख रहेगा। कुम्भ के सूर्य से जौ, ज्वार, चावल, मूँग, मोठ में उतार-चढ़ाव तथा चना में तेजी रहेगी। कहीं-कहीं बूँदा-बाँदी से ठंड बढ़ सकती है। भारत के पूर्वोत्तर भागों में शीतलहर से जनजीवन अस्त व्यस्त हो सकता है। दलहन के मूल्य में पूर्व की अपेक्षा सस्ती का रुख रहेगा। माघशुक्ल १,१०,१३ तथा फाल्गुनकृष्ण २,७ तथा १३ उपद्रवकारी रहेंगे।

फाल्गुनशुक्ल से चैत्रकृष्ण तक- चन्द्रदर्शन मुहूर्त के विचार से खाद्य पदार्थों का मूल्य सामान्य रहेगा। आलू और फलों के मूल्यों में तेजी का रुख रहेगा। फलों के मूल्यों में उतरोत्तर महँगी रहेगी। मेवे, काजू आदि से महँगे रहेंगे। शेयर बाजारों में अस्थिरता रहेगी। इमारती सामान महँगे होंगे। सरसों आदि खाद्य तेलों में वृद्धि रहेगी। विश्व व्यापार में सुधार की प्रक्रिया शुरु होगी। दक्षिण राज्यों में चक्रवात तूफान से हानि सम्भव है। सीमावर्ती क्षेत्रों में सैनिक गतिरोध होगा। चैत्रकृष्ण में शुक्र-राहु का योग तापमान में वृद्धि वाला होगा। सोना-चाँदी, पीतल आदि में तेजी देने वाला होगा। रंगीन वस्त्र महँगे होंगे। फाल्गुनशुक्ल ५,८,१३ तथा चैत्रकृष्ण ५,११,३० उपद्रवकारी रहेंगे।

## कन्या के विवाह में अवरोध होने पर सिद्धिप्रद अनुष्ठान

आजकल कन्या के विवाह की समस्या प्राय: प्रत्येक गृहस्थ के समक्ष उपस्थित होती है। इसके लिये माता-पिता को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। शास्त्रों में वर्णित 'कात्यायनी देवी' का अनुष्ठान बड़ा ही अनुभूत व सिद्धिप्रद है। जनसाधारण की जानकारी व जनहित में इस मंत्र के अनुष्ठान की विधि दी जा रही है। इसे नियम व श्रद्धापूर्वक करने या कराने से कन्या के विवाह में आने वाले विघ्न दूर होते हैं व विवाह सकुशल सम्पन्न हो जाता है।

जप की विधि- यह जप केले के सूखे पत्ते की आसनी पर बैठ कर कमलगट्टे की माला से किया जाता है। जप के समय कडुआ तेल का दीपक जलते रहना चाहिये। जिस व्यक्ति को यह अनुष्ठान करना हो उसे लाल या पीला वस्त्र पहनकर २१ दिन (जप काल) तक ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये। इस मन्त्र का जप जपकर्त्ता को पान खाते हुए करना चाहिये। इस जप का ४४००० पुनश्चरण है, प्रथम दिन मन्त्र का १००० जाप करें व उसके बाद २० दिनों तक प्रतिदिन २००० मन्त्र का जाप करें। जपकाल में प्रतिदिन केले के वृक्ष का पूजन पंचोपचार विधि से करें। भोग व प्रसाद के रूप में पीले पेड़े का प्रयोग करना चाहिये।

मन्त्र- *कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि।*
*नन्दगोप सुतं देवि पतिं मे कुरु ते नम:।।*

अनुष्ठान के अन्त में दशांश हवन, तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये। भोजन में पीला मिष्ठान्न अवश्य परोसें।

## शनि की साढ़ेसाती तथा ढैया संवत् २०७९

इस वर्ष वर्ष के प्रारम्भ में शनिदेव मकरराशि पर रहेंगे। अत: धनु, मकर तथा कुम्भराशि वालों के लिए शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा। मिथुन व तुलाराशि वालों के लिए शनि की ढैया चलेगी। शनि की साढ़ेसाती कुम्भराशि वालों के लिए सिर पर, मकरराशि वालों के लिए हृदय पर तथा धनुराशि वालों के लिए पैर पर शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

फाल्गुनकृष्ण १४ रविवार (१९ फरवरी २०२३) से शनिदेव कुम्भराशि पर चले जायेंगे। अत: मकर, कुम्भ, मीन राशि वालों के लिए शनि की साढ़ेसाती चलेगी। कर्क और वृश्चिकराशि वालों के लिए शनि की ढैया चलेगी। शनि की साढ़ेसाती कुम्भराशि वालों के लिए हृदय पर, मकरराशि वालों के लिए पैर पर तथा मीन राशि वालों के लिए सिर पर शनि की साढ़ेसाती रहेगी। जिन राशि वालों के लिए शनि की ढैया, साढ़ेसाती चल रही हो उन्हें सुन्दरकाण्ड, रामायण या हनुमान चालीसा का नित्य पाठ तथा शनि का व्रत करना चाहिये। शनिवार को प्रात: काल पीपल वृक्ष में जल दान तथा सायंकाल दीपदान करना चाहिये। काले घोड़े की नाल की अँगूठी शनिवार को मध्यमा अँगुली में धारण करना चाहिये। शनिवार का व्रत तथा शनि का दान करना चाहिये।

## दीपावली पूजन का शुभ मुहूर्त्त

कार्तिककृष्ण १४ सोमवार (२४।१०।२०२२) को दीपावली का शुभ पर्व होगा। दीपावली पूजन का मुख्यकाल प्रदोषकाल होता है। जिसमें स्थिर लग्न की प्रधानता होती है। जिसमें स्वाती नक्षत्र का योग भी प्रशस्त होता है। अत: वृष, सिंह या कुम्भ लग्न में दीपावली पूजन करना चाहिये। इस दिन वृषलग्न सायं ६।५५ से रात्रि ८।५१ तक है। जो दीपावली पूजन के लिए उत्तम समय है। इसके पश्चात् अर्धरात्रि में सिंहलग्न में रात्रि १।२३ से रात्रि ३।३७ तक में गणेश (कुबेरादि देवताओं) का पूजन किया जायेगा।

## कुण्डली मिलाने की रीति

फलित ग्रन्थों के द्वारा स्त्री नाशक या पति नाशक जो योग है उन योगों के अनुसार पति के ग्रहों का प्रबल होना आवश्यक है।

कुण्डली में लग्न चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और द्वादश में पापग्रह का होना प्राय: पति नाशक या पत्नी नाशक है, इसमें पति को मंगला और स्त्री को मंगली कहते हैं। यह पण्डितों का अनुभव है कि सबसे अधिक दोषकारक मंगल उससे कम बाकी पापग्रह होते हैं।

इस योग को चन्द्रमा शुक्र और सप्तमेश से भी देखना चाहिए। द्वितीय सप्तम भावों में भी पापयोग होता है। स्त्री की कुण्डली में सप्तम, अष्टम स्थान में पापयोग होना भी अधिक अनिष्ट है। द्वितीय तथा अष्टम स्थान में शुभ योग होना सौभाग्यवर्द्धक है। सप्तमेश, अष्टमेश का योग अथवा अष्टमेश का सप्तम में होना भी उसी प्रकार का योग होता है। सन्तान प्रतिबन्धकयोग भी वैधव्य सूचक प्राय: होते है। इन योगों के विचार से यदि ग्रह प्रबल पड़े तो विवाह करना योग्य है। इसके बाद आयु, सन्तान और भाग्ययोग को देखना युक्ति संगत है।

प्रश्नलग्न या जन्मलग्न से स्त्री की कुण्डली में छठे या आठवें चन्द्रमा हो, लग्न या सातवें पापग्रह हो, लग्न में चन्द्रमा और सातवें मंगल हो तो वैधव्यकारक योग होता है।

यदि कन्या को प्रबल वैधव्ययोग हो तो अश्वत्थ विवाह, कुम्भ विवाह या विष्णु प्रतिमादि के साथ विवाह करके चिरंजीवी वर के साथ विवाह किया जाय तो पुनर्विवाह का दोष नहीं होता, परन्तु यह काम गुप्त करना चाहिए। सप्तमेश, षष्ठ, सप्तम, नवम् अष्टम्, द्वादश में पापयुक्त हो तो भी सौभाग्य के लिये अनिष्टप्रद होता है। सप्तमेश का पंचम भाव में होना भी अच्छा नहीं होता। ज्योतिष फलित शास्त्र में दो ही वस्तुओं की अधिक प्रधानता है- लग्न और चन्द्रमा। लग्न को शरीर और चन्द्रमा को मन कहते हैं। प्रेम मन से होता है, शरीर से नहीं। अतएव जन्मराशि के वश मेलापक विचार किया जाता है। गणना जन्मनाम से देखी जाती है। विवाह यात्रा उपनयन, चूड़ा गोचर विचार मंगल कृत्य इत्यादि कार्यों में जन्मनाम ही प्रधान है। जन्म नाम न मिलने पर प्रसिद्ध नाम से गणना देखनी चाहिए। प्रसिद्ध नाम कई हो तो अन्तिम नाम ग्रहण कर गणना देखने का विधान है। किसी का जन्म और प्रसिद्ध और सूर्य-गुरु-चन्द्रमा के बल जन्मनाम से देखना उत्तम है। एक का प्रसिद्ध नाम और दूसरे के जन्मनाम ग्रहण कर मेलापक विचार करने का विधान नहीं है। वर कन्या यदि एक ही गोत्र के हों तो विवाह नहीं करना चाहिए।



प्रधान सम्पादक एवं सत्वाधिकारी

**पं० शिवमूर्ति उपाध्याय 'ज्योतिषी'**

मोबाइल- ०७३९०९९३३९७

सहायक सम्पादक

पं० वीरवरमणि त्रिवेदी 'ज्योतिषी' (गणित एवं फलित)

कार्यालय

**विक्रम पञ्चाङ्ग प्रकाशन**

बी- २/९५ सी. भदैनी, वाराणसी।

E- mail : shivmurtiupadhyay@gmail.com

सूचित किया जाता है कि हमारे यहाँ कुण्डली बनाने की दक्षिणा निम्नलिखित है :-

| | | |
|---|---|---|
| कुण्डली | सर्वोत्तम | २५०० रू० |
| कुण्डली | उत्तम | २१०० रू० |
| कुण्डली | साधारण | १५५० रू० |
| वर्षफल | साधारण | २५००रू० |
| मेलापक | साधारण | ११००रू० |

भुगतान 'विक्रम पञ्चाङ्ग प्रकाशन' के नाम ड्राफ्ट या मनीआर्डर द्वारा रू० १५० डाक व पैकिंग व्यय प्रति कुण्डली अलग से जोड़ कर उपरोक्त पते पर ही भेजें। कुण्डली बनवाने हेतु जन्मसमय, जन्मस्थान, दिनांक मास एवं ई० सन् तथा पिता का नाम स्पष्ट लिख कर भेजना आवश्यक है।

*विशेष-अग्रिम भुगतान के बिना पत्र पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।*

## पञ्चाङ्गस्थ विषयों की संक्षिप्त सूची





## पञ्चाङ्ग देखने की विधि

काशी से प्रकाशित यह पञ्चाङ्ग सर्वप्राचीन है, अतः इसके देखने की विधि पुनः लिखने की आवश्यकता न होने पर भी सुविधार्थ दिया जाता है। इस पञ्चाङ्ग के मुख्यतः दो खण्ड है *( १ ) स्थिर विषय:-* जिसमें पृष्ठ ४ से १० तक तथा ३४ से ३९ है। प्रत्येक पक्ष में भी कुछ स्थिर विषय है, जिनकी सूची पूर्व स्तम्भ में दी गयी है। **( २ ) परिवर्तनीय विषय:-** १-३, ११-३४ तथा ४० से ४२ पृष्ठों में दिये गये हैं।

**चैत्रादि पक्ष-** पृष्ट ११ से ३४ तक चैत्रादि पक्ष दिये गये हैं। प्रत्येक पृष्ठ के चार भाग है (१) बीच की काली लाइन के ऊपर का (२) सूर्योदय कालीन ग्रह (३) विविध मुहूर्त्त तथा लग्नसारिणी, (४) स्थिर विषय।

**भाग १-** बीच की काली लाइन के ऊपर के भाग (१) में पञ्चाङ्ग जिसमें क्रम से दिनमान, तिथि, वार, घटी, घं.मि. में रात्रि ( रा. ) दिन ( दि. ) प्रातः ( प्रा. ) सायं ( सा. ) के संकेत से समाप्ति का काल दिया गया है। इसी प्रकार नक्षत्र तथा योग का भी सूर्योदय से घटी पल तथा घं.मि. से पूर्वोक्त तिथि की तरह मान दिया गया है। बव-वालव इत्यादि करणों का मान केवल घटी में दिया गया है। 'योग' कोष्ठ के अन्तर्गत आनन्दादि योग दिये गये हैं। अ.फ.सौ. ने.रा. सांकेतिक चिह्नों का अर्थ क्रमशः अंग्रेजी, फसली, सौर तथा नेपाली राष्ट्रीय सायन दिनांक है। **चं.रा.प्र.** के कोष्ठ के अन्तर्गत चन्द्रमा का राशि परिवर्तन काल घटी पल में दिया जाता है। तथा उसका घं.मि. उसी के सामने संस्कृत की पंक्ति में रा.द्वि.प्रा. के संकेत से दिया गया है। पञ्चाङ्गस्य सूर्योदय सूर्यास्त तथा सभी घं.मि. काशी के स्पष्ट मान से दिया जाता है। इसी तरह तिथि नक्षत्र आदि का मान घं.मि. में स्पष्ट मान से दिया जाता है। 'औ स्प. सू.' स्तम्भ में सूर्योदय काल में स्पष्ट सूर्य काशी का दिया जाता है। उसके बगल में सूर्यक्रान्ति दी जाती है यह दक्षिणा ( द. ) उत्तरा ( उ. ) के संकेत से दी जाती है।

**रेलवे टाइम संस्कार-** 'रे.अं.' की पञ्चाङ्गस्थ सभी घं.मि. में संकेतानुसार संस्कार करने पर काशी का स्टैण्डर्ड टाइम होगा। भारतीय ( रे.प. ) स्टैण्डर्ड टाइम की सूर्य घड़ी के मान में परिणत करने के लिये आवश्यक है, कि पञ्चाङ्गस्थ रे.अं. का विलोम संस्कार करें। रेल अं. यदि धन ( + ) चिह्न का हो तो स्टै. टाइम में घटावें तथा ऋण ( - ) चिह्न का हो तो जोड़ देने से घं.मि. होगा, उसका घटी पल काशी का स्पष्ट मान हो जायेगा। रेलवे अन्तर के बाद की संस्कृत लाइनों में सर्वप्रथम भ. (भद्रा) और उसके बाद चन्द्रमा जिस राशि पर रहते हैं उसका निर्देश किया जाता है। इन्हीं पंक्तियों में सूर्य का नक्षत्रचार भी दिया जाता है। तथा सभी शुद्ध व्रतोपवास पर्व दिये जाते हैं। **व्रतोपवास** में संदेह होने पर निर्णय ४० पृष्ठ पर दिया जाता है। पंक्ति में सर्वार्थसिद्धि, अमृतसिद्धि, यमघंट, द्विपुष्कर, रवियोग तथा यायी स्थायी, संधिकर योग दिया जाता है। इस पञ्चाङ्ग में उ. ( उपरान्त ) या. ( यावत् ) समझना चाहिये। योगादि का लिखित घटी पल सभी नक्षत्र या तिथि के घटी पल के बराबर होता है। अतः तिथि नक्षत्र के घ. प. को मिलाकर उसका घं.मि. समझना चाहिये।

**भाग २-** सूर्योदयकाल के मंगल से राहु तक ग्रह दिये जाते हैं। किसी दिन के ग्रह का द्वितीय दिन के ग्रह से अन्तर करने पर उस दिन की ग्रह की गति होगी। उसका इष्टकाल से गुणा करके ६० से भाग देने पर चालन होगा। उसको इष्ट तिथि के औदयिक ग्रह में जोड़ देने से इष्टकाल का ग्रह होगा। मार्गी ग्रहों का गणित सूर्य की तरह वक्री या राहु की तरह सदैव जानना चाहिये। राहु की राशि में ६ राशि जोड़ देने से केतु का मान हो जायेगा। सूर्योदयकालीन भौमादिग्रहों के नीचे उनका राशि नक्षत्रचार भी दिया गया है।

## ।। विविध मुहूर्त्ताः ।।

### ।। चौलकेशान्त मुहूर्त्ताः ।।

| | |
|---|---|
| वैशाख शु. | ति. ५ शुक्रे प्रा.६।४५ उ. पुनर्वसौ (ल. २) |
| ज्येष्ठ कृ. | ति. ३ बुधे ज्येष्ठा भे (ल. २) |
| | ति. ११ गुरौ रेवत्यां (ल. २ वा ४) |
| ज्येष्ठ शु. | ति. ११ शुक्रे विष्टेः पूर्वं चित्रा भे (ल. २ वा ४) |
| आषाढ़शु. | ति. २ शुक्रे पुष्ये (ल. ४) |
| | ति. ७ बुधे दि.७।५९ उ. विष्टेः पूर्वं हस्ते (ल. ४) |
| माघकृ. | ति. १२ गुरौ ज्येष्ठा भे त्रयोदश्यां (ल. ११) |
| माघशु. | ति. १३ शुक्रे प्रा. ६।३८ उ. पुनर्वसौ (ल. ११वा १) |
| फाल्गुनकृ. | ति. ५ शुक्रे हस्ते (ल. १ वा २) |
| | ति. १० बुधे विष्टेः पूर्वं ज्येष्ठा भे (ल.११ वा २) |
| फाल्गुनशु. | ति. ५ शुक्रे रेवत्यां (ल. ११) |

### ।। वधूप्रवेश/द्विरागमन मुहूर्त्ताः ।।

| | |
|---|---|
| वैशाख कृ. | ति. ४ बुधे रा.२।३८ उ. मूले द्विरागमन (ल. १२) |
| | ति. ५ गुरौ मूले वधूप्रवेश (ल. २) द्विरागमन (ल. ३) |
| | ति. ६ शुक्रे रा.११।१९ उ.उ.षा. भे वधूप्रवेश (ल. ११) द्विरागमन (ल. १२) |
| | ति. १२ बुधे सा.६।५ उ. वैधृते पूर्वं उ.भा.भे द्विरागमन (ल. ७) |
| वैशाख शु. | ति. २ सोमे रा. ११।१६ उ. रोहिण्यां वधूप्रवेश (ल.११) द्विरागमन (ल. १२) |
| | ति. ५ शुक्रे प्रा.६।४५उ.पुनर्वसौ द्विरागमन (ल.२ वा ३) |
| | ति. १० बुधे दि.३।५३ उ.उ.फा. भे द्विरागमन (ल. ७) |
| | ति. ११ गुरौ दि. ४।१९उ. हस्ते वधूप्रवेश (ल. ८) द्विरागमन (ल. ७) |
| | ति. १२ शुक्रे हस्ते वधूप्रवेश (ल. २) द्विरागमन (ल. ३) |
| मार्गशीर्ष शु. | ति. २ शुक्रे रा. ८।७ उ. मूले वधूप्रवेश (ल. ८) द्विरागमन (ल. ७) |
| | ति. ९ शुक्रे रिक्तोत्तरं उ.भा. भे वधूप्रवेश (ल. ११) द्विरागमन (ल. १२)। |
| | ति. १२ सोमे अश्विन्यां वधूप्रवेश -द्विरागमन (ल. ८) |
| | ति. १४ बुधे विष्टेः परं रोहिण्यां द्विरागमन (ल. ७) |
| | ति. १५ गुरौ रोहिण्यां वधू प्रवेश द्विरागमन (ल. ८) |
| फाल्गुनकृ. | ति.११ गुरौ मूले वधूप्रवेश (ल. ११) द्विरागमन (ल. १२)। |
| | ति.१२ शुक्रे दि.५।१२ उ. व्यतिपातात्पूर्वं उ.षा.भे वधूप्रवेश (ल. ५) द्विरागमन (ल. ६) |
| फाल्गुनशु. | ति. २ बुधे दि.९।२९ उ. उ.भा.भे द्विरागमन (ल. २) |
| | ति. ३ गुरौ प्रा.७।९ या. उ.भा.भे वधूप्रवेश द्विरागमन (ल.११) |
| | ति. ५ शुक्रे रेवत्यां वधूप्रवेश (ल. ११) द्विरागमन (ल. १२) |
| | ति. १० गुरौ दि.१।५०उ. विष्टेः पूर्वं पुनर्वसौ द्विरागमन (ल.३ वा ६) |
| | ति. ११ शुक्रे विष्टेः परं पुनर्वसौ द्विरागमन (ल.३)। दि.४।१७ उ. पुष्ये वधूप्रवेश (ल.५ वा ११) द्विरागमन (ल. ६) |

### ।। गृहारम्भ / गृहप्रवेश मुहूर्त्ताः ।।

| | |
|---|---|
| चैत्रशु. | ति. १५ शनौ विष्टेः परं चित्रा भे गृहारम्भ (ल. ९) |
| वैशाख शु. | ति. १० बुधे दि.३।५३ उ. उ.फा. भे गृहारम्भ (ल.९) गृहप्रवेश (च.शु.) |
| | ति. ११ गुरौ विष्टेः परं उ.फा. भे गृहारम्भ-गृहप्रवेश (च.शु.)। दि.४।१९ उ. हस्ते गृहारम्भ (ल.९) |
| | ति. १२ शुक्रे हस्ते गृहारम्भ (च.शु.) |
| ज्येष्ठकृ. | ति. १० बुधे रा.१।५९ उ. रेवत्यां गृहप्रवेश (ल. २) |
| | ति. ११ गुरौ रेवत्यां गृहप्रवेश (ल. २ वा ८) |
| ज्येष्ठशु. | ति. १० गुरौ रा.१२।१६ उ. चित्रा भे गृहप्रवेश (ल. २) |
| | ति. ११ शुक्रे विष्टेः पूर्वं चित्रा भे गृहप्रवेश (ल. २) |
| श्रावण कृ. | ति.१० शनौ रा.९।३३उ. रोहिण्यां जीर्णादिगृहप्रवेश (ल. २) |
| | ति. १२ सोमे मृगे जीर्णादिगृहप्रवेश (ल. ११ वा २) |
| श्रावण शु. | ति. ६ बुधे दि.४।४ उ. चित्रा भे जीर्णादिगृहप्रवेश (च.शु.) |
| | ति. ७ गुरौ चित्रा भे जीर्णादिगृहप्रवेश (च.शु.)। दि.३।५४ उ. स्वात्यां जीर्णादिगृहप्रवेश (ल. ११) |
| | ति. ८ शुक्रे स्वात्यां विष्टेः परं जीर्णादिगृहप्रवेश (च.शु.) |
| | ति. १३ बुधे दि.८।१९ उ.उ.षा. भे गृहारम्भ-जीर्णादिगृहप्रवेश (च.शु.) |
| कार्तिककृ. | ति. ७ सोमे रा.४।४९ उ. पुष्ये जीर्णादिगृहप्रवेश (च.शु.) |
| | ति. १२ शनौ दि.१।२९ उ. उ.फा.भे जीर्णादिगृहप्रवेश (ल.२) |
| कार्तिकशु. | ति.९ बुधे रिक्तोत्तरं धनिष्ठा भे जीर्णादिगृहप्रवेश (च.शु.) |
| | ति. १२ शनौ उ.भा.भे जीर्णादिगृहप्रवेश (ल. ११ वा २)। |
| मार्गशीर्ष कृ. | ति. १० शनौ विष्टेः परं उ.फा.भे जीर्णादिगृहप्रवेश (ल. २) |
| | ति. १२ सोमे चित्रा भे जीर्णादिगृहप्रवेश (ल.११ वा २) |
| मार्गशीर्ष शु. | ति. ९ शुक्रे रिक्तोत्तरं उ.भा.भे गृहारम्भ (च.शु.) जीर्णादिगृहप्रवेश (ल. ८) |
| | ति.१० शनौ उ.भा. भे गृहारम्भ (च.शु.) जीर्णादिगृहप्रवेश (ल.८) |
| | ति. १५ गुरौ रोहिण्यां गृहारम्भ (च.शु.)(पूर्णिमायाम्) |
| माघकृ. | ति. ११ बुधे मैत्रे गृहप्रवेश (च.शु.) |
| माघशु. | ति. ६ शुक्रे रेवत्यां गृहप्रवेश (ल.१२ कें.दा.) |
| फाल्गुनकृ. | ति. ५ शुक्रे हस्ते गृहारम्भ (च.शु.) |
| | ति.१२ शुक्रे दि.५।१२ उ. उ.षा. भे गृहप्रवेश (च.शु.) |
| फाल्गुनशु. | ति. ११ शुक्रे दि.४।१७ उ. पुष्ये गृहारम्भ (ल. ११) (भूधनदोषो स परिहारः) |
| | ति. १२ शनौ पुष्ये गृहारम्भ (ल. ११) |

### ।। अक्षरारम्भः/विद्यारम्भ मुहूर्त्ताः ।।

| | |
|---|---|
| वैशाखकृ. | ति. ५ गुरौ मूले विद्यारम्भ (ल. १) |
| वैशाखशु. | ति. ४ गुरौ रिक्तोत्तरं आर्द्रा भे अक्षरारम्भ-विद्यारम्भ (ल.२) |
| | ति. ५ शुक्रे प्रा.६।४५उ.पुनर्वसौ अक्षरारम्भ-विद्यारम्भ (ल.२) |
| | ति. १० बुधे पू.फा.भे विद्यारम्भ (ल. २) |
| | ति. १२ शुक्रे हस्ते अक्षरारम्भ -विद्यारम्भ (ल. २) |
| ज्येष्ठशु. | ति. ३ गुरौ आर्द्रा भे अक्षरारम्भ-विद्यारम्भ (ल. २ वा ४) |
| | ति. ६ रवौ श्लेषा भे विद्यारम्भ (ल.४) |
| | ति. ११ शुक्रे विष्टेः पूर्वं चित्रा भे अक्षरारम्भ-विद्यारम्भ (ल.२वा ४) |
| आषाढ़कृ. | ति. २ गुरौ पू.षा.भे विद्यारम्भ (ल. ४) |
| आषाढ़शु. | ति. २ शुक्रे पुष्ये अक्षरारम्भ-विद्यारम्भ (ल.४) |
| माघशु. | ति. ६ शुक्रे रेवत्यां अक्षरारम्भ (ल.११) |
| फाल्गुनकृ. | ति. ३ बुधे विष्टेः पूर्वं पू.फा.भे विद्यारम्भ (ल. ११वा १) |
| | ति. ५ शुक्रे हस्ते अक्षरारम्भ-विद्यारम्भ (ल.१ वा २) |
| फाल्गुनशु. | ति. ५ शुक्रे रेवत्यां अक्षरारम्भ (ल. ११) |
| | ति. ९ बुधे दि.११।४२ उ. आर्द्रा भे अक्षरारम्भ (ल. २) |
| | ति. १० गुरौ आर्द्रा भे अक्षरारम्भ (ल. २) |
| | ति. ११ शुक्रे विष्टेः परं पुनर्वसौ अक्षरारम्भ (ल.२) |

### ।। उपनयन मुहूर्त्ताः ।।

| | |
|---|---|
| चैत्रशु. | ति.५ बुधे रोहिण्यां विप्राणामुपनयने (ल.२ रा.दा.) |
| | ति. १२ बुधे दि.७।१८ उ.पू.फा. भे विप्राणामुपनयने (ल. २) |
| वैशाखशु. | ति. ४ गुरौ रिक्तोत्तरं आर्द्रा भे उपनयन (ल. २) |
| | ति.५ शुक्रे प्रा.६।४५ उ. पुनर्वसौ उपनयन (ल.२) |
| | ति. १२ शुक्रे हस्ते उपनयन (ल. २) |
| ज्येष्ठकृ. | ति.५शुक्रे दि.७।३१ उ. उ.षा.भे उपनयन (ल. २ श.के.दा.) |
| ज्येष्ठशु. | ति. ११ शुक्रे विष्टेः पूर्वं चित्रा भे उपनयन (ल. ४) |
| आषाढ़शु. | ति. २ शुक्रे पुष्ये उपनयन (ल.४) |
| माघशु. | ति.५ गुरौ उ.भा. भे (ल. ११) |
| | ति. १२ गुरौ आर्द्रा भे उपनयने सोपपदादोषः। |
| फाल्गुनकृ. | ति. ३ बुधे विष्टेः पूर्वं पू.फा.भे उपनयन (ल.११ वा १ रा.दा.) |
| | ति. ५ शुक्रे हस्ते उपनयन (रोगबाणः) |
| फाल्गुनशु. | ति. २ बुधे दि.९।२९ उ.उ.भा.भे उपनयन (ल.२ भौ.दा.) |
| | ति. ५ शुक्रे रेवत्यां उपनयन (ल.१२ के.दा.). |
| | ति.९ बुधे दि.११।४२ उ. आर्द्रा भे उपनयन (ल.३ के.दा.) |
| | ति. १० गुरौ आर्द्रा भे उपनयन (ल.२ भौ.दा.) |
| | ति. ११ शुक्रे विष्टेः परं पुनर्वसौ उपनयन (ल. ३ के.दा.) |

### ।। जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा मुहूर्त्ताः ।।

| | |
|---|---|
| वैशाखशु. | ति. ५ शुक्रे पुनर्वसौ (ल. २) |
| | ति. ६ शनौ दि.११।१८ उ. पुष्ये (ल.८)। |
| | ति. ७ रवौ पुष्ये (ल.२) |
| | ति. १० बुधे दि. ३।५३ उ. उ.फा.भे (ल. ८) |
| | ति. ११ गुरौ दि. ४।१९ उ. हस्ते (ल. ८) |
| | ति. १२ शुक्रे हस्ते (ल. २) |
| ज्येष्ठ शु. | ति. ३ गुरौ दि. २।६ उ. पुनर्वसौ (ल. ९) |
| | ति. ५ शनौ पुष्ये (ल. ४) |
| | ति. ११ शुक्रे विष्टेः पूर्वं चित्रा भे (ल. ४) |
| आषाढ़ शु. | ति. २ शुक्रे पुष्ये (ल. ४) |
| | ति. ७ बुधे दि. ७।५९ उ. हस्ते (ल. ४) |
| | ति. ८ गुरौ हस्ते (ल. ४) |
| | ति. ९ शुक्रे रिक्तोत्तरं स्वात्यां (ल. ९) |
| माघशु. | ति. ५ गुरौ उ.भा. भे (ल. ११) |
| | ति. ६ शुक्रे रेवत्यां (ल. ११) |
| | ति. १३ शुक्रे प्रा. ६।३८ उ. पुनर्वसौ (ल. ११ वा १) |
| फाल्गुनशु. | ति. २ बुधे दि.९।२९ उ. उ.भा.भे (ल. २) |
| | ति. ५ शुक्रे रेवत्यां (ल. ११) |
| | ति. ११ शुक्रे विष्टेः परं पुनर्वसौ (ल. ३) |
| | ति. १२ शनौ पुष्ये (ल. २) |

### ।। हलप्रवहण-बीजोप्ति मुहूर्त्ताः ।।

| | |
|---|---|
| वैशाख कृ. | ति. ७ शनौ उ.षा.भे बीजोप्ति मुहूर्त्ताः। |
| वैशाख शु. | ति. ३ भौमे रोहिण्यां हलप्रवहण मुहूर्त्ताः। |
| | ति. ५ शुक्रे पुनर्वसौ हलप्रवहण मुहूर्त्ताः। |
| | ति. १० बुधे दि.३।५३ उ. उ.फा. भे हलप्रवहण बीजोप्ति मुहूर्त्ताः। |
| | ति. ११ गुरौ विष्टेः परं उ.फा.भे हलप्रवहण बीजोप्ति मुहूर्त्ताः। |
| | ति. १२ शुक्रे हस्ते बीजोप्ति मुहूर्त्ताः। |
| | ति. १५ सोमे दि.१।५० उ. मैत्रे बीजोप्ति मुहूर्त्ताः। |
| ज्येष्ठ कृ. | ति. ३ बुधे दि.१०।५० उ. विष्टेः पूर्वं मूले बीजोप्ति मुहूर्त्ताः। |
| | ति.५ शुक्रे दि.७।३१ उ.उ.षा. भे बीजोप्ति। |
| | ति. ८ सोमे शतभिषजि वैधृतेः पूर्वं हलप्रवहण मुहूर्त्ताः। |
| | ति. ११ गुरौ रेवत्यां हलप्रवहण मुहूर्त्ताः। |
| | ति. १२ शुक्रे अश्विन्यां हलप्रवहण मुहूर्त्ताः। |
| ज्येष्ठ शु. | ति. ३ गुरौ दि.२।६ उ.पुनर्वसौ हलप्रवहण मुहूर्त्ताः। |
| | ति. ११ शुक्रे विष्टेः पूर्वं चित्रा भे हलप्रवहण मुहूर्त्ताः। |
| | ति. १२ शनौ स्वात्यां बीजोप्ति मुहूर्त्ताः। |
| आषाढ़ कृ. | ति. १ बुधे मूले बीजोप्ति मुहूर्त्ताः। |
| | ति. ८ भौमे दि.९।५९ उ.उ.भा. भे हलप्रवहण मुहूर्त्ताः। |
| आषाढ़ शु. | ति. २ शुक्रे पुष्ये हलप्रवहण मुहूर्त्ताः। |
| | ति. ७ बुधे विष्टेः पूर्वं हस्ते हलप्रवहण मुहूर्त्ताः। |
| | ति. ८ गुरौ हस्ते दि.८।१० उ. चित्रा भे हलप्रवहण बीजोप्ति मुहूर्त्ताः। |

### ।। विपणि ( व्यापार ) मुहूर्त्ताः ।।

| | |
|---|---|
| चैत्र शु. | ति. ५ बुधे रोहिण्याम्। |
| | ति. ६ गुरौ मृगे। |
| वैशाखकृ. | ति. १ रवौ चित्रा भे। |
| वैशाख शु. | ति. १० बुधे दि.३।५३ उ. उ.फा. भे। |
| | ति. ११ गुरौ विष्टेः परं उ.फा.भे। |
| | ति. १५ सोमे दि.१।५० उ. मैत्रे। |
| ज्येष्ठ कृ. | ति. ५ शुक्रे दि.७।३१ उ.षा.भे। |
| | ति. ११ गुरौ रेवत्याम्। |
| | ति. १२ शुक्रे अश्विन्याम्। |
| ज्येष्ठ शु. | ति. ५ शनौ पुष्ये। |
| | ति. ११ शुक्रे विष्टेः पूर्वं चित्रा भे। |
| आषा.शु. | ति. २ शुक्रे पुष्ये। |
| | ति. ७ बुधे दि.७।५९ उ. हस्ते। |
| | ति. ८ गुरौ हस्ते। दि.८।१० उ. चित्रा भे। |
| | ति. ११ रवौ विष्टेः परं मैत्रे। |
| श्रावण कृ. | ति. १ गुरौ वैधृतेः परं उ.षा.भे। |
| | ति. ११ रवौ रोहिण्याम्। |
| | ति. १२ सोमे मृगे। |
| श्रावण शु. | ति. ६ बुधे दि.४।४ उ. चित्रा भे। |
| | ति. ७ गुरौ चित्रा भे। |
| भाद्रपद कृ. | ति. ६ बुधे अश्विन्याम्। |
| | ति. १० रवौ प्रा.७।०उ.मृगे। |
| | ति. ११ सोमे मृगे। |
| भाद्रपद शु. | ति. २ सोमे उ.फा. भे। |
| | ति. ४ बुधे रिक्तोत्तरं चित्रा भे। |
| | ति. १२ बुधे उ.षा.भे। |
| आश्विनकृ. | ति. १ रवौ दि.९।५५ उ. उ.भा.भे। |
| | ति. २ सोमे दि.९।२७ उ. रेवत्याम्। |
| | ति. ८ रवौ मृगे। |
| आश्विन शु. | ति. ३ बुधे प्रा.७।२० या. चित्रा भे। |
| | ति. ५ शुक्रे प्रा.६।२५ उ.मैत्रे। |
| कार्तिक कृ. | ति. ५ शुक्रे व्यतीपातात्परं रोहिण्याम्। |
| कार्तिक शु. | ति. २ गुरौ दि.२।२७ उ. मैत्रे। |
| | ति. ३ शुक्रे दि.१२।२९ या.मैत्रे। |
| | ति. १३ रवौ रेवत्याम्। |
| मार्गशीर्ष कृ. | ति. २ गुरौ रोहिण्याम्। |
| | ति. ११ रवौ हस्ते। |
| | ति. १२ सोमे चित्रा भे। |
| मार्गशीर्ष शु. | ति. ९ शुक्रे रिक्तोत्तरं उ.भा.भे। |
| | ति. १२ सोमे अश्विन्याम्। |
| | ति. १५ गुरौ रोहिण्याम्। |
| पौष कृ. | ति. ८ शुक्रे उ.फा.भे। |
| | ति. १० रवौ चित्रा भे। |
| पौष शु. | ति. २ रवौ उ.षा. भे। |
| | ति. ७ गुरौ व्यतिपातात्परं उ.भा. भे। |
| | ति. १० रवौ अश्विन्याम्। |
| माघ कृ. | ति. २ रवौ वैधृतेः परं पुष्ये। |
| | ति. ५ गुरौ दि.११।२५ उ. उ.फा. भे। |
| | ति. ८ रवौ चित्रा भे। |
| | ति. ११ बुधे मैत्रे। |
| माघ शु | ति. ५ गुरौ उ.भा. भे। |
| | ति. ६ शुक्रे रेवत्याम्। |
| | ति. १५ रवौ विष्टेः परं पुष्ये। |
| फाल्गुन कृ. | ति. ५ शुक्रे हस्ते |
| | ति. १२ शुक्रे दि.५।१२ उ.उ.षा. भे। |
| फाल्गुन शु. | ति. ३ गुरौ प्रा.७।९ या. उ.भा.भे। |
| | ति. ५ शुक्रे रेवत्याम्। |
| | ति. ११ शुक्रे दि.४।१७ उ. पुष्ये। |
| चैत्र कृ. | ति. १ बुधे उ.फा. भे। |
| | ति. २ गुरौ हस्ते। |
| | ति. ६ सोमे विष्टेः पूर्वं मैत्रे। |

## चैत्र
१९ मार्चसे १६ अप्रैल तक २०२२ ई०

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रवि | | २ / २०मा. | १० / २७मा. | २ / ३ अ. | ९ / १० अ. |
| चन्द्र | | ३ / २१मा. | ११ / २८मा. | ३ / ४ अ. | १० / ११ अ. |
| भौम | | ४ / २२मा. | १२ / २९मा. | ४ / ५ अ. | ११ / १२ अ. |
| बुध | | ६ / २३मा. | १३ / ३०मा. | ५ / ६ अ. | १२ / १३ अ. |
| गुरु | | ७ / २४मा. | १४ / ३१मा. | ६ / ७ अ. | १३ / १४ अ. |
| शुक्र | | ८ / २५मा. | ३० / १ अ. | ७ / ८ अ. | १४ / १५ अ. |
| शनि | १ / १९मा. | ९ / २६मा. | १ / २ अ. | ८ / ९ अ. | १५ / १६ अ. |

## वैशाख
१७ अप्रैल से १६ मई तक २०२२ ई०

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रवि | १ / १७अ. | ८ / २४अ. | १ / १ म. | ७ / ८ म | १४ / १५म. |
| चन्द्र | २ / १८अ. | १० / २५अ. | २ / २ म. | ८ / ९ म. | १५ / १६म. |
| भौम | ३ / १९अ. | ११ / २६अ. | ३ / ३ म. | ९ / १०म. | |
| बुध | ४ / २०अ. | १२ / २७अ. | ४ / ४ म. | १० / ११म. | |
| गुरु | ५ / २१अ. | १३ / २८अ. | ४ / ५ म. | ११ / १२म. | |
| शुक्र | ६ / २२अ. | १४ / २९अ. | ५ / ६ म. | १२ / १३म. | |
| शनि | ७ / २३अ. | ३० / ३०अ. | ६ / ७ म. | १३ / १४म. | |

## ज्येष्ठ
१७ मई से १४ जून तक २०२२ ई०

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रवि | | ७ / २२म. | १४ / २९म. | ६ / ५ जू. | १३ / १२जू. |
| चन्द्र | | ८ / २३म. | ३० / ३०म. | ७ / ६ जू. | १४ / १३जू. |
| भौम | १ / १७ म. | ९ / २४म. | १ / ३१म. | ८ / ७ जू. | १५ / १४जू. |
| बुध | ३ / १८ म. | १० / २५म. | २ / १जू. | ९ / ८ जू. | |
| गुरु | ४ / १९ म. | ११ / २६म. | ३ / २ जू. | १० / ९ जू. | |
| शुक्र | ५ / २० म. | १२ / २७म. | ४ / ३ जू. | ११ / १०जू. | |
| शनि | ६ / २१म. | १३ / २८म. | ५ / ४ जू. | १२ / ११जू. | |

## आषाढ़
१५ जून से १३ जुलाई तक २०२२ ई०

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रवि | | ५ / १९जू. | १३ / २६जू. | ४ / ३ जु. | ११ / १०जु. |
| चन्द्र | | ७ / २०जू. | १४ / २७जू. | ५ / ४ जु. | १२ / ११जु. |
| भौम | | ८ / २१जू. | ३० / २८जू. | ६ / ५ जु. | १४ / १२जु. |
| बुध | १ / १५जू. | ९ / २२जू. | ३० / २९जू. | ७ / ६ जु. | १५ / १३जु. |
| गुरु | २ / १६जू. | १० / २३जू. | १ / ३०जू. | ८ / ७ जु. | |
| शुक्र | ३ / १७जू. | ११ / २४जू. | २ / १ जु. | ९ / ८ जु. | |
| शनि | ४ / १८जू. | १२ / २५जू. | ३ / २ जु. | १० / ९ जु. | |

## श्रावण
१४ जुलाई से १२ अगस्त तक २०२२ ई०

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रवि | | ४ / १७जु. | ११ / २४जु. | ३ / ३१जु. | १० / ७अ. |
| चन्द्र | | ५ / १८जु. | १२ / २५जु. | ४ / १अ. | ११ / ८अ. |
| भौम | | ६ / १९जु. | १३ / २६जु. | ५ / २अ. | १२ / ९अ. |
| बुध | | ७ / २०जु. | १४ / २७जु. | ६ / ३अ. | १३ / १०अ. |
| गुरु | १ / १४जु. | ८ / २१जु. | ३० / २८जु. | ७ / ४अ. | १४ / ११अ. |
| शुक्र | २ / १५जु. | ९ / २२जु. | १ / २९जु. | ८ / ५अ. | १५ / १२अ. |
| शनि | ३ / १६जु. | १० / २३जु. | २ / ३०जु. | ९ / ६अ. | |

## भाद्रपद
१३ अगस्त से १० सितम्बर तक २०२२ ई०

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रवि | | ३ / १४अ. | १० / २१अ. | १ / २८अ. | ८ / ४सि. |
| चन्द्र | | ४ / १५अ. | ११ / २२अ. | २ / २९अ. | १० / ५सि. |
| भौम | | ५ / १६अ. | ११ / २३अ. | ३ / ३०अ. | ११ / ६सि. |
| बुध | | ६ / १७अ. | १२ / २४अ. | ४ / ३१अ. | १२ / ७सि. |
| गुरु | | ७ / १८अ. | १३ / २५अ. | ५ / १सि. | १३ / ८सि. |
| शुक्र | | ८ / १९अ. | १४ / २६अ. | ६ / २सि. | १४ / ९सि. |
| शनि | २ / १३अ. | ९ / २०अ. | ३० / २७अ. | ७ / ३सि. | १५ / १०सि. |

# प्रमुख भारतीय पर्व तथा व्रतोपवास
श्रीसंवत् २०७९ शक १९४४ (सन् २०२२-२०२३ ई०)।

अप्रैल २श. - चान्द्रसंवत्सर तथा वासन्तनवरात्रारम्भ।
अप्रैल ७गु. - श्रीसूर्यषष्ठी व्रत।
अप्रैल ८शु. - महानिशापूजा
अप्रैल ९श. - महाष्टमी व्रत।
अप्रैल १०र. - श्री रामनवमी व्रत सबका।
अप्रैल १४गु. - मेषसंक्रान्ति। पुण्यकाल। वैशाखी।डॉ.भीमराव अम्बेडकर जयन्ती। श्री महावीर जयन्ती।
अप्रैल १६श. - श्रीहनुमज्जयन्ती।
अप्रैल २६मं. - श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती।
मई ३मं. - अक्षयतृतीया।श्री परशुराम जयन्ती।
मई ६शु. - आद्यजगद्गुरुशंकराचार्य जयन्ती।
मई १४श. - श्री नृसिंह चतुर्दशी।
मई १६सो. - बुद्ध पूर्णिमा।
मई २९र. - वटसावित्री व्रत।
जून ९गु. - श्रीगंगादशहरा।
जून १०शु. - निर्जलाएकादशीव्रत। भीमसेनी एकादशी व्रत।
जून १४मं. - दाक्षिणात्यवटसावित्री व्रत।सन्त कबीर जयन्ती।
जुलाई १शु. - रथयात्रा।
जुलाई १३बु. - गुरुपूर्णिमा।
जुलाई ३०श. - स्वामी करपात्री जयन्ती।
अगस्त २मं. - श्रीनागपंचमी। ऋग्वेदि उपाकर्म (श्रावणी)।
अगस्त ४गु. - गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती।
अगस्त ११गु. - रक्षाबन्धन।
अगस्त १४र. - कज्जली (कजरी)।
अगस्त १५सो. - सं. (बहुला) श्रीगणेश ४ व्रत। च.उ.रा. ९।४। भारतीय स्वतन्त्रता दिवस।
अगस्त १७बु. - हलषष्ठी व्रत (ललही छठ)।
अगस्त १९शु. - श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत।
अगस्त ३०मं. - हरितालिका (तीज) व्रत।
सितम्बर १गु. - ऋषिपंचमी।
सितम्बर २शु. - लोलार्कषष्ठी। श्रीसूर्यषष्ठी व्रत।
सितम्बर ९शु. - अनन्तचतुर्दशी व्रत।
सितम्बर १०श. - महालयारम्भ।
सितम्बर १७श. - श्रीविश्वकर्मापूजा। महालक्ष्मी व्रत। चं.उ.रा.१०।४५।
सितम्बर १८र. - जीवत्पुत्रिका व्रत।
सितम्बर २५र. - पितृविसर्जन।महालयसमाप्ति।
सितम्बर २६सो. - शारदनवरात्रारम्भ।
अक्टूबर २र. - महात्मागाँधी-शास्त्री जयन्ती।
अक्टूबर ३सो. - महाष्टमी व्रत।
अक्टूबर ४मं. - महानवमी व्रत। श्रीविजयादशमी।
अक्टूबर ५बु. - श्री दुर्गाविसर्जन।
अक्टूबर ९र. - शरत्पूर्णिमा कोजागरी।महर्षि वाल्मीकी जयन्ती।
अक्टूबर १३गु. - संकष्टीकरक (करवा) श्रीगणेश४व्रत।च.उ.रा.७।५४।
अक्टूबर १७सो. - अहोई ८ व्रत। च.उ.रा. ११।१०।
अक्टूबर २२श. - धनत्रयोदशी (धनतेरस)।
अक्टूबर २३र. - नरकचतुर्दशी।
अक्टूबर २४सो. - दीपावली। महाकाली पूजा।
अक्टूबर २५मं. - ग्रस्तास्त खण्डसूर्यग्रहण।
अक्टूबर २६बु. - अन्नकूट। गोवर्धनपूजा।
अक्टूबर २७गु. - काशी में गोवर्धनपूजा। भइयादूज।
अक्टूबर ३०र. - श्री सूर्यषष्ठी व्रत।
नवम्बर २बु. - अक्षयनवमी।
नवम्बर ४शु. - प्रबोधिनी एकादशी व्रत सबका।
नवम्बर ५श. - तुलसी विवाह।
नवम्बर ८मं. - कार्तिकपूर्णिमा। गुरुनानक जयन्ती। देवदीपावली (काशी)।ग्रस्तोदित चन्द्रग्रहण।
नवम्बर १६बु. - श्री भैरवाष्टमी।
जनवरी ५गु. - गुरुगोविन्दसिंह जयन्ती (नवीनतम)।
जनवरी १४श. - मकरसंक्रान्ति। खरमाससमाप्ति।
जनवरी १५र. - मकरसंक्रान्तिजन्यपुण्यकाल।
जनवरी २१श. - मौनी अमावस्या।
जनवरी २६गु. - श्रीवसन्तपंचमी। भारतीय गणतन्त्र दिवस।
जनवरी ३०सो. - श्री हरसुब्रह्मदेवजयन्ती।
फरवरी ५र. - माघीपूर्णिमा। सन्तरविदासजयन्ती।
फरवरी १८श. - श्रीमहाशिवरात्रि व्रत।
मार्च ३शु. - रंगभरी एकादशी।
मार्च ६सो. - होलिकादाह (भद्रापुच्छमें रा.१२।२३से १।३५तक)
मार्च ७मं. - काशी में होली। चतुःषष्ठियात्रा। श्रीचैतन्यमहा प्रभुजयन्ती।
मार्च ८बु. - काशीतोऽन्यत्र होली -वसन्तोत्सव।
मार्च १४मं. - बुढ़वामंगल पर्व।

उपसंहार।। *आदित्यपुराणे*- यस्तुकार्त्त (सत्य) युगो धर्मो न कर्तव्यः कलौयुगे। पापप्रयुक्ताश्च सदा कलौ नार्यो नरास्तथा। वाग्दानान्तरमन्यस्मैदानमदूषितम्। *विज्ञानेश्वर वचनम्*:- दत्तामपि हरेत्पूर्वाश्रेयांश्चेद्वरमाव्रजेत्। त्यज्येद्देशंकृत गुनेत्रेतायांग्राम मुत्सृजेत्। द्वापरेकुलमेकन्तुकर्तारन्तु कलौयुगे।। कृतेतुमानवाधर्मास्त्रेतायां गौतमाः स्मृताः।। द्वापरे शङ्खलिखिताः कलौ पाराशराः स्मृताः। *अन्योपदेशः*- आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन। ज्ञात्वा पापकरणे न तस्य निष्कृतिर्दृष्टा भृग्वग्निपतनादृते। विधवया सहाधर्माचरणे स पुरुषत्याज्यः। योनरोविधवानारीमुपेयात्कामलोलुपः। सहंतव्योऽथवा त्याज्यो द्विजातीनामयं विधिः।

*आशीर्वादः- सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु, सर्वेसन्तु निरामयाः। सर्वेभद्राणि पश्यन्तु माकश्चिद्दुःख भागभवेत् ।। शुभम् ।।*

*हृषीकेश पञ्चाङ्ग मिलने का एकमात्र पता :-*

**विक्रम पञ्चाङ्ग प्रकाशन**

बी. २।९५ सी. भदैनी, वाराणसी

मो. : ०७३९०९९३३९७



## आश्विन
११ सितम्बरसे ९ अक्टूबर तक २०२२ ई०

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रवि | १ / ११सि. | ८ / १८सि. | ३० / २५सि. | ७ / २ अ. | १५ / ९ अ. |
| चन्द्र | २ / १२सि. | ९ / १९सि. | १ / २६सि. | ८ / ३ अ. | |
| भौम | ३ / १३सि. | १० / २०सि. | २ / २७सि. | ९ / ४ अ. | |
| बुध | ४ / १४सि. | ११ / २१सि. | ३ / २८सि. | १० / ५ अ. | |
| गुरु | ५ / १५सि. | १२ / २२सि. | ४ / २९सि. | ११ / ६ अ. | |
| शुक्र | ६ / १६सि. | १३ / २३सि. | ५ / ३०सि. | १२ / ७अ. | |
| शनि | ७ / १७सि. | १४ / २४सि. | ६ / १ अ. | १४ / ८ अ. | |

## कार्तिक
१० अक्टूबरसे ८ नवम्बर तक २०२२ ई०

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रवि | | ७ / १६अ. | १३ / २३अ. | ५ / ३०अ. | १३ / ६ न. |
| चन्द्र | १ / १०अ. | ७ / १७अ. | १४ / २४अ. | ७ / ३१ अ. | १४ / ७ न. |
| भौम | २ / ११ अ. | ८ / १८ अ. | ३० / २५अ. | ८ / १ न. | १५ / ८ न. |
| बुध | ३ / १२ अ. | ९ / १९ अ. | १ / २६ अ. | ९ / २ न. | |
| गुरु | ४ / १३ अ. | १० / २० अ. | २ / २७अ. | १० / ३ न. | |
| शुक्र | ५ / १४अ. | ११ / २१ अ. | ३ / २८अ. | ११ / ४ न. | |
| शनि | ६ / १५ अ. | १२ / २२ अ. | ४ / २९अ. | १२ / ५ न. | |

## मार्गशीर्ष
९ नवम्बर से ८ दिसम्बर तक २०२२ ई०

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रवि | | ५ / १३ न. | ११ / २०न. | ४ / २७न. | ११ / ४ दि. |
| चन्द्र | | ६ / १४ न. | १२ / २१ न. | ५ / २८ न. | १२ / ५ दि. |
| भौम | | ७ / १५ न. | १३ / २२न. | ६ / २९न. | १३ / ६ दि. |
| बुध | १ / ९ न. | ८ / १६ न. | ३० / २३न. | ७ / ३०न. | १४ / ७ दि. |
| गुरु | २ / १०न. | ९ / १७ न. | १ / २४न. | ८ / १ दि. | १५ / ८ दि. |
| शुक्र | ३ / ११ न. | १० / १८ न. | २ / २५न. | ९ / २ दि. | |
| शनि | ४ / १२ न. | १० / १९न. | ३ / २६न. | १० / ३ दि. | |

## पौष
९ दिसम्बर से ६ जनवरी तक २०२२-२३ ई०

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रवि | | ३ / ११दि. | १० / १८दि. | २ / २५दि. | १० / १ ज. |
| चन्द्र | | ४ / १२दि. | ११ / १९दि. | ३ / २६दि. | ११ / २ ज. |
| भौम | | ५ / १३दि. | १२ / २०दि. | ४ / २७दि. | १२ / ३ ज. |
| बुध | | ६ / १४दि. | १३ / २१दि. | ६ / २८दि. | १३ / ४ ज. |
| गुरु | | ७ / १५दि. | १४ / २२दि. | ७ / २९दि. | १४ / ५ ज. |
| शुक्र | १ / ९ दि. | ८ / १६दि. | ३० / २३दि. | ८ / ३०दि. | १५ / ६ ज. |
| शनि | २ / १०दि. | ९ / १७दि. | १ / २४दि. | ९ / ३१दि. | |

## माघ
७ जनवरी से ५ फरवरी तक २०२३ ई०

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रवि | १५ / ५ फ. | २ / ८ ज. | ८ / १५ ज. | १ / २२ज. | ८ / २९ज. |
| चन्द्र | | २ / ९ ज. | ९ / १६ ज. | २ / २३ज. | ९ / ३०ज. |
| भौम | | ३ / १० ज. | १० / १७ज. | ३ / २४ज. | १० / ३१ज. |
| बुध | | ४ / ११ ज. | ११ / १८ज. | ४ / २५ज. | ११ / १ फ. |
| गुरु | | ५ / १२ज. | १२ / १९ज. | ५ / २६ज. | १२ / २ फ. |
| शुक्र | | ६ / १३ज. | १३ / २०ज. | ६ / २७ज. | १३ / ३ फ. |
| शनि | १ / ७ ज. | ७ / १४ज. | ३० / २१ज. | ७ / २८ज. | १४ / ४ फ. |

## फाल्गुन
६ फरवरी से ७ मार्च तक २०२३ ई०

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रवि | | ७ / १२फ. | १४ / १९फ. | ७ / २६फ. | १३ / ५ मा. |
| चन्द्र | १ / ६ फ. | ८ / १३फ. | ३० / २०फ. | ८ / २७फ. | १४ / ६ मा. |
| भौम | २ / ७ फ. | ९ / १४फ. | १ / २१फ. | ९ / २८फ. | १५ / ७ मा. |
| बुध | ३ / ८ फ. | १० / १५फ. | २ / २२फ. | ९ / १ मा. | |
| गुरु | ४ / ९ फ. | ११ / १६फ. | ३ / २३फ. | १० / २ मा. | |
| शुक्र | ५ / १०फ. | १२ / १७फ. | ५ / २४फ. | ११ / ३ मा. | |
| शनि | ६ / ११फ. | १३ / १८फ. | ६ / २५फ. | १२ / ४ मा. | |